गनेड़ीवाला गौरव ग्रन्थ

संपादक

डॉ. रतनलाल मिश्र एम.ए., पीएच.डी.

प्रकाशक

सेठ जुगलदास गनेड़ीवाला चैरिटेबल ट्रस्ट, कलकत्ता

प्रकाशक

सेठ जुगलदास गनेड़ीवाला चैरिटेबल ट्रस्ट,

गनेड़ी (सीकर) राजस्थान

7 हंगर फोर्ड स्ट्रीट, कलकत्ता - 17

1 राज नारायण रोड़, सिविल लाइन्स, दिल्ली - 54

प्रथम संस्करण : 1993

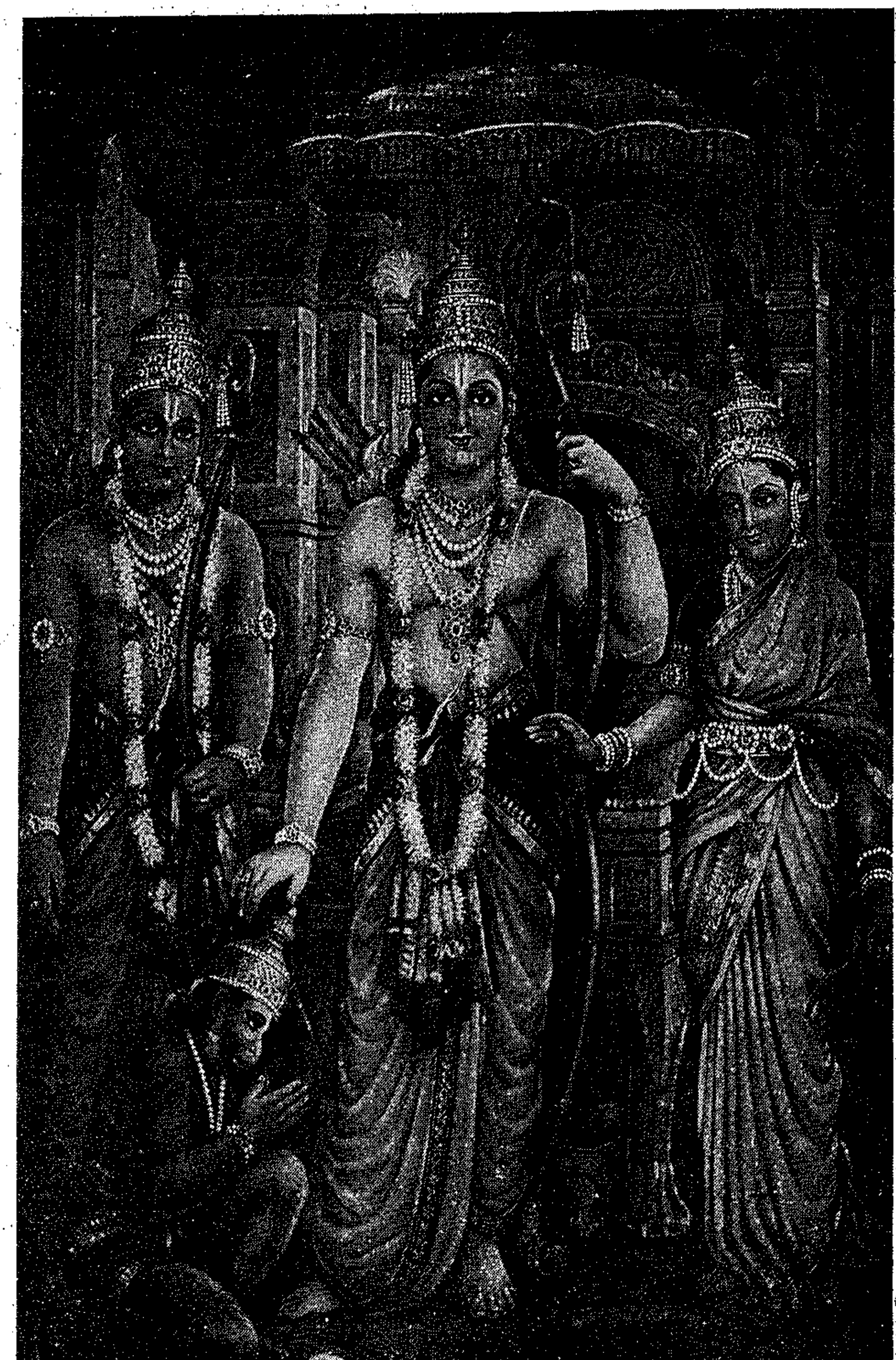
मूल्य : 501.00 रुपये

टाईपसैटर

ट्रांसक्रिपशन्स, 1274, वैदवाड़ा, दिल्ली-6 दूरभाष : 3277779

मुद्रक

श्री पंचशील प्रिंटर्स, हरशरन निवास, रेलवे रोड़, शाहदरा, दिल्ली-32 दूरभाष : 2283685



रामं रत्नकिरीट कुंडलयुतं केयूरहारान्वितं
सीतालंकृत वामभागममलं सिंहासनस्थंविभुम् ।
सुग्रीवादि हरीश्वरैः सुरगणैः संसेव्यमानं सदा
विश्वामित्र पराशरादि मुनिभिः संस्तूयमानं प्रभुम् ।।

वेदमन्त्र

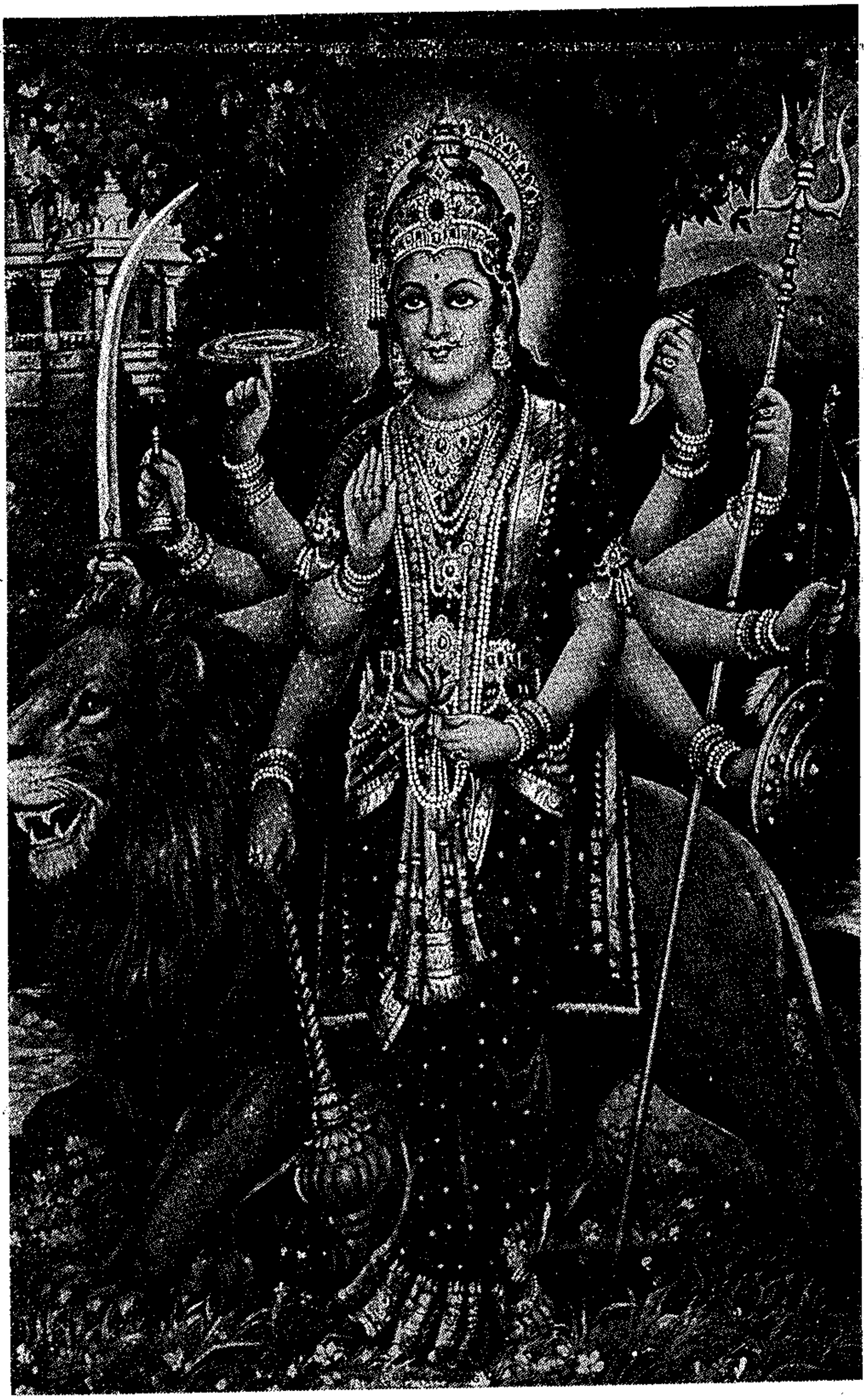
उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृताः स्याम।।

हे मातृभूमि। तुम्हारे समस्त प्रदेश रोग रहित एवं स्वस्थ रहें। हम पृथ्वी पुत्र दीर्घायु हों, सर्वदा सजग हों और तेरे लिये बलि देने को उद्यत रहें।

* * * * * * *

यं देवासोऽवथ वाजसातो यं शूरसाता मरुतोहितेधने।
प्रातवर्णं रथमिन्द्रसानसिम् अरिष्यन्तम् आसहेमा स्वस्तये।।

हे देवताओं, हे मरूतों जिस शक्तिकारक, शूरसंग्राहक हित-साधक और धनदायक रथ को तुम संभाल कर चलाते हो, प्रातःकाल होते ही चल पड़ने वाले, सीधा इन्द्र तक पहुँचने वाले और टूट-फूट से बचे रहने वाले उस रथ पर हम भी आरूढ़ हों और परम सुख-लाभ करें।



शुक्लां ब्रह्मविचारसार परमामाद्याम् जगत व्यापिनीं
वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाडयान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतिं पद्मासने संस्थिताम्
वंदेताम् परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदाम् शारदाम्।।

ततः समुत्क्षिप्य धरां स्वदंष्ट्रया
महावराहः स्फुट पद्मलोचनः ।
रसातलादुत्पल-पत्र सन्निभः
समुत्थितो नील इवाचलो महान् ।।

पूर्ण खिले हुये कमल के समान नेत्रों वाले भगवान् महावराह ने अपने दाँतों से रसातल में गयी पृथ्वी को ऊपर उठा लिया। कमल के पत्र के समान स्निग्ध शरीरवाले महावराह फिर नील पर्वत की तरह खड़े हो गये।

विषय सूची

तृतीय खण्ड

चतुर्थ खण्ड

प्रकाशकीय वक्तव्य

श्री गनेड़ीवाला वंश एक सुप्रसिद्ध महाजन वंश रहा है। इस परिवार के लोग सुदूर भूतकाल में सीकर जिले के बाजोर गांव में बसे हुये थे तथा बाजोरिया कहलाते थे। आगे चलकर कतिपय कारणों से उन्होंने बाजोर को त्याग दिया तथा सीकर राज्य की सीमा के गांव गनेड़ी में जाकर बस गये। अब वे गनेड़ीवाला कहलाने लगे। धीरे-धीरे इस कुल के लोग देश के विविध भागों में व्यापार व्यवसाय के लिये अवस्थित हो गये। इस कुल के पूर्वजों ने अतुल संपत्ति का उपार्जन किया तथा उन्होंने मारवाड़ी अग्रवाल वंश में अपने लिये एक गौरवास्पद एवं उल्लेखनीय स्थान बनाया।

अनेकों राजघरानों को वे आर्थिक सहायता ऋण के रूप में देते थे तथा अनेकों ठिकानों की अर्थ-व्यवस्था के भार को वहन करते थे। अनेकों ठिकानों के वे पोतदार रहे थे। संकट के समय ठिकानेदार उनकी सहायता के आकांक्षी रहते थे।

इस संपन्नता को प्राप्त करने के बाद भी उनमें किसी प्रकार का अभिमान नहीं था बल्कि वे सार्वजनिक हित में हमेशा तत्पर रहते थे तथा समाज के भले के प्रति निरन्तर जागरूक बने रहते थे। अनेकों अवसरों पर उन्होंने अपने कार्यों द्वारा समाज के हितों की रक्षा की थी।

गरीब और असहाय एवं निर्बलों के वे सदा सहायक बने रहते थे। उन पर होने वाले अत्याचारों का वे डटकर विरोध करते थे। उन्होंने गरीबों के हितार्थ बेगार प्रथा को राज्य से समाप्त करवाया और सामान्य जन को न्याय सुलभ करवाने के लिये बड़े नगरों में कोर्ट-कचहरी स्थापित करवाई।

देश प्रेम की भावना से वे ओत-प्रोत रहे। शासकों के विरूद्ध कार्य करने की जब कोई सोच भी नहीं सकता था तब छत्रपति शिवाजी को उन्होंने अपने आवास में आश्रय दिया। इसी भावना का परिचय उन्होंने ताँत्या टोपे के प्रसंग में, उनको फौज सहित भोजन करा कर व अन्य मदद पहुँचाकर दिया।

स्वतंत्रता सेनानी डूँगजी जुहारजी की वे बराबर मदद करते रहे थे। उन्होंने यह जानते हुये भी कि वे अंग्रेजों के विरोधी हैं उनकी बराबर सहायता की। ठाकुरों से निकट के सम्बन्ध होते हुये भी वे देश भक्ति में निरन्तर सलग्न रहते थे तथा देश के हितैषियों की समय-समय पर सहायता करते थे। अकाल के समय गरीब जनता को राहत पहुँचाने के लिये वे अनेक सार्वजनिक निर्माण कार्य शुरु करवाते थे।

ऐसे वरेण्य एवं कीर्तिमान पूर्वजों के वृत्त को इतिहास के रूप में प्रकाशित करने की भावना काफी पहले से इस कुल के लोगों के मन में थी। इसके लिये प्रयत्न भी प्रारम्भ

किये गये थे। सन् 1951-52 में श्री गनेड़ीवाला जातीय प्रकाशन समिति का गठन गनेड़ीवाला परिवार के इतिहास का प्रकाशन करने हेतु किया गया था। श्री बैजनाथजी गनेड़ीवाला (लक्ष्मनगढ़) इसके अध्यक्ष तथा श्री गुलराजजी गनेड़ीवाला (रतनगढ़) उपाध्यक्ष थे।

इस समिति ने इतिहास लेखन का काम पं. सम्पत कुमार जी मिश्र को सौंपा था। उन्होंने सामग्री का संग्रह करना शुरु किया था पर पूरी सामग्री एकत्रित नहीं हो पायी थी। इसी बीच कतिपय कारणों से यह काम रूक गया था। इसके पश्चात 2 दिसम्बर, 1972 को श्री विश्वनाथजी गनेड़ीवाला (लक्ष्मनगढ़) के निवास पर समिति की बैठक का आयोजन कर तय किया गया कि दुबारा पंडितजी को सामग्री–संग्रह के लिये भेजा जावे। पंडितजी ने कुछ स्थानों पर जाकर सामग्री का संकलन किया परन्तु सभी भाइयों के निरन्तर प्रयत्न के बावजूद कार्य गति नहीं पकड़ पाया।

इसके बाद दिसम्बर 1982 में एक बैठक का आयोजन सेठ रामगोपाल जी गनेड़ीवाला (मुकुन्दगढ़) के निवास पर कलकत्ता में हुआ जिसमें निम्नलिखित भाइयों को गनेड़ीवाला इतिहास के प्रकाशन का भार सौंपा गया।

1. श्री विश्वनाथजी गनेड़ीवाला (लछमनगढ़, कलकत्ता)
2. श्री रामगोपालजी गनेड़ीवाला (मुकुन्दगढ़, कलकत्ता)
3. श्री नन्दलालजी गनेड़ीवाला (लछमनगढ़, सिरसा)
4. श्री प्रहलादरायजी गनेड़ीवाला (रतनगढ़, कलकत्ता)
5. श्री भगवती प्रसादजी गनेड़ीवाला (रतनगढ़, कलकत्ता)

अन्य लोगों के साथ श्री भगवती प्रसादजी गनेड़ीवाला ने बड़ी रुचि लेकर काम को आगे बढ़ाया। इन्होंने पहले भी गनेड़ीवाला वंशवृक्ष का प्रकाशन करवाया था। दुर्भाग्य से जून 1983 में उनका आकस्मिक निधन हो गया जिससे इतिहास सम्बन्धी काम फिर रुक गया।

इसके प्रायः 2 वर्ष बाद भाइयों द्वारा यह कार्य मुझे सौंपा गया। इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिये पं. सम्पतकुमार जी मिश्र को फिर से अनुरोध किया गया। वे पूरी लगन से कार्य कर रहे थे कि उनका भी निधन अक्टूबर 1987 में अचानक हो गया। इससे काम में फिर एक व्यवधान आया। इसी बीच सेठ जुगलदास गनेड़ीवाला चैरिटेबल ट्रस्ट का गठन हो गया तबसे इतिहास लेखन का कार्य ट्रस्ट के नीचे चला गया। चूँकि पंडितजी का निधन हो चुका था अतः नये लेखक की खोज आवश्यक थी जो इस इतिहास को सम्यक् रुपसे तैयार कर सके। पंडितजी ने घूम-घूम कर जो अतिरिक्त सामग्री एकत्रित की

थी उसका यथास्थान समावेश आवश्यक था। इस कार्य के लिये डॉ. रतनलाल मिश्र, सेवानिवृत उपनिदेशक, राजस्थान सरकार को चुना गया। श्री मिश्र कई पुस्तकों के लेखक हैं। इन्होंने परिश्रम पूर्वक सारे वृत्त को नवीन सामग्री के आधार पर तैयार किया है। इनकी लगन और इनके परिश्रम के लिये मैं उनकी प्रशंसा करता हूँ तथा धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझता हूँ। श्री संपत कुमारजी ने लम्बे समय तक सामग्री-संचयन का कार्य किया व उसे लम्बे समय तक सुरक्षित रखा, एतदर्थ उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

कार्य को आगे बढ़ाने के प्रयत्न बराबर जारी रहे। अनेकों विघ्न बाधाओं को पार करते हुयें इतिहास के प्रकाशन का कार्य सम्पन्न हुआ है। इससे परिवार के लोगों की दीर्घकालीन इच्छा की पूर्ति हुई है, यह परम संतोष का विषय है।

प्रायः 7 वर्ष पूर्व गनेड़ी के मन्दिरों के जीर्णोद्धार के लिये भाइयों से सहयोग प्राप्त करने के लिये उनको एकत्रित किया गया था। इसी समय इतिहास लेखन, ट्रस्ट गठन का निर्णय लिया गया। इन कार्यों के लिये सभी भाइयों का सहयोग मिला विशेषकर मैं, श्री रामगोपालजी गनेड़ीवाला, श्री प्रहलादरायजी गनेड़ीवाला, श्री वासुदेवजी गनेड़ीवाला, श्री नन्दलालजी गनेड़ीवाला, श्री विश्वनाथजी गनेड़ीवाला, श्री सांवलरामजी गनेड़ीवाला, श्री सत्यनारायणजी गनेड़ीवाला, श्री द्वारकाप्रशादजी गनेड़ीवाला, श्री रतनलालजी गनेड़ीवाला, श्री यतेन्द्रनाथजी गनेड़ीवाला, श्री अनिलकुमारजी गनेड़ीवाला का अत्यन्त आभार मानता हूँ। श्री रामगोपालजी, श्री प्रहलाद रायजी एवं श्री वासुदेवजी ने शारीरिक रूप से अस्वस्थ होते हुये भी इस कार्य को आगे बढ़ाने में जो सहयोग दिया वह निश्चय ही प्रशंसनीय एवं सराहनीय है।

मैं स्वर्गीय श्री श्रीलालजी गनेड़ीवाला, बम्बई, स्वर्गीय श्री देवीदत्तजी गनेड़ीवाला, सिरसा, स्वर्गीय श्री विश्वनाथजी गनेड़ीवाला, कलकत्ता, श्री नन्दलालजी गनेड़ीवाला, सिरसा, श्री मदनगोपालजी गनेड़ीवाला, श्री बाबूलालजी गनेड़ीवाला अजमेर, श्री लक्ष्मीनिवास जी गनेड़ीवाला हैदराबाद, स्वर्गीय श्री भगवती प्रसादजी गनेड़ीवाला कलकत्ता, तथा श्री केदारनाथजी गनेड़ीवाला दिल्ली, का उनके विशेष योगदान, एवं इस ग्रन्थ सम्बन्धित विशेष सामग्री उपलब्ध कराने के लिये सविशेष रुप से आभारी हूँ। श्री भगवती प्रसादजी गनेड़ीवाला का आकस्मिक निधन नहीं होता तो यह इतिहास कभी का छप चुका होता ।

इस पुस्तक में 'गनेड़ीवाला तथा बिड़ला' नामक एक अध्याय दिया गया है। इसकी पृष्ठभूमि यह है कि 'कर्मयोगी घनश्यामदास' नामक पुस्तक में गनेड़ीवालों के पूर्वजों पर आधारहीन आरोप लगाये गये थे। इससे सभी गनेड़ीवाला बन्धु दुखी एवं खिन्न थे। इस अध्याय में पुराने पत्रों एवं बहियों के साक्ष्य के आधार पर उक्त पुस्तक में लिखी हुई

सारहीन बातों का सप्रमाण खंडन किया गया है तथा कुछ ऐसे पत्रों का विवरण दिया गया है जो विषय पर समुचित प्रकाश डालते हैं।

इतिहास लेखन, प्रकाशन का कार्य एक गुरुतर कार्य था जो सभी बन्धुओं के सहयोग से सम्पन्न हुआ है। कुछ बन्धुओं के पास पड़ी सामग्री यदि मिल जाती तो इसे और समृद्ध बनाया जा सकता था पर ऐसा नही हो सका।

पिछले वर्षों के सम्मिलित उद्योग से अनेकों उपलब्धियाँ प्राप्त हुयी हैं जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण वह जागृति की भावना है जिसने सभी भाइयों को जातीय संगठन बनाने के लिये प्रेरित किया है। मन्दिरों आदि का जीर्णोद्धार, ट्रस्ट निर्माण, लोककल्याणकारी कार्यों की शुरुआत, वंशवृक्ष एवम् निर्देशिका, इतिहास प्रकाशन आदि कई बड़ी बड़ी उपलब्धियाँ सभी के सहयोग से प्राप्त हुई हैं। भाइयों का इसी प्रकार का सहयोग मिलता रहा तो आगे चलकर इनसे भी बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त होंगी इसमें सन्देह नहीं है।

पुस्तक में प्राप्त चित्रों मे से पांचवी पीढ़ी के पूर्वजों तक के चित्रों का समावेश किया गया है। कुछ उत्सवों के चित्र भी दिये गये हैं। साथ ही विविध तरह के संस्थानों, हवेलियों आदि के चित्र हैं। इनके अलावा उन बन्धुओं के भी चित्र दिये गये हैं जिनसे इस ग्रन्थ सम्बन्धी विशेष सामग्री प्राप्त हुई है या विशेष सहयोग मिला है।

पुस्तक में अनेकों प्रयत्नों एवं सावधानी रखने के बाद भी कुछ त्रुटियाँ सम्भव हैं। आशा है बन्धुगण कार्य की गुरुता को ध्यान में रखकर उनके प्रति एक उदार और सदय दृष्टिकोण अपनायेंगे।

हनुमान प्रसाद गनेड़ीवाला

संपादकीय वक्तव्य

'गनेड़ीवाला गौरव' ग्रन्थ का प्रकाशन एक संतोष एवं आनन्द की बात है। लम्बी अवधि से यह प्रयत्न चल रहा था जिसकी सुखद परिणति अब सम्भव हो पाई है। प्रारम्भ में सामग्री संकलन का कार्य हुआ था पर आगे चलकर विशेष खोज के कारण कुछ और महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रकाश में आयी जिसके कारण वृत्त अधिक विवरणों वाला एवं समृद्ध हो सका। इसी सारी सामग्री के आधार पर गनेड़ीवाला वंश का यह इतिहास प्रस्तुत किया जा रहा है।

गनेड़ीवाला सेठों का परिवार बहुत विख्यात एवं समृद्धिशाली रहा है। देश के वणिक एवं व्यवसायी समुदाय में गनेड़ीवालों का उल्लेखनीय स्थान रहा है। देश के विभिन्न भागों में गनेड़ीवालों की व्यापारिक गद्दियाँ (पैड़ियाँ) स्थापित थीं जिनके अन्तर्गत व्यापार- व्यवसाय का कार्य चलता था। इन गद्दियों की संख्या बहुत बड़ी थी। इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि देश के विभिन्न भागों में मारवाड़ी सेठों की जो गद्दियाँ स्थापित थी उनमें प्रायः एक चौथाई गद्दियाँ गनेड़ीवाला सेठों की थी।

व्यापार व्यवसाय के साथ-साथ गनेड़ीवाला सेठों के राजा महाराजाओं एवं ठाकुरों आदि से निकट के सम्बन्ध थे। इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि कई राज्यों तथा ठिकानों की अर्थव्यवस्था इन सेठों के सहारे से चलती थी। अनेक राजाओं और ठिकानेदारों को ये सेठ बड़ी-बड़ी रकमें ॠ़ण के रूप में देते थे। कुछ ठिकानों के ये पोतदार थे और उन ठिकानों की सारी अर्थ-व्यवस्था इनके आधार पर चलती थी।

मध्ययुग में विशेषकर विक्रम की 19 वीं शती के प्रारम्भ से ही राजस्थान के राज्यों और ठिकानों की स्थिति शोचनीय होती जा रही थी। सन् 1818 में अंग्रेजों से सन्धि के बाद राज्यों को यद्यपि बाहरी आक्रमण से संरक्षण मिल गया था पर अंग्रेजों द्वारा राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने एवं कुचक्र एवं षडयन्त्र फैलाने के कारण इनकी स्थिति निरन्तर डांवाडोल होने लगी थी। अंग्रेजों द्वारा ली जाने वाली कर की राशि के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर हो रही थी। दूसरी ओर सरदारों की विद्रोह भावना के कारण राजस्व की आय निरन्तर घटती जा रही थी। इनके साथ-साथ राजाओं एवं ठाकुरों के निजी जीवन पर प्रतिपल बढ़ते खर्चे उनकी अर्थव्यवस्था को और भी दीवालीया बना रहे थे।

उपर्युक्त स्थिति के संदर्भ में गनेड़ीवाला सेठों के योगदान का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि उनसे ॠ़ण लेने को राजा एवं ठाकुर निरन्तर प्रयत्नशील रहते थे। गनेड़ीवाला संग्रह में अनेकों पत्र हैं जो इस तथ्य को पूरी तरह उजागर करते हैं।

इसके साथ-साथ एक अन्य बात की ओर भी ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है। विक्रम की 19 वीं शती में शेखावाटी के अनेक नगरों का संस्थापन या पुनर्संस्थापन हुआ। इन नये नगरों की स्थापना के समय इस बात के सविशेष प्रयत्न किये जाते थे कि कोई संपन्न महाजन परिवार वहाँ आकर बसे ताकि विणज—व्यापार शुरु हो, भवन आदि बनें और धार्मिक क्रिया-कलापों की बात आगे बढ़ सके। नगर संरचना एवं संस्थापन में शेखावाटी में इन संपन्न महाजनों का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। उदाहरण के लिये सीकर के रावराजा लक्ष्मण सिंहजी ने जब लक्ष्मणगढ़ बसाया तो अनेक महाजनों को वहाँ बसने के आमंत्रण पत्र भेजे। गनेड़ीवाला सेठों से सविशेष रूप से अनुरोध किया गया कि वे नव निर्मित नगर की आवादानी करें। इसी प्रकार मुकुन्दगढ़, रतनगढ़ और अजमेर आदि को बसाने एवं व्यापार-व्यवसाय प्रारम्भ करने में गनेड़ीवालों का बड़ा योगदान रहा है।

अंग्रेजों के राजस्थान में प्रवेश के साथ-साथ एक नये युग का सूत्रपात होता है। अनेकों राज्यों पर उनका वर्चस्व कायम हो जाता है। राज्यों की आय के स्रोत उनकी देख-रेख में चले जाते हैं। इन अंग्रेज अधिकारियों से भी गनेड़ीवाला परिवार के निकट के सम्बन्ध रहे। इन सम्बन्धों की कथा पुस्तक में दी गयी है। अनेकों उच्चपदस्थ अंग्रेज अधिकारियों ने इनकी कार्य-कुशलता, व्यवसायिक सूझबूझ एवं विविध क्षेत्रों में इनके योगदान की प्रशंसा की है।

अपनी बढ़ी हुई समृद्धि के बल पर, गनेड़ीवाला सेठों ने मंदिर, कूँए, तालाब, हवेलियाँ, छत्रियाँ आदि भवनों का निर्माण देश के विभिन्न भागों में करवाया और इस प्रकार कलात्मक सृजन प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण योगदान किया। धार्मिक दृष्टिकोण रखने के कारण तथा धर्म के विविध स्वरूपों में रूचि के कारण उन्होंने विशाल देव मन्दिर बनाये और भगवान के विविध स्वरूपों का प्रस्थापन करवाया।

राजाओं और ठिकानेदारों द्वारा ऋण चुकाने के रूप में कुछ गांवों के राजस्व उगाहने का अधिकार इन सेठों को मिला हुआ था। इन गांवों के प्रशासन के अधिकार भी इनके पास इस प्रकार स्वतः आ गये थे। राजाओं आदि से निकट संपर्क के कारण इनकी मान मर्यादा, अधिकार आदि बढ़े हुये थे। इनका दिग्दर्शन उन पत्रों से होता है जो परिशिष्ट में दिये जा रहे हैं।

स्वाभिमान तथा मान मर्यादा का इन्हें निरन्तर ध्यान रहा। जब कभी इनके स्वाभिमान को चोट लगी ये नगर छोड़ कर चले गये और अन्यत्र बस गये। अकाल के समय निर्माण कार्यों की शुरूआत करवाते थे जिससे पीड़ित लोगों को बड़ी राहत मिलती थी। इनके प्रयत्न से सीकर ठिकाने द्वारा विभिन्न शहरों में अदालतें स्थापित की गयीं तथा बेगार लेना बन्द करना पड़ा।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि राजभक्ति के उस युग में गनेड़ीवाला सेठों की सहानुभूति, स्वतंत्रता प्रेमी एवं उसके लिये संघर्ष करने वाले वीरों के प्रति भी बराबर बनी रही। पुस्तक में दिये गये वृत्त के अनुसार राजकोप की परवाह किये बिना उनके इस दिशा में किये गये प्रयत्न वस्तुतः सराहनीय हैं।

श्रेष्ठिवर्ग के धनार्जन के प्रयत्नों एवं उपर्जित धनराशि के धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण-कार्यों में व्यय करने की बात सुज्ञात है। शेखावाटी क्षेत्र के सांस्कृतिक, धार्मिक, कलात्मक एवं शैक्षणिक उन्नयन में श्रेष्ठिवर्ग का योगदान निश्चयात्मक रूप से बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इसी योगदान के कारण आज यह क्षेत्र विविध विषयों में देश में अग्रणी स्थान रखता है।

आगे के पृष्ठों में जो गाथा दी जा रही है उसका जातीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्व है ही पर सामाजिक संरचना की दृष्टि से भी यह वृत्त अध्ययनीय है। किस प्रकार सुदूर के अज्ञात स्थानों पर परिगमन कर प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाते हुये वित्त संचयन किया गया है इसकी कथा स्वयं में आल्हादकारी है। विभिन्न जातियों में कुछ अन्तर्निहित सविशेष गुण होते हैं जिनका अधिकांश अंश विरासत की देन होता है पर कुछ विशेष गुणों के कारण व्यक्तिविशेष विशिष्टता प्राप्त करते हैं। इन्हीं वंशगत गुणों की एवं व्यक्तिगत प्रयत्नों की कथा की परिणति को आत्मसात करने वाला यह वृत्त है। आज जबकि सामाजिक गतिविधियों के अध्ययन, शोध एवं विश्लेषण का कार्य जोर पकड़ रहा है 'गनेड़ीवाला गौरव ग्रन्थ' इस दिशा में किया गया एक उपयोगी प्रयत्न प्रमाणित होगा, ऐसी शुभाशंसा है।

डॉ. रतनलाल मिश्र

प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था और उसके संवाहक

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में से एक अतीव महत्त्वपूर्ण संस्कृति है। इस संस्कृति में मानव की शारीरिक, मानसिक एवं अध्यात्मिक--विविध शक्तियों पर बल दिया गया है। विश्व की अन्य संस्कृतियाँ इस दृष्टि से उतनी संपूर्ण नहीं हैं। यही कारण है कि मनु ने इस देश से प्रसूत लोगों से विश्व के लोगों को अपना--अपना चरित्र सीखने की बात कही है।[1]

भारत ने अनंत सृजन किये हैं। विश्व संस्कृति को जितना उसने दिया है उतना संभवतः किसी अन्य अकेले राष्ट्र ने नहीं दिया। अन्य संस्कृतियों से आदान भी बहुत हुआ। इसका कारण अनेक संस्कृतियों से इस देश का संपर्क है। संस्कृति मानव की श्रेष्ठतम क्रियाओं का समग्र रूप है अतः जो जो वरेण्य और ग्राहय् था वह जहाँ--जहाँ से मिला उसे ग्रहण किया गया। प्रारम्भ में उसका स्वरूप विजातीय ही था पर कालान्तर में इस देश के जीवन प्रवाह में वह सांस्कृतिक आदान इतना घुलमिल गया और उसी प्रकार एकाकार हो गया जिस प्रकार गंगा का पानी समुद्र से मिलकर एकाकार हो जाता है। भारत की यह बड़ी विशेषता रही है कि जो कुछ उसके सामने आया उसको अपना अंतरंग बना कर आत्मसात कर लिया। उसकी यह उपलब्धि उसकी सृजन प्रक्रिया से भी दिव्यतर शालीनता की प्रतीक है।[2] ग्राहय् के प्रति आसक्ति भारतीय जनजीवन का एक ऐसा मूलमंत्र रहा जो इसे निरन्तर समृद्ध करता रहा।

सैंधव सभ्यता

भारत के इस गौरव पूर्ण अतीत में जब एक डुबकी लगाकर थाह लेते हैं तो उस महानता और विश्व--कल्याण की प्रखर ज्योति के दर्शन होते हैं जो युग युगों की देन से परिपुष्ट होती गयी। आर्य सभ्यता और संस्कृति का उद्‌गम काल विद्वानों ने ई. पू.

---

1. एतद् देश प्रसूतस्य सकाशात्--अग्रजन्मनः । स्व स्व चरित्रं शिक्षेरन् पृथ्वीव्याम् सर्व मानवाः । मनुस्मृति 2/20
2. भारतीय संस्कृति के स्रोत--भगवतशरण उपाध्याय 4.10 न्यूलाइट ओन मोस्ट एंशियन्ट इस्ट-- वी गोरडन चाइल्ड पृ. 173

1500 के आस–पास माना है। विश्व की अन्य संस्कृतियाँ बहुत अधिक प्राचीन थीं। एक समय आया जब सैन्धव सभ्यता के अनेक स्थान खोद निकाले गये। जो कुछ प्राप्त हुआ वह इतना गौरव पूर्ण था कि अपनी अपेक्षाकृत नवीनता से निकलकर भारत उन प्राचीन सभ्यताओं के परिपार्श्व में गौरव एवं गर्व सहित जा बैठा। यह सभ्यता ई. पूर्व 3500 से भी अधिक प्राचीन[3] थी और विश्व की अनेकों प्राचीन सभ्यताओं की समकालीन थी।

यह सभ्यता अतीव उन्नत दशा में थी और दूर–दूर तक विस्तृत थी। विद्वानों के अनुसार सारा सिन्ध प्रान्त, पंजाब, काठियावाड़ का अधिकांश भू–भाग तटीय प्रदेश, उत्तरपूर्वी घाटी के सीमान्त प्रदेश इसके क्षेत्र थे। हड़प्पा सभ्यता का क्षेत्र मिश्र देश से दूना और सुमेर तथा अक्काड़ के क्षेत्रफल से चार गुना था। गंगा की घाटी के कुछ भू–भाग इस सभ्यता के विस्तार बिन्दु रहे थे ।[4] यह नगरीय सभ्यता थी जिसकी नगर सरंचना वाणिज्य, व्यापार, धर्म, संस्कृति अतीव उच्चकोटि की थी। विदेशी सभ्यताओं से इसका व्यापक सम्बन्ध था। फरात और दजला नदियों के उपजाऊ भू–भाग और एलाम तथा सुमेर से इसके घनिष्ठ संपर्कों की बात ज्ञात हुई है। ऊर और कीश में सिंधु सभ्यता की मोहरें मिली हैं जो पारस्परिक संपर्क की सूचक है।

इस सभ्यता के लोग बहुत उन्नत अवस्था को प्राप्त थे। वे कृषि–जीवन बिताते थे, सिंचाई के बांधों का निर्माण करते थे, अतिरिक्त धन का संचयन करते थे, विक्रय के लिये बाजार केन्द्रों को उन्होंने खोजा था, मिश्रित धातुयें ढालने–गढ़ने लगे थे । उपभोग से बचे अतरिक्त माल का वे संग्रह करते थे। तिथियों से परिचित थे तथा स्त्री को पत्नी बनाकर रखने लगे थे। वाणिज्य और व्यापार उनका बढ़ा–चढ़ा था। वे कपास की खेती करते थे। उससे कपड़े बुनते थे। वे चावल उगाते, गन्ने से चीनी निकालते, साग–सब्जी, केला, नारियल, बैंगन, कददू और नींबू जैसे फल पैदा कर लेते। इस प्रकार यह सभ्यता विविध क्षेत्रों में बड़ी उन्नत दशा में थी।

सैंधव सभ्यता के नगर विदेशी व्यापार के केन्द्र थे । व्यापार समुद्र, नदी और स्थल मार्गों से होता था। हड़प्पा सभ्यता और दक्षिण तुर्कमानिया के बीच व्यापारिक सम्बन्ध था। अनेकों ऐसी मुद्रायें मिली हैं जिनसे सिंधु घाटी और सुमेर के बीच व्यापारिक सम्बंध होने की पुष्टि होती है। लोथल की खुदाई में जहाजों के लिये बने घाट प्रकाश में आये हैं।

इस प्रकार ऊपर के विवरणों से स्पष्ट है कि ई. के प्रायः साढ़े तीन हजार वर्ष पूर्व यह देश एक ऐसा जीवन जी रहा था जो भौतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि

---

3. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास–डॉ. गोविंदचन्द्र पाण्डेय पृ. 252-56 इन्डस सिविलाईजेशनः– मा. ह्वीलर –पृ. 92
4. वेदिक एजः– मजूमदार व पुसालकर पृ. 199.

से संपन्न और गरिमापूर्ण था। आगे आने वाली आर्य सभ्यता को इस सैन्धव सभ्यता से जो विरासत में मिला उससे उसकी प्रायः रिक्त झोली पूरी तरह भर गयी। दाता की संपन्नता और देय को ग्रहण करने वाले का दारिद्रय् दोनों ने इस आदान–प्रदान की प्रक्रिया को सहज और सरल बना दिया। भारतीय जनजीवन में पैठे गहरे तत्त्वों और अधिकांश सांस्कृतिक मूल्यों का उत्स जहाँ खोजना चाहिये वह सिन्धु सभ्यता है। आगे चलकर इन सांस्कृतिक मूल्यों का सृजन स्वयं आर्यों ने भी किया और जीवन को समृद्ध बनाने की क्रियाओं को अपनाया। इस प्रकार जो कुछ प्रदान किया गया उसका परिवर्द्धन एवं परिरक्षण होता रहा जिसके फलस्वरूप जनजीवन निरन्तर उल्लसित होता रहा। ईसा पूर्व की दूसरी सहस्राब्दी के मध्य आर्य लोग इस देश में आये। इन आर्यों का यहाँ के आदिवासियों से एक एक इंच भूमि के लिये डटकर संघर्ष हुआ जिसमें आर्य विजेता रहे। जगह–जगह उनकी बस्तियाँ उभर आयीं। पारस्परिक विद्वेष की भावना भी धीरे–धीरे समाप्त हुई और आर्यों के सामाजिक ढाचें में द्रविड़ सभ्यता के प्रभाव से तेजी से परिवर्तन आया। "कृण्वन्तं विश्वमार्यम्" समस्त विश्व को आर्य बनाने का उनका संकल्प अब उतना तीक्ष्ण नहीं रह सका। अस्थिर परिभ्रमण का प्रारम्भिक दौर अब समाप्त हो गया था और आर्य कबीलों ने सुनिश्चित जीवन यापन की पद्धति प्रारम्भ कर दी थी। विजितों से जो कुछ उन्हे मिला उसको उन्होंने साभार ग्रहण किया कुछ अपनी विवेक–बुद्धि से स्वयं विकसित किया। अब आर्य घाटियों में व्यवस्थित रूप से बस गये थे और एक सुसांस्कृतिक जीवन जी रहे थे।[5]

वैदिक सभ्यता प्रारभ्भ में ग्रामीण और आरण्यक ही थी पर धीरे–धीरे वह नगर वासिनी हो गयी।[6] उस समय अनेकों बड़े नगर काशी, कौशल, मगध, वंग–अंग, विदेह आदि अस्तित्व में आये। वैदिक काल से लेकर भारतीय आर्थिक जीवन की दशा क्रमिक रूप से विकसित होती रही। ऋग्वैदिक काल में मुख्य रूप से कृषि एवं पशु धन पर आर्थिक जीवन आश्रित था। जिसके पास जितने अधिक पशु एवं खेत होते उसका आर्थिक स्तर उतना ही ऊँचा होता था। नदी, झील, कूवों आदि से सिंचाई की व्यवस्था की जाती थी।

धीरे–धीरे कृषि आश्रित अर्थव्यवस्था के साथ साथ वाणिज्य व्यापार में वृद्धि हुई। कुछ हस्तकला के कार्य आगे बढ़े। उस समय सूती, ऊनी वस्त्रों को बुनना एक प्रमुख उद्योग था। ऋग्वेद में शिरीष, तन्तु, मयूख, तसर आदि सामानों का उल्लेख आया है जो कपड़ा बुननें के काम आते थे। धातु के आभूषण– बर्तन एवं अन्य उपयोगी चीजें भी बनाई

5. ह्वीलर–पूर्वः प. 62-63 प्रीहिस्टोरिक ईडिया–पिंगट–पृ. 201-3 दी इन्डस सिविलाईजेशन–मैके पृ. 59-99
6. कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ ईडिया–जि. 1 पृ. 189

जाने लगी। यजुर्वेद मे स्वर्ण, चाँदी, ताँबा, लोहा, कांसा, रांगा आदि धातुओं का वर्णन आया है। हिरण्यकार, सुराकार, भिषज, तक्षक, शौष्कल आदि का नामों का उल्लेख भी हुआ है। इस प्रकार उद्योग–धन्धे व्यापक हो रहे थे। प्राचीन समय में अर्थ या धन के उपार्जन के सम्बन्ध के विषयों के लिये वार्ता शब्द आया है जिससे कृषि, पशुपालन एवं वाणिज्य विषय सूचित होते हैं। "वार्ता मूलो लोकस्य तयैव धार्यते सदा, तत् सर्वे वर्तते सम्यग् तथा रक्षति भूमिपः"। भगवान राम जब अयोध्या में भरत से मिले तो उन्होने वार्ता में संलग्न लोगों की कुशल पूछी थी। (रामायण अयोध्याकाण्ड 100.47)

ऋग्वेद में वाणिज्य के लिये समुद्री यात्रा का उल्लेख है। समुद्रीपंथो से व्यापार निरन्तर बढ़ रहा था। भारत पर असूरियों, बातुलियों और सुमेरियों का प्रभाव फारसवासियों और अरबों द्वारा हुआ। उनसे व्यापार वाणिज्य द्वारा सीधे संपर्क भी हुये। यह प्रसिद्ध है कि सोलोमन ने तीर और सिदोन के अपने महलों के लिये हाथीदाँत, बन्दर, मोर और हिरण तथा विरल लकड़ी सीधे भारत से प्राप्त की थी। उसके जहाज भारतीय समुद्र पर छाये रहते थे। यह अतीव आल्हादकारी तथ्य है कि बाबुल, सिदोन, तीर और निनेवे के बाजारों में भारत से आया माल अटा पड़ा रहता था।[7]

इस भारतीय माल का निर्यात एवं वितरण फिनीशी व्यापारी जिन्हें ऋग्वेद में "पणि" कहा गया है करते थे।[8] सायण ने पणियों को असुर असीरयायी कहा है। वस्तुतः ये फिनीशी व्यापारी थे जिनका निवास स्थान आज का लेबनान है। वे पुरानी दुनिया के सबसे बडे और सफल व्यापारी थे। उनके जहाज हर बंदरगाह पर छाये रहते, उनके दलाल हर बन्दरगाह पर सौदे करते थे। आज के हमारे चेक, हुँडी और विनिमय के सिक्के उन्हीं की खोज के परिणाम है। भारतीय आर्य इन फिनीशियनो को महान् व्यापारी मानते थे। ये विशेषकर मणियों के व्यापारी थे।

ऋग्वेद में उनके प्रसंग गौरवास्पद नहीं हैं। वे गायों और पशुधन की चोरी करते बताये गये हैं। एक जगह इन्द्र से प्रार्थना की गयी है कि वह इन पणियों का विनाश करें। प्राचीन जगत में इन "पणियों" की ख्याति कोई अच्छी नहीं थी। वे व्यापार और विश्वासघात, वाणिज्य और लूट में भेद नहीं मानते थे। उस समय एक संस्कार "पण्यसिद्धि" नाम से प्रचलित था। पण्यसिद्धि का अर्थ व्यापार मे सफलता प्राप्त करना था। जिस वस्तु का व्यापार करना होता उसका एक भाग काटकर अग्नि को समर्पित किया जाता था। "अगर हम इस वस्तु का व्यापार कर धन कमावें तो सोम हमारी समृद्धि में वृद्धि करें।"

---

7. ऋग्वेद 1-56-2, 5-35-6.
8. ऋग्वेद ऋचा–52 पृ: 621

धीरे—धीरे सामाजिक संरचना में परिवर्तन आया। अथर्वेद के रचनाकाल तक चातुर्वर्ण व्यवस्था की स्थापना हो गयी थी। चतुर्थ वर्ण शूद्र था जो द्रविड़ों के वेश के साथ रूपग्रहण कर रहा था। उत्तर वैदिक काल मे क्रय—विक्रय लेन—देन का और भी विकास हुआ।[9] स्वर्ण आदि धातुओं, रत्नों, लोहे, लकड़ी की वस्तुयें आदि का व्यापार पर्याप्त रूप से उन्नत हो रहा था। सार्थवाह जगह—जगह माल ले जाते थे। इस काल में सिक्कों का प्रचलन होने से व्यापार एवं वाणिज्य में अभूतपूर्व सहायता मिली। पहले गो और अश्व ही विनियम के साधन थे। ऋग्वेद में निस्क और अश्व को भेंट में देने का उल्लेख है।[10] निस्क तत्कालीन मुद्रा थी। चार वर्णों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र शामिल थे। वैश्य जाति विराट पुरूष के उरूओं से उत्पन्न हुई है। उरूतदस्य यद्वैश्यः यजुर्वेद में आया है। देश देशान्तरों में भूमि कर्षण से उत्पन्न वस्तुओं को ले जाने वाले वैश्य वर्ग की उत्पति विराट पुरूष के उरूओं से होना समीचीन भी है। इस समय आर्यों का संघर्ष चल रहा था। कृषि, पशुपालन और वाणिज्य के द्वारा आर्थिक साधन जुटाये जाते थे। इन कार्यों के संचालन के लिये वैश्य जाति की उत्पति हुई। "कृषि गोरक्ष वाणिज्यं वैश्यकर्मस्वभावजं।"

उस समय वैश्यों की स्थिति बड़ी सम्मान जनक थी। कतिपय वैश्य ऋषि भी मन्त्रद्रष्टा थे। इनमें भलंद, वन्द्य, और संकृत के नाम उल्लेखनीय हैं।[11]

सूत्रस्मृति काल, महाकाव्यकाल तथा कुछ आगे व्यापार और वाणिज्य गति से आगे बढ़े। आवागमन की सुविधा सड़कों के कारण बढ़ी। बाजार और गोदामों का विकास हुआ। व्यापारियों के संगठन बनने लगे। इस काल में चीन, सुमात्रा, जावा, लंका, कम्बोज आदि देशों से व्यापार होता था।

इस काल में सिक्कों का और आविष्कार हुआ। निष्क पहले स्वर्ण का सिक्का था। अव चाँदी और ताँबे के सिक्के भी बनने लगे। धरण, शातमान, माषक, पूषण चाँदी के सिक्के थे। पण या कार्षापण ताँबे का सिक्का था। कार्षापण अस्सी कृष्णल के बराबर होता था। कार्षापण अस्सी रत्ती तांबे का होता था। सबसे छोटी मुद्रा यव कहलाती थी। विष्णु स्मृति में निष्क(सुवर्ण, रौप्य) माषक, अक्षार्ध, माष, कृष्णल, यव और धरण आदि सिक्कों का उल्लेख है।

बौद्ध काल में व्यापार एवं वाणिज्य की स्थिति का जातक ग्रंथों में विस्तार से वर्णन किया गया है। इस समय तक मगध, कौशल, अवन्ति, पाटलीपुत्र, उज्जैन आदि अनेक व्यापारिक

---

9. हिरणण्य केशी गृह्यसूत्र 1-15-1

10. ऋग्वेद 1/126/2

11. भलन्दशचेव वन्दश्च संकृतिश्चेव ते त्रयः । ये च मन्त्रकृतो ज्ञेया वेश्यानाम्प्रवराः सदा । मत्स्यपुराण

केन्द्र स्थापित हो चुके थे। मौर्य शासकों ने नाविक बेड़े का संगठन किया जिससे समुद्री व्यापार का उत्कर्ष हुआ। उस समय बंगाल में ताम्रलिप्ति नामक एक बड़ा बन्दरगाह था। भारत में उस समय रेशम का व्यापार बहुत बढ़ा चढ़ा था। इनके अलावा सूती वस्त्र, मसाले, औषधियों, हीरे, रत्न, स्वर्ण, हाथीदांत की वस्तुओं का निर्यात होता था।[12]

बौद्ध काल में व्यापार वाणिज्य तीव्र गति से बढ़ चला। जल–पथों पर सार्थवाहों के उद्यम ने नगरों को श्री संपन्न कर दिया था।[13] बुद्धि में धनी, सत्य में निष्ठावान, साहस के भंडार, व्यवहारिक सूझ–बूझ में पगे हुये, उदार, दानी, धर्म और संस्कृति में रूचि रखने वाले, नई स्थिति का स्वागत करने वाले, देश विदेश की जानकारी के कोष, रीति–नीति के पारखी भारतीय सार्थवाह महोदधि के तट पर स्थित ताम्रलिप्ति से सीरिया की आन्तरिक नगरी तक, यवद्वीप कटाहद्वीप से चोल मंडल के सामुद्रिक पतनों और पश्चिम में यवन बर्बर देशों तक के विशाल जल थल पर छा गये थे।

सिन्धु देश के घोड़ों, रथ, ऊनी वस्त्र विदेशों में बहुत प्रिय थे। ऋग्वेद के एक मंत्र में "श्वश्वाः सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्यमयी सुबृता वाजिनीवती" कहा गया है। भारतीय प्रसाधन रोम की सुन्दरियों को बहुत प्रिय थे। आखिर रोम की सीनेट को इनके आयात पर प्रतिबन्ध लगाना पड़ा था। ई. पूर्व प्रथम शती से ई. शती तक यह व्यापार चरम सीमा तक जा पहुँचा था।

आर्थिक कार्यक्रम व्यक्ति का मानवीय सम्बन्ध ही नहीं बल्कि सामाजिक सम्बन्ध भी व्यक्त करता है। यह विचार मक्सबेबर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "दी स्टडी आफॅ सोशल एन्ड इकोनोमिक ओरगनाईजेशन" में व्यक्त किया है। वाणिज्य करने वाले श्रेणियों में संगठित थे। इन श्रेणियों के प्रधान आदर के पात्र थे। यह वह समय था जब भारतीय संस्कृति द्रव्य के युग में अवतीर्ण हो रही थी। वस्तुतः यह श्रेणियों का युग था। अंग के मैण्डिक, कौशल के अनाथपिंडक, कौशाम्बी के धोषक अतीव धनाढ़य व्यक्ति थे। ये धनाढ़य लोग श्रमणों के पोषक थे।

इन श्रेष्ठियों ने बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार में अमूल्य योगदान किया था। कौशल नरेश प्रसेनजित बुद्ध के अनुयायी थे। उधर श्रेष्ठियों में कोटिपति अनाथपिडंक, बौद्ध धर्म का अनुयायी था। उसने श्रावस्ती में जेतबन विहार का दान किया। विशाखा ने पुव्वाराम मिगार मातुपासाद का दान दिया। इस प्रकार धनाढ़यों के इस आश्रय से बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार में सहायता मिली।[14]

---

12. मनुस्मृति 8/131-136.
13. बुद्धिस्ट इंडिया–राइज डेविडस पृ. 103-105. इकोनोमिक लाइफ इन एनसियेन्ट इंडिया–जि. 2 भाग 3
14. सार्थवाह–डा. मोतीचन्द्र सार्थवाह की भूमिका डा. वासुदेवशरण अग्रवाल पृ. 2

मगधमौर्य काल प्राचीन भारत के आर्थिक विकास मे एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चरण का द्योतक है। यह वह समय था जब आर्थिक ढाँचे के आधारभूत सिद्धान्त रूप ग्रहण कर रहे थे।[15] लोहे का आविष्कार हो चुका था। सुत निपात नामक बौद्ध ग्रन्थ में एक ब्राह्मण की कथा आती है जिसके हल का फाल निरन्तर चलने से गर्म हो गया था।[16] पाणिनि ने अश्टाध्यायी में वासन्तिक तथा शारदीय फसलों के लिये विशेष शब्द दियें है। धान, जौ और गेहूँ की खेती बढ़ रही थी। पतंजलि ने मगध में धान की अत्यधिक खेती का वर्णन किया है। इस समय सिंचाई का विकास हुआ, नगरों का विकास हुआ तथा हर हस्तशिल्पियों का विस्तृत स्तर पर उदय हुआ।

ई. पूर्व की 6ठी शती से 3 ई.पूर्व तक अनेक नगर बने। उनकी शहर–पनाहें बनी और दुर्ग बने। यह सारा काम लकड़ी का था। कपड़ों की बुनाई, धातुकर्म, आभूषण–निर्माण, का कार्य शुरू हुआ। वाराणसी, मथुरा और उज्जैन का सूती कपड़ा उस समय श्रेष्ठ माना जाता था। गंधार ऊनी कपड़ों के लिये प्रसिद्ध था।

कुषाण और गुप्त काल में व्यापार और वाणिज्य में और भी वृद्धि हुई। वाणिज्य से संबंधित खीरा, पान, प्याज़, लहसुन, लोकी, कद्दू आदि का उल्लेख अमरकोश में आता है। दक्षिण भारत के मिर्च मसाले बड़े प्रसिद्ध थे जिनका निर्यात होता था।

लोहे के आविष्कार के कारण कृषि उपकरण बनाने में बड़ी सहायता मिली। पशु पालन इस समय खूब उन्नति पर था। इसी प्रकार मत्स्यपालन का धंधा निरन्तर उन्नति कर रहा था। बनारसी कपड़े और इत्र की बराबर मांग रहती थी। गंगा सिन्धु की घाटी आन्तरिक व्यापार का केन्द्र थी। विदेशी व्यापार भी तीव्र गति से बढ़ रहा था। भारत के लोग कुशल जहाजी थे। व्यापार अरब और भूमध्यसागर के देशों से होता था। भारत की काली मिर्च, इत्र, लकड़ी, कपड़े, निराले पशु पक्षियों की विदेशों में मांग बनी रहती थी।

5वीं शती के प्रारम्भ में विसिगोथ राजा अलेरिक ने रोम को घेर लिया था। वह भारत की काली मिर्च को मुक्ति–धन के रूप में मांग रहा था जो उसे दी गयी तो उसने रोम का घेरा उठाया। काली मिर्च के अलावा हाथीदाँत, रेशम, रत्न, शंख, कस्तुरी और लोहा भी बाहर भेजा जाता था।

गुप्तकाल भारतीय इतिहास में स्वर्ण काल के नाम से विख्यात है। इस समय देश धन–धान्य से पूर्ण था। कला और साहित्य नित नई ऊँचाईयों को छू रहे थे। वाणिज्य और व्यापार राजकीय संरक्षण में नित नयी प्रगति कर रहे थे। एक सशक्त शासन द्वारा

---

15. कारपोरेट लाइफ इन एनसियेन्ट इंडिया–मजूमदार, आर. सी.
16. डा. पांडेय–पूर्ववत् पृ. 56

प्रदत्त शान्तिमय वातावरण में कला, धर्म संस्कृति, वाणिज्य और व्यापार तीव्रगति से बढ़ते जा रहे थे। देश की यह समृद्धि एक सशक्त शासन पर अवलम्बित थी।

धीरे—धीरे गुप्तों का विशाल साम्राज्य छिन्न—भिन्न होने लगा। जगह—जगह छोटे सामन्त सर उठाने लगे। ऐसे ही समय पांचवी शती के अंतिम भाग में सशक्त विदेशी शक्ति का प्रबल ज्वार आया। आभीरों ने शकों और शातवाहनो को कुचल दिया और पश्चिम में अपना दृढ़ राज्य स्थापित किया। वे अपने आपको कृष्ण से संबंधित और यदुवंश का बतलाते थे। दूसरी ओर गुर्जर और जाट बहुत प्रभावशाली हो गये। आभीर और गुर्जर पूर्व और दक्षिण में फैल गये। गुर्जरों ने काफी अरसे तक घुमक्कड़ आदतें अपनाये रखी। आगे चलकर अधिकांश पंजाब में बस गये। इस प्रकार देश के विभिन्न भू—भाग देशी विदेशी लघु राजवंशों की रौंद सहते रहे। यह वह समय था जब एक सुदृढ़ केन्द्रीय सत्ता के अभाव के कारण वाणिज्य व्यापार और उत्पादन के साधनों को करारी चोट सहनी पड़ी थी। आभीर गुर्जरों के बाद हूण आये। ये चीन के कानन्सू प्रान्त में बसे हुये थे। उन्होंने पड़ोस के यूएह—ची कबीले को उखाड़ फेंका जो जान लेकर भागे। ये लोग शकों से भिड़ पड़े। शक वहाँ से भागे तो उनकी पदचाप से अनेकों साम्राज्य थहरा गये। हूण जिधर गये तहलका मचा दिया। भारत में आये तो गुप्त साम्राज्य को भूमिसात कर दिया।

7वीं शती में हर्ष का सशक्त शासन आया जिसके कारण देश में फिर चैन—अमन कायम हुआ। हर्षवर्द्धन के पिता प्रभाकरवर्द्धन ने गुर्जरों को पराजित किया। बाण-भट्ट् के हर्ष चरित में प्रभाकरवर्द्धन को "गुर्जरों का शत्रु" बताया गया है। अल्पकाल जीवी हर्ष के साम्राज्य के बाद फिर देश छोटे-छोटे खण्ड़ों में बँट गया। आगे चलकर प्रतिहारों की शक्ति का उदय हुआ। चौहान, चंदेल, तँवर, परमार, सिसोदिया आदि इनके सामन्त थे। दक्षिण के राष्ट्रकूटों से इनका निरन्तर संघर्ष चलता रहता था। धीरे—धीरे यह साम्राज्य भी क्षीण हुआ और उसके सामन्त स्वतंत्र हो गये। चन्देल विद्याधर ने प्रतिहार नरेश का वध कर इस सत्ता का अन्त 11 वीं शती में कर दिया। यह वह समय था जब मुहम्मद गज़नवी भारत पर प्रतिवर्ष हमले कर रहा था। उत्तरी भारत उस समय चन्देल, परमार, चौहान, कच्छपघाट आदि शक्तियों के लघु शासनों का अनुभव कर रहा था।

ऊपर के विवरण से यह स्पष्ट है कि हर्ष के अंत से लेकर मुहम्मद गज़नवी के हमलों तक का समय व्यापार वाणिज्य के लिये विशेष अनुकूल नहीं रहा था। राज्यों की सिकुड़ी हुई सीमा में सीमित वाणिज्य होता था। उत्पादन भी अनेकों सुविधाओं के अभाव में गिर रहा था। इसी आर्थिक और राजनैतिक विपन्नता की अवस्था में एक

ऐसी शक्ति का संपर्क इस देश से हुआ जिसके अनेकों आक्रमणों की मार से यह देश चरमरा उठा। यह भाग्य की विडम्बना ही थी कि महमूद गज़नवी के आक्रमण का सामना करने के लिये एक भी सशक्त राज्य नहीं था।

इसका कुफल यह हुआ कि विदेशी आक्रांता देश का दीर्घकाल से संचित धन लूट कर ले गया. जिससे गज़नवी की शान शौकत में चार चाँद लगे।

महमूद यद्यपि अपने अनेकों हमलों में असीम धनराशि लूटकर ले गया था पर इससे भारत का आर्थिक ढाँचा क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। सुरक्षा के अभाव में विदेशी व्यापार ठप्प पड़ गया पर उत्पादन की प्रक्रिया पर कोई विनाशकारी प्रभाव नहीं पड़ा। महमूद झंझावात की तरह आया था जो सबको सहसा धूलि धूसरित कर लौट गया। भारतीय जन–जीवन इस चोट को सहेज ही रहा था कि उत्तर की ओर से एक और बज्रपात हुआ जिसने इस देश को सदा–सदा के लिये परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ दिया।

महमूद के बाद आनेवाली शक्ति भी इस्लामी थी। मोहम्मद गौरी भारत की असीम संपति का आकांक्षी था, पर लूटने नहीं राज्य करने आया था। सन् 1192 (1249 वि.) में सम्राट पृथ्वीराज चौहान की गौरी के समक्ष पराजय हुई और उत्तर का अधिकांश भू–भाग विदेशी आक्रांता के अधीन हो गया। इस संक्रांति काल में देश के आर्थिक ढांचे को भी करारी चोट लगी थी। थोड़े समय के लिये व्यापार वाणिज्य भी ठप्प पड़ गये थे। गौरी के बाद गुलाम, खिजली, तुगलक, सैयद और पठान तथा तत्पश्चात् सन् 1526 (1583 वि.) में मुगलों का शासन इस देश में हुआ। मुस्लिम शासकों ने यद्यपि धर्म, कला, संस्कृति के क्षेत्र में अमूल्य योगदान किया था पर आर्थिक तंत्र को विकसित करने का अपना साधन उनके पास नहीं था। फलस्वरूप सदियों से चलता आया आर्थिक ढाँचा उसी रूप में बना रहा। व्यापार वाणिज्य अधिकतर हिन्दु व्यापारियों के हाथों में ही रहा इन बादशाहों ने कठोर कर प्रणाली अपनायी और करा धान द्वारा उत्पादन का एक बड़ा अंश वे लेते रहे। मुगलकाल की बढ़ी हुई सुरक्षा ने व्यापार वाणिज्य के लिये फिर एक नया अनुकूल वातावरण पैदा किया। व्यापारिक पथों की सुरक्षा की गयी ताकि एक प्रांत से दूसरे प्रांत को माल का अबाध संचरण होने लगे।

मुगलकाल के प्रारम्भ होने के बाद और पहले भी अनेक हिन्दुराज्य स्थापित थे जहाँ व्यापार के लिये समुचित संरक्षण प्राप्त था। स्वयं मुगल शासक कुछ अपवादों को छोड़कर व्यापार वाणिज्य की प्रगति में सहायक होते थे। व्यापारी एक स्थान से दूसरे स्थान में संक्रमण करते थे जब पहले स्थान की उपयोगिता समाप्त हो जाती थी। अधिकांश लोग उन राजमार्गों पर बसने का प्रयत्न करते जहाँ से व्यापारिक काफिले

या सार्थवाहों का समूह माल लेकर निकलते थे। देश के अनेक स्थानों में व्यापारिक मंडियाँ बनी हुई थीं इनके आसपास के साधन भी व्यापारियों के आकर्षण के केन्द्र बने हुये थे।

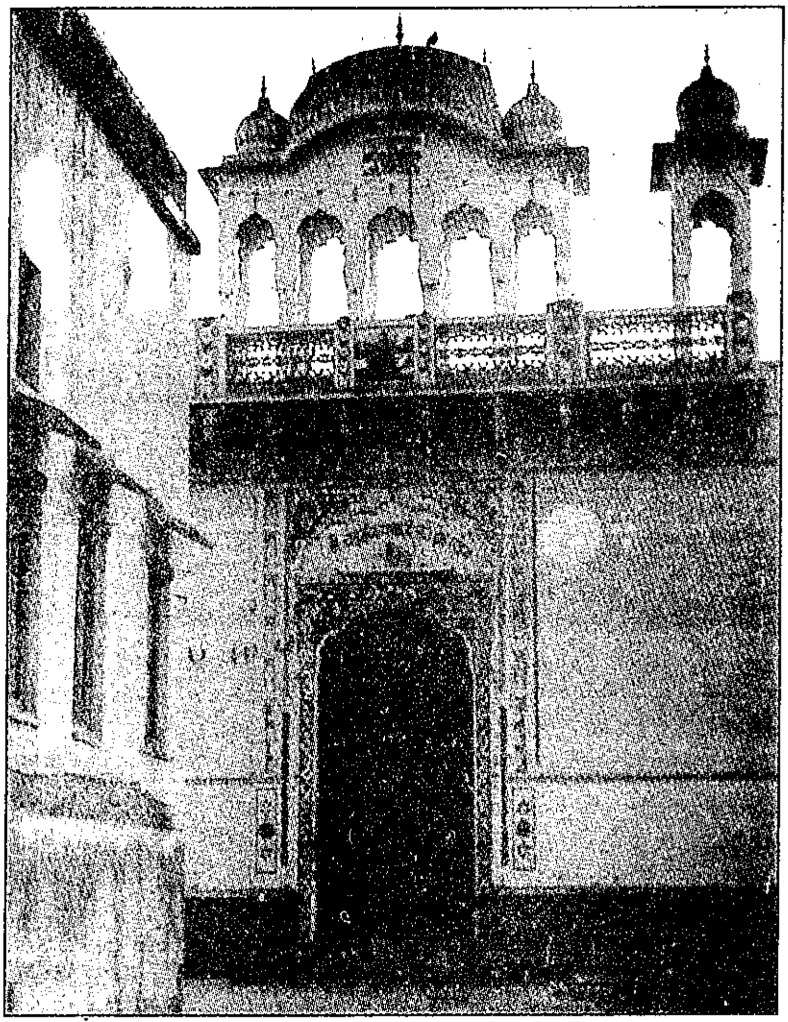
इस प्रकार देश के विभिन्न भागों में विदेशी शासन के अंतर्गत भी व्यापारिक नियंत्रण किसी एक वर्ग विशेष के हाथ में नहीं रहा। धर्म और जाति के आधार पर व्यापारिक नियंत्रण मुस्लिम शासकों को स्वयं को भी ठीक नहीं प्रतीत होता था अतः जगह–जगह वे लोग आगे आये जो पुश्तैनी रूप से इस पेशे में लगे थे। कहना नहीं होगा कि वैश्य लोग ऐसे लोगों में अग्रगण्य थे। राजस्थान और उससे लगे पंजाब में अनेक वैश्य परिवार बसे हुये थे जो समय–समय पर अधिक अनुकूल स्थानों पर परिव्रजन करते रहते थे।

डॉ. रतनलाल मिश्र

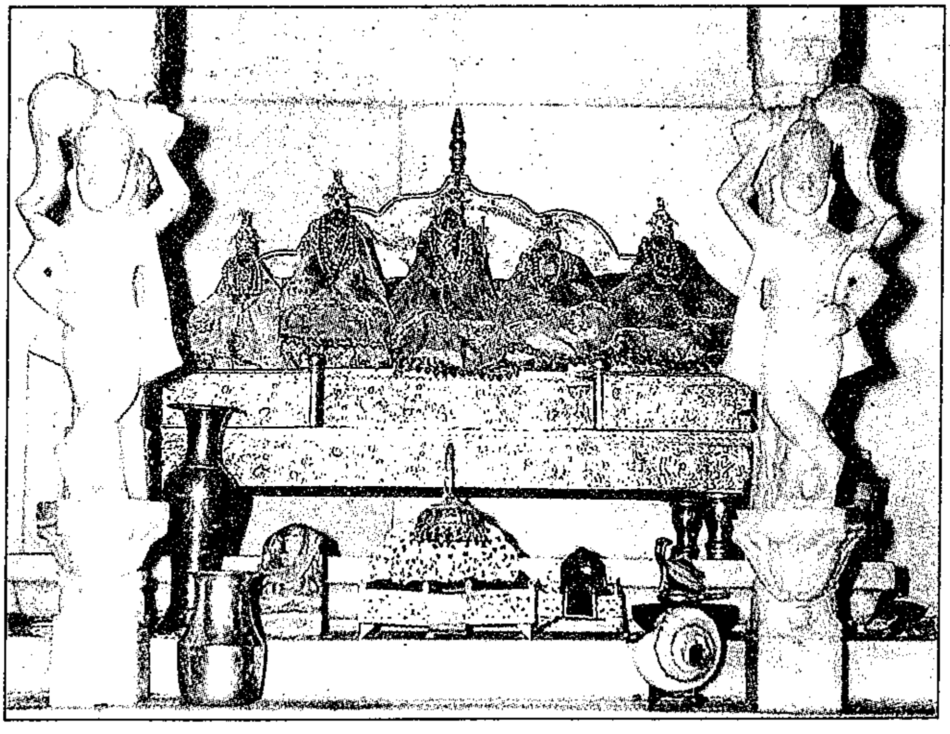


गनेड़ीवालों के ईष्ट देव श्री सालासार हनुमानजी

गनेड़ीवालों की कुलदेवी श्री चतुर्भुजा माता माई मन्दिर, (फतेहपुर)

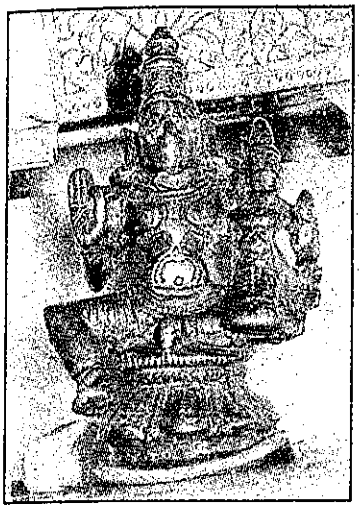


मुख्य द्वार



श्री चतुरभुजा माता माई मन्दिर, फतेहपुर के विग्रह

श्री चतुर्भुजा माता माई मन्दिर
फत्तेहपुर के विग्रहों के अलग-अलग चित्र



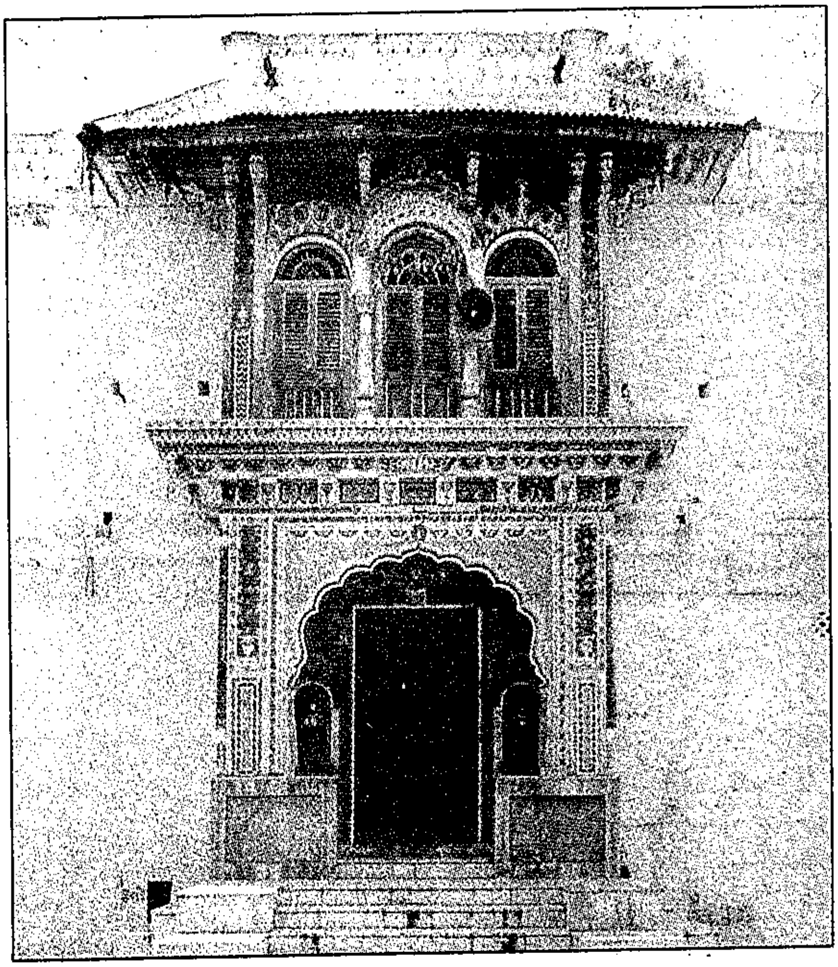


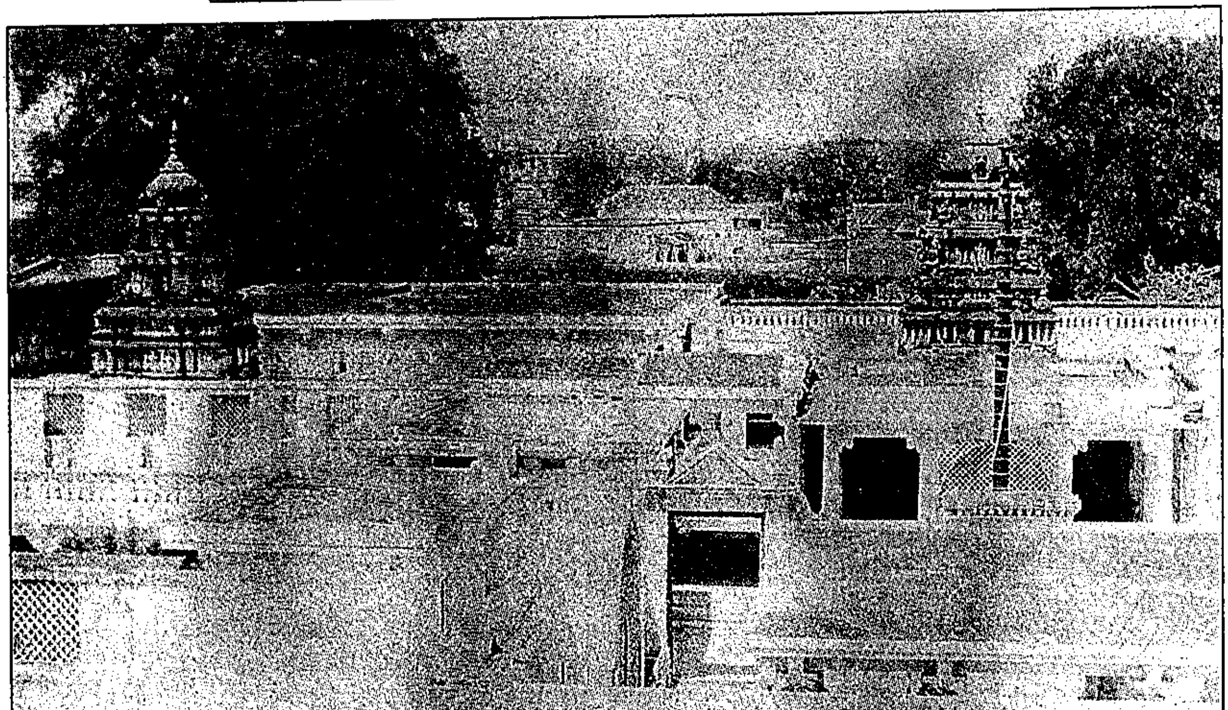




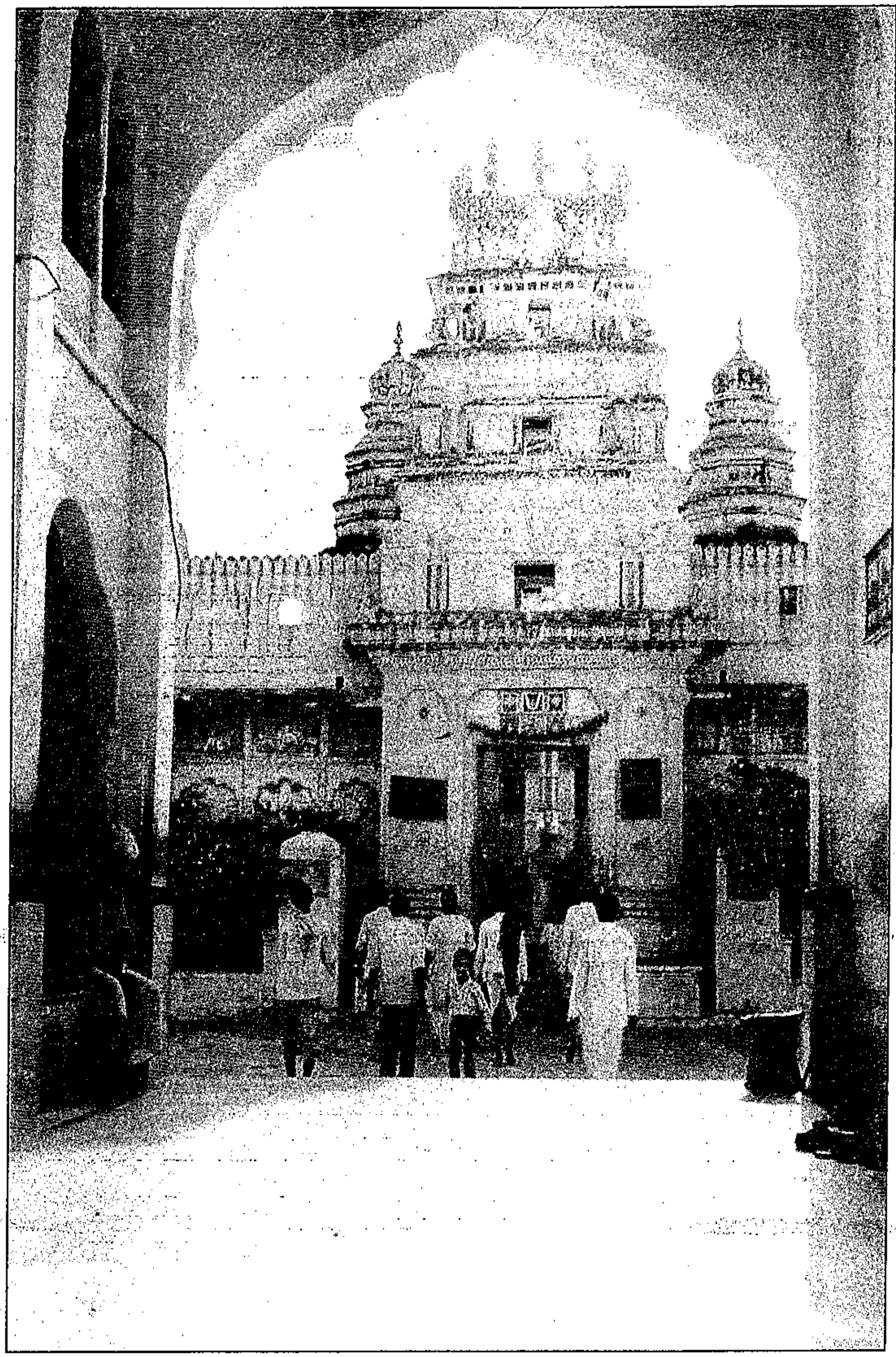


गनेड़ीवालों द्वारा निर्मित कुछ भव्य मन्दिरों के चित्र

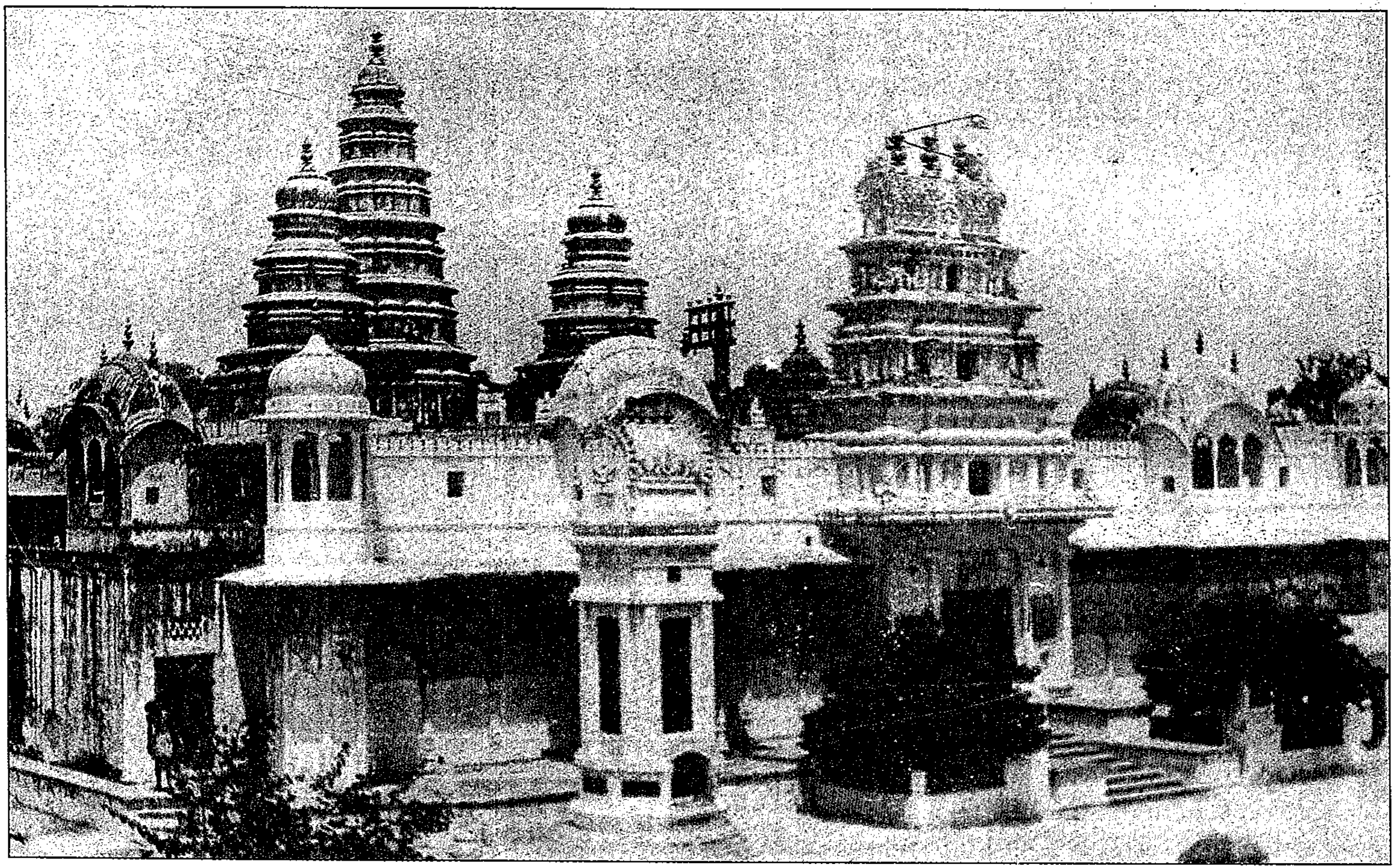




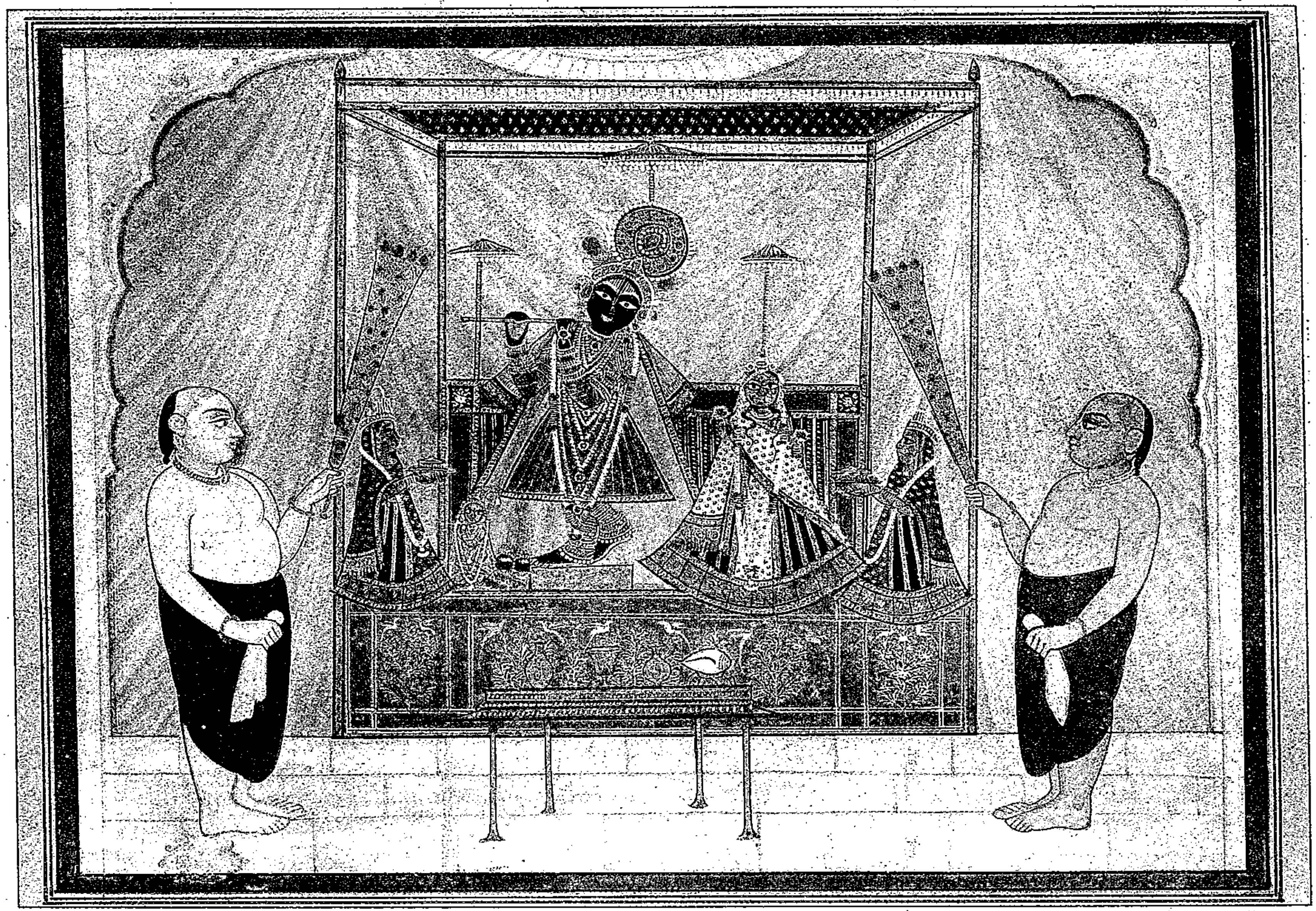
सेठ पूर्णमलजी गनेड़ीवाला द्वारा सन् १८३० ई. में हैदराबाद में निर्मित
श्री सीतारामजी मन्दिर का मुख्य द्वार एवम् विहंगम दृश्य



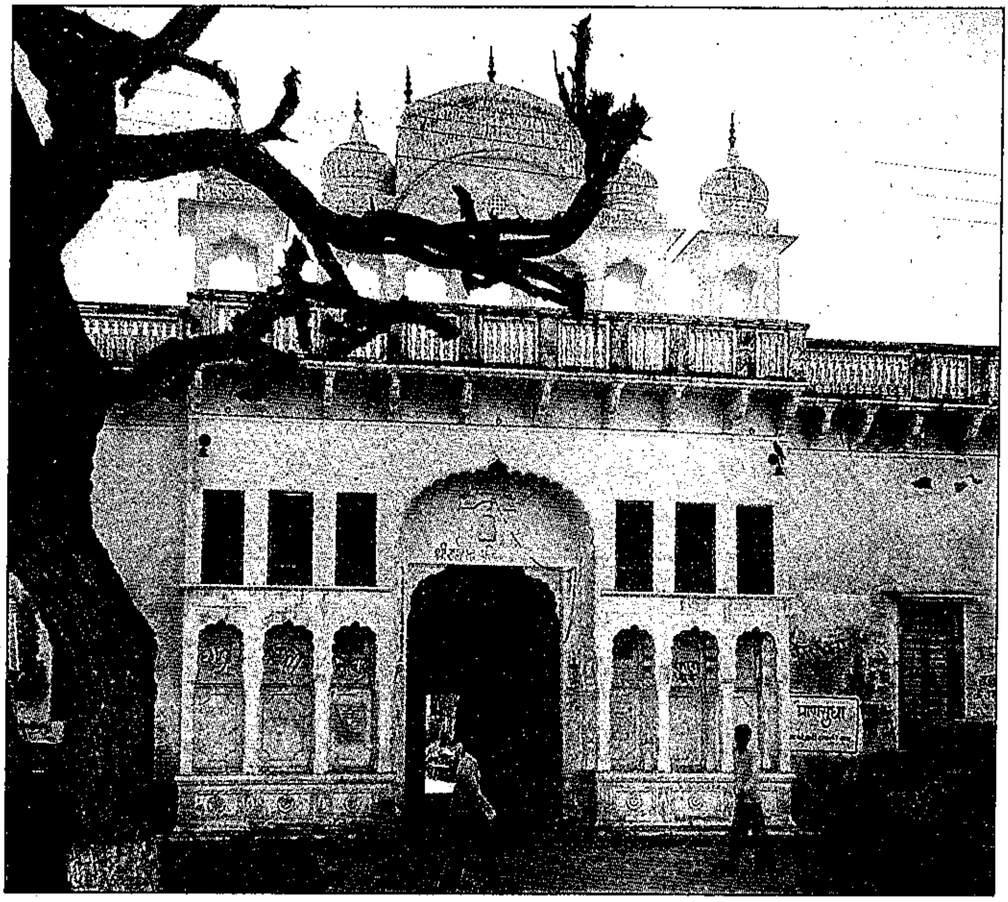
सेठ पूर्णमलजी गनेड़ीवाला द्वारा सन् १८४० ई. में श्री पुष्करजी में निर्मित
श्रीरंगजी के मन्दिर का मुख्य द्वार

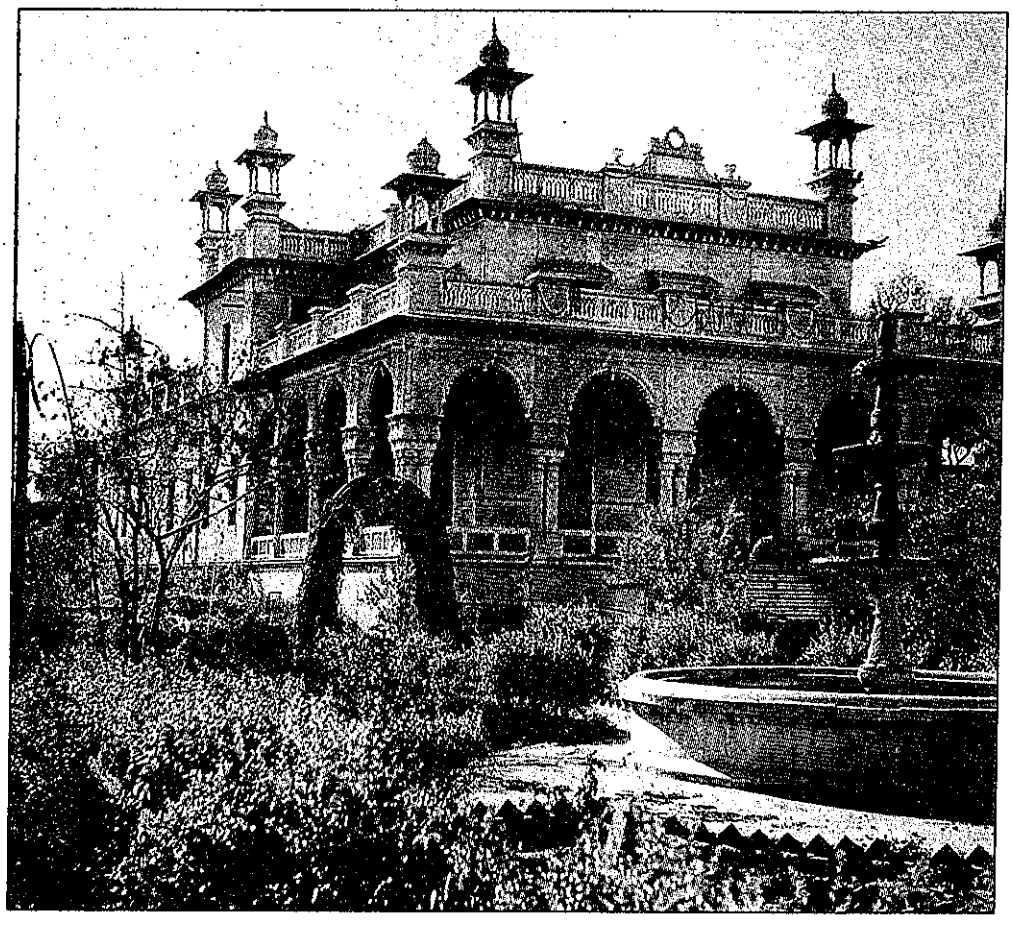


सेठ पूर्णमलजी गनेड़ीवाला द्वारा सन् १८४० ई. में श्री पुष्करजी में निर्मित
श्रीरंगजी के मन्दिर का मुख्य द्वार एवम् विहंगम दृश्य

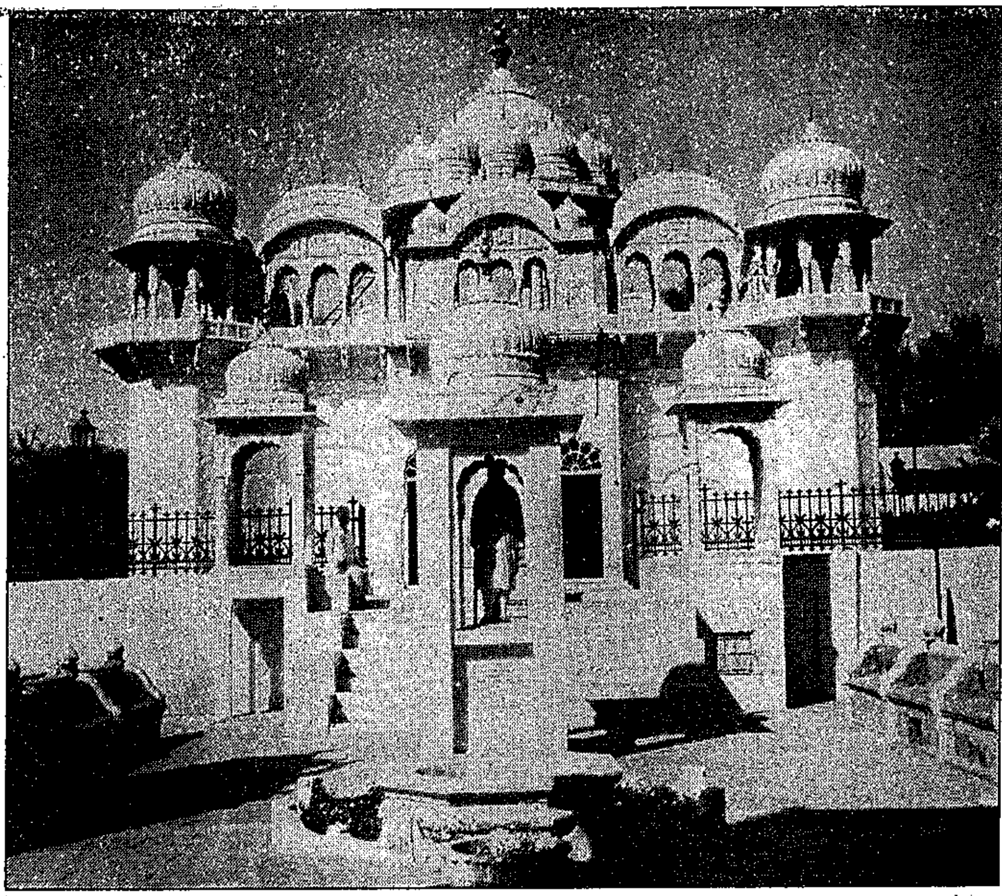


भगवान रंग जी मन्दिर (पुष्कर)
चंवर लिए हुए सेठ पूर्णमलजी गनेड़ीवाला एवम् सेठ प्रेमसुखदासजी गनेड़ीवाला

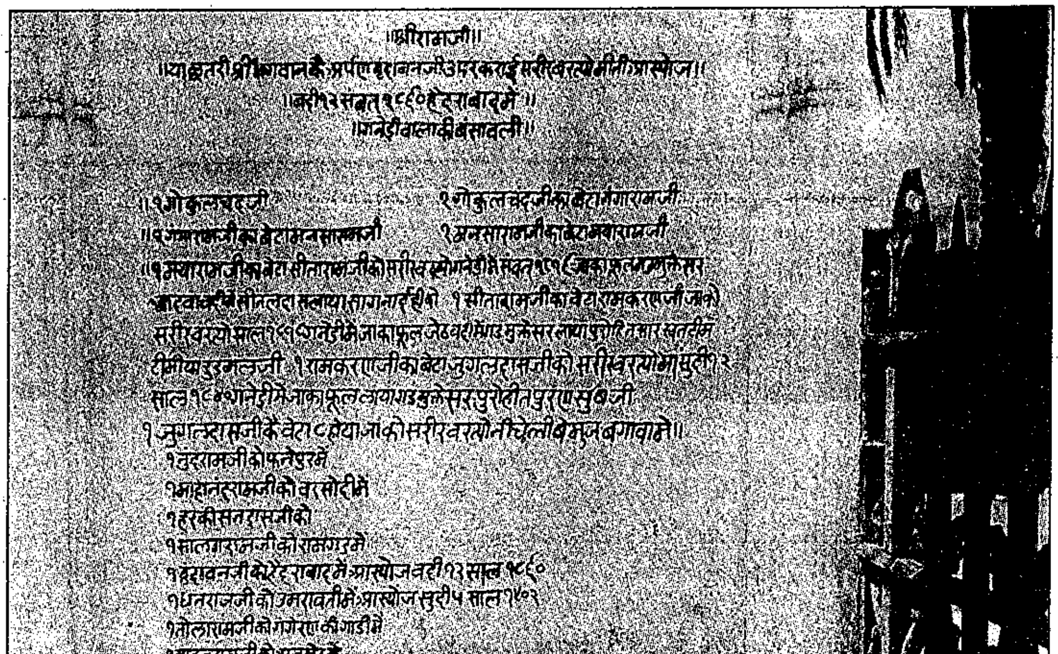




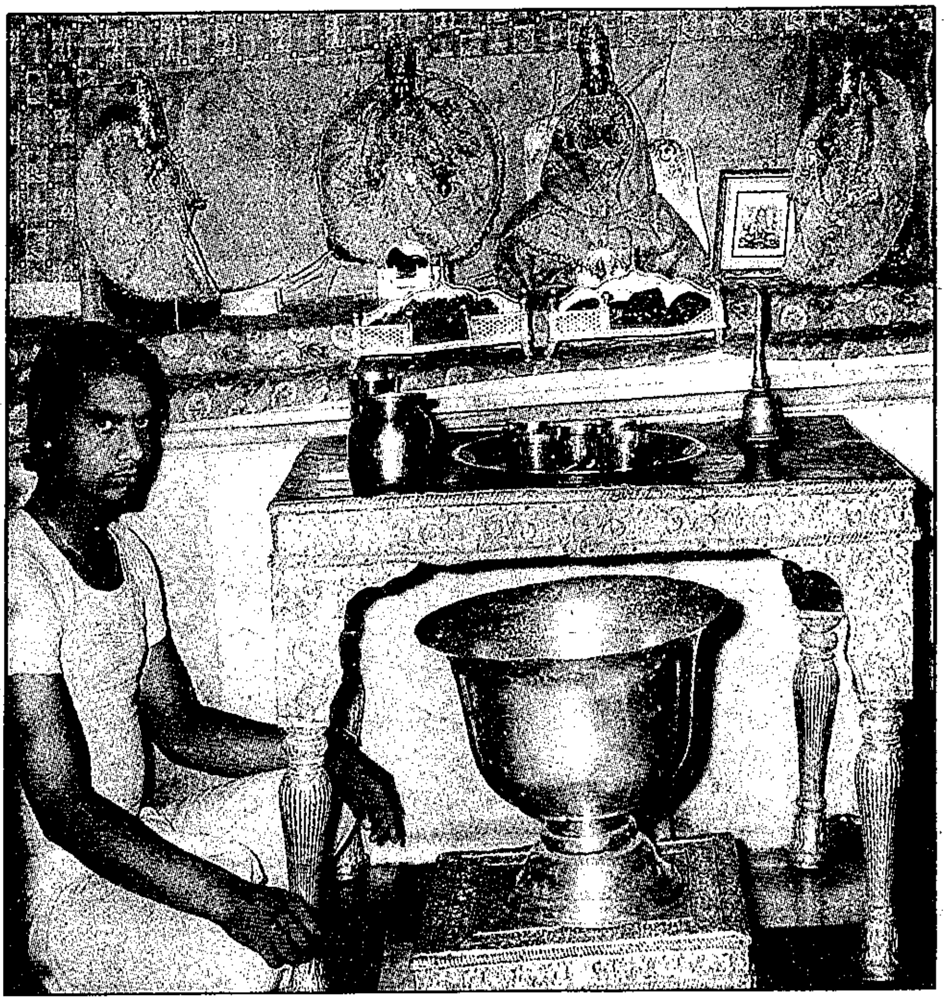
रतनगढ़ में श्री सीतारामजी के मन्दिर का मुख्य द्वार एवम् विहंगम दृश्य



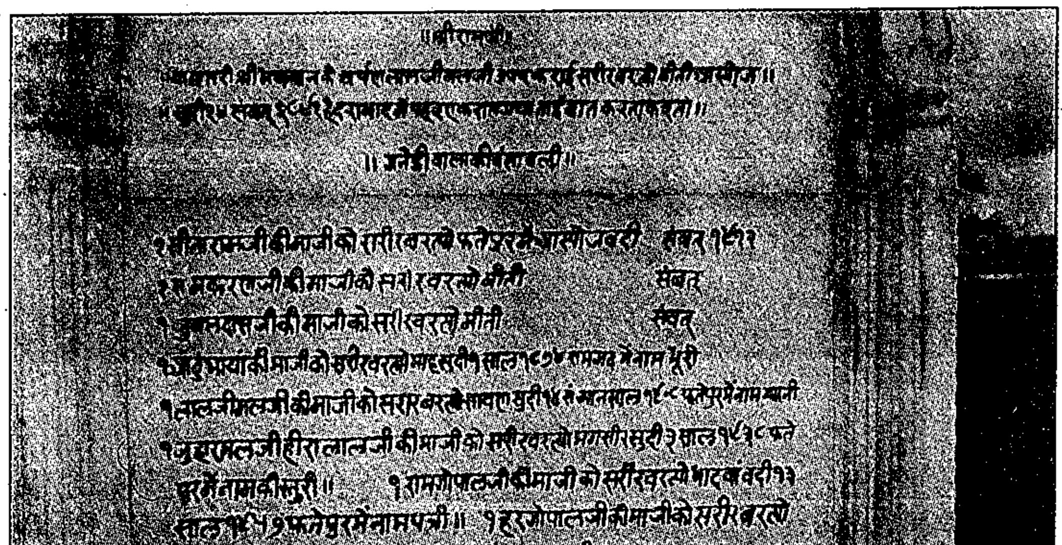
फतेहपुर में श्रीरामगोपालजी गनेड़ीवाला की छत्री के नाम से प्रसिद्ध
श्री बद्रीनारायण जी का भव्य मन्दिर



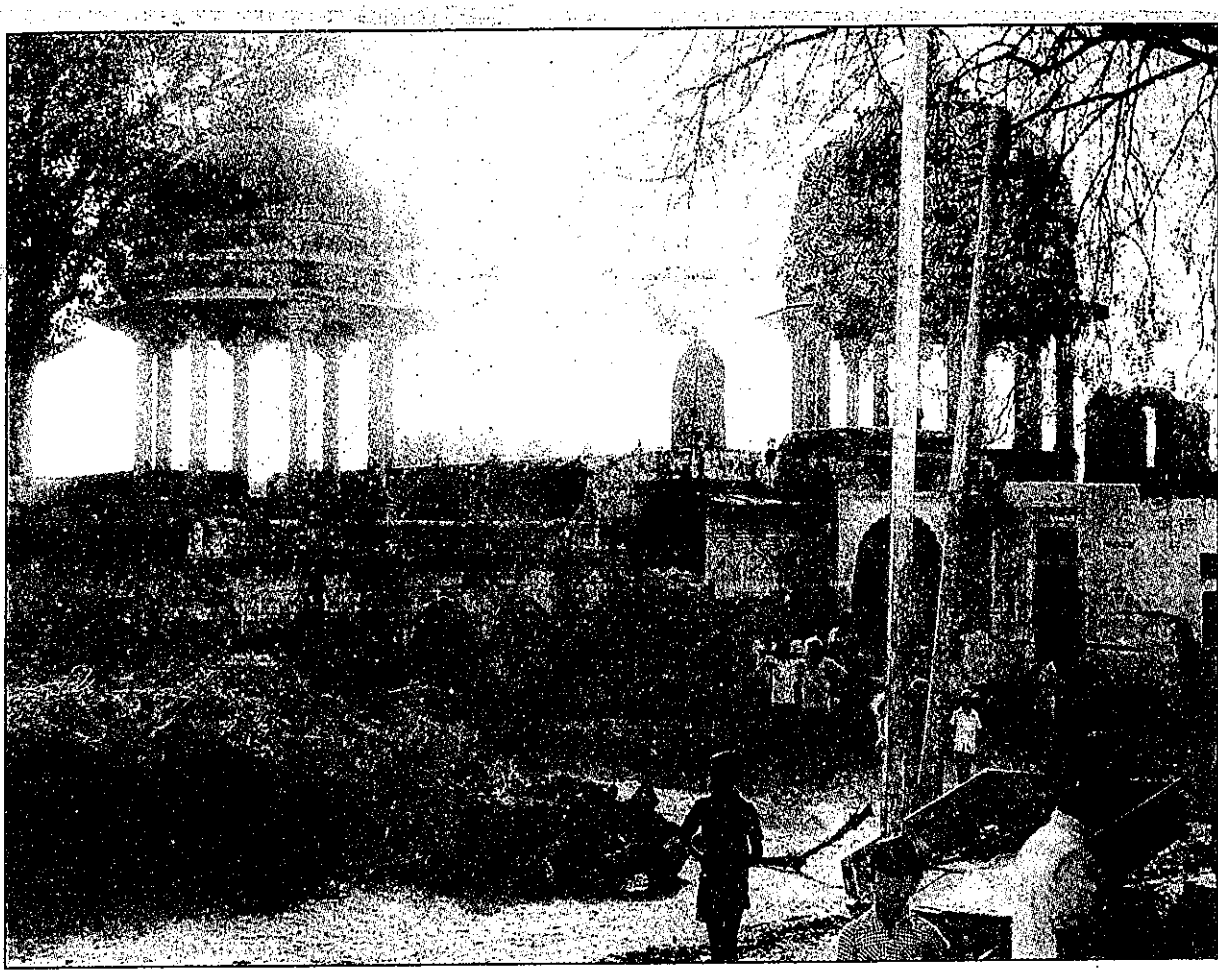
फतेहपुर में श्रीबद्रीनारायण जी मन्दिर में शिलालेख



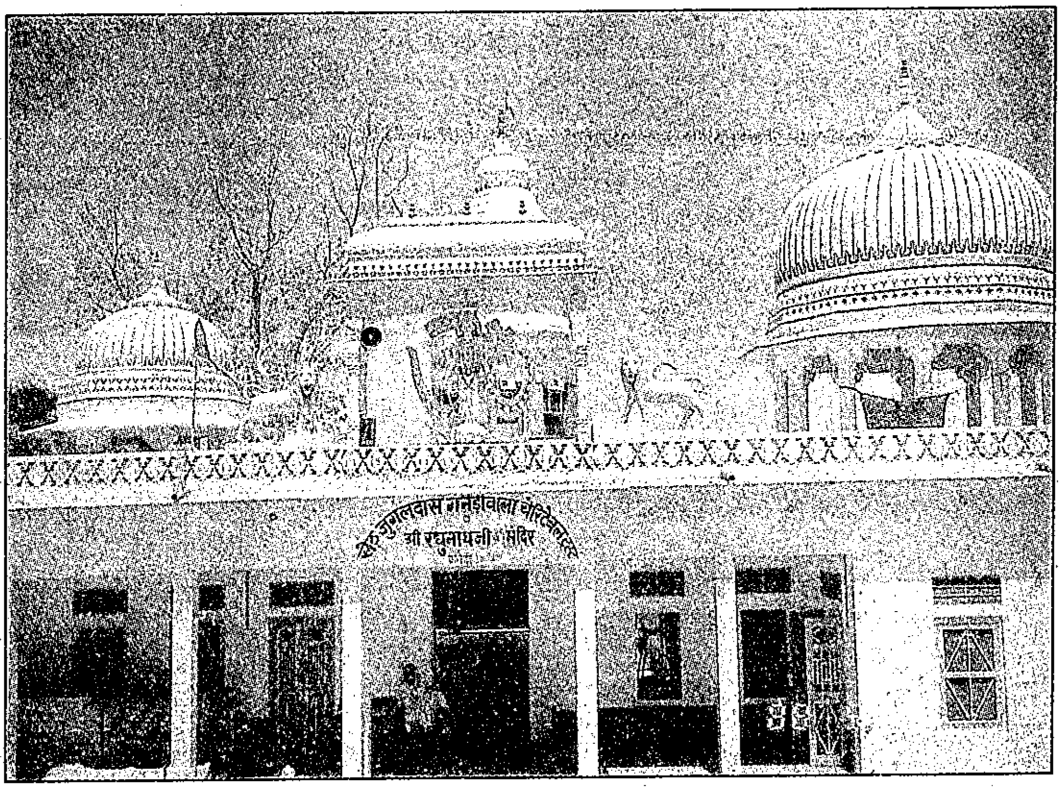
फतेहपुर में श्रीरामगोपालजी छत्री में श्री बद्रीनारायणजी मन्दिर के विग्रहों के चित्र



फतेहपुर में श्रीबद्रीनारायणजी के मन्दिर में शिलालेख

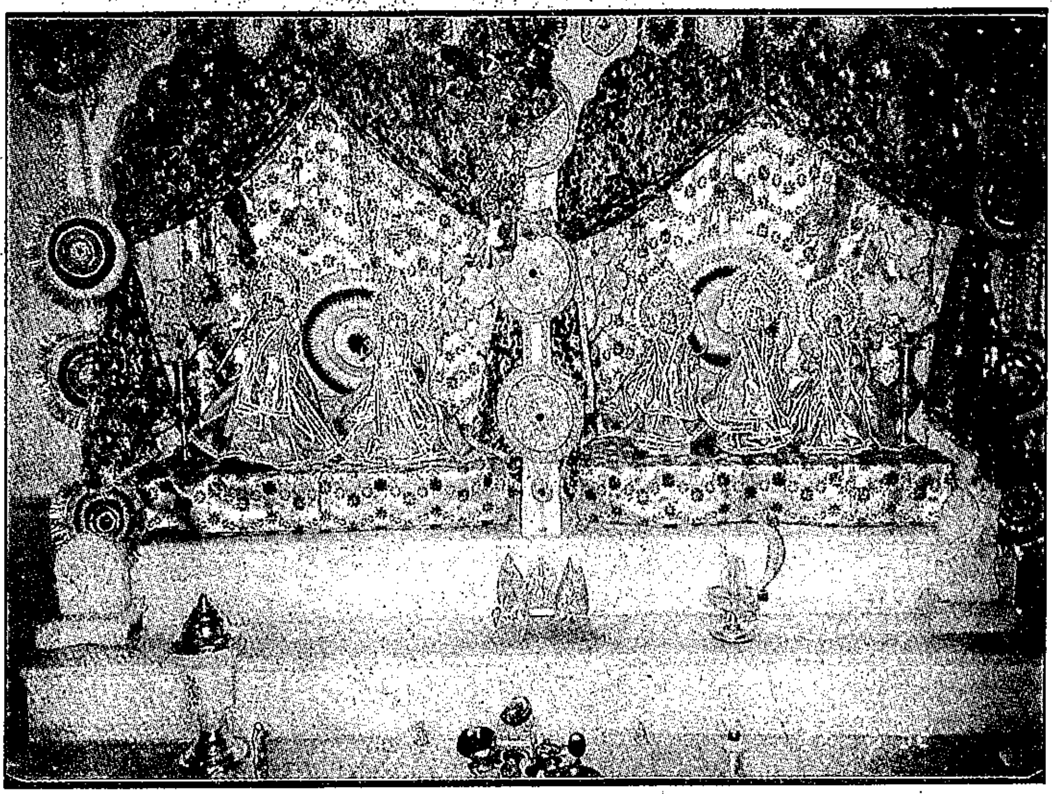


जीर्णोद्धार से पूर्व गनेड़ी में श्रीरामजी का मन्दिर



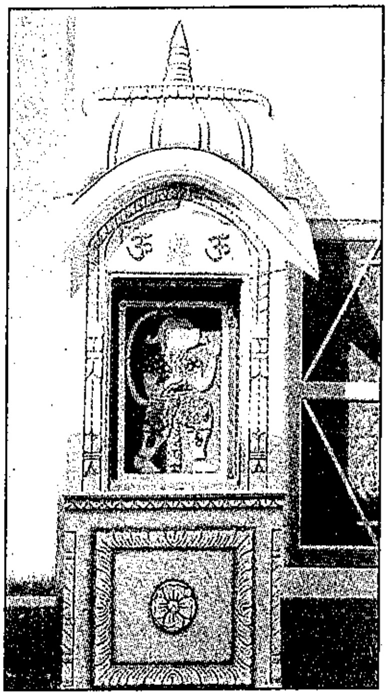
सन् १९८४, ८५ ई. में जीर्णोद्धार के उपरान्त श्रीरामजी का मन्दिर गनेड़ी

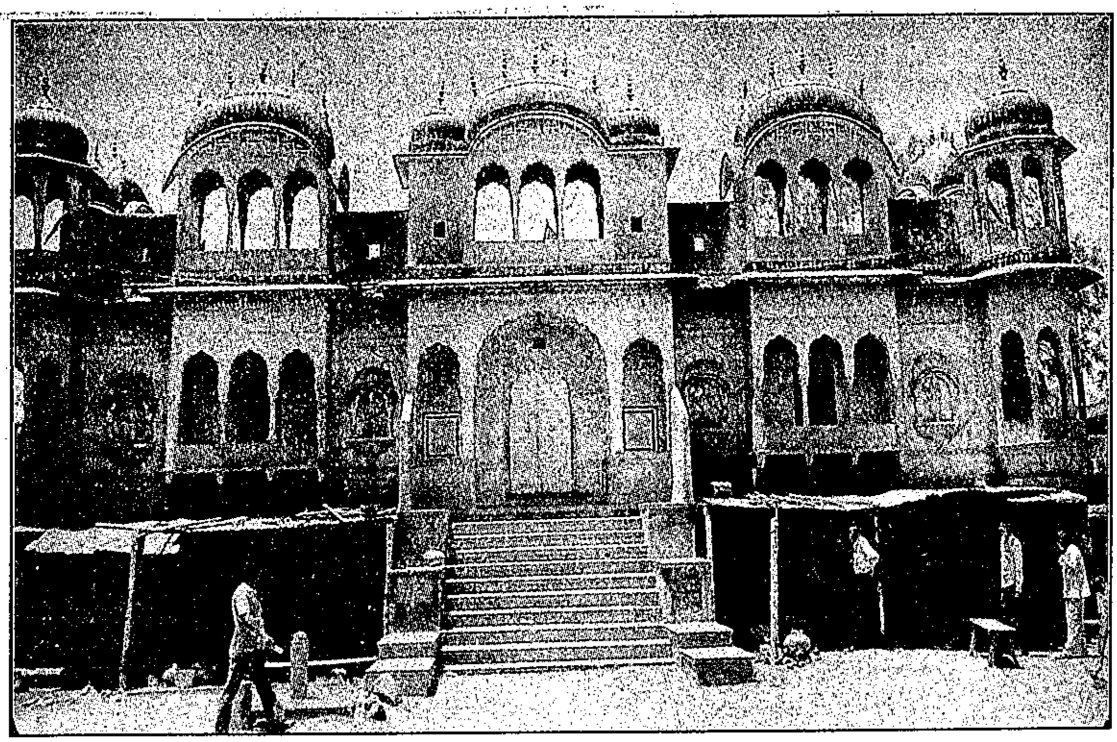
श्रीरामजी मन्दिर गनेड़ी में श्रीविग्रहों के चित्र



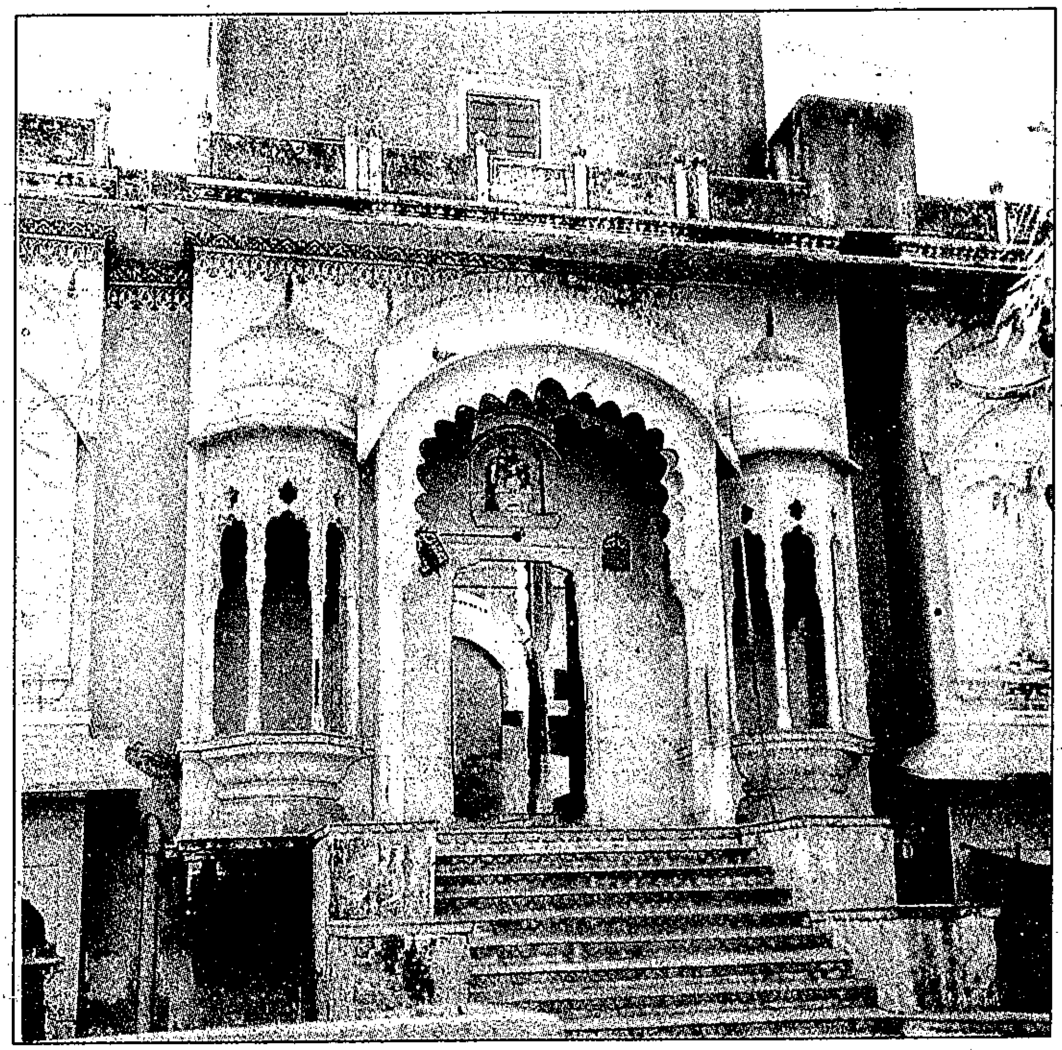




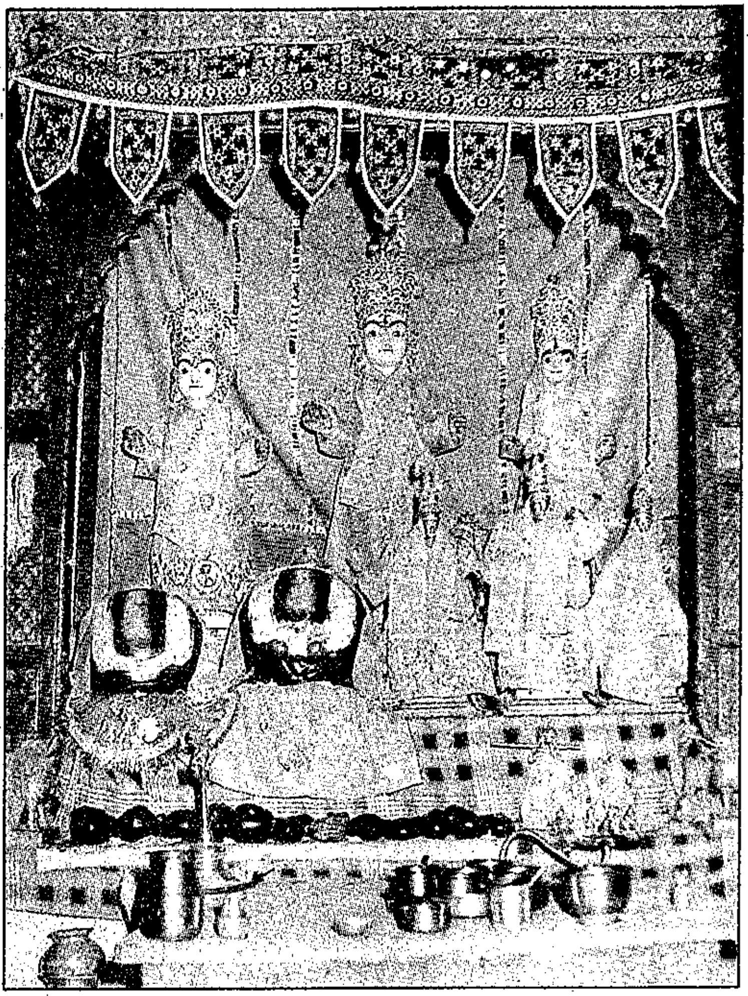




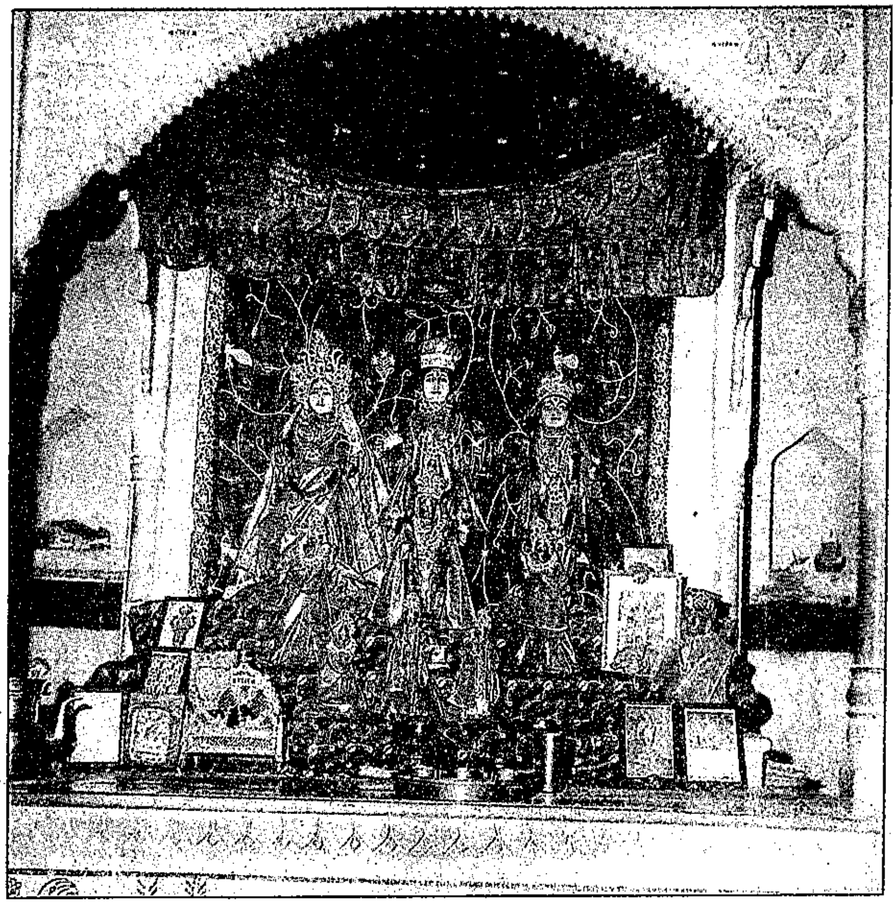
श्री मुरलीमनोहरजी का मन्दिर, लक्ष्मणगढ़



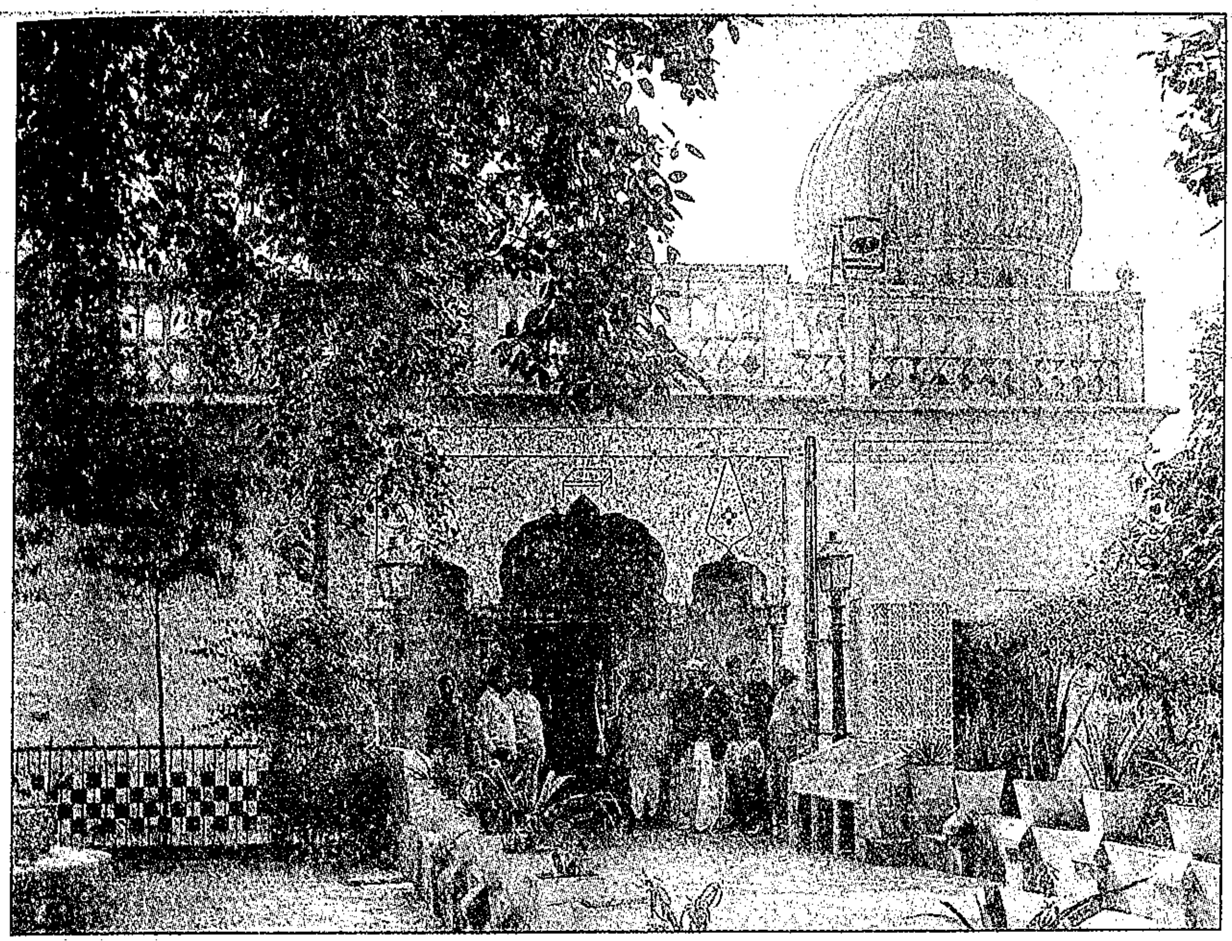
श्री बेणीमाधवजी मन्दिर मुकुन्दगढ़ का मुख्य द्वार



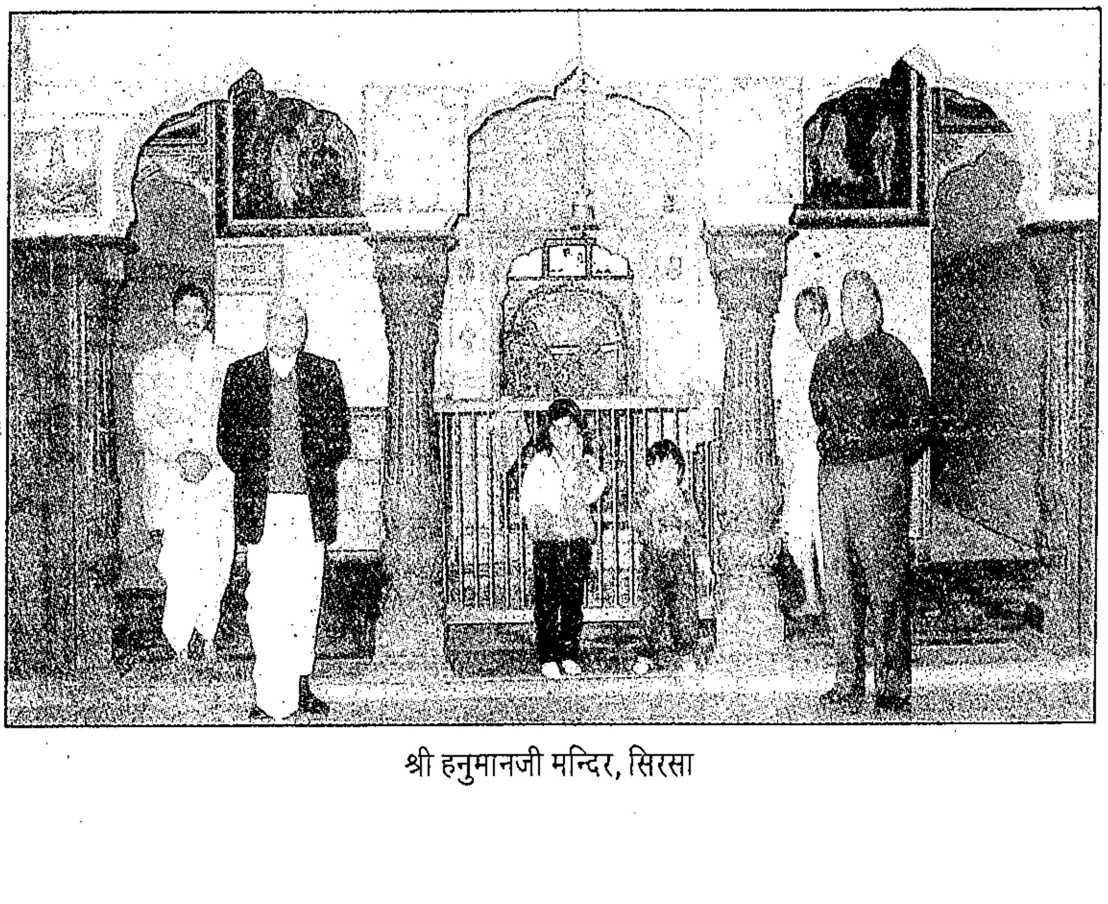
श्री सवामन सालिगरामजी का मन्दिर,
वृन्दावन



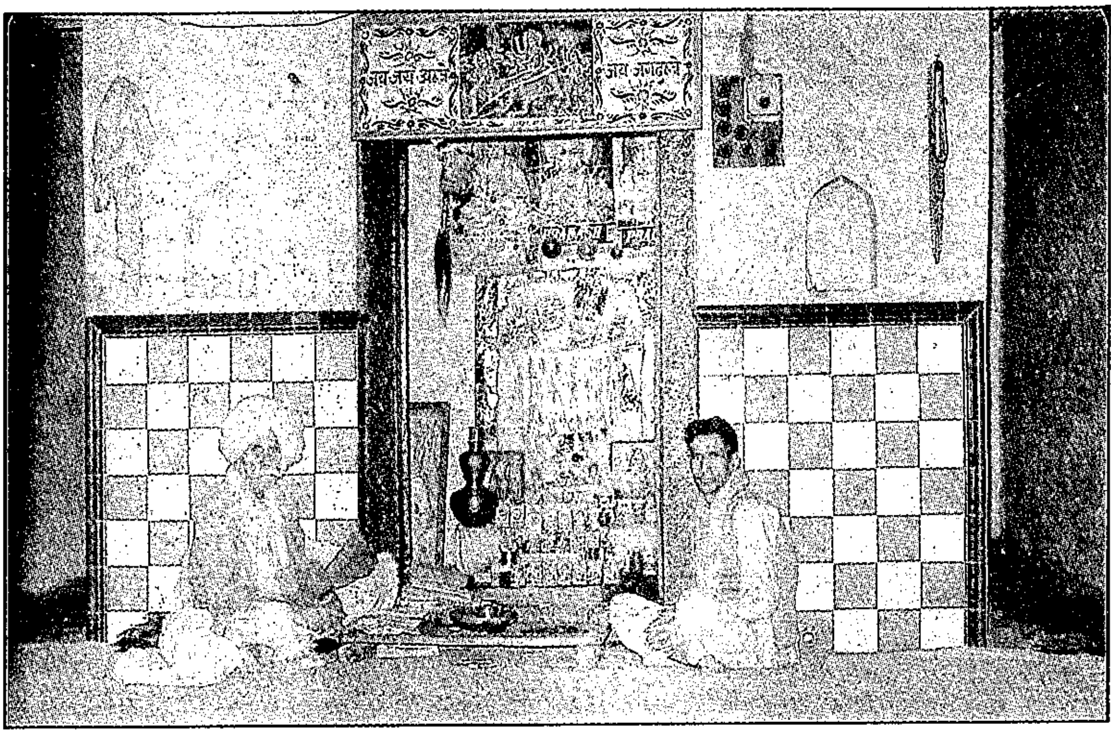
श्रीरामजी का मन्दिर,
अयोध्या



श्री हनुमानजी के बड़े मन्दिर का मुख्य द्वार (सिरसा)



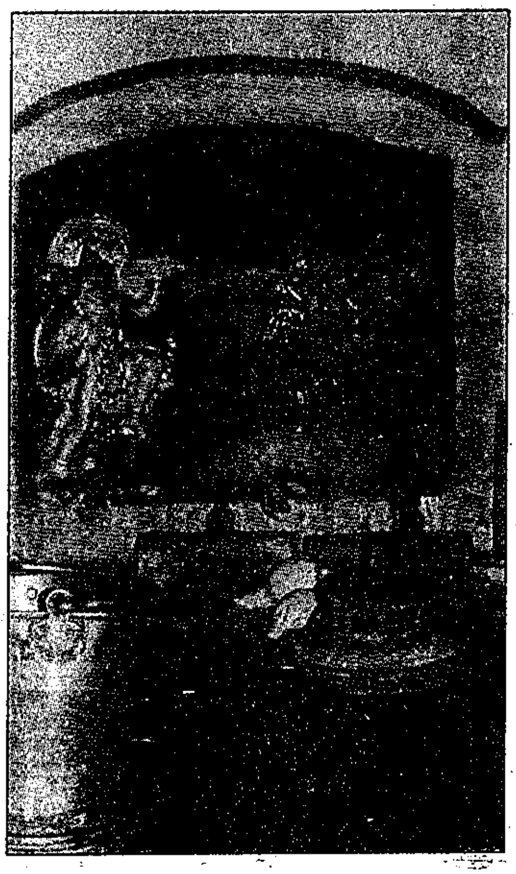
श्री हनुमानजी मन्दिर, सिरसा



सिरसा में श्री हनुमानजी का दूसरा मन्दिर



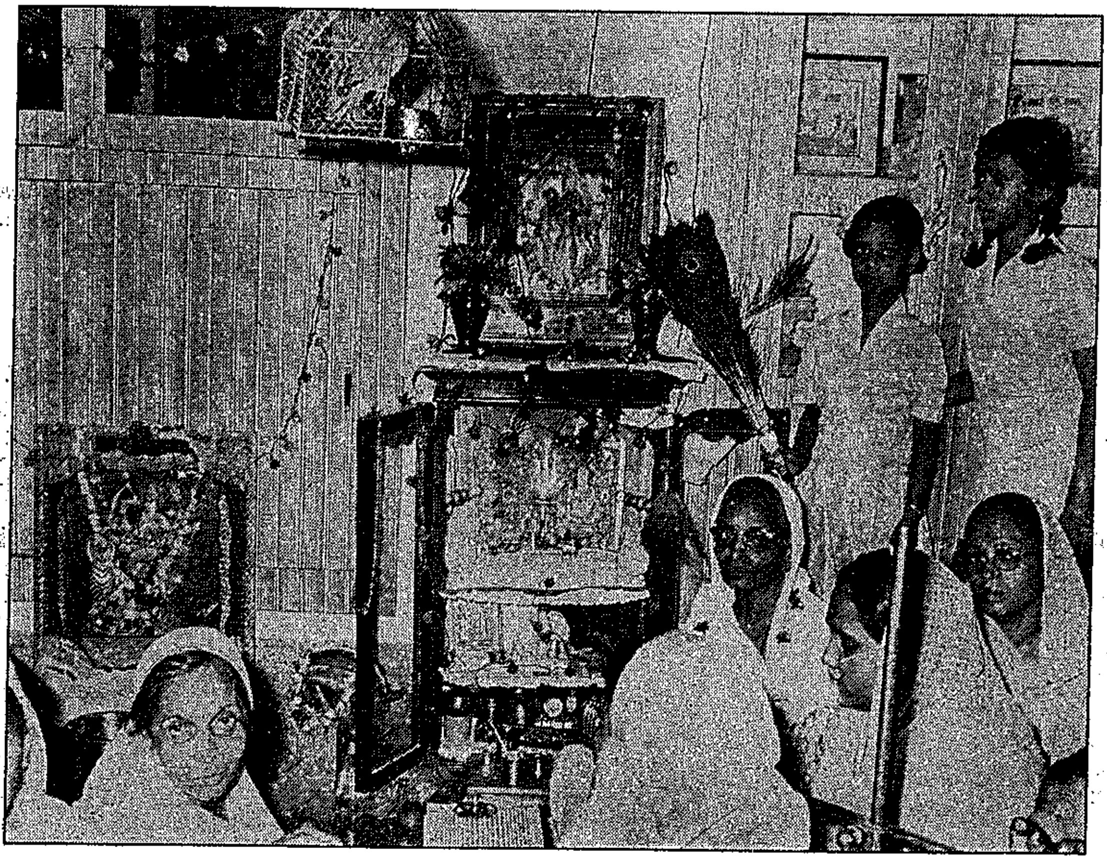
श्री राधाकृष्ण मन्दिर, ग्राम फतेहपुरिया (सिरसा)



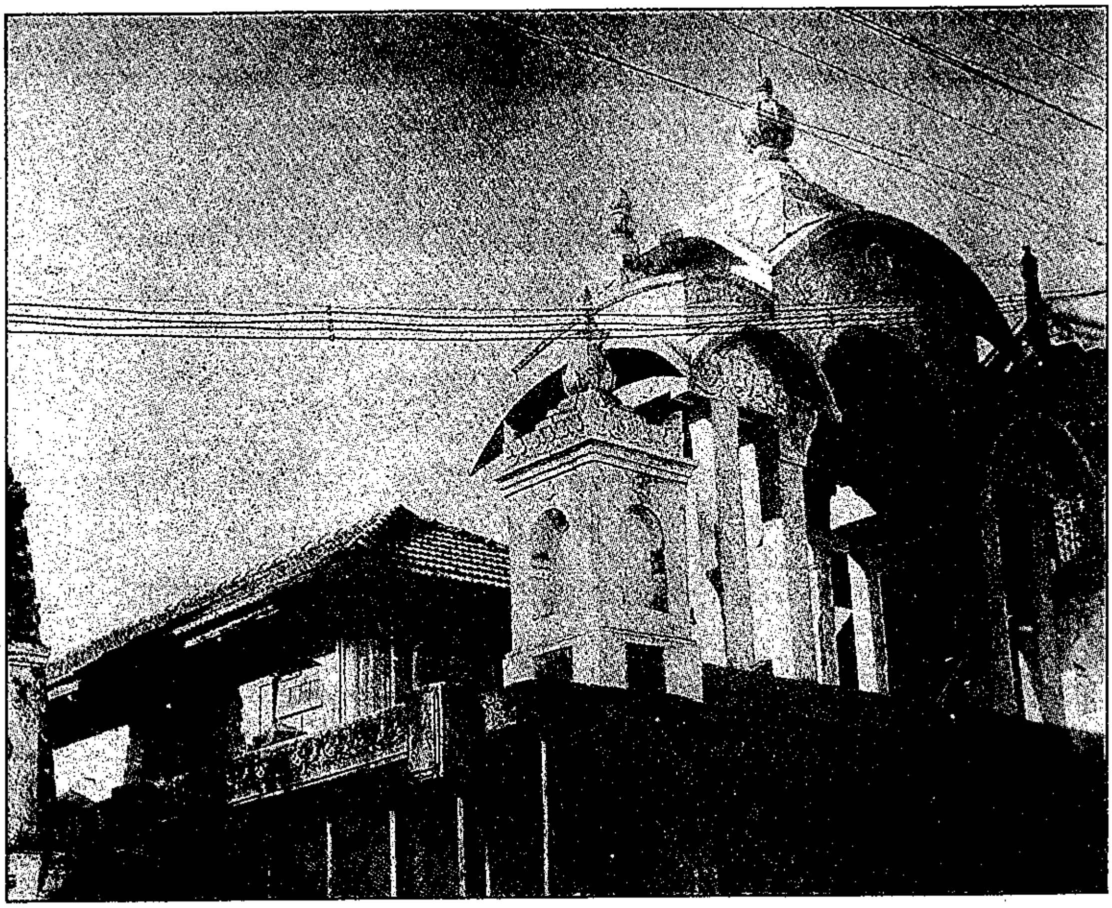
श्री हनुमानजी का मन्दिर,
ग्राम बालासर (सिरसा)



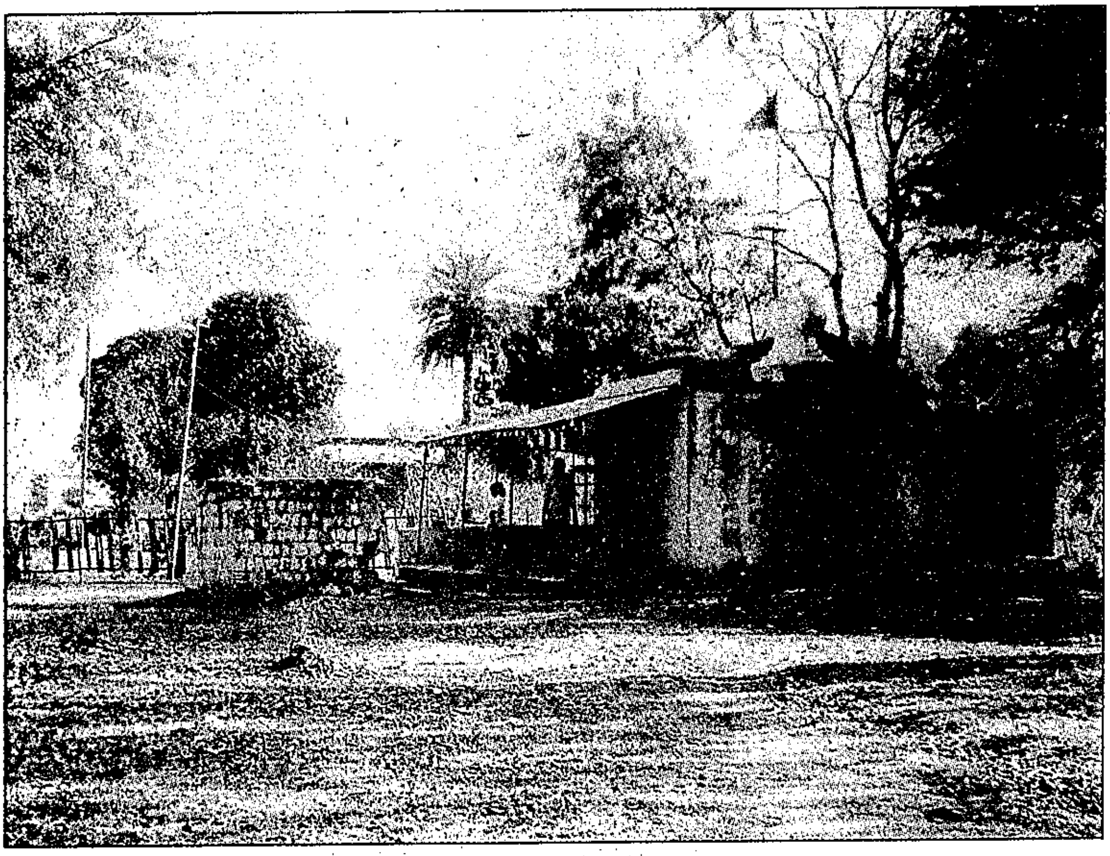
श्री रामगोपालजी गनेड़ीवाला की धर्मपत्नी द्वारा
गिरिडीह (बिहार) में निर्मित
श्री राधाकृष्ण मन्दिर



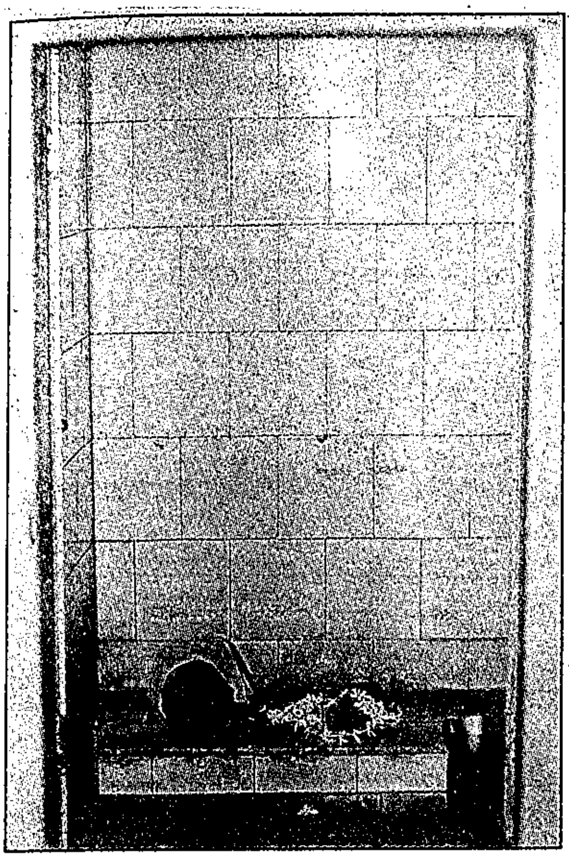
श्रीमती अनारवती बाई गनेड़ीवाला सत्संग भवन, बनारस



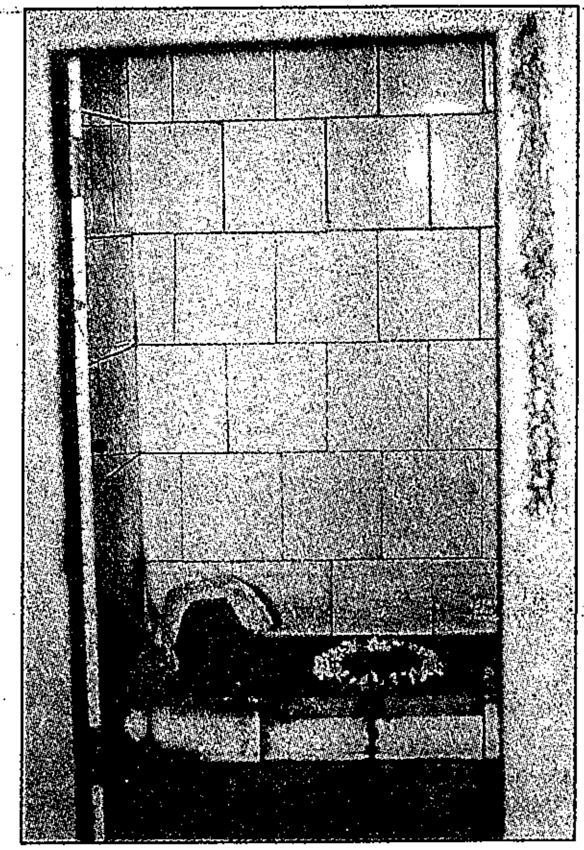
श्री रघुनाथजी का मन्दिर, नासिक



श्री सीतारामजी का मन्दिर, जावरा



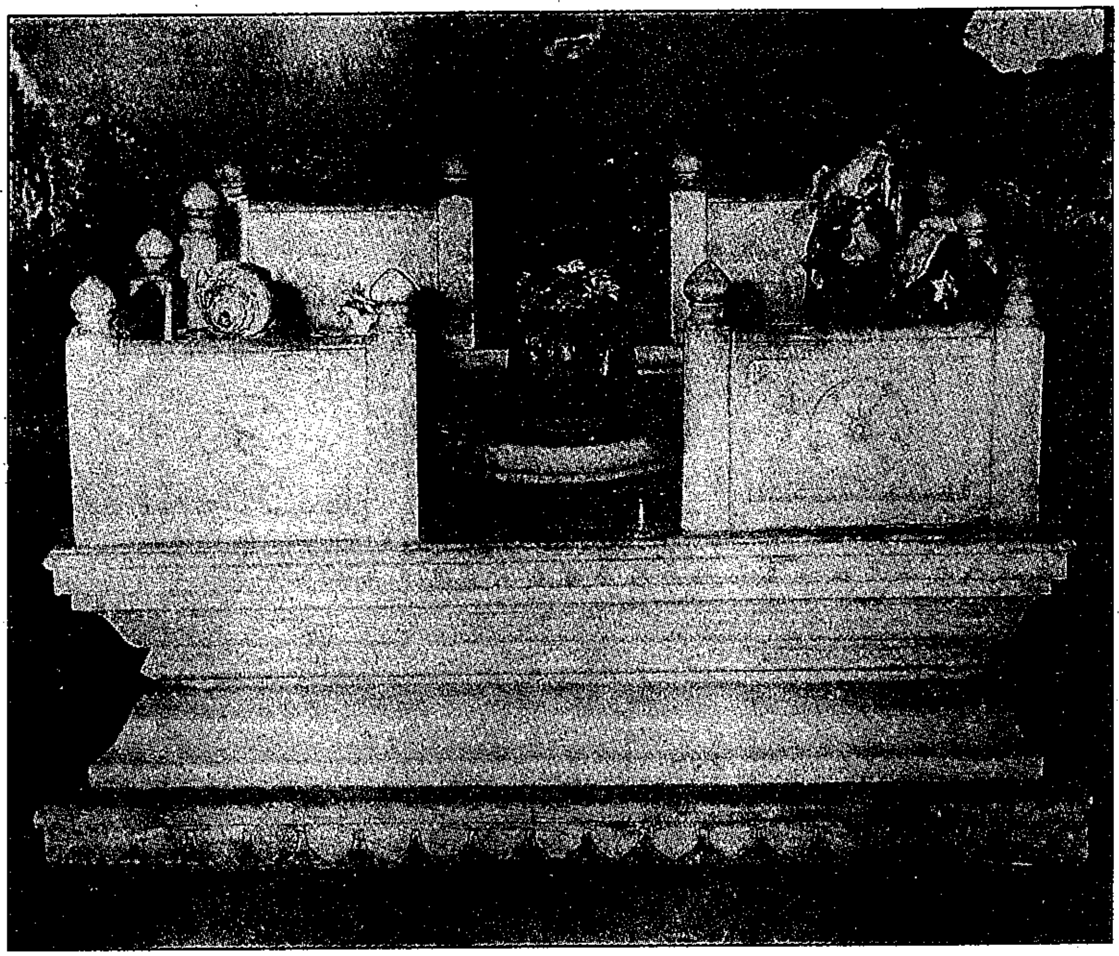
श्री पितरजी का मन्दिर, रानीगंज



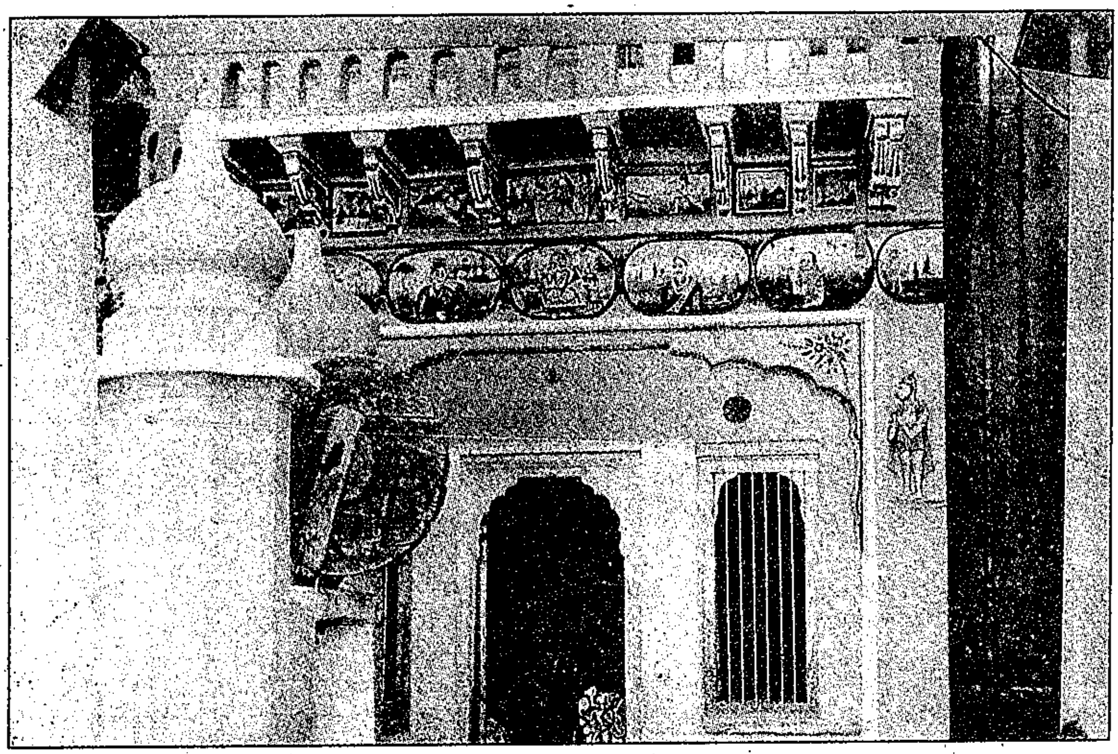
· श्री पितरजी रामचन्द्रजी, रानीगंज



श्री बद्रीनारायणजी का मन्दिर, रानीगंज



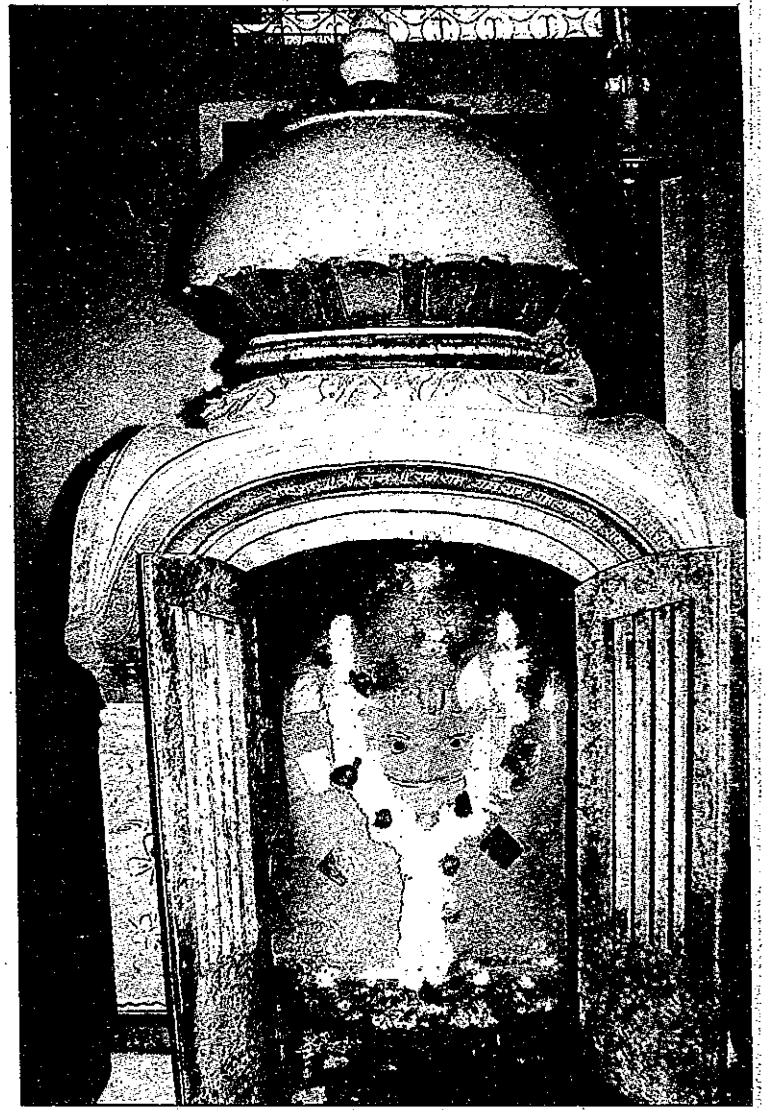
फतेहपुर में छत्रियों के सामने शिवालय



रामगढ़ में हनुमानजी का मन्दिर एवम् पोकर की कूई (कुँआ)

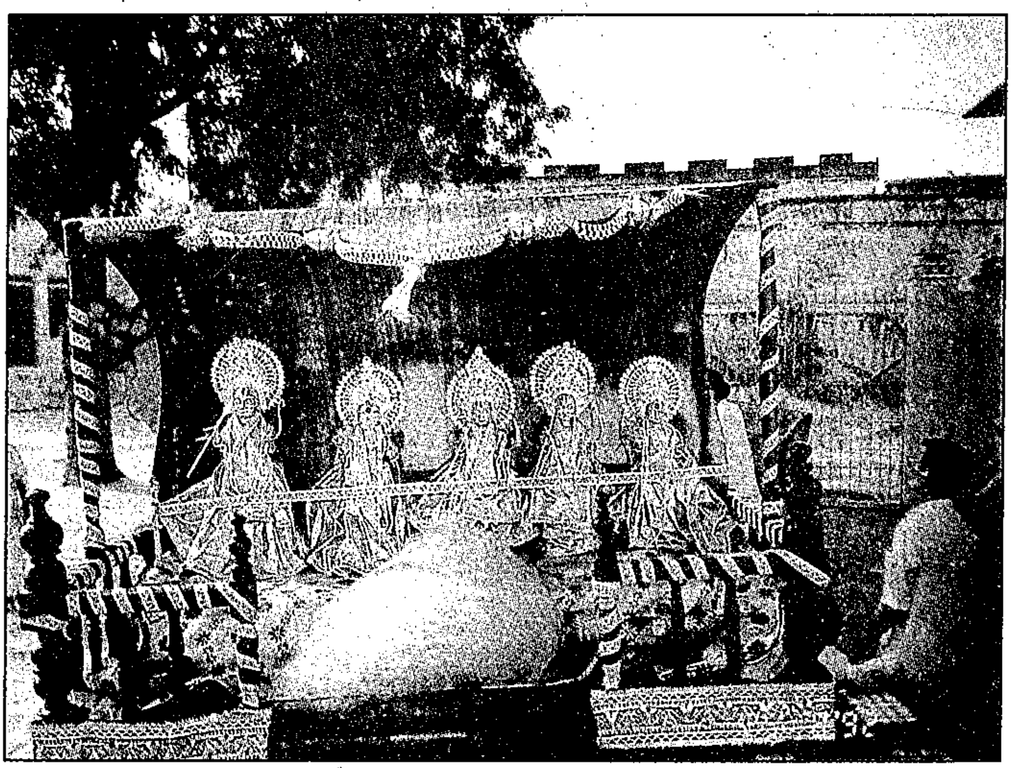


श्री धनराज पोकरमल गनेड़ीवाला द्वारा निर्मित अमरावती में
श्री महादेवजी का मन्दिर

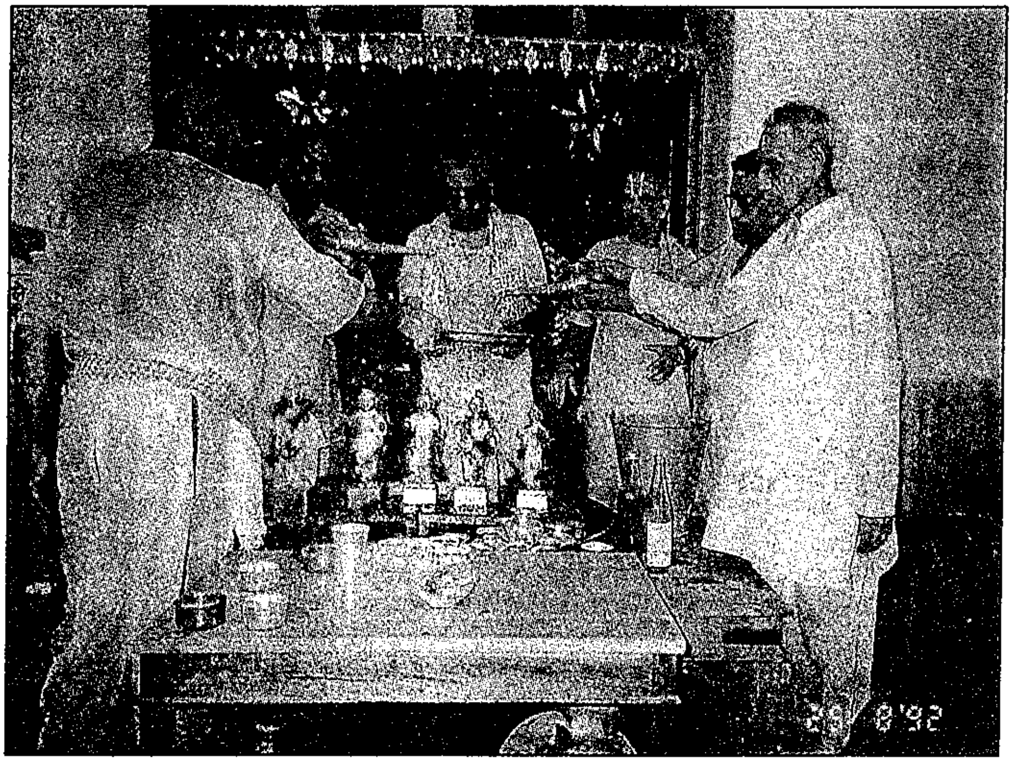


श्री धनराज पोकरमल गनेड़ीवाला द्वारा अमरावती में निर्मित
श्री हनुमानजी का मन्दिर

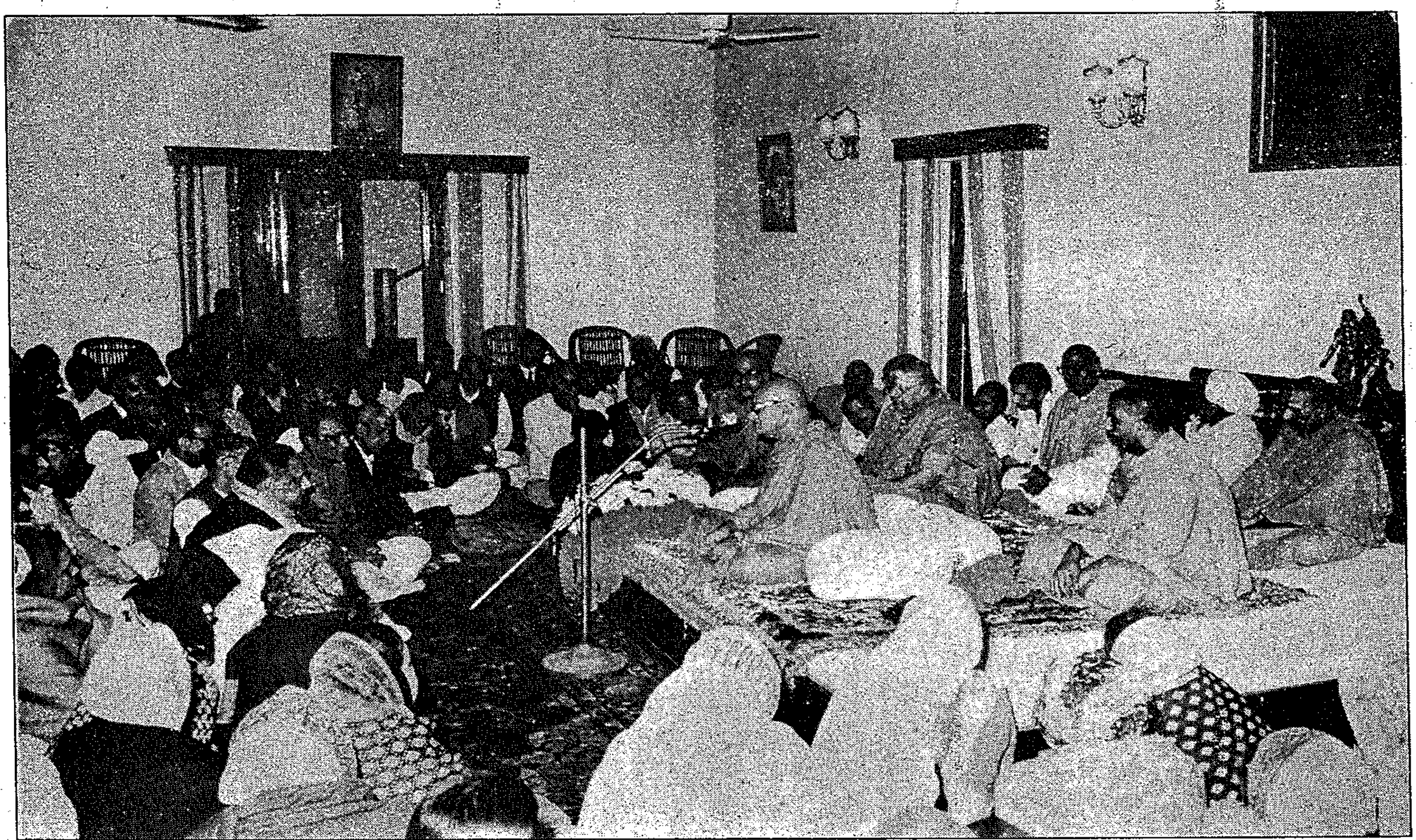
धार्मिक उत्सव एवम् समारोह



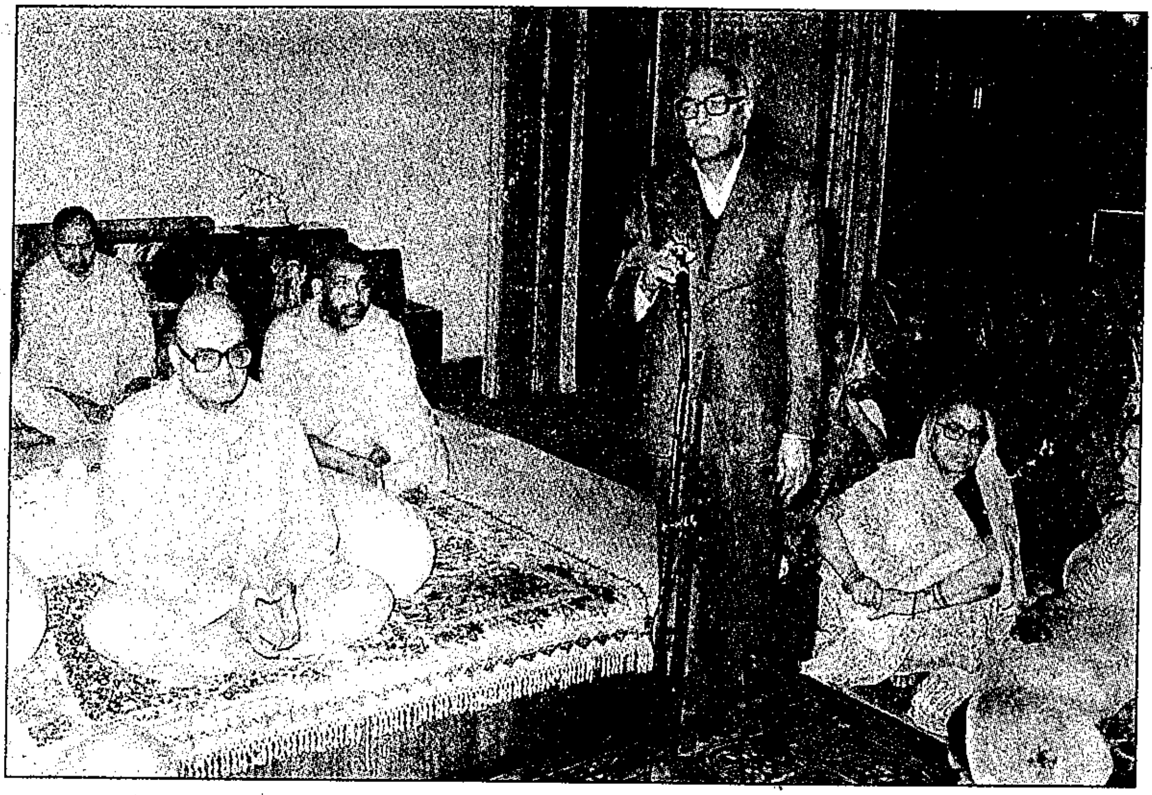
भगवान रामजी की रथयात्रा का चित्र गनेड़ी



भगवान रामजी का अभिषेक, गनेड़ी



महामण्डलेश्वर श्री महेशानन्दजी गिरि महाराज के सत्संग में गनेड़ीवाला परिवार, कलकत्ता



परिवार के सदस्यों को एक सूत्र में बन्धने की प्रेरणा देते हुए श्री प्रहलादरायजी गनेड़ीवाला



परिवार के सदस्यों को ट्रस्ट के गठन व प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए प्रोत्साहित करते हुए
श्री हनुमानप्रसादजी गनेड़ीवाला

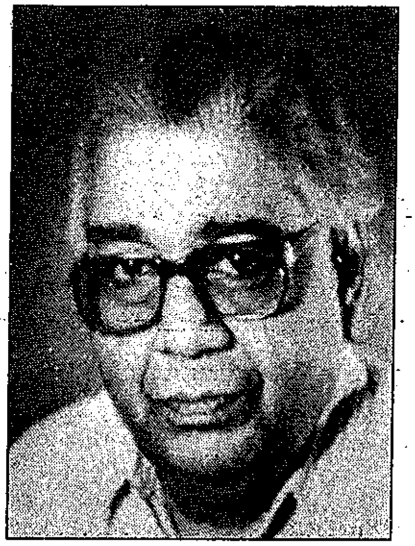
सेठ जुगलदास गनेड़ीवाला चैरीट्रेबल ट्रस्ट के ट्रस्टीगण



सेठ रामगोपाल गनेड़ीवाला
(मुकुन्दगढ़—कलकत्ता)



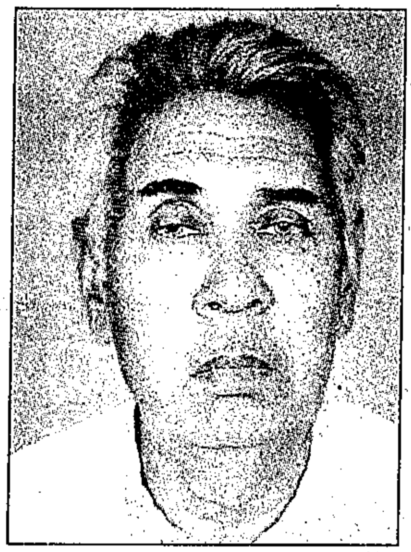
सेठ साँवलराम गनेड़ीवाला
(रतनगढ़—कलकत्ता)



सेठ रामअवतार गनेड़ीवाला
(फतेहपुर—कलकत्ता)



जातिसेवक सेठ हनुमानप्रसाद
गनेड़ीवाला (लक्ष्मणगढ़—दिल्ली)



श्री बिहारीलाल मोदी
(गनेड़ी)

विशेष सहयोगी



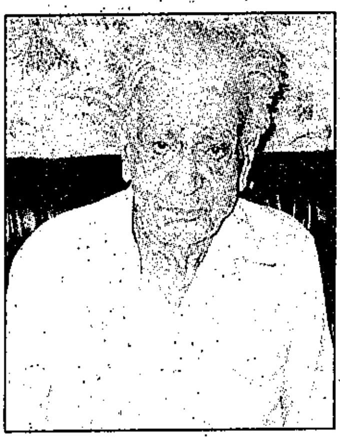
स्व. सेठ बैजनाथजी गनेड़ीवाला
(लक्ष्मणगढ़—कलकत्ता)



स्व. सेठ रामेश्वरलालजी
गनेड़ीवाला (रतनगढ़—कलकत्ता)



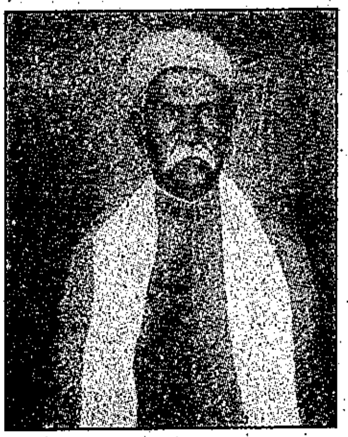
स्व. सेठ भगवतीप्रसादजी
गनेड़ीवाला (रतनगढ़—कलकत्ता)



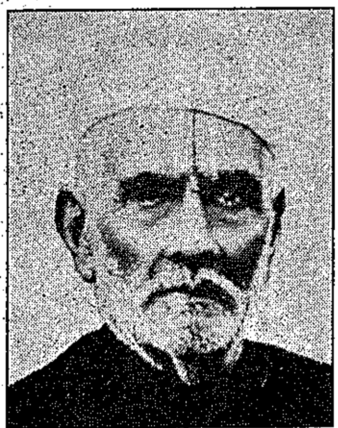
स्व. सेठ श्रीगोपालजी गनेड़ीवाला
(लक्ष्मणगढ़—बम्बई)



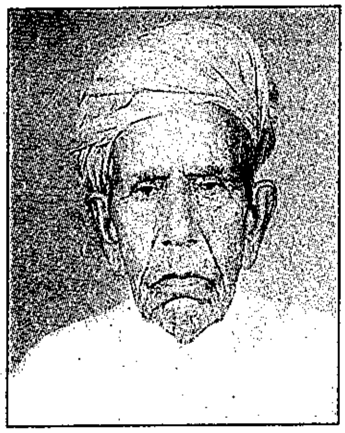
स्व. सेठ विश्वनाथजी गनेड़ीवाला
(लक्ष्मणगढ़—कलकत्ता)



स्व. सेठ देवीदत्तजी गनेड़ीवाला
(लक्ष्मणगढ़—सिरसा)



स्व. रायसहाब सेठ रामलालजी
गनेड़ीवाला, लक्ष्मनगढ़, हैदराबाद



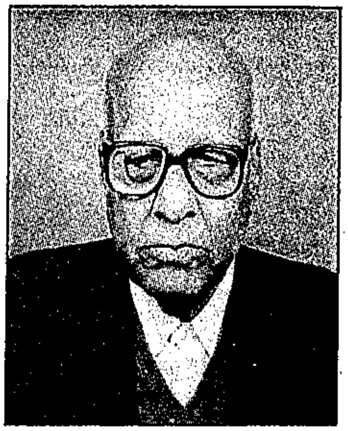
स्व. पं. सम्पतकुमारजीमिश्र
(सीकर)



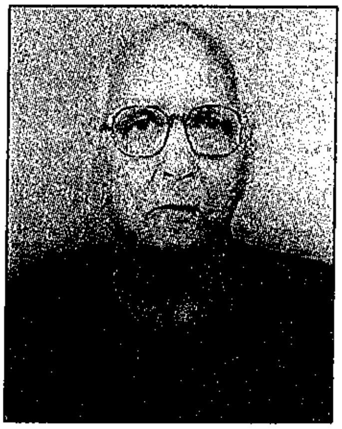
सेठ नन्दलालजी गनेड़ीवाला
(लक्ष्मणगढ़—सिरसा)



सेठ लक्ष्मीनिवासजी गनेड़ीवाला
(लक्ष्मणगढ़—हैदराबाद)



सेठ नन्दलालजी गनेड़ीवाला
(मुकन्दगढ़—कलकत्ता)



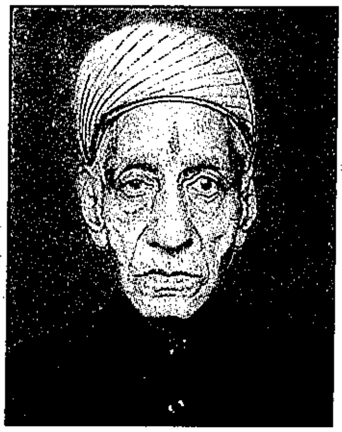
सेठ वासुदेवजी गनेड़ीवाला
(रतनगढ़—कलकत्ता)



सेठ सत्यनारायणजी गनेड़ीवाला
(रतनगढ़—कलकत्ता)



सेठ द्वारकाप्रसादजी गनेड़ीवाला
(रतनगढ़—कलकत्ता)



सेठ केदारनाथजी गनेड़ीवाला
(लक्ष्मणगढ़—दिल्ली)



सेठ मदनगोपालजी गनेड़ीवाला
(लक्ष्मणगढ़—अजमेर)

सेठ जुगलदासजी से पाँचवी पीढ़ी तक के प्राप्त कुछ चित्र



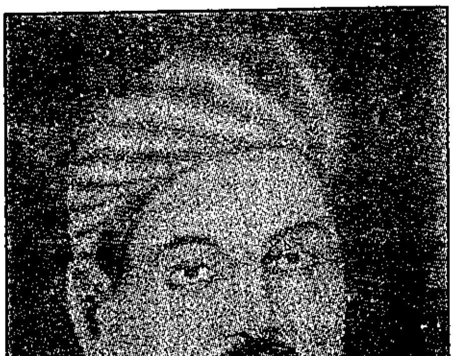
स्व. सेठ जगन्नाथरायजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ नारायणदासजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ रामचन्द्रजी गनेड़ीवाला



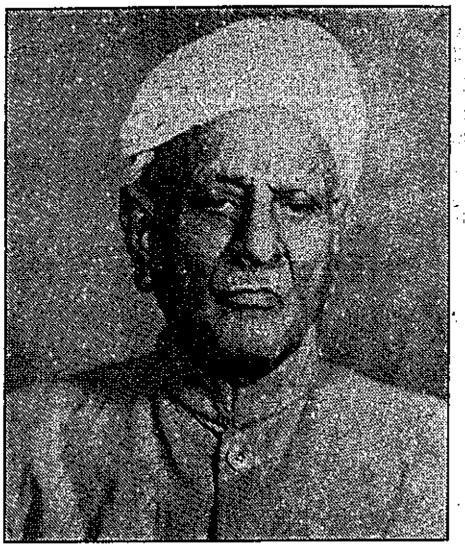
स्व. सेठ गंगाधरजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ गजानन्दजी गनेड़ीवाला



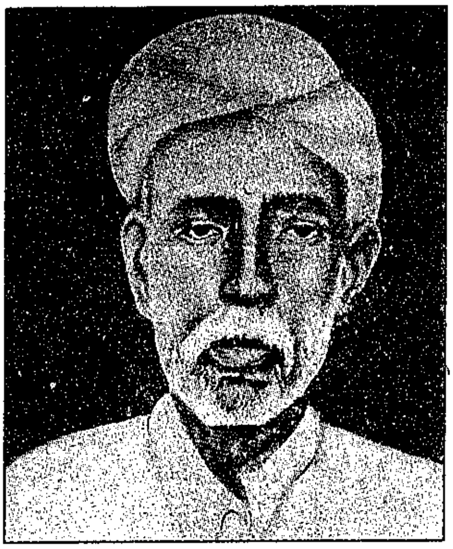
स्व. सेठ सागरमलजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ करनीदानजी गनेड़ीवाला



स्व. श्रीमंती धन्नीदेवी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ केदारनाथजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ श्रीनारायणजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ जयदयालजी गनेड़ीवाला



स्व. श्रीमती रामप्यारी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ रामकुमारजी गनेड़ीवाला



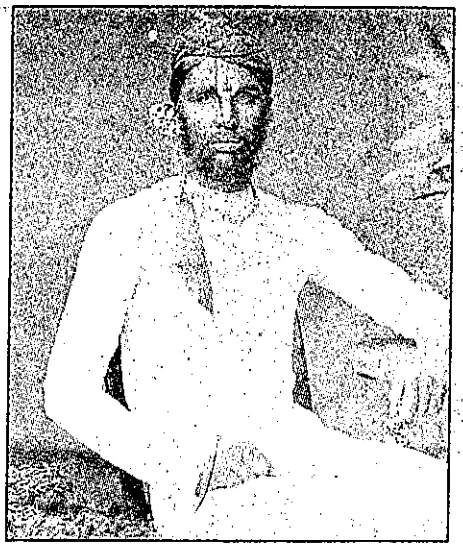
स्व. सेठ गजानन्दजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ वासुदेवजी गनेड़ीवाला



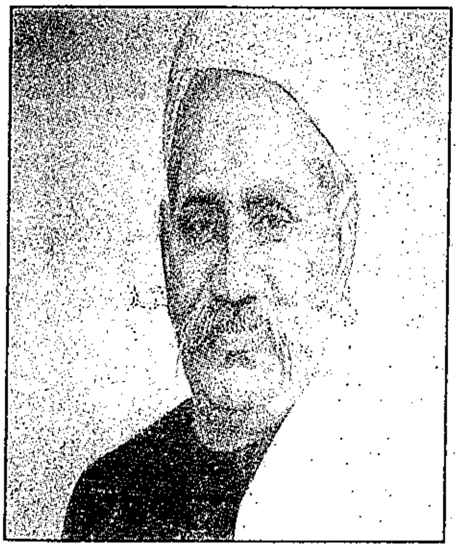
स्व. सेठ गौरीशंकरजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ बालाबक्सजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ बृजलालजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ चिमनरामजी गनेड़ीवाला



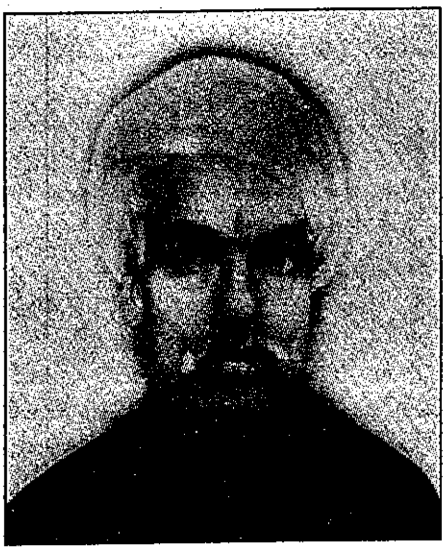
स्व. सेठ मंगलचन्दजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ राधाकृष्णजी गनेड़ीवाला



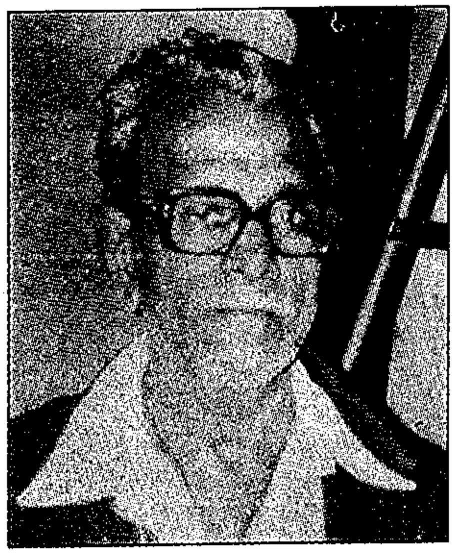
स्व. सेठ हरीरामजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ गुलराजजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ रामदत्तजी गनेड़ीवाला



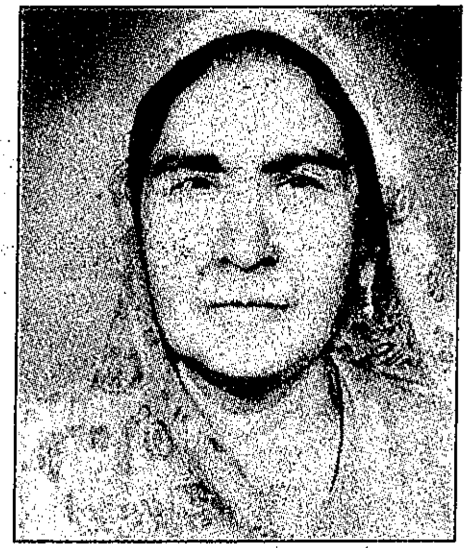
स्व. सेठ मनोहरलालजी गनेड़ीवाला


स्व. सेठ भगवानदासजी गनेड़ीवाला


स्व. सेठ चिरंजीलालजी गनेड़ीवाला


स्व. सेठ घनश्यामदासजी गनेड़ीवाला


स्व. सेठ कृष्णगोपालजी गनेड़ीवाला


स्व. श्रीमती भागीरथीदेवी गनेड़ीवाला

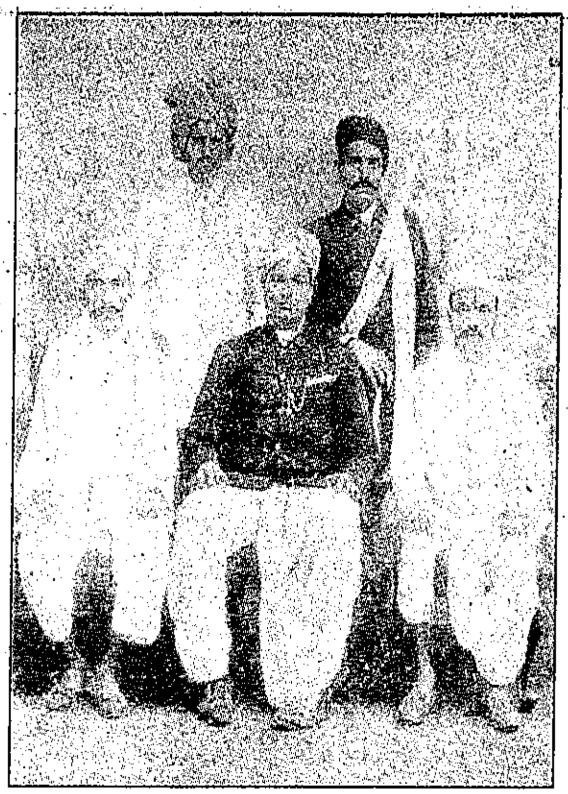

स्व. सेठ मदनगोपालजी गनेड़ीवाला


स्व. श्रीमती बसन्तीदेवी गनेड़ीवाला

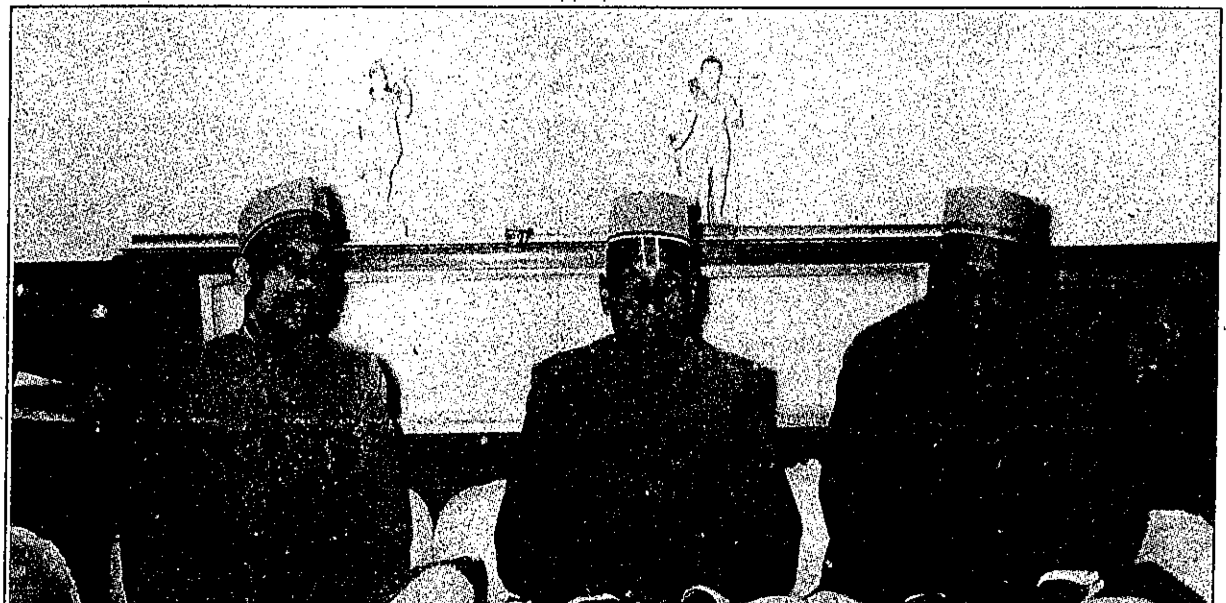

स्व. सेठ रामबल्लभजी गनेड़ीवाला


स्व. सेठ श्रीनिवासजी गनेड़ीवाला


स्व. श्रीमती बसन्तीदेवी गनेड़ीवाला



(बैठे हुए) श्री हीरालालजी ओसवाल, सेठ जमनालालजीबजाज, श्री बालारामजी चूड़ीवाल, (खड़े हुएगले में दुपट्टा डाले हुये) ।स्व. सेठज्वालजी गनेड़ीवाला



स्व. सेठ बासुदेवजी, मुरलीधरजी, लक्ष्मीनारायणजी गनेड़ीवाला



सेठ गोविन्दप्रसादजी गनेड़ीवाला



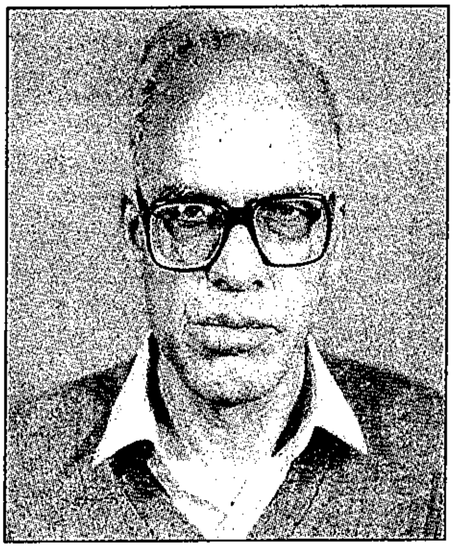
सेठ सच्चिदानन्दजी गनेड़ीवाला



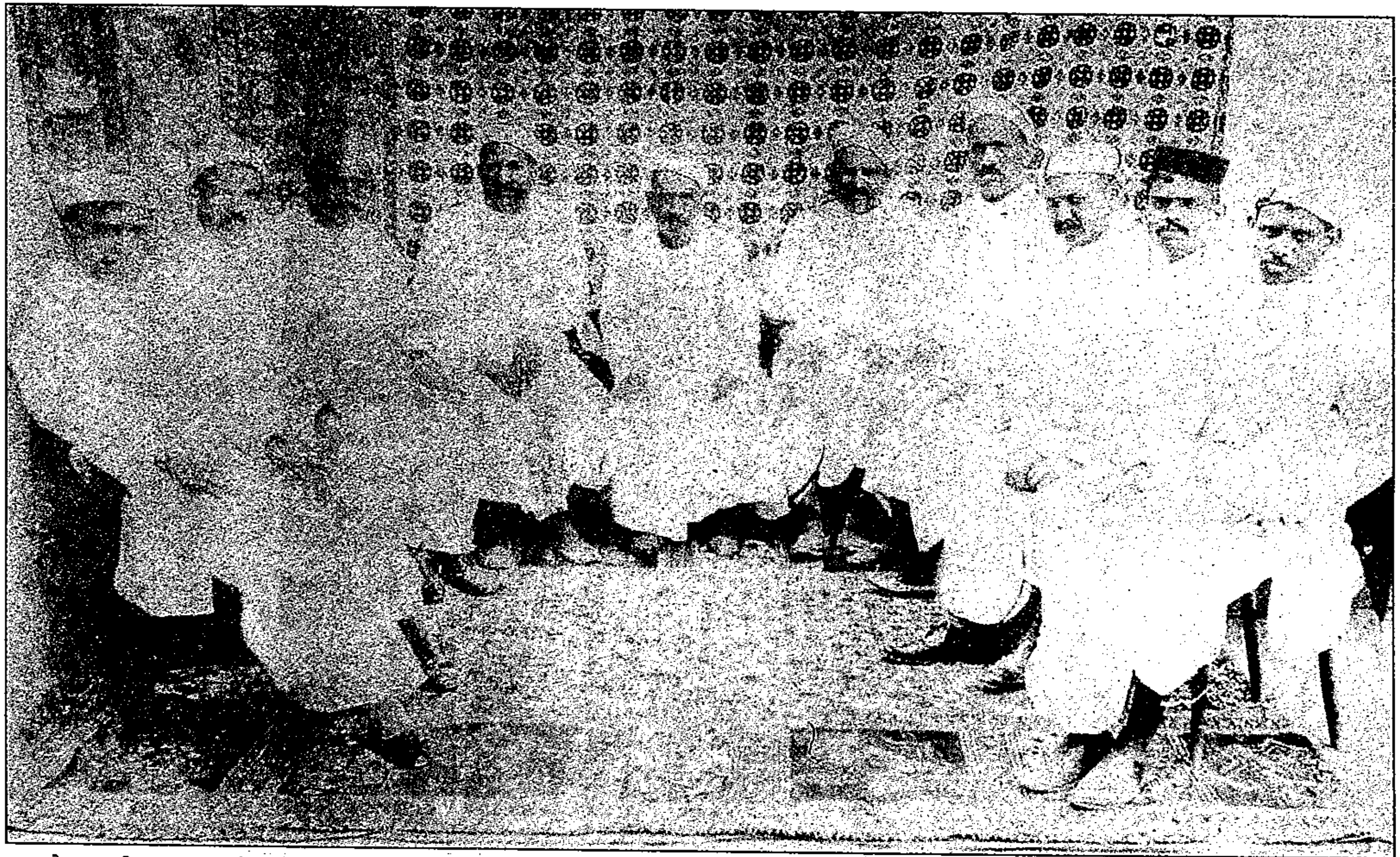
सेठ हरीरामजी गनेड़ीवाला



सेठ नन्दलालजी गनेड़ीवाला



सेठ विश्वनाथजी गनेड़ीवाला

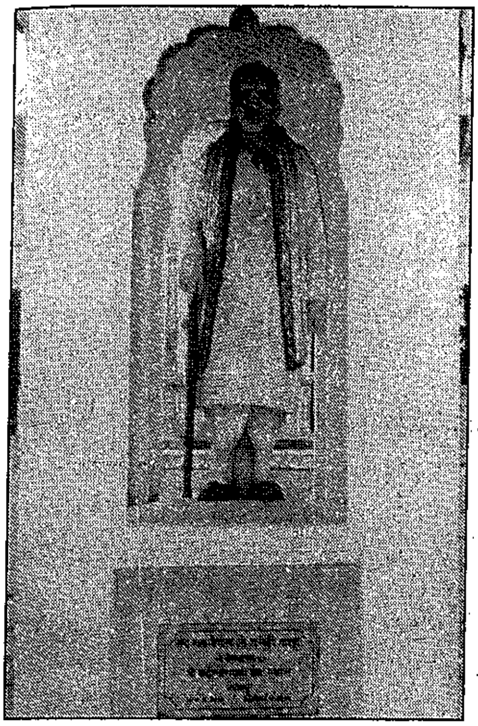


स्व. सेठ : श्री ब्रह्मादत्तजी, श्री श्योदेवजी, श्री बैजनाथजी, श्री गंगाधरजी, श्री रामकिशनदासजी, श्री बृजमोहनजी, श्री गजाधरजी, श्री रामदत्तजी, श्री बिशनदत्तजी, श्री मदनलालजी गनेड़ीवाला (बाँये से दाँए)



स्व. सेठ रामगोपालजी गनेड़ीवाला (छड़ी लिये हुए) पास में (बैठे हुए) छोटे पुत्र स्व. श्री केसर देवजी तथा (दाहिनी और खड़े हुए) बड़े पुत्र स्व. श्री बद्रीनारायणजी, बांई ओर खड़े हैं स्व. (देशभक्त) सेठ जमनालालजी बजाज

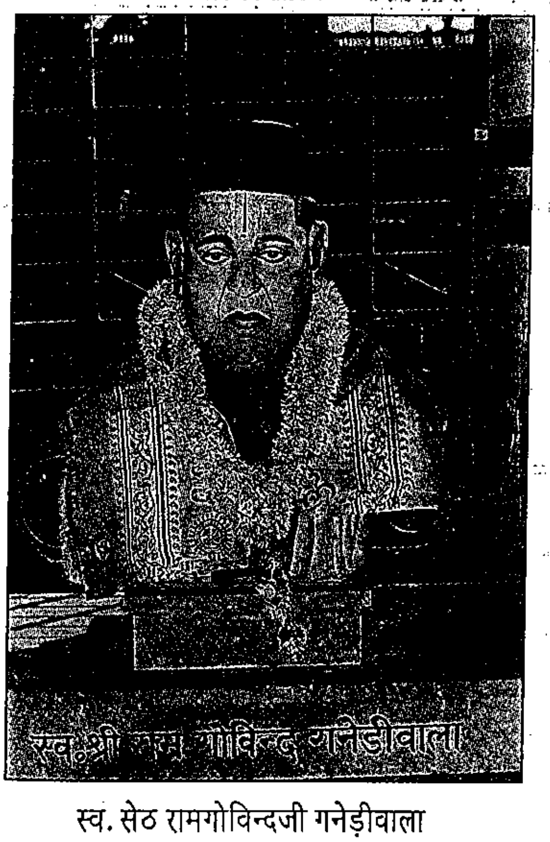
गनेड़ीवाला वंश के पूर्वजों की प्रस्तर प्रतिमाएँ



स्व. सेठ रामगोपालजी गनेड़ीवाला
(छत्री-फतेहपुर)

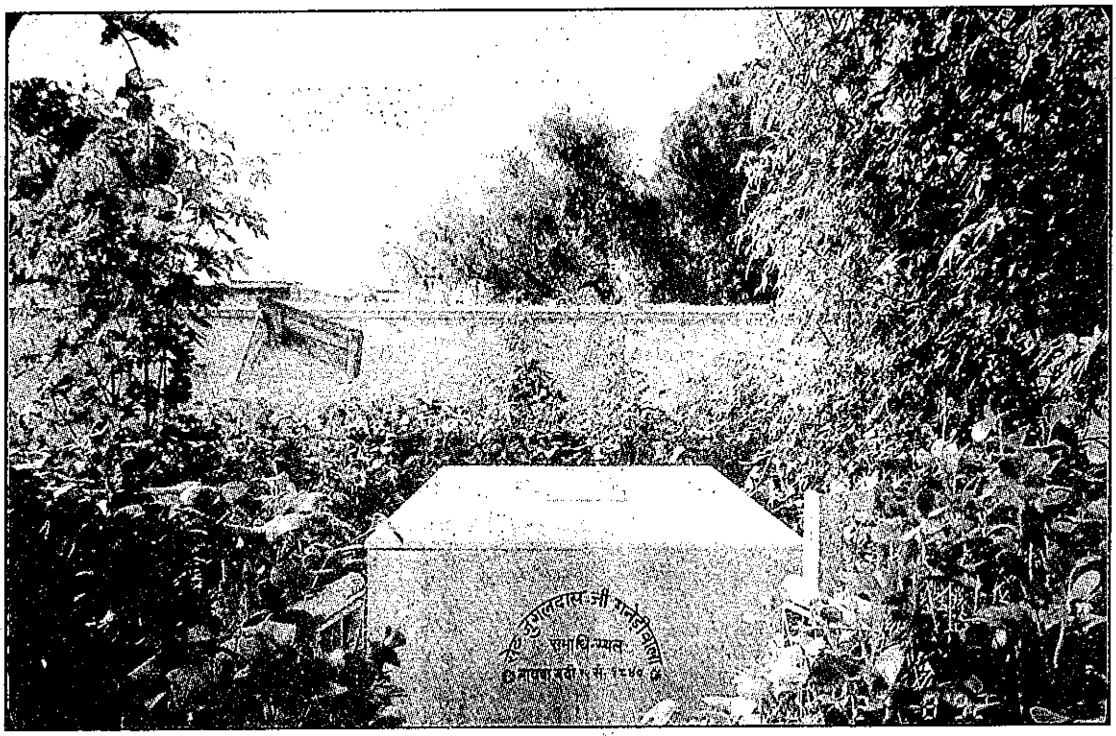


स्व. सेठ रामदत्तजी गनेड़ीवाला
(चक्षु चिकित्सालय सिरसा)

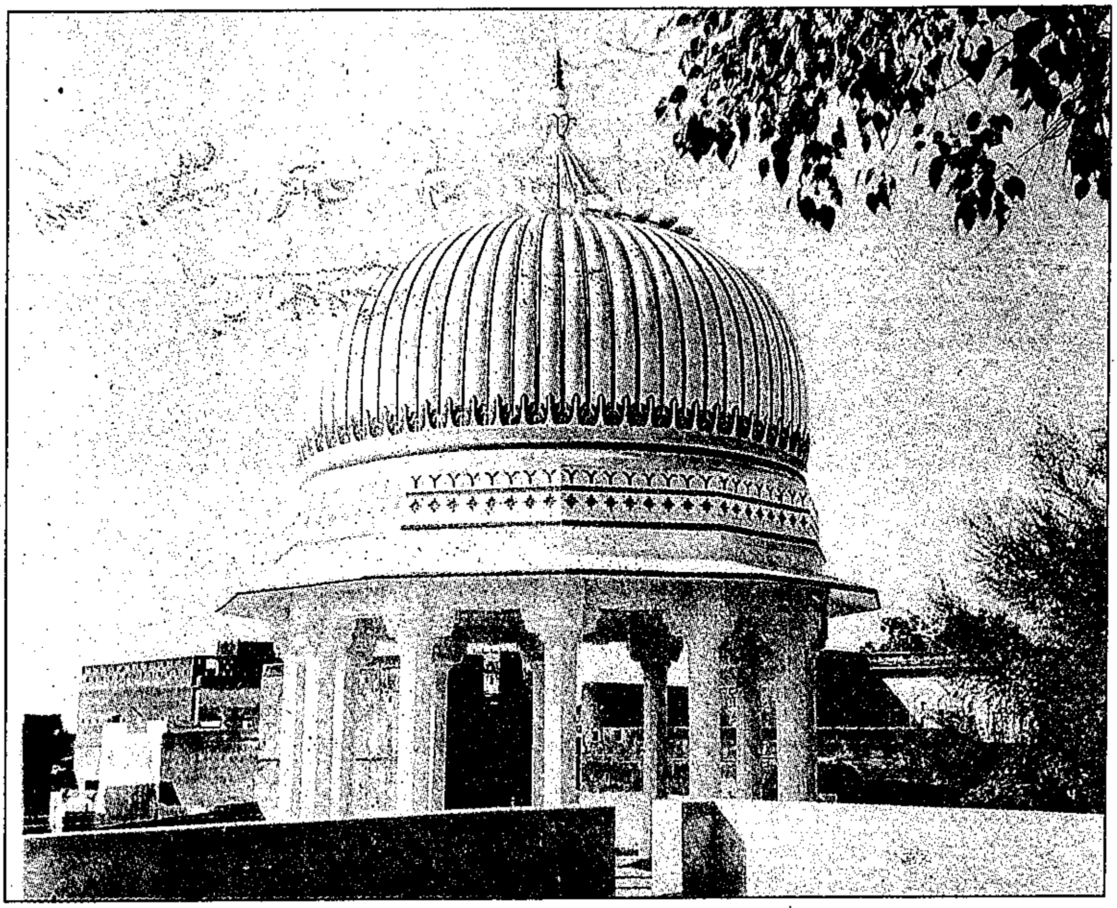


स्व. सेठ रामगोविन्दजी गनेड़ीवाला
(जानकी महल अयोध्या)

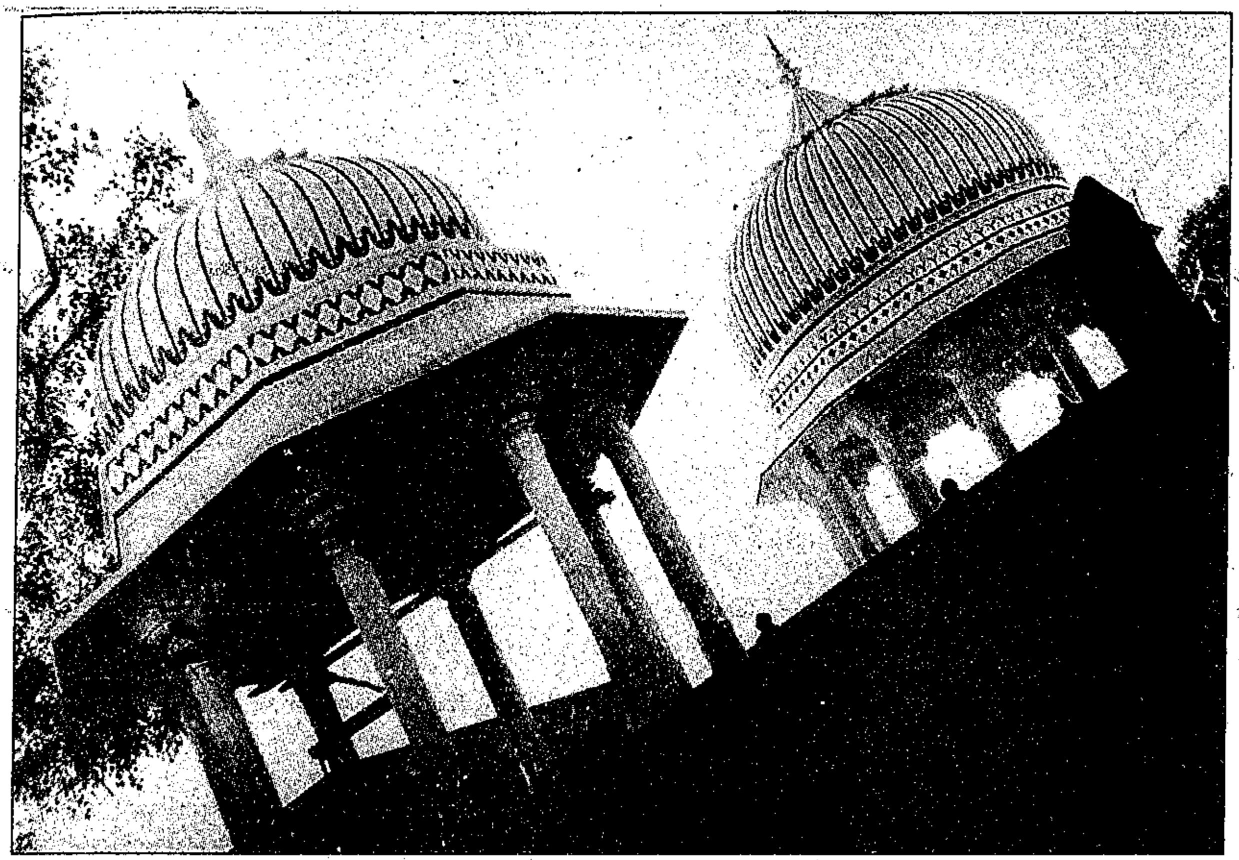
गनेड़ीवालों द्वारा निर्मित कुछ प्राचीन भवन



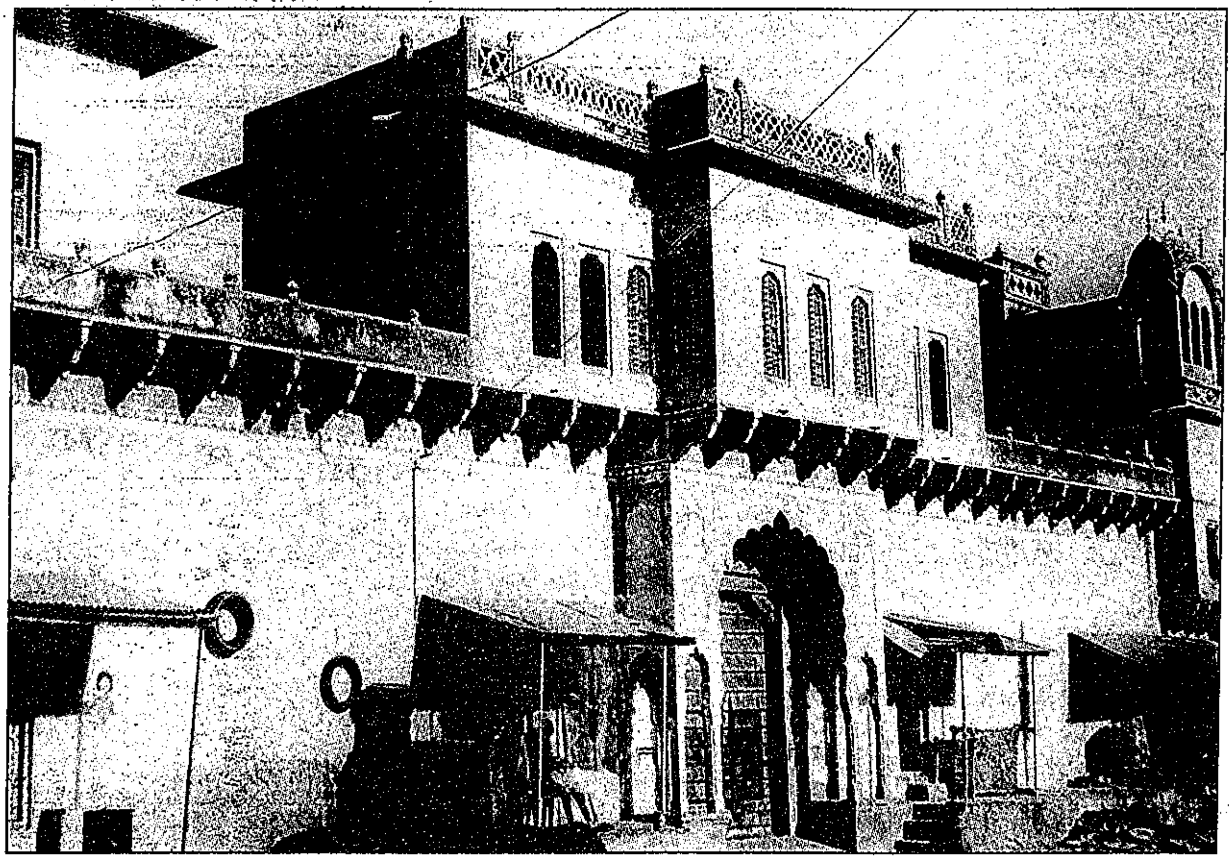
स्व. सेठ जुगलदासजी गनेड़ीवाला का समाधी स्थल, गनेड़ी



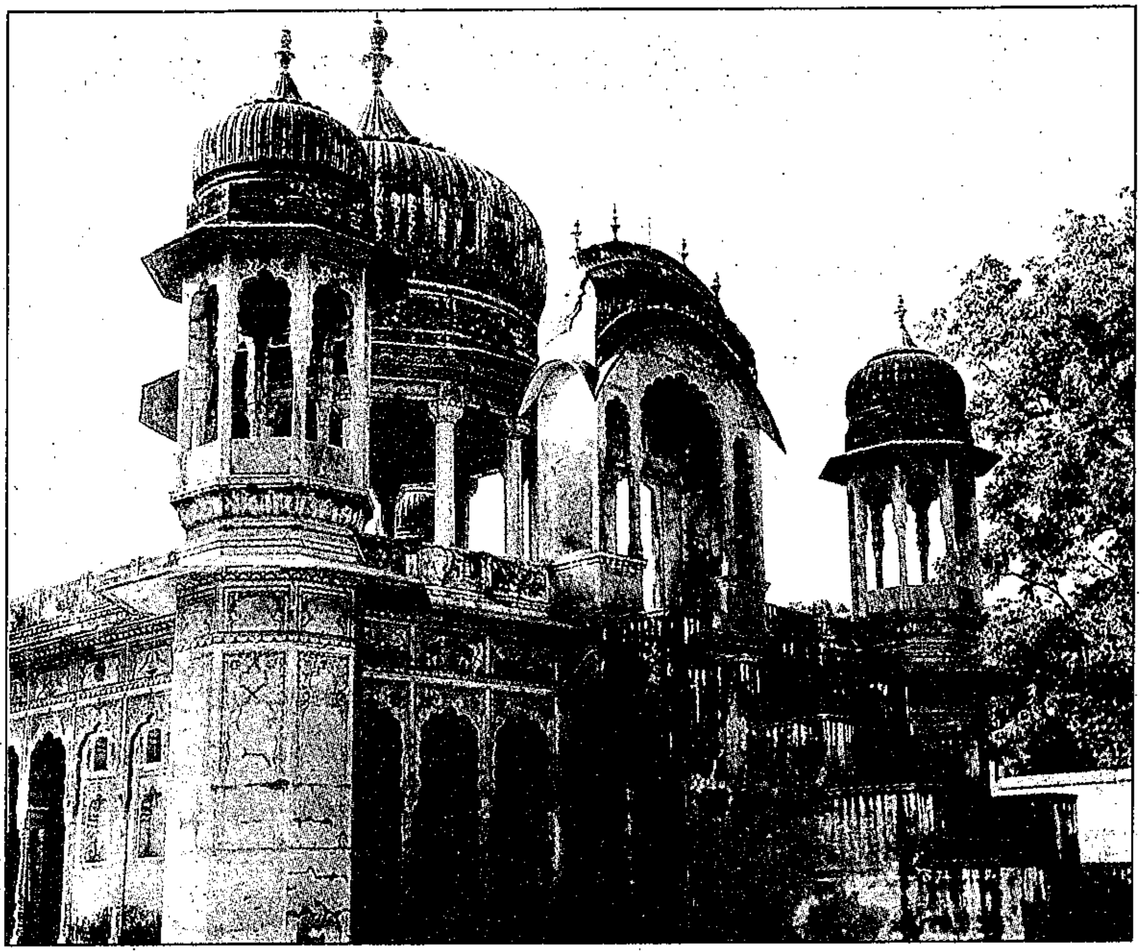
स्व. सेठ जुगलदासजी की छत्री, गनेड़ी



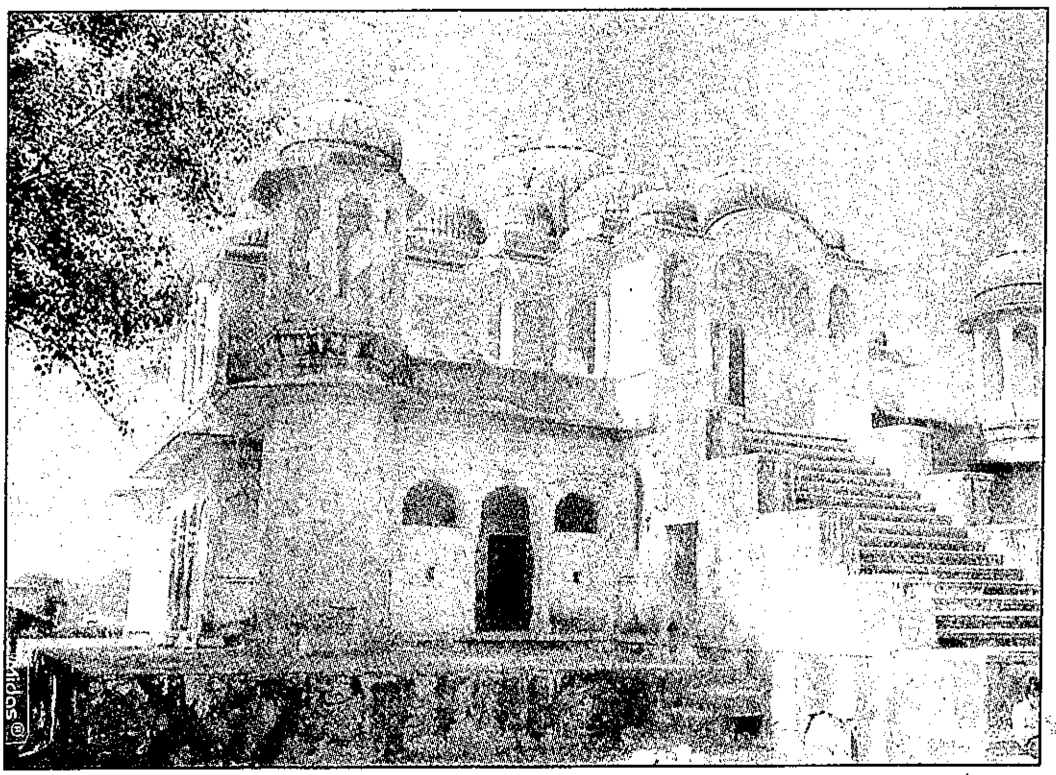
छतरी स्व. सेठ रामकरणदासजी गनेड़ीवाला (चित्र में बांई ओर)
छतरी स्व. सेठ जुगलदासजी गनेड़ीवाला (चित्र में दांई ओर) (गनेड़ी)



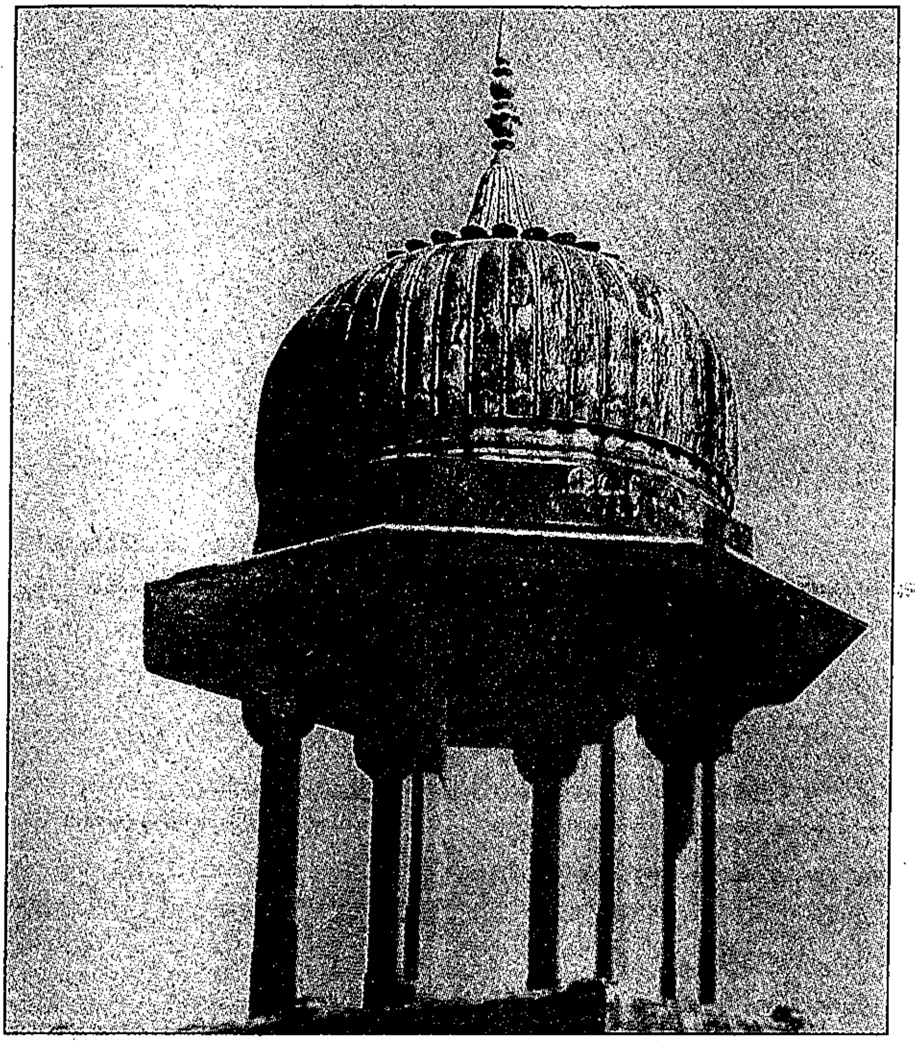
फतेहपुर की हवेली



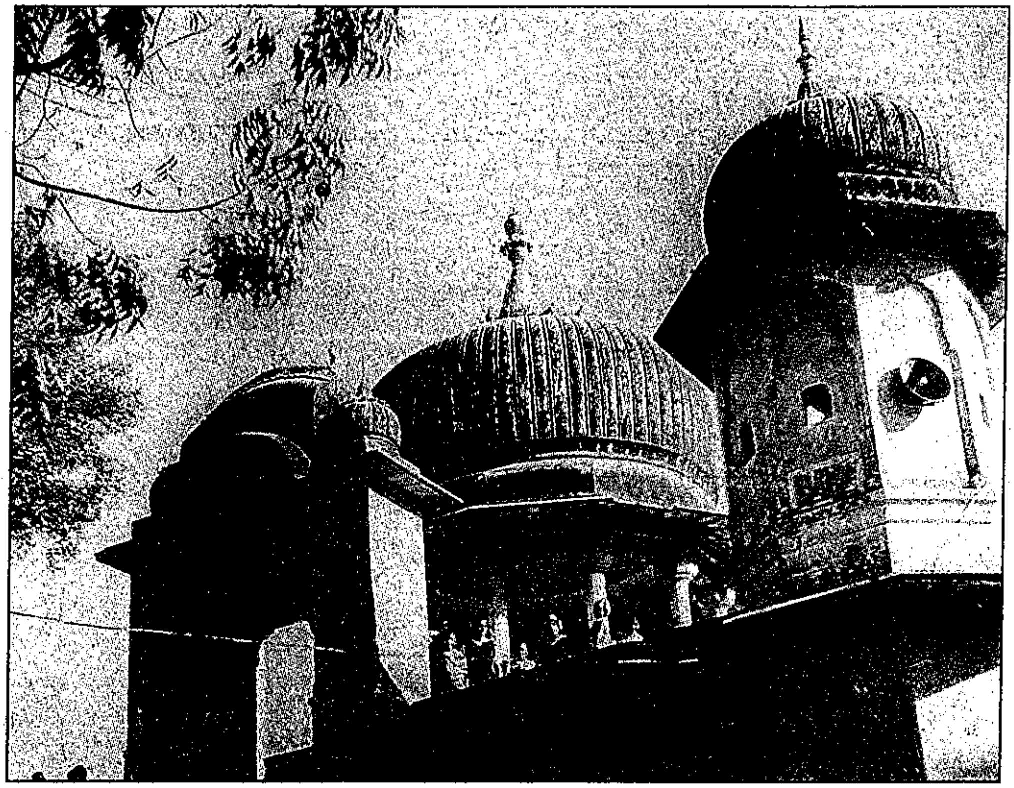
स्व. सेठ कन्हैयालालजी की छत्री, मुकुन्दगढ़



स्व. सेठ कृष्णदासजी की छत्री, लक्ष्मणगढ़



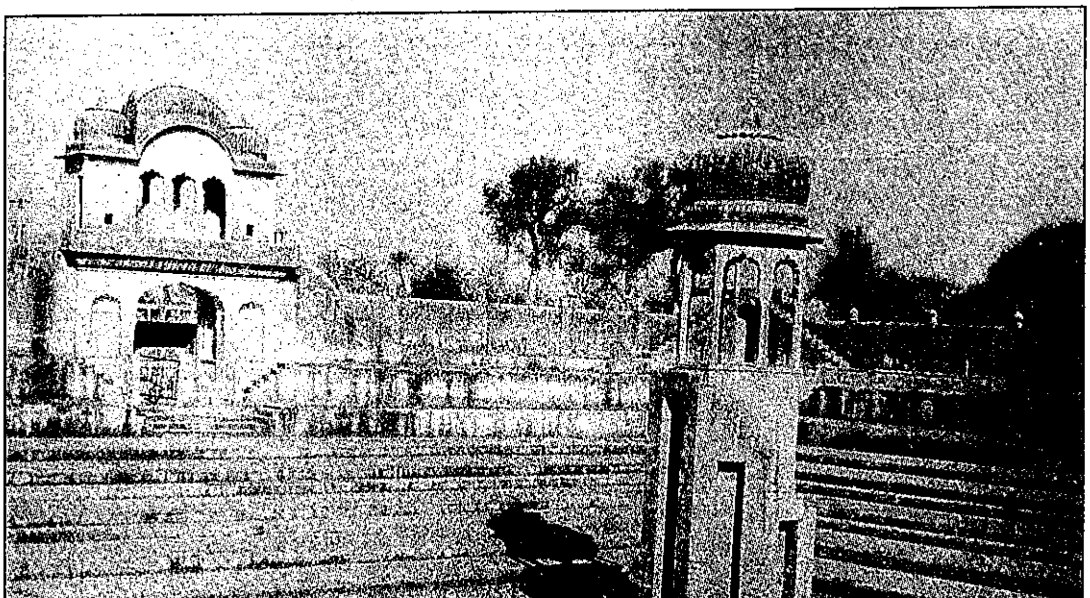
स्व. सेठ रामगोपालजी गनेड़ीवाला की छत्री, (नूंआ-ग्राम)



स्व. सेठ हरिकृष्णदासजी गनेड़ीवाला की छत्री, रतनगढ़



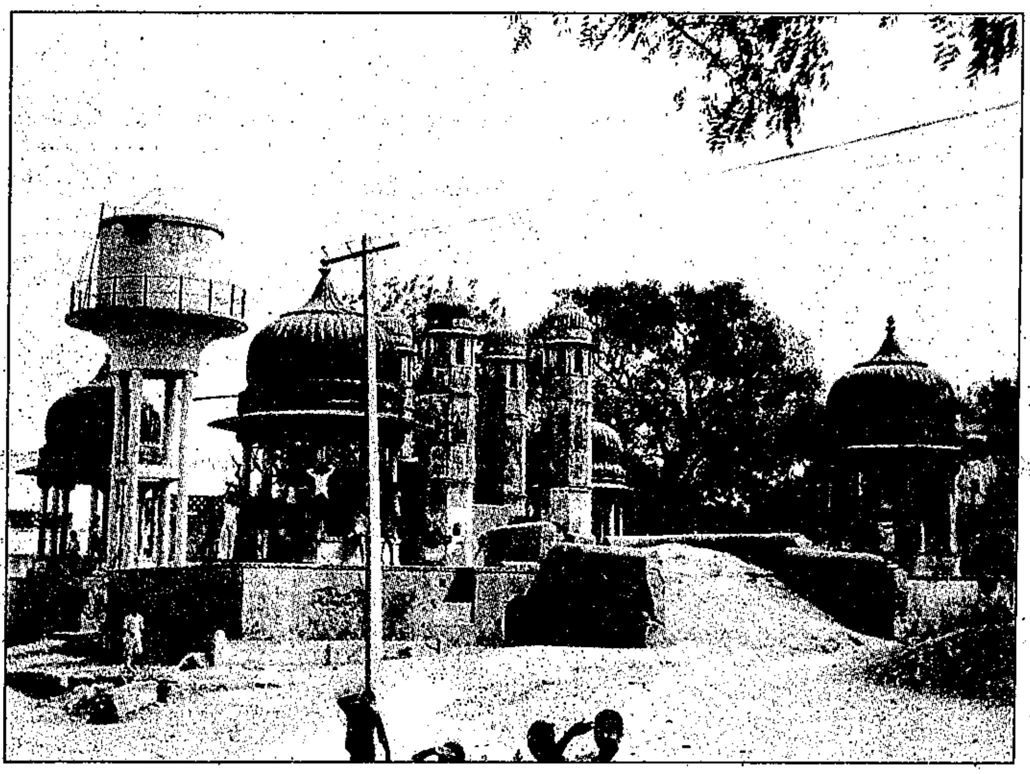
गुमानसागर (गनेड़ीवालाओं का जोहड़ा), लक्ष्मणगढ़
(गुमान सागर ऐसो बण्यो, सरायो सकल जहान।
धरी निशानी स्वर्ग की गिरधर पुत्र गुमान।।)



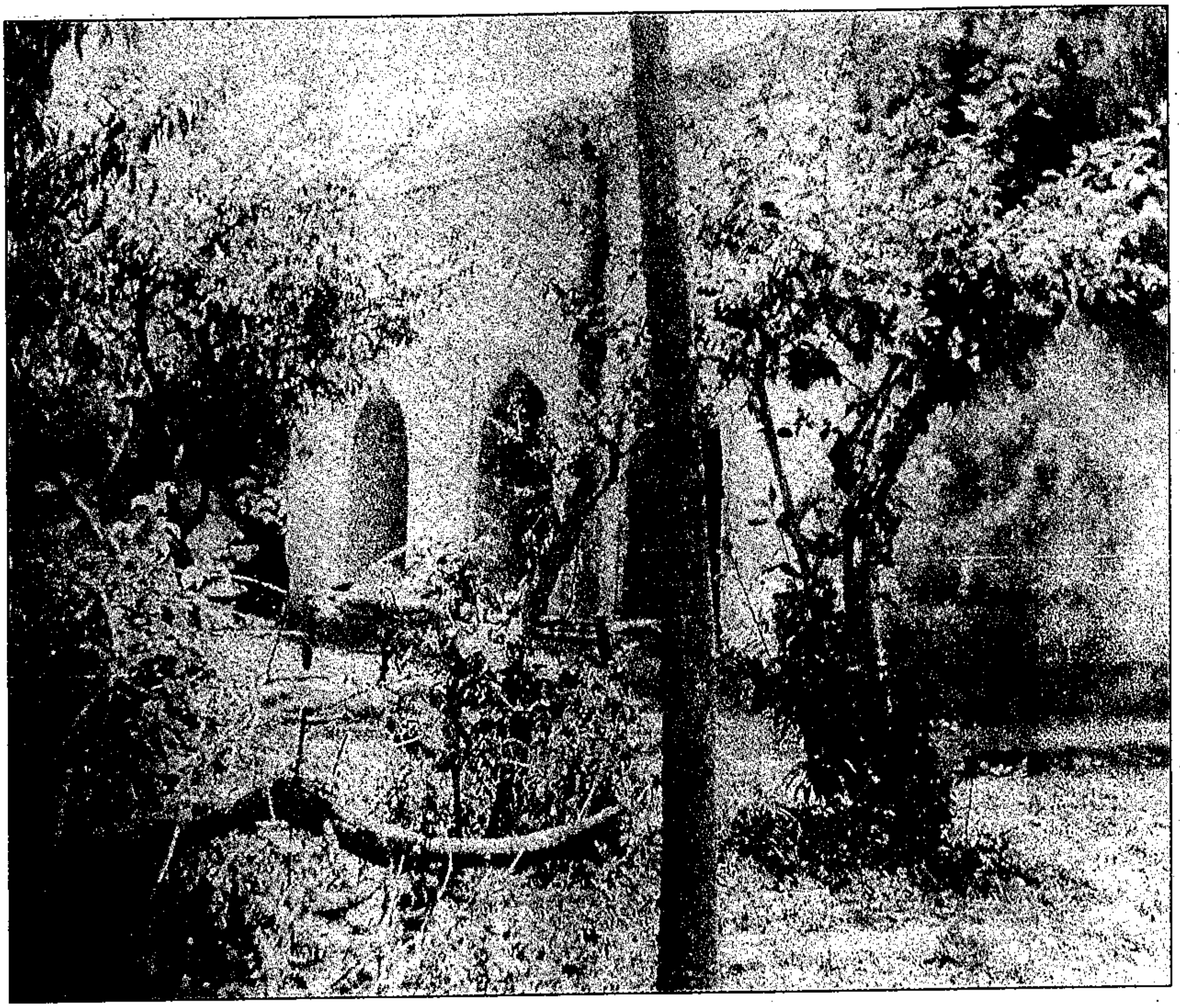
फतेहपुर-लक्ष्मणगढ़ मार्ग पर बना जोहड़ा (अकाल सहायतार्थ निर्मित)



गनेड़ीवालों का विशाल कुँआ (मुकुन्दगढ़)



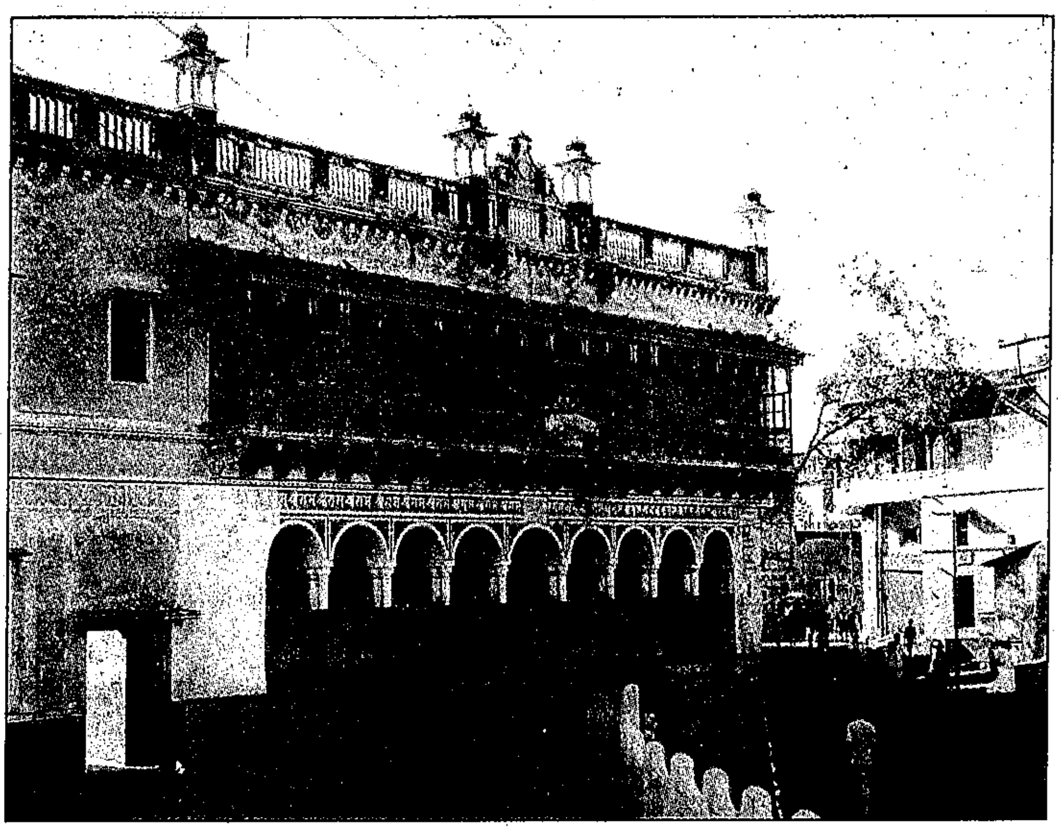
गनेड़ीवालों का विशाल कुँआ, लक्ष्मणगढ़



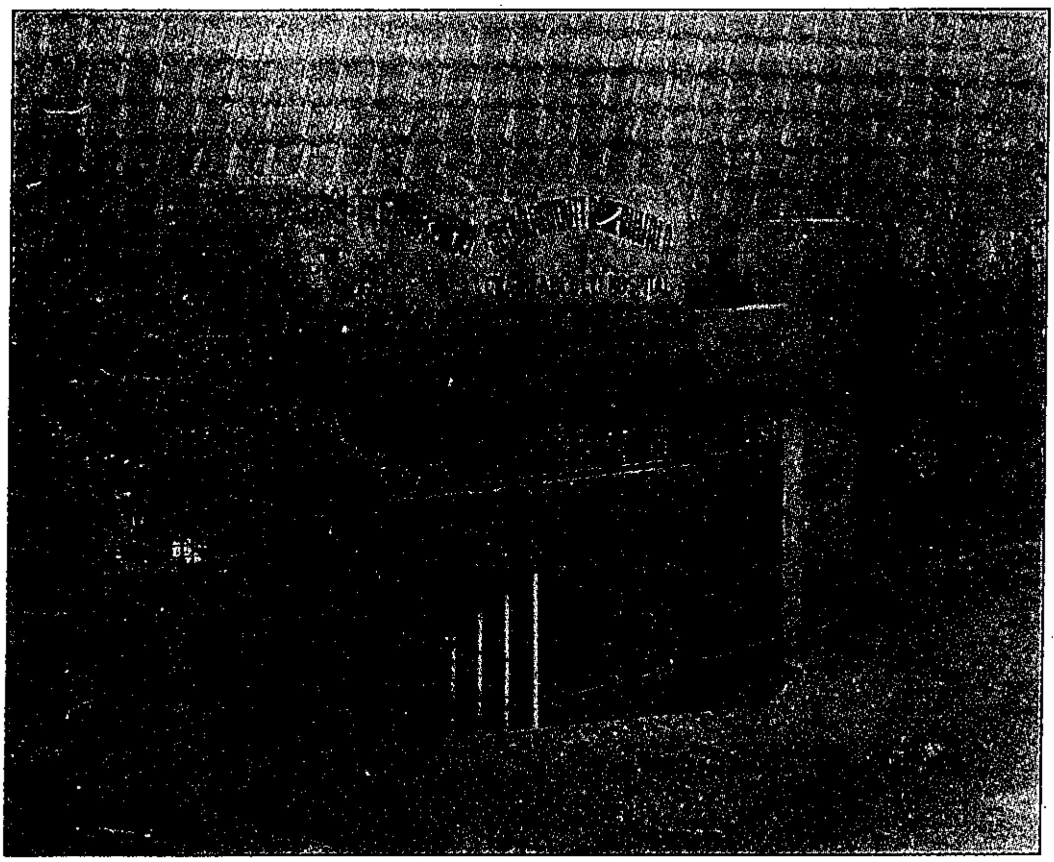
स्व. सेठ गिरधारीलालजी का दाह संस्कार स्थल, बावड़ी, खरसोद-कलां



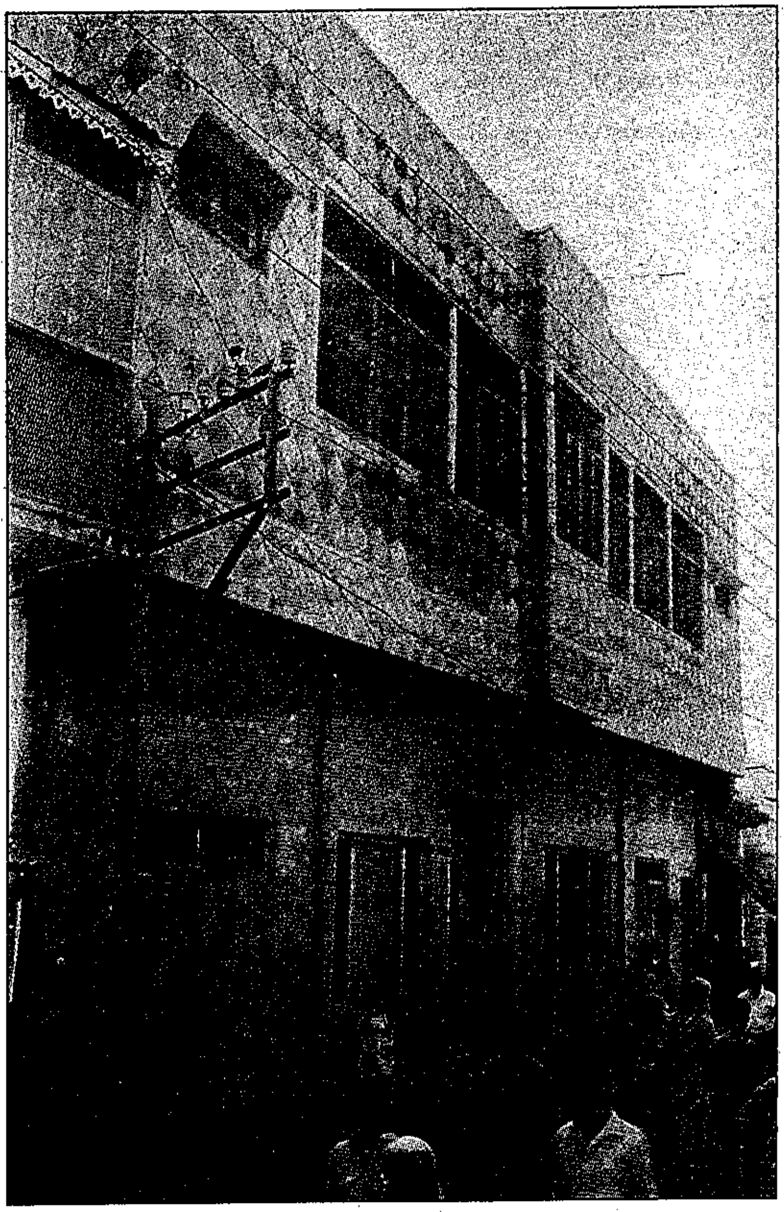
गनेड़ीवाले
सेठों का कुँआ, गनेड़ी



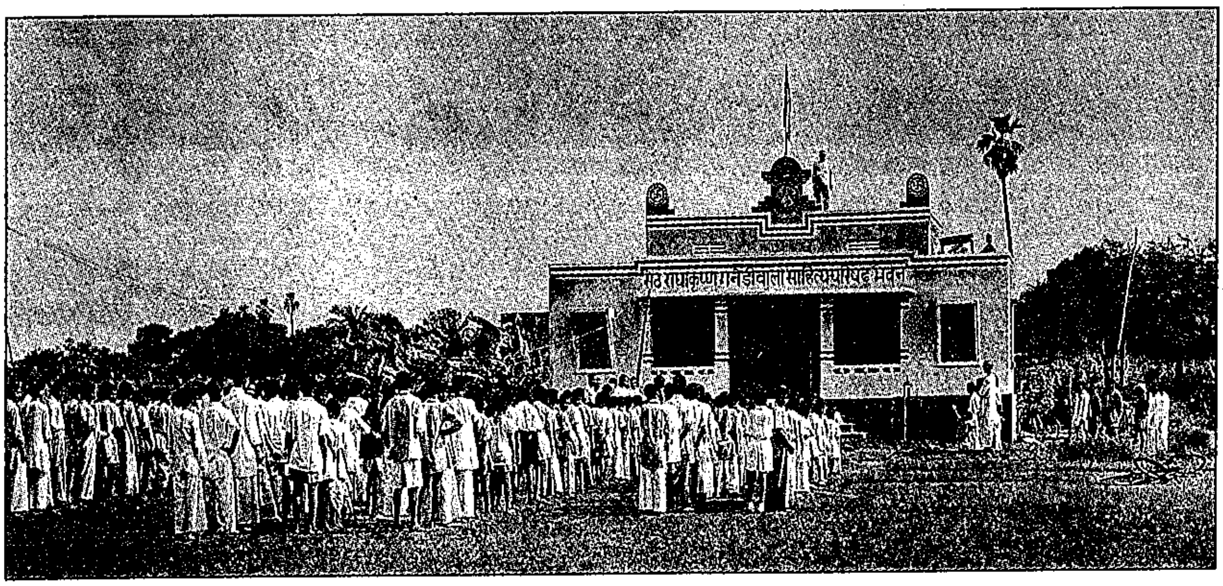
रतनगढ़ में स्व. सेठ चिम्मनलालजी गनेड़ीवाला द्वारा निर्मित स्कूल



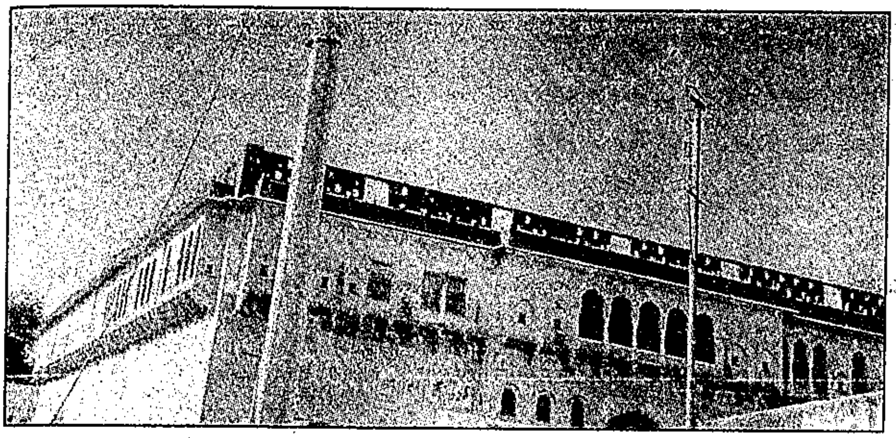
सेठ रामदत्तजी गनेड़ीवाला चैरीटेबल ट्रस्ट का आँखों का अस्पताल, सिरसा



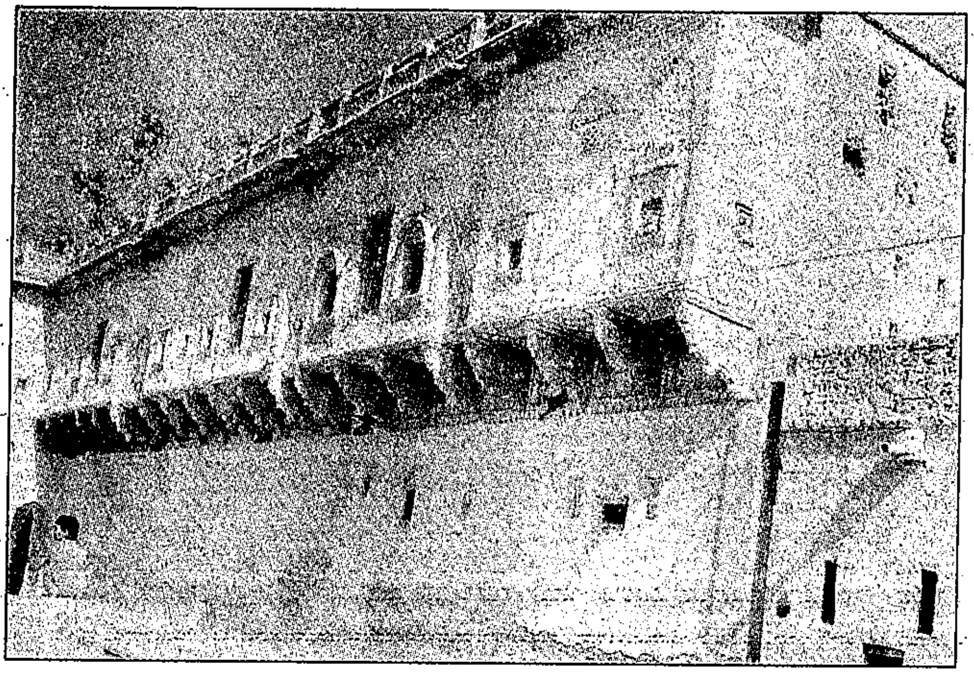
स्व. सेठ मदनगोपालजी एवम् श्रीमती बसंतीदेवी गनेड़ीवाला की पुण्य स्मृति में निर्मित श्रीसदन, अहीरपाड़ा, वृन्दावन



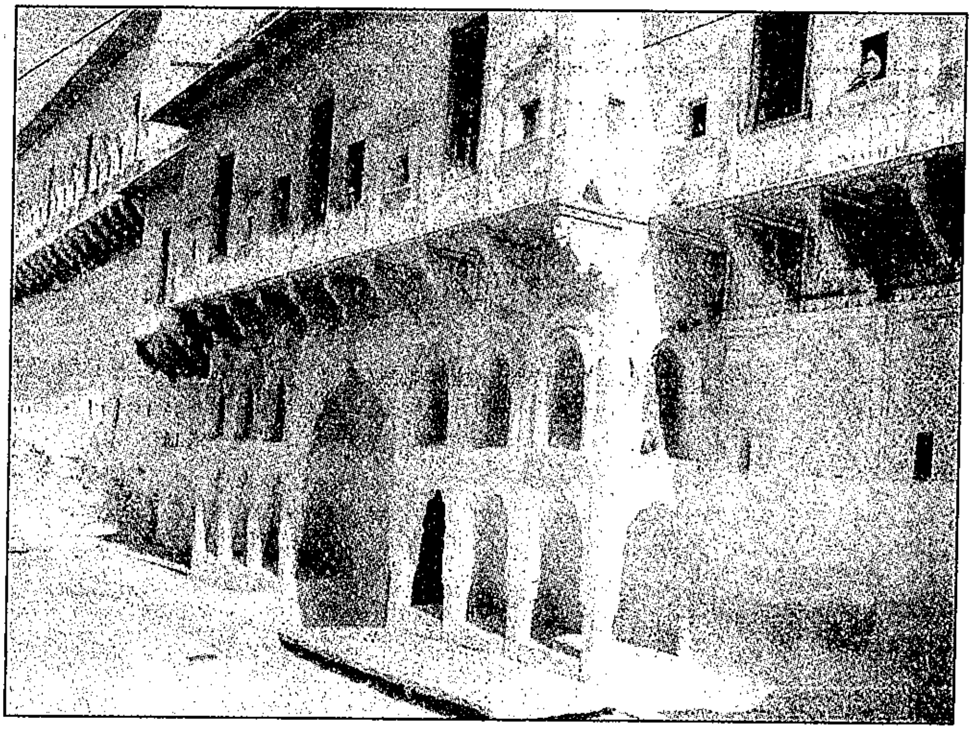
सेठ राधाकृष्ण गनेड़ीवाला साहित्य परिषद भवन, गौरखपुर



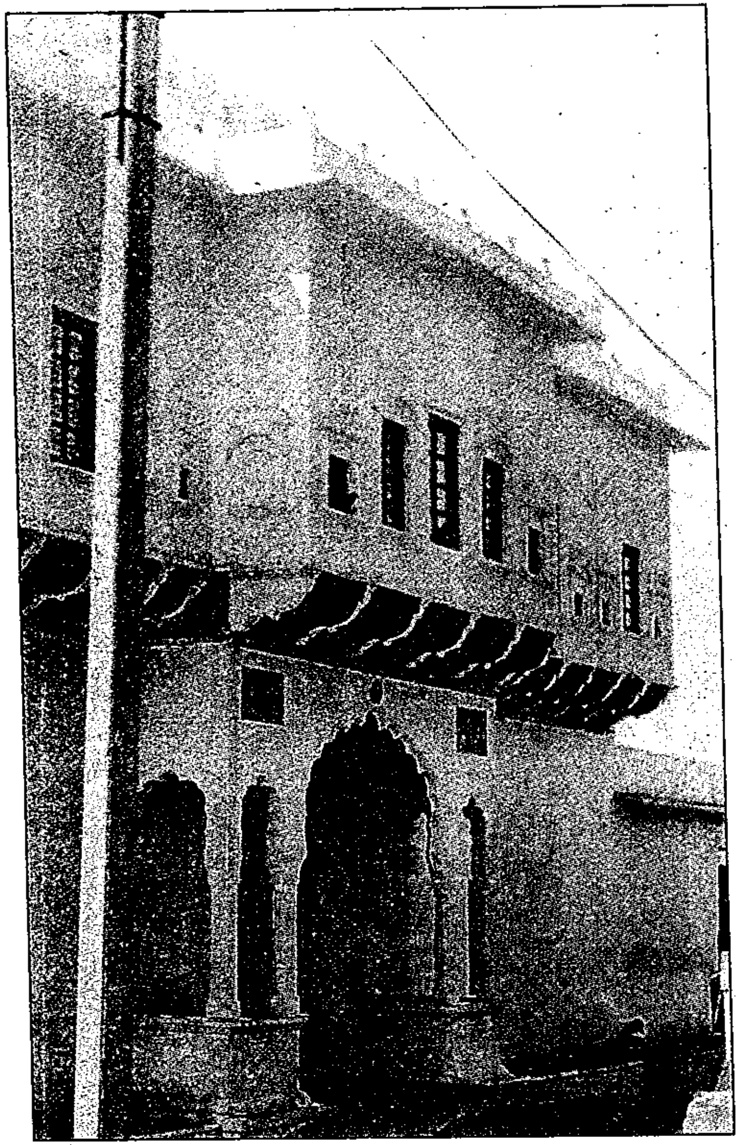
गनेड़ीवालों की चार चौक
की हवेली, लक्ष्मणगढ़



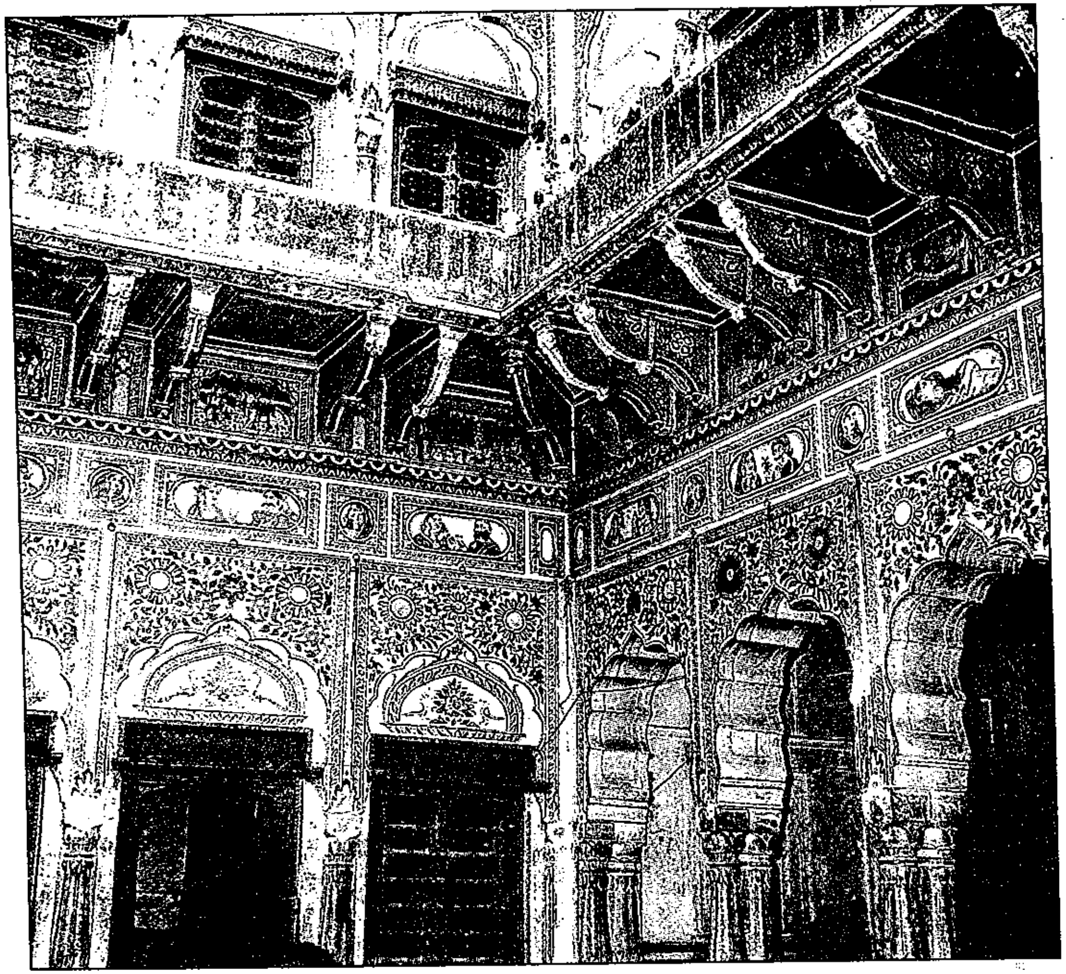
सेठ रामसहायमलजी की
हवेली, लक्ष्मणगढ़



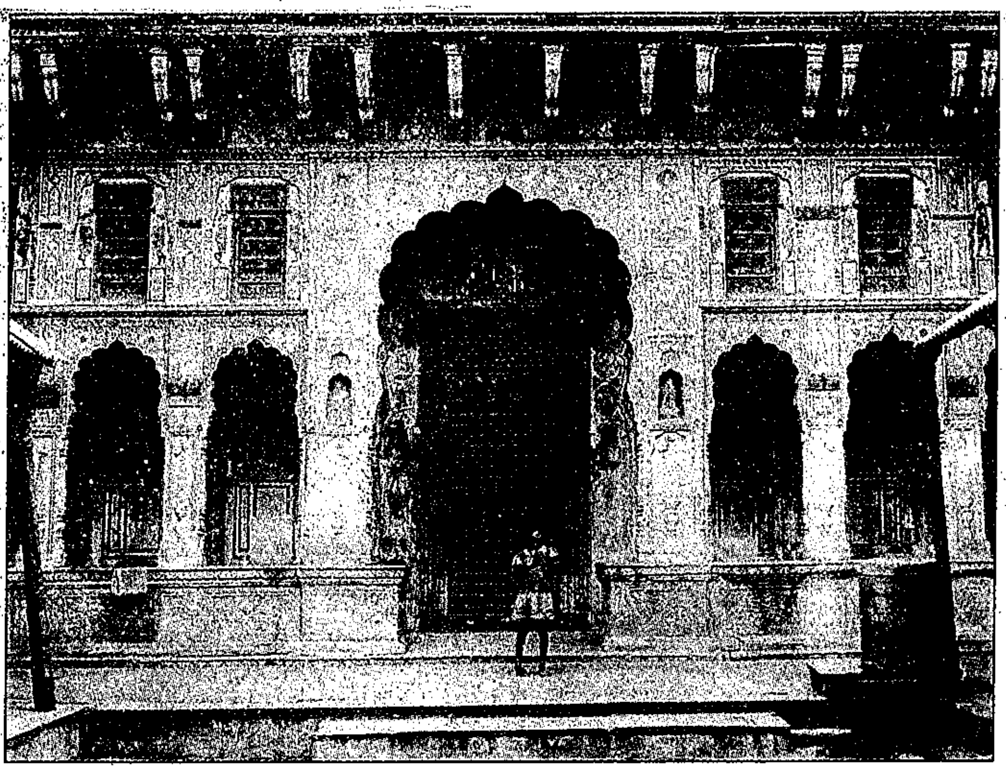
मुकुन्दगढ़ हवेली
का चित्र



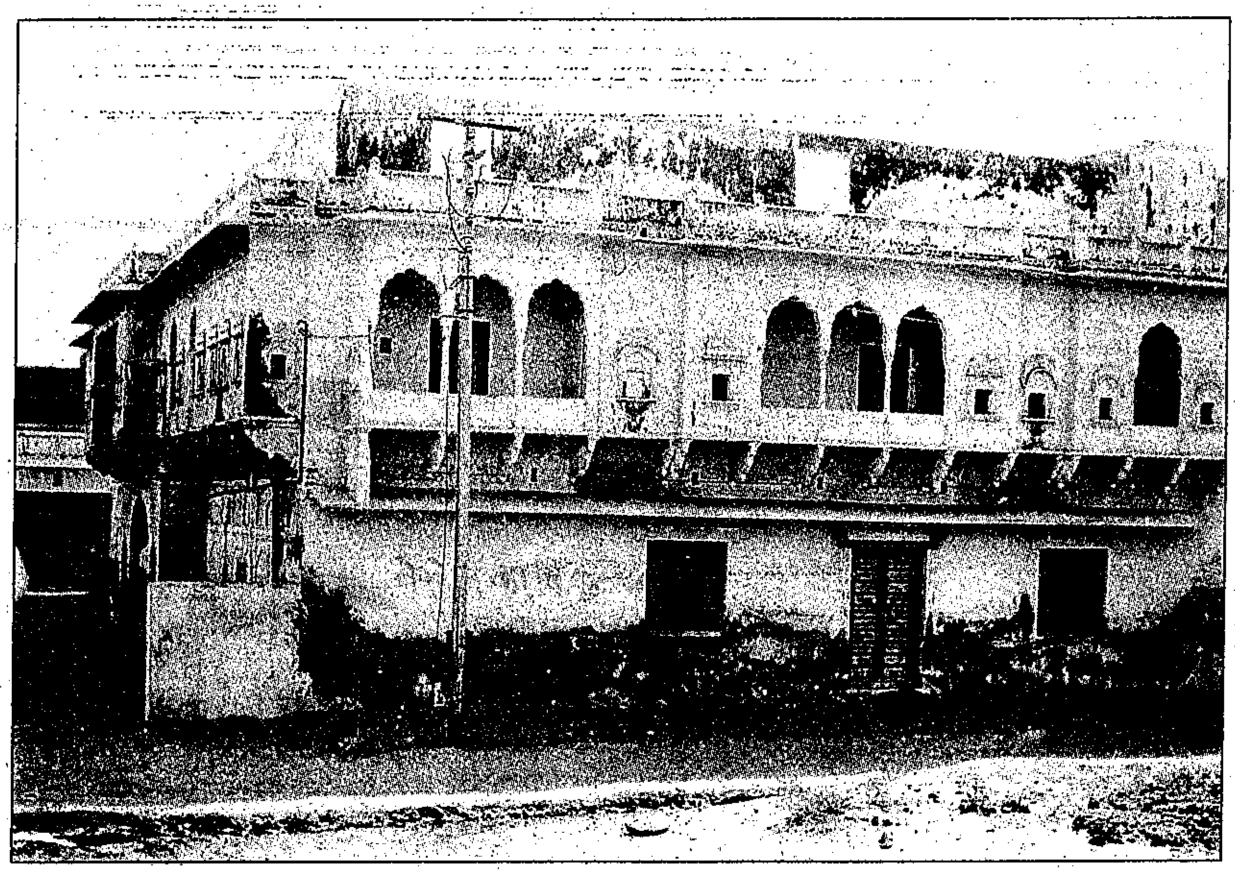
श्री बल्लभजी गनेड़ीवाला के पूर्वजों की हवेली, मुकुन्दगढ़



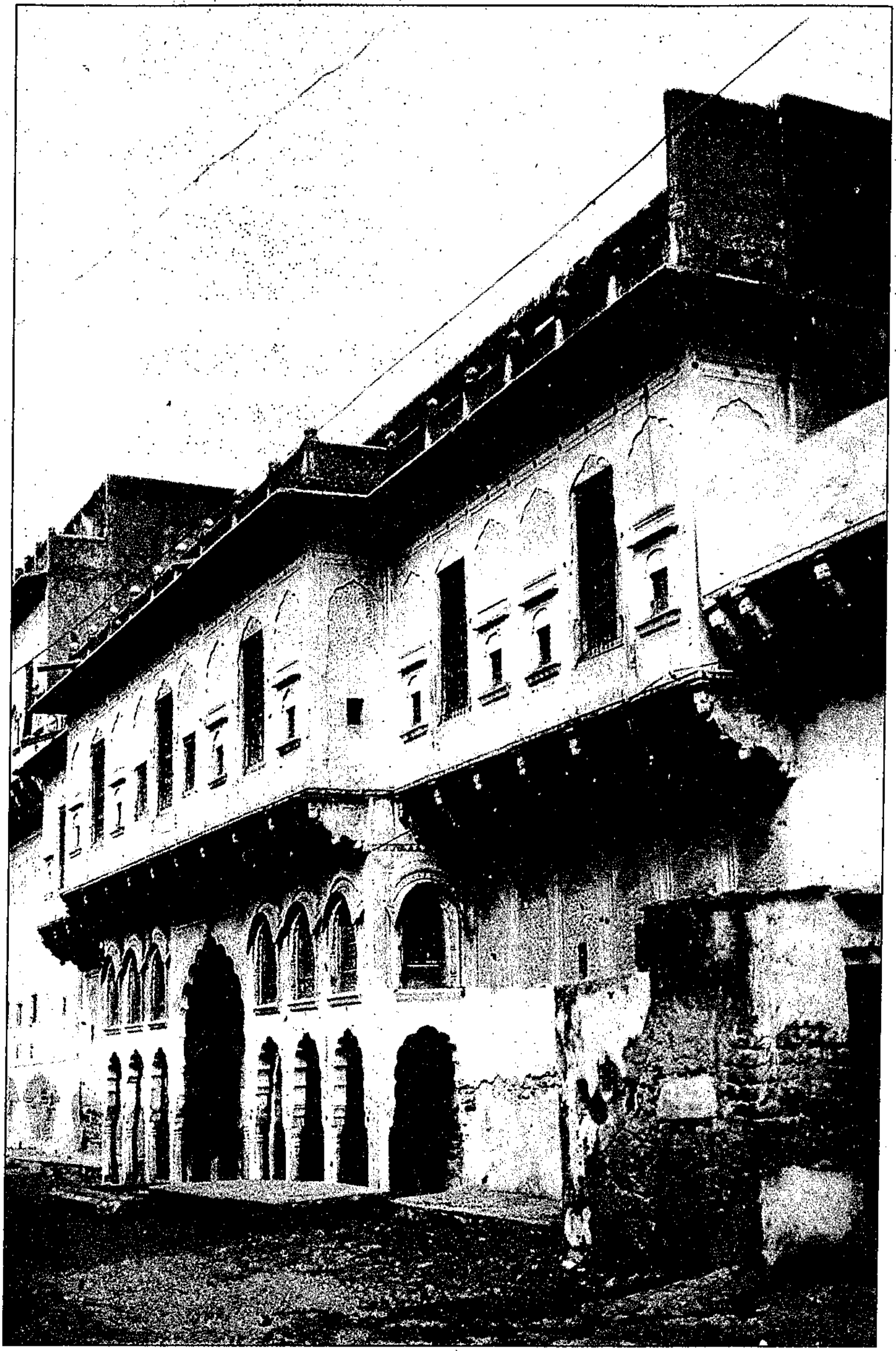
हवेली के भीतरी भाग का चित्र, मुकुन्दगढ़



सेठ रामगोपालजी की हवेली, फतेहपुर



सेठ नन्दलालजी गनेड़ीवाला (सिरसा) द्वारा स्थापित कीर्ति महल (लक्ष्मणगढ़)



सेठ सागरमलजी की हवेली, लक्ष्मणगढ़

प्रथम–खण्ड

संवत् 1597 से 1837

"बुद्धि में धनी, सत्य में निष्ठावान, साहस के भंडार व्यवहारिक सूझ-बूझ में पगे, उदार, दानी, धर्म और संस्कृति में रूचि रखने वाले, नई स्थिति का स्वागत करने वाले, देश विदेश की जानकारी के कोष, रीति नीति के पारखी भारतीय सार्थवाह महोदधि के तट पर स्थित ताम्रलिप्ति से सीरिया की अन्तारवी नगरी तक यव द्वीप कटाह द्वीप से चोल मंडल के सामुद्रिक पत्तनों और पश्चिम में यवन बर्बर देशों तक के विशाल जल थल पर छा गये थे।"

डा. वासुदेव शरण अग्रवाल

प्रथम अध्याय

शेखावाटी की राजनैतिक स्थिति एवं प्राकृतिक परिवेश–बाजोर एवं गनेड़ी

गनेड़ीवाल सेठों से सम्बन्धित दो स्थान प्राचीन काल में शेखावाटी में महत्त्वपूर्ण रहे हैं जहाँ उनके पूर्वजों का पदसंचरण हुआ। इनमें बाजोर प्रथम स्थान है जहाँ पर हरियाणा से आकर उन्होंने आवास बनाया। गनेड़ी इस काल–क्रम में दूसरा उल्लेखनीय स्थल है जहाँ बाजोर से चलकर उन्होंने अपना आश्रयस्थल बनाया। आगे आने वाले सीकर राज्य के ये दो स्थान उत्तरी–दक्षिणी प्रसार बिन्दु रहे। गनेड़ी से भी आगे चलकर इन लक्ष्मीपुत्रों की अवस्थिति कालक्रम के अनुसार शेखावाटी तथा देश के अन्य भूभागों में हुई जिसकी रोमांचक कथा आगे के पृष्ठों में सविस्तार से दी जावेगी। वैश्यजाति के मूलभूत गुणों को अपने में समाहित करते हुये इस परिवार के लोगों ने देश के विभिन्न भागों में संचरण किया और अपने उद्योग और अध्यवसाय से अतुल संपत्ति अर्जित की। ज्ञात नहीं वह कौनसा तत्त्व वणिक् जाति में समाहित है जिसके कारण दैन्य और अभाव से परिपूर्ण जीवन के प्रति एक असंतोष की भावना उनमें स्वयं उत्पन्न हो जाती है। यही अंसतोष उन्हे अज्ञात मार्ग पर चलने को विवश कर देता है।

अनेकों बाधायें उनके मार्ग में आयी होंगी जिनमें प्रकृति का वैपरीत्य, राजनैतिक उथलपुथल जनित अशान्त एवं असुरक्षित वातावरण, अनजाने लोगों का शंकास्पद व्यवहार एवं स्थानीय उद्योगकर्मियों की स्वाभाविक ईर्ष्यावृत्ति प्रमुख थी। इन अनगिनत बाधाओं और आकस्मिक विपत्तियों का सामना करते हुए उनके दृढ़ चरण निरन्तर आगे बढ़ते रहे।

शान्त भाव में टिक रहना न उनके भाग्य में था तथा न उनको स्वीकार था। "चरैवेति चरैवेति" चलते रहो, चलते रहो उनका मूलमंत्र रहा था और गन्तव्य बराबर आगे बढ़ता रहता था। जनश्रुति के अनुसार बाजोर में आकर बसने वाले सेठों के पूर्वज पुण्य–सलिला सरस्वती के तट पर बसते थे। ज्ञात नहीं कितने वर्षों तक उन्होंने उस स्थान पर वास किया। वहाँ से वे आजकल के हरियाणा प्रान्त के भू–भाग में बस गये। वहीं से बाजोर, गनेड़ी और देश के विभिन्न भू–भागों में फैल गये। जिस समय यह प्रवजन हुआ उस समय इनके कुल गुरू सारस्वत ब्राह्मण भी इनके साथ चले। दस प्रकार के ब्राह्मणों में सारस्वत ब्राह्मण भी आते हैं। इन ब्राह्मणों का सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद, माध्यंदिन शाखा, कात्यायनसूत्र और सारस्वत देश से है। यह बात कुमड़िये सारस्वतों पर लागू होती है। शेखावाटी के अनेकों नगरों में बसे हुये सारस्वत ब्राह्मण अपने–अपने यजमानों के साथ उन गांवों में आकर बसे थे।

एक मोटे अनुमान के अनुसार यह माना जाता है कि ईसा की प्रायः 7वीं शती में इस परिवार का परिव्रजन सरस्वती के तट से हरियाणा प्रदेश में हुआ जंहाँ प्रायः 4 शतियों तक रहकर वे कालयापन करते रहे। आगे चलकर राजनैतिक प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण अपने आप को उक्त स्थान में असुरक्षित समझ उन्होंने अन्यत्र पद–संचरण किया। एक स्थूल अनुमान के अनुसार यह समय विक्रम की 12 वी–13वीं शती का था। इस अनुमान का आधार आगे दिया जा रहा है।

हरियाणा में गनेड़ीवालों के पूर्वज सेठ हरचन्दरायजी थे जिनकी 22वीं पीढ़ी में जुगलदासजी हुये। जुगलदासजी की मृत्यु संवत् 1840 में हुई थी।[1] अतः प्रत्येक पीढ़ी के लिये 30 वर्षों का अनुमानित समय लेने पर हरियाणा में उनकी अवस्थिति का ऊपर दिया हुआ समय आता है। इस विषय पर आगे विस्तार से चर्चा की जावेगी।

उपर्युक्त विवरण के अनुसार गनेड़ीवाला सेठों का सम्बन्ध सरस्वती तट के सारस्वत प्रदेश, हरियाणा और शेखावाटी से प्रारंभिक काल में रहा। शेखावाटी के भू–भाग के विभिन्न नगरों में उनका दीर्घकालीन आवास रहा। आज भी इस क्षेत्र के अनेक नगरों में गनेड़ीवाला कुल के लोग बस रहे हैं। इस स्थान पर यह समीचीन है कि उस क्षेत्र की राजनैतिक एवं प्राकृतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डाला जावे जहाँ दीर्घकाल तक रहकर इस कुल ने उन तत्त्वों को अपने आप में समाहित किया जिनके कारण देश के विभिन्न स्थानों पर परिव्रजन कर अपने निरन्तर उद्योग से लखपति और करोड़पति बन बैठे।

मानव के जीवन में प्राकृतिक परिवेश का बड़ा असर होता है। प्रतिकूल प्राकृतिक

---

1. गनेड़ी की छतरी का शिलालेख

परिवेश में प्रकृति की सदाशयता का अभाव जीवन को कठोर, परिश्रमी और उद्योगशील बनने पर विवश करता हैं। दूसरी ओर प्राकृतिक अनुकम्पा जीवन के सुख–साधन आसानी से उपलब्ध करा देती है जिससे जीवन का क्रम अधिक सुविधाभोगी बनकर जो कुछ प्राप्त है उसी में संतुष्ट रहता है। भारत धन धान्य से परिपूर्ण रहा तो इसके लोग कभी दूसरे पर आक्रमण कर उसकी संपत्ति छीनने अन्यत्र नहीं गये। उधर इस देश के पार्श्ववर्ती भूभागों के लोग और सुदूर स्थानों पर बसने वाले लोग जिन्हें प्राकृतिक सुविधायें उपलब्ध नहीं थीं इस देश पर निरन्तर आक्रमण करते रहे। इनमें यूनानी, शक, कुषाण, यूची, हूण, तुर्क अफगन एवं मुगल प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

शेखावाटी का भू–भाग एक राजनैतिक परिभाषा से परिभाषित प्रदेश है। प्रशासन की सुविधा के लिये क्षेत्र विशेष को विविध भागों में बांटा जाता है। यह राजनैतिक विभाजन मात्र है। प्रकृति इस विभाजन को स्वीकार नहीं करती और अपने अनन्य उपादान नदनदी, सागर, पहाड़, गहन वृक्षावली का निर्बाध विस्तार करती रहती है। सीमा से बंधना प्रकृति की प्रकृति में नहीं है।

शेखावाटी भू–भाग का वर्तमान नाम अधिक पुराना नहीं है। राव शेखा और उनके वंशजों के शासित प्रदेश को शेखावाटी नाम दिया गया। पहले यह प्रदेश विविध नामों से जाना जाता था। [2] राव शेखा और उसके पूर्वज जयपुर राजघराने से सम्बन्धित थे जो कछवाहा वंश के थे। वि. 933 के आसपास सोढ़देव के पुत्र दुल्हेराय ने दौसा पर अधिकार जमाया। [3] यह इस क्षेत्र में कछवाहा शासन की शुरूआत थी। आगे चलकर इसी वंश के उदयकरण संवत् 1423 में आमेर के शासक हुये। [4] इनके तीन पुत्रों में बालाजी सबसे छोटे थे जिनको राजपूत शासकों की कुलरीति के अनुसार कुछ गांव भरण–पोषण के लिये मिले। बड़े नरसिंह आमेर की गद्दी पर बैठे। बालाजी को बरवाड़ा जागीर में मिला। बालाजी शेखावतों के आदि पुरूष थे।

बालाजी के पुत्र मोकलसिंह के शेख बुरहान की कृपा से शेखाजी उत्पन्न हुये। शेखाजी का कार्यकाल वि. 1490 से 1545 तक रहा। आगे चलकर इनके वंशजों का राज धीरे–धीरे उस सारे क्षेत्र तक फैल गया जिसमें आज के सीकर और झुझुंनू जिलों के भू–भाग आते हैं। इन्हीं शेखावत वंश से शासित भू–भाग को मोटे रूप से शेखावाटी कहा जाने लगा।[5] सीकर, शेखावाटी का सबसे बड़ा राज्य बन गया।

---

2. विस्तृत विवरण के लिये देखें–शेखावाटी का इतिहास–श्री रतन लाल मिश्र.

3. सीकर का इतिहासः पं. झाबरमल शर्मा

4. शेखावाटी प्रकाश–पं रामचन्द्र भगवती दत्त शास्त्री–पृ. 7

5 शेखावाटी की सीमा के लिये देखें–शेखावाटी का इतिहास–पूर्ववत्

शेखावाटी के इस प्रदेश पर विविध राजकुलों का शासन रहा है। इनमें चौहान, चन्देल, निरवाण, डालिये, मोर, जोड़, कायमखानी, पठान आदि वंश प्रमुख रहे हैं। हर वंश के पास छोटे–छोटे भू–भाग थे जो प्रायः उन्हीं के वंश के नाम से प्रसिद्ध थे जैसे चंदेलवाटी, फतेहपुरवाटी आदि। इस परिस्थिति में प्रदेश का एक नाम संभव भी नहीं था।

इन छोटे–छोटे राजकुलों में अक्सर जमीन के लिये लड़ाईयाँ होती रहतीं जिनका कुफल तत्स्थान में बसने वाले लोगों को उठाना पड़ता। एक दूसरे की प्रजा को लूटना उनके शौर्य का एक अंग बन गया था। इस परिस्थिति में हर व्यक्ति उस राज में बसना चाहता जो उसे समुचित संरक्षण प्रदान कर सके। छोटी–मोटी लड़ाईयाँ दैनिक जीवन का अंग बन गयी थीं। कभी कभी बड़ी सेनाओं का प्रयाण भी उस क्षेत्र से होता। जहाँ जहाँ से सेना गुजरती विनाश के पद–चिन्ह छोड़ती जाती। लोग पुनः नव निर्माण में जुट जाते और जनजीवन फिर पहले की तरह अजस्र गति से बहता रहता।

बाजोर का स्थान जहाँ गनेड़ीवाला सेठों के पूर्वज आकर बसे एक पुराना गांव है। 12वीं व 13वीं शती विक्रमी में यहाँ चन्देलों का राज था। शेखावाटी के रैवासा, बाजोर, कासली, रघुनाथगढ़ सांगरवा, शोभावती नदी का तट प्रदेश, शांकभरी के पर्वत के दोनों ओर का भू–भाग चन्देल राजपूतों के अधिकार में रहा है। रैवासा में जो बाजोर से 2 मील की दूरी पर अवस्थित है, 3 शिलालेख मिले हैं जो ई. 13 वीं शती के हैं। इनसे ज्ञात होता है कि रैवासा चन्देल राज्य का प्रतिगणक था। ये शिलालेख कीर्तिस्तम्भ देवली के रूप में हैं जिनमें संभवतः किसी लड़ाई में मरे व्यक्तियों का उल्लेख है।

ये चन्देल शासक चौहानों के सामन्त थे यह बात भी उपर्युक्त शिलालेखों से ज्ञात होती है। यह संभव है कि प्रारम्भ में वे चौहानों की तरह प्रतिहारों के सामन्त रहे हों पर प्रतिहारों की शक्ति कमजोर पड़ने पर जब चौहान स्वंत्रत हो गये तो उनके करद सामन्त बन गये हों। संवत् 1100 और 1200 वि. के आस-पास के शिलालेख[6] भी रघुनाथगढ़ से प्राप्त हुये हैं जिनसे इस धारणा की पुष्टि होती है कि यह क्षेत्र चन्देल राजपूतों के अधिकार में था।

बाजोर के पास स्थित रैवासा स्थान की कुछ जानकारी यहाँ अपेक्षित है। रैवासा जिसे रतिवासा कहा गया है, प्राचीन समय में खलुवाणा नाम से प्रसिद्ध व्यापारिक स्थान था। अनेकों व्यापारिक काफिले इस मार्ग से गुजरा करते थे। बिणजारों की सैकड़ों बैलोंवाली बालद इसी स्थान से गुजरती थी। रैवासा में कई कूँए इन बिणजारों के बनाये

---

6. इनमें एक शिलालेख रघुनाथगढ़ में कूवे पर और दूसरा शिलालेख देवी के मंदिर में है।

हुये आज भी विद्यमान हैं। इन कूँओं की चाठ एक ही विशाल पत्थर की बनी है। इन चाठों में बिणजारों के पशु पानी पीते थे। रैवासा उन काफिलों के रात्रि विश्राम का स्थल था अतः इस स्थान पर उन्होंने अपने लिये आवश्यक सुविधायें जुटा ली थीं।

रैवासा और बाजोर में सेठों की अनेक विशाल हवेलियाँ आज भी अवस्थित हैं। व्यापारिक मार्ग पर पड़ने से अनेक व्यापारी लोग इस क्षेत्र में बसे हुये थे। ऐसी जनश्रुति है कि बिणजारे यहाँ का नमक बालदों में भरकर ले जाते थे और जीवन की अन्य आवश्यक वस्तुयें यहाँ इस क्षेत्र में लाते थे।

विग्रहराज चौहान द्वितीय के समय 1030 वि. का शिलालेख बताता है कि व्यापारी प्रति लवण की कूटक (क्यारी) पर एक द्रम्म या उसका भांग भगवान हर्षनाथ के मन्दिर को भेंट करते थे।[7] इसी प्रकार की भेंट हरियाणा में पृथूदक तीर्थ में घोड़ों के व्यापारी भी दिया करते थे। रैवासा और बाजोर के पास जीण माता का सर है जिसे खारड़ा कहते है। यहाँ अनेकों नदनदियों का जल एकत्रित हो जाता है। भूमि के क्षारयुक्त होने से यहाँ बड़ी मात्रा में आज भी नमक पैदा होता है।

जब गनेड़ीवालों के पूर्वज हरियाणा से इस क्षेत्र में आकर बसे तो व्यापार की इन विपुल संभावनों का उन्होंने पूरी तरह आकलन किया होगा। संभवतः उन्होंने किसी सार्थवाह के साथ आकर इस भू–भाग को पहले देखा भी हो। व्यापारिक मार्ग पर बसा होने के कारण और नमक के उत्पादन का केन्द्र होने के कारण ही उन्होंने इन स्थान का बसने के लिये चुनाव किया होगा। इस बात की प्रबल संभावना है। पास ही रैवासा में अनेकों श्रेष्ठि कुल बसे हुये थे जो पिछले 70-80 वर्षों में अन्यत्र जा बसे। आज रैवासा और बाजोर में उनकी हवेलियाँ खाली पड़ी हैं। इस बाजोर गाँव को जाटों के बडवे की बही के एक उल्लेख के अनुसार बाज्या गोत्र के जाटों ने संवत् 892 में बसाया था। आज भी इस गोत्र के जाट बाजोर और पास स्थित गोरिया ग्राम में अच्छी संख्या में हैं। यह सर्व विदित तथ्य है कि शेखावाटी के प्रायः सभी नगरों को प्रारंभिक रूप से जाटों ने बसाया था। बाद में उनका विस्तार शासन परिवर्तन के साथ साथ होता रहा। जैसा कि पूर्व में कहा गया है शेखावाटी के भू–भाग पर प्रकृति अधिक सदय नहीं रही है। यह प्रदेश प्रायः शुष्क माना जाता है जहाँ वर्षा का अभाव निरन्तर बना रहता है। एक फसली इलाका है जहां तीन में से दो साल अकाल के होते हैं। नदनदी और प्रशस्त पथों का अपेक्षाकृत अभाव है। बड़े–बड़े बालू धूल के उत्तुंग टीले जगह जगह अड़े हुये हैं और वृक्षावली विरल रूप में मिलती है।

---

7. हर्षपर्वत पर प्राप्त शिलालेख में द्रम्म का बीसवाँ भाग प्रति कूटक देने का उल्लेख आता है।

अरावली पर्वत की श्रेणियाँ इस भू–भाग में फैली हुई हैं। इन पहाड़ी श्रेणियों में अमरसर, खंडेला, गांवड़ी, गणेसर, मालकेतु, लुहागर, जीण, हर्ष आदि प्रसिद्ध स्थान अवस्थित हैं। बाघोर, खेतड़ी, सिंघाणा इस पर्वतमाला के मध्य में हैं। इसके दोनों ढालों के निकट की भूमि उपजाऊ है। जोधपुर–सुनारी घाट से काटली नदी निकलकर केड़, खटकड़ के नीचे से बहती हुई बड़ागांव, नाटास, भंड़ौदा, सुलताना, सलामपुर के मध्य भाग को काटती हुई बगड़, जखोडा के पूर्व भाग से तथा नरहड़, बदनगढ़ के पश्चिम भाग से बहती हुई बीकानेर राज्य की राजगढ़ तहसील के कबीरासर ग्राम में जाकर बालू के टीलों में सूख जाती है।[8] अपने तीव्र वेग से भूमि को काटने के कारण इसका नाम काटली पड़ा है। पहाड़ी नदनाले हर्ष के पहाड़ से उतरकर बाजोर के पास की समतल भूमि पर फैल जाते हैं।

बाजोर के पास काछोर की झील प्रसिद्ध है जहाँ नमक तैयार किया जाता है। पहाड़ों में जगह जगह इमारती पत्थर निकलता है। रघुनाथगढ़, चिराणा, भोया की पट्टियाँ मशहूर हैं। छापोली के पत्थर की चक्की बनती है। खनिज पदार्थों में खेतड़ी की ताँबे की खानें, लीला थोथा, अभ्रक, फिटकड़ी, गेरू की मिट्टी आदि मिलती है।

पहाड़ों की तलहटी में आम, जामुन, नींबू, नारंगी, अनार, आंवला, लेहसु, करूँदा आदि के वृक्ष होते हैं। मिर्च, धनिया, मेथी, जीरा, पोश्त, जो, गेहूँ, चना, सिरसूं शरद में तथा बाजरा, मोठ, मूँग, चोंला, उड़द गुँवार वर्षाऋतु में होते हैं।[9] बाजोर की स्थिति अरावली पर्वत माला की श्रेणी के पार्श्व भाग में है। यह सीकर से चार मील दक्षिण में आज कल के सीकर–जयपुर राजमार्ग पर पड़ता है। उस समय बाजोर के पास रैवासा होकर गुजरने वाला मार्ग संभवतः रैवासा से पर्वतमाला के नीचे होता हुआ उत्तर की ओर निकल जाता था। बाजोर के पास आज भी टीलों की भीड–भाड़ है। यहाँ गौरी बालुरेत के उत्तुंग टीले पहाड़ों की उन्नत चोटियों से होड़ करते प्रतीत होते हैं। बनावली है पर आज उसकी सघनता मिट चुकी है।

प्राचीन जमाने में गिरि पंक्तियों और उन्नत टीलों से भरा पूरा बाजोर निश्चय ही एक ऐसा स्थल रहा होगा जिसे प्रकृति ने अपना संरक्षण प्रदान किया था।

उधर दूसरे छोर पर उतना ही प्राचीन गनेड़ी गांव था जो आगे चलकर सीकर राज्य का उतरी पश्चिमी सीमान्त भाग बना। एक ओर जोधपुर, दूसरी ओर बीकानेर और तीसरी ओर जयपुर (उन दिनों का आमेर) राज्य था। इस प्रकार तीन विशाल

8.. श्री रामचन्द्र भगवती दत्त शास्त्री–पूर्व–पृ. 5. 6

9. शेखावाटी का इतिहास–पूर्वोक्त

राज्यों के सीमान्त भाग पर अवस्थित होने के कारण स्वतः इसकी स्थिति बड़ी महत्त्वपूर्ण थी। जब मायाराम जी के पिताजी बाजोर से उठकर गनेड़ी सन् 1630 ई. के आस पास जा बसे उस समय तक सीकर का राज्य अस्तित्व में नहीं आया था। आगे चलकर राव दौलतसिंह ने ई. 1687 वि. 1744 में सीकर किले की नींव डाली।[10]

गनेड़ी गांव सीकर सुजानगढ़ के बीच में सालासर से 11 किलोमीटर पहले आता है। तीन राज्यों के सीमान्त के कारण और व्यापारिक मार्गों के कारण इसका महत्त्व बढ़ गया था। उस समय जब बाजोरियों के पूर्वज गनैड़ी आये तब तक न सीकर था न लक्ष्मणगढ़ तथा न रामगढ़ बसा था। फतेहपुर बस गया था जहाँ नबाब फतेहखां कायमखानी शासन कर रहा था। बाजोर से उठकर सेठ मायारामजी या उनके पिताश्री सीधे सुदूर गनेड़ी क्यों जा बसे इस प्रश्न पर यथास्थान चर्चा की जावेगी। गनेड़ी गांव का क्षेत्र पहले मोहिलवाटी में आता था। मोहिलों ने यह भू—भाग बगड़िया राजपूतों से छीना था जो डाहलियों को निकाल कर यहाँ शासन करते थे।[11] मोहिल चौहानों का विस्तृत प्रदेश था जो उत्तर में राशिसर तक फैला हुआ था यह बात विक्रमसिंह चौहान के राशिसर शिलालेख से ज्ञात होती है जो 1288 विक्रमी का है। लाडनूँ भी मोहिलों के अधिकार में था।

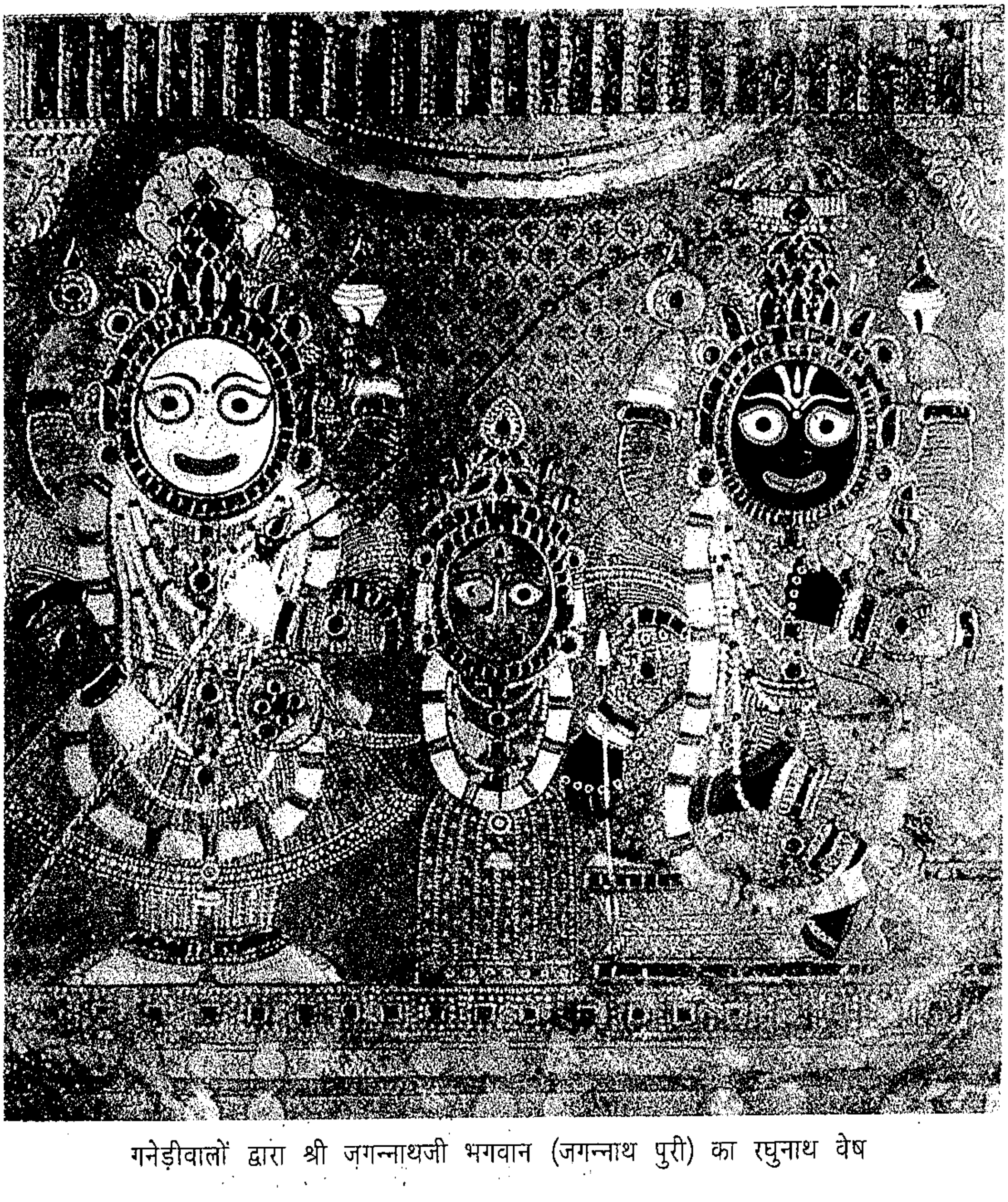
गनेड़ी में खोज करते समय प्रसिद्ध विदेशी विद्वान एल.पी. टेसीटोरी को तीन शिलालेख मिले थे जो मोहिलों के थे। एक शिलालेख वि. 1239 का है। मोहिलों से यह क्षेत्र बीदा राठोडों ने छीन लिया जिनके नाम पर यह क्षेत्र बीदावाटी कहलाया। संभवतः गनेड़ी इसमें सम्मिलित नहीं था। इनके पूर्व फतेहखां कायमखानी ने संवत् 1508 में जब फतेहपुर बसाया तो गनेड़ी का क्षेत्र निश्चित रूप से उसके अधिकार में था। कायमखानियों से संवत् 1788 के आसपास सीकर के राजाओं के नीचे यह भू—भाग चला गया। यह इस गांव का संक्षिप्त ऐतिहासिक विवेचन है।

बाजोर में गनेड़ीवालों के पूर्वज कई शतियों तक रहकर व्यापार व्यवसाय करते रहे। दिल्ली पर 12वी शती ई. के अंतिम चरण से लेकर निरन्तर मुस्लिम शासन बना रहा। पास का हरियाणा प्रदेश अनेको युद्धों का केन्द्र बिन्दु रहा। ऐसी अवस्था में सारे प्रदेश का वातावरण अशान्त हो उठा था। दूसरे प्रांतीय शासक बिना किसी डर के लोगों पर अत्याचार करते थे और कर या अन्य रूप से उनसे अधिक से अधिक वसूल करना चाहते। ऐसी या इससे मिलती जुलती स्थिति में संभवतः हरियाणा से गनेड़ीवाला सेठों का प्रवजन फिर हुआ जिसका कारण अगले अध्याय में विस्तार से दिया जावेगा।

---

10 सीकर का इतिहास—पं. झाबरमल शर्मा पृ. 48 माधोवंश प्रकाश—बख्शी जूँथाराम—

11 मुँहणोत नैणसी की ख्यात— । पृ. 189-96



गनेड़ीवालों द्वारा श्री जगन्नाथजी भगवान (जगन्नाथ पुरी) का रघुनाथ वेष

द्वितीय अध्याय

बाजोर से गनेड़ी

गनेड़ीवाला वैश्य अग्रवाल हैं। महाराजा अग्रसेनजी के 14 वें पुत्र सिंघपति से सिंघल गोत्र चला है। सिंगलगोत्र वाले वैश्य विभिन्न कुल नामों से विख्यात है। गनेड़ीवाला, सिंघाणिया, बाजोरिया, दूधवेवाला, झाझड़िया, मोड़ा, काजड़िया, हिंसारिया, बेरोलिया, पसारी, नेवटिया, ढांढनिया, राजगढिया आदि। शेष लोग अपने को सिंगल या सिंघल लिखते हैं। उपर्युक्त नामो में से अधिकांश नाम स्थान वाचक हैं। इन नामों का प्रार्दुभाव 19वीं शती में हुआ जब सिंघल गोती वैश्य अपने अपने स्थानों से देश के विभिन्न भागों में पद–संचरण करने लगे।

सिंघल गोती महाजनों के घरू ब्राह्मण सारस्वत हैं तथा चतुर्भुजी माता उनकी कुल देवी है। बाजोर से उठकर जो परिवार फतेहपुर गये उन्होंने अपनी कुलदेवी का एक छोटासा मन्दिर भी फतेहपुर में बना लिया था। चतुर्भुजी देवी लक्ष्मी का स्वरूप हैं और इस गोत्र के वैश्यों की कुल-देवी हैं।

अग्रवंश का इतिहास महाराजा अग्रसेनजी से प्रारम्भ होता है। वे अग्रोहा नामक गणराज्य के अधिपति थे। उनकी उदारनीति के कारण अग्रोहा की बड़ी कीर्ति फैली। जो व्यक्ति अग्रोहा में आकर बसता उसे पूर्व में बसे हुये प्रत्येक परिवार से एक ईंट मिलती और एक रूपया मिलता था। इस प्रकार आगन्तुक परिवार को अपना आवास बनाने व व्यापार प्रारम्भ करने में कोई कठिनाई नहीं होंती थी।

अग्रवाल वंश में साढ़े सत्रह या अठारह गोत्र हैं। इन गोत्रों के प्राचीन नाम निम्न लिखित हैंः— 1 गर्ग 2 गोयल 3 गोयन 4 मित्तल 5 जिन्दल 6 बंसल 7 सिंघल 8 एरण 9 कंसल 10 कुठंल 11 तिगंल 12 मंगल 13 बिन्दल 14 टेरण 15 मुद्गल 16 धारण 17 तायल 18 नागेल। अग्रवाल वंश का वृत्त अतीव सुज्ञात है अतः इस सम्बन्ध में अधिक विवरणों में न जाकर मूलभूत बातों का संक्षेप में उल्लेख कर दिया गया है।

गनेड़ीवालों के पूर्वज बाजोर में कई शतियों तक सुखपूर्वक कालयापन करते रहे। धीरे—धीरे परिवार में वृद्धि हुई जिसके फलस्वरूप आय में वृद्धि भी आवश्यक हो गयी अतः व्यापार विणज के लिये नये क्षेत्रों की खोज प्रारम्भ की गयी। बाजोर से गनेड़ी के लियें किया गया परिव्रजन इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिये। इस परिव्रजन के तात्कालिक कारण भी हो सकते हैं जिनका वर्णन आगे चलकर किया जा रहा है।

जन श्रुति है कि बाजोर के ठाकुर कामदार के एक दरोगिन थी जो उसे अफीम आदि का कलेवा नित्य प्रति कराती थी। एक दिन इस दरोगिन की लड़की और एक ब्राह्मण की लड़की साथ साथ पानी निकाल रही थीं। देव योग से ब्राह्मण की लड़की के अनजाने में लगे धक्के से दरोगिन की लड़की कूवे में गिरकर मर गयी। प्रतिशोध में ठाकुर ने दरोगिन के कहने पर ब्राह्मण कन्या को भी कूवे में धकेल दिया। इस दुर्घटना पर सारे बाजोर में हाहाकार मच गया। इस दुष्टकर्म से दुखी और विक्षुब्ध होकर गनेड़ीवालों के पूर्वजों ने बाजोर छोड़ दिया। वे गनेड़ी चले आये। आज भी बाजोर में महाजनों का सिर्फ एक घर है जो बाहर रहता है।

बाजोर में लोग इस कथा के अंश को सत्य मानते हैं। लड़की ब्राह्मणों की न होकर अन्य जाति की थी। आज भी जहाँ लड़की को जलाया गया वहाँ एक बड़ी पीपली खड़ी है जो इस हृदय विदारक घटना की मूक साक्षिणी बनी हुई है। आज भी इस पीपली के नीचे के भू—भाग को अशुभ मान लोग वहाँ अपना आवास नहीं बनाते। कहते हैं कि एक ब्राह्मण वहाँ बस गया जिसका सर्वनाश हो गया। घटना अपने विस्तृत विवरण में कुछ परिवर्तित हो गयी हो पर मूल कथ्य उसका ठाकुर के जघन्य कृत्य को उजागर कर रहा है।

गनेड़ीवाला वंश के प्रथम पुरूष स्वनामधन्य सेठ हरचन्दरायजी थे। इनकी 22 वीं पीढ़ी में सेठ जुगलदासजी समुत्पन्न हुये थे। इन सेठ जुगलदासजी का स्वर्गवास माघ शुक्ला 12 संवत् 1840 में गनेड़ी में हुआ था इस बात के निश्चित प्रमाण बहियों में प्राप्त हैं। हरिद्वार के पन्ड़ों की बहियों से श्री जुगलदासजी के पिता सेठ रामकरणजी के फूल हरिद्वार में संवत् 1826, श्री रामकरणजी के पिता श्री सीतारामजी के फूल

सं. 1819 तथा श्री सीतारामजी के पिताश्री मायारामजी के फूल सं. 1787 में हरिद्वार आने की जानकारी मिलती है। हरिद्वार की बहियों का यह साक्ष्य कालक्रम की संगति बैठाने के लिये बड़ा महत्त्वपूर्ण है।

हरिद्वार की बही का सर्व प्रथम गनेड़ीवालों सम्बन्धी उल्लेख सं. 1786 से प्रारम्भ होता है। यह प्रविष्टि निम्न प्रकार से हैः—बाजोरिया नाम से ज्ञात गनेड़ी ग्राम के वासी श्री सीताराम व दासाराम व बाबूलाल मायारामजी के बेटे, महासिंहजी के पोते, रामकरण जी, श्यामजी सीतारामजी के बेटे, श्री रामकरणजी हरिद्वार आये फूल माता व चाचा गुलाब के लाये। अगर मृत्यु और हरिद्वार में फूल पहुँचने की अवधि का अन्तर कुछ वर्षों का मान लें तो मृत्यु तिथि तक पहुँचना आसान बन जाता है। उक्त उल्लेख के अनुसार सेठ मायारामजी की मृत्यु सं. 1787 में हो गयी थी। एक अन्य उल्लेख के अनुसार इन मायारामजी का जन्म संवत् 1697 ई. 1640 में हुआ था। बही के उल्लेख के अनुसार मायाराम जी के फूल हरिद्वार जब ले जाये गये तो इनके पौत्र रामकरणजी भी साथ गये थे जो मायारामजी के दीर्घ आयुष्य का सूचक है। सेठ मायारामजी के जन्म और मृत्यु तिथि के एक तरह से इस सुनिश्चित आकलन से उनके पूर्ववर्ती वंशजों का कालक्रम समझने में सहायता मिलती है।

सामान्यतया राजवंशो की एक पीढ़ी बीस वर्षों की मानी जाती है। यह इतिहासकारों का मत है। महाजन परिवार की एक पीढ़ी प्राय 30 वर्षों के आस पास मानकर चला जा सकता है। इस पद्धति से चलने पर मायारामजी के पूर्ववर्ती वंशजों का कालक्रम निम्न प्रकार से बैठता है।

1.	श्री हरचन्दरायजी	जन्म संवत्	(1177 ई. 1120)
2.	श्री रूपरायजी	जन्म संवत्	(1207 ई. 1150)
3.	श्री दीदारामजी	जन्म संवत्	(1237 ई. 1180)
4.	श्री आनारामजी	जन्म संवत्	(1267 ई. 1210)
5.	श्री बींजरामजी	जन्म संवत्	(1296 ई. 1239)
6.	श्री साजारामजी	जन्म संवत्	(1326 ई. 1269)
7.	श्री लाखारामजी	जन्म संवत्	(1356 ई. 1299)
8.	श्री जालकरामजी	जन्म संवत्	(1387 ई. 1330)
9.	श्री सावाराम जी	जन्म संवत्	(1417 ई. 1360)
10.	श्री नैनारामजी	जन्म संवत्	(1447 ई. 1390)
11.	श्री भींवारामजी	जन्म संवत्	(1477 ई. 1420)
12.	श्री तेजारामजी	जन्म संवत्	(1507 ई. 1450)

13.	श्री भवानीदासजी	जन्म संवत्	(1537 ई. 1480)
14.	श्री श्यामदासजी	जन्म संवत्	(1567 ई. 1510)
15.	श्री गोकुलचन्द्रजी	जन्म संवत्	(1597 ई. 1540)
16.	श्री गंगारामजी	जन्म संवत्	(1627 ई. 1570)
17.	श्री मनसारामजी	जन्म संवत्	(1657 ई. 1600)
18.	श्री मायारामजी	जन्म संवत्	(1687-97ई. 1630-1640)
19.	श्री सीतारामजी	जन्म संवत्	(1726 ई. 1669)
20.	श्री रामकरणदासजी	जन्म संवत्	(1757 ई. 1700)
21.	श्री जुगलदासजी	जन्म संवत्	(1777 ई. 1720)

उपर्युक्त नामावली के अनुसार सेठ जुगलदासजी तक 21 पीढ़ी होती हैं। फतेहपुर की छत्री में जो गनेड़ीवाला सेठों की वंशावली दी गयी है उसमें श्री मनसाराम जी के बाद श्री महासिंहजी का नाम नहीं है पर हरिद्वार की बही में श्री महासिंहजी का नाम आया है। इस बात की संभावना है कि संभवतः महासिंहजी का नाम ही मनसाराम हो।

फतेहपुर कस्बे में सेठ रामगोपालजी गनेड़ीवाला द्वारा बनाई हुई भव्य छत्री है। इसका निर्माण 1843-1847 वि. ई 1786-90 में हुआ था। इसमें 2 शिलालेख आमने सामने लगे हैं। बाँये हाथ के शिलालेख में गनेड़ीवाला महाजनों के पूर्वजों का क्रम दिया गया है। यह क्रम श्री गोकुलचन्द्रजी से प्रारम्भ होता है। उनके पूर्व के नाम इस शिलालेख में नहीं हैं। इसका अर्थ यह है कि संभवतः गोकुलचन्द्रजी ही बाजोर से उठकर गनेड़ी में सर्वप्रथम आकर बसे थे। हरिद्वार की बही में इनका नाम नहीं है। इसके उल्लेख मायारामजी से शुरू होते हैं।

श्री गोकुलचन्द्रजी का जन्म वि. 1597 ई. 1540 में हुआ था। यह वह समय था जब दिल्ली की सल्तनत मुगलों के अधिकार में चली गयी थी। दिल्ली का पुराना लोदी वंश समाप्त हो चुका था। मुगलों का राज्य अभी नया ही था अतः देश का राजनैतिक वातावरण अशान्त बना हुआ था। श्री गोकुलचन्द्रजी प्रायः 20 वर्ष की आयु में गनेड़ी में आकर बसे थे। गनेड़ी बाजोर से उत्तर पश्चिम में आमेर, जोधपुर–बीकानेर राज्यों की सीमा के संगम पर बसा हुआ था। एक उद्योगकर्मी और व्यापारी युवक का इस ग्राम में आकर बसना एक चर्चा का विषय बना होगा।

नवआगन्तुक ने एक नई राह खोजी। व्यापार व्यवसाय को संगठित किया, भव्य आवास बनाया और गांव में अपनी एक स्थिति बना ली। उस समय हर सामन्त और राजा, महाराजा अपने अपने कस्बों में महाजनों को विशेष सुविधायें देकर बसा रहे थे। संपन्न महाजन के गांव में बस जाने से ठाकुर की आय में वृद्धि स्वयंमेव हो जाती

थी तथा संबन्धित स्थान उनके भव्य आवास से मंडित हो जाता था।

श्री गोकुलचन्द्रजी की पूरी संतति का विवरण प्राप्त नहीं है। श्री गंगारामजी इनके सुपुत्र थे जिनका जन्म वि. 1627 (ई. 1570) के आसपास हुआ था। इस समय मुगलों का साम्राज्य देश में अपनी जड़ें गहरी जमा चुका था। अकबर (ई. 1556-1605) का राज्यकाल शांति की वह सौगात लाया जिसके कारण देश में फिर एक सुखद वातावरण बना। अधिकांश राजपूत राजा अकबरी दरबार के मनसबदार बनकर पराधीनता का जीवन जी रहे थे। जो प्रतिकार कर रहे थे वे अकेले पड़ गये थे अतः सफलता उनके चरण चिन्हों को चूमती दिखायी नहीं दे रही थी। कृषि और व्यापार निरन्तर उन्नति कर रहे थे और देश फिर समृद्धि के प्रशस्त पथ पर बढ़ रहा था।

इसी शुभ दौर में श्री गंगारामजी के पुत्र का जन्म हुआ। फतेहपुर की छत्री में इनका नाम श्री मनसाराम दिया हुआ है। जैसा कि पूर्व में कहा गया है हरिद्वार की बहियों में दिया हुआ नाम महासिंह है। महासिंहजी का जन्म वि. 1657-1667 ई. 1600-1610 की अवधि में हुआ। सेठ मायारामजी इन्हीं महासिंह जी के पुत्र थे। इनका जन्म वि. 1697 (ई. 1640) के आसपास हुआ था। इनके अस्थि–फूल हरिद्वार में वि. 1787 (ई. 1730) में आये थे। इससे ज्ञात होता है कि उन्होंने लम्बी आयु पायी थी। अपने दीर्घ जीवन काल में उन्होंने कुल की संपत्ति में उल्लेखनीय वृद्धि की और ग्राम के बड़े सेठ कहलाये।

मायारामजी के जीवन काल में सीकर का राज्य अस्तित्व में आया और सुदृढ़ हो गया। उधर दिल्ली में 1764 वि. (ई. 1707) में अंतिम प्रभावशली मुगल बादशाह औरंगजेब की मृत्यु हो गयी थी। यद्यपि औरंगजेब की क्रूर नीति ने देश के विभिन्न भागों में सामाजिक सौमनस्य को बड़ी हानि पहुँचायी थी पर देशी राज्य अपने–अपने क्षेत्र में प्रायः अपनी व्यवस्था कायम रखने में सफल हुए थे।

सेठ मायारामजी की मृत्यु के एक साल पहले उनकी पुत्रवधू का देहान्त हो चुका था।[1] सेठ मायारामजी के फूल वि. 1787 में हरिद्वार आये थे। इसी के कुछ बाद में सीताराम जी के फूल हरिद्वार आये जिन्हें ब्राह्मण परसाजी लेकर गये थे। फतेहपुर की छत्री के शिलालेख में उनका निधन वर्ष संवत् 1819 बताया गया है जो अधिक समीचीन ज्ञात होता है।

---

1 हरिद्वार की बही का एतद् सम्बन्धी उल्लेख इस प्रकार हैः–
गनेड़ी ग्राम के वासी श्री सीताराम व दासाराम व बाबूलाल मायारामजी के बेटे महासिंह जी के पोते, रामकरण जी, श्यामजी सीताराम जी के बेटे, श्री रामकरण जी, हरिद्वार आये और फूल माता के व चाचा गुलाब के लायें।

सेठ मायारामजी ने अपने दीर्घ जीवन में वाणिज्य और व्यापार के माध्यम से अच्छी सम्पत्ति अर्जित की। अपने आवास में वृद्धि की और गनेड़ी के सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति बन गये। हर गनेड़ीवाला श्री मायारामजी का पुण्य–स्मरण एक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में करता है।

मायारामजी के जीवन काल की एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना छत्रपति शिवाजी का गनेड़ी आना और हवेली में अतिथि होना है। यह भारतीय इतिहास की एक ऐसी लुप्त कड़ी है जिसके अभाव में राष्ट्र का इतिहास सुव्यवस्थित रूप से श्रृंखलाबद्ध नहीं हो सकता। आज स्थिति यह है कि अनेकों महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक सूत्र और संकेत या तो भुला दिये गये या वे विनिष्ट हो गये हैं। इनके अभाव में जो कुछ सामने आया वह अधूरा और अपूर्ण सत्य था पर वही स्वीकार्य हुआ। छत्रपति शिवाजी का औरंगजेब की कैद से निकलकर दक्षिण जाते हुये गनेड़ी मार्ग से गुजरने की बात जनश्रुति पर आधारित है। आज भी इस क्षेत्र में ऐसे लोग हैं जिन्होंने इस बात को पीढ़ी दर पीढ़ी सुना है।

यह बात अच्छी तरह से ज्ञात है कि बादशाह औरंगजेब ने अपने दरबार में शिवाजी को 5 हजारी मनसबदारों के मध्य स्थान देकर उनका अपमान किया था। इस अपमान से क्षुब्ध होकर वे प्रायः बेहोश हो गये थे। उन्होंने अस्फुट स्वर में बादशाह को उलहना दिया जिसे वह अच्छी तरह नहीं सुन सका। इस घटना की परिणति शिवाजी की कैद में हुई। इसके विवरण में अधिक जाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह इतिहास का सुज्ञात तथ्य है।

शिवाजी ने जेल से निकलने की योजना तैयार की और 18 अगस्त 1666 में वे अपने पुत्र सम्भाजी सहित आगरा से पलायन कर गये। उस समय दिल्ली से दक्षिण के मार्गों पर अनेकों मुगल चौकियां थीं जिन्हें तत्काल सावधान कर दिया गया। ऐसी अवस्था में शिवाजी परम्परागत मार्गों से दक्षिण में नहीं जा सकते थे। उन्होंने निश्चय ही एक ऐसा मार्ग चुना होगा जो सब तरह से निरापद रहा हो। इस सम्बन्ध में श्री सम्पतकुमारजी मिश्र ने जो लिखा है उसे अविकल रूप से उद्धत किया जा रहा है।

छत्रपति शिवाजी गनेड़ी में

“सन् 1600 के आरम्भ में बाजोरिया और गनेड़ीवाला नाम से विख्यात अग्रवाल कुटुम्ब के धर्मप्राण वैश्यों के बाजोर गांव के ठाकुर द्वारा एक विप्र कन्या को निर्दयता, नृशंसता के साथ जीवित अवस्था में कुँए में ढकेल देने के विरोध में बाजोर छोड़ने के समाचार से समग्र देश में ऐसी सनसनी फैल गई कि जहाँ जिसने इस घटना को सुना उसके हृदय में धर्म प्राण गनेड़ीवाला व बाजोरिया वंश के प्रति आदर के भाव उदित हो

गये और बाजोर के ठाकुर के प्रति सुनने वालों के मानस में घृणा और दुर्भावना जाग उठी। यह समाचार जब छत्रपति शिवाजी तक पहुंचा होगा तो उनके हृदय में भी गनेड़ीवाला सेठों के प्रति सद्भावना और सौमनस्य के भाव सहसा उदित हुए होंगे।

यहाँ यह प्रश्न किया जा सकता है कि राजस्थान के शेखावाटी संभाग में घटित यह घटना शिवनेर तक कैसे पहुँची होगी। प्रश्न ठीक है, इस प्रश्न का उत्तर भारतीय नीति शास्त्र देता है, एक अष्टाक्षरी लाईन में कि—"राजा: आचार चक्षुष" अर्थात जो राज करते है, वे समग्र देश में घटित होने वाली घटनाओं को भी अपने गुप्तचर दूतों के जरिये देखते जानते रहते हैं। भारतीय नीति शास्त्र की इस शिक्षा को आज विश्व के सब राष्ट्र अपनाये हुए हैं। भारतेतर देशों की एम्बेसियाँ (दूतावास) यही कार्य कर रही हैं। जब इतर राष्ट्र भारत में होने वाली गतिविधियों की खबरें रखते हैं तब शिवाजी जो समग्रभारत में भगवा झण्डा फहराने की उच्च आकांक्षा रखते थे, उनके लिये शेखावाटी तो अपने ही देश का एक महत्त्वपूर्ण भाग था और उनके प्रतिपक्षी औरंगजेब के शासन क्षेत्र से सटा हुआ था। दुश्मन के कार्य क्षेत्र से सटे हुये शेखावाटी संभाग की गतिविधियों को देखते, जानते रहना राजनैतिक तकाजा है। इसलिये हमारी यह मान्यता है कि जब शिवाजी ने बाजोर की घटना को सुना होगा तभी उनके मानस में उन गनेड़ीवाला बाजोरिया सेठों से मिलकर सम्पर्क साधने की भावना जागी होगी, जिसे अवसर मिलने पर कार्यान्वित करने का संकल्प बना होगा। देवी संयोग से जब वे जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के माध्यम से सन् 1666 मई माह में आगरा पहुँच कर समुचित आतिथ्य की जगह छलपूर्ण असद् व्यवहार के शिकार बने तो 100 दिन बाद मौका पाकर कैद से निकल भागे। साधु के वेष में मथुरा होकर गनेड़ी पहुँच गये जहाँ वे श्री मायारामजी के यहाँ 3 दिवस पर्यन्त अतिथि रहे।

संस्कृत साहित्य में एक उक्ति है—"नहि निर्मूला प्रसिद्धि" अर्थात जनश्रुति निर्मूल नहीं होती। उसमें सत्यांश रहता है, जो उसे शत–शत मुखों से संरक्षित रखता है। इतिहास सुरक्षित रहने के 3 आधार हैं लिखित साम्रगी, जनश्रुति और तत्कालीन कवियों की पद्यमय रचना। शिवाजी ने गनेड़ीवाला सेठों की हवेली पर गनेड़ी आकर 3 दिन ठहरने के बाबत 3 में से 2 आधार पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। जनश्रुति और तत्कालीन कवि की तद्विषयक रचना। ये दो आधार इतने अकाट्य हैं कि इनका खन्डन नहीं किया जा सकता। लक्ष्मणगढ़ निवासी श्री चिरंजीलालजी मुरारका ने जो सेठ पूरणमलजी गनेड़ीवाला की पुत्री विशनी देवी के प्रपौत्र होते हैं, हमें अनेकों जनश्रुतियों के आधार पर बताया कि छत्रपति शिवाजी आगरा से महाराष्ट्र जाते हुए तीन दिन तक गनेड़ीवाला सेठों के यहाँ रूके थे और गनेड़ीवाल सेठों का आतिथ्य उन्होंने प्रसन्न मन से स्वीकार किया था। इस सम्बन्ध में जो तीसरा ऐतिहासिक आधार भूत प्रमाण कविता इस प्रकार है:—

सेवो चढ़ायो कढायो उरंगजेब का महला माय।
रोजा को भूखो सर धूने जी बदशा मेहलां मांय।।
सेवो बैठो पहलाजी दूजे में जी बेठो जोगी पिटारी मांय ।।
बदशा की अकल फेरी भोला भंडारी जटा मांय ।।
हिन्दवा को भगवा झन्डो फहरियोजी मथुरा मांय।।
सेवो करयो तीरथ बदशा की फूटी आंखा मांय।।
मथुरा से सीधो आयो बैठा ने लेय गणेशर महादेव जी।
गुरू चेला ने गढ़ी गनेड़ी हवेली दाब राख्यिो मांय।।

छत्रपति शिवाजी के शुभागमन ने गनेड़ीवाला परिवार को न केवल शेखावाटी के सीमित संभाग में अपितु समग्र भारत में असीम अंचल में इतनी अधिक अभूतपूर्व और व्यापक ख्याति दी कि छोटे से शेखावाटी जनपद का निवासी यह गनेड़ीवाला परिवार समग्रविशाल भारत में मशहूर हो गया अपनी अनुपम और बे–मिसाल विशेषता के लिये। छत्रपति शिवाजी ने भी जान लिया कि गनेड़ीवाला परिवार भी उनकी तरह भारत में विदेशी शासन सत्ता स्थापित होने के विरूद्ध है एवं उनके साथ है। तभी तो इस परिवार ने औरंगजेबी शासन सत्ता के कायम होते हुए उसका कोई भय न मानकर शिवाजी जैसे औरंगजेबी शासन शत्रु को अपने यहाँ बेधड़क ठहराने की जोखिम उठा ली। औरंगजेबी शासन सख्त कड़ाई के रहते हुए ऐसी बेमिसाल हिम्मत गनेड़ीवाला सेठों के अलावा और कौन कर सकता था। उस एकाधिकार शासन के समय में हमारी धारणा है कि इस ऐतिहासिक स्मृति और ख्याति ने ही आगे चलकर भारत में विदेशी सत्ता के विरोधी वीरवर ताँत्या टोपे और डूँगजी, जुहारजी को गनेड़ीवाला सेठों से जोड़ दिया हो तो आश्चर्य नहीं। इस प्रंसग में हम यहाँ यह भी कहना चाहते हैं कि हो न हो, हिन्दुआ सूरज महाराणा प्रताप की पुण्य भूमि महिमामयी मेवाड़ के तत्कालीन महीपति महाराणा स्वरूपसिंहजी ने गनेड़ीवाला सेठों को मेवाड़ में आबाद होने के लिये विक्रम सम्वत् 1901 माघ सुदी 5 जो पट्टा अनेक व्यापारिक सुविधाओं के साथ दिया, जिसकी प्रतिलिपि परिशिष्ट भाग में दर्ज है, वह भी यही बताता है कि उस समय तक गनेड़ीवाला सेठों की सत्कीर्ति और सुयश का केन्द्र, प्रसार केन्द्र सारा भारत बन चुका था वरना कहां शेखावाटी और कहाँ गुजरात प्रदेश से जुड़ा हुआ मेवाड़ मण्डल।

मेवाड़ महीमण्डलेवर की भांति मालव महीमण्डल है। महेन्द्र श्री तुकौजी राव होलकर ने भी एक मुहर छाप सुदा पत्र गनेड़ीवाला सेठों के नाम लिखकर भेजा कि आप इस प्रदेश में आबाद होकर अपनी व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार करें, उन्हे हर सम्भव सुविधा दी जायेगी। उस पत्र की प्रतिलिपि परिशिष्ट भाग में दर्ज है। किशनगढ़ नरेश, जोधपुर नरेश, जयपुर नरेश आदि महाराजाओं के पत्र भी गनेड़ीवाल सेठों के पास मौजूद हैं।

इस जनश्रुति से प्रादुर्भूत तथ्य अगर सत्य को आंशिक रूप से भी समाहित किये हुए हैं तो गनेड़ीवाला सेठों का यह बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य है। निरंकुश मुस्लिम सत्ता के प्रतिकार और प्रतिशोध की बिना परवाह किये छत्रपति शिवाजी की मदद करना एक अतीव साहस का कार्य था। एक ओर अत्याचार और अनाचार की प्रतीक मुगलसत्ता थी दूसरी ओर भगवा झंडा अटक से कटक तक फहराने की कामना करने वाले महाराष्ट्रियों के पूर्वज धर्मवीर छत्रपति शिवाजी। हर्ष की बात है कि शिवाजी को गनेड़ी में अतिथि बनाकर रखा गया।

सन् 1769 में मायारामजी के दूसरे पुत्र दासाजी और मायारामजी के पौत्र रामकरण दासजी के अस्थि फूल हरिद्वार पहुँचे थे। मायारामजी के पुत्र सीतारामजी का शरीर गनेड़ी में संवत् 1819 में बरता था। इनके फूल गढ़मुक्तेश्वर में शीतलदास ले कर गये थे। हीरा नाई साथ में था। गनेड़ी की छत्री के अभिलेख से ज्ञात होता है कि श्री रामकरणदासजी की मृत्यु वि. 1818 में हुई थी।[2] इस प्रकार 8 साल बाद फूल हरिद्वार गये। रामकरणदासजी पर गनेड़ी में छत्री का निर्माण उनके सुपुत्र जुगलदासजी ने करवाया था। इस छत्री के नीचे के भाग में श्री रघुनाथजी का मंदिर है। फतेहपुर की छत्री के अभिलेख के अनुसार स्त्रियों में मायारामजी की स्त्री का स्वर्गवास फतेहपुर में आश्विन बदि संवत् 1912 में हुआ था। इसमें कहीं भूल हुई है। मायारामजी का जन्म वि. 1697 में और मृत्यु वि. 1787 के आस पास हुई थी ऐसी अवस्था में उनकी स्त्री का स्वर्गवास सम्वत् 1912 में नहीं हो सकता।

श्री मायारामजी के तीन पुत्र श्री सीतारामजी, श्री दासाजी और श्री बाबूलालजी थे। इनमें प्रथम पुत्र के वंश का वृत्त ज्ञात है। दूसरे पुत्रों का वंश क्रम अज्ञात ही है। मायारामजी के पुत्र सीतारामजी और उनके पुत्र रामकरणजी सम्बंधी विशेषवृत्त उपलब्ध ा नहीं है। हरिद्वार की बही से ज्ञात होता है कि दासाजी के पुत्र का नाम मनसारामजी था जो संवत् 1826 में अपने पिता के फूल हरिद्वार लेकर गये थे।

इस प्रकार गोकुलचन्द्रजी वि. 1597 से लेकर सेठ जुगलदासजी की मृत्यु वि. 1840 से कुछ पहले तक प्रायः 225 वर्षों तक गनेड़ीवाला परिवार मुख्य रूप से गनेड़ी में ही अवस्थित रहा।

बाजोर से निकले हुये वैश्य लोग गनेड़ी और फतेहपुर में बस जाने के बाद बाजोरिया कहलाने लगे। आगे चलकर जब बाजोरिया अभिधान वाले वैश्य गनेड़ी से बाहर गये तो गनेड़ीवाला जैसे सिंघाणा गांव से दिसावरों में गये वे सिंघानिया और जो पूर्व की

2 सीतारामजी का बेटा रामकरणजी जाको सरीर बरत्यों साल 1818 गनेड़ी मे जाका फूल जेठ बदि में गडमुक्तेसर आया पुरोहित सारस्वत टीमटीमीया रूड़मलजी फतेहपुर की छत्री का लेख

ओर चले गये वे सिंघल गोली अग्रवाल कहलाये। इस प्रकार बाजोर से निकले वैश्य स्थानभेद से बाजोरिया, सिंघानिया, भुवानीया और गनेड़ीवाला कहलाये।

सेठ जुगलदासजी के पुत्र उनके काल में ही देश के विभिन्न भागों में गये और उन्होंने अपना व्यापार प्रतिष्ठित किया। कालान्तर में उन्होंने असीम संपत्ति, यश और ख्याति का अर्जन किया। इस पद–संचरण की कीर्ति–कथा का वर्णन विस्तृत रूप से आगे के अध्यायों में किया जावेगा।

तृतीय अध्याय

स्वानामधन्य सेठ श्री जुगलदासजी
एक कर्मण्य व्यक्तित्व का श्लाघनीय कृतित्व

गनेड़ीवालों के पूर्वजों में यद्यपि सेठ गोकुलचन्द्रजी गनेड़ी आकर बस गये थे तथापि वंश–विस्तार और कुल–कीर्ति को फैलाने में सेठ जुगलदासजी उल्लेखनीय व्यक्ति हुये। सेठ गोकुलचन्द्रजी से 7वीं पीढ़ी में सेठ जुगलदासजी का पदार्पण हुआ। इन प्रायः 200 वर्षों के समय में गनेड़ीवालों की स्थिति, प्रभाव और रूतबा और भी बढ़ता रहा। गांव के अब वे ही व्यवहारिक रूप से अधिकारी थे। अपनी व्यापारिक सूझ बूझ और वाणिज्यिक कुशलता के कारण उन्होंने अच्छी संपत्ति अर्जित कर ली थी। सीकर की गद्दी पर उस समय चांदसिंहजी की मृत्यु के बाद राव देवीसिंह आ गये थे जो सीकर के शासकों में सबसे बड़े शासक थे। उनके समय में सीकर राज्य की सीमा में अभूतपूर्व वृद्धि हुई और शान्त वातावरण और सुरक्षा के कारण व्यापार और उत्पादन में बराबर बढ़ोतरी होती रही।

सेठ जुगलदासजी ही वस्तुतः गनेड़ीवाला परिवार में ऐसे पूर्वज हैं जिनके बारे में सुनिश्चित जानकारी प्राप्त होती हैं। इन्हीं के वसु–स्वरूप आठ पुत्रों ने देश के विभिन्न भागों में जाकर अतुलित संपदा का अर्जन किया। इस गौरव के भागी भी सेठ जुगलदासजी ही थे कि उनका एक पुत्र अग्रवालों के वंश में प्रथम कोट्याधीश बना। इन्हीं के पुत्रों ने सुदूर स्थानों पर परिव्रजन कर उच्च्व पदों पर अपने आपको आसीन किया और तत्कालीन प्रचलित बड़ी–बड़ी उपाधियाँ प्राप्त की।

सेठ जुगलदासजी के जन्म के समय मुगलराज अवनति की ओर अग्रसर हो रहा था। राजपूताने में सवाई जयसिंह का प्रभाव दिन दूना रात चौगना बढ़ रहा था। राजपूत राजे महाराजे और उनके अधीनस्थ छोटे सरदार अब अपनी दासता से मुक्त होकर आंतरिक प्रशासन को चुस्त बनाने में लगे थे। नये नगरों की नींव पड़ रही थी जहाँ महाजनों को बसाने की एक होड़ लग रही थी। वाणिज्य–व्यापार भी इस समय द्रुतगति से आगे बढ़ चला। जगह–जगह व्यापारिक मंडियाँ कायम हुईं और व्यापारिक पथों पर सार्थवाहों के काफिले आगे बढ़ चले।

सेठ जुगलदासजी ने इस अनुकूल परिस्थिति का भरपूर लाभ उठाया। उनका स्थानीय रूप से किया जाने वाला व्यापार बढ़ चला। उन्होंने बड़े ठाकुरों से लेन–देन का रिश्ता जोड़ लिया। उनके जन्म के कुछ बाद और भी वैश्य परिवार उनकी प्रेरणा के फलस्वरूप गनेड़ी में आकर बस गये। इस मार्ग से गुजरने वाले लोगों को वे भोजन, चिलम, तम्बाकू, शीतल जल आदि की सुविधायें प्रदान करते। कहते हैं कि सेठ जुगलदासजी की इस धार्मिक और परोपकारिणी प्रवृत्ति को देखकर एक दिन इनके पिता श्री रामकरणदासजी ने कहा था "लोग कहते हैं कि मैं हरिद्वार नहा आवूँ, पर मेरे घर में यह जुगलिया रोज इतना पुण्य करता है कि मेरी इस हवेली में हरिद्वार की पुण्याई आ गयी है"।

सन् 1740-45 तक जुगलदासजी ने गनेड़ी ग्राम में हजार बीघा जमीन प्राप्त कर ली थी। [1] वे इसकी खेती बॅटाई पर करवाने लगे। सीकर के राव देवीसिंह जो वि. 1820 ई. 1763 में गद्दी पर बैठे थे अपने जीवन काल में दो बार गनेड़ी आये और उन्होंने सेठ जुगलदासजी का आतिथ्य स्वीकार किया। जुगलदासजी को सेठ की पदवी भी उन्होंने ही प्रदान की।

इनकी विशाल हवेली गनेड़ी ग्राम में अवस्थित थी जिसके चार उन्नत तोरण द्वार थे। इन द्वारों से हाथी अंबारी सहित हवेली में प्रवेश कर सकते थे। इससे इन तोरण द्वारों की उच्चता का अनुमान सहज में ही लगाया जा सकता है। यह बात वयोवृद्ध श्री बालचन्द्र जी लोहिया, आकोला निवासी ने बतायी। मूलतः वे गनेड़ी के वासी हैं। इनके पूर्वजों का इस परिवार के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रहा था।

जुगलदासजी की प्रसिद्धि सीकर की सीमा में बंधी नहीं रही। बीकानेर और जोधपुर के राजाओं को भी इस प्रभावशाली व्यापारी की बात ज्ञात हुई। इस सम्बन्ध में एक बात का उल्लेख किया जा रहा है। एक बार बीकानेर नरेश गजसिंह खरबूजे की पट्टी पर

---

1. सेठ विश्वनाथ जी की डायरी में उल्लिखित वृत्त के आधार पर

अधिकार करने आये। यह पट्टी बीकानेर वालों को जोधपुर के शासक बख़्तसिंह ने प्रदान की थी। गजसिंहजी वहीं सेठ जुगलदासजी से मिले और बड़े आनन्दित हुये। उन्होंने कहा कि आप अपनी दूकान हमारे यहाँ पर भी खोल लें और व्यापार विणज प्रारम्भ करें। गजसिंहजी ने यह भी कहा कि आप जिस गांव में चाहो जमीन पसंद कर लो। बात एक बार आयी गयी हो गयी।

सन् 1755 वि. 1812 में बीकानेर में अकाल पड़ा तो एक बड़ा जन–वर्ग खरबूजे की पट्टी और गनेड़ी की ओर चला आया। उस समय सेठ जुगलदासजी ने अपने यहाँ सदाव्रत खोल दिया और अकालग्रसित लोगों की बड़ी मदद की। पीड़ित पशुओं के चारे पानी का भी प्रबन्ध किया। सीकर के राव चांदसिंहजी ने इस सेवा कार्य के लिये उनकी बड़ी प्रशंसा की। बीकानेर के महाराजा गजसिंह जब इधर आये तो उन्होंने अपने तम्बू में बुलाकर सेठजी का सम्मान किया। सेठजी को दूकान खोलने की बात का स्मरण दिलाया तो बोले कि हम, हमारा एक बेटा ही आपकी सीमा में बसा देंगे। इस बात को सत्य करने के लिये उन्होंने अपने चौथे बेटे हरिकृष्ण को रतनगढ़ में आगे चलकर बसाया। इसके कुछ समय बाद जब जुगलदासजी बीकानेर महाराजा से मिलने गये तो चार पांच वर्ष के हरिकृष्ण को भी साथ ले गये। महाराजा ने बालक से पूछा "क्या तुम बीकानेर में बसोगे" तो बालक ने निर्भीक भाव से उत्तर दिया "जरूर बसूँगा"। उपर्युक्त बात से एक ओर जहाँ जुगलदासजी की महत्त्वाकांक्षा प्रकट होती है वहीं व्यापार–विस्तार की एक योजना का निर्माण जो उनके मन में हो रहा था उसके कुछ बिन्दु भी उपर्युक्त घटना से प्रकट होते हैं।

आगे चलकर उनकी योजना को मूर्तरूप प्रदान करने के लिये उनके आठ यशस्वी पुत्र हुये। उस समय तक रामकरणजी और उनके भाईयों [2] का परिवार संयुक्त रूप से ही चल रहा था।

सेठ जुगलदासजी के वसु स्वरूप आठ पुत्र पैदा हुये। [3] इनका जन्म क्रम निम्नलिखित प्रकार से हैः–

1.	नूँदरामजी	जन्म अनुमानतः 1742-43 ई. (1800वि.)
2.	महानंदरामजी	जन्म अनुमानतः 1745-46 ई. (1803वि.)
3.	शालिगरामजी	जन्म अनुमानतः 1747-48 ई. (1805वि.)
4.	हरिकृष्णजी	जन्म अनुमानतः 1750-51 ई. (1808वि.)

---

2. रामकरण जी के हरश्याम जी और बूला जी दो भाई थे। बूलाजी के एक पुत्र नवलराम हुये। नवलराम के खेमराज व रामचन्द्र दो पुत्र हुये।

3. आपोध्रुवश्च सोमश्च धरश्चैवानिलोऽनलः। प्रत्यूषश्च प्रभाषश्च बसवोष्टौ प्रकीर्तिताः ।। पद्मपुराण में आप, ध्रुव ,सोम, धर, अनिल,अनल, प्रत्यूष ओर प्रभाष नामक आठ वसु बताये गये हैं। ये वसु रत्न या धन–संपत्ति के दैवी प्रतीक हैं।

5.	तोलारामजी	जन्म अनुमानतः 1752-53 ई. (1810वि.)
6.	वृंदावनलालजी	जन्म अनुमानतः 1755-56 ई. (1813वि.)
7.	धनराजजी	जन्म अनुमानतः 1760-62 ई. (1819वि.)
8.	मोहनरामजी	जन्म अनुमानतः 1764-65 ई. (1822वि.)

गनेड़ीवाला परिवार के सम्बन्ध में हरिद्वार की बहियों में जो उल्लेख हैं उनमें इन आठों पुत्रों की पत्नियों के नाम भी दर्ज हैं।

1. सेठ नूँदरामजी की पत्नी का नाम गुमानी था।
2. सेठ महानंदरामजी की पत्नी का नाम सरणी था।
3. सेठ शालिगरामजी की पत्नी का नाम चिमनी था।
4. सेठ हरिकृष्णदास जी पत्नी का नाम बरजी था।
5. सेठ तोलारामजी की पत्नी का नाम सारां था।
6. सेठ वृन्दावनलालजी की पत्नी का नाम ज्ञानी था।
7. सेठ धनराजजी की पत्नी का नाम ज्ञात नही।
8. सेठ मोहनरामजी की पत्नी का नाम सुखी था।

हरिद्वार की बहियों से यह भी ज्ञात होता है कि सन् 1769 में प्रायः 49 वर्ष की अवस्था में सेठ जुगलदासजी गंगा स्नान के लिये हरिद्वार गये थे। इस वर्ष मायारामजी के द्वितीय पुत्र दासाजी और जुगलदासजी के पिता श्री रामकरणदासजी के फूल हरिद्वार आये थे। गनेड़ी ग्राम की छत्री के उल्लेख से ज्ञात होता है कि रामकरणदासजी का देहावसान वि. 1818 में हुआ था। इनके अस्थिफूल इस प्रकार प्रायः 8 साल बाद हरिद्वार आये। फतेहपुर की छत्री के शिलालेख के उल्लेखानुसार इनके फूल जेठ बदि में गढ़मुक्तेश्वर ले जाये गये थे।[4]

उपर्युक्त शिलालेख के उल्लेख से ज्ञात होता है कि सेठ जुगलदासजी जिस समय 41 वर्ष के थे उस समय उनके पिताश्री का देहान्त हो गया था। संभवतः इस समय तक वे सात पुत्रों के पिता बन चुके थे और एक भरे पूरे परिवार के स्वामी थे। वे स्वयं अपने पिताश्री के फूल हरिद्वार भी ले गये और पुत्र के पुनीत कर्त्तव्य का निर्वाह किया।[5]

उन्होंने पूर्व परम्पराओं का पालन करते हुये अपने दिवंगत पिताश्री पर एक छत्री का निर्माण करवाया। यह छत्री आज भी गनेड़ी में विद्यमान है। कुछ वर्षों पूर्व इसका जीर्णोद्धार

4. सीतारामजी का बेटा रामकरणजी जाको सरीर बरत्यो साल 1818 गनेड़ी में जाका फूल जेठ वदि में गढ़ मुक्तेसर लाया पुरोहित सारस्वत टीम टीमीयारूड़मल जी फतेहपुर की छत्री का शिलालेख

5. हरिद्वार की बही के उतारे के अनुसार रामकरणजी के फूल 1826 वि. में जुगलदास जी ने पहुँचाये। इस समय उनके चार पुत्र भी साथ थे। ये गनेड़ी से गये थे।

गनेड़ीवाला बन्धुओं द्वारा करवाया गया था। इस छत्री के नीचे श्री रघुनाथजी का विग्रह विराजमान है। स्मरण रहे गनेड़ीवाला वैश्य प्राचीन समय से ही सीतारामजी के पूजक हैं।

सन् 1781 में अपनी मृत्यु से 2-3 वर्ष पहले सेठ जुगलदासजी हरिद्वार में सपरिवार गंगा–स्नान को आये थे। इस समय तक उनके आठों पुत्र वयप्राप्त हो चुके थे और स्वयं भी 50 वर्ष से ऊपर के हो चले थे। पहले उन्होंने पुष्कर की यात्रा की और तत्पश्चात् हरिद्वार आये। एक उल्लेख के अनुसार उनके पुत्र नूँदरामजी और हरिकृष्णजी भी अजमेर से हरिद्वार में गंगा स्नान को आये थे।

सेठ जुगलदासजी जितने धर्म–प्राण और धर्म–भीरू थे उतने ही दबंग और साहसी भी थे। उनके व्यक्तित्व में वैश्यों जैसी व्यवहार कुशलता और क्षत्रियों जैसा दर्प समाहित था। यहाँ एक अनुश्रुति पर आधारित बात का उल्लेख किया जा रहा है जो उनके द्विविध व्यक्तित्व को मुखर करती है।

सेठ जुगलदासजी के कार्यकाल में गनेड़ी बलारा ठिकाने के 80 गावों में से एक सीमान्त का गांव था। इस गांव पर बलारा के ठाकुर साहिब का अधिकार था। एक बार बलारा ठाकुर साहब को 500 रूपयों की आवश्यकता हुई तो उन्होंने सेठ जुगलदासजी से 500 रूपये बतौर नज़राने के मांगे। सेठ जुगलदासजी जैसे धर्मात्मा थे वैसे ही शूरवीर, स्वाभिमानी और दृढ़निश्चयी थे। उनमें बनियों जैसी भीरूता न होकर वीरों की सी दृढ़ता तथा मनस्विता थी। उन्होंने ठाकुर साहब से रूपयों की हाँ भर ली पर उसे नज़राने के रूप में देने को तैयार नहीं हुये। उनके अनुसार सहायता स्वैच्छिक और नज़राना जोरजबर्दस्ती का द्योतक था। ठाकुर इस पर रूष्ट हो गया जो उन दिनों स्वभाविक था। सेठ जी अच्छी तरह जानते थे कि यह इन्कारी ठाकुर को रूष्ट और क्रुद्ध कर देगी और वह इसका बदला लेने की चेष्टा करेगा।

ठाकुर ने बदला लेने की चेष्टा भी की। एक बार सेठजी के पौत्र सनेहीरामजी कार्यवश गनेड़ी से दूसरे गांव जा रहे थे तो अवसर देखकर ठाकुर ने अपने आदमियों द्वारा उन्हें पकड़वा कर बलारा के गढ़ में नजर बन्द करवा दिया। राजस्थान में उस समय ठाकुरों के इस प्रकार के स्वेच्छाचार होते रहते थे। सेठजी ने इस पर जरा भी विचलित न होते हुये बठोठ के ठाकुर का सहयोग लिया। ठाकुर के आदमियों ने बलारा के गढ़ में रात्रि को घुसकर सनेहीरामजी को निकाल लिया। पौत्र को सही सलामत अपने सामने पाकर सेठजी बड़े प्रसन्न हुये। कहते हैं कि प्रतिशोध के रूप में प्रातःकाल ठाकुर गनेड़ी आया पर

जुगलदासजी सपरिवार बठोठ के ठाकुर के आश्रय में पहले ही चले गये थे। आगे चलकर जब बलारा ठाकुर से सद्भाव हो गया तो वे पुनः गनेड़ी लौट कर सुखपूर्वक रहने लगे।[6]

सेठजुगलदासजी अपने पूज्य पिताश्री की तरह धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। इस सम्बन्ध में सालासर मन्दिर के वृद्ध पुजारी द्वारा वर्णित एक कथा का उल्लेख करना समीचीन है।

उन दिनों सालासर गांव में महात्मा मोहनदासजी रहते थे। सालासर गांव पहले तैतरवाल जाटों की ढ़ाणी था। आगे चलकर उसके अधिपति ठाकुर सालिमसिंह के नाम पर इसे सालमसर--सालासर नाम मिला। सन् 1754 (वि. 1811) में नागोर जिले के आसोटा गांव में जाट के खेत में हनुमानजी की मूर्ति का प्रदुर्भाव हुआ था। इसे श्रद्धापूर्वक एक वृक्ष के मूल में स्थापित कर दिया गया। आगे चलकर आसोटा के ठाकुर को स्वप्न में आदेश हुआ कि मूर्ति सालासर पहुँचा दे। ऐसा ही किया गया। सालासर में धोंरो पर जहाँ गाड़ी के बैल रूक गये मोहंनदासजी के कहे अनुसार मूर्ति स्थापित कर दी गयी। यह संवत् 1811 श्रावण शुक्ला 9 की बात है।

कहते हैं कि हनुमत् कृपा से जूलियासर के ठाकुर का अदीठ ठीक हो गया तो उन्होंने पांच रूपये भेंट के चढ़ाये। उन्होंने श्रद्धा भक्ति से पूजा की और बुंगला (छोटा मन्दिर) बनवाने की व्यवस्था की। [7] इसके पश्चात् सम्वत् 1815 में सर्वप्रथम नूरा तथा दाऊ नामक कारीगरों द्वारा मृत्तिका एवं पाषाण से श्री हनुमानजी के मन्दिर का निर्माण हुआ।[8] श्री मोहनरामजी द्वारा सालासर में एक तालाब का शिलान्यास संवत् 1848 में किया गया था। सालासर में इनपर संवत् 1852 में छत्री का निर्माण किया गया था।

उपर्युक्त कथा का एक दूसरा स्वरूप भी है। उन दिनों सालासर में महात्मा मोहनदास जी तपस्या कर रहे थे। एक दिन वे आश्रम में सोकर उठे तो आश्रम के सामने रास्ते में एक बैलगाड़ी में जिसके बैल निकाल लिये गये थे एक हनुमानजी की प्रतिमा को देखा। उस मूर्ति को भगवत् कृपा से प्राप्त जानकर उन्होंने इसे अपने आश्रम में प्रतिष्ठापित कर दी। खोज करने पर महात्माजी को ज्ञात हुआ कि यह मूर्ति एक किसान को उसके खेत में उस समय मिली जब वह खेत में हल जोत रहा था। महात्माजी को अब चिन्ता हुई कि मूर्ति को छोटा-सा सभामंड बनाकर प्रतिष्ठित कर दिया जाना

---

6. उक्त घटना श्री संपतकुमार जी मिश्र दिवंगत को उनके पिताजी ने सुनाई थी।
7. श्री सालासर हनुमान जी-सचित्र इतिहास एवं महात्म्य श्री राम कौशिक पृ. 11-12
8. धूपदीप नैवेद्य से पूजा सोलह प्रकार, विक्रम अठारा सौ प्रन्द्रह में मन्दिर भी तैयार। उपयुक्त पुस्तक से उद्धृत

चाहिये।

इस शुभ संकल्प को ले कर वे अपनी गूदड़ी का एक डोरा लिये हुये सालासर के निकटवर्ती स्थान गनेड़ी में पहुँचे और गनेड़ीवाला परिवार के सुयोग्य सेठ जुगलदास जी से बोले कि यह धागा गिरवी रखकर मुझे 100 रूपये दे दो।[9] सेठ जी ने धागे की बात का रहस्य समझ कर सन्त की मांग पूरी कर दी। उन रुपयों से सभामण्डप वनकर तैयार हुआ। इधर उसी दिन से सेठजी की समृद्धि भी दिनानुदिन बढ़ने लगी।

साल डेढ़ साल बाद वे महात्मा पुनः गनेड़ी पधारे और सेठजी के पास जाकर 100 रुपये वापिस देने व अपना डोरा (धागा) वापिस मांगने लगे। सेठजी ने उत्तर दिया महाराज वह डोरा तो न जाने कहाँ रख दिया, मिल नहीं रहा है। सन्त ने रूपये लेने पर जोर दिया पर सेठ जी ने रुपये वापिस लेने से इन्कार कर दिया कि जब डोरा ही नहीं मिल रहा तो रूपये वापिस नहीं लूंगा। सिद्ध महात्मा मोहन दासजी ने कहा कि जुगल सच्ची बात बता। तब सेठ जी ने बताया कि महाराज आपका यह पुण्य डोरा जब से मेरे पास आया है तब से दिन दूनी रात चोगनी उन्नति हो रही है। कृपया यह आपका आशीर्वाद स्वरूप डोरा यहीं रहने दें। सन्त ने प्रसन्न होकर वरदान दिया कि जा तेरा जाया जामता सोने का डोरा पहरणिया होवगा। कहना नहीं होगा कि सन्त की यह आशीष पूर्णरूप से फलवती हुई।[10]

सेठ जुगलदासजी के कर्मण्य जीवन का अंत सन् 1783 में हुआ। इस समय उनके बड़े पुत्र नूँदरामजी की आयु संभवतः 40 वर्ष के आसपास और सबसे छोटे पुत्र मोहनराम जी की आयु प्रायः 18 वर्ष की थी। घर में भरापूरा परिवार था। सभी पुत्रों के बहू आ गयी थी और कई पौत्र उत्पन्न हो चुके थे। मृत्यु के समय उनकी अपनी अवस्था 63 वर्ष की हो चुकी थी उनकी पत्नी का नाम भूरी था। इसी सौभाग्यवती ललना ने अपनी कोख से आठ वसुतुल्य पुत्रों को जन्म दिया था। फतेहपुर की छत्री के शिलालेख के अनुसार भूरी देवी का देहान्त रामगढ़ में माह सुदि संवत् 1874 में हुआ था। एक अनुमान के अनुसार मृत्यु के समय उनकी अवस्था 90 वर्ष के करीब रही होगी।

सेठ जुगलदासजी ने संपत्ति और सुयश का अर्जन करते हुये उस लतावल्लरी का विस्तार किया जिसकी शाखा प्रशाखायें देश के सुदूर स्थानों में पहुँची और बद्धमूल हुईं।

गनेड़ीवाला परिवार में प्रचलित एक अनुश्रुति देकर इस प्रंसग को समाप्त किया जा रहा है। प्रसिद्ध वीर दुर्गादास राठौड़ जब दिल्ली से शिशु अजीत सिंह को लेकर 15 जुलाई

9. गनेड़ी सालासर से 11 किलोमीटर दूर है।

10. यह गाथा सालासर के वृद्ध पुजारी श्री हरिरामजी ने श्री हनुमानप्रसाद जी गनेड़ीवाल को सालासर में सुनाई थी। यह कथा सत्य के अधिक नजदीक और स्वाभाविक प्रतीत होती है।

1679 (1736 वि.) को चले तो बादशाही फौज के डर से अजमेर से सीधे जोधपुर न जाकर गनेड़ी के रास्ते से गये। वहाँ पर उन्होंने अपनी मोंहरों की एवज में मार्ग खर्च के लिये छोटी मुद्रा रेजगारी ली। यह (रेजगारी) गनेड़ीवालों की हवेली से दी गयी। इस समय जुगलदासजी के दादा श्री सीताराम जी गनेड़ी में अवस्थित थे।

एक दूसरी अनुश्रुति भी है जो स्वयं में महत्त्वपूर्ण है। यह प्रथम अनुश्रुति से प्रायः 80 साल बाद की है। इसका काल 1761-62 ई. है। यह वह समय था जब पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ था। इस युद्ध में अहमदशाह अब्दाली की जीत और मरहठों की हार हुई थी। इस हार के कारण मरहठे उत्तरी भारत में बिखर गये। अधिकांश विविध मार्गों से लगकर दक्षिण पहुँचने का उपक्रम करने लगे। कुछ लोग दिल्ली से बचते हुये सोनीपत रोहतक, भिवानी, लुहारू, झुंझुनू होते हुये गनेड़ी आये। गनेड़ी में वे रूके। यहाँ उन्होंने दक्षिणी मुद्राओं के एवज में छोटी मुद्रायें ली। यह सारा कार्य सेठ जुगलदासजी के हाथों संपन्न हुआ। इसका विवरण प्रसिद्ध विद्वान श्री कन्हैयालाल सहल सुनाते थे। इस घटना का द्योतक एक चारण कृत कवित्त था।

सेठ जुगलदासजी के भौतिक अवशेषों पर उनके पुत्रों ने एक छत्री का निर्माण कराया और छत्री के नीचे श्री रामलक्ष्मण की मूर्ति का संस्थापन किया। यह छत्री आज भी गनेड़ी में है जो इस कर्मण्य पुरूष की कीर्ति–कथा को मुखरित कर रही है। यह छत्री 12 स्तम्भों की है जिसका हाल ही में जीर्णोद्वार हुआ है।

वस्तुतः देखा जावे तो सेठ जुगलदासजी ने स्वयं निधि का सृजन किया और निधि–संग्रह के ऐसे स्रोत समुत्पन्न किये कि पिता–पुत्रों के सम्मिलित सहयोग और सुप्रयत्न से कुबेर की नवनिधियों की बात प्रत्यक्ष हो उठी। आगे जो अर्थ–संग्रह उनके सुपुत्रों ने किया वह न केवल अलभ्य था पर उस समय तक अग्रवाल समाज में अद्वितीय भी था। पद्महस्ता भगवती लक्ष्मी सर्वमांगल्य से युक्त होकर जहाँ निवास करने लगती है वहाँ क्या कमी रहती है?

"सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्व मांगल्ययुक्ता"

चतुर्थ अध्याय

श्री नूँदरामजी–प्रथम पुत्र

सेठ जुगलदासजी के आठ पुत्रों में नूँदरामजी सबसे बड़े थे। उनका जन्म गनेड़ी में अनुमानतः सन् 1742-43 (ई. 1799-1800) के आसपास हुआ था। उस समय जुगलदासजी ने यौवन की देहली पर पाँव रखा था। जन्म के समय और लग्न आदि की स्थिति देखकर ज्योतिषियों ने इस पुत्र के यशस्वी और धनाढ़य होने की भविष्यवाणी की थी जो आगे चलकर सत्य सिद्ध हुई।

एक सुसम्पन्न घर में प्रथम पुत्र का जन्म अतीव मांगलिक और आल्हादकारी था। सारा घर खुशी से भर गया। चन्द्रमा की कला की तरह निरन्तर बढ़ते शिशु पर माता पिता ने अपना अमित प्यार उडेल दिया था। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" की उक्ति को सत्य सिद्ध करते हुये बालक नूँदराम ने शैशव में ही अपनी भावी महानता के चिन्ह प्रदर्शित कर दिये थे।

सेठ जुगलदासजी का भरा पूरा घर था जिस पर लक्ष्मी देवी का वरदहस्त बना रहता था। उनकी विशाल हवेली गाँव के चौक में बनी हुई थी जिसके कई तोरण द्वार थे। कुछ वर्षों पूर्व तक इस हवेली के कुछ अंश विद्यमान थे जिनको देखने वाले आज गनेड़ी गांव में मौजूद हैं। एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार हवेली का एक द्वार दक्षिणाभिमुख और दूसरा पश्चिमाभिमुख था। अन्दर कई चौक की हवेली का भाग था। इस हवेली के बाहर हाथी घूमते थे ऐसा एक प्रत्यक्षदर्शी का कथन था। पितृप्रदत्त संप्रत्ति के उपभोग का

प्रलोभन होते हुये भी उन्होंने स्वभुज से संचित धन का उपभोग करना अधिक उचित माना। उनसे छोटे मन का आदमी जहाँ इस स्थिति में अकर्मण्य बन जाता वहीं पिता के द्वारा अर्जित सुसंपन्नता ने उनके मन में एक ऐसी महत्त्वाकांक्षा का सूत्रपात किया जिसने आगे चलकर उनको उद्योग और व्यवसाय के पथ पर तीव्रगति से बढ़ने को प्रेरित किया। कई बार परार्जित संपत्ति आसक्ति का कारण बन जाती है पर दृढ़निश्चयी मन वाले लोग इस आसक्ति के बंधन को तोड़कर आगे बढ़ जाते हैं और अपना करणीय कर जाते हैं।

श्री नूँदराम ऐसे ही नरपुंगव थे जो प्रगति के मार्ग पर स्वयं आगे बढ़ना चाहते थे। उस समय अजमेर व्यापार व्यवसाय के एक नवनिर्मित केन्द्र के रूप में उभर रहा था अतः अन्होंने अजमेर जाकर अपने व्यवसाय का श्री गणेश किया। जिस समय उन्होंने अजमेर में व्यवसाय एवं वाणिज्य के लिये प्रवेश किया उस समय उत्तरी भारत पर मरहठे छाये हुये थे। अजमेर मुगल साम्राज्य की शक्ति क्षीण होने के बाद अनेकों बार लूटा गया। नगर की प्राचीन श्री संपन्नता लुटेरों की बाढ़ के कारण विनष्ट होती रही। जर्जर मुगल साम्राज्य इस विनाशलीला को रोकने में सर्वथा असमर्थ था। उधर राजपूत राजा भी हतश्री हो चुके थे। उनका शौर्य और वीरत्व मरहठों के अश्वों की पदचाप की धूलि में आच्छन्न हो गया था। वे राजा महाराजा खुद भी लुटते थे और कर के रूप में एक मोटी रकम मरहठों को देकर उनके संरक्षण के आकांक्षी बने हुये थे। अंग्रेज अभी इधर उभर कर राजनैतिक क्षितिज पर नहीं आये थे।

अजमेर अपनी केन्द्रीय स्थिति के कारण राजनैतिक उथल पुथल का केन्द्र–बिन्दु रहा है। इस समय तक यह व्यापारिक मंड़ी के रूप में पूरी तरह उभर चुका था। अनेकों व्यापारिक मार्ग अजमेर से गुजरते थे जिसके कारण इस स्थान का महत्त्व एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में निरन्तर बढ़ रहा था। एक मार्ग अजमेर से बीकानेर जाता था जिसकी लम्बाई 150 मील पड़ती थी। दूसरा मार्ग अजमेर से चुरू, नोहर, सिरसा, भटिण्डा को जाता था। एक अन्य मार्ग द्रोणपुर, छापर, तारानगर, पल्लू, भटनेर, दीपालपुर आदि स्थानों को जाता था। इनके अलावा मेवाड़ तक कई मार्ग अजमेर से जाते थे जो आगे गुजरात तक चले जाते थे।

अजमेर में नूँदरामजी ने अपने व्यवसाय को बढ़ाया। यह व्यवसाय फलप्रद रहा जिसके कारण समृद्धि निरन्तर बढ़ती गयी। नूँदरामजी के बारे में अधिक वृत्त ज्ञात नहीं है पर जो कुछ भी लघु–सूत्र हाथ लगे हैं वे उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को मुखर करने में यथेष्ट हैं। अजमेर में व्यवसाय करते हुये उन्होंने एक तिजोरी एक मुसलमान पिडांरी से खरीदी और उसे ऊँट पर लदवाकर गनेड़ी भिजवा दिया। उस समय तक संभवतः शेखावाटी में किसी महाजन के घर में तिजोरी का प्रवेश नहीं हो पाया था। गाँव में तिजोरी

का आना एक नई बात थी। इसे देखने को भीड़ उमड़ पड़ी। इस घटना का समय अठारहवीं सदी का उत्तरार्द्ध है। उस समय तक तिजोरी किसी के घर पर प्राप्त नहीं थी।

नूँदरामजी वीर प्रकृति के तेजस्वी पुरूष थे । वे राजपूत नौजवानों के साथ पट्टेबाजी करते और ढ़ाल तलवार साथ रखते थे। वे स्थूल शरीर के रोबीले व्यक्ति थे और दाढ़ी रखते थे। वे अपनी सवारी के लिये एक द्रुतगामी ऊँट रखते थे।

इस शौर्य का परिचय भी उन्होंने दिया। एक बार अजमेर से बाहर जाते समय मरहठों ने उन्हे घेर लिया। साथ के लोगों में भगदड़ मच गयी पर नूँदरामजी अपने ऊँट पर अविचल बैठे रहे। उन्होंने मरहठे सरदार से कहा कि हमारे घराने ने छत्रपति शिवाजी को शरण दी थी जब वे आगरा से भागे थे। आप उसी परिवार के व्यक्ति को लूट कर अच्छा बदला चुका रहे हैं। आप हमें अजमेर में कोई काम बतायें हम सहर्ष उसे पूरा करेंगे। मरहठा सरदार ने लूट बंद करवादी और अजमेर में मिलने की बात कहकर रवाना होगया।

सीकर के राव राजा देवीसिंह ने संवत् 1848 में नासा की ढ़ाणी के स्थान पर रामगढ़ नगर बसाया था एवं धीरे–धीरे उसे आबाद करने के लिये महाजनों को लाकर बसा रहे थे। चूरू के पौद्दार परिवार के सेठ भगोतीरामजी के पुत्रों को उन्होंने ससम्मान रामगढ़ में बसाया था। चतुर्भुज जी पौद्दार के तीन पुत्रों में से ताराचन्द और जोहरीमल रामगढ़ आकर बसे थे। इन्हीं पौद्दारों के कारण रामगढ़ "सेठों का" कहलाता था। चुरू के ठाकुर शिवजीसिंह से नाराज होकर पौद्दार परिवार रामगढ़ आया था जहाँ उसका पूरा दबदबा था।

कहते हैं कि गनेड़ी छोड़ने के बाद नूँदरामजी भी सर्व प्रथम रामगढ़ में जाकर बसे थे पर आगे चलकर राजकीय उपेक्षा के कारण उसे छोड़कर फतेहपुर में बस गये थे। कहते हैं कि रामगढ़ के अल्पकालीन प्रवास के समय पौद्दार परिवार से उनकी अनबन हो गयी थी। यह भी उनके रामगढ़ छोड़ने का एक कारण बना था।

उस समय अग्रवाल समाज में गनेड़ीवालों और पौद्दारों के घराने बड़े प्रमुख माने जाते थे। आपस में विवाह सम्बन्ध भी इन घरानों के होते रहते थे। एक बार ऐसा ही प्रंसग आया कि गनेड़ीवालों की एक बारात रामगढ़ में पौद्दारों के यहाँ विवाह के लिये आयी। कन्यापक्षीय पौद्दार परिवार ने जानबूझ कर विवाह की कुंकुमपत्रिका सेठ नूँदरामजी के पास अजमेर में विलम्ब से भिजवायी ताकि वे समय पर रामगढ़ नहीं पहुँच सके। इन्हे डर था कि भंडारे के समय वे कोठ्यार खाली करवा लेगे।

कहते हैं कि चार द्रुतगामी ऊँटों की सहायता से वे ठीक भंडारे के समय रामगढ़ पहुँच गये। उन्होंने मनचाही पत्तलें करवाकर भंडार प्रायः खाली करवा दिया। पौद्दारों ने विलम्ब से पत्रिका भिजवाने पर खेद का प्रकाशन किया इस पर नूँदरामजी प्रसन्न हो गये

और फिर सौमनस्य स्थापित हो गया। इस प्रकार की नोक–झोंक उन दिनों चला करती थी।

श्री नूँदरामजी अजमेर में रहकर अफीम, रूई और गल्ले का थोक व्यापार करते थे। उनके द्वारा प्रस्थापित यह व्यवसायिक परम्परा उनके बाद भी अजमेर में हरगोपाल घनश्यामदास नामक फर्म से, भीलवाड़ा में चिमनराम घनश्यामदास नामक फर्म से, मन्दसोर में पूरणमल घनश्यामदास फर्म से, रतलाम में पूरणमल घनश्यादास फर्म से, इन्दौर में पूरणमल हरगोपाल नामक फर्म के नाम से जारी रही।

उनके सन् 1781 (वि. 1838) तक अजमेर में रहने के उल्लेख प्राप्त होते हैं। हरिद्वार की बहियों में एक उल्लेख है जिससे ज्ञात होता है कि वे गनेड़ी से अपने कुटुम्ब के साथ हरिद्वार में स्नान करने आये थे। इसी समय के आसपास वे फतेहपुर में अधिक रहने लगे थे।

जसरापुर निवासी पं. झाबरमल्ल शर्मा कहा करते थे कि 18 वीं सदी से पहले ही नूँदराम जी गनेड़ीवाला ने लक्ष्मी का भरपूर आह्वान किया। बाद में उनके छोटे भाई महानंदरामजी ने इस परम्परा को उल्लेखनीय रूप से आगे बढ़ाया।

श्री नूँदरामजी की मृत्यु तिथि ठीक तरह से ज्ञात नहीं है। संभवतः वे 70-75 की आयु में सन् 1812 (वि. 1869) के आसपास मृत्यु को प्राप्त हुये। हरिद्वार की बही के उल्लेख से ज्ञात होता है कि सन् 1818 (वि. 1875) में उनके पुत्र श्री राधाकिशन अपनी माता गुमानीदेवी के साथ हरिद्वार स्नान हेतु आये थे। उस समय तक नूँदरामजी इस संसार से विदा ले चुके थे। उनकी पत्नी का देहान्त सन् 1833 (वि. 1890) के आसपास हुआ था।

श्री नूँदरामजी के दो पुत्र थे जिनके नाम श्री सनेहीराम व श्री राधाकिशन थे। अपने पिता के जीवन काल में ही इन दोनो भाइयों ने व्यापार–व्यवसाय में हाथ बंटाना शुरू कर दिया था। आगे चलकर पूरा कारोबार इन्होंने सम्हाल लिया। ये दोनो भाई फतेहपुर के धनियों में अग्रगण्य हुये। श्री सनेहीराम ने परम ऐश्वर्य का जीवन जीया और नामी गरामी व्यक्ति हुये। उनकी कीर्ति कथा का सविस्तार उल्लेख आगे के पृष्ठों में किया जावेगा।

पंचम अध्याय

श्री महानंदरामजी–द्वितीय पुत्र

श्री महानंदरामजी सेठ जुगलदासजी के द्वितीय पुत्र थे। इनका जन्म गनेड़ी में सन् 1745 (वि. 1802) के आसपास हुआ था। ग्रहलक्षणों को देखकर ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक अतुल संपत्ति का स्वामी होगा पर इसका भाग्योदय कुछ विलम्ब से होगा। आगे चलकर सुदूर हैदराबाद में जाकर अपने बुद्धिबल और व्यवसायिक चातुर्य से उन्होंने असीम संपत्ति का उपार्जन किया और अग्रवाल समाज में प्रथम करोड़पति होने का सौभाग्य और गौरव प्राप्त किया।

श्री महानंदरामजी ने शैशव और यौवन का प्रारम्भिक भाग भी गनेड़ी में ही बिताया। वे भरी पूरी देह के धनी थे। ऊपर से राजपूती किस्म की दाढ़ी उनके स्वरूप को और भी दीप्त करती थी। अक्सर वे पीली पगड़ी पहनते थे जो उनकी दीर्घ देह पर खूब फबती थी।

उचित समय पर श्री महानंदरामजी की शादी एक संपन्न परिवार में हुई। इस विवाह से उनके एक पुत्र हुआ जिसका नाम गिरधारी रखा गया। आगे चलकर चार वर्ष बाद दूसरे पुत्र मगनीराम का [1] जन्म हुआ। दैवदुर्विपाक से पुत्र जन्म के कुछ समय बाद

---

1. श्री मगनीराम की मृत्यु 25-26 साल की अवस्था में हो गयी थी। इनके फूल सं. 1859 में हरिद्वार पहुँचाये गये थे।

श्री महानंदरामजी की पत्नी का देहान्त हो गया। इस आकस्मिक विपत्ति ने एक बार सारे परिवार को झकझोर डाला।

कुछ समय बाद उनका दूसरा विवाह सरणी देवी के साथ किया गया जो श्री किशनदत्त की लड़की थी। इस विवाह से उनको तीन पुत्रों की प्राप्ति हुई जिनके नाम क्रमशः पूरणमल, श्रीकिशनदास व रामजीदास रखे गये। बड़े पुत्र गिरधारीलाल का विवाह सेठ जुगलदासजी ने स्वयं अपने हाथों से किया था पर दूसरे पुत्र पूरणमल का विवाह स्वयं महानंदरामजी ने किया। इस सम्बन्ध में एक रोचक कथा कही जाती है जो पूरी तरह जनश्रुति पर आधारित है। कहते हैं कि इस बारात में आठों भाई स्वयं गये थे और आस-पास के दूसरे गणमान्य लोग भी सम्मिलित थे। पचास ऊँटों पर यह बारात गयी थी जिसमें नाचने गाने वाली भी शामिल थी। कन्यापक्ष की स्त्रियों ने गीत गाया—

क्यांपर ल्याया कांजरी,
क्यांपर ल्याया ऊँट पचास।
गहनांम ल्याया एक झालरो,
आठो भाई आया साथ।

इसका भावार्थ था कि पचास ऊँटों पर बारात लाये, आठों भाई भी बारात में आये और नाचने गाने वाली भी लाये पर गहनों में तो सिर्फ झालरा ही लेकर आये। केवल झालरा गहनों के रूप में ले जाने के पीछे किसी अज्ञात कारण का उल्लेख इस जनश्रुति में नहीं किया गया है।

इसी समय के आसपास महानंदरामजी ने हैदराबाद की यात्रा व्यवसाय वाणिज्य के लिये करने का निश्चय किया। हैदराबाद सुदूरस्थ प्रदेश था जहाँ पहुँचने के लिये सिर्फ ऊँट या बैलगाड़ी का साधन था। सारा मार्ग लुटेरों और आततायिओं के कारण असुरक्षित और खतरे से खाली नहीं था। इस यात्रा को अनेक मंजिलों में तय करना पड़ता था। अक्सर लोग किसी व्यापारिक काफिले के साथ जाते थे जिसकी अपनी सुरक्षा व्यवस्था होती थी।

प्राचीन काल से ही यह व्यवस्था थी कि व्यापारिक श्रेणियों की असीम सेना रक्षा के लिये साथ चलती थी। रामायण में सयोध श्रेणि का वर्णन आता है।[2] जिस समय का वर्णन है उस समय मुगल सत्ता का पराभव काल चल रहा था। प्रान्तीय सरदार केन्द्रीय नियन्त्रण उठ जाने से घोर स्वेच्छाचारी बन गये थे। लूटमार दैनिक जीवन की घटना हो

---

2. रामायण 2-123-5 ये श्रेणियाँ: विभिन्न पथों से इस सेना से सुरक्षित रहकर गन्तव्यस्थान पर पहुँचती थी। साथ में 5 प्रकार के लोग होते थे। मंडी सार्थ (व्यापारिक सामान लाद कर चलने वाले) बहलिका घोड़े, बैल भारवाही, औदारिका आजीवका के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान जाने वाले और कार्पटिक (साधु भिक्षु)

गयी थी। ऐसे समय में एक दूर देश के लिये यात्रा पर जाने को सन्नद्ध होने की बात अतीव साहसपूर्ण थी। महाकवि कालिदास ने कहा है कि जल के प्रवाह और स्थिर निश्चय मन को कौन रोक सकता है।

जब कमाने के लिये जाने का निश्चय हो गया तो उन्होंने शुभ मुहूर्त गांव के महन्त श्री गिरधारीदासजी से निकलवाया। शुभ समय पर यात्रा के लिये मुहूर्त दिखाने की भारतीय परम्परा रही है। कुछ लोग मन में उत्साह को देखकर यात्रा करना मांगलिक मानते हैं दूसरे विप्रआज्ञा लेकर किसी भी दिन रवाना हो जाते हैं।[3] कहते हैं कि जब वे हैदराबाद प्रवास के लिये यात्रा पर आठ मांगलिक वस्तुओं का स्पर्श कर[4] निकले तो उन्हें मार्ग में एक सर्प और सोनचिड़ी मिली जो अतीव शुभ शकुन माना जाता है। महाकवि कालिदास ने भी मेघ की यात्रा पर शुभ शकुन होने की बात कही है।[5] इस शुभ शकुन को देखकर वे और भी उत्साहित हुये और अपने गन्तव्य पथ पर आगे बढ़ चले। वे अग्रवाल समाज के संभवतः पहले व्यक्ति थे जो इतने सुदूरस्थ प्रदेश में व्यवसाय के लिये जा रहे थे। भाग्योदय के लिये सुदूर स्थानों पर यात्रा करने वाले वणिक पुत्र चक्रधारी मुनि की तरह होते थे तथा यात्रा करते रहते थे।

उस समय गनेड़ी गांव की बगीची में श्री गिरधारीदासजी महन्त रहते थे। श्री महानंदरामजी अक्सर उनके पास आया जाया करते थे। एक दिन साधु से बोले कि आपको कई बार कहा कि मेरा दिसावर जाने का विचार है। स्वामीजी ने कहा अभी समय नहीं, ठहरो वक्त आने से कहूँगा। सेठ महानंदरामजी अपने बेटे के विवाह से आये तब बोले स्वामीजी मैं अभी जाना चाहता हूँ। स्वामीजी ने कहा अभी इसी वक्त चले जावो। वे स्वामीजी के कहने से चले गये। आगे जाकर धूप (तावड़ा) ऊपर आने से एक जाँटी के तले सो गये। सोने के बाद यह जानकर मन में दुख हुआ कि सर्प सिर पर छत्र ताने खड़ा है। अपशकुन मान कर वे वापिस आ गये और स्वामी जी को सर्प की बात बताई। स्वामी जी ने उनसे कहा "भाग्यहीन, तुम अभी भी चले जावो, राजा होते, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है, अब भी राजा के समान होवोगे"। आगे चलकर हैदराबाद निजाम पहुँचे और उन्हे पौद्दार का खिताब मिला (श्री विश्वनाथ जी की डायरी पृ. 170)

हैदराबाद नगर की स्थापना गोलकुण्डा के शासक मुहम्मद कुतुबशाह ने सन् 1585 में

---

3. उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनंच बृहस्पतिः।
अंगिरस्तु मनोत्साहो विप्रवाक्यं जनार्दनः।।

4. यात्रा के समय आठ मांगलिक वस्तुओं को छूने की भारतीय परम्परा रही है। अनलो गोहिरण्यंच च दूर्वा गोरोचनामृतम्। अक्षतं दधि चेत्येष्टो मंगलानि प्रचक्षते।
अग्नि, गो, सुवर्ण, दूर्वा गोरोचन,घी अक्षत और दही।

5. मन्दंमन्दं वहति पवन श्चानूकूलो यथास्त्वाम् वामश्चायं नदति मधुरः चातकः ते सगन्धः।

की थी। मुगलसत्ता ने बीजापुर और गोलकुण्डा की सल्तनतें लम्बे संघर्ष के बाद नेश्तनाबूद कर दी थी। औरंगजेब ने आसफखां नाम के अपने सरदार को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त कर भेजा और उसे निजाम-उल-मुल्क का खिताब दिया। जब औरंगजेब की 1707 ई. में मृत्यु हो गयी तो यह सरदार स्वतंत्र हो गया। फरूखसियर के जमाने में वह और भी शहजोर हुआ। इसके मरने पर दूसरा निजाम सलावतजंग हुआ जिसने अपनी राजधानी हैदराबाद में स्थापित की। इसे मारकर हैदराबाद राज्य पर निजामअली ने कब्जा कर लिया। इसका शासन लम्बे समय तक चला।

निजामअली के समय में हैदाराबाद और अंग्रेजों के बीच सन्धि हो गयी। हैदराबाद और अंग्रेजों की सम्मिलित सेना ने मिलकर टीपू सुल्तान के राज्य का एक बड़ा भाग हड़प लिया। बरार राज्य का भाग भी इसी प्रकार उसके क़ब्जे में आ गया। इस प्रकार हैदराबाद का राज्य पहले से कई गुना हो गया। हैदराबाद नगर की समृद्धि भी काफी बढ़ गयी।

निजामअली रंगीन तबियत का निजाम था। इसके हरम में अनेकों सुन्दरियाँ थीं जो देश विदेश के विभिन्न भागों से एकत्रित की गयी थीं। उन दिनों राजा महाराजा और नवाब बादशाहों में बड़ी संख्या में खूबसूरत औरतें अपने हरम में रखने की एक होड़ सी लगी हुई थी। खूबसूरत औरतों की खरीदफरोख्त एक आम बात हो चली थी। अनेकों पासवानें और बादशाह की रखेलें अपने सौन्दर्य के बल पर रानियों और बेगमों से बढ़कर सम्मान प्राप्त करने में सफल हो जाती थी।

कहते हैं कि बठोठ की एक दरोगा जाति की कन्या बड़ी सुन्दर थी। दैवयोग से यह लड़की निजामअली के हरम में प्रवेश पा गयी और अपनी खूबसूरती के बल पर बेगम बन बैठी। इस लड़की का नाम मनड़ी था जिसे बदलकर नवाब ने इसका नाम मन्जमी बेगम रख दिया था। अपनी इस चहेती बेगम पर नवाब ने अमित प्यार उड़ेल दिया था। ऐसी स्थिति में उसके ऐश्वर्य और अधिकार की कल्पना सहज में ही की जा सकती है।

संवत् 1848 (ई. 1791) के आसपास महानंदरामजी एक व्यापारिक काफिले के साथ प्राय: डेढ़ महीने में हैदराबाद पहुँचे। वहाँ वे एक सराय में ठहरे। धीरे-धीरे उन्होंने व्यवसाय वाणिज्य की संभावनाओं का पता लगाया। इस इस्लामी नगर के कायदे और शऊर से भी इस दौरान अपने आपको परिचित करते रहे। पीली पाग बांधे छोटी-छोटी राजपूती दाढ़ीवाले इस दीर्घकाय सौम्य आकृति के मारवाड़ी ने नगर में अवश्य ही कइयों का ध्यान आकर्षित किया होगा।

प्रारम्भ में उन्होंने विभिन्न स्थानों और देशों के सिक्कों की दूकान महल के सामने लगायी और रेज़गारी के विनिमय का काम करने लगे। धीरे-धीरे उनकी कार्यकुशलता से

दुकान अच्छी चल निकली। तत्कालीन प्रचलित सभी स्थानों के सिक्के उनकी दूकान में उपलब्ध रहते थे।

अचानक एक दिन शाही जनान खाने से उनको बुलावा आया। इस सुदूर देश में कौन उनका परिचित है और वह भी शाही महल में है जो उनको मिलने बुला रहा है। उनका आश्चर्य स्वाभाविक था। बड़े संकोच से बांदी के साथ महल में पहुँचे। अन्दर जाने पर महल के एक सजे सजाये कमरे में एक नवयुवती नजर आयी जिसका चेहरा मोहरा उनको पहली नजर में कुछ परिचित सा नजर आया। युवती का विभिन्न आभूषणों की चमक से दमकता स्वरूप उसके राजपूती उद्भव की बात को दबी जबान से कह रहा था।

बेगम ने महानंदरामजी को मुस्कुराते हुये सारा भेद बताया। अब वे समझे कि यह वही दरोगन की लड़की है जिसकी माँ को उनके परिवार ने एक विपत्ति से बचाकर आश्रय दिया था। उन्होंने परमपिता को मन ही मन धन्यवाद दिया जिसने इस सुदूर स्थान में एक ऐसा हितैषी उपस्थित कर दिया जो उनके मन की मुराद पूरी करने में सब तरह से समर्थ है। बेगम ने सभी तरह के सहयोग का आश्वासन देते हुये उनको निजाम से भेंट कराने की बात कही।

तीन महीने बाद इस बेगम के कारण निजाम से भेंट करने का अवसर महानंदरामजी को मिला। उस समय तक सारे प्रचलित अदब–कायदों से वे पूरी तरह परिचित हो चुके थे। वे निजाम से मिले और नजर में एक मोहर भेंट की। निजाम ने इस मारवाड़ी महाजन के आकर्षक व्यक्तित्व को क्षण भर निहारा। उसकी आँखों में एक चमक आयी। उसने हँसकर कहा कि आज से महल के अन्दर खजाने के दफतर में बैठकर काम किया करो। बेगम बाजार में रिहायशी मकान उनके लिये निश्चित किये जाने की बात भी निजाम ने कही।

परदेश में घर बार छोड़कर आये इस वणिक पुत्र को और क्या चाहिये था। मनचाही नौकरी निजाम के स्वयं के दफ्तर में, रहने को एक शाही आवास और बेगम की असीम मेहरवानी। वे भगवान का निरन्तर स्मरण करते और इसे उन्हीं की असीम कृपा का फल मानते। कई बार व्यक्ति को उन स्थानों और व्यक्तियों से अकथनीय सहयोग और सद्भाव अनायास मिल जाया करता है जिनसे दूर दूर से भी कोई आशा न हो। महानंदरामजी को मिले इस अप्रत्याशित सहयोग में भी उनकी अन्तर्निहित भगवान की कृपा ही काम कर रही थी।

धीरे-धीरे खजाने के काम में उन्होंने महारत हासिल कर ली। इस पर उन्हें तरक्की देकर इसी विभाग में उच्च पद दिया गया। खजाने से बाहर जाने वाली राशि के

हिसाब-किताब को समुचित रूप से रखने का दायित्व उन्हे सौंपा गया।

इधर विभागीय उन्नति हो गयी थी उधर उनकी निज की दुकान का कारोबार भी आगे बढ़ रहा था। सुबह शाम इस दूकान पर वे स्वयं बैठते थे, शेष समय नौकर देखभाल करते थे। इसी समय उन्होंने बेगम बाजार में एक छोटी हवेली बनाई। उन्होंने अपने छोटे भाई धनराज को अपने पास बुलाया और थोड़े समय बाद उसे अमरावती भेज दिया जहाँ उन्होंने गल्ले का व्यवसाय शुरू कर दिया। इनके अलावा उन्होंने अपने अन्य भाई शालिगराम को हैदराबाद बुलाया और सिक्कों के विनिमय की दुकान में उन्हे साझीदार बना लिया आगे चलकर अपने दूसरे भाइयों वृन्दावनलाल, तोलाराम, और मोहनराम को अजमेर, भीलवाड़ा, रामपुर आदि स्थानों पर लगा दिया।

गनेड़ीवाला संग्रह के एक पत्र से जो उर्दू में हैं ज्ञात होता है कि अजमेर में दुकान खोलने से पूर्व महानंदरामजी ने रामपुर में महानंदराम श्रीकिशन नाम से अपनी फर्म खोल ली थी। अजमेर में नई दुकान चालू करने के लिये दी गयी उनकी अर्जी स्वीकार हुई फलस्वरूप अजमेर में भी उन्होंने कारोबार शुरू कर दिया। आगे चलकर अजमेर का यह कारोबार दिन दूना रात चौगना बढ़ता रहा। [6]

प्राप्त विवरणों से ज्ञात होता है कि श्री महानंदरामजी अपने पिताश्री की मृत्यु के बाद गनेड़ी से रामगढ़ जा बसे थे। बाद में राव राजा लक्ष्मण सिंह के अनुरोध पर सन् 1880 के आसपास वे लक्ष्मणगढ़ जा बसे थे। [7] श्री महानंदरामजी अधिकतर हैदराबाद में रहते थे अतः उनके आदेश से उनके पुत्र श्री गिरधारीलाल ने लक्ष्मणगढ़ में एक विशाल हवेली का निर्माण करवाया। [8] इसी हवेली में सर्वप्रथम गनेड़ीवाला परिवार का निवास रहा है। आगे चलकर जब चारों भाइयों में बंटवारा हुआ तो यह हवेली श्री गिरधारीलाल के हिस्से में आयी और अन्य भाइयों ने अपनी अलग हवेलियाँ बना ली।

श्री महानंदरामजी का कारोबार हैदरावाद में निरन्तर विकसित होता रहा। मुस्लिम

---

6. अर्जी पर तत्कालीन प्रशासकों ने 26 नवम्बर 1818 वि. 1875 के दिन स्वीकृति दी। थे खातर जमां सुकाम काज दूकान आपकी को जारी कीज्यो और माल दिसावर सू मंगावजो। मंगसिर बदि 13 सवत् 1875"

7. अग्रवाल जाति का इतिहास
तेनाभिराम वपुषा वयसि प्रपन्ने
व्यापार मार्ग निपुणे नरमाबिलासः।
आसादितोाथ वसतिः कलयां बभूवे,
श्री लक्ष्मणेन महते सुगदे चिराय।।
रविदत्त कृत वंशावली श्लाक। पृ 4

8. लक्ष्मणगढ़ नगर की नींव मंगसर सुदि 5 संवत् 1864 को पड़ी थी। यह बात रावराजा लक्ष्मणसिंह द्वारा विभिन्न महाजनों को लिखे पत्रों से ज्ञात होती है। महाजनों को हाट खोलने एवं बसने का निमंत्रण दिया गया था।

अहलकार जो प्रारम्भ में उनसे डाह रखते थे धीरे-धीरे उनकी दरियादिली और नेकनीयती से प्रभावित होकर उनसे प्रेम करने लगे। सन् 1810 वि. 1867 के आसपास हैदराबाद एक बार फिर अशांति के दौर से गुजरा। पिंडारियों ने जमकर नगर को लूटा पर भगवान की कृपा से उनकी दूकान पर कोई आँच नहीं आयी।

कई बार अपने जीवनकाल में वे हैदराबाद से लक्ष्मणगढ़ आये पर हमेशा लूटपाट से बचे रहे। उनकी धर्मपत्नी और परिवार लक्ष्मणगढ़ में ही रहा। वे काम से छुट्टी लेकर तीर्थयात्रा करते और इस प्रकार अपनी चिरसंचित भगवत् निष्ठा को पुष्ट करते रहते। अपने बचपन और यौवन में वे दो बार हरिद्वार में गंगास्नान को गये थे।

निजामअली की मृत्यु सन् 1803 में हो गयी तो नया निजाम आया पर उनके मान मर्यादा और पद पर इस परिवर्तन ने कोई असर नहीं डाला। वे सन 1805 तक खजाँची के पद पर पूर्ण अधिकार के साथ बने रहे।[9] सन् 1818 के आसपास दीपावली पर लक्ष्मणगढ़ में पूजन कर वे हैदराबाद लौट गये। उन्होंने इस समय तक अपने सभी भाईयों और पुत्रों को व्यापार में सुव्यवस्थित कर दिया था। अतुल धन संपत्ति का अर्जन करने के बाद अब वे शांतिपूर्वक जीवन के शेष दिन लक्ष्मणगढ़ में बिताना चाहते थे। उन्होंने निजाम से अपनी यह इच्छा प्रकट की पर पिंडारियों की मार काट का बहाना बनाकर निजाम ने उन्हें रोके रखा। वस्तुतः वह अपने इस कार्यकुशल, अनुभवी और हितैषी व्यवसायी की सेवा से वंचित नहीं होना चाहता था।

दिन पर दिन बीतते गये। कई सालों का समय निकल गया। एक दिन स्वप्न में उन्होंने देखा कि उनकी पत्नी आंखों में आँसू भर कर उन्हें याद कर रही है। उनका मन विचलित हो उठा। रात भर इसी चिन्ता में जागते रहे। इसी समय सीकर के रावराजा का पत्र लेकर एक कासिद पहुँचा। इस पत्र से ज्ञात हुआ कि गिरधारी लाल उन्हें लेने हैदराबाद आ रहा था जो खरसोद के पास अचानक दिवंगत हो गया। इस हृदय विदारक समाचार के कारण उन्हें अपार वेदना हुई। निजाम से उन्होने छुट्टी ली और घर जाने को तत्पर हुये।

महानंदरामजी शीघ्र रवाना होकर घर पहुँचना चाहते थे पर दैव को यह स्वीकार नहीं था। जिस दिन वे यात्रा पर रवाना होने वाले थे उसी दिन उनकी मृत्यु हो गयी। इस प्रकार इस कर्मण्य जीवन का अंत हुआ। गया हुआ आदमी उनके अस्थिफूल लेकर ही वापिस लक्ष्मणगढ़ पहुँचा।

---

9. कलकत्ता निवासी श्री विश्वनाथ गनेड़ीवाला की डायरी से प्राप्त तथ्य।

इस असार संसार से विदा लेने के पूर्व उन्होंने अपने सगे सम्बन्धी, घर-आवास एवं माता पृथ्वी, जल आदि से अंतिम विदा ली थी। अब वे ब्रह्म में लीन हो रहे थे।

मातर्मेदिनी तात मारूत सखे तेजः सुबन्धो जलः,
भ्रातर्व्योम निबद्धयेन भवतामेषा प्रणामाजंलिः।
युस्मत्संग वयोपजात सुकृतोद्रेकस्फुनिर्मल,
ज्ञानांपास्त समस्त मोह महिमा लीने परे ब्रह्मणि।।

"हे माता पृथ्वी, हे तात वायु, हे मित्र तेज, हे बांधव जल, हे भाई आकाश तुम सबको हाथ जोड़कर अंतिम नमस्कार करता हूँ। तुम्हारे सत्संग के कारण जो कुछ सत्कर्म उदय हुआ उससे प्राप्त निर्मल ज्ञान से मेरे मोह का सारा जोर चला गया है और अब मैं सदा के लिये परम ब्रह्म में लीन हो रहा हूँ"।

इनकी मृत्यु का संवत् ठीक से ज्ञात नहीं है पर संग्रह की एक बही के उल्लेख से ज्ञात होता है कि उनकी मृत्यु जेठ बदि 5 सन् 1887 को हुई थी। इसी बही के एक अन्य उल्लेख के अनुसार सेठ महानंदरामजी के कहने से एक एक लाख रूपये सब भाइयों को दिये गये थे। यह बात संवत् 1894 की है। [10] इस समय तक संभवतः उन्हें विद्यमान नहीं माना जा सकता है। फतेहपुर का शिलालेख महानंदरामजी का शरीर खरसोद में बरतने की बात कहता है पर संवत् का उल्लेख नहीं करता।

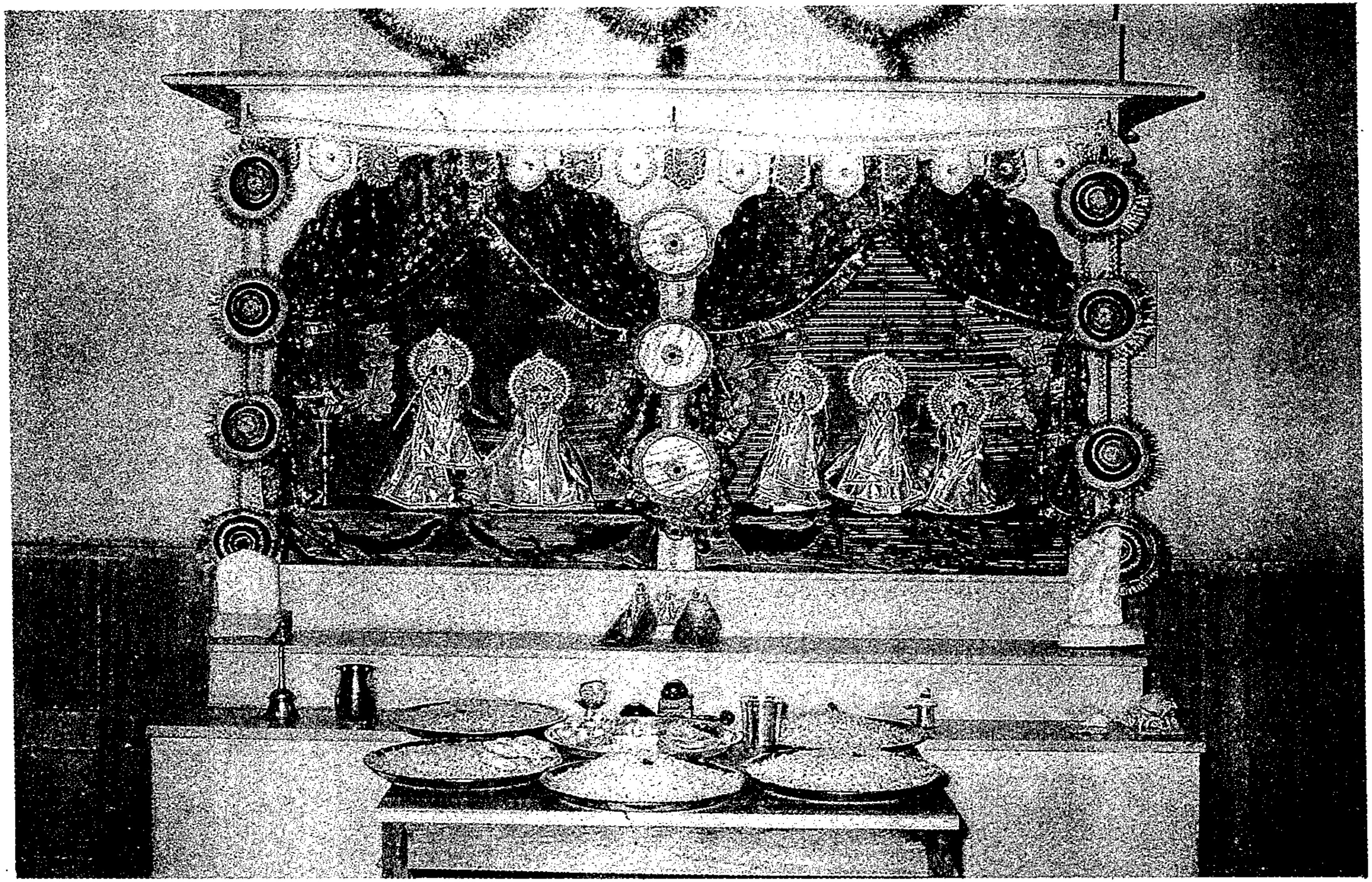
श्री महानंदरामजी ने अपने जीवनकाल में ही सभी भाई बेटों को सेठाई की गद्दी पर स्थापित कर दिया था। उनकी मृत्यु तक देश के विभिन्न भागों में उनका कारोबार फैल गया था। महानंदराम पूरणमल, गिरधारीलाल रामजी दास, पूरणमल श्री कृष्णदास, मोहनराम रघुनाथ दास आदि उनकी फर्में उनके जीवनकाल में ही सुव्यवस्थित होकर अच्छा कारोबार करने लगी थीं। उनका व्यवसाय, उनकी अचल संपत्ति और जमीदारियाँ मिलकर करोड़ों की संपत्ति बन चुकी थी।

यह बात रेखांकित करने की है कि जिस समय पूरे अग्रवाल समाज में कुछ ही लखपति थे सेठ महानंदरामजी करोड़पति बन चुके थे। अग्रवाल समाज के प्रथम करोड़पति सेठ कहलाने का गौरव गनेड़ीवालों को ही प्राप्त हुआ था। वे स्वयं ही धनाधीश नहीं बने उन्होंने अपने भाई बेटों को भी उस मार्ग पर लगा दिया जिस पर बढ़ते हुये उन्होंने धनोपार्जन के नये कीर्तिमान स्थापित किये।

जैसाकि ऊपर वर्णित है श्री महानन्दरामजी अतीव धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे। गनेड़ी

10. सेठ महानन्दराम पूरणमल हैदराबाद एक एक लाख सब भाइयों को दियाः — कार्तिक सुदि ।, 1894

से जब वे हैदराबाद गये तो अपने इष्टदेव सीतारामजी की मूर्ति साथ लेकर गये। वे प्रतिदिन इस मूर्ति की पूजा करते थे। जब वे आगे चलकर आर्थिक रूप से संपन्न हो गये तो अपने इष्टदेव का सीताराम बाग हैदराबाद में मन्दिर बनवाया। इस मन्दिर की प्रतिष्ठा धूमधाम से जेठ सुदि 2 सम्वत् 1882 को हुई। इस मन्दिर के भोग के लिये निजाम ने तीन गांव पानगांव, बलगांव और आकोली भेंट किये थे। पहला गांव हैदराबाद में, दूसरा अमरावती के पास और तीसरा आकोला के पास स्थित है।



गनेड़ी मन्दिर में भगवान राम जी का सवामणी भोग

षष्टम् अध्याय

श्री शालिगरामजी–तृतीय पुत्र

श्री शालिगरामजी सेठ जुगलदासजी के तृतीय पुत्र थे। हरिद्वार की बहियों में इनका नाम महानंदरामजी के बाद आता है पर फतेहपुर की छत्री के शिलालेख में इनका नाम हरिकृष्णदासजी के बाद आता है। अनुमानतः इनका जन्म ई. 1758 (वि. 1815) में हुआ था। अपने तीसरे पुत्र का नाम शालिगराम रखकर सेठ जुगलदास ने भगवान विष्णु के प्रति अपनी अन्तर्निहित निष्ठा को अभिव्यक्त किया था। पिता की मृत्यु के समय इनकी अवस्था 25 वर्ष की हो चली थी।

पिता की मृत्यु के बाद सेठ जुगलदासजी के पुत्र विभिन्न स्थानों में जाकर बस गये, शालिगराम और धनराज रामगढ़ में वास करने लगे। महानंदरामजी लक्ष्मणगढ़ चले गये। इस प्रकार एक बिखराव की प्रक्रिया शुरू हो गयी। आगे चलकर कुल–पालक सेठ महानंदरामजी ने एक बार फिर इस टूटी हुई श्रृँखला की कड़ियों को एकत्रित करने का प्रयास किया।

श्रीशालिगराम के जीवनवृत्त के छिड़े–बिछड़े प्रसंग प्राप्त होते हैं। अपने प्रारम्भिक समय में ये महानंदरामजी के वरदहस्त की छाया में हैदराबाद रहकर व्यापार करते रहे। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ समय बाद ये हैदराबाद से चले आये।

हरिद्वार की बही के उल्लेख से ज्ञात होता है कि उनके फूल सन् 1797 (वि. 1854) में हरिद्वार पहुँचे।

ऐसी अवस्था में इनकी मृत्यु युवाअवस्था में होने की जानकारी मिलती है। उनके फूल रामचन्द्रजी जो मायारामजी के पड़पोता थे और अपने आपको गनेड़ीवाला ही कहते थे लेकर आये थे। सेठ जुगलदासजी के परिवार का कोई व्यक्ति साथ में नहीं था। उनके एकमात्र पुत्र रघुनाथदास संभवतः छोटी अवस्था में होने के कारण साथ नहीं आ सके थे।

शालिगरामजी यौवन अवस्था में मत्यु को प्राप्त हुये थे। संभवतः दीर्घकाल तक वे रूग्ण रहे। ऐसी अवस्था में उनके व्यापार की सार सम्हाल मुनीमों के ही हाथ में रही।

शालिगरामजी की धर्मपत्नी का नाम चिमनी बाई था। यह चिमनीबाई सन् 1843 में हरिद्वार स्नान करके अपने पुत्र रघुनाथदास के साथ बद्रीधाम दर्शनार्थ गयी थी। अपने पिताजी की मृत्यु के बाद श्री शालिगरामजी उनके फूल गनेड़ी से हरिद्वार ले गये थे।

शालिगरामजी अपने जीवन काल में कुछ समय तक मन्दसोर, अजमेर और भीलवाड़ा की तरफ भी रहे और कपास व रूई का व्यवसाय किया।

उनके एक पुत्र रघुनाथदास हुये। पिता की मृत्यु के समय छोटी अवस्था में होने के कारण इनका भरण–पोषण और लालन पालन सेठ महानंदरामजी ने किया। इस समय अजमेर–मन्दसोर का क्षेत्र एक असाधारण अशान्ति के दौर से गुजर रहा था। मरहठे, अंग्रेज और पिंडारियों की सेनाओं के अनेक रक्तरंजित संघर्षों के कारण यह क्षेत्र पूरी तरह बरबाद हो रहा था। इस समय के आसपास रघुनाथदास रामगढ़ से आकर लक्ष्मणगढ़ बस गये थे। यहाँ ये महानंदरामजी के परिवार के साथ रहने लगे।

आगे चलकर स्वाश्रयी बनकर वे जावरा में जा बसे थे। इस स्थान पर लम्बे समय तक रहकर उन्होंने अतुल कीर्ति और संपत्ति अर्जित की थी। उनके फूल सन् 1877 (वि. 1934) में हरिद्वार गये। इनकी पत्नी बख्तावरी बाई के फूल इनसे 9 वर्ष पहले हरिद्वार गये थे। हरिद्वार की बही में शालिगरामजी के बेटे का नाम श्योजीराम दिया गया है। यह उतारा सन् 1788 का है। सन् 1769 में इनके पुत्रों के नाम रघुनाथ एवं आशाराम दिया गया है।

श्री शालिगरामजी के पुत्र रघुनाथदास का जन्म सन् 1782 (वि. 1939) के आसपास हुआ था। बचपन में ही पिता का साया सिर से उठ जाने के कारण वे अपने ताऊ श्री महानंदरामजी की देखरेख में रहे। उन्होंने अफीम और रूई के व्यापार का अनुभव प्राप्त किया। महानंदरामजी ने इन्हें हैदराबाद बुलाकर निजाम के भाई के यहाँ खजांची के पद पर रखवा दिया था। कुछ समय तक वे इस पद पर काम करते रहे।

आगे चलकर उन्होंनें अपने चाचा मोहनरामजी के साथ खजांची पद सम्हाला। उच्चपदस्थ स्वजनों की सिफारिश पर इनको यह पद तत्कालीन अंग्रेज सुपरइनटेन्ड़ेन्ट ने

दिया था। रघुनाथदासजी और इनके चाचा से आग्रह किया गया था कि वे अजमेर में नये महाजन परिवारों को लाकर बसायें।

श्री रघुनाथदास सन् 1830 तक अजमेर में रहे। उनका संपर्क बड़े–बड़े अंग्रेज अधिकारियों से रहा खजांची पद पर उन्होंने बड़ी योग्यतापूर्वक कार्य किया। 14 दिसम्बर सन् 1822 के एक खरीते से जिस पर फ्रांसिस बेलडार्ड की छाप लगी है ज्ञात होता है कि अजमेर में न्यूगेट के पास जमीन लेकर इन्होंने अपनी हवेली बनाई थी।

इसी समय के कुछ बाद के एक दूसरे खरीते से ज्ञात होता है [1] कि वे अजमेर में जाकर बसनेवाले सबसे पहले व्यापारी थे। इन्हें दिये गये एक प्रमाणपत्र में कहा गया है कि आपने सबसे पहले नये बाजार में दूकान खोली और एक सुन्दर भवन की नीवं डाल कर दूसरे व्यापारियों को भी बसने को प्रोत्साहित किया। आपने कई महाजन परिवारों को यहाँ बसाकर चूँगी की आय में वृद्धि की। उस समय मि. हैरिस नामक एक अंग्रेज अजमेर जिले का सुपरइनटेनडेन्ट था। 3 मई 1825 को सेठ मोहनदास को सेठ रघुनाथदासजी को शीघ्र अजमेर भेजने के लिये लिखा गया है।

सेठ रघुनाथदासजी की कार्यकुशलता और मुस्तैदी से अंग्रेज अधिकारी बराबर प्रसन्न रहे। एक अन्य पत्र में लिखा गया है कि रघुनाथदासजी ने अपनी लियाकत से और कामों को बेहतर अंजाम देने की वजह से रजामन्दी हासिल करी। [2] सन् 1826 में वे श्री पूर्णमल से मिलने जब हैदराबाद गये तो अंग्रेज अधिकारियों तथा हैदराबाद के निजाम ने अपने गुमाश्तों, जागीरदारों आदि को पत्र लिखकर इन्हें खैरियत के साथ रवाना करने की हिदायत दी थी। [3]

श्री महानंदरामजी के निधन के बाद उनके पुत्र श्री पूरणमल हैदराबाद के काम को योग्यतापूर्वक सम्हाल रहे थे। उनके सुपुत्र प्रेमसुखदास बरार के खंजाची पद पर कार्य कर रहे थे। इसी समय उन्हे ज्ञात हुआ कि बरार की सूबेदारी कोशिश करने से मिल सकती है अतः उन्होंने समाचार भेजकर रघुनाथदासजी को बुलवा लिया। अजमेर का खजांची पद मोहनराम सम्हालते रहे।

बरार की सूबेदारी सन् 1837 में प्राप्त हुई। अब रघुनाथदासजी स्थायी रूप से बरार में श्री प्रेमसुखदास के पास रहने लगे। कुछ समय तक उन्होंने वहाँ कार्य किया। आगे चलकर अंग्रेज अधिकारियों की सिफारिश पर उन्हे गंगाधार में नवस्थापित ब्रिटिश रेजिडेन्सी

1. यह खरीता 14 जनवरी 1823 का है। इस पर फ्रांसिस बेलडार्ड के हस्ताक्षर हैं।
2. यह खरीता 10 जुलाई सन् 1826 का है।
3. 7 रज्जब सन् 1243 हिजरी (वि. 1826) मोहर आसफ जाह निज़ामुल मलिक।

का खजांची पद मिला। यह सिफारिश बरार के पोलिटिकल ऐजेण्ट ने की थी। [4]

पिंड़ारियों का दमन कर अंग्रेजों ने दो नई रियासतें कायम की। टौंक राजपूताने में और जाबरा मध्यप्रदेश मे थी। अब श्रीरघुनाथदासजी को जावरा में खजांची पद पर लगा दिया गया। इस पद पर काम करते हुये उन्होंने अपना निजी व्यापार बढ़ाया। वे अफीम का व्यापार करते, लेनदेन का धन्धा करते और इस्तमरारी में गांव की जमीदारियाँ लेते। इन्होंने सेठ लक्ष्मीचन्द्र जैन के साझे में भी व्यवसाय किया था।

जावरा नगर को सेठ रघुनाथदासजी ने सुव्यवस्थित रूप से बसाकर नया स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने अपने अनुभव और कार्यकुशलता से इस नयी रियासत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया। जावरा नगर में आपने एक सुन्दर उद्यान लगवाया और वेणुगोपाल जी के मन्दिर का निर्माण करवाया।

जब 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में जावरा के नवाब के प्राणों पर संकट आ गया तो श्री रघुनाथदासजी ने उसे अपनी हवेली में छिपा लिया था। आगे चलकर इस उपकार के बदले में नवाब ने जब भूमि देनी चाही तो उन्होंने लेने से इन्कार कर दिया। उन्होंने यह भूमिदान अपने कुल पुरोहित को दिलवा दिया था।

इस प्रकार श्रीरघुनाथदासजी ने विविध स्थानों-लक्ष्मणगढ़, अजमेर, मन्दसोर, मथुरा, हैदराबाद और बरार में रहकर विभिन्न पदों पर काम किया। इस दौरान उन्होंने करोड़ों रूपयों की सम्पत्ति अर्जित की। उनकी इस अतुल संपत्ति की कीर्ति-कथा अजमेर, गंगधार, जावरा और मन्दसोर में आज भी मुखर है।

सेठ श्रीरघुनाथदासजी ने अठारहवीं शती के अंतिम चरण में अजमेर के नवनिर्माण में विभिन्न स्थानों से महाजन परिवारों को बुलाकर उल्लेखनीय मदद की थी। आपके सुप्रयत्नों के परिणाम स्वरूप महानन्दराम पूरणमल हैदराबाद वालों की एक गद्दी भी अजमेर में स्थापित हो गयी थी। आपकी प्रेरणा से ही अजमेर में ओसवाल, जैन, माहेश्वरी धनाढ्य परिवार आकर बसे थे। धीरे-धीरे इन परिवारों ने अमित अचल संपत्ति अजमेर मे बनायी। नगर के पुनर्निर्माण में श्रीरघुनाथदासजी के योगदान का सदैव स्मरण किया जावेगा।

इस समय वे जीवन के चतुर्थ चरण में प्रवेश कर चुके थे। ढलती उम्र में उन्हें असह्य वेदना सहनी पड़ी। सन् 1870 में बड़े बेटे बलदेवदास और सन् 1873 में छोटे बेटे हरिबक्स का असामयिक निधन हो गया। 7 साल तक वे निरन्तर इस पीड़ा को सहन करते रहे। निदान सन् 1877 (वि. 1934) में उन्होंने जावरा में अपना शरीर त्याग दिया। इस प्रकार इस कर्म-संकुल और कर्मण्य जीवन का अंत हुआ।

---

4. गंगाधर मन्दसोर से लगभग 40 मील दूर नई ब्रिटिश रेज़िडेन्सी में था।

सप्तम् अध्याय

श्री हरिकृष्णदासजी–चतुर्थ पुत्र

श्री हरिकृष्णदासजी सेठ जुगलदासजी के चतुर्थ पुत्र थे। गनेड़ीवाला परिवार में श्री हरिकृष्णदासजी की अपनी अलग पहचान है। उन्होंने स्वयं लक्ष्मी का अमित संचय किया और एक ऐसे संतति क्रम का समारंभ किया जिसने आगे चलकर यश, कीर्ति, अधिकार और धनार्जन के नये कीर्तिमान बनाये।

श्री हरिकृष्णदासजी को फतेहपुर के शिलालेख में तीसरा स्थान दिया गया है पर हरिद्वार की बही में उनका स्थान चौथा है। गनेड़ीवालों के वंशवृक्ष में भी उनका स्थान चौथा ही है अतः इसी को आधार मानकर वृत्त को आगे बढ़ाया जा रहा है।

श्री हरिकृष्णदासजी का जन्म अनुमानतः 1750 ई. (वि. 1807) में हुआ था। उनके जन्म के समय श्री जुगलदासजी की अवस्था तीस वर्ष की थी। इस समय राजनैतिक क्षितिज पर उठा हुआ संघर्ष का बंवडर अब धीरे-धीरे शान्त हो रहा था और उससे उठाये हुये धूलिकण आसमान से जमीन पर उतरने लगे थे। वातावरण धीरे-धीरे स्वच्छ हो रहा था। जोधपुर, बीकानेर में राठोड़ सत्ता पूरी तरह जमकर बैठ गयी थी। इधर जयपुर में 1743 वि. 1800 में महान शासक और राजनीतिज्ञ सवाई जयसिंह के निधन के बाद सत्ता उसके पुत्र ईश्वरीसिंह के हाथों में लड़खड़ा रहीं थी। जयपुर का विशाल राज्य जिसकी एक छोर मुगल साम्राज्य से जा अड़ी थी अब भी अक्षुण्ण बना हुआ था।

इधर शेखावाटी और आसपास के स्थानों में नगरों के नव संस्थापन का एक दौर शुरू हो चुका था। शार्दूलसिंह ने अपना भू-भाग अपने पांचों पुत्रों में बांट दिया था। यह भू-भाग आगे चलकर उन पुत्रों की संततियों में पुनःविभाजित हुआ। हर ठाकुर अपने अधीनस्थ भू-भाग की आवादानी अच्छी प्रकार धनाढ्य सेठों को बसाकर करना चाहता था। इस प्रकार नवस्थापित किये जाने वाले नगरों की संख्या में दिनानुदिन अभिवृद्धि हो रही थी।

ठाकुरों ने प्रयत्न करके सुदूरस्थ स्थानों से सेठों को लाकर बसाया और उनको अमित अधिकार देकर अपने क्षेत्र में बसने को प्रोत्साहित किया।[1]

सेठ जुगलदासजी ने शालिगराम के बाद होने वाले पुत्र का नाम हरिकृष्णदा रखकर भगवान के प्रति अपनी अन्तर्निहित निष्ठा को प्रकट किया था। एक भक्तिभाव से ओत-प्रोत वैष्णव परिवार के नाम उसकी श्रद्धा–भक्ति के परिचायक हों तो सर्वथा उचित ही है।

अपने प्रारंभिक जीवन में उन्होंने अपने बड़े भाई श्री नूँदरामजी के साथ अजमेर में व्यवसाय का प्रारम्भ किया। संभवतः कुछ वर्ष उन्होंने वहाँ व्यापारिक अनुभव प्राप्त करने के लिये बिताये। आगे चलकर उनके व्यापार के एक साझीदार बन गये।

ऐसा प्रतीत होता है कि गनेड़ी छोड़कर वे भी श्री नूँदरामजी के साथ फतेहपुर बस गये थे। दोनों भाइयों का परिवार साथ–साथ ही रहता था। फतेहपुर उस समय महाजनों की नगरी बन चुका था। अनेकों संपन्न परिवारों की इस नगरी में एक ऐसे आर्थिक परिवेश का निर्माण हो चला था जिसमें विद्यमान लोगों में धनसंचय करने की प्रवृत्ति स्वयंमेव समुत्पन्न होती थी। धनार्जन का एक अनवरत क्रम चलता रहता था जो हर वणिक परिवार में एक अनचाही स्पर्धा को जन्म दे रहा था। अनतिदूर जोधपुर, बीकानेर और जयपुर के क्षेत्र पड़ते थे जहाँ की तीव्रगामी व्यापारिक हवायें नगर के आर्थिक परिवेश को संकुल कर देती थी। यहाँ स्वभावतः ही गनेड़ी से अधिक संभावनायें आगे बढ़ने की थी। इन्हीं कारणों से सेठ जुगलदासजी के अन्यपुत्रों ने भी गनेड़ी से बाहर पद–संक्रमण किया था।

श्री हरिकृष्णजी के निज के जीवन के अधिक विवरण ज्ञात नहीं हैं पर जो कुछ तथ्य संकलित किये गये हैं उनसे ज्ञात होता है कि वे कर्मठ व्यक्ति थे, व्यवसायिक प्रतिभा के धनी थे और लक्ष्मी के संचय में रूचि लेते थे। अपने कुल–परिवार की मर्यादा को उन्होंने अपने जीवन में आत्मसात किया था।

---

1. ऐसे नगरों में सीकर, रामगढ., लक्ष्मणगढ., नवलगढ. मंडावा, बिसाउ, मुकुन्दगढ., अजीतगढ., सूरजगढ. आदि लिये जा सकते हैं जो 18वी शती वि० से 19वी शती के अर्द्धांश तक आबाद होते रहे।

श्री हरिकृष्णजी के 5 पुत्र हुये जिनके नाम सर्व श्री हणूतराम, चतुर्भुजदास, रामानंद, रामचरणदास और जगन्नाथराय थे। इनके एक पुत्री भी पद्मा नाम की थी। उस समय बीकानेर राज्य का नया शहर रतनगढ़ बस रहा था अतः अनेक महाजन परिवार अन्य स्थानों से आकर महत्त्वपूर्ण व्यापारिक स्थान पर बस रहे उस नगर में संस्थापित हो गये। चुरू से गुजरने वाले व्यापारिक मार्गों का रतनगढ़ अब एक प्रमुख केन्द्र बन रहा था।

श्री हरिकृष्णदासजी ने जब अपने आपको रतनगढ़ में स्थापित कर लिया तो वहाँ एक हवेली का निर्माण करवा लिया और सपरिवार रहने लगे। आज भी उनकी हवेली मौजूद है। रतनगढ़ की बसावट और आवादानी में जिन लोगों ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया था उनमें श्री हरिकृष्णदासजी का नाम उल्लेखनीय है। आज जहाँ अशोक स्तम्भ और छत्री है वह तथा उसके आसपास की सारी भूमि गनेड़ीवालों की थी।

श्री हरिकृष्णदासजी ने उपर्युक्त भूमि के अतिरिक्त बीकानेर के महाराजा से 12 बीघा जमीन कूवे के लिये खरीदी। सावण बदि 7 सम्वत् 1911 में इस भूमि पर आगे चलकर कूवा बनकर तैयार हुआ। अशोक स्तम्भ के पास ही पूर्व में एक विशाल छत्री खड़ी हुई है जो श्री हरिकृष्णदासजी पर बनी है। इस छत्री पर किसी अभिलेख के अभाव में इसके निर्माण का सही संवत् ज्ञात करना कठिन है।[2] इस छत्री का निर्माण उनके पुत्र श्री रामानंद एवं रामचरणदास ने करवाया था।

जिस प्रकार श्री नूँदरामजी ने अपने आपको फतेहपुर में और श्री महानंदरामजी ने अपने को हैदराबाद में व्यापार व्यवसाय में सुव्यवस्थित कर लिया था उसी प्रकार श्री हरिकृष्णदासजी ने भी अपनी व्यवसायिक प्रतिष्ठा रतनगढ़ में जमा ली थी। हवेली, नोहरा, कूँआ आदि का निर्माण–कार्य भी उन्होंने वहाँ संपन्न करवाया।

अतुल धनसंपत्ति का समार्जन करते हुये उन्होंने लोकोपकारक कार्य भी किये। तीर्थाटन उनकी रूचि और निष्ठा का प्रतीक रहा। संवत् 1845 में उन्होंने अपने भाइयों के बेटों के साथ हरिद्वार की यात्रा की। यहीं से वे श्री बद्रीनाथ की यात्रा पर गये थे। यद्यपि इस उल्लेख में श्री नूँदराम, श्रीमहांनदराम तथा श्री शालिगराम के पुत्रों का उल्लेख है पर स्वयं के किसी पुत्र का उल्लेख नहीं है। संभवतः उनकी अवस्था छोटी होने पर वे साथ नहीं आये हों। आगे चलकर जब श्री धनराज हरिद्वार स्नान को आये तो साथ में श्री हरिकृष्णदासजी के लड़के श्री हणूतराम को भी लेकर आये थे। यह स्नान–यात्रा संवत् 1853

---

2 इस छत्री के लिए माह सुदि, 5. 1914 को जमीन ली गयी थी पर छत्री का निर्माण शीध्र नहीं हो सका। 1938 में पास के स्थान के पटटे में छत्री का उल्लेख हैं, संवत् 1923 के श्री पूर्णमल सरार्फ की हवेली के पटटे में भी इसका उल्लेख हैं, इसी तरह का उल्लेख सं 1920 के एक पटटे में भी है। इससे ज्ञात होता है कि छत्री संवत् 1914 और 1920 के बीच कभी बनी है।

में की गयी थी। इससे पूर्व श्री हरिकृष्णदासजी जब अजमेर में रहते थे तो पुष्कर स्नान के अतिरिक्त यदाकदा हरिद्वार स्नान के लिये भी समय निकाल लेते थे। ऐसी ही एक यात्रा उन्होंने अपने भाई श्री नूँदरामजी के साथ संवत् 1838 में अजमेर से की थी। श्री हरिकृष्णदासजी की इस धर्मप्रियता और तीर्थाटन की प्रवृति की सहभागिनी उनकी पत्नी श्रीमती बरजी भी रही थी। ये श्री हरखनाथ खेतान की सुकन्या थी। उन्होंने 1888 में श्री बद्रीनाथ भगवान की यात्रा की थी। उस समय तक ये काफी वृद्धा हो चुकी थी।

गनेड़ी, फतेहपुर, अजमेर और रतनगढ़ उनके सक्रिय व्यापारिक जीवन के केन्द्र बिन्दु रहे। उन्होंने एक सफल गृहस्थ का जीवन जीया और अपना भरापूरा संपन्न परिवार छोड़कर अनुमानः 77 वर्ष की अवस्था में इस असार संसार से विदा हो गये। उनके फूल चैत बदि सं. 1889 में हरिद्वार पहुँचाये गये थे।

श्री हरिकृष्णदासजी की मृत्यु के समय सभी पुत्र वयप्राप्त हो चुके थे और व्यापार व्यवसाय में पूरी तरह लग चुके थे। पिता की मृत्यु के कुछ समय बाद परिवारिक संपत्ति का विभाजन हो गया। उनके पुत्रों में द्वितीय पुत्र श्री रामानन्द और तृतीय पुत्र श्री रामचरणदास रतनगढ़ में रहे और शेष तीन पुत्र बाहर जाकर बस गये। आगे चलकर श्री रामचरण भी बाहर चले गये और घर पर सिर्फ श्री रामानन्दजी ही रहे।

श्री हरिकृष्णदासजी के शेष तीन पुत्र रतनगढ़ से खेतड़ी नरेश के निमंत्रण पर नये बस रहे चूड़ी गांव में आ गये थे। यह गांव चूड़ी खेतड़ी–नरेश द्वारा बसाया जा रहा था। गनेड़ीवाला परिवार की संपन्नता उन दिनों मुखर थी अतः खेतड़ी नरेश ने तीनों भाइयों को निमंत्रण देकर चूड़ी में बुला लिया था।

इस नये स्थान को बसाने और आबाद करने में उन्होंने पूरा सहयोग दिया। अपनी हवेली बनाई और नोहरें आदि लिये। इस बात को जानने के लिये कि वे चूड़ी में कब पहुँचे एक महत्त्वपूर्ण सूत्र मिल गया है। चूड़ी की शहरपनाह जो अब ढ़ह चुकी है इन्हीं सेठों ने बनायी। शहरपनाह की दीवार बैसाख सुदि 2 सम्वत् 1907 को संपूर्ण हुई थी। यह बात एक बही के उल्लेख से ज्ञात होती है। इसी समय से कुछ पहले श्री चतुर्भुजदासजी अपने अन्य भाई और भतीजों के साथ चूड़ी आये होगें।

खेतड़ी के राजाओं से गनेड़ीवाला परिवार के सम्बन्ध बहुत पुराने समय से हैं। गनेड़ीवाला संग्रह में सेठों के नाम खेतड़ी के विभिन्न राजाओं के अनेकों पत्र हैं। इन पत्रों में उन्हें खेतड़ी राज में आकर बसने, व्यापार चालू करने का आमन्त्रण दिया गया है। अनेक पत्र ऋण देने के लिये लिखे गये हैं। गनेड़ीवाला परिवार अनेकों राजा, महाराजाओं को बड़ी-बड़ी धन राशि ऋण के रूप में देता रहा है। इनका वर्णन यथा स्थान

किया जावेगा। यहाँ केवल एक बात का उल्लेख किया जा रहा है कि खेतड़ी के राजा फतेहसिंह को जयपुर राज की माल गुजारी के 500624 रूपये भरने थे। इसके लिये उन्होंने गनेड़ीवालों से सहायता मांगी थी। फलस्वरूप सेठों ने एक हुँडी 500000 रूपयों की दी थी।[3] आगे चलकर जब श्रीसौभाग्यसिंह लाड़खानी के हाथ में खेतड़ी का शासन प्रबन्ध आ गया तो सारा लेन-देन गनेड़ीवालो के मार्फत होता रहा। श्री सौभाग्यसिंह के अनेको पत्र संग्रह में विद्यमान हैं।

श्री हणूतरामजी श्री हरिकृष्णदासजी के सबसे बड़े लड़के थे। इनका जन्म 1776 ई. (वि. 1833) के आसपास हुआ था। पिता की मृत्यु के बाद वे व्यापार व्यवसाय में संलग्न हो गये और अधिकतर रतनगढ़ से बाहर ही रहे। इनकी स्त्री का नाम बरजी था। इनके एक पुत्र हरदेवदास हुये। श्री हणूतराम के बाहर रहने के कारण उनके पुत्र व्यापार व्यवसाय में अपने चाचा श्री जगन्नाथराय के साथ रहे। जब श्री जगन्नाथराय चूड़ी चले गये तो श्री हरदेवदास भी साथ गये। वहाँ से वे मुकन्दगढ़ पहुँचे और वहीं आबाद हो गये। 1853 वि. में जब श्री धनराज गंगास्नान को हरिद्वार आये तो साथ में भाई के पुत्र हणूतराम को भी लाये। 1901 वि. में श्री हणूतराम कुँभ पर्व पर गंगास्नानार्थ आये थे। संभव है उसी समय के आसपास उनका देहान्त हो गया। इसके बाद उनके एक मात्र पुत्र मुकुन्दगढ़ जा बसे।

कई वर्ष तक इन तीनों भाई भतीजों का परिवार चूड़ी में ही रहा और व्यापार का कार्य समय समय पर बाहर जाकर करते रहे। इसी समय ठाकुर मुकुन्दसिंह जो नवलसिंह के पौत्र मोहब्बत सिंह के पुत्र नाथुसिंह के पुत्र थे मौजा साहबसर नामक एक छोटे से गांव को नगर का रूप दे रहे थे। यह बात संवत् 1916 की हैं। संग्रह के एक कागज से ज्ञात होता है कि श्री चतुर्भुजदास, श्री जगन्नाथराय और भतीजे श्री हरदेवदास को एक पत्र मेड़तणीजी ने लिखा था कि आपको जमाखातर का कागज सरकार से लिखा दिया है। आगे उनसे आग्रह किया गया है कि वे जमा खातर से आकर बसें और दूसरे साहूकारों को लाकर बसावें।[4] इसी तरह का एक पत्र मुकुन्दसिंह स्वयं का भी है। यह पत्र श्री हरदेवदास रामविलास को लिखा गया है। इसमें कहा गया है कि मुकुन्दगढ़ नाम से शहर बसाना है सो आप आकर शहर बसायें।[5]

श्री चतुर्भुजदास सन् 1860 वि. 1917 में सपरिवार हरिद्वार स्नान को गये थे। साथ

---

3. यह हुण्डी बही के एक उल्लेख के अनुसार चैत सुदि 15 संवत् 1904 में दी गयी थी। इस हुंडी के सम्बन्ध में पं० नन्दलाल नेहरू खेतडी से लक्ष्मणगढ. आये थे।

4. यह कागद पौह सुदि 13 सं 1918 का है जो परिशिष्ठ में दिया गया है।

5. यह कागद आषाढ. सुदि 13 संवत् 1916.का है।

में श्री रामानंद व श्री रामचरणदास भी थे। श्री हरदेवदास, उनके पुत्र रामप्रताप, उनकी पत्नी चूरूवाली रामरतनी जी जो बेगराज जड़ियावाले की बेटी थी, रामानन्द की बहू धीरा जालीराम गर्गगोती की पुत्री, चुन्नी रामचरण की बहू बरजी, हरदेवदास की माता, बाई बालमुकुन्दी, चँरवीबाई, हरि (रामप्रताप की बेटी,) रामप्यारी स्त्री रामप्रताप भी इस यात्रा में साथ थीं।

श्री चतुर्भुजदासजी ने मुकुन्दगढ़ में एक विशाल हवेली का निर्माण करवाया। आपका देहान्त वृद्धावस्था में सं. 1934 के आसपास ही हुआ। आपकी धर्म पत्नी रतनी का देहान्त 1941 वि. के आसपास हुआ। आप मुकुन्दगढ़ के आदि धनाढ़यों में गिने जाते हैं। आपके जीवन काल में आपका व्यवसाय देश के विभिन्न भागों में फैल चुका था। जिसे आपकी मृत्यु पर सुयोग्य पुत्रों ने सम्हाला।

श्री रामानंदजी अपने पिता की तीसरी संतान थे। इन्होंने पिता के व्यवसाय को रतनगढ़ में रहकर काफी विकसित किया। रतनगढ़ के एक वृद्ध सज्जन ने बताया कि जब रतनगढ़ में मंड़ी लगती थी तो सेठ रामानन्द गनेड़ीवाला की गद्‌दी के आगे सबसे अधिक भीड़ लगती थी। सौ सौ ऊँटों के काफिले और ढाईसौ बैलगाडियाँ आती थीं तब उन्हीं की गद्‌दी के आगे सबसे ज्यादा बिकवाल एकत्रित हुआ करते थे। उनकी बहुत बड़ी साख रही। वे बवंडर की तरह लेवाबेची करते थे। बीकानेर के माहेश्वरियों के बीच रामानन्दजी गनेड़ीवाला की धाक रहती थी।

वे बढिया कपड़े पहनने का शौक रखते थे। उन्होंने और उनके भाइयों ने अपने पिता श्री हरिकृष्णदासजी पर एक भव्य छतरी संवत् 1914-20 की अवधि में बनाई। उन्नत पीठिका पर बनी यह छत्री आज भी बाजार के पास खड़ी है और अपने निर्माता के नाम को मुखर कर रही है।

वे धर्मप्राण व्यक्ति थे और गंगामैया की भक्ति रखते थे। उनके बारे में एक उक्ति आज भी रतनगढ़ में प्रसिद्ध हैः—

लांबा तिलक पोत की माला।
रामराम रामानन्द गनेड़ी वाला।।

इनके वंशज श्रीशंकरलाल के अनुसार इनके परिवार में एक ताम्बे के लोटे पर राजा रामानन्द नाम खुदा हुआ है। इन्होंने सं. 1911 में कूवे, बावड़ी और प्याऊ के लिये बीकानेर राज से 15 रूपये में जमीन खरीदी थी। इनकी मृत्यु सं. 1918 में हुई थी। इनके पुत्रों के नाम घनश्यामदास और बींजराज थे। श्रीरामानन्दजी ने भी लम्बी आयु पायी। इनकी स्त्री का नाम बीरा था जो श्री जालीराम चमड़िये की बेटी थी।

श्री रामचरणदास अपने पिता की चौथी संतान थे। यौवन अवस्था तक आप रतनगढ़ में ही रहे। इसके बाद अचानक परदेश गये। 15 वर्षों तक इनकी कोई खोज खबर नहीं रही। एक दिन वे अचानक रतनगढ़ में आ गये। कुछ दिन रतनगढ़ में रहकर अजमेर जाकर व्यवसाय करने लगे। प्राप्त सूत्रों से यह भी ज्ञात होता है कि वे नीमच देवली छावनी के बीच रसद पहुँचाने का काम करते थे। अफीम का भी इनका स्वतंत्र धन्धा चलता था। वे बड़ी पूँजीवाला धन्धा करते थे। आप बड़े भारी आंकड़िया थे और बड़े बड़े हिसाब जबानी लगा देते थे। आप आगे चलकर रतनगढ़ में रहते हुये लेवा बेची का धन्धा करने लगे। आपकी मृत्यु सन् 1876 (वि. 1933) के आसपास हुई। [6]

श्री जगन्नाथ अपने पिता की पांचवी और सबसे छोटी संतान थे। इन्होंने अपने जीवनकाल में अमित धन संचय ही नहीं किया राजसी ठाठ और प्रतिष्ठा तथा मान मर्यादा का उपभोग भी किया।

जैसाकि पूर्व में वर्णित है वे अपने अन्य दो भाइयों के साथ पहले चूड़ी और तदनन्तर मुकुन्दगढ़ चले आये थे। वहाँ इन्होंने नगर को बसाया, आबाद किया और अपनी विशाल हवेली का निर्माण करवाया। गनेड़ीवालों के मोहल्ले में मुकुन्दगढ़ में आज भी यह हवेली खड़ी है। इस हवेली का निर्माण उन्होंने अपने 6 बेटों के लिये करवाया था। दो बैठकों वाली कलापूर्ण यह हवेली सेठ जगन्नाथराय की महानता के स्वर मुखरित करती प्रतीत होती है।

नये बसने वाले शहर में बसने की इच्छा उस समय हर वणिक पुत्र की रहती थी। वहाँ अधिकार, मानसम्मान के साथ हैली, नोहरों के लिये मनचाही जमीन मिल जाती थी। इसके साथ जगात में छूट मिलती थी। छोटे गांव के स्नेह और मान का अलग आकर्षण रहता था। इन्हीं कारणों से सेठ जगन्नाथ राय का परिवार रतनगढ़ से मुकुन्दगढ़ का वासी हुआ था।

सं. 1916 में मुकुन्दगढ़ शहर कुछ बसा। श्री चतुर्भुजदास ने तीन बेटों के लिये तीन हवेलियाँ बनायी। श्री जगन्नाथराय ने 6 बेटों के लिये 6 हवेलियाँ बनायी। 10 वीं हवेली श्री हरदेवदास ने बनायी। प्रारम्भ में उन्होंने मुकुन्दगढ़ की चारदीवारी का कार्य हाथ में लिया। इसे पश्चिम भाग से शुरू किया गया। उन्होंने संवत् 1918-1924 में एक विशाल मरवे और छत्री वाला कूँआ नगर के पश्चिमी भाग में बनाया। इतना बड़ा कूँआ आसपास के किसी नगर में नहीं है। [7]

---

6. आपके फूल सन् 1876 में हरिद्वार पहुँचे ऐसा पंडों की बही से ज्ञात होता है।

7. इसका जीर्णोद्धार संवत् 2007 में श्री किशोरीलाल ने करवाया।

कूवे पर लगे लेख से ज्ञात होता है कि इसके निर्माण में श्री जगन्नाथराय और श्री हरदेवदास के पैसे लगे। कूँऐ के नीचे 50 बीघा जाव की जमीन छोड़ी। गांव के बाहर 90 बीघा भूमि गायों के चरने के लिये छोड़ी। इस गोचर के बीच में इन्होंने पक्का तालाब बनाया। उत्तर-पश्चिम में श्मशान, पितरों की बगीची बनायी। उन्होंने उन्नत पीठिका वाला वेणी माधव का मन्दिर बनाया। इस मन्दिर का भवन बरसाने के मन्दिर की प्रतिलिपि है।

उनका विचार एक धर्मशाला बनाने का था जिसकी नींव भी लग चुकी थी पर इसी समय अफीम की पेटियाँ लेकर आने वाले एक जहाज के डूबने से उनको आर्थिक क्षति हुई अतः यह निर्माण अधूरा ही रहा। ये अधिकतर प्रवास में रहते थे। उनका व्यवसाय मुनीम सम्हालते थे। गुड़ की सबसे बड़ी मंड़ी सांवली और रूई की सबसे बड़ी मंडी उज्जैन में वे अक्सर जाते रहते थे।

सेठ भागीरथमल जी कानोड़िया कहा करते थे कि मुकुन्दगढ़ में औरों ने तो ब्याज पर रूपये देकर, माल की लेवा बेची करके, थोक में माल सस्ते में लेकर और सालभरतक स्टोर रखकर ऊँचे भाव में बेचकर-इस रीति से पैसा कमाया है पर जगन्नाथरायजी गनेड़ीवाला पूनी की तरह रूपये का सूत काता करते थे। वही सूत उनकी तिजोरी में रखा हुआ ६ ान बन जाता था। अंग्रेजी कंपनियों के ऐजेन्टों और दलालों के बीच बैठकर वे अपनी वजनी राय दिया करते थे और उसी के बीच अपने ऊँचे सौदे कर लिया करते थे।

उनके 6 पुत्र थे जिनके नाम थे रामजसराय, जोरावरमल, हरिबक्स, बालमुकुन्द, हरिप्रसाद और हरमुखराय। इन पुत्रों के अतिरिक्त आपके एक कन्या सुन्दरबाई भी थी। इसका विवाह रामगढ़ के पौद्दारों के यहाँ हुआ था। इनकी पत्नी का नाम माली था जो रामनाथ बंसलगोती की पुत्री थी। श्रीजगन्नाथराय की मृत्यु वृद्धावस्था में संवत् 1945 के आसपास हुई। उनकी धर्म पत्नी के फूल हरिद्वार में सन् 1892 वि. 1949 में पहुँचे थे। मुकुन्दगढ़ के पश्चिमी भाग में कूवे के पास सेठ जगन्नाथराय और उनकी स्त्री का चबूतरा बना हुआ है पर इस पर कोई लेख नहीं है।

श्री हरदेवदासजी सेठ हरिकृष्णदासजी के बड़े बेटे हणूतराम की संतान थे। वे भी अपने दो चाचों के साथ रतनगढ़ से चूड़ी आ गये थे। बाद में जब ठाकुर मुकुन्दसिंह ने सं. 1916 में मुकुन्दगढ़ बसाने का इन्हें निमंत्रण भेजा तो वे भी मुकुन्दगढ़ चले आये जहाँ उन्होंने कूवा हवेली बनायी। इनका व्यापार श्री जगन्नाथराय के साझे में चलता था। फर्म का नाम "जगन्नाथ हरदेवदास" था। इनकी स्त्री का नाम गुलाबी था जो श्री पूरणमल मुरारका की पुत्री थी। इनके दो पुत्र हुये जिनके नाम रामविलास और गोरधनदास थे। सं. 1888 में परिवार के साथ वे भी गंगास्नान को गये थे। इसके 17 बर्ष बाद फिर वे गंगा स्नान करने अपने पिता व अन्य लोगों के साथ आये थे। जब 2 वर्ष के बाद कुँभ का मेला

हुआ तो ये सपत्नीक हरिद्वार गये। 1917 में भी पुनः इन्होंने हरिद्वार में गंगास्नान किया। संभवतः इन्होंने दो विवाह किये थे। हरिद्वार की बही के सं. 1948 के उल्लेख में इनकी पत्नी रामबाई के अपने पुत्रों सहित हरिद्वार स्नानार्थ आने का उल्लेख है। श्री हरदेवदास के परलोक गमन का समय ज्ञात नहीं है।

ठा. मुकुन्दसिंह के सम्बन्ध इन सेठों से बड़े मधुर रहे। ठाकुर की मृत्यु संवत् 1933 में हुई। इनके बाद आगे के ठाकुरों से भी स्नेहपूर्ण सम्बन्ध बने रहे पर ठाकुर बाघसिंह के समय इन सम्बन्धों में कटुता आने लगी थी। इसका उल्लेख आगे के वृत्त में किया जायेगा।



मन्दिर में वार्षिक उत्सव पर भगवान श्री राम जी का अभिषेक, गनेड़ी



सेठ जुगलदासजी की पुण्य तिथि पर
गनेड़ी में ब्राह्मण भोज

अष्टम् अध्याय

श्री तोलारामजी–पंचम पुत्र

श्री तोलारामजी सेठ जुगलदासजी के 5 वें पुत्र थे।[1] इनके सम्बन्ध में बहुत कम विवरण प्राप्त है। उनके वंशजों से जो वृत्त प्राप्त हुये हैं उनसे उनके जीवन की कुछ घटनाओं का उल्लेख किया जा रहा है। अन्य भाइयों की तरह श्री तोलारामजी ने भी गनेड़ी त्याग दी थी। वे अपने भाई वृन्दावनदासजी के साथ फतेहपुर जाकर बस गये थे और वहीं से अपने व्यापार-व्यवसाय का काम करते थे। प्रारम्भ में वे हैदराबाद में रहकर सिक्कों के विनिमय का धंधा करते रहे और फिर अपना स्वतन्त्र धन्धा जमा लिया।

कहते है कि वे स्वर्ण की मोहरों के विनिमय का धंधा करते थे। उनका व्यवसाय अजमेर–चित्तौड़–हैदराबाद आदि नगरों में अधिक होता था। इस मार्ग पर पड़ने वाले अनेकों ठिकानों में वे अपने व्यापार के सम्बन्ध में जाया करते थे। वे राजस्थान के विभिन्न ठिकानेदारों से स्वर्ण मोहरें लेकर उन्हें हैदराबाद विनिमय के लिये ले जाते थे जहाँ इनकी अधिक मांग रहती थी। उस समय जो मार्ग चित्तौड़ से दक्षिण की ओर जाते थे उनपर बड़ी सुरक्षाव्यवस्था रहती थी क्योंकि लुटेरों का बराबर डर बना रहता था। सैकड़ों की संख्या में लुटेरे घूमा करते थे जो काफिलों को लूट लिया करते थे।

श्री तोलारामजी के दो पुत्र थे जिनके नाम श्री नंदराम और श्री श्योकिशन थे। दूसरे

---

1. सन् 1981 में प्रकाशित गनेडीवाला परिवार के वंश वृक्ष में इन्हें पाचवां पुत्र ही माना गया है । फतेहपुर की छत्री के शिलालेख में इनका स्थान सातवां है ।

पुत्र की मृत्यु बाल्यावस्था में ही हो गयी थी। पहले पुत्र नन्दराम थे जिनका देहान्त भी प्रायः युवावस्था में हो गया। इनके एक पुत्र श्री हरदयाल थे। इनके तीन पुत्र सर्व श्री गौरीदत्त, बालमुकुन्द और विशेशरलाल हुये। इन पुत्रों के वृत्त आगे के पृष्ठों में दिये जावेंगे। श्री तोलारामजी की पत्नी का नाम सारा था। हरिद्वार की बही के एक उल्लेख से हमें यह नाम प्राप्त हुआ है। [2]

वैसे तो सेठ जुगलदासजी के सभी पुत्रों में राजपूती शोर्य की झलक मिलती थी पर श्री तोलारामजी तो शौर्य के जीवन्त स्वरूप थे। सुदीर्घ कद, लम्बी भुजायें और श्मश्रुयुक्त रोबीला मुखमण्डल। वे ढाल तलवार सदैव साथ रखते थे। बचपन में गनेड़ी गांव में समवयस्क राजपूत कुल के पुत्रों के साथ उन्होंने तलवार चलाना सीखा था।

उस समय प्रायः काफिले के साथ जाने वाले हर व्यक्ति के पास अपनी सुरक्षा के कुछ साधन होते थे। श्री तोलारामजी तलवार और ढ़ाल बराबर साथ रखते। वे वणिक पुत्र कम और राजपूत अधिक लगते थे। उनका अपना व्यापार उन्हें अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड के क्षेत्र में अधिक लगाये रखता था। इस क्षेत्र में पड़ने वाले ठिकानों में वे व्यापार के सम्बन्ध में जाया आया करते थे। रात्रिविश्राम के लिये बने स्थानों में रात गुजार कर वे प्रायः सुबह होने पर फिर गन्तव्य पथ पर आगे बढ़ जाते।

अपनी ऐसी ही किसी व्यापारिक यात्रा के सम्बन्ध में वे गंगरार गये थे। गंगरार भीलबाड़ा से 80 मील की दूरी पर बसा हुआ है। इस स्थान पर अरावली की गहन श्रृँखलायें सघन बनावली लिये चारों ओर फैली हैं। एक पार्श्व पर गिरि की उत्तुंग श्रेणि पर एक गढ़ बना हुआ है। यहाँ युद्ध में मृत्त वीरों की अनेकों समाधियाँ हैं। इस छोटे गांव की भूमि ने भूतकाल में अनेकों युद्धों की विभिषिका देखी है।

यह वही स्थान है जहाँ पर मेवाड़ के महाराजा अरिसिंह की फौज से जयपुर के नागा साधुओं की सेना की घनघोर टक्कर हुई थी। इस लड़ाई में नागाओं की फौज के अनेकों साधु मारे गये थे जिनकी खोपड़ियाँ लम्बे समय तक मैदान में पड़ी रही थी। [3] मेवाड़ की सेना को भी बड़ी हानि उठानी पड़ी थी।

उस स्थान की उन दिनों की भंयकरता की कल्पना सहज में ही की जा सकती है। सघन बनावली से समावृत्त यह स्थान गिरि के गह्वर में बसा हुआ होने के कारण भयावह

2 हरिद्वार की बही

3 इस लडाई के सम्बन्ध में एक पद्य प्रचलित है :

अड़सी सैं अड़िया जिका पड़िया करे पुकार।
महापुरूषों की मूँडकी गलगी गांव गंगार।।
नागासाधुओं को महापुरूष कहा जाता था।

बना हुआ था। उस समय एक व्यापारिक मार्ग इसी स्थान से गुजरता था।

विक्रम संवत् 1840 के लगभग राजस्थान और मालवा प्रदेश की हालत जहाँ तक डकैतियों का सम्बन्ध है बड़ी विकट थी। पाटोदा के डूँगजी जुहारजी की साहसपूर्ण डकैतियों से राजपूताना और बहादुरसिंह चांदावत की डकैतियों से मेदपाट, मालवा प्रदेश और मध्यप्रान्त बुरी तरह आंतकित था। यात्रा के साधनों के अभाव और घने जंगलों ने डाकूदल को अजेय बना रखा था। असुरक्षित यात्राओं से लोग वैसे ही डरते थे जैसे सिंह से वन के अन्य प्राणी।

ऐसे असुरक्षित समय में राजपूताने के एक क्षत्रिय–हृदय वैश्य ने सुदूर दक्षिण के हैदराबाद नगर से राजस्थान में आने का संकल्प किया। घर वालों ने उन्हें राजस्थान जाने से मना किया किन्तु कोई भी उन्हें यात्रा के निश्चय से ड़िगा नहीं सका। साहसी यात्री गन्तव्य दिशा को रवाना हो गया। कविवर कालिदास के कथनानुसार वीर पुरूष के निश्चय और पानी के वेग को रोकने की सामर्थ किसमें हो सकती है। यह साहसी यात्री लक्ष्मणगढ़ के गनेड़ीवाला परिवार के उज्जवल रत्न सेठ तोलारामजी थे जिन्होने तुला और तलवार दोनों की साधना की थी।

श्री तोलारामजी दैवदुर्विपाक से किसी दिन इसी मार्ग से आगे बढ़ रहे थे कि अचानक डाकुओं ने उन्हें घेर लिया। एक छोटी सी लड़ाई शुरू हो गयी। उन्होंने बड़े शौर्य से डाकू दल का मुकाबला किया और अन्त में कइयों को मारकर वे रणभूमि में सदा के लिये सो गये। उन्होंने सच्ची क्षत्रियोचित्त वीरता का प्रदर्शन किया था। जब तक जीते रहे दस्यु दल को अपने पास तक नहीं फटकने दिया।

निश्चय ही जिस समय दस्युदल का सामना करते हुये उन्होंने वीर गति पायी उस समय वे युवक रहे होंगे। उनकी नसों में प्रवहमान यौवन के उद्दीप्त रक्त ने उनको डाकुओं का मुकाबला करने का साहस प्रदान किया था। अपने रक्तिम और अप्रतिम बलिदान से वे एक ऐसी गाथा छोड़ गये हैं जो लम्बे समय तक गूँजती रहेगी।[4]

इस कथा का दूसरा रूप भी मिलता है जो कि श्री तोलारामजी के वंशज श्री विश्वनाथ जी गनेड़ीवाला (कलकत्ता) के कथनानुसार निम्न प्रकार है।

---

4 इतिहास साक्षी है कि अनेकों महाजनों ने क्षत्रियोचित शौर्य का प्रदर्शन किया है। जयपुर के हरसामल गुरसामल महाजन जो दिवान थे मांवडे मंडोली की लडाई में लड़कर मरे थे। जयपुर के ही दीवान दौलतराम हल्दिया ने तुंगा की लड़ाई में सेना का सफलतापूर्वक संचालन किया था। आगे चलकर वे कालख के किले के घेरे के समय मारे गये। इनसे पूर्व हरगोविन्द नाटाणी जयपुर के दीवान और सेनापति रहे। अनेक युद्धों में उन्होंने भाग लिया था। बीकानेर का अमरचन्द सुराणा प्रसिद्ध सेनापति था जिसने चूरू के किले पर कब्जा किया था। जोधपुर का इन्द्रमल सिघवी और भन्डारी खींवसी योग्य सेनानी थे। भरमल, भामाशाह, ताराचन्द बडे सेनाध्यक्ष थे। इसी तरह के अनेक उदाहरण हैं। तोलाराम ने आत्मबलिदान कर शौर्य की इस परम्परा को आगे बढ़ाया था।

श्री तोलारामजी गंगरार की झाड़ी (अजमेर से 50 मील) के नजदीक यात्रा के दौरान किसी धर्मशाला में उतरे हुए थे। उसी धर्मशाला में ठाकुर बहादुर सिंह जिसका पेशा डकेती था, अपने 10-15 आदमीयों के साथ रूकने के लिये आया व श्री तोलारामजी को राजपूती वेष व गंठे शरीर को देख राजपूत समझ कर गले मिल लिया। शाम को रसोई तैयार होने पर उसी ठाकुर ने तोलाराम जी को कहा कि "आओ रसोवडो तैयार है–ठाकरां जीमां" इस पर श्री तोलारामजी ने कहा कि आप ने मुझे ठाकरां कहा पर मैं तो बाणियों हूँ। इस पर ठाकुर खिन्न होकर बोला कि तुमने बाणियां होकर दिन में म्हारे गलबाई कैयां धाली। (गले कैसे मिले) सेठजी ने ठाकुर को कहा कि साहूकारी व राजपूती किसी के बाप की नहीं होती–जो लेन–देन का खरा वो साहूकार व माँ के दूध की आन रक्खे वो राजपूत। इस पर ठाकुर ने कहा कि कल सुबह इसका फैसला हो जाऐ। तोलाराम जी इस पर राजी हो गये।

इसके बाद रात में सेठजी से मिलने उनके मित्र ठाकुर डूँगजी जुहारजी आये। ठाकुर, डूँगजी जुहार जी को सेठजी के पास देख चकरा गया व डूँगजी से जाती दफा सारी बात बताई। डूँगजी ने सुनकर ठाकुर को कहा कि "तूं तो कोजो फंसगो"

डूँगजी जुहारजी सेठजी के पास वापिस गये व कहा कि सेठां आप उपर तो घात है, कहो तो म्हें रूक जावां। इस पर सेठजी ने कहा कि ये तो मां के दूध की आन की बात है, म्हे म्हारी सलटांगा–आप जाओ। ठाकुर सुबह निर्धारित स्थान पर अपने लसकर सहित पहुच गया जहाँ तोलारामजी पहले से मौजदू थे। तोलारामजी ने ठाकुर के साथ लसकर व बन्दूक देख कर कहा कि धर्म की लड़ाई लडोगे या पाप की। ठाकुर ने कहा कि धर्म की लडेगें व बन्दूकें बगेर पेड के नीचे रख कर एक नायक को बैठा दिया।

सेठ तोलारामजी ने कहा कि जिसने माँ का दूध पीया है वो आजावे। एक एक करके युद्ध होता रहा व ठाकुर के आदमी काम आते रहे। अन्त मे ठाकुर अकेला बचा व लडने आया। सेठजी ठाकुर पर हावी हो गये। दूर बेठे नायक ने ठाकुर की जान बचाने के लिये धोखे से गोली चलादी जो सेठजी के पांव मे लगी। ज्यूँ ही सेठजी झुके ठाकुर ने उनका सर कलम कर दिया। कटे सिर पर भी उन्होने गिरते गिरते ठाकुर का काम तमाम कर दिया। आज भी उनकी स्मृति में वहाँ बनाई गई छत्री, उनकी कीर्ति का बखान करती है।

श्री अर्जुनदासजी केड़िया रचित भारतीभूषण में उनके वीरत्व का निम्नलिखित रूप से स्मरण किया गया है:—

आछी बन आयी सो सराही सूरबीरन ने,
सूँती है सिरोही मर्द मूँछ हाथ धर के।
खैंचिके उठाई वग्ग वाही बीर खूब खग्ग,
कायर जो भागि गये छाँडि खेत डरिकै।।
कड़के कड़ाके सो तड़ाके होत तेगन के,
नन्द जुगलेश को खड्यों है खेत अड़िके,
तोलाराम वैश्य की वखानी असि रावराजा,
ले गयी विमान में बिठाई हूर वरिकै।।

जवानजी बंदीजन

* * * * * * *

सेठ बड़ा बाजोरिया गनेड़ी से सरनाम।
हैदराबाद निजाम में राख्यो निपट सुनाम।
ता कुल में तोला भयो बीर पुत्र खगधार
डाकू बहादुरसिंह से कीनो युद्ध ललकार।।
कटकटाय डाकू भिड़यों सेठ गही समसेर।
सन्मुख छाती आ जुड़े छन में लगी न देर।।

* * * * * * *

मरणो भलो विदेस को, जहाँ न अपनो कोय।
माटी खाय जिनावरा, महा महोत्सव होय।।



सेठ जुगलदास जी की पुण्य तिथि पर उनके स्मारक की पूजा

नवम् अध्याय

श्री वृन्दावनलालजी–षष्टम् पुत्र

श्री वृन्दावनलालजी अपने पिता की छठी संतान थे। इनका जन्म अनुमानतः संवत् 1820 में हुआ था। माता-पिता ने बड़े प्यार से इनका नाम वृन्दावन रखा था। आगे चलकर इन्होंने अपने धर्ममय जीवन और निष्कपट व्यवहार से, भगवान कृष्ण के साहचर्य और सानिध्य से पवित्र बनी नगरी के सात्विक गुणों से भरपूर अपनी जीवनचर्या से माता पिता की आशा को सार्थक सिद्ध किया।

श्री वृन्दावनलालजी के जीवन के क्रम को जोड़ने वाले तथ्य अधिक नहीं है। कुछ छिड़े–बिछड़े प्रसंग हैं जिनसे इनकी जीवनचर्या की जानकारी मिलती है । इनकी निरीहता और भोलेपन के कुछ किस्से लोगों की जानकारी में हैं। एक किस्सा यहाँ दिया जा रहा है। विवाह के कुछ समय बाद ये एक नाई के साथ ऊँट पर बैठकर गौना करने अपने ससुराल पहुँचे। ससुराल वालों ने यद्यपि गौने की रस्म अदा कर दी पर लड़की के छोटी होने के कारण उसे ससुराल भेजने से इन्कार कर दिया। उनका कहना था कि गौना तीन साल बाद होता है आप तो डेढ़ साल में ही चले आये।

श्री वृन्दावनलालजी इस पर नाई के कहने से अड़ गये और बोले कि या तो लड़की को साल डेढ़ साल बड़ी कर लो वर्ना में साल डेढ़ साल तक यहीं ससुराल में रूका रहूँगा। निदान बात मालूम होने पर घर से लोग आये और उन्हें समझा बुझाकर वापस ले गये। ऐसे थे श्री वृन्दावनलालजी जिनमें बालसुलभ भोलापन पर उसी तरह का बालसुलभ सारल्य और निष्कपटता थी।

बड़े होने पर अन्य भाइयों की तरह वे भी लक्ष्मणगढ़ जा बसे। श्री महानन्दरामजी उनसे बहुत स्नेह रखते थे। उन्होंने प्रारंभिक प्रशिक्षण के बाद श्री वृन्दावनलालजी को बम्बई भेज दिया जहाँ उन्होंने श्री तोलारामजी के साझे में व्यापार चालू कर एक गद्दी स्थापित कर दी। यहीं श्री वृन्दावनलालजी ने रूई और अफीम का व्यापार चालू कर दिया। इसी बीच वे बराबर हैदराबाद भी आते जाते रहे।

अन्य भाइयों की तरह लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये अखण्डजप उन्होंने भी शुरू कर दिया था। वे व्यापार व्यवसाय में अभी पूरी तरह संलग्न नहीं हो पाये थे कि अकस्मात् देव दुर्विपाक से उनका हैदराबाद में देहान्त हो गया। फतेहपुर की छत्री के शिलालेख में लिखा है कि इनकी मृत्यु आश्विन बदि 12 संवत् 1860 में हुई। मृत्यु के समय इनकी अवस्था प्रायः 40 वर्ष की रही होगी। इनके एक पुत्र श्रीलालजीमल हुये। इनका जन्म संभवतः वि. 1840 के आसपास हुआ था। पिता की मृत्यु के समय इन्होंने युवावस्था में प्रवेश कर लिया था।

श्री महानन्दरामजी ने लालजीमल को उनके पिता की जगह व्यापार में स्थापित कर दिया। वे अधिकतर हैदराबाद में रहते थे। बम्बई का व्यवसाय भी बराबर सम्हालते रहे। इस परिवार पर फिर दैव की प्रतिकूलता का प्रहार हुआ। सं. 1891 में जब वे प्रायः 51 वर्ष के थे इनका अचानक शरीर पात हो गया।[1]

श्री लालजीमलजी के बेटों के नाम श्री जुहारमल एवं श्री हीरालाल थे। अग्रवाल जाति के इतिहास के अनुसार सेठ हीरालालजी गनेड़ीवाला लगभग 75 वर्ष पूर्व 1918 वि. में व्यापार के लिये बम्बई आये। आपने यहाँ अफीम का व्यापार तथा सर डेविड सासून की दलाली का कार्य प्रारम्भ किया (पृ. 378) इनके बारे में अधिक विवरण आगे के अध्यायों में दिये जावेंगे।

श्री वृन्दावनलालजी जितने दिन जीये व्यापार व्यवसाय में अपने निष्कपट व्यवहार के लिये प्रसिद्ध रहे। हैदराबाद, बम्बई और फतेहपुर उनके जीवन के केन्द्रीय बिन्दु रहे। व्यापार के साथ साथ ईश–चिंतन और देवाराधन के प्रति उनकी अनुरक्ति बराबर अक्षुण्ण बनी रही। उनकी यह देव भक्ति घनीभूत रूप से उनके पुत्र, पौत्रों को भी विरासत में मिली।

---

1 वृन्दावनलालजी का बेटा लालजी मलजी को सरीर बरतो आस्योज सुदी 14 साल 1891 हैदराबाद में पहर रात गया बात करता करता।। शिलालेख छत्री फतेहपुर

दशम् अध्याय

श्री धनराजजी–सप्तम् पुत्र

श्री धनराजजी अपने पिताश्री की सातवीं संतान थे। गनेड़ीवाला परिवार में वे एक ऐसे ज्योतिर्पुंज थे जिनके यश की शुभ्र ज्योति से न केवल गनेड़ीवाला परिवार किन्तु समस्त अग्रवाल समाज आलोकित हो उठा। उन्होंने सर्व प्रथम हैदराबाद और वहाँ से अमरावती जाकर यशकीर्ति, पदाधिकार, अमित धन-संचयन के वे कीर्तिमान स्थापित किये जिनकी समकक्षता अब तक इस परिवार में कोई भी नहीं कर सका था। अतीव पारस्परिक विरोधी परिस्थितियों में विवेकपूर्ण संतुलन बनाये रखकर उन्होंने अपनी नीति, चातुरी और कार्यकुशलता का आल्हादकारी परिचय दिया था। इन्हीं सब कारणों से देश के इस सुदूर भाग में आज भी लोग उनका स्मरण करते हैं। उनकी कीर्ति कथा-एक स्पृहणीय कीर्तिकथा की अनवरत ध्वनि आज भी अमरावती के जनमानस में गूंज रही है।

सेठ जुगलदासजी गनेड़ीवाला के द्वितीय पुत्र महानन्दरामजी और उनकी सात पीढ़ियों का इतिहास एक विभिन्न रंग में चित्रित है। उधर हैदराबाद के एक सूबे बरार के अमरावती नगर की धनराज लेन एक रोमांचकारी आख्यान के पन्नों की तरह फैली है। अमरावती जाने पर इस बात का निश्चित प्रमाण मिल जाता है कि गनेड़ीवाला परिवार में कोई मूर्धन्य व्यक्ति हुआ तो वे सेठ जुगलदासजी के सप्तम पुत्र धनराजजी थे। इस बात में भी जरा भी संशय नहीं कि उनके इस असाधारण उन्नयन में बड़े भाई महानन्दरामजी का स्नेह सिंचित वरदान ही प्रमुख रहा। इस सहारे को अपनी निज की कार्यकुशलता और विवेक

से परिपुष्ट करते हुये वे नित नई ऊँचाइयों को छूते रहे।

श्री धनराजजी ही वे पहले व्यक्ति थे जो अमरावती में जाकर नगरसेठ बने और एक ऐसा सौभाग्य पाया जो अब तक इस परिवार में कोई भी नहीं पा सका था।

"भारतीय व्यापारियों का एक परिचय" नामक ग्रन्थ में मैसर्स धनराज पोकर मल का परिचय देते हुये कहा गया है "इस फर्म के मालिकों का आदि स्थान रामगढ़ है। आप लोग अग्रवाल समाज के गनेड़ीवाला सज्जन है। इस फर्म की स्थापना 150 वर्ष पूर्व सेठ धनराज गनेड़ीवाला ने की। यह गनेड़ीवाला परिवार रामगढ़ से निजाम हैदराबाद आया और वहाँ बस गया। इस परिवार ने वहाँ अच्छा प्रभाव स्थापित कर लिया और अपना सब कार्य मैसर्स महानन्दराम पूरणमल के नाम से करने लगा। इस फर्म के संचालकों ने राज काज सम्बन्धी ठेकों का काम प्रधान रूप से करना प्रारम्भ किया। इसी सम्बन्ध में सेठ धनराज जी बरार प्रांत का ठेका ले अमरावती आये और उपरोक्त नाम से अपनी फर्म यहाँ स्थापित कर काम करने लगे। आप बड़े प्रबन्धकुशल महानुभाव थे। आपका स्वर्गवास सन 1845 में हुआ"। [1]

श्री धनराजजी का जन्म सं. 1825 के आसपास हुआ था। सेठ जुगलदासजी के अन्य पुत्रों की भांति वे भी गनेड़ी छोड़ चुके थे और रामगढ़ जाकर बस गये थे। उस समय मालवा और मध्यप्रदेश तथा सुदूर दक्षिण के प्रदेश मरहठे तथा अंग्रेजों की पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विताजन्य अशान्ति का अनुभव कर रहे थे। यह वह समय था जब पिंडारियों की रक्त पिपासु जीभ अपना कराल–स्वरूप लिये लपलपा रही थी। उनके घोड़ों के टापों की ध्वनि से अनेक प्रदेश गूँजा करते थे। दक्षिण में अनेकों शक्तियाँ एक जानलेवा संघर्ष में फँसी हुई थी जिसका अंत होता नजर नहीं आ रहा था। इसी भयंकर समय में वे दक्षिण की ओर रवाना हुये। उस समय उन्होंने किशोरावस्था पार कर यौवन में पैर पूरी तरह नहीं रखा था।

उनके बड़े भाई महानन्दरामजी ने जिस मार्ग को वर्षों पूर्व प्रशस्त किया था उसी मार्ग पर दृढ़ चरणों से वे भी बढ़ चले और हैदराबाद पहुँच गये तथा बड़े भाई की देखरेख में व्यवसायिक कामों में संलग्न हो गये। प्रोफेसर एम.सी. भटट् श्रीमती के.एल. कालेज अमरावती में इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष हैं। उनका शोधपूर्ण ग्रन्थ "बरार अन्डर निजाम: दी एडमिनिस्ट्रेटिव सिस्टम आफ बरार अंडर दी आसफजाही डाइनेष्टी ओफ हैदराबाद" 1724-1853 ए. डी. में प्रकाशित हुआ है। इस शोधपूर्ण ग्रन्थ में जो सामग्री दी गयी है उससे श्री धनराजजी के जीवन पर विस्तृत प्रकाश पड़ता है।

---

1. भारतीय व्यापारियों का परिचय: श्री बाल चन्द मोदी पृ. 5

श्री धनराजजी के वृत्त को पूरी तरह समझने के लिये उस परिवेश का परिचय आवश्यक है जो उनका कार्य–क्षेत्र लम्बे समय तक रहा। बरार हैदराबाद राज्य के उत्तरी भाग को अपने में समाहित करता है। यह पाइन नदी की घाटी में बसा है जहाँ अतीव उपजाऊ रैगड़ नामक काली मिटटी है। इसके कारण बरार को "बरार सोन्माची कुरहाड़" कहते हैं क्योंकि रूई की खेती यहाँ बहुत होती है। इसी बरार प्रदेश में सेठ श्री धनराजजी एक ठेके का कार्य देखने आये थे।

बरार हैदराबाद स्टेट का ही एक भाग था। हैदराबाद का प्रथम शासक निजाम-उल-मुल्क आसफजाह था जिसने 1724 से 1748 ई. तक शासन किया। उस समय ठेके की प्रथा समस्त भारत में प्रचलन में थी। अनेक कार्य ठेके पर कराये जाते थे। यह ठेके का काम साखवाले लोगों को ही मिलता था। दूसरे नबाब नोसरजंग ने 1750 तक शासन किया। मुज्जफरजंग तीसरा और सलावतजंग (1752-62) चौथा निजाम बना।

यद्यपि बरार पर निजाम का शासन था पर मरहठे इस क्षेत्र से बराबर चौथ वसूल करते थे। छत्रपति शिवाजी ने सैनिक सेवाओं के बदले इस सूबे को परसोजी भौंसले को दिया था। ईस्ट इंडिया कंपनी भौंसले को राजा आफ बरार मान चुकी थी। भौंसले का अंत 1798 ई. में हुआ। इस पर बरार पर हैदराबाद का एकाधिकार मान लिया गया। लार्ड बलेजली ने बरार की रक्षा के लिये एलिचपुर में एक सब्सीडियरी फोर्स रख दी जिसका सारा खर्चा हैदराबाद से वसूल किया जाता था। इस प्रकार पूरा बरार का प्रदेश एक द्वैध शासन के नीचे पिस रहा था।

जब धनराजजी ठेके का काम लेकर अमरावती आये तो इस प्रदेश का माहोल राजनैतिक दुरभिसन्धियों से भरा हुआ था। एक ओर निजाम के हितों की रक्षा, अपने कार्य की देखभाल और दूसरी ओर अंग्रेजो के कुचक्र की गति की सम सामयिक पहचान रखने का कठिन दायित्व उन्हें निभाना पड़ रहा था। इस अग्नि परीक्षा में वे पूरी तरह सफल उतरे थे।

1803 के असाई के युद्ध में मरहठों की शक्ति पूरी तरह टूट चुकी थी। इसके पूर्व टीपू सुल्तान की शक्ति निःशेष हो चुकी थी। निजाम अंग्रेजों की सहायता के बल पर टिका हुआ था। यद्यपि बरार नाम मात्र के लिये निजाम का था पर अपरोक्ष रूप से शासनतंत्र पर अंग्रेज ही हावी थे। अंग्रेजों ने हैदराबाद से पहली सन्धि 1766 ई. में की थी। दूसरी सन्धि 1803 ई. में हुई।[2] इस संधि के अनुसार सबसीडियरी फौज का खर्च हैदराबाद उठाता था।

---

2 दी गोल्डेन बुक आफ इन्डिया—सर रोपर लेथलिग, 1893

उस समय बरार में सूबेदार रहता था। बहमनी राज्य के समय यह अधिकारी "तरफदार" कहलाता था। 1803 ई. में बरार का सूबेदार एक हिन्दू बना। पहले मुसलमान ही इस पद पर रहते आये थे। पहला हिन्दू सूबेदार श्री गंगानारायण था। दूसरा सूबेदार महीपतराम बना। 1808 से 1837 तक गोविन्दबख्श और राजा विशनचन्द हुये। इसने बरार की सूबेदारी का ठेका 52 लाख रूपये में लिया था। बरार के सूबेदार का यह पद एक ओर निजाम के कृपा कटाक्ष की आकांक्षा रखता था वहाँ दूसरी ओर अंग्रेजो की मेहरबानी का भी उतना ही आकांक्षी रहता था। इस प्रकार बरार के आन्तरिक प्रशासन में दो दो शक्तियों का दखल चल रहा था।

सन 1800 के आसपास वे अमरावती आये। इसी समय से सूबेदारी हिन्दुओं को मिलने लगी। हिन्दू व्यापारियों के लिये यह शुभ अवसर था। श्री धनराजजी कुशलता पूर्वक ठेके का कार्य संचालित करते हुये अमरावती के सबसे अधिक धनाढ्य व्यक्ति बन गये थे।[3] श्री महानंदरामजी निजाम के खजाने के पौद्दार पद पर आसीन थे। उच्च-अधिकारियों के वे विश्वासपात्र थे। वे रूई और गल्ले का ठेका बड़े स्तर पर ले रहे थे। उधर ठेके के काम को श्री धनराजजी अपनी कार्यकुशलता से अच्छा अंजाम दे रहे थे। बड़े-बड़े ठेकों के कारण श्री धनराजजी ने लाखों रूपयों की संपत्ति अमरावती में अर्जित कर ली।

अपनी संपत्ति, व्यवसाय और बड़ें अधिकारियों से सद्भाव के कारण नगर प्रशासन में भी वे दखल रखने लगे थे। व्यवसायियों को वे संरक्षण देकर बसाते थे और अपने पास से ऋृण देते थें। उनकी इस सहयोगी वृत्ति के कारण उजड़ी हुई अमरावती में अनेक व्यापारिक गद्दियाँ फिर खुल गयीं।

अमरावती में अम्बा माता का मन्दिर है। इसमें अम्बा, लक्ष्मीनारायण, नन्दी, महादेव, विष्णु आदि की मूर्तियाँ हैं। कहते हैं कि इसी मन्दिर से भगवान कृष्ण रूक्मिणी का हरण करके ले गये थे। यहाँ वह अपने भाई के साथ अम्बा माता का पूजन करने आयी थी। उसके साथ इस उत्सव में बहुत बड़ी संख्या में वे लोग आये थे जो बरहादी या बहरारी कहलाते थे। वे लोग यहीं बस गये। उनके नाम पर प्रदेश बरहार कहलाता था जो अंग्रेजी में बरार हो गया।

हैदराबाद का प्रशासन ई. 1799 से ही अंग्रेजी दबाब में आ गया था। अमरावती एक व्यपारिक मंडी इस समय तक बन चुकी थी। रूई और अनाज का यह एक बहुत बड़ा व्यापारिक केन्द्र था। बैंकिंग और आढ़त का काम भी बड़े स्तर पर यहाँ चालू था।

---

3 अमरावती डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पृ. 657

श्री धनराजजी लाखों का धन्धा करते थे। बैंकिंग और आढ़त का काम बड़े स्तर पर करते थे अतः वे स्वाभाविक रूप से बड़े अधिकारियों की कृपा के आकांक्षी रहते थे। ब्रिटिश रेजीडेन्ट से उनका संपर्क बना रहता था। उधर ब्रिटिश अधिकारी भी बड़े व्यापारियों से अच्छा तालमेल बनाये रखते थे।

श्री धनराजजी के सम्बन्ध में "मनुज" पत्रिका के श्री छत्रपति अग्रसेन जंयती विशेषांक 1981 में जो वृत्त दिया गया है उसे नीचे अविकल रूप से उद्धृत किया जा रहा है। "शहर के सबसे बड़े साहूकार और व्यापारी सेठ धनराज पोकरमल गनेड़ीवाल थे। इनके नाम से आज भी सक्करसाथ में धनराज लेन दो सौ वर्ष पुराना नाम आज भी प्रचलित है।

धनराज सेठ नगरसेठ कहलाते थे। नगर की धार्मिक, सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों का स्रोत उनका निवास स्थान रहता था। आज भी दान की शुरूआत उनके घर से होती है। अमरावती जिले के गजेटियर 1911 में लिखा है कि धनराज सेठ प्रथम पुरूष थे जो राजस्थान से यहाँ आये। धनराज सेठ अनाज के सबसे बड़े व्यापारी थे। अंग्रेज और निजाम की सेना का ठेका उन्ही को मिलता था। निजाम, इन्दौर, और अंग्रेजी शासकों के यहाँ धनराजजी का नाम सम्मान से लिया जाता था। ठगों के सम्बन्ध में एक पुस्तक डा. सासड़वड़कर ने लिखी है जिसमें धनराज सेठ का नाम कई स्थानों पर आता है। निजाम की जेल से कई लुटेरे धनराज सेठ की चिट्ठी के आधार पर छोड़ दिये जाते थे। यह एक प्रमाण है जिससे धनराज सेठ की प्रतिष्ठा प्रतीत होती है। धनराज सेठ ने निजाम को कई बार कर्ज दिया जिसका बाद में भुगतान नहीं हुआ। इसके बदले में बहनेरा परगना धनराज सेठ को जागीर के रूप में दिया गया। ईस्टइंडिया कंपनी के इतिहास में धनराज सेठ का नाम लिखा गया है। [4]

श्री धनराजी के जीवन का सबसे रोमांचकारी अध्याय तब शुरू होता है जब पिंडारी अमरावती पर हमला करते हैं। इस विवरण को भी प्रो. भट्ट के शब्दों में नीचे दिया जा रहा हैः–

"अमरावती शहर से सम्बन्धित ऐतिहासिक घटना सन् 1885 में हुई जब चीतू पिंडारी ने 5 हजार लुटेरे पिंडारियों के साथ अमरावती शहर पर हमला किया। मीरखान नामक एक प्रमुख सरदार दो सो साथीदारों के साथ सबसे पहले शहर में आया। निजाम सरकार के केवल 9 सिपाही थे जो नागपुरी गेट के समीप पुलिस चौकी पर थे। चीतू का आक्रमण परतवाड़ा पर था तब अमरावती को पूर्व–सूचना मिली थी। साहूकारों ने सोना, जवाहरात,

4अमरावती शहर को पिंडारियों से बचाने वाले नगर सेठः– धनराज पाकेरमल गनेड़ीवालाः– डा. एम सी भटट पृ. 3. 10

गठड़ी में बांधकर शहर से एक मील दूरी पर टेकड़ी में खोदकर रख दिया था। इसी कारण यह टेकड़ी माल टेकड़ी कहलाती है।

मीरखान शहर के प्रमुख चौक के समीप अपने घोड़े से उतरा। शहर के सभी घरों के दरवाजे बन्द थे। मीरखान से मिलने केवल एक मात्र साहूकार आया। उम्र से साधारण, शरीर से मोटा उस साहूकार का स्वरूप था। वे साहूकार नगरसेठ धनराज थे। धनराज सेठ ने मीर साहब के पैर पकड़े और प्रार्थना की "हम चाहे सो धन देने को तैयार हैं किन्तु शहर ना लूटा जावे।" मीरखान और धनराज सेठ की बाद में बातचीत हुई। कुछ सौदा तय हुआ।

दोपहर में चीतू अपने सरदारों के साथ उसी चौक पर आ खड़ा हुआ। वहाँ गलीचे बिछे हुये थे। आठ दस साहूकार थे। वे सब घुटने टेके बैठे थे। बाद में धनराज सेठ चीतू को समीप अपनी कोठी पर लेगये जहाँ गलीचे गदी पहले से ही बिछी हुई थी। बड़े–बड़े परातों में मेवा मिठाई भरी थी। चीतू के सैनिक इतवारा बाजार के समीप पड़ाव डाले थे। उनके भोजन की व्यवस्था तैयार थी।

धनराज और चीतू के बीच समझौता हुआ। चीतू को एक लाख रूपये, 15 हजार के जेवर, मखमल रेंशम के कपड़े, हर दफादार को 10 हजार, ऐसे तीस दफादार थे। हर पिंडारी को पचास रूपया, ऐसे पांच हजार पिंडारी थे। इस प्रकार 5 लाख रूपया देना तय रहा। चीतू यह स्वीकार करने पर राजी हुआ। तीन घंटे का समय दिया गया और इतने कम समय में धनराज सेठ ने नगर के साहूकारों से 5 लाख रूपया इकट्ठा किया। चीतू प्रसन्न हुआ। धन का बंटवारा हुआ। रात भर पिडारियों ने चैन किया और सुबह होने से पहिले कांरजा की ओर प्रस्थान किया। दूसरे दिन चीतू ने कारंजा गांव लूटा।

यदि धनराज सेठ ने बुद्धिमानी न की होती और समझ-बूझ कर काम न लिया होता तो यह शहर उस दिन बुरी तरह लुट गया होता और कई माता और बहिनों की इज्जत लूटी गयी होती। इस महान विनाश से शहर को बचाने का श्रेय केवल धनराज सेठ को है। अमरावती शहर से धनराजजी का नाम अमिट जुड़ा हुआ है। [5]

इस लूट के बाद परकोटे के निर्माण की बात गंभीरता से सोची गयी। इस परकोटे का आधा खर्च नगर के व्यापारियों ने दिया। इसके संग्रह का काम श्री धनराजजी ने किया। इसके निर्माण में 40 लाख रूपये लगे। परकोटा सन् 1821 में बनकर तैयार हुआ था। डा. भटट के अनुसार श्रेय निजाम को गया पर परकोटे के वास्तविक कल्पक और एंजिनियर श्री धनराज सेठ थे।

---

5 डा. भटट का लेख पृष्ठ 8 और 8 ब ।

इस परकोटे के निर्माण का काम 1804 ई. में शुरू हुआ था जो आगे चलकर 17 वर्षों में पूर्ण हुआ। इस पर 40 लाख रूपये लगे। परकोटे की दीवार 36 किलोमीटर की परिधि में थी और इसकी ऊँचाई 6 से 8 मीटर तक की थी। आज यह जगह-जगह से फूट गयी है। इस परकोटे में 5 बड़े दरवाजे बनाये गये थे जिनके नाम अम्वत, मुसारी, नागपुर, कोहलापुर और महाजनविस थे।[6] इस दीवार के अन्दर के भाग में मौहल्लें हैं जिनमें धनराज लेन आदि है।

'अमरावती शहराचा इतिहास' में श्री कारंजकर ने पिंडारियों के आक्रमण और नगरसेठ द्वारा नगर की रक्षा का वृत्त देने के बाद लिखा है "हा सावकारांचा पुठारी कोण असावा?" वे स्वयं ही उत्तर देते हैं" काहीचे मते हा पुठारी महणजै तत्कालीन नगरसेठ व सावकार सेठ धनराज पोखरमल होत अर्थात् हे केवल अनुमान आ है।"

सन् 1805 की 13 नवम्बर को यह पिंडारियों का दल अमरावती को लूटने आया था। इस कहानी को विस्तार से कर्नल फिलिप मीडोज टेलर ने अपने ग्रंथ में लिखा है।[7] इसमें अमीरअली नामक एक ठग द्वारा सुनायी गयी बात लिपिबद्ध की गयी है। ग्रंथ का 33 वां अध्याय अमरावती से संबंधित है।

अमीर अली के वर्णन के कुछ अंश दिलचस्प होने के साथ–साथ नगरसेठ श्री धनराज के कृतित्व पर अच्छा प्रकाश डालते हैं। इस ठग के कथन के कुछ अंश नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं।

"आखिर दशहरे का त्यौहार आया। इसे खूब धूमधाम के साथ हम लोगो ने मनाया। जितने भी दुस्साहसिक कृत्यों के प्रदर्शन हुये उनकों एक, बड़े मैदान में इस तरह करवाया गया ताकि 500 से ऊपर लोग उसकों घेरा बांधकर देख सके। एकत्र हुये साथीदारों की गिनती की गयी और खबर दी गयी कि 5000 बढ़िया चुनिंदे घुडसवार यहाँ मौजूद हैं और इस गिनती के अतिरिक्त जो लोग इन घुडसवारों के साथ आये हुये हैं उनकी संख्या मिलाकर और जो इनके अलावा दूसरी तरह के वाहनों में सवार हैं उन सब की गिनती मिलाकर 8000 तो हो ही जावेगी। ये सभी मरदाने बहादुर लोग थे और सरदार के हुक्म की तामील करनें को कटिबद्ध थे। उसके आदेश से वे उन मुल्कों में युद्ध और सर्वनाश बरपा कर देना चाहते थे जोकि उनकी आँखों के आगे बसे हुये थे।

यह तय हुआ कि मार्च किया जावे। नर्मदा को पार करते ही सब लोग दो भागों में बँट जावे। दक्षिण में कृष्णानदी तक घुसते चले जायें और अगर सुभीता दीखे तो और

6 अमरावती डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, 1968 पृ. 654, 655

7 कनफेशन्स आफ ए ठग –कर्नल फिलिप मीडोज टेलर, 1839

दक्षिण में प्रवेश करते जावें लेकिन कहीं भी फिरंगियो की नियमित सेना के साथ मुठभेड़ का मौका न आने दे। हमें यह सूचना मिल चुकी थी कि फिरंगियों की नियमित सेना इस समय निष्क्रिय है लेकिन हम जानते थे कि जब भी वे चाहेगें तुरत फुरत उसे वे हमारे पीछे भेजने में देरी नहीं करेंगें।

शाम के समय हम अमरावती पहुँचे। जो थोड़े से सिपाही नगर की रक्षा को तैनात थे वे हमारी खबर सुनकर भाग खड़े हुये। मैंने अपना रास्ता मुख्य बाजार में पहुँचने के लिये पकड़ा। मैं चौक के बीच में अपने घोड़े को लेकर पहुँच गया। वहाँ पर एक गलीचा बिछा हुआ था और वहाँ के खास साहूकार हमारा स्वागत करने को तैयार थे। वे एंक लाख रूपये देने को तैयार थे।

इतने में चीतू अपने खूँखार साथियों के साथ आ पहुँचा। स्थूलकाय सेठ ने चीतू की लगाम से अपने माथे का स्पर्श किया और वह नीचे उतरे, इसका आग्रह किया। स्थूलकाय सेठ उसे अपने घर में ले गया। वहाँ मसन्ढ लगाये हुये थे तब साहूकारों ने मीरअली से चुपके से कहा कि वह चीतूसे कहे कि सबकी नजरें कबूल करें।

खुदा बन्द, आपके नाम का आंतक चारों तरफ फैल चुका है। ये सब लोग अपनी अपनी नजरें आपके कदमों में रखना चाहते हैं पर इनके पास जुबां नहीं कि किस तरह उसका इजहार करें। चीतू ने जोरों से चिल्ला कर कहा कि हमें कबूल है। तब 15 थाल लाये गये। बेशकीमती रेशमी रूमाल से वे ढ़के हुये थे। एक एक कर सबके कपड़े हटाये गये तो एक नजारा पैदा हो गया। काजू, पिश्ता, खजूर, मिठाई, मिश्री, मलमल, छींट, कीमती साफे, बनारसी दुपट्टे। चीतू यह सब देख कर खुशी से भर गया। मैंने मुख्य साहूकार से कहा कि शाल और अशर्फियाँ कहाँ हैं। मरदानगी दिखावो और शाल चीतू के कन्धों पर चढ़ा दो। तब साहूकार ने अपने सेवक से शाल लिये, उन पर 5 अशर्फी रखी और चीतू के कदमों के पास जाकर तीन बार झुककर उसने वे स्वर्ण मुद्रायें नजर की और शाल खोलकर चीतू के चारों तरफ लपेट दिया। वे शाल देखने में बहुत खूब सूरत थे"।

चीतू ने साहूकारों को कहाकि हम यहाँ रूपये लेने आये हैं। चीतू को फारसी में तैयार की हुई एक सूची दिखायी गयी। इसके अनुसार 50 हजार नकद रूपये चीतू के निमित, मणियाँ, सोना और चांदी अलग से मूल्य 15 हजार रूपये, 10 हजार रूपयों के शाल और बनारसी दुपट्टे भी थे। हरेक दल के सरदार को 10 हजार रूपये। ये तीन थे। 5-5 हजार के हीरे जवाहरात और 5-5 हजार की अन्य बस्तुयें इन्हें दी गयी। इसके बाद दफेदार के लिये एक एक हजार ये दफादार 30 थे। चीतू के सेवकों को 50-50 रूपये। सारा जोड़ लगाने पर तीन लाख 85 हजार रूपये हुये। चीतू ने घोड़ों की घिसी नालों के लिये 15 हजार और जुड़वाये। साहूकारों की तरफ से चीतू व मीर अली को भोज दिया गया।

प्रातःकाल सबने नाश्ता किया और घोड़ो पर सवार होकर आगे बढ़ गये। जाने के पहले चीतू ने अमरावती को फिर कभी नहीं लूटने का वचन दिया जिसे उसने अपने जीवन में निभाया।

इस प्रकार सेठ धनराज की सूझ–बूझ और कुशलता के कारण सिर पर मँडराती विपत्ति टल गयी। नगर के लोगों ने एक चैन की साँस ली। अगर उन्होंनें अपने विवेक से चीतू को भेंट में धन देने का निर्णय नहीं दिया होता तो सारा नगर बरबाद हो जाता, हजारों बहू बेटियों की इज्जत लुट जाती, हजारों माताओं की गोद खाली हो जाती। भगवान की कृपा का और नगर सेठ की चतुरता का ही यह फल था कि यह दुर्दान्त विपत्ति टल गयी।

आगे चलकर जब महांनदरामजी का देहान्त हो गया तो उनके पुत्र श्रीपूरणमल ने अपने पितृव्य के प्रति वहीं स्नेहपूर्ण भाव बनाये रखा जो महानन्दरामजी रखते थे। अपने जीवन काल में महानन्दरामजी का एक ही स्वप्न पूरा नहीं हुआ था और वह था अपने पुत्र को बरार की सूबेंदारी दिलाने का। यह स्वप्न सन् 1837 में पूरा हुआ। इस कार्य में सेठ धनराजजी ने आवश्यक सहायता की थी क्योंकि उनका अपना हित भी इससे जुड़ा था। बरार की यह सूबेदारी ठेके पर ली गयी थी। बरार की सूबेदारी का पद ग्रहण करना एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी को निभाना था। ब्रिटिश रेजिडेन्ट और निजाम के हितों के संरक्षण में सन्तुलन बनाये रख सकने में जो व्यक्ति समर्थ होता वही इस पद पर टिक सकता था। यह अग्नि से भरे पथ पर नंगेपांव चलने जैसा कठिन काम था।

श्री धनराजजी को अपने कर्मण्य जीवन में अनेकों बार खतरों का सामना करना पड़ा पर ईश कृपा से ये सुरक्षित रहे। सन् 1845 में दुर्भिक्ष-अकाल पड़ा तो सारे बरार प्रान्त में अन्न की कमी हो गयी। लोग भूखों मरने लगे। सेठ धनराज की हवेली में लोगों की भीड़ एकत्रित हो गयी। इसी समय एक प्रक्षुब्ध नागरिक ने आवेश में आकर धनराज सेठ की गोली मारकर हत्या कर दी। अनेक लोगों ने सन् 1845 के हिन्दु मुस्लिम दंगों में सेठ धनराजजी के मारे जाने की बात कही है। मृत्यु के समय वे प्रायः 77 वर्ष के थे। उनकी मृत्यु अमरावती में आश्विन सुदि 5 साल 1902 में हुइ थी। [8]

श्री धनराज जी के एक पुत्र पोकरमल थे जिन्होंने पिता की मृत्यु के बाद बड़ी योग्यता से इस कारोबार को सम्हाला।

इस प्रकार लम्बे समय तक कर्मण्यता की साकार मूर्ति बने जीवन का अंत हो गया। अपने सात दशकों के जीवनकाल में उन्होंने वे उपलब्धियाँ प्राप्त की जिनकी प्राप्ति किसी

---

८. फतेहपुर की छत्री का शिलालेख–

को भी गौरवान्वित कर सकती थी। सुदूर देश में एक संकटपूर्ण घड़ी में उन्होंने प्रवेश किया था और उन स्थितियों का सामना किया था जो दुर्बल तत्वों से बने हुये किसी भी व्यक्ति को विचलित कर सकती थी। अनेक साधनों से अनेकों अवसर पर उन्होंने अर्थ संचयन किया पर जब त्यागने का अवसर आया तो निर्मम भाव से त्याग दिया यद्यपि इस त्याग में स्वेच्छा कम थी और परवशता अधिक। लोक कल्याण का पुनीत उद्देश्य प्रमुख रूप से इस त्याग को अनुप्रेरित कर रहा था। संग्रह और त्याग की परिस्थितियों को उन्होंने ठीक तरह से जाना था। "जीवन मरण भल भूपतिजाना"।

एकादश अध्याय

श्री मोहनरामजी–अष्टम् पुत्र

श्री मोहनरामजी अपने पिता की आठवीं और अंतिम संतान थे। इनका जन्म संभवतः 1830 वि. के आसपास हुआ था। इस समय तक सारा परिवार सम्मिलित रूप से गनेड़ी में रह रहा था। आगे चलकर पिताश्री की मृत्यु के बाद श्री महानन्दरामजी वाणिज्य व्यवसाय के लिये हैदराबाद चले गये। वहाँ उन्होंने विविध कार्यों पर अपने भाइयों को स्थापित कर दिया था। धनराजजी भी पहले उन्हीं के पास हैदराबाद गये और फिर वहाँ से बरार के अमरावती नगर में बस गये। महानन्दजी का परिवार लक्ष्मणगढ़ में रह रहा था। लक्ष्मणगढ़ बसने के कुछ वर्षों बाद वे वहाँ पर रावराजा लक्ष्मण सिंहजी के आग्रह पर बसे थे।

जीवन के प्रारम्भिक दिनों में गनेड़ी से उठकर श्री मोहनरामजी संभवतः फतेहपुर में बस गये थे। इसी समय मरहठों को अजमेर से निकाल कर सर्वथा बरबाद हुये अजमेर को अंग्रेज शासक नये सिरे से आबाद करने की पुरजोर कोशिश कर रहे थे। अंग्रेजी सत्ता के साग्रह निमंत्रण पर मोहनरामजी और शालिगरामजी अजमेर में जाकर बस गये थे। शालिगरामजी के होनहार पुत्र श्री रघुनाथदासजी अजमेर में सुव्यवस्थित हो चुके थे। इस समय तक हैदराबाद के श्री हरनन्दराम की गद्दी अजमेर में स्थापित हो चुकी थी। इसी गद्दी के सम्यक् संचालन का भार भी मोहनरामजी और श्री रघुनाथदासजी को दिया गया था।

आगे चलकर श्री रघुनाथदासजी को अजमेर में ब्रिटिश रेजिडेन्सी का सम्मानजनक पद

मिला। अंग्रेज हाकिमों ने सेठ मोहनरामजी को नगर को पुनः बसाने और दूसरे महाजनों को लाने का गुरूतर भार दिया। इसी समय के एक पत्र से ज्ञात होता है कि उन्होंने अपनी दूकान नये दरवाजे के पास स्थापित कर ली थी। इसका उल्लेख पहले किया जा चुका है।

श्रीमोहनरामजी ने अपने प्रभाव का उपयोग करके अनेकों अग्रवाल, माहेश्वरी और ओसवाल सेठों को बसाकर उजड़े अजमेंर को फिर से हराभरा बनाने का यत्न किया। वे जल्दी ही नगर सेठ बन गये। अजमेर के इन व्यापारिक संस्थानों में महानन्दरामजी के पुत्रों, शालिगरामजी के पुत्र श्री रघुनाथ दास और श्री मोहनरामजी का सीर था। सन् 1828 में इस संपत्ति का विभाजन हुआ।

गनेड़ीवाला संग्रह में श्री मोहनरामजी से सम्बन्धित अनेको पत्र हैं। एक पत्र से ज्ञात होता है कि शहर में नये दरवाजे के पास दूकान तिजारत जारी करने के लिये उन्होंने जमीन खरीदी थी। अंग्रेजी हुक्कामों ने इसकी स्वीकृति 12 जुलाई सन् 1819 में दे दी थी। एक तीन वर्षों बाद के खरीते से ज्ञात होता है कि नये दरवाजे के पास सेठ मोहनरामजी ने 1796 गज 4 गिरह जमीन मकानात व नोहरे के लिये ली थी।[1]

एक दूसरे पत्र में कहा गया है कि आपके इस प्रकार मकान बनाने से अन्य व्यापारियों को भी बसने की प्रेरणा मिलेगी।

उस समय नये बसने वाले शहरों में बाग एक अपरिहार्य बात बन गये थे। मुगलों के काल से ही बागों का महत्त्व शुरू हो गया था। मुगल कला प्रेमी थे। प्राकृतिक सुषमा उनकी जानी पहिचानी थी। गुलाब अनका प्रिय पुष्प था जिसको उन्होंने मान सम्मान दिया। इसी समय से गुलाब उर्दू साहित्य पर हावी हो गया। मुगलिया दरबारों से चलकर यह गुलाब प्रेम राजा महाराजा के दरबारों पर हावी हुआ। कमल के प्रति पायां जाने वाला पारम्परिक प्रेम अब विलुप्त हो गया। हिन्दी का महाकवि बिहारी गुलाब के सौन्दर्य के जितने गीत गाता है उनके शतांश में भी कमल को याद नहीं करता।

मुगल संपर्क के कारण बाग लगाने की यह परम्परा राजा महाराजाओं में भी तीव्रगति से चल पड़ी। जयपुर को जब सवाई जयसिंह ने 1732 ई. में बसाया तो अनेकों ठाकुरों को तथा महाजनों को लाकर बसाया गया। उन्हें "हाउस" बनाने की जमीन दी पर शर्त यह थी कि वे अतिरिक्त रूप से दी जा रही जमीन में बाग अवश्य लगावेंगे। इनके अलावा राजघराने की रानियाँ, महारानियों ने भी अपने नाम से बाग लगाये। रूपा और चँदू बडारण के बाग आज भी जयपुर में प्रसिद्ध हैं।

---

1 यह खरीता 13 दिसम्बर 1822 का है। इसमें इतमीनान खातिर से मकानात की तामीर करने को कहा गया है।

अंग्रेजों का बागों के प्रति अपना प्रेम था। यह प्रेम वे अपने देश से लाये थे। अजमेर उजड़कर फिर बस रहा था अतः बाग लगाने की बात उभर कर उनके सामने थी। एक खरीते से हमें ज्ञात होता है कि दूकान, हवेली नोहरा बनाकर सेठ मोहनरामजी ने 15 बीघा 17 बिस्वा जमीन बाग लगाने को खरीदी और एक सुन्दर उद्यान की सृष्टि की।[2]

श्री मोहनरामजी के साथ श्री पूरणमलजी के छोटे भाई श्री रामजीदास भी कार्यरत थे। यह संपत्ति फलस्वरूप श्री मोहनरामजी एवं श्री रामजीदास के साझे में थी।

संग्रह में ऐसे अनेक पत्र हैं जिनसे ज्ञात होता है कि सेठ मोहनरामजी व्यापार के सिलसिले में या अपने सम्बन्धियों से मिलने अथवा तीर्थयात्रा पर समय समय पर जाया करते थे। जिस समय ये यात्रा करते थे, शाही ठाठ से चलते थे। इनके साथ अनेक हाथी, सैकड़ों घोड़े और 250 तक हथियार बन्द सिपाही चला करते थे। उस समय या बाद में किसी और महाजन व्यवसायी के साथ इतना लवाजमा चला करता हो यह बात ज्ञात नहीं है।

सरडेविड को लिखे गये किसी अंग्रेज सुपरिटेन्डैन्ट के एक पत्र से ज्ञात होता है कि मोहनराम जी 10 मई 1822 को अजमेर से उज्जैन के लिये रवाना हुये थे जहाँ उनका भाई उनसे मिलने हैदराबाद से आ रहा था। यह भाई और कोई नहीं संभवत सेठ श्री महानन्दरामजी थे।

श्री मोहनरामजी की स्मृद्धि की बात से जयपुर राज घराना भी अच्छी प्रकार परिचित था। यह बात एक पत्र से ज्ञात होती है जो श्रीमोहनरामजी को जयपुर के तत्कालीन दीवान रावल बेरीसाल ने लिखा है। पत्र में कहा गया है कि रायदातारामजी से आपके समाचार ज्ञात हुये। आप बेलाडर को पूछकर यहाँ आवें। आपसे सवाई जयपुर तथा छावणी के विषय में बातचीत करनी है। यह पत्र आषाढ़ बदि 9,1896 का है।

सन् 1828 के दिसम्बर माह में श्री मोहनरामजी पुनः यात्रा पर निकलते हैं उनके साथ 4 जनानी सवारियाँ, 20 घुड़सवार, 20 घोड़ों के सईस, एक हाथी, 25 बोझा ढोने वाले टट्टू, 10 ऊँट, 2 बैलगाडियाँ और 50 हथियार बन्द जवान चल रहे थे। भाई व रिश्तेदारों की संख्या 200 थी। इस प्रकार सब मिलाकर 400 व्यक्तियों का यह यात्री दल था। यह दल अजमेर से हैदराबाद जा रहा था।

एक दूसरे पत्र से उनके अजमेर से लक्ष्मणगढ़ होते हुये रतनगढ़ जाने की बात ज्ञात होती है। संभवतः यह यात्रा अपने भाई बन्धुओं से मिलने के लिये की गयी होगी। यह

2 यह खरीता 11 मार्च 1825 का है।

यात्रा चैत वदि 6, 1885 को संपन्न हुई थी। संवत् 1888 के ज्येष्ठ मास में 20 ऊँटों, 25 घोड़ों और 100 हथियार बन्द आदमियों के साथ उन्होंने कोटा से हैदराबाद की यात्रा की थी। सेठ मोहनरामजी की एक यात्रा इन्दौर से अजमेर को थी। इसमे सबसे अधिक लवाजमा था। हाथी 2 घोड़े 65 म्याने 2 ऊँट 15 गाड़ी 2 और आदमी 250 साथ थे। ये आदमी रक्षक लोग थे। [3]

यहा एक घटना का उल्लेख किया जाना आवश्यक है जिससे इनके प्रभाव की बात ज्ञात होती है। यह पत्र रायदाताराम ने खेतड़ी के राजा अभय सिंह को लिखा है। पत्र मे कहा गया है कि सलहदीवाले सेठ मोहनरामजी के 2 ऊँट उठा ले गये जिसपर रावल साहिब (दीवानजयपुर) ने आपकों लिखकर भेजा। आपने हलकारा खेतड़ी भेजा जिसने इन दोनों ऊँटों को खेतड़ी में देख लिया। आपने कहा था कि मैं जाकर भिजवा दूँगा पर अभी तक नहीं भिजवाये। अब साहब बहादुर एजेन्ट जैपुर ने बहुत ताकीद की है सो आप इन ऊँटों को शीघ्र भिजवा दें या फिर कीमत के पैसे दें। राज की शोभा अंग्रेजी सरकार में पहले से ही चली आती है। यह पत्र माह सुदि 10 संवत् 1877 का है।

श्री मोहनरामजी अक्सर कोटा मार्ग से हैदराबाद जाते रहते थे। जिस क्षेत्र से गुजरते थे वहाँ के शासक अपने चौकी पर स्थित हुक्कामों को उनको सकुशल गुजर जाने की हिदायत भेजते थे। यह श्री मोहनराम के प्रभाव और मान का सूचक है। एक पत्र में लिखा है मुसम्मा मोहनराम सेठ मुकाम कोटा से तरफ हैदराबाद की में आदमी व सामान तफसीलवार के जावे है सो कोई रास्ते में इनसे गैरवाजिव मुजाहमत न होके अपनी हद से सलामत पार कर देना, ताकीद जानोगे मिती जेष्ट बदी 8 सं. 1888। [4]

श्री मोहनरामजी की अच्छी प्रतिष्ठा व्यापारिक समाज में स्थापित हो चुकी थी। उन्हें जगह–जगह से व्यापार शुरू करने के निमंत्रण आते रहते थे। इनमें ठाकुर हमीरसिंह के कई पत्र हैं जिनमें भदेसर में दूकान करने का आग्रह किया गया है।

श्री मोहनरामजी की मृत्यु संभवतः 1837 के आसपास 64 वर्ष की अवस्था में अजमेर में हुई। मृत्यु के पूर्व सन् 1829 में सीर की संपत्ति का श्री महानन्दराम गिरधारी लाल, श्री मोहनराम गणेशदास और श्री मोहनराम रामजीदास में बंटवारा हो चुका था। श्री मोहनरामजी का कार्य उनके पुत्र श्री गणेशदास ने बड़ी कुशलता से संभाला।

इनकी धर्म पत्नी का नाम सुक्खी था। यह अपने पति के साथ सन् 1817 में गंगास्नान को हरिद्वार गयी थी। बाद में 1839 में बद्रीनारायण की यात्रा पर गयी। उस समय उनकी

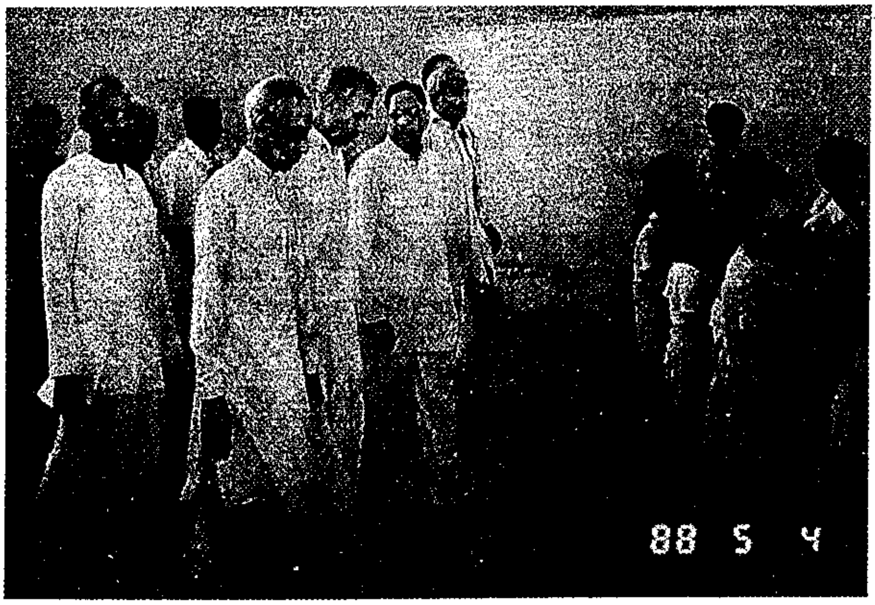
3 यह खरीता 24 फरवरी 1829 का है।

4 पत्र उर्दू में है। इस यात्रा में गाड़ी 1 ऊँट 20 घोड़ा 25 हथियार बन्द लोग 60 आदमी बिना हथियार 40 गये हैं।

अवस्था प्राय 60-61 की थी।

इनके दो पुत्र थे। बड़े श्री गनेशदास और छोटे श्री शिवबक्स। अब तक परिवार अजमेर में ही बसा हुआ था। अच्छी संपति इस परिवार ने अर्जित कर ली थी। संग्रह के एक पत्र से ज्ञात होता है कि सीकर के तत्कालीन रावराजा श्री रामप्रतापसिंह ने इन दोनो भइयों को लक्ष्मणगढ़ कसबे में बसने का निमंत्रण दिया था। इसके बाद संभवतः वे लक्ष्मणगढ़ में बस गये थे। अजमेर का व्यापार तो चालू था ही। यह पत्र महत्त्वपूर्ण है इसमें लिखा है।

शाह गणेशदास शोबक्स जोग लिखायतम् महाराव राजाजी श्री रामप्रताप सिंहजी केन जय रघुनाथ जी की बंचजे। अपरंच थानै अजमेर सू लक्ष्मणगढ़ बस्वा वास्ते ले चाल्या सो थे खुशी से चालों, थांके कोई भांत को, कै रीत को तकरार करीबा पावे नहीं थांका मुलाहिजा में के तरह की हरकत आवे नहीं, आपको काम काज कोई थांको होसी जो तसल्लीराख करादेवा में आसी थे खातरी जमा से बसो। बिणज व्यापार करो उगाही पताई थांकी छै सो सलटा देबा में आसी। मिति मंगसर बदी तेरस सम्वत् 1899।







गनेड़ी में वार्षिक उत्सव पर रथ यात्रा एवम् नगर परिक्रमा

द्वितीय–खण्ड

संवत् 1838 से 1980

यह कहानी लक्ष्मी के उन विरूद्‌वान पुत्रों की है जो प्रायः एक शती से अधिक समय तक अनेकों राजघरानों की अर्थव्यवस्था के मूलाधार बने रहे। राजनैतिक वर्चस्व, सामाजिक प्रतिष्ठा और जन साधारण का अतुलित प्रेम इन्होंने प्राप्त किया तथा राजकीय सम्मान के पात्र बने। विदेशी शक्ति के शासन काल में भी इनका वर्चस्व पूर्ववत् बना रहा। मान सम्मान और उपाधियाँ इनके कृतित्व की साक्षिणी बनीं। अनेकों नगरों को इन्होंने समृद्धियुक्त बनाया। सत्ता के पलटाव के साथ होने वाले युग परिवर्तन को इन्होंने निर्निमेष दृष्टि से देखा और नये युग के प्रकाश में अपने आपको प्रदीप्त कर देश के विभिन्न भागों में जा बसे जहाँ इनकी कर्मण्यता अब भी मुखर है।

द्वादश अध्याय

श्री नूँदरामजी की संतति–वल्लरी

श्री नूँदरामजी अजमेर में रहकर अफीम, रूई और गल्ले का थोक व्यापार किया करते थे। इस स्थान में वे निरन्तर सन् 1781 (1838) वि. तक रहे। इसके पश्चात् उन्होंने फतेहपुर को अपना स्थायी निवास बना लिया था। उनके फतेहपुर से अपने छोटे भाई श्री हरिकृष्णजी के साथ हरिद्वार आने का उल्लेख पंड़ों की बही में प्राप्त होता है। श्री नूँदरामजी 70-75 की आयु में सन् 1810 (वि. 1867) में दिवंगत हुये। उनकी धर्मपत्नी गुमानी बाई का परलोकवास सन् 1833 (वि. 1890) में हुआ।

श्री नूँदरामजी के दो पुत्र हुये। बड़े पुत्र श्री सनेहीराम और छोटे श्री राधाकृष्ण थे। बड़े पुत्र श्रीसनेहीराम का जन्म सन् 1762 (वि. 1819) में तथा छोटे पुत्र का जन्म 2 वर्ष बाद हुआ। अपने पिता के जीवन काल में ही श्री सनेहीराम एवं श्रीराधाकिशन ने अपने पैतृक व्यवसाय को योग्यता पूर्वक संभाल लिया था। इन्हीं सुयोग्य पुत्रों के हाथ में व्यापार का काम सौंपकर श्री नूँदरामजी संतुष्ट हो गये थे। फतेहपुर के तत्कालीन धनियों में इनकी गिनती प्रथम श्रेणी में की जाती थी।

श्री सनेहीरामजी इस कुल में अतीव तेजस्वी पुरूष थे। वाणिज्य, व्यापार में कुशलता के साथ–साथ वे बड़े रोबदाब वाले व्यक्ति थे जिनके प्रभाव की बात सीकर के राव राजा लक्ष्मणसिंहजी तक पहुँची। इस समय तक श्री सनेहीरामजी अपने छोटे भाई के साथ प्रायः अधिकांश समय अजमेर में ही रहते थे और वहीं आबाद थे। गनेड़ीवाला संग्रह में सीकर के तत्कालीन रावराजा श्रीलक्ष्मणसिंहजी के अनेकों पत्र श्री सनेहीरामजी के नाम

लिखे हुये हैं जिनसे इनके प्रभाव और धनाढ्यता की बात अच्छी तरह ज्ञात होती है।

रावराजाजी ने सेठ सनेहीरामजी को फतेहपुर में बसने का आग्रह किया और जब इसमें ढील होते हुये देखी तो उन्होंने जयपुर के तत्कालीन दीवान रावल बैरीसाल को भी निवेदन किया कि वे श्री सनेहीराम से फतेहपुर बसने का आग्रह करें। इस पर रावल साहिब ने एक पत्र स्वयं सेठजी को लिखा।[1] इसमें उनसे अनुरोध किया गया कि आप रावराजाजी के लिखे अनुसार फतेहपुर जाकर व्यापार, दुकान, कोठी करिये। आपको किसी तरह की दिक्कत नहीं होगी। राज की तरफ से आपको किसी तरह की तकलीफ नहीं होगी।

इस पत्र की प्राप्ति पर पूर्णरूप से आश्वस्त होकर श्री सनेहीरामजी ने फतहेपुर में अपना व्यापार एवं कारोबार शुरू कर दिया। आगे चलकर उन्होंने बाजार में सात दुकानों की जगह खरीदी, दुकानें बनवायीं और अपने व्यापर को बढ़ाया।[2] इसी समय के आस-पास उन्होंने फतेहपुर में सरदारपुरे की जमीन अपनी हवेली बनाने के लिये खरीदी । इसके मोहराने के 101 रूपये लगे शेष छूट दी गयी । यह बात संवत् 1880 की है।

रावराजाजी के अनुरोध पर फतेहपुर में व्यापार जब उन्होंने शुरू कर दिया तो राज से उनका निरन्तर संपर्क रहता गया। सीकर राज के आर्थिक कार्य उनके सहयोग और सहायता से सम्पन्न होने लगे। संग्रहालय के पत्रों से विदित होता है कि सीकर रावराजा उनसे बार-बार हुन्डी मंगाते थे। राजकार्य में धन की निरन्तर आवश्यकता बनी रहती थी जिसकी पूर्ति समय-समय पर सेठ सनेहीरामजी करते थे। उस समय एक प्रथा प्रचलित थी जिसके अनुसार सेठ साहूकारों की जामनी पर राजाओं और छोटे ठाकुरों को भूमि आवंटित की जाती थी। इसका राजस्व वे बड़े राज में अपना भाग काटकर जमा कराते थे। इस बड़े राज के भाग के लिये उन्हें सेठों की जामनी (निशा) दिलानी पड़ती थी। ऐसे अनेकों अवसर आये थे जब श्री सनेहीरामजी ने निशा भिजवायी थी।

सीकर राज्य से बराबर उनका लेन देन चलता रहता। कई बार दिये हुये रूपयों के बदले राजस्व के रूपये वे स्वयं वसूल कर लेते थे। एक पत्र में रावराजाजी ने लिखा था कि जब जब भीड़ पड़ती थी तो आप काम निकाल देते थे। उसी तरह इस बार भी जरूर काम निकाल देना[3]। सं. 1882 में रावराजाजी ने फतेहपुर के तालुकेदार को हिदायत की है कि सनेहीरामजी तुम्हारे पास आ रहे हैं सो आगे होकर इनका काम करवा देना।[4]

1- यह पत्र जेठ सुदि 12 सं. 1895 का है भीड़ तंगी में काम पड्यों जब भी आगो काढ्यों।

2- पत्र पोष सुदि 15 सं. 1882

3- यह पत्र संग्रहालय में है पोषसुदि 15 संवत् 1862 का है।

4- इस सम्बन्ध का पत्र माह सुदि 2 सं. 1885 का है। यह जगह 70 रूपयों में ली गयी थी जिसके मोहराने के 11 रूपये लगे।

संवत् 1882 में रावराजाजी ने जयपुर के कर की 4 वर्षों की शेष राशि एक साथ चुकाई थी और छोटी मोटी बकाया भी सलटा दी थी फलस्वरूप राज में एक आर्थिक तंगी आ गयी थी। इस समय रावराजाजी ने सेठजी को सहायता करने का अनुरोध किया था।

संवत् 1883 में सेठ सनेहीरामजी को लक्ष्मणगढ़ की आवादानी करने का आग्रह रावराजाजी ने किया। उस समय लक्ष्मणगढ़ की नींव लगे प्रायः 20 वर्ष ही हुये थे और नगर पूरी तरह आबाद हो गया था। सीकर राज से लक्ष्मणगढ़ के तत्कालीन तालुकेदार जोरजी को हिदायत भेजी गयी कि इनका कोई भी काम हो तो इनके कहे मुजब करा दिया जावे। सेठजी को पुनः आश्वस्त किया गया था कि आपसे वही कर वसूल किया जावेगा जो सदा से लगता आया है।[5]

इस प्रकार श्री सनेहीरामजी ने अजमेर, फतेहपुर के साथ-साथ लक्ष्मणगढ़ में भी अपना व्यापार व्यवहार शुरू कर दिया। राज से उनका गहरा सम्बन्ध बना हुआ था। रावराजा बराबर उनके दुख सुख की खबर लेते रहते थे। एक बार घोड़े पर से गिरने के कारण सेठजी के पुत्र दिलसुख का पैर टूट गया था। इस पर रावराजा जी ने अपना एक कारिन्दा भेजा और कुशल क्षेम का पत्र भेजा।[6]

कई बार उगाही सलटाने में दिक्कत आती तो राज के कारिन्दे बराबर मदद करते। सीकर राज अपने कारिन्दों को इनकी घणी खातरी' रखने की ताकीद करता रहता। कहीं आने जाने का काम पड़ता तो राज के असवार और पैदल साथ जाते थे। हवेली पर राज के सिपाही बराबर पहरा देते थे।[7]

इस प्रकार सनेहीरामजी सीकर राज से प्रेम सम्बन्ध बनाते हुये अपने व्यापार एवं कारवार का विस्तार करते रहे। राज से निकट सम्पर्क के कारण उनके प्रभाव में भी निरन्तर वृद्धि होती गयी।

सेठ सनेहीरामजी ने वृन्दावन में सवामन शालिगराम का मंदिर बनवाया था। यह मूर्ति श्रीधाम वृन्दावन में आने के पूर्व मुक्तिनारायण कण्डगी गंगानदी में वहाँ से आयी थी। ये मुक्तिनारायण भगवान हैं। मूर्ति बहुत चमत्कारी है। मन्दिर का निर्माण सं. 1800 के लगभग हुआ था। श्री सनेहीरामजी ने महन्त श्री 1008 बद्रीदासजी को अपना गुरू बनाया। पहले यह मंदिर सीतारामजी के नाम से प्रसिद्ध था पर आगे चलकर सवामन सालिगराम के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

---

5 यह पत्र जेठ सुदि 13 सम्वत् 1883 का है। थे घणी जमा खातिर रखों इसमें कसर रहे तो श्री जी की दुहाई'।

6 पाष सुदि 11 सं. 1887

7 मंगसरवदी 3, 1879 का पत्र।

यद्यपि श्री सनेहीरामजी फतेहपुर में बस गये थे पर उनका परिवार प्रारम्भ में गनेड़ी में ही अवस्थित रहा। सन् 1817 (वि. 1874) में जब श्री सनेहीराम जी हरिद्वार स्नान को गये तो गनेड़ी ग्राम से ही गये थे। इसके पूर्व श्रीराधाकिशन जी भी हरिद्वार गनेड़ी से ही गये थे। इसका प्रमाण पंड़ों की बहियाँ देती हैं । इस समय तक सेठ जी जुगलदास जी की धर्मपत्नी भूरीदेवीजी जीवित थीं। सेठ सनेहीरामजी की धर्मपत्नी सुखी बाई सन् 1862 (वि. 1819) में हरिद्वार अर्द्धकुम्भ के स्नान पर गयी थी। इसके चार साल बाद प्रायः 76 वर्ष की आयु में सुखी बाई फतेहपुर से बद्रीनाथ को गयी थी। इनके अस्थिफूल 1882 ई. में हरिद्वार पहुँचाये गये थे। ये फूल इनके ज्येष्ठ पुत्र दिलसुखरायजी लेकर गये थे।

श्री सनेहीरामजी लम्बे समय तक जीवित रहे। जिस समय उनकी माता गुमानी बाई का सन् 1833 (वि. 1890) में देहान्त हुआ उस समय वे प्रायः 70 वर्ष के हो चले थे। अनुमानतः सनेहीरामजी का देहांत सन् 1837 (वि. 1894) के आस-पास हुआ।

सेठ सनेहीरामजी के दो पुत्र हुये, दिलसुखराय और शिवनारायण। प्रथम पुत्र का जन्म अनुमानतः सन् 1815 और दूसरे पुत्र का सन् 1820 के आसपास हुआ। दिलसुखराय ने अपने पुत्र मनसुखदास को अपने छोटे भाई श्योनारायणजी को गोद दे दिया। आपकी दूसरी संतान इन्दरलालजी का जन्म सन् 1840 के आसपास हुआ। इनके पुत्र केशवदेव हुये। इसके आगे इनका वंश नहीं चला । केशवदेवजी अग्रवाल जाति के इतिहास के अनुसार जुझार होकर मृत्यु को प्राप्त हुये थे। ये चित्तोड़ क्षेत्र में 50-55 राजपूत डाकुओं से लडते हुए वीरगति को प्राप्त हुऐ थे। इनके तीन कन्यायें कमला, पूरणी और मूली थी। इनके साथ ही इनका वंश क्रम समाप्त हो गया। सनेहीरामजी के दूसरे पुत्र शिवनारायण थे जिनका जन्म अनुमानतः सन् 1820 में हुआ था। इन्होंने अपने बड़े भाई के पुत्र मनसुखदासजी को गोद लिया था। मनसुखदास जी का जन्म प्रायः 1835 में हुआ था। ऐसा पंड़ो की बहियों से ज्ञात होता हैं। प्रायः 47 वर्ष की अवस्था होते इनका देहान्त हो गया था। उनके फूल हरिद्वार पहुँचाये गये। मनसुखदासजी के बारे में अधिक विवरण प्राप्त नहीं है।

मनसुखदासजी के दो पुत्र हुये बालाबक्स और गुरूप्रताप। बालाबक्सजी ने लम्बी आयु पायी। इन्होंने अपना अंतिम समय वृन्दावन में बिताया। अपने वंश के वृत्त के महत्त्वपूर्ण कागजात इनके पास सुरक्षित थे। इन्हें ये बड़े यत्न से कपड़े की बुगचियों में बांधकर रखते थे। एक बार पुरातत्त्व के प्रेमी और सीकर के सीनियर ओफीसर ए. डब्लू. टी. वेब को बालाबक्सजी ने ये कागज दिखाये तो इन्हें देखकर सब दंग रह गये।

इन कागजों में एक कागज गनेड़ीवाला सेठों के नाम जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह तृतीय का था जिसमें गनेड़ीवाला सेठों को जयपुर रियासत में हाजरी अदालत से मुत्सना किया गया था। आज ज्ञात नहीं इन सारे कागजातों का क्या हुआ।

सेठ जी बालाबक्सजी के एक पुत्री विमला नाम की थी। इनका देहान्त सन् 1943-44 के आस-पास हुआ था।

श्री बालाबक्सजी के छोटे भाई गुरूप्रताप थे। वे अधिकतर दिल्ली में रहते थे। इनके तीन गांव दिल्ली, मथुरा अंचल में थे। ये पलवल तहसील के सधवागढ़ी, भेजपुर और हसनपुर नामक गांव थे। इनमें से एक गांव में उनकी हवेली बनी हुई थी। दिल्ली में ये संजोगीराम के कूचे में रहा करते थे। ये प्राय 70-71 की अवस्था तक जीवित रहे। एक उल्लेख के अनुसार सन् 1910 में ये गढ़मुक्तेश्वर स्नान को गये थे। इनका देहान्त सन् 1928 के आस-पास हुआ था। इनके चार बहिनें भी थी। इसकी जानकारी पारिवारिक सूत्रों से होती है। इन्होंने अपने भतीजे नन्दकिशोर के पुत्र अनिरूद्ध कुमार को गोद लिया था। अनिरूद्ध कुमार आगे चलकर दिल्ली से कोटा चले गये थे और वहीं बस गये। इनका जन्म सन् 1922 में हुआ। आपके एक सुपुत्र सुरेश कुमार हैं जिनका विवाह रेणुकोट में श्री सांवरमल जी केजड़ीवाल की सुपुत्री मंजू से हुआ है। श्री सुरेशजी के दो सुपुत्र हैं पीयूष एवं गोपाल। यह परिवार कोटा और गोहाटी में अवस्थित है। श्री अनिरूद्धकुमारजी को प्रेरणा हुई कि वृन्दावन बस्ती के बीच जो उनकी पैतृक भूमि है उसे वे सरस्वती शिशुमन्दिर के लिये प्रदान कर दें। उन्होंने अपने नज़दीकी भाई श्री सज्जन कुमारजी आदि की सहमति से यह भूमि शिशु मन्दिर के लिये प्रदान कर दी। इस पर बनाये जाने वाले शिशु मन्दिर का नाम "श्री गनेड़ीवाला सरस्वती शिशुमन्दिर" रखना तय हुआ है। श्री अनिरूद्धकुमारजी एवम् अन्य बन्धु मन्दिर के निर्माण में अपना सहयोग दे रहे हैं।

श्री नूँदरामजी के द्वितीय पुत्र श्री राधाकृष्णजी का जन्म अनुमानित रूप से सन् 1764 में हुआ था। इनकी पत्नी का नाम धरमा था। ये सन् 1817 में गनेड़ी ग्राम से हरिद्वार स्नान को गये थे। इसके 11 वर्ष बाद फिर अपनी माता और बहन सूझा को साथ लेकर हरिद्वार स्नान को आये थे। इनकी आयु की अवधि के बारे में जानकारी नहीं है। इनकी धर्मपत्नी के फूल फतेहपुर से जेठ सुदी नवमी सन् 1871 को हरिद्वार ले जाये गये थे। इनकी कोख से एक पुत्र श्री रामनारायण हुये। श्री रामनारायणजी के पठनार्थ अनेकों धार्मिक एवं साहित्यक पुस्तकों की हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार करवाई गयी थीं। इन पुस्तकों में सभा विलास, रसिक प्रिया, प्रहेलिका, सुन्दरश्रृंगार, रामचन्द्रिका, बृन्द सतसई, तुलसी दोहावली, भीष बावनी एवं रंभाशुक संवाद आदि थीं। स्वरोदयशास्त्र की पुष्पिका इस प्रकार है "स्वरोदयशास्त्र संवत् 1899 चैत्र वदि 12 सोमवार लिखित ब्राह्मण आशारामेण लिखायतं सेठ जी श्री रामनारायणजी स्वपठनार्थ।"

श्री राधाकृष्णजी के दो पुत्र ज़ालीराम और बहादुरमल सन् 1821 में एक ही साल में अकाल मृत्यु को प्राप्त हुये।

श्री रामनारायण के एक पुत्र हुये गंगाविष्णु। "राधाकृष्ण रामनारायण" नाम से अफीम का व्यापार बड़े स्तर पर कई सालों तक चलता रहा। श्री गंगाविष्णु का जन्म 1820 के आस-पास हुआ था। इनकी धर्मपत्नी का नाम रामाबाई था। इनके फूल फतेहपुर से हरिद्वार सन् 1866 में गये।

उनके पुत्र नागरमल और विसेसरलाल थे। सेठ गंगाविष्णु जी ने सेठाई की जिन्दगी बिताई। जब कभी घर से बाहर निकलते तो घोड़े पर चढकर निकलते थे। ये 19 वीं सदी के फतेहपुर मे अंतिम सेठ थे। नागरमलजी का जन्म सन् 1845 में हुआ था। आपने भी प्रायः 80 वर्ष की दीर्घायु पायी थी। आपके फूल ई. 1924 में हरिद्वार पहुँचाये गये थे। आपकी धर्मपत्नी का नाम केशरदेवी था।

श्रीनागरमलजी के चार पुत्र हुये। इनमें सबसे बड़े घनश्यामजी जो शादी के बाद ही परलोक वासी हो गये। उनसे छोटे मदनलालजी थे जिनका जन्म सन् 1876 में हुआ था। इनका विवाह विसाऊ में बलदेवदास जी धानुका की सुकन्या चन्द्रीदेवी से हुआ था। चन्द्रीदेवी का देहान्त सन् 1971 में हुआ था। मदनलालजी अधिकतर बम्बई रहे और 91 वर्ष की आयु में सन् 1966 में दिंवगत हो गये। इनका देहान्त फतेहपुर में हुआ था। श्री मदनलालजी के सुपुत्र श्रीभगवतीप्रसादजी अपने तीन सुपुत्रों अजय, कमल और विनोद सहित नागदा में रहते हैं और अपना व्यवसाय करते हैं।

श्री नागरमलजी के तीसरे पुत्र श्री भूरामलजी थे। इनका जन्म सन् 1882 में हुआ था। इनका विवाह हैदराबाद में सीतारामजी सिघाड़ेवाले की सुकन्या भगवती देवी से हुआ। इनका देहान्त देवदुर्विपाक से 32 वर्ष की छोटी आयु में ही हो गया। इनकी पत्नी ने इस पर रतनलालजी को गोद लिया। इनका जन्म सन् 1816 में हुआ था। भूरामल जी बम्बई में रूई की दलाली करते थे। भगवतीदेवी जी का शरीर भी 1947 ई. में चला गया।

इनके सुपुत्र श्री रतनलालजी का विवाह फतेहपुर के गोयनका परिवार में मोतीलाल जी पूरणमलजी के परिवार में कृष्णादेवीजी से हुआ। इनके दो पुत्र हैं इनके नाम श्री दीनदयाल और श्री कैलाशचन्द्र हैं। श्री दीनदयालजी का विवाह सीकर में जोगाणी परिवार में सविताजी से हुआ है। इनके दो सुपुत्र गोपीकृष्ण और छोटेलाल हैं। श्री कैलाश का विवाह धानुका परिवार की सुकन्या सुशीलाजी से हुआ है। इनके अवनीश और ललित दो सुपुत्र हैं। यह परिवार नागदा में रहता है।

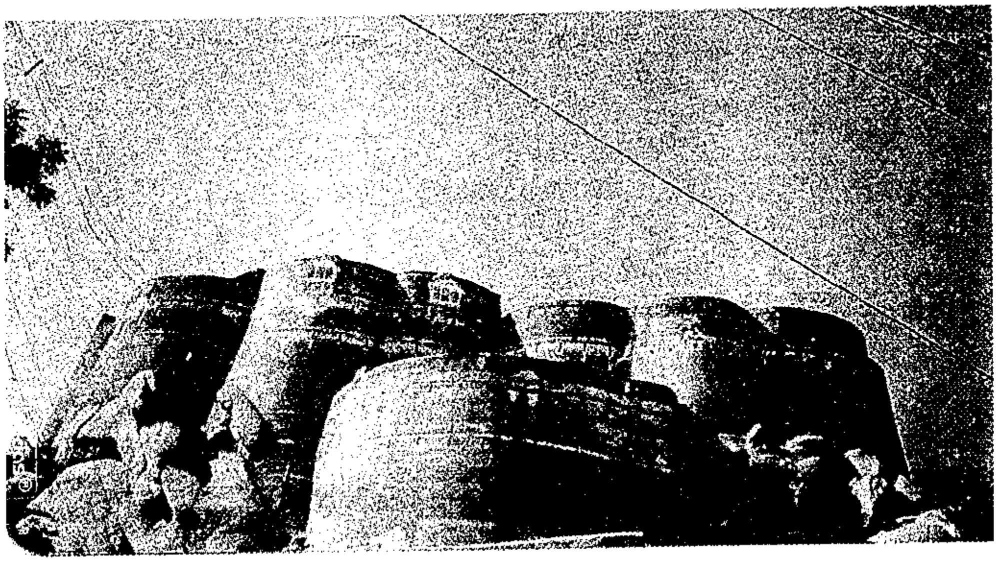
श्री नागरमलजी के कनिष्ठ पुत्र श्री नंदकिशोर का जन्म सन् 1922 में हुआ। इनका विवाह सुरजगढ़ में हुआ था। इनके विवाह में सारे गनेड़ीवाला एकत्रित हुये थे। इनकी पत्नी का नाम शिवदेवी था। इनकी मृत्यु 1982 में आश्विन सुदि 6 को हुई। ये जन्म भर

बम्बई में दलाली करते रहे। इनके ज्येष्ठ पुत्र रतनलाल भूरामल जी के दत्तक चले गये थे। इनके सुपुत्र श्री सज्जनकुमार और श्री शान्ताराम थे। सज्जनकुमार जी के बड़े बेटे श्री कौशल का शुभ विवाह कोटा में सीतारामजी गोयल की सुकन्या किरण से हुआ है। छोटे बेटे कृष्णकुमार का विवाह ग्वालियर में बालकृष्णजी मंडैलियां की सुकन्या विद्युत से हुआ है। तीसरे सुपुत्र श्री जगदीश हैं।

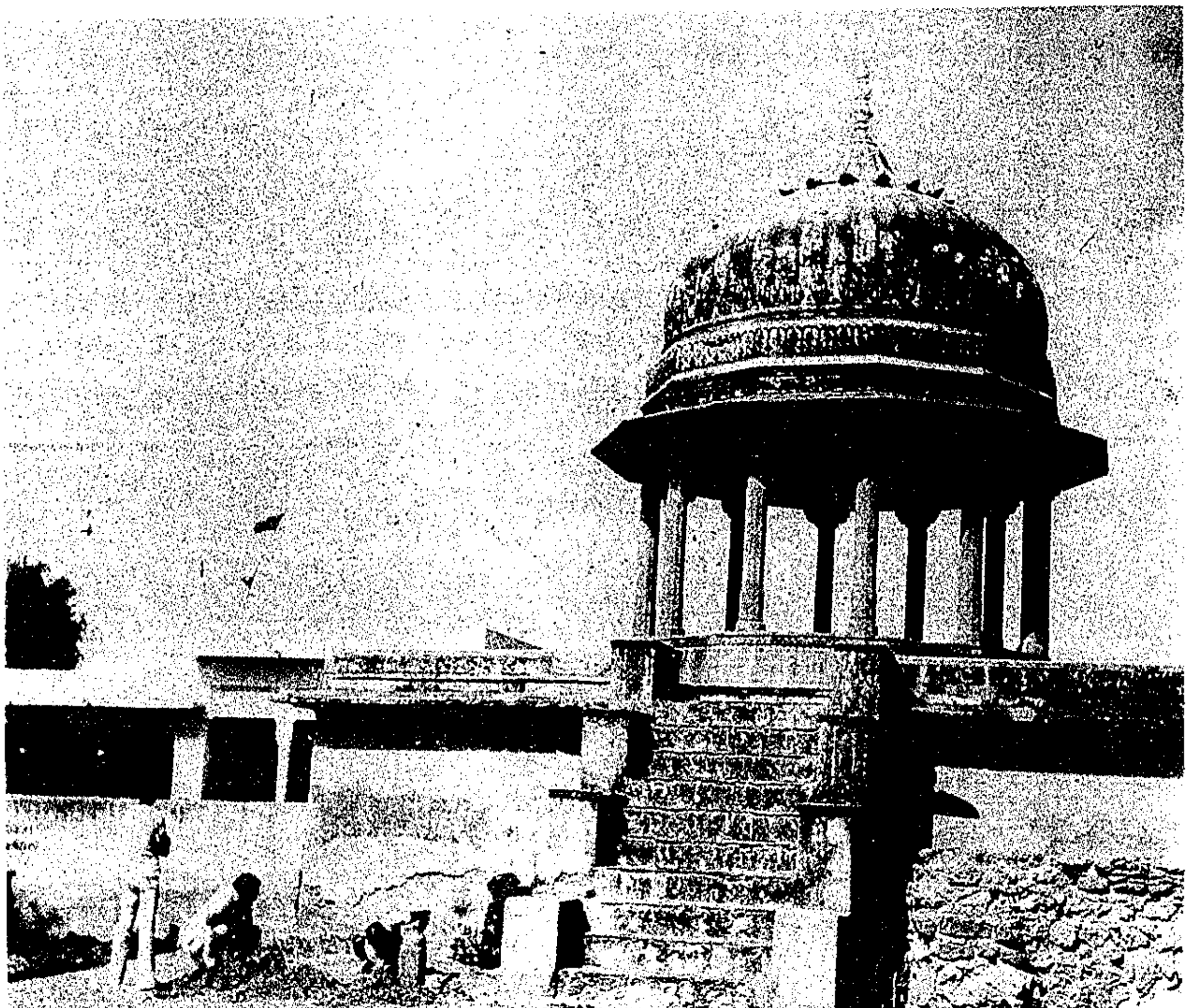
श्रीनंदकिशोरजी के कनिष्ठ सुपुत्र शान्ताराम के 2 सुपुत्र हैं विजय और अशोक। विजय का विवाह बम्बई में बनवारीलालजी चोखानी की सुकन्या से हुआ है। भगवती प्रसाद जी, रतनलालजी, सज्जनकुमार जी, सभी इस समय नागदा में सपरिवार निवास करते हैं। श्री सज्जन कुमार जी का स्वर्गवास वृन्दावन में जुलाई 1992 में हो चुका है।

श्री गंगाविष्णु के कनिष्ठ सुपुत्र विशेसरलालजी हुये। ये कलकत्ता में काठगोला में व्यवसाय करते रहे। इनको चार पुत्र रत्न प्राप्त हुये रामेश्वरप्रसादजी, तुलसीदासजी, कालुरामजी और रामविलासजी। इनमें से सबसे बड़े रामेश्वरप्रसादजी रतनगढ़ के गनेड़ीवाला सेठ चिमनलालजी के दत्तक चले गये। श्रीतुलसीदासजी और श्रीरामविलासजी का वंश क्रम आगे नहीं चला। श्री रामविलासजी की पत्नी श्रीमती अनारवती बाई थी जो अतीव धार्मिक रूचिवाली महिला थी। सेठ रामविलासजी का संवत् 1999 में फागुण बदि, 11 मंगलवार को जब देवदुर्विपाक से देहान्त हो गया तो श्रीमती अनारवती बाई पूरे मनसे परमात्मभक्ति में लीन हो गयी। वे श्री हरिहरानन्दजी की शिष्या थी। उन्होंने अनेकों स्थानों में सत्संग कराया था। इन्होंने "श्री अनारवती सत्संग" भवन का निर्माण वाराणसी में करवाया था। यहाँ प्रतिदिन सत्संग आदि का आयोजन होता है। पिछले साल इनका देहान्त हो चुका है। श्री कालूरामजी सुपुत्र हरिप्रसादजी इस समय कलकत्ता में निवास करते हैं। इनके सुपुत्र राजेश हैं।

श्री नूँदरामजी को इस आसार संसार से विदा हुये प्रायः 170 वर्षों का समय व्यतीत हो गया है पर आज भी उनका नाम लोगों की जबान पर है। यह उनकी नौवीं पीढ़ी चल रही है। इसी परिवार के श्री गंगाविष्णुजी के पुत्र सागरमलजी महांनदजी के चतुर्थपुत्र सेठ रामजीदास के परिवार में गोद गये। ये सागरमलजी 5 पुत्रों के पिता हुये। इन 5 पुत्रों का संततिक्रम निरन्तर फलताफूलता रहा।



लक्ष्मणगढ़ का गढ़



राजा चाँदसिंह जी की छत्री, गनेड़ी

त्रयोदश अध्याय

श्री महानंदरामजी की संतति–वल्लरी

श्री महानंदरामजी गनेड़ीवाला वंश में बड़े ओजस्वी, उद्यमी एवं व्यवसायिक कुशलता वाले व्यक्ति हुये हैं, जिन्होंने अतीव साहस से उन विकट परिस्थितियों में सुदूर प्रदेश की यात्रा की और वहाँ अपने को उच्च पद पर स्थापित कर अतुल धन सम्पत्ति एवं मान-मर्यादा को प्राप्त किया। उन्होंने इसके साथ-साथ अपने भाईयों के लिये भी एक ऐसा प्रशस्त पथ तैयार कर दिया जिस पर बढते हुये उन्होंने धन और कीर्ति का वरण किया। यह बात और भी अर्थवती हो जाती है जब उन परस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में इसे आंकते हैं जो विकट संकटों से परिपूर्ण थीं। बहुत बड़े जीवन और साहस के धनी ऐसे विरले पुरूष ही होते थे जो अडिग चरणों से निरन्तर आगे बढ़ते रहते थे। [1]

श्री महानंदरामजी के इस सुरूचि एवं साहसपूर्ण वृत्त का उल्लेख पिछले पृष्ठों में किया गया है। यहाँ उनकी संतति का वृतान्त दिया जा रहा है जो उतना ही गौरवास्पद और महिमा मंडित है। इस समय तक श्री महानंदरामजी द्वारा लगायी गई सघन वृक्षावली पत्र-पुष्पों से घनीभूत हो चुकी थी और इसमें सुखद फलों का सृजन हो चला था। राजद्वार में भी इस कुल को वह सम्मान प्राप्त हो चुका था जो उस समय तक बहुत कम लोगों को प्राप्त हो सका था।

---

1 इस पथ का उद्देश्य नहीं है शान्त भवन में टिक रहना ।
किन्तु पहुँचना उस सीमा पर जिसके आगे राह नहीं - श्री जयशंकर प्रसाद

श्री महानंदरामजी की पहली पत्नी से उनके प्रथम पुत्र श्री गिरधारीलालजी का जन्म सन् 1766-68 में हुआ। जब श्री महानंदरामजी हैदराबाद की ओर संवत् 1848 इ. 1791 में रवाना हुऐ तो उनका परिवार देश में ही रहा। आगे चल कर जब महानंदरामजी समृद्ध हो गये तो रावराजा लक्ष्मणसिंहजी के अनुरोध पर संवत् 1880 के आस-पास लक्ष्मणगढ़ जा बसे। यहाँ उनके पुत्र श्री गिरधारीलाल ने एक विशाल हवेली का निर्माण करवाया। आगे चलकर जब भाइयों में पांती हिस्सा हुआ तो यह हवेली श्री गिरधारीलाल जी के हिस्से में आ गयी।[2] दूसरे भाइयों ने अपनी अलग हवेलियाँ बना ली जो आज मुरलीधरजी की, खुर्रावालों की, सागरमलजी की एंव रामसहायमलजी की हवेलियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। श्री गिरधारीलालजी अपने पिता के व्यापार में हाथ बंटाते रहे। वे हैदराबाद और अजमेर का काम देखते और लक्ष्मणगढ़ में भी घर गृहस्थी सँभालते रहे। अपने पिताजी से उन्होंने व्यवसाय का पूरा प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया था। अजमेर में उस समय तक महानंदराम गिरधारीलाल फर्म स्थापित हो चुकी थी। अपने व्यवसायिक अनुभव से इन्होंने इस फर्म को सुव्यवस्थित किया। इस फर्म के अन्तर्गत लेन देन का काम मुख्यतया होता था। श्री मोहनरामजी एवं श्री रघुनाथदासजी भी उस समय अजमेर में ही व्यवस्थित थे।

श्री महानंदरामजी अधिक समय हैदराबाद में ही रहते थे और बीच-बीच में लक्ष्मणगढ़ आते रहते थे। एक बार इन्हें लक्ष्मणगढ़ आये चार साल बीत गये। इस पर उनकी पत्नी अनिष्ठ की आशंका से चिंतित हो उठी। उन्होंने पुत्रों से आग्रह किया कि वे अपने पिता को शीघ्र जाकर ले आवें।

इस समय तक श्री महानंदरामजी की दूसरी पत्नी से उत्पन्न पुत्र श्री पूरणमलजी श्री कृष्णदासजी और श्री रामजीदासजी व्यस्क हो चुके थे। श्री गिरधारीलालजी अपनी विमाता के आग्रह को नहीं टाल सके। ज्येष्ठ पुत्र के नाते पिता की मंगल कामना के प्रति सचेष्ट रहना उनका कर्त्तव्य था। जब वे लक्ष्मणगढ़ से रवाना हुये तो खरसोद कला पहुँचते ही देव की विपरीतता के कारण उनका देहान्त हो गया। उधर हैदराबाद में श्री महानंदरामजी का जबकि वे लक्ष्मणगढ़ रवाना होने की तैयारी कर रहे थे, देहपात हो गया। यह नियति की एक विडम्बना ही थी कि दोनों पिता पुत्रों के फूल एक साथ हरिद्वार पहुँचे। श्री गिरधारीलालजी का स्वर्गवास सन् 1822 वि. 1879 में हुआ था। श्री विश्वनाथ जी की डायरी में उनकी मृत्यु तिथि जेठ सुदि दी गयी है। यह भी उल्लेख है कि खरसोद में उनके दाह स्थल पर छत्री बनी हुई है।

श्री गिरधारीलालजी ने दो विवाह किये थे। प्रथम पत्नी से एक पुत्र श्री गुमानीराम

---

2 श्री गिरधारीलाल जी रामजीदास की लक्ष्मणगढ की दुकानों की पांती भादवा सुदि 2 सं. 1898 में हो गयी थी। इसके साथ मकान भी बांट लिये गये थे ।

हुये। इनका जन्म लगभग सन् 1785 वि. 1842 में हुआ था। यह ज्ञात नहीं है कि श्रीगिरधारीलालजी का दूसरा विवाह कब हुआ। इनकी दूसरी पत्नी का नाम नौजी देवी था इस पत्नी से सन् 1800 में श्री तनसुखरायजी, 1802 में श्री रामदयालजी और सन् 1810 के आस-पास श्री हरभजनदासजी का जन्म हुआ। श्रीमती नौजी देवी की मृत्यु प्रायः 94 वर्ष की आयु में सन् 1876 में हुई।

श्री गिरधारीलालजी के एक सुपुत्री पारो थी जो खुर्जा के अमीरचन्द्र सरावगी को विवाही गयी थी। श्री महानंदजी की धर्म-पत्नी का खर्च सेठ गिरधारीलालजी रामजीदासजी ने किया था। यह खर्च फागुन सुदि 2 सं. 1904 में हुआ था। इस खर्च पर जो हेड़ा किया गया था उसमें रू. 20582.11 आने लगे थे। उस समय यह एक बड़ी रकम थी। इनका खर्च बम्बई, लक्ष्मणगढ़ और मंदसोर में भी किया गया था। इस अवसर पर ब्रह्मपुरी भी की गई थी। दोनों में कुल खर्च 21251.00 आया था। नांवादेली में चारो भाईयों के रू. 2391.00 लगे थे।

इसी समय मुरली मनोहरजी का मंदिर लक्ष्मनगढ़ में बनना शुरू हो गया था। इसके निर्माण में रू. 13913 सेठ गिरधारीलालजी रामजीदासजी की ओर से तथा रू. 11922 सेठ पूरणमलजी श्री कष्णदासजी की ओर से आश्विन बदी 8, 1898 तक लगे थे। इस प्रकार रू. 25835 खर्च होने पर भी मन्दिर पूरा बनकर तैयार नहीं हुआ था। आगे चलकर पूरणमल श्री कृष्णदास ने जब श्री संप्रदाय ग्रहण कर लिया तो गिरधारीलाल रामजीदास की ओर से शेष पैसे लगाकर मन्दिर पूर्ण करवाया गया। मन्दिर संवत् 1899 में पूर्ण हुआ था। इसके बारे में आगे चलकर पूरा वृतान्त दिया जावेगा।

श्री गुमानीरामजी बचपन से ही बड़े मेधावी और होनहार थे। आपके दो विवाह हुये थे। प्रथम पत्नी श्रीमती जयकोरी की मृत्यु सन् 1838 में हुई। सन् 1844 में श्री गुमानीरामजी जब हरिद्वार स्नान को आये तो उनके साथ आपके सौतेले भाई तनसुखराय जी, रामदयालजी, हरभजनदासजी एवं द्वितीय पत्नी झूमाबाई थी। यह कुंभ स्नान का अवसर था। श्रीमती झूमाबाई ने कुरूक्षेत्र और बद्रीनारायण धाम की यात्रायें भी की थी इनकी मृत्यु संवत् 1878 के आस-पास हुई।

श्री गुमानीरामजी श्री महानंदरामजी के वंश में पूरे रईस हुये। इस रईसी के पीछे उनके द्वारा अर्जित अतुल सम्पत्ति का राज था। वे लाखों का व्यवसाय करते थे और सानन्द रईसी का जीवन जीते थे।

श्री गुमानीरामजी के वंशज श्री विश्वनाथजी गनेड़ीवाला के अनुसार श्री गुमानीराम जी देश के विभिन्न स्थानों में व्यापार खोलने के आदि थे। एक बार वे व्यापारिक संभावनाओं

का पता लगाने जोधपुर गये। उन्होंने पता लगा लिया कि जोधपुर महाराजा कौन से देवालय में प्रतिदिन देव–दर्शन को आते हैं। आपने उस मंदिर के पुजारी से एक सम्पर्क साध लिया। महाराजा के आगमन के पूर्व पूरे सेठाई ठाठ के साथ उस मन्दिर में गये और दर्शन के उपरान्त रूपये 11 चढाये। चार दिनों तक यह क्रम चलता रहा। पाचंवें दिन महाराजा ने पूछा कि ये रूपये कौन चढाता है। पुजारीजी ने बताया कि हैदराबाद से कोई नगर सेठ आया है। महाराजा ने नगरसेठ को महल में बुलाया और सम्मान किया। सेठजी ने महाराजा को अच्छी नजर भेंट की। महाराजा ने उन्हें सेठ उपाधि प्रदान की और यह अधिकार भी प्रदान किया कि इस सेठ के परिवार के लोग बारात लेकर राज्य में हाथी पर तोरण मार सकते हैं।

आगे चलकर सीकर से बियाणियों की एक बरात जोधपुर गई। श्री गुमानीरामजी के छोटे भाई तनसुखरायजी के पोते रामकुमारजी इस बारात में थे। वरपक्ष से तोरण मारने के लिये हाथी बुलाया गया पर राज्य के अधिकारियों ने एक महाजन को हाथी पर चढ़कर तोरण नहीं मारने दिया। महाराजा के पास फरियाद की गयी तो उन्होंने आदेश दिया कि सेठ गुमानीराम का वंशज हाथी पर तोरण मार सकता है।

श्री गुमानीरामजी ने अजमेर और उसके आस–पास के व्यवसाय को अच्छी प्रकार सुव्यवस्थित किया। आपने जोधपुर और बीकानेर राज्य में भी अपने व्यापार का विस्तार किया। आगे चलकर गुमानीरामजी ने बन्नु, डेरा इस्मायलखां, डेरा बाजी खां, कोहाट और बहावलपुर में अपनी दुकानें खोली और योग्य मुनीमों को नियुक्त कर दिया जो दिन प्रतिदिन के काम को सम्भालते रहे।

सन् 1837 में आपको अपने व्यापार व्यवसाय को अधिक विस्तृत करने का मौका मिला। इस वर्ष कर्नल थर्सवी ने सिरसा नगर को नये सिरे से बसाना शुरू किया था। सिरसा नगर अपनी केन्द्रीय स्थिति के कारण बड़ा महत्त्वपूर्ण था। थर्सवी ने हिसार के लाला फतेहचन्द को यह काम सौंपा। वे अग्रवाल वैश्य थे। इस सेठ ने राजस्थान के सेठों को सिरसा में बसने का निमन्त्रण भेजा। इसे बहुत से लोगो ने स्वीकार किया और सिरसा में आकर बस गये।

सेठ गुमानीरामजी ने भी 1837-40 की अवधि में सिरसा में अपनी गद्दी स्थापित की। वहाँ उन्होंने सुयोग्य मुनीम रख दिये। श्री नगेन्द्रनाथ वसु ने अपने विश्व-कोश में लिखा है कि राजस्थान के हिन्दु सिरसा नगर के श्रेष्ठ व्यवसाई हैं।

सन् 1837 में हैदराबाद के गनेड़ीवालों को स्वर्ण अवसर मिला जब हैदराबाद में भी श्री महानंदरामजी के द्वितीय पुत्र श्री पूर्णमलजी को बरार की सूबेदारी प्राप्त हो गयी। इसी

साल कर्नल थर्सवी के आदेश पर सेठ गुमानीराम ने सिरसा के आस-पास कई जमीदारियाँ खरीदीं। इसमें फरवायी, झोरड, सुलतानपुर, नानूबाणा, फतेहपुर, अभौली, महमदपुर, बालासर, शाहपुर बेगू, झूंपड़ा आदि गावों की जमींदारी थी। इन्हीं जमींदारियों की समृद्धि से श्री गिरधारीलालजी की संतति ओत-प्रोत रही। सेठ गुमानीरामजी ऐसे ही परिवार पालक थे। सन् 1829 तक सेठ महानंदरामजी की संतति का व्यवसाय हैदराबाद, अजमेर, भीलवाड़ा अंचल तक फैला हुआ था। अपने पिता की अकाल मृत्यु पर सेठ गुमानीरामजी लक्ष्मणगढ़ से बाहर आये और विभिन्न स्थानों पर अपना व्यवसाय फैलाया। 1829 ई. में भाईयों का बंटवारा हुआ। महानंदराम गिरधारीलाल फर्म का विभाजन हुआ तो उन्होंने शीघ्र ही अपने व्यवसायिक कौशल के बल पर बन्नू कोहाट आदि स्थानों पर दुकानों का एक जाल विछा दिया। आगे चलकर सिरसा में जमीदारियाँ खरीदी। इससे उनकी सम्पन्नता दिनानुदिन बढ़ती गयी। सबसे बड़ी बात यह रही कि इस व्यवसायिक सम्पन्नता में वे अपने सौतेले भाइयों और चाचा रामजीदास के पुत्रों को भी सहभागी बना लेते हैं। इस प्रकार 1822 से 1840 तक वे अपनी व्यवसायिक चातुरी से सिरसा, लक्ष्मणगढ़, हैदराबाद, अजमेर अंचल में बड़ा व्यवसाय खड़ा कर देते हैं। इस प्रकार गनेड़ीवाला परिवार की दो सशक्त भुजायें हैदराबाद से सिरसा तक फैल जाती हैं। यह सब श्री गुमानीराम जी के अर्हनिश प्रयत्न का फल था। वे अपने कुल के तेजपुंज नक्षत्र थे।

सन् 1861 वि. 1918 में भाइयों में विभाजन हो गया। लक्ष्मणगढ़ की हवेली नोहरे, दुकानें बांटी गयी। इस विभाजन के बाद श्री गुमानीराम जयपुर चले गये। इस घटना के बाद तीन चार साल वे और ज़िन्दा रहे।

श्री विश्वनाथजी की डायरी के उल्लेख के अनुसार उनका स्वर्गवास फागुन बदि 6 स. 1902 के आस पास हुआ था। हरिद्वार की पंडों की बही में लिखा है कि स्वर्गवास जयपुर में हुआ। इनके फूल फागुन सुदी 5 सं. 1902 में हरिद्वार आये।

श्री गुमानीरामजी ने मृत्यु के पूर्व अपने चाचा श्री रामदासजी के सहयोग से सेठों का तालाब, शिव मन्दिर, धर्मशाला और कूँवा बनवाया। उस समय इस तालाब का बड़ा महत्त्व था। इसके गऊ-घाट में गायें पानी पीती थीं। तालाब पर आठ छत्रियाँ बनी हुई हैं। इस तालाब के सम्बन्ध में न्म्निलिखित दोहा शेखावाटी अंचल में प्रसिद्ध हैः—

गुमानसागर ऐसो बन्यों सरायो सकल जहान।
धरी निसानी स्वर्ग की गिरधर पुत्र गुमान।।

इस तालाब के पार्श्वभाग में एक धर्मशाला का भी निर्माण उन्होंने करवाया था। इसमें भगवान शिव के विग्रह का संस्थापन हुआ। तालाब की प्रतिष्ठा मंगसिर सुदि 6 बृहस्पतिवार

सन् 1899 में की गयी थी। सेठ गुमानीराम सामाजिक कार्यों में बड़ी रूचि लेते थे। वे धार्मिक विचारों के वैष्णव थे और धार्मिक साहित्य का प्रसार और अनुशीलन करते रहते थे। उन्होंने आदिगुरू शंकराचार्य कृत उपदेश की टीका की प्रति सं. 1890 में लक्ष्मनगढ़ में करवायी। अनुभूति-प्रकाश नामक ग्रन्थ की प्रतिलिपि संवत् 1895 में श्री गुमानीराम तनसुखराय ने करवायी। इसके अलावा श्री रामानुजाचार्य विरचित शारीरिक मीमांसा भाष्य की प्रतिलिपि सं. 1892 में मार्गशीर्ष 12 मंगलवार को इन्होंने करवायी। पंचदशी टीका श्री स्वामी भारतीतीर्थ के शिष्य श्री रामकृष्ण द्वारा लिखित है। इसकी प्रतिलिपि सं. 1890 में करवाई गई। इसी प्रकार अपेक्षानुभूति दीपिका नामक ग्रन्थ को भी उन्होंने संवत् 1890 में लक्ष्मणगढ़ में लिखवाया। इसकी पुष्पिका इस प्रकार हैः

"संवत् 1890 का वर्ष मार्ग शुक्ला 1 शुक्रवारे पुस्तक लिखायत सेठ जी श्री गुमानीराम जी नगर श्री लक्ष्मणगढ़ मध्ये:।।

तत्कालीन अंग्रेज अधिकारियों से उनके बहुत अच्छे सम्बन्ध थे। उच्च अंग्रेज अधिकारी उनकी जनकल्याणकारी भावना का सम्मान करते थे। गनेड़ीवाला संग्रह में ऐसे अनेकों प्रशंसापत्र हैं जो अंग्रेजों की ओर से सेठ गुमानीरामजी को प्राप्त हुये हैं। इन प्रमाणपत्रों में उनकों जनसेवा भावी, उदार, सम्माननीय और प्रभावशाली बताया गया है।

इनमें से एक प्रशंसा पत्र अजमेर कार्यवाहक सुपरइन्टेन्डेन्ट एन. बी. एडमोन्स्टन का है जो नवम्बर 1831 वि. 1888 में दिया गया है। इनमें और बातों के अलावा अजमेर और आसपास के क्षेत्रों में जनहित के कार्य के लिये उनकी प्रशंसा की गयी है। दूसरा "प्रशंसापत्र मेजर यू. ग्रेगोरी का है जिसमें अजमेर नगर में उदारतापूर्वक निर्माण कार्यों के लिये उनकी प्रशंसा की गयी है। यह 18 दिसम्बर 1834 वि. 1891 का है। आर. एस. मैमटिन के द्वारा दिये गये एक अन्य प्रशंसापत्र में उनके अन्य गुणों की प्रंशसा करते हुये सिरसा में व्यवसाय स्थापित करने पर उन्हें साधुवाद दिया गया है। रेंजिडेन्ट आर. केवेन्डिश ने जो पहले अजमेर के पोलेटिकल एजेन्ट थे सेठ गुमानीराम को सम्माननीय व्यक्ति बताते हुये अजमेर शहर को समृद्ध करने और वहाँ व्यापार स्थापित करने के लिये धन्यवाद दिया है।

एक अन्य पत्र आई मेकिसन सुपरइन्टेन्डेन्ट मुलतीना, सिरसा का है जिसमें लिखा गया है कि जब गवर्नर जनरल मि. हेमिल्टन सिरसा आये तो सेठ गुमानीरामजी कई व्यापारियों को अपने साथ लेकर आये। इन व्यापारियों ने अपनी दूकानें यहाँ स्थापित की। सेठजी ने बहावलपुर और सीकर में भी व्यापारियों को बसाया।

इन्होंने मेरी प्रार्थना पर बम्बई से सिन्ध के रास्ते बहावलपुर सामान भिजवाया। इस प्रकार दिल्ली के व्यापारियों के समक्ष एक उदाहरण रखा कि किस प्रकार वे युरोप का

सामान इस मार्ग से कितनी जल्दी प्राप्त कर सकते हैं। सिरसा नगर भविष्य में जो समृद्धि प्राप्त करेगा उसका श्रेय सेठ गुमानीराम को है। यह पत्र 5 मार्च 1844 (1901 वि.) का है।

श्री गुमानीराम जी का सम्बन्ध ब्रिटिश अधिकारियों के अलावा सीकर, जोधपुर, बीकानेर और जयपुर के राजदरबार से भी बना हुआ था। सं. 1885 के एक पत्र से ज्ञात होता है कि उधार दिये गये रूपयों के बदले गारासणी और जाटालवेश गांवों का राजस्व वसूली का अधिकार उन्हें मिला था । दूसरे पत्र से संवत् 1885 में जोधपुर राज्य में 5001 रूपये उधार देने की बात ज्ञात होती है।

सीकर ठिकाने से गनेड़ीवाला परिवार के निकट के सम्बन्ध रहे हैं। ठिकाने का अर्थभार, गनेड़ीवाला घराना ही वहन करता था। इस ठिकाने से सम्बन्धित सैकड़ों पत्र संग्रह में विद्यमान हैं जिनसे ठिकाने के लेन–देन और आर्थिक मदद करने की बात ज्ञात होती है। रावराजा जी, उनके कामदारों के पत्रों के अलावा रानी, महारानियों के भी अनेक पत्र संग्रह में हैं जिनका उल्लेख यथा स्थान किया जावेगा।

एक पत्र सं. 1894 का है जिसमें मांजी राठौड़ जी रावराजा प्रतापसिंहजी की माता ने पौद्दारों को भेजकर रामगढ की जमा चुका देने की बात श्री गुमानीरामजी को लिखी है। इन पत्रों में कई पत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं जो सीकर राज्य की आन्तरिक स्थिति पर नया प्रकाश डालते हैं। यहाँ एक पत्र के कुछ अंश प्रकाशित किये जा रहे हैं। यह पत्र उस समय का है जब राव राजा लक्ष्मणसिंहजी की मृत्यु के बाद राज में अनेको झगड़े उठ खड़े हुऐ थे। स्वार्थी तत्वों की बन आई थी। राव राजा रामप्रतापजी की अवस्था सिर्फ 5 वर्ष की ही थी। राजकाज मांजी राठौड़जी चलाती थी। बख्तमल दरोगा और करीम खां जमादार, मेजर फोरेस्टर को सीकर पर चढ़ा लाये थे। उधर समर्थ सिंह के वंशज भी अपने 120 गावों का दावा कर रहे थे। राव राजा के छोटे भाई श्री भैरव सिंह जी भी अपना दावा पेश कर चूके थे। यह सारी बातें मिल कर राज के लिये बड़ी संकटापद स्थिति पैदा कर रही थीं। ऐसी स्थिति में मांजी राठौड़जी ने एक बड़ा ही प्रभावशाली पत्र श्री किशनदासजी प्रेमसुखदासजी और श्री गुमानीरामजी को लिखा था।

"अब गुमानीरामजी न जयपुर जाता सुणु हूँ सो थाने म्हारे रामप्रताप की सरम छै, अठे तो रासो आछो ने छै सो थे आकर ज्यों बड़ा साहव न रावलजी न सारी तरह कह लीज्यो और जमादारक घर की थान सरम छै हिसाब किताब तो भला ही ल्यो पण आदम्यां का जीव मत ल्यों अती तो थे कीज्यो.... थे तो कावल न सावल कर सको छो आज का दिन तो। और सारा दिन सरीसा न रहसी कदे तो रामप्रताप बडो होसी......."।

इस पत्र से सीकर राज की दयनीय हालत और सेठ गुमानीरामजी के जयपुर राज में प्रभाव की बात ज्ञात होती है । यह पत्र जेठ वदि 4 सं. 1894 का है। सेठ गुमानीरामजी का जयपुर राज में अच्छा प्रभाव था। एक पत्र से जो जयपुर के तत्कालीन दीवान संघी झूंथाराम ने अपने अजमेर स्थित जमादार को लिखा था, इनके अच्छे सम्बन्ध की बात ज्ञात होती है। पत्र में दीवान ने अपने जमादार को डांटते हुये लिखा है कि जो जगह सेठ गुमानीराम ले रहे हैं उस पर तुम्हारा दावा करना ठीक नहीं है। यह पत्र आसाढ़ सुदि 14 सं. 1890 का है।

सेठ किशनदास जी प्रेमसुखदासजी, गुमानीरामजी व कन्हैयालालजी का फैसला पहले हो चुका था पर कुछ बातों पर एक मत नहीं हुआ था । इस पर साहब बहादुर ने चारों भाईयों को बुलाकर समझाया। इस पर विभाजन को सबने मान लिया यह बात चैत सुदि 10 संवत 1896 की है।

इस प्रकार एक कर्मसंकुल जीवन जीते हुये फागुण बदी 7 सं. 1902 में उनकी मृत्यु जयपुर में हुई। उनकी पहली धर्मपत्नी की मृत्यु भादवा बदि 15 को हुई थी। सेठ गुमानीरामजी की महर्षि मंगलदत्तजी में विशेष श्रद्धा थी इसलिये महाराज प्रांयः लक्ष्मणगढ़ आते रहते थे। श्री महर्षिजी की प्रेरणा से आपने लक्ष्मणगढ़ में पूर्वोल्लिखित तालाब बनवाया था।[3] उस समय तालाब, धर्मशाला, प्याऊ, कूँआ आदि का बहुत महत्त्व था। दूर से आने वाला तालाब आदि का आश्रय पाकर एवं विश्राम कर आनंदित होता था। पशु पक्षी भी इससे अपनी प्यास बुझाते थे।

श्री गुमानीरामजी के दो पुत्र श्री जमनादास एवं श्री बद्रीदासजी थे । श्री जमनादाँसजी के सम्बन्ध में विशेष वृत्त प्राप्त नहीं है। पिता की मृत्यु के बाद सारे व्यवसाय को जमनादासजी ने संभाला । सेठ गुमानीरामजी के जीवन काल में ही भाईयों में सम्पत्ति का विभाजन हो गया था। इन्होंने अपनी माता झूमाबाई की बड़ी सेवा की और अपने साथ तीर्थाटन में लेकर गये। श्री जमनादासजी का जन्म सन् 1805 में (1862 वि.) में हुआ था। इनकी पत्नी का नाम माली था। यह बात हरिद्वार की बही से ज्ञात होती है। परिवार में वे मथुरावाली के नाम से प्रसिद्ध थी।

1860 में जमनादास 45 वर्ष की आयु में बैशाख सुदि पंचमी को गंगास्नान को हरिद्वार गये थे । वहीं से बद्रीनारायणजी की यात्रा को चले गये । अनुमानतः इन्होंने 55-60 वर्ष

3 महर्षि मंगलदत्त जी का जन्म गनेडी गांव में संवत् 1865 में हुआ था। आपके पिता पं. टोडरमलजी कर्मकाण्ड का काम करवाते थे । उन दिनों डाके बहुत पड़ते थे । एक विवाह के अवसर पर डाकुओं से संघर्ष हो जाने पर श्री टोडरमल जी के हाथ से एक राजपूत डाकू मारा गया। मृत डाकू के सम्बन्धी बैर लेने के लिये गांव में आते रहते थे। श्री टोडरमल ने अतंतः गनेड़ी छोड़ दी और लाडवी गांव में रहने लगे । श्री मंगल दत्त जी ने शेखावाटी क्षेत्र में अविद्या के गहन अंधकार को मिटाकर उज्जवल ज्ञान का प्रकाश फैलाया। आप देश भर में यत्र तत्र घूमते रहतेथे।

की आयु पायी । इनकी पत्नी 73 वर्ष की अवस्था में सन् 1878 में अपने भतीजे के साथ गढ़मुक्तेश्वर स्नान को गयी । श्री जमनादासजी के एक पुत्र रामप्रसादजी का जन्म लगभग 1825 ई. में हुआ था। कहते हैं कि इनका असमय में विवाह के बाद ही देहान्त हो गया था । इनकी पत्नी चन्द्रीदेवी ने 80 वर्ष की आयु पायी ।

श्री रामप्रसादजी ने एक पुत्र श्री रूडमलजी को जन्म दिया । इनका जन्म सन् 1845 (वि. 1902) में हुआ था। इन्होंने सिर्फ 38 वर्ष की आयु पाई। इनकी मृत्यु सन् 1883 में हो गयी। इनकी मृत्यु के समय दादी मानी बाई, माता चन्द्रीदेवी और रूडमलजी की विधवा पत्नी ये तीन विधवायें ही परिवार में रहीं । रूडमलजी की पत्नी का शरीर सन् 1924 में गया। इस प्रकार दुर्दैव की एक अकृपा इस परिवार के पुरूष वर्ग का अकाल में निधन करती रही ।

इस विपत्ति के समय सेठ रामप्रसादजी की धर्मपत्नी चन्द्रीदेवी ने असीम साहस और कुशलता का परिचय दिया। इन्होंने कष्ट सहते हुये बडे परिश्रम पूर्वक सिरसा की जमीदारियों को सम्हाला। वैधव्य प्राप्ति के समय वे 23-25 साल की थी। उन्होंने अपने पति के घर के बाहर कभी पैर नहीं रखा था। पर इस असहाय पारिवारिक स्थिति की गंम्भीरता को उन्होंने समझा और सभी को विस्मय में डालते हुये अपनी हवेली से निकलकर अपने दरबान-मुनीमों के साथ सिरसा जा पहुँची । उन्होंने अब जमीदारियों का काम स्वयं देखना शरू किया। आप सिरसा में अपने नोहरे में पर्दे में बैठकर रैयत की कचहरी लगाती । जल्दी ही जमींदारी में उनका सुनाम हो गया। वे पटवारी, मुनीम और गुमाश्तों पर पूरी निगरानी रखती थी। इस प्रकार की सुव्यवस्था के पुनर्संस्थापन से जमीदारियों की आय में निरन्तर वृद्धि होती चली गई ।

श्री रूडमलजी के निधन के बाद श्री विश्वनाथजी को दत्तक के रूप में लियां गया। इनका जन्म सन् 1903 में हुआ था । श्री विश्वनाथजी को अपने पूर्वजों के इतिहास से बडा प्रेम था। उन्होंने उस वृत को यत्नपूर्वक सहेज कर रखा। उनके द्वारा डायरी के उल्लेख जो पुरानी बहियों से उतारे गये हैं, बडे महत्त्वपूर्ण हैं ।

सिरसा में श्री विश्वनाथजी ने अपनी जमीदारियों को सम्भाला। आपने धनार्जन के साथ-साथ सामाजिक सुकीर्ति का भी अर्जन किया। सिरसा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नयन में आपका बराबर योगदान रहा । इनका विवाह सन् 1917 में सिरसा भटट्वाला अग्रवाल परिवार में श्री बींजराजजी की सुकन्या कलावती देवी से हुआ। इस सुमाता से 6 पुत्रों और तीन कन्याओं की उत्पत्ति हुई। कलावतीजी का देहान्त 70 वर्ष की अवस्था में हुआ।

भारत विभाजन के समय आपकी काफी चल अचल सम्पत्ति बहावलपुर रियासत में डूब गयी। आप आगे चलकर कलकत्ता में स्थायी रूप से बस गये। आपके ज्येष्ठ पुत्र भागीरथलालजी का जन्म 1921 ई० में सावन सुदि 2 को हुआ। आपका विवाह सिरसा निवासी झुकरकावाले परिवार में श्री गणेशीलालजी की सुकन्या रूकमणीदेवी जी से हुआ। श्री विश्वनाथजी के द्वितीय पुत्र श्री सुखलालजी बी. काम. एल. एल. बी. हैं और कलकत्ता मे वकालत करते हैं। इनका जन्म कार्तिक बदी दसमी 1981 वि. को हुआ। इनका विवाह कलकत्ता निवासी चौधरी परिवार में हेमराजजी की सुकन्या भानुमति से हुआ है। सेठ गिरधारीलालजी के परिवार में आप पहले ग्रेजूएट हैं। तृतीय पुत्र श्री ओमप्रकाश एम. कोम., एल. एल. बी., कोस्ट एकाउन्टेन्ट और बिजिनेस मेनेजमेन्ट के डिग्री होल्डर हैं। इनका जन्म सन् 1931 (वि. 1988) में फागुन बदि 10 को हुआ । इनका विवाह कलकत्ता के चौधरी परिवार में बनवारीलालजी की सुकन्या शकुन्तलाजी से हुआ है । चतुर्थ पुत्र अविनाशचन्द्रजी बी. कोम., बी. ए. सी., चार्टर्ड एकाउन्टैंट है और सेक्रेटरीशिप अकाउन्टैन्सी, कोस्ट अकाउन्टेन्सी की डिग्रीयाँ प्राप्त कर चुके हैं। इनका जन्म ई. 1934 में आसोज बदि 12 को सिरसा में हुआ । इनका विवाह खड़गपुर में गाडोदिया परिवार में नन्दलालजी की पुत्री विमलांजी से हुआ है । पांचवे पुत्र श्री महेन्द्रप्रतापजी एडवोकेट हैं। इनका जन्म सिरसा में मंगसर बदि 14 स० 1995 में हुआ। इनका विवाह कलकत्ता में विश्वनाथ जी खेतान की सुकन्या बीणाजी से हुआ है। छठे पुत्र पवनकुमारजी का जन्म ज्येष्ठ सुदि 1998 में हुआ है। ये कलकत्ता में जुगलकिशोरजी तोदी की सुकन्या पुष्पाजी से विवाहे गये हैं। श्री पवनकुमार इलैक्ट्रिक इंजीनियर (ओनर्स) हैं।

श्री विश्वनाथजी की प्रथम कन्या राजेश्वरी बाई दिल्ली में कृष्णचन्द्रजी जालान को विवाही गई है। द्वितीय कन्या शकुन्तला बाई सिरसा में ख्यालीरामजी के साथ विवाही गई है। तृतीय कन्या दयावतीबाई का विवाह कलकत्ता में विश्वनाथजी टांटिया के साथ हुआ है।

श्री भागीरथलाल के प्रथम पुत्र श्री वीरेन्द्र हैं जो तीन पुत्रों दिवाकर, प्रभाकर और सुधाकार के पिता हैं। अन्य पुत्र नरेन्द्र, धीरेन्द्र और रवीन्द्र हैं। श्री नरेन्द्र के पुत्र गौरव है, श्री धीरेन्द्र के पंकज और श्री रवीन्द्र के मुन्ना है। श्री ओमप्रकाशजी के पुत्र राजकमलजी हैं। अविनाश के पुत्र सोमेश एवं रमेशचन्द्र हैं। श्री महेन्द्रपाल के पुत्र संदीप और श्री पवनकुमार के पुत्र अंशुमन है। श्री भागीरथमल का परिवार कलकत्ता कोटा और नागपुर में, श्री सुखलाल कलकत्ता में, श्री ओमप्रकाश का परिवार बम्बई व बैंगलोर में , अविनाश चन्द्र का और महेन्द्रप्रताप का कलकत्ता में, और पवनकुमार का परिवार भिलाई में रहता है।

श्री गुमानीरामजी के दूसरे पुत्र श्री बद्रीदासजी का जन्म अनुमानतः 1820 के आस-पास हुआ। इन्होंने सिर्फ 36 साल की आयु पायी। इनका देहान्त 1857 ई. में हुआ। इनकी धर्मपत्नी प्रायः 85 साल तक जिन्दा रहीं। उनका स्वर्गवास सन् 1907 में हुआ।

श्री बद्रीदासजी के पुत्र श्योप्रसादजी का देहान्त 28-30 वर्ष की अवस्था में हो गया था। इनका देहान्त सन् 1868 में हुआ। श्री शिवप्रसादजी को एक पुत्र हनुमान बक्सजी की प्राप्ती हुई। ये भी 30-35 की अवस्था में चले गये। श्री हनुमानजी के दत्तक पुत्र विशेसरलालजी की धर्मपत्नी मोहरी बाई के फूल हरिद्वार में सन् 1906 में पहुँचाये गये। इसके एक साल बाद 22 वर्ष की उम्र में विशेरशरलालजी का देहान्त हो गया। इसके दो मास बाद सन् 1907 में उनकी माता के फूल हरिद्वार पहुँच गये। इस प्रकार दैव दुर्विपाक से परिवार में मृत्यु की विभीषिकी का ताण्डव नृत्य अनवरत गति से होता रहा।

श्री विशेशरलालजी की धर्मपत्नी ने मृत्यु के पूर्व एक पुत्र बेणुगोपालजी को जन्म दिया। इनका पालन पोषण वंश की बडी बूढ़ी स्त्रियों ने किया। श्री बेणुगोपाल धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। धार्मिक पुस्तकों का इन्होंने प्रकाशन करवाया। इन्होंने साठ साल की पूरी आयु पायी। आप सन् 1906 में पैदा हुये और 3 फरवरी 1967 को दिवंगत हुये। आपका विवाह सिरसा में चौधरी परिवार में मीरादेवी के साथ हुआ था । ये मीरादेवी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। ये अधिकांश समय मौन धारण करती थीं और सारा काम अपने हाथों से करती थीं। इनकी मृत्यु 70 साल की आयु में 29 दिसम्बर, 1979 को हुई।

मीरादेवी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। बडे पुत्र नन्दलाल जन्म के चार साल बाद सेठ रामदत्तजी के दत्तक चले गये। दूसरे पुत्र श्री महावीर प्रसादजी हैं । आपका जन्म 25 जून 1927 को हुआ। आपके एक कन्या और दो सुपुत्र हैं। कन्या रमादेवी दिल्ली में रतनलालजी गुप्ता के सुपुत्र विनोद कुमारजी के साथ विवाही गयी हैं। आपके ज्येष्ठ पुत्र राजेन्द्र कुमारजी का जन्म 4 जून 1958 को हुआ। इनका विवाह लीलाधरजी गोल्या की सुकन्या उमादेवी से हुआ है। आप ग्रेजुएट हैं। आप म्युनिसीपल कमेटी सिरसा के सदस्य चुने गये हैं और पैतृक व्यवसाय को सम्भाल रहे हैं। श्री महावीरप्रसादजी के छोटे पुत्र अनिल कुमारजी हैं जिनका विवाह पटना में भिवाणी वाले परिवार में प्रहलादरायजी की सुकन्या आशादेवी से हुआ है। आप फरवाई गांव में पंचायत के सरपंच पद पर आसीन है। श्री राजेन्द्र के पुत्र रोहित और श्री अनिल के पुत्र अमित कुमार है। ये परिवार सिरसा एवं एलनाबाद में रहता है। श्री महावीर प्रसाद जी प्रान्तीय सोंसलिस्ट पार्टी के प्रधान हैं। आप राजनीति में काफी दिलचस्पी रखते हैं। आपने कई बार चुनावों में भाग लिया है।

आपका परिवार धार्मिक रूचि रखता है और प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों की यात्रा कर चुका है। आपने एलनाबाद में सिनेमाघर कायम कर रखा है। आपकी कोठी सिरसा में है। फरवाई

गांव में जमीदारी है। दिल्ली में भी आपका निजी निवास है।

श्री बद्रीदासजी के कनिष्ठ पुत्र श्योचन्द्ररायजी थे। ये परिवार मे बड़े तेजस्वी पुरूष हुये। इनका जन्म लक्ष्मणगढ़ में 1843-45 की अवधि में हुआ था। यह दुष्काल का समय था। आपने दीर्घ आयु पाई थी। आपने सपरिवार सिरसा से हरिद्वार की यात्रा की। आपने 1878 ई० में गढ़मुक्तेश्वर का स्नान किया था। आप स्थायी रूप से सिरसा में ही रहने लगे। उन्होंने अपनी जमीदारियों की अच्छी प्रकार देख भाल शुरू की जिससे आय में निरन्तर वृद्धि होती चली गई ।

श्री श्योचन्द्ररायजी की धर्मपत्नी का नाम हरदेई था। ये बिसाऊ के खेमका परिवार की सुकन्या थी। इनकी मृत्यु 60 वर्ष की अवस्था में सन् 1905 के आस-पास हुई। आपने तीन पुत्रों को जन्म दिया जिनमे जयेष्ठ पुत्र श्री मुरलीधरजी थे। इनका जन्म 1860 ई. में हुआ। इनका देहान्त सन् 1917 में हो गया । आपके दूसरे पुत्र रामदेवजी विवाह के उपरान्त मृत्यु को प्राप्त हुये। आपके तीसरे पुत्र विशेशरलालजी दत्तक चले गये।

श्री श्योचन्द्ररायजी ने अपनी व्यवसायिक कुशलता और अपने परिश्रम से जमीदारी और दुकानदारी की आय बढाई और कुल की प्रतिष्ठा में वृद्धि की। आपके सुपुत्र मुरलीधरजी दो सुपुत्रों के पिता हुये मेघराजजी एवं सत्यनारायणजी।

श्री मुरलीधरजी का जन्म सन् 1860 में हुआ था । ये अधिकतर लक्ष्मणगढ़ में ही रहे। इनका विवाह बिसाऊ में प्रहलादरायजी के परिवार की कन्या जानकीदेवी से हुआ। सन् 1905 में ये अपनी माता के फूल लेकर हरिद्वार गये। सन् 1917 में हरिद्वार स्नान को गये। इन्होंने 52-53 वर्ष की आयु पाई। आपकी पत्नी का देहान्त 73 साल की आयु में सन् 1938 में हुआ।

श्री मुरलीधरजी दो पुत्रों के पिता थे मेघराजजी और सत्यानारायणजी। श्री मेघराज जी का जन्म सन् 1903 में हुआ और श्री सत्यनारायणजी का जन्म 1910 में हुआ। श्री मेघराजजी का विवाह सिरसा में सराफों के परिवार में भूरी देवी के साथ हुआ। श्री सत्यनारायणजी का विवाह भी इसी परिवार में श्री मोहनलालजी गुप्ता की सुपुत्री रेखा रानी से हुआ है। श्री मेघराजजी पांच पुत्रों के पिता हुये। इनके पुत्रों के नाम श्री हरिराम, श्री श्रीकिशन, श्री गौरीशंकर, श्री राधेश्याम , श्री ओमप्रकाश हैं। श्री हरिरामजी का विवाह अवोहर में लक्ष्मीनारायण जी मोदी की सुकन्या सरस्वती देवी से हआ है। सन् 1981 में श्री गौरीशंकरजी का देहान्त 55 वर्ष की आयु में हो गया है। श्री राधेश्यामजी अमृतसर के एक सुविख्यात डाक्टर हैं। आपने अमृतसर में श्री हीरालालजी कपूर की सुकन्या से अन्तर्जातीय विवाह किया है। ओमप्रकाशजी फिरोजपुर में श्री परमानन्द जी गोयल की सुकन्या

राजकुमारी देवी से विवाहे गये। श्री मेघराजजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री हरिराम 7 पुत्रों के पिता है। ज्येष्ठ पुत्र श्री विजयकुमार का विवाह भादरा में सूरजमल जी महिपाल की सुकन्या प्रेमलताजी से हुआ है। इनके पुत्र का नाम दीपक कुमार है। विजयकुमार जी का देहान्त 1975 ई० में हो चुका है। श्री मोहनलालजी, जो प्रोफेसर हैं, का विवाह भटिंडा अंचल में गीदड़वा के सूरजमलजी अग्रवाल की सुकन्या उषारानी से हुआ है। इस सुमाता के एक पुत्र दुष्यन्त कुमार है। श्री निर्मल कुमार का विवाह लूहारु में बृजलाल जी गोयनका की सुकन्या आशाजी से हुआ। इस कुलशीला माता ने मुनीश देव को जन्म दिया है। श्री विजयकुमार और निर्मलकुमार गिरधारी लाल का परिवार सिरसा तथा श्री मोहनलाल का परिवार हिसार में रहता है।

श्री गिरधारी लालजी एक पुत्र के पिता हैं। यह परिवार सिरसा में है। श्री देवकीनंदन चंडीगढ़ हाईकोर्ट में वकालत करते हैं। श्री नवनीत एवं श्री महेश चंडीगढ़ में अपना व्यवसाय करते हैं। द्वितीय पुत्र श्री किशन ना-औलाद मर गये थे।

श्री मेघराजजी के तीसरे पुत्र श्री गौरी शंकरजी थे। इनके पुत्रों के नाम सुभाषचन्द, राकेश कुमार, राजीव कुमार, और राजेश कुमार हैं। इनमें से श्री सुभाष चन्द्र का विवाह सुन्दरनगर में रेखा रानी से हुआ है जिससे वरून कुमार और करन नामक पुत्र पैदा हुये हैं। सुभाष चन्द्र का परिवार अमृतसर में तथा शेष भाईयों का सिरसा में अवस्थित है। श्री मेघराजजी के चतुर्थ पुत्र श्री ओमप्रकाश दीपक व हेमन्त के पिता हैं व सिरसा में अवस्थित हैं।

श्री मुरलीधरजी के द्वितीय पुत्र सत्यनाराणजी के चार पुत्र प्रेमप्रकाश, आत्माराम, महेन्द्र कुमार और वीरेन्द्र हैं। श्री प्रेमप्रकाशजी, दिनेश कुमारजी एवं राजेश कुमार के पिता हैं। श्री आत्मारामजी ने प्रेमप्रकाशजी के लड़के संजय कुमार को गोद लिया है। ये परिवार सिरसा में अवस्थित हैं।

श्री गिरधारीलालजी के द्वितीय पुत्र का नाम श्री तनसुखराय था। ये श्री गिरधारी लाल जी की दूसरी पत्नी से उत्पन्न तीन पुत्रों में से सबसे बडे थे। इनका जन्म अनुमानतः 1800 के आस-पास हुआ था। इन्होंने लगभग 46 वर्ष की आयु पाई। इनके फूल हरिद्वार में सन् 1846 (वि. 1903) में गये। इनकी मृत्यु लक्ष्मणगढ़ में हुई। इनकी पत्नी का नाम छोटीबाई था । आपने हरिद्वार के साथ-साथ बद्रीधाम की भी यात्रा की थी। जिस समय तनसुखरायजी का शरीर गया उस समय श्री गुमानीरामजी जीवित थे। छोटे भाई श्री रामदयालजी का भी शरीर था। श्री तनसुखरायजी ने जीवन के 20 साल तो गनेड़ी में व्यतीत किये उसके बाद लक्ष्मणगढ़ में रहे। वे लक्ष्मणगढ़ में रहते हुये पिता की सम्पत्ति का सानन्द उपभोग करते रहे। आपके सिर्फ एक पुत्र रामनाथ हुआ।

श्री रामनाथजी ने तीन विवाह किये थे। आपका एक विवाह जोधराज परिवार में हुआ था। आपकी पहली पत्नी का नाम चांदकोरी था, जिनकी मृत्यु सन् 1854 के आस-पास हुई। आपकी दूसरी पत्नी के बारे में कोई उल्लेख नहीं मिला। तीसरी पत्नी सन् 1921 में हरिद्वार स्नान को लक्ष्मणगढ़ से गयी थी। श्री रामनाथजी की मृत्यु सन् 1862 के आस-पास हुई। आपके सुपुत्र रामकुमारजी के दो विवाह आपके सामने ही हुये।

श्री रामनाथजी के पुत्र श्री रामकुमारजी का जन्म 1868-70 में हुआ था। आपने अपनी पहले की जमीदारियों को सुव्यवस्थित किया एवं कुछ नयी जमीदारियाँ खरीदी। आपने मुनीमों पर अधिक निर्भर नहीं रहकर स्वयं सारा प्रबन्ध देखना शुरू किया । उन्होंने सिरसा में एक विशाल हवेली बनाई जहां वे थोड़े समय ठहरते थे ।

श्री रामकुमारजी ने तीन विवाह किये थे । इनमें से तीसरा विवाह अलसीसर के झुंझूनवालों के यहां हुआ था। उनकी पहली पत्नी का देहान्त सन् 1886 के आस-पास हुआ था, दूसरी पत्नी का देहान्त सन् 1900 में हुआ। इसी पत्नी ने सेठ रामदत्तजी को लक्ष्मणगढ़ में जन्म दिया। सन् 1900 में 36 साल की आयु में उन्होंने तीसरा विवाह किया था। रामकुमारजी 1908 में हरिद्वार स्नान को गये। इनका देहान्त सन् 1909 (1966 वि.) में हुआ था।

श्री रामकुमारजी जिन दिनों में सिरसा में जमीदारियों का काम संभालते रहे थे उन्हीं दिनों सेठ रामदत्तजी का जन्म हुआ। उनके जन्म का शुभ समाचार देने के लिये गणपतसिंह नामक घुड़सवार को लक्ष्मणगढ़ से सिरसा भेजा गया। उनके जन्म पर लक्ष्मणगढ़ में बड़ी खुशी मनायी गयी। इसका कारण यह था कि इस सम्पन्न परिवार में पूरे 55 वर्ष बाद एक सुपुत्र की उत्पत्ति हुई। बालक का नाम रामदत्त रखा गया । गनेड़ीवाला कुल में भगवान सीताराम जी का इष्ट होने से इस संतान को भगवान की असीम कृपा का फल माना गया। रामदत्तजी के जन्म के बाद श्री रामकुमारजी की द्वितीय पत्नी ने एक और पुत्र को जन्म दिया पर उसकी मृत्यु शीघ्र हो गयी।

श्री रामदत्तजी का विवाह सेठ रामकुमारजी ने अपने हाथों से आनन्दपूर्वक संपन्न किया। यह विवाह सन् 1906 में हुआ। यह विवाह खेमका परिवार के गोरधनदासजी की बहन नानी देवी के साथ कलकत्ता में हुआ। यह परिवार बडा सम्पन्न था। श्री रामदत्त जी के इस विवाह के बाद जल्दी ही श्री रामकुमारजी का देहान्त हो चुका था।

श्री रामदत्तजी बडे रोबदाब वाले दर्शनीय व्यक्ति थे। आपने अपनी अतुल सम्पत्ति के बल पर नई हवेली का निर्माण किया। आपने इस रहस्य को सबसे पहले हृदयंगम कर लिया था कि भूमि वसुधा का रूप है। इसलिए कृषि की उन्नति की ओर उन्होंने पूरा

ध्यान दिया। सम्भवतः श्री रामदत्तजी पहले जमींदार और मारवाड़ी सेठ थे जिन्होंने सन् 1948 में ट्रेक्टर खरीद कर नये ढंग से कृषि का सूत्रपात किया। आगे चलकर अपनी सभी कृषि को उन्होंने मैकेनाइज्ड कर दिया। आपने अमेरिका से एक विशाल हार्वेस्टर यंत्र मंगाया। हरियाणा के अन्य कृषकों को इससे बडी प्रेरणा मिली और वे लोग भी धीरे- धीरे नई खेती की ओर अग्रसर हुये।

उन्होंने कृषि-विज्ञान का पूरा अध्ययन किया और अपने निवास पर और अपनी फार्म कोठी पर सन् 1937 में टयूब बेल लगाकर एक नया प्रयोग सिंचाई के क्षेत्र में किया। इस विकास पद्धति से प्रभावित होकर सिरसा के दूसरे गनेड़ीवाला बन्धुओं ने भी इस पद्धति को अपनाया और उससे लाभान्वित हुये।

जब श्री रामदत्तजी सिरसा, और बहावलपुर में पूरी तरह प्रतिष्ठित हो गये तो आपको अनेकों रियायतें दी गयी। वे पहले हिन्दू थे जो भावलपुर राजदरबार में बिना तुर्की टोपी पहने जा सकते थे। वे अपनी स्वाभाविक पोशाक और पगड़ी पहनकर ही राजदरबार में जाते थे। उन्हें नवाब ने यह इज्जत बख्शी थी।

आपने बड़ी शान शौकत का जीवन जीया। अपने पिता द्वारा निर्मित पुराने ढंग की हवेली के स्थान पर उन्होंने विशाल राजशाही हवेली बनवायी। यह हवेली बीच बाजार में है व गनेड़ीवाला टावर के नाम से विख्यात है। इसमें भूरे लाल पत्थर और संगमरमर का उपयोग किया गया हे। इसका शिल्प मूलतः राजस्थानी है। यह हवेली सिरसा में सन् 1928 में बनकर तैयार हुई।

सन् 1929 से वे इस हवेली में रहने लगे। उस समय इसके निर्माण में 3-1/2 लाख रूपये लगे थे। आपने मोटर मंगवाने के पहले बिलायत से दो घोड़ा गाड़ी मंगायी। एक महिलाओं के लिये पर्दानशीन थी। इनके लिये अच्छे किस्म के घोड़े खरीदे।

श्री रामदत्तजी राजसी जीवन जी रहे थे। राज से उनका बड़ा सम्पर्क था। उनका कारोबार भी राजसी था। उनके प्रभाव को और कीर्ति को देखते हुये भावलपुर रियासत और ब्रिटिश हुकूमत की तरफ से उनको अनेकों अलंकरण मिले। सन् 1953 में भावलपुर रियासत के नवाब ने भारत सरकार से निवेदन किया कि सेठ रामदत्तजी को राय बहादुर की पदवी से अलंकृत किया जावे। स्वयं भावलपुर स्टेट ने उन्हें सेठ की पदवी 1933-34 में प्रदान कर दी थी। यह सिफारिश ले० कर्नल विल्वर फोर्स-बेल, एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल पंजाब से की गई थी। इस सिफारिश पर भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड लिनलिथगो ने सन् 1936 में उनको राय साहब की पदवी प्रदान की।

इसके पूर्व 24 अप्रैल 1941 को भारत के कमाण्डर इन चीफ जनरल ओचिंलेक का

एक प्रशंसा पत्र भी उनको प्राप्त हो चुका था। एक ऐसा ही पत्र 5 अक्तूबर 1940 का शिमला से उन्हें मिला। सरकार द्वारा शुरू किये गये कई फन्डों को उन्होंने आर्थिक मदद दी थी।

लाला मेहताबराय के कथनानुसार सेठ रामदत्तजी रईसाना ठाठ के व्यक्ति थे । उनके मलमल के कुरते लखनऊ से सिलकर आया करते थे। व्हाईट वेलेडलों से वे पम्पशू मंगाते थे। वेशभूषा में चूड़ीदार पाजामा और अचकन में रहते। आप सपरिवार हर साल हरिद्वार जाते थे । उन्होंने अनेकों तीर्थयात्रायें की थी। आप रामेश्वर धाम और द्वारकाजी की तीर्थ यात्रा पर गये थे। वहां आपको सर्दी लग गयी थी। इसी रोग से एक डेढ मास बाद 52 साल की उम्र में 1950 (वि. 2007) में आपका देहान्त हो गया।

भारत विभाजन के समय भावलपुर स्टेट में सब कुछ छोडकर आपको सिरसा आना पड़ा। वहां नहरों से सिंचित होने वाली 7000 एकड जमीन, 70 दुकानें, भव्य हवेली, मन्दिर सभी छोड़कर आना पड़ा था। भावलपुर को पाकिस्तान में मिला लिया गया था।

कुछ समय बाद बहावलपुर के हिज हाइनेस लंदन से वापिस बहावलपुर लौट आये तो उन्होंने अपने हिन्दु पर्सनल सेक्रेटरी कर्नल किशनचन्द को भेजकर सेठ रामदत्तजी से भेंट का आग्रह किया। रामदत्तजी नवम्बर 1947 में बहावलपुर गये। आपके साथ नवाब साहब ने आर्मड एस्कोर्ट भी दिया था। वे 15 दिनों तक नवाब के मेहमान रहे। उनसे बहावलपुर में रहने का आग्रह किया गया। उन्होंने नवाब साहिब से अनुरोध किया कि आपके खजाने में जमा हिन्दुओं की संपत्ति लौटा दी जाये। इस पर वह सभी संपत्ति देकर सेठ रामदत्तजी को सशस्त्र सेना के संरक्षण में हिन्दूमल कोट भेजा गया जहां हजारों शरणार्थी ठहरे थे। उन्होंने वह सारी सम्पत्ति सही मालिकों को लौटा दी। लोगों ने उन्हें हृदय से शुभाशीष दी।

भारत सरकार की तीन लाख की गर्वमेन्ट सेक्यूरिटीज जो सेठजी की थी वे भी नवाब ने लौटा दी और यह व्यवस्था कर दी कि उनका भुगतान करके वे ले जावें। भारत सरकार ने इनका मूल्यांकन 13 लाख स्वीकार किया था।

श्री रामदत्तजी का घटना-बहुल वृत्त श्री वैंक्टेशजी पारीक, सम्पादक लक्ष्मणशिला के कथन के साथ समाप्त किया जाता है। "सीनियर साहब ने रावराजा साहब से सलाह मशविरा किया। रावराजा साहब ने सेठ घराना एवं अपना सम्बन्ध बताया। तब सीनियर साहब स्वयं लक्ष्मणगढ तशरीफ लाये। उन दिनों सेठ रामदत्तजी यहां आये हुये थे। उन्होंने पुराने कागजों में से जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और मेवाड़, उदयपुर के राजा महाराजाओं के सेठ घराने के प्रति लिखित सम्मानजनक दस्तावेज निकालकर अपने पास रख लिये थे। फिर सीनियर

साहब को मिलने के लिये अपनी बडी और ऊँची गद्दी जो मुरलीमनोहर जी के मन्दिर के पास है, में बुलाया। सीनियर साहब आये। सेठ जी बडे डीलडोल के प्रभावशाली व्यक्ति थे। सफेद कुर्त्ता पहने हुये थे। कड़कदार दुपट्टा लगाये हुये थे। सर पर केसरिया पगड़ी थी। अपनी गद्दी में बहुत बडे मसन्ड के सहारे बैठे हुये थे। उनका मुँह तमतमाया हुआ था। उठकर सीनियर साहब का स्वागत किया। हाथ मिलाया। गद्दी पर मसन्ड के पास तक लाये। आहिस्ता से दोनों मसन्ड के पास बैठ गये। सेठजी धीर गम्भीर वाणी में बोले और वे सब कागज दिखाये जो उनके वंश के सम्मान में थे यह देख कर सीनियर साहब बड़े खुश हुए। [4]

श्री रामदत्तजी के दत्तक पुत्र श्री नन्दलाल का जन्म सन् 1924 में 9 अगस्त को हुआ था। उनके पिता का नाम वेणुगोपालजी था। चार वर्ष की अवस्था में वे सेठ रामदत्तजी के यहां दत्तक आये थे। आपका लालन-पालन राजसी ढंग से हुआ। पिता की सौम्य परम्पराओं को उन्होंने अपने जीवन में प्रतिफलित किया। श्री रामदत्तजी ने इनका विवाह सन् 1940 में सोलह वर्ष की अवस्था में सुविख्यात समाज सेवी रामरिखदासजी परसरामपुरिया की एक मात्र सुकन्या भगवती बाई से किया।

श्री नन्दलालजी ने पिता के जीवन काल में ही जमीदारियों का काम संभालना शुरू कर दिया था । सार्वजनिक गतिविधियों में भी वे बराबर भाग लेने लगे । आप 1967 में सिरसा में रोटरी क्लब के फाउण्डर प्रेजिडेन्ट बने। लगभग 16-17 साल हो गये हैं आप सिरसा रोटरी क्लब के वाइस प्रेजिडेन्ट हैं। आपने 5 और नगरों में रोटरी क्लब की शाखायें खुलवायीं। इसके उपलक्ष्य में जब इन्टरनेशनल रोटरी क्लब के प्रेजिडेन्ट शैल्टन भारत में आये तो चंडीगढ के एक विशिष्ट समारोह में आपको पाल हैरिसन फैलो का पदक प्रदान किया गया।

श्री नन्दलालजी गनेडीवाला अच्छे स्पोर्टसमेन हैं। इसलिये रोटरी क्लब की डिस्ट्रिक्ट कमेटी ने आपको डिस्ट्रिक्ट स्पोर्ट्स एवं गेम्ज कमेटी का चैयरमेन नियुक्त किया है। आप आल इण्डिया वीमेन्स नेशनल फेडरेशन की कार्यकारिणी समिति के सम्मानित सदस्य हैं।

आपने नगर में स्वचालित शौचालयों के प्रसार के काम को आगे बढ़ाया। दूसरा बडा काम सिरसा में टेलीफोन एक्सचेन्ज की स्थापना का आप द्वारा हुआ। आपने इसके लिये अपने भवन में स्थान दिया । इससे नगर निवासियों को काफी सुविधा हुई। सिरसा में सार्वजनिक शिक्षा प्रसार के काम में भी आपका बड़ा योगदान है। आप आर्य हायर सेकेण्डरी एवं प्राईमरी स्कूल के सभापति हैं। सिरसा के नेशनल कालेज के संस्थापन काल से ही आप वाइस प्रेजिडेन्ट हैं।

4 लक्ष्मणगढ शिलापत्रिका सं. श्री बैकटेश पारीक, लक्ष्मणगढ 1-2-87

इन्होंने अपनी पैतृक निधि में से तीन चैरिटेबल ट्रस्ट स्थापित किये हैं। पहला सेठ रामदत्त गनेड़ीवाला चैरिटेबल ट्रस्ट है। इसके अन्तर्गत आंखों का अस्पताल चलता है। दूसरा ट्रस्ट सेठ नन्दलाल गनेडीवाला चैरीटेबल ट्रस्ट है। इसके अन्तर्गत समाज सेवा की अनेकों गतिविधियाँ चलती हैं। तीसरा आपकी धर्मपत्नी के नाम पर भगवतीदेवी गनेड़ीवाला चैरिटेबल ट्रस्ट है।

आपने लक्ष्मणगढ़ की अपनी हवेली को ट्रस्ट के नीचे देकर सार्वजनिक धर्मशाला का रूप दे दिया है। आपने बद्रीधाम में अपनी माता नानी देवी की स्मृति में एक कमरा बनवाया है । इसी तरह एक कमरा केदारनाथ धाम में बनाया गया है। दिल्ली में ग्रेटर कैलाश में पहाड़ी पर बने मंदिर के पास साधु आश्रम में एक कमरा बनाया है। आपकी धर्मपत्नी धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत सद्गृहणी हैं।

श्री नंदलालजी ने सन् 1967 में सत्यानारायणजी के पुत्र गिरीश मोहन को गोद लिया है। इसके पहले उनके एक पुत्र हुआ था पर वह प्रसवकाल में ही चल बसा। श्री गिरीश मोहन बी. कॉम. है । आपका विवाह फिरोजाबाद के सन्त कुमारजी मित्तल की सुकन्या रेणुदेवी से हुआ है। आप यूरोप का दो बार भ्रमण कर चुके हैं। आपको एक पुत्ररत्न अनुपमकुमार की प्राप्ति हो चुकी है। ये परिवार सिरसा, फतियाबाद और दिल्ली में व्यवस्थित है। फतियाबाद में इनका सिनेमा है। दिल्ली व हरियाणा-राजस्थान में आपके कई कारोबार हैं।

श्री गिरधारीलालजी के तीसरे पुत्र श्री रामदयालजी थे । इनका जन्म सन् 1802 के आस पास हुआ था। इनके अस्थिफूल 64 वर्ष की अवस्था में सन् 1866 में हरिद्वार आये थे। ये काफी वर्षों तक रोगशैया पर रहे। सन् 1892 में इनकी पत्नी का देहान्त हुआ जो उस समय प्रायः 90 वर्ष की थी ।

सेठ रामदयालजी सम्बंधी अनेकों कागज अंग्रेज अधिकारियों के लिखे हुये गनेड़ीवाला संग्रह में हैं। इनसे ज्ञात होता है कि श्री रामदयालजी काफी समय तक सिरसा में रहकर व्यवसाय करते रहे। उनके अंग्रेज अधिकारियों से अच्छे सम्बन्ध थे। वे सरकार की तरफ से सिरसा के पंच रहे। जब लाट साहब सिरसा आये तो सेठ रामदयालजी उनसे मिलने गये। लाट साहब ने उन्हें कुर्सी पर बैठाया ।

एक पत्र मे जो एडवर्ड रोबिन्सन का है, इस बात पर अफसोस जाहिर किया गया है कि सेठ रामदयाल यहां से जाने का विचार कर रहे हैं। उनसे और कन्हैयालाल तथा हरभजनदासजी से कहा गया है कि अच्छी तरह कोठी और तिजारत का कारबार करो। यह पत्र 4 फरवरी 1852 का है। इनके दादा और पिता द्वारा संचित धन तीसरी चौथी

पीढ़ी द्वारा उपभुक्त होता रहा। सेठ लोग अधिकतर लक्ष्मनगढ़ रहकर सेठाई का उपभोग करते रहे और व्यवसाय का काम मुख्यतः मुनीम गुमाश्तों के हाथों में ही रहा। पांचवी पीढ़ी में श्री मुरलीधरजी पैदा हुये जो बड़े होनहार थे पर उनका देहान्त 25 वर्ष की अल्प आयु में हो गया ।

श्री रामदयालजी के पुत्र गुलाबरायजी, बिहारीलाल जी एवं गुरूमुखरायजी हुये। श्री गुलाबरायजी का जन्म 1820-24 की अवधि में हुआ था। इनके पुत्र श्री भूरामलजी चार पुत्रों के पिता थे, मुरलीधरजी, श्री गजाधरजी, शिवदयालजी और श्री बिशनदत्तजी। श्री गुलाबरायजी का देहान्त सन् 1850-54 में 30-34 वर्ष की अवस्था में हुआ। श्री मुरलीधरजी का दुखद निधन जब युवावस्था में हो गया और कोई संतान नहीं हुई तो श्री मदनलालजी को दत्तक के रूप में लाया गया। वैसे श्री मदनलालजी मुरलीधरजी के सगे भाई थे।

श्री मुरलीधरजी (जन्म 1935 ई.) अपने पिता की ज्येष्ठ संतान थे। इनका विवाह फतेहपुर में जादूरामजी भरतिया परिवार में हुआ था। इनकी मृत्यु संवत् 1960 में हुई। उनकी विधवा पत्नी पति की अकाल मृत्यु के बाद भी सन् 1949 तक जीती रही। इन्होंने लगभग 70 साल की उम्र पाई।

इन्हें धनार्जन के लिये बाहर जाना पड़ा ताकि परिवार का पालन पोषण किया जा सके। श्री भूरामलजी जिनका जन्म 1844 में हुआ था के तीसरे पुत्र गजाधर जी भी धन कमाने हेतु कलकत्ता गये थे। कलकत्ता की एक दो यात्रा करके श्री मदनलालजी ने अपने लिये नया क्षेत्र खोजा। वे बिहार के संथाल परगने के साहबगंज में जाकर बस गये। वहां इन्होंने बडा नाम कमाया। इनके पुत्र शंकरलाल एवं शंभुलाल दिल्ली में बस गये। उन्होंने साहबगंज छोड दिया। इस प्रकार सेठ महानंदरामजी के आठवी पीढ़ी के लोग हैदराबाद, लक्ष्मणगढ, सिरसा, साहबगंज और दिल्ली में बस गये और अपना व्यवसाय करने लगे।

श्री मदनलाल जी का जन्म अनुमानतः सन् 1905 (वि. 1962) में हुआ था। आपका विवाह नवलगढ़ में रामरिखदास मछेरीलाल मुरारका के यहां हुआ था । यह मुरारका परिवार नवलगढ़ से उठकर सीतापुर जाकर बस गया था। मदनलालजी के तीन कन्यायें गिनिया देवी, रतनी देवी और शकुन्तला देवी थी और दो पुत्र शंकरलाल एवं शंभूलाल हुये। गिनियादेवी का जन्म सन् 1921 में हुआ ।

श्री मदनलालजी विवाह के बाद अपने मौसे मटरूमल धन्नालाल के पास साहबगंज चले गये और अच्छा व्यवसाय करने लगे। सामाजिक कामों में भी भाग लेते रहे। आप साहबगंज सेवा समिति के सभापति रहे हैं। सरकारी हलकों में भी आपकी पूरी मान्यता रही। वे जीवनभर साहबगंज रहे। यहीं सन् 1948 (2005 वि.) के लगभग उनका देहान्त हुआ। वहीं पर इनकी माताजी का शरीरांत हुआ।

श्री शंकरलालजी का जन्म पौष कृष्ण दशमी सोमवार संवत् 1986 को हुआ। आपके भाई शंभूलालजी आपसे चार वर्ष छोटे हैं। शंकरलालजी का विवाह जमालपुर में ताराचन्द जी तोला की सुकन्या गीतादेवी से हुआ है। श्री शंभुलालजी का विवाह फतेहपुर के बूबना परिवार में अनंतरामजी की सुकन्या चन्द्रकलाजी से हुआ है। शंकरलालजी के पुत्रों के नाम प्रदीप, संतोष, प्रकाश, अशोक, आलोक और सूरज हैं। इनमें से प्रदीपजी का विवाह सिरसा में रामप्रकाशजी गोयल की सुकन्या स्नेहलताजी से हुआ है जिससे ऋषिकुमार का जन्म हुआ है। द्वितीय पुत्र सन्तोष कुमार का विवाह कलकत्ता में श्री लक्ष्मीनारायण खेतान सुजानगढ़ वासी की सुकन्या चन्द्रकलाजी से हुआ है इससे दो कन्यायें सपना और श्वेता तथा पुत्र विक्रम ने जन्म लिया है।

श्री शंभुलालजी के तीन सुकन्यायें संगीता, सीमाकुमारी, और सोनू हैं। आपके दो पुत्र संजीव कुमार एवं सुजीत कुमार हैं। श्री शंभुलालजी एवं उनके बड़े भाई दोनों ने ग्लास का व्यवसाय अपनाया है। आप लोग इस व्यवसाय को परिश्रमपूर्वक उन्नत अवस्था की ओर ले जा रहे हैं। दोनों ही भाई अपने कुल की गौरव गरिमा के प्रति सजग हैं। ये परिवार दिल्ली और सिरसा में बसे हुये हैं।

श्री भूरामलजी के दूसरे पुत्र गजाधर जी थे। इनके दो पुत्रों के नाम श्री लालजी एवं रामगोपालजी है। श्री लालजी धार्मिक प्रवृत्ति वाले व्यक्ति थे। आपने शीशे का काम किया। श्री रामगोपालजी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं। इन्होंने कांच का काम पूरी तरह जमाया। अब आपकी पत्नी के देहान्त के बाद वृन्दावन अधिक रहते हैं। श्री लालजी के तीन पुत्र हुये, श्री श्याम सुन्दर, श्री बलदेव प्रसाद एवं श्री बनवारीलाल। श्री बलदेव प्रसाद सामाजिक रूचि रखते हैं। श्री श्याम सुन्दरजी के दो पुत्र विजय एवं सुशील हैं। श्री विजय के पुत्र गौरंग तथा श्री सुशील कुमार के पुत्र सौरभ एवं गौरव हैं। इनका शीशे और कपड़े का कार्य है। श्री बलदेव प्रसादजी के दो पुत्र सुरेश एवं नरेश हैं। श्री सुरेश के पुत्र उमेश हैं। श्री बनवारी लालजी सुनील और अनिल के पिता हैं। यह परिवार कलकत्ता में स्थित है।

श्री रामगोपालजी के चार पुत्र हैं, श्री मुरारीलाल, जगदीशप्रसाद, शरद कुमार और रमेश कुमार । श्री मुरारीलालजी 5 पुत्रों के पिता हैं, जिनके नाम अरूण, अनूप, मनोज, आदित्य और हरीश हैं। श्री अनूप के पुत्र अतुल और श्री मनोज के पुत्र कमलनयन हैं। श्री जगदीश प्रसाद के पुत्र नवनीत हैं तथा श्री शरद कुमार के पुत्र सुदर्शन एवम् नीरज हैं। श्री रमेश के पुत्र तिलक हैं। श्री मुरारीलाल का परिवार कलकत्ता और भुवनेश्वर में, श्री जगदीश प्रसाद का काठमाण्डु में एवं श्री शरद एवं श्री रमेश के परिवार कलकत्ता में रहकर व्यवसाय कर रहे हैं।

श्री भूरामलजी के तृतीय पुत्र श्री शिवदयालजी का जन्म 1890 ई० में हुआ था। इनका विवाह फिरोजपुर में रायसाहब रामसुखदास एडवोकेट की सुकन्या दुर्गादेवी से हुआ था। इस माता से गोविन्दप्रसाद और श्रीमती देवी का जन्म हुआ । श्रीमती देवी का विवाह लाडंनू मे आत्मरामजी धनावत से हुआ।

श्री गोविन्द प्रसादजी का जन्म सन् 1914 में हुआ था। इनका विवाह कांवट के पौद्दारों के परिवार में रायसाहिब प्रभुदयालजी की सुकन्या रामसरूपी देवी से हुआ। शिवदयालजी की धर्मपत्नी दुर्गादेवी का देहान्त 1947 ई. में हुआ। इस के आठ दस मास बाद ही श्री शिवदयालजी का देहान्त भी 58 साल की उम्र में हो गया।

श्री गोविन्द प्रसादजी सन् 1935 के आसपास सिरसा में सपरिवार रहने लगे और जमींदारी की देखरेख करने लगे। आपके चार पुत्र हुये श्री विनोद कुमार, श्री रतनलाल, श्री ओमप्रकाश और श्री अनिल। श्री विनोद कुमार एडवोकेट थे। उनका अकस्मात् निधन सन् 1988 में हो गया। दूसरे पुत्र भी सुशिक्षित हैं। श्री रतनलाल सिरसा में रह कर वकालत करते हैं इनके पुत्र गौरव और नवीन हैं। श्री ओमप्रकाश के पुत्र मधुर हैं। श्री अनिल भी एक पुत्र के पिता हैं व खुद फोरेस्ट ऑफीसर हैं।

सेठ रामदयालजी अपने पूर्वजों की तरह ठिकानों में बोरगत का काम करते रहते थे। अनेकों ठिकानों को वें ऋण देते थे। संग्रह में एक पत्र श्यामगढ़ के बसाने वाले ठाकुर श्यामसिंह का है जिसमें लिखा है कि आपके किश्त के रूपये अगली साख पर देगें क्योंकि इस बार फसल अच्छी नहीं हुई। आपने कुंवर रामसिंह को 5-6 घोड़े देकर भेजने को लिखा सो अभी घोड़े इधर उधर गये हुये हैं। पत्र मंगसर सुदि 15 संवत् 1817 का है।

श्री गोविन्दप्रसादजी का देहांत 1976 में हो गया। श्री विनोदजी ने परिवार में ज्येष्ठ पुत्र की सारी जिम्मेवारियां संभाली और अपने भाईयों का अच्छे परिवार में विवाह किया। आपका जन्म 4 दिसम्बर 1941 को हुआ। यह परिवार सिरसे में रहता है।

श्री भूरामलजी के चतुर्थ पुत्र श्री बिशनदत्तजी थे। इनका जन्म सन् 1892 में हुआ था। इनका विवाह लुहारु के पास सुहासडा गांव में डालमिया परिवार की सुकन्या सरस्वती देवी से हुआ था। इन्होंने 40 वर्ष की अवस्था में सिरसा को अपना आवास बनाया। यहां पर श्री रामदत्तजी गनेडीवाला सन् 1920 से बसे हुये थे। आपने यहां रहकर जमीदारियों को देखभाल शुरू कर दी। सन् 1954 में भाखड़ा नहर सिरसा में आने से कृषि की बड़ी उन्नति हुई। श्री बिशनदत्तजी सोत्साह जमीदारी का काम सम्भालते रहे। सन् 1953 में वे 61 वर्ष की आयु में दिवंगत हो गये। इनकी मृत्यु के बाद इनके पुत्रों ने जमीदारी का काम संभाल लिया।

श्री बिशनदत्तजी के चार पुत्र हुये। श्री महावीर प्रसाद जी, श्री नन्दलालजी, श्री केशरदेव जी एवं श्री भगवती प्रशादजी। श्री महावीर प्रसाद के दत्तक पुत्र शशिकान्त हैं। श्री नन्दलालजी तीन पुत्र किशोरीलाल, श्री इन्द्रकुमार, एवं श्री शशिकान्त के पिता हैं। श्री शशिकान्तजी महावीरजी के गोद है। श्री नन्दलालजी अपने पिता के समय से ही अपनी जिम्मेदारी भली भाँति चलाते हैं। आप कानून के अच्छे जानकर हैं। इनसे परिवार के लोग व अन्य गणमान्य व्यक्ति सलाह मशविरा करते रहते हैं। श्री केशरदेव जी 7 पुत्रों सतीश, सुशील, नरेश, सुनील, संदीप राजीव और संजीव के पिता हैं। श्री भगवती प्रशादजी के तीन पुत्र ललित, कपिल और कृष्ण कुमार हैं।

श्री बिशनदत्तजी के पुत्रों ने कृषि व्यवस्था पर विशेष ध्यान देकर उसे अर्थवती बनाया और दूसरे लोगों के सामने एक उदाहरण पेश किया। श्री नन्दलालजी ने अपनी कड़ी निगरानी में कृषि की गतिविधियों को आगे बढ़ाया फलस्वरूप सिरसा की उनकी जमीदारी की वसुन्धरा शस्य श्यामल हो उठी। सिरसा में श्री नन्दलालजी का फार्म हाउस है। आज नहरी पानी का यह वरदान है कि किसी समय बंजर के समान पड़ी वह शुष्क भूमि एक अतुलनीय हरियाली से सरोबार हो उठी है।

श्री नन्दलालजी का विवाह सिरसा में सांखूवाला परिवार मे शान्ति देवी के साथ हुआ है। आपके छोटे भाई केशवदेवजी का विवाह भी इसी सांखूवाला परिवार में हुआ है। आपकी धर्मपत्नी का नाम भी शान्ति देवी है। आपके छोटे भाई भगवती प्रशादजी का विवाह पिलानी में दुर्गादेवी के साथ हुआ है।

श्री नन्दलालजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री किशोरी लाल का विवाह एलानाबाद में श्री गौरीशंकर जालान की सुकन्या शारदा के साथ हुआ है। आपके दूसरे पुत्र श्री इन्द्र कुमार का विवाह भुवनेश्वर निवासी साहूवाला परिवार में हरिद्वारी लालजी की सुकन्या पुष्पा देवी से हुआ है। दोनों भाई एल० एल० बी० हैं। श्री नन्दलालजी की बड़ी सुकन्या विमला बाई का विवाह मुज्जफरनगर में काशीराम बैजनाथ के श्री देवेन्द्र कुमार के साथ हुआ है।

दूसरी कन्या सरलाजी का विवाह सोनीपत के विजय कुमारजी गुप्ता के साथ हुआ है। तीसरी सुकन्या सुलोचनाजी का विवाह बीकानेर के जेठमलजी तुलसी रामजी के श्री नरेश कुमार के साथ हुआ है। चौथी सुकन्या मीनाक्षी, श्री राम कान्तजी भगेरिया के सुपुत्र श्री योगेश कुमार से दिल्ली में विवाही गई। श्री किशोरीलाल के सुमन, रूचि और मुक्ता तीन कन्याये हैं। श्री इन्द्रकुमार टीना, पायल और वासु के पिता हैं। श्री केशर देव जी के पुत्रों के अतिरिक्त तीन कन्याये पुष्पाजी, स्नेहलता जी और सुनीता जी हैं। पुष्पाजी का विवाह सादुलशहर में नवलराम शुभकरण के गिरधारी लालजी जैसलसरिया के साथ हुआ है।

श्री भगतरामजी के तीन पुत्रों के अलावा विजय लक्ष्मीजी एवं प्रमिलाजी नाम की दो कन्यायें भी हैं। श्री नन्दलालजी की माता सरस्वती जी का देहान्त 70 वर्ष की अवस्था में सन् 1972 में हुआ। श्री नन्दलाल जी केशवदेव जी और भगवती प्रशादजी तीनों भाई एक साथ मिलकर कृषि के व्यवसाय में सह भागीदार बने हुये हैं। आपकी फर्म नन्दलाल केशवदेव के नाम से प्रतिष्ठित है। ये सारे परिवार सिरसा में स्थित हैं। श्री रामदयालजी के दूसरे पुत्र श्री बिहारीलालजी थे। इनका जन्म सन् 1828 के आस-पास हुआ था। ये लक्ष्मणगढ़ में स्थायी रूप से रहे। इनके मुख्य व्यवसाय के रूप में सिरसा की जमीदारियाँ थी। आपका काम सिरसा में अधिकतर मुनीम ही करते रहे। आपके चार पुत्र हुये रामकिशनदासजी, आनन्दी लालजी, रामकुमारजी एवं गंगाधरजी। इनमें से श्री रामकिशन दासजी का परिवार आगे नहीं चला।

श्री बिहारीलालजी के तृतीय पुत्र रामकुमारजी को रामनाथजी को दत्तक में दे दिया गया था। श्री रामकुमार का जन्म 1868-70 की अवधि में हुआ था। श्री बिहारीलालजी के चतुर्थ पुत्र गंगाधरजी का जन्म सन् 1873 में हुआ था । ये भी स्थायी रूप से लक्ष्मणगढ़ में रहे। आपके दो विवाह हुये। पहली पत्नी से केवल दो पुत्र हुये । ब्रह्मादत्त जी और देवीदत्तजी। दूसरे विवाह से तीन पुत्रियां हुई। आपका पहला विवाह अलसीसर में झुंझुनूवाला परिवार में हुआ था। दूसरा विवाह आगरे वाले नवलगढ़ निवासी नथमलजी कन्दोई की सुकन्या गोदावरी देवी से हुआ था । आपने लगभग 60 वर्ष की उम्र पायी तथा 1933 ई० में आपका स्वर्गवास हुआ।

श्री ब्रह्मादत्त जी के सुपुत्र श्री रामचन्द्र जी थे जो 6 पुत्रों श्री रामनरसिंग, श्रीराम प्रताप, श्री दामोदर, श्री रामजी लाल, श्री रामकरण, श्री विमल कुमार के पिता हुये। प्रथम पुत्र के श्री पवनकुमारजी हैं। द्वितीय पुत्र श्री रामप्रताप तीन पुत्रों प्रमोद व राजकुमार और रघुबीर के पिता हैं। श्री रामजी लालजी के राकेश और श्री रामकरनजी के अभिषेक नामक पुत्र हैं। श्री रामकरणजी चाटर्ड अकाउन्टैन्ट हैं। बम्बई में रहते हैं। श्री विमल कुमार जलगांव में रहकर अपना व्यवसाय करते हैं। श्री दामोंदर कलकत्ता एवं श्री रामजीलाल सिरसा में रहते है ।

सन् 1850 के बाद से हरियाणा की जमीदारी की आय में निरन्तर कमी सूखे के कारण आती गयी। श्री देवीदत्तजी के बड़े भाई ब्रह्मादत्तजी अपने ताउ जी के दत्तक चले गये। श्री ब्रह्मादत्तजी का परिवार कलकत्ता, सिरसा, बम्बई, जलगांव में रहता है।

श्री गंगाधरजी के द्वितीय पुत्र श्री देवीदत्तजी का जन्म सन् 1873 में हुआ था। इनका विवाह नवलगढ के जैपुरिया परिवार में आनन्दीरामजी जैपुरिया की सुकन्या कमलादेवीजी के साथ हुआ। इनके दो पुत्र श्री सत्यनारायणजी एवं रामनिरंजनजी हुये। श्री सत्यनाराणजी

के दो पुत्र अंजनी कुमारजी एवं अश्वनी कुमारजी हैं। श्री रामनिरंजनजी के तीन पुत्र कमला प्रसादजी, शशि कुमारजी एवं राजेन्द्र कुमारजी है। श्री कमला प्रसादजी के सुपुत्र संजय हैं। श्री राजेन्द्र कुमारजी के पुत्र मुन्ना हैं। सत्यनारायणजी का जन्म सवत् 1974 में लक्ष्मणगढ़ में हुआ था। उस समय लक्ष्मणगढ में गनेड़ीवाला परिवार की हवेलियां पूरी तरह आबाद थीं। इनके दो विवाह हुये। पहला विवाह ठाणीवाला चमड़िया परिवार में हुआ। दूसरा विवाह रामगढ में पौद्दार परिवार में हुआ। आपकी बडी पुत्री मदालसा का विवाह लाडनू निवासी धूबडी के ललित कुमारजी धनावत से हुआ जो महालक्ष्मी कोरपोरेशन के मालिक हैं। दूसरी कन्या उषा अभी पढ़ रही है। आपके ज्येष्ठ पुत्र अंजनीजी वकील हैं। आपका विवाह विदुषी कविता से हुआ है जो कि गाजियाबाद के मित्तल परिवार की हैं। ये राजनीति विज्ञान में एम. ए. हैं। दूसरे पुत्र अश्विनी कुमारजी को आपके मामा के यहां दत्तक दिया गया है। तीसरे पुत्र गिरीशजी हैं जो सेठ नंदलालजी को दत्तक दिये गये हैं। आप ग्रेजुएट हैं। श्री देवीदत्तजी का परिवार लक्ष्मणगढ़ में रहता था पर आप सिरसा में अधिक रहे। आपने बहावलपुर की दुकान का काम भी सम्भाला। भारत विभाजन के समय आप मैकलोडगंज में निवास करते थे जो बहावलपुर स्टेट में था। स्टेट की तरफ से आपके कहने पर उन सभी परिवारों को सुरक्षित भारत लौटने की व्यवस्था की गयी क्योंकि आपने अकेले जाने से इनकार कर दिया था। आप भी गुप्तदान करते रहते थे। आपका स्वर्गवास सन् 1947 में 74 वर्ष की अवस्था में हुआ। जो सैकडों लोग उनके साथ आये थे उनमें अस्सी वर्षीय पण्डित श्री हीरालालजी भी थे। उनके अनुसार सेठ जी देवता थे। जिन्होंने सैकडों लोगों के प्राण बचाये।

रावराजा माधव सिंह के जमानेकी अन्य घटना जिससे गनेड़ीवाला परिवार का गहरा सम्बन्ध है जो यहां उल्लेखनीय है। उस जमाने में बेगारी प्रथा सभी ठिकानों मे व्याप्त थी। लोगों को पकड़कर जबरदस्ती काम कराना बेगार कहलाता था। राज के विभिन्न काम बेगारी करते थे। लोगों के ऊँट आदि पकड़कर जबरदस्ती राज के काम के लिये ले जाते थे। हर प्रकार के व्यवासायी एंव धन्धे वाले किसी को नहीं छोड़ते थे।

एक बार लक्ष्मणगढ के बींजराज ब्राह्मण का ऊँट जबरदस्ती ले गये तो दुखी ब्राह्मण ने चौपड़िये कूवे में गिर कर आत्महत्या कर ली। इस पर सारे नगर मे हाहाकार मच गया। सभी ब्राह्मण अनशन कर चौपड़िया कूवे पर धरना देकर बैठ गये ।

उस समय सेठ गुरूमुख रायजी लक्ष्मणगढ में थे। उन्होंने सीकर नरेश को सारी घटना की सूचना दी और मांग की कि यह अन्याय बन्द होनी चाहिये । बेगार आयन्दा से नहीं लेने का आश्वासन देते हुये बींजराजजी की विधवा पत्नी को रावराजाजी ने 101 बीघा जमीन दी । इस घटना की द्योतक कविता निम्नलिखित रूप से हैं :

सबला सभी सहाय निबला नेड़ा सेठ है।
चौपड़िये बैठाय, नासी बेगारी प्रथा। ।

सेठ रामदयालजी के तीसरे पुत्र श्री गुरूमुख रायजी थे। ये बड़े दान वीर हुये हैं। अनाज का अभाव होने पर लोगों के घर अनाज भिजवा देते। विवाह में सहायता करते और खर्च करने पर लोगों को पूरा सहयोग देते थे।

इनके दो पुत्र श्री बृजमोहनजी एवं श्री बैजनाथजी हैं। श्री बृजमोहनजी का जन्म सन् 1875 में हुआ था। इन्होंने बचपन से ही सिरसा जाकर अपनी जमीदारियों को सम्हालना शुरू कर दिया था। आपके सुलतानुपर की जमीदारी थी। श्री बृजमोहनजी के तीन विवाह हुये। पहला विवाह दही गांव में श्रीराम झुंझुनूवाला परिवार में हुआ। इस विवाह में प्रथम पुत्र श्री ज्वालादत्तजी का जन्म सन् 1895 में लक्ष्मणगढ में हुआ। दूसरे विवाह से कोई संतान नहीं हुई। तीसरे विवाह से श्री सीतारामजी उत्पन्न हुये जो श्री बृजमोहनजी के छोटे भाई बैजनाथजी को दत्तक में दिये गये। श्री बृजमोहनजी अंतिम समय काशी में रहने लगे थे जहाँ 2 दिसम्बर 1936 में उनका स्वर्गवास हुआ। श्री ज्वालादत्तजी का प्रथम विवाह लक्ष्मणगढ में चिड़ावा के केड़िया परिवार की कन्या रूकमणी से हुआ पर इस विवाह से कोई संतान नहीं हुई। आपका दूसरा विवाह पचम्मा में गिरीड़ीह के पास श्री हरध्यानदासजी खेतान की सुकन्या अणची बाई से हुआ । इस विवाह से श्री शिवकुमारजी का जन्म कार्तिक बदि 11 सन् 1934 में हुआ।

श्री शिवकुमारजी का विवाह लक्ष्मणगढ के श्री श्याम सुन्दरजी सुरेका की सुकन्या पुष्पा देवी के साथ सन् 1953 में हुआ है। आपकी बहिन गीताजी का विवाह सुजानगढ के श्री मोतीलाल जी सराफ के पुत्र श्री महावीर प्रसादजी के साथ हुआ है। आपकी छोटी बहिन शारदाजी का विवाह सुजानगढ के लक्ष्मीनारायणजी फतेहपुरीया के पुत्र श्री शिव भगवानजी के साथ हुआ है। श्री शिवकुमारजी इस समय कलकत्ता में कपड़े का व्यवसाय करते हैं। आपके तीन सुपुत्र दिलीपकुमारजी, राजेशजी और बंसत कुमारजी तथा दो कन्यायें कुंकुम एवं शशी हैं। श्री दिलीप कुमारजी का विवाह श्री राधेश्यामजी कांया की सुकन्या मीनादेवी के साथ हुआ है। कुंकुम का विवाह नवलगढ़ के बनारसी लालजी परसरामपुरिया के पुत्र प्रेम कुमारजी से हुआ है। श्री दिलीप कुमार के पुत्र अरविन्द हैं । यह परिवार कलकत्ता और सिरसा में बसा हुआ है।

श्री गुरूमुखराय जी बडे दानी और उदार सेठ हुये हैं। लोगो की सहायता करने में उन्होंने सारा जीवन बिताया। वे इतने परोपकारी थे कि उनका नाम सुनकर दूर-दूर से लोग सहायता मांगने आते थे। अगर कोई वस्तु उनके पास नहीं होती तो बाहर से मंगाकर दे देते थे पर मांगने वाले को खाली हाथ नहीं लौटने देते थे। इनका जन्म सन् 1880

(वि. 1937) में लक्ष्मणगढ में हुआ था। जिस समय सिरसा और हैदराबाद के गनेड़ीवाला परिवार विभिन्न प्रकार के जीवन यापन के आदि हो चले थे उस समय लक्ष्मणगढ़ में दो बड़ी हस्तियों का जन्म हुआ। इनमे पहले थे श्री बैजनाथजी और दूसरे श्री रामदत्तजी। श्री बैजनाथजी कलकत्ते के मारवाड़ी समाज में अग्रण्य व्यक्ति हुये। इसी प्रकार श्री रामदत्तजी ने सिरसा में सुनाम पाया।

श्री बैजनाथजी अपने भतीजे गजाधर जी के साथ सन् 1904 में कलकत्ता चले गये। इनका विवाह 18 साल की उम्र में छपरा में रामरतनदासजी चमड़िया फतेहपुर निवासी की बहन पार्वती देवी से सन् 1898 में हुआ था। कलकत्ता में उन्होंने कांयों की गद्दी में काम करना शुरू किया। कांयों के यहां अनेक व्यवसायों में से एक व्यवसाय विदेशी कम्पनी पैट्रो कोचीन की विदेशी वस्त्रों की बेनियनशिप थी। यहां वे 1904 से 1918 ई० तक रहे। इस समय के बाद आपका भाग्योदय हुआ। इस समय तक वे विदेशी वस्त्र व्यवसाय की बारीकियों को समझ चुके थे।

सन् 1919 में महात्माजी के प्रभाव से देश में स्वेदशी आन्दोलन की लहर उठी। पेट्रोकोचीन के श्री बेनियन श्री जोखीराम कांया के सुपुत्र श्री नारायणजी देश भक्ति के मार्ग के पथिक बन चुके थे। उन्होंने अपने साहब को बता दिया था कि उनके भारत में दिन इने गिने रह गये हैं। साहब ने नाराज होकर उनकी बेनियनशिप खत्म कर दी। उसने बाजार में सूचना करवाई कि हमें नया बेनियन चाहिये जो 2 लाख रूपयों की सेक्यूरिटी जमा करवाये। इस पर बड़ी भाग दौड़ हुई। इन धनाढ़्य रईसों मे रेली ब्रदर्श के वस्त्र विभाग के बेनियन सर हरीरामजी गोयनका भी थे ।

श्री बैजनाथजी ने आवेदन किया पर साथ में 2 लाख का चैंक नहीं भिजवा सके। साहब ने इनकों बुलाकर पूछा कि दो लाख क्यों नही भिजवायें। इनका उत्तर था कि इतने रूपये कहां? साहब ने कहा अच्छा 50 हजार रूपयों की पहली किश्त जमा करवा दो। इन्होंने भाग दौड़कर 50 हजार की व्यवस्था की। उस समय सारे वस्त्र व्यवसाय में विस्मय की एक लहर दौड़ गयी जब पैट्रोकोचीन की बेनियनशिप इन्हें प्रदत्त की गई थी जबकि विशेषकर सर हरिराम गोयनका जेसे प्रबल प्रत्याशी मुकाबिले में थे। इस समय सन् 1919 में वे सिर्फ 37 साल के थे। यह बेनियनशिप उनके पास 10 वर्षों तक रही। सन् 1927-28 में जब विदेशी वस्त्रों की होली जलने लगी तो इस कम्पनी की अनेकों गांठे जला दी गयी। इस पर कम्पनी ने भारत में अपना व्यवसाय बन्द कर दिया। इस समय तक श्री बैजनाथजी ने सूता पट्टी में एक अलग दुकान गजाधर बिरमादत नाम से कर ली थी। सेवा भावना उन्हें जन्म जात संस्कार के रूप में प्राप्त हुई थी। आप प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करने के बाद अपने बड़े भाई श्री बृजमोहनजी के साथ कलकत्ता चले गये। कलकत्ता

में व्यवसाय के साथ साथ वे जनसेवा का कार्य भी करते थे। उन दिनों कलकत्ता का सांवरियाजी का मन्दिर मारवाड़ियों का पूज्य स्थल था। वे वहां आने वाले भक्तों की आवश्यकता की पूर्ति करते रहे। इस सेवा के कारण कलकत्ता के मारवाडी समाज मे आपका सुयश खूब फैल गया। लोग धार्मिक वस्तुओं का वितरण आपके वरेण्य हाथों से करवाते थे। उन्होंने प्रयत्न करके लक्ष्मणगढ़ में डिस्पेन्सरी खुलवायी जबकि इस नगर में एक भी डाक्टर उस समय नहीं था। आगे चलकर सेठ जी के शुभ प्रयत्न से लक्ष्मणगढ में अस्पताल बना। उन्होंने अथक प्रयास करके सबको साथ लेकर लक्ष्मणगढ में गौशाला खुलवायी। श्री रघुनाथ विद्यालय के संस्थापन में उनका सराहनीय योगदान रहा।

सन् 1945 में रावराजा सीकर द्वारा उन्हें लक्ष्मणगढ म्यूनिसिपेलिटी का नामजद चैयरमेन बनाया गया। आपका देहावसान 73 वर्ष की अवस्था में सन् 1953 में हुआ। मृत्यु के पूर्व उन्होंने अनेकों तीर्थों की यात्रायें कर ली थी। आप गनेड़ीवाला वंश में बड़े कीर्तिमान एवं वरद पुत्र हुये।

श्री बैजनाथजी को जब 35 वर्ष की आयु तक कोई पुत्र नहीं हुआ तो आपने ज्येष्ठ भ्राता बृजमोहनजी के कनिष्ट पुत्र सीतारामजी को दत्तक ले लिया था। इसके बाद भगवान की कृपा से सन् 1926 में मंगसिर बदि अमावस्या संवत् 1983 में एक सुपुत्र हुआ जिसका नाम बाबूलाल रखा गया। इसके पूर्व आपको दो कन्यायें हो चुकी थी। माता की मृत्यु पुत्रोत्पत्ति के चार वर्षों के बाद हो गई।

श्री बाबूलालजी बचपन से ही धार्मिक रूचि रखते थे। अपने पिताजी के साथ उन्होंने अनेकों संत महात्माओं का आशीर्वाद प्राप्त किया था। आगे चलकर आप योगीराज करपात्रीजी के शिष्य बन गये। उस समय वे 30-35 वर्ष के थे। आपका अधिकांश समय मानवीय सेवा में व्यतीत होता है। आपने आराधना, सेवा, पूजा को अपने जीवन का अपरिहार्य अंग बना लिया है। अग्रसेन स्मृति भवन कलकत्ता में आप अपने पद पर विगत 10 वर्षों से प्रतिष्ठित हैं।

श्री सीतारामजी तीन पुत्रों के पिता हुये। आपका विवाह फूल चन्दजी चौधरी की सुकन्या त्रिवेणी बाई से हुआ था। श्री सीतारामजी का देहान्त सन् 1960 में जगन्नाथ पुरी में हुआ। ये धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। इन्होंने कलकत्ते में अच्छा नाम कमाया। इनके पुत्र श्री विश्वनाथजी, श्री कैलाशजी एवं श्री रामभगतजी हैं। श्री विश्वनाथजी के पुत्र नगेन्द्रजी, श्री कैलाशजी के पुत्र कृष्णकुमारजी, कन्हैयालालजी एवं राजकुमारजी है। श्री कृष्ण कुमारजी के पुत्र आशीष हैं। श्री रामभगतजी चार पुत्रों प्रमोद, प्रशान्त, प्रभात और प्रतीक के पिता हैं। ये परिवार कलकत्ता और सिरसा में रहते हैं। श्री विश्वनाथ एवं श्री रामभगतजी का शरीर नहीं रहा है।

श्री बाबू लालजी का विवाह फागुन बदि 2 सम्बत् 2000 में लक्ष्मणगढ में चूड़ीवाला परिवार में भगवान दासजी की सुकन्या सावित्री बाई से हुआ है। इनके एक पुत्र श्री रमाकान्त जी हैं। श्री रमाकान्तजी एक पुत्र नारायणप्रसाद के पिता हैं। श्री रमाकान्तजी का विवाह 1976 में लक्खी सराय मे श्री रामचन्द्रजी धानुका की सुकन्या किरण के साथ सम्पन्न हुआ है। यह परिवार कलकत्ता में अवस्थित है । श्री बाबू लालजी समाज सेवा में बड़ी रूचि लेते हैं। इस समय वृद्धावस्था में तथा अस्वस्थ रहते हुये भी अग्रसेन भवन की गतिविधियों में पूरा योगदान करते रहे हैं। मुसीबत वाले व्यक्ति की पूरी मदद करते हैं।

श्री गिरधारी लालजी के चतुर्थ पुत्र श्री हरभजन दासजी थे। इनका जन्म अनुमानतः सन् 1810 (वि. 1868) में हुआ था। इनके संबंध में वृत्त कम प्राप्त है। इनके एक मात्र पुत्र श्री ऋषिकेशजी थे जिनका जन्म सन् 1830 में हुआ था। भगवान की अकृपा के कारण इनकी असामयिक और दुखद मृत्यु 27 वर्ष की उम्र में सन् 1857 में हो गई थी। इनके एक पुत्र श्री रामसहायमलजी मृत्यु के पूर्व हो चुके थे।

श्री हरभजनजी पैतृक व्यवसाय को बढ़ाते रहे थे। इनकी दो दुकानें एक अजमेर में एवं दूसरी नवलगढ में थी। दूसरी दुकान गुमानीराम हरभजनदास के नाम से थी। अजमेर की दुकान हरभजनदास सूरजमल नाम से थी। श्री हरभजन दासजी को पुत्र की असामयिक मृत्यु से बड़ा आघात लगा था अतः पुत्र की मृत्यु के एक साल बाद ही सन् 1858 में 48 वर्ष की अवस्था में ये इस असार संसार से चल बसे । इनके फूल मंगसिर बदि अमावस्या को हरिद्वार पहुंचाये गये।

श्री ऋषिकेशजी धार्मिक रूचि के व्यक्ति थे । लक्ष्मणगढ के श्री मुरली मनोहरजी के मन्दिर की स्थापना इनके हाथों से हुई। गुमानसागर का शिवालय इनकी देख रेख में बना।

श्री हरभजनजी के पौत्र श्री रामसहायमलजी का जन्म सन् 1855 के आस-पास हुआ था। इनके 2 विवाह हुये। पहला विवाह बनारस में हुआ जिससे हरिबक्सजी का जन्म हुआ। इस पत्नी का नाम अन्नपूर्णा था। दूसरा विवाह छपरा में दूलीबाई से हुआ जिससे 3 कन्यायें एवं तीन पुत्र हुये। प्रथम कन्या किशनी बाई का विवाह रामगढ के पौद्दारों के यहां हुआ। दूसरी कन्या रतनीबाई का विवाह बिसाऊ के पौद्दारों के यहां श्री महादेव जी से हुआ। तीसरी कन्या भगवानदेई का विवाह रामगढ में रूईयों के यहां श्री केशरदेवजी से हुआ। इनके चार पुत्र श्री हरीबक्सजी, श्री श्रीनिवासजी, श्री श्रीनारायणजी एवं श्री श्रीगोपालजी हुये। श्री रामसहायमलजी ने अपना जमींदारी के चार भाग चारों पुत्रों में बांट दिये। श्री गिरधारी लालजी के चार पुत्रों का बंटवारा 1879-80 में हुआ था। ये चार पुत्र श्री गुमानीरामजी, श्री तनसुखरायजी, श्री रामदयालजी ओर श्री हरभजनदासजी- थे। दूसरा

बंटवारा सन् 1912 के आस-पास उनके पौत्रों में हुआ। श्री रामसहायमलजी की मृत्यु सन् 1903 में 51 वर्ष की अवस्था में हुई। आपकी द्वितीय पत्नी डालीबाई का देहान्त 1939 में हुआ।

श्री रामसहायमलजी के पुत्र श्री हरिबक्सजी थे। इन्होंने सिर्फ 27-28 वर्ष की आयु पायी। आपके एक सुपुत्र जयनारायणजी हुये। इन्होंने भी अल्प आयु पायी। इनके दत्तक पुत्र श्री महावीरजी हुये। श्री महावीरजी चार पुत्रों के पिता हुये। आपके पुत्रों के नाम हैं मुरारीलाल, ओमप्रकाश, जुगलकिशोर और विजय कुमार।

श्री मुरारीलाल के पुत्र अनूप एवं विक्रम हैं। श्री ओमप्रकाश के पुत्र अरूणकुमार और अजय हैं। श्री ओम प्रकाश छोटी आयु मे ही चले गये। श्री जुगलकिशोरजी के सूपुत्रों के नाम राजेश और राकेश हैं। श्री विजय कुमारजी के पुत्र विकास हैं जो कलकत्ता में रहते हैं। श्री महावीर प्रसादजी ने गनेड़ीवालों के इतिहास की काफी सामग्री एकत्रित की थी। वे मिलनसार प्रकृति के व्यक्ति थे।

श्री रामसहायमलजी के द्वितीय पुत्र श्री निवासजी थे। आपका जन्म सन् 1879 में हुआ। इनका विवाह दरभंगा में मन भरीजी से हुआ। इनके 5 पुत्र वासुदेवजी, केशर देवजी (जन्म 1902) गोविन्ददेवजी (जन्म1903) रघुनन्दनजी (जन्म 1907) एवं जगन्नाथजी हुये।

श्री गोविन्दजी ने अपने भतीजे श्री रतनलाल के पुत्र विनोद कुमार को गोद लिया। श्री विनोद के पुत्र संजय एवं अजय कुमार हैं। श्री वासुदेव जी का विवाह खेतड़ी में पौद्दारों के यहां नारायणी बाई से हुआ। श्री केशरदेवजी रामगढ़ पौद्दारों के यहाँ गोदावरी बाई से विवाहे गये। श्री गोविन्ददेवजी हरपालपुरा के डालमिया परिवार में रामप्यारीजी से विवाहे गये । श्री रघुनन्दनजी का परिणय लक्ष्मणगढ में गोयनका परिवार में श्री जयदयालजी गोयनका की सुकन्या गिन्नीदेवी से हुआ । इनके पुत्र रामनारायण दत्तक हैं। जगन्नाथजी 13 वर्ष की आयु में दिवंगत हो गये। इनका परिवार आगे नहीं चला।

श्री वासुदेवजी की मृत्यु सन् 1928 में हुई। श्री केशरदेव जी सन् 1974 मे दिवंगत हुये जबकि गोविन्ददेवजी की मृत्यु 63 वर्ष की अवस्था में सन् 1963 में हुई। श्री वासुदेवजी शेयरों की दलाली करते थे। इनके दो पुत्र रामवल्लभ और रतनलाल हुये। श्रीराम वल्लभ का वंश आगे नहीं चला। श्री रतनलाल काफी समय बर्मा में रहे। आजकल सिरसा में रहते हैं। इनके चार पुत्र अशोक कुमार, ओमप्रकाश, संतोष कुमार एवं सुदेश कुमार हैं। अशोक राजेश के पिता हैं एवं सन्तोष सुरेन्द्र के पिता हैं। श्री केशरदेवजी की दिल्ली मे कपड़े की दुकान थी। सिरसा के गनेड़ीवाला परिवारों में श्री रघुनंदनजी सविशेष व्यक्ति हैं। अपनी यौवन अवस्था में आप नुक्तिदाने के 100 लड्डू खा सकते थे। एक किलो घी

पी सकते थे। आप अच्छे ज्योतिषी थे। आपकी धर्मपत्नी का देहान्त सन् 1936 में हो गया था। आपकी कन्या शकुन्तलाजी का परिणय झुंझुनू में खेतान परिवार में लक्ष्मीनाराणजी के साथ हुआ है। ये बड़े धार्मिक रूचि के व्यक्ति हैं। एक बार बीमार हुये तो ओपरेशन के समय महामृत्युंजय का जप करते रहे पर बेहोशी की दवा नहीं ली।

श्री रामहायमलजी के तृतीय पुत्र श्री नारायणजी का जन्म सन् 1888 में हुआ। जिस समय आपका जन्म हुआ गनेड़ीवाला परिवार के सभी भाई लक्ष्मणगढ में रहते थे और सिरसा की जमीदारियों को मुनीम लोग सम्हालते थे। श्री श्रीनारायणजी ने सिरसा जाकर जमीदारियों का काम सम्भालना शुरू कर दिया। साथ ही हापुड, खुर्जे जाकर गुड़ व घी का व्यवसाय भी शुरू कर दिया। उस समय उनकी आयु 15 साल की थी। 28 वर्ष की आयु तक आपके केवल एक ही पुत्र हुआ था कि आपकी धर्मपत्नी का अचानक निधन हो गया। आपकी आयु छोटी थी फलस्वरूप खुर्जे से दूसरे विवाह का प्रस्ताव आया जिसे आपने सहर्ष स्वीकार किया। कनखल जाते समय आप गये। कनखल तक पहुंचते-पहुंचते आप ज्वरग्रस्त हो गये थे पर बिना इसकी परवाह किये आपने धार्मिक भावना वश गंगा-स्नान ज्वर की हालत में कर लिया। इससे ज्वर बढ गया और शरीर की अवस्था खराब हो गयी। आप उसी हालत में खुरजा पहुचें।

हालत वहां निरन्तर बिगड़ती गयी और इसके पहले की दूसरा परिणय सम्पन्न हो दैव दुर्विपाक से आपका खुरजा में दुखद निधन हो गया । इस प्रकार 30 वर्ष की युवावस्था में आप इस असार संसार को छोडकर चले गये।

आपकी मृत्यु के समय आपके एक मात्र पुत्र श्री रामेश्वरदासजी की अवस्था केवल 3 वर्ष की थी। इस शिशु का लालन पालन श्री रामसहायमलजी की वृद्धा विधवा पत्नी श्रीमती डाली बाईजी ने स्नेह और प्रयत्न पूर्वक किया। आपनी मंगलस्वरूपिणी दादीजी के वरद् हस्त के आश्रय में रामेश्वरदास जी बड़े हुये पर छोटी अवस्था में पिता की छत्रछाया से वंचित हो जाने के कारण उन्हें अनेकों कठिनाईयों का सामना भावी जीवन में करना पड़ा।

जब तक श्री रामेश्वरजी वयस्क नहीं हुये तब तक आपकी जमींदारी का काम आपके चाचा श्री श्रीगोपालजी देखते रहे। जब श्री रामेश्वरदासजी वयस्क हो गये तो इनका विवाह नवलगढ़ के बूबना परिवार में श्री बैजनाथजी की सुकन्या बनारसी बाई से हुआ। इस पत्नी का निधन विवाह के करीब ३ साल बाद अचानक हो गया। इनका दूसरा विवाह लक्ष्मणगढ में सन् 1934 (1991 वि.) में लाला श्री जगन्नाथजी तोदी की सुकन्या कृष्णादेवी जी से सानन्द सम्पन्न हुआ। इसके बाद श्री रामेश्वरदासजी स्वयं अपनी जमींदारियों का काम सम्भालने लगे। इनकी जमीदारियाँ सिरसा के निकट गांव बालासर व झूंपड़ा में थीं। इन्होंने

अपनी जमीदारियों को सम्हालने का काम शुरू किया। इनकी निरन्तर देखभाल और परिश्रम से ये जमीदारियाँ सुव्यवस्थित हुईं । आप बड़े भोले व दरियादिल इन्सान थे। जिस पर खुश हुऐ उसी को उपहार स्वरूप जमीनें दी। आज भी गांव वाले उन्हें याद करते हैं। सन् 1940 में इनको पुत्र रत्न प्राप्त हुआ जिसका नाम हनुमान प्रशाद रखा गया।

इसी समय इस परिवार पर फिर एक विपत्ति आयी। अभी श्री रामेश्वरजी 36 वर्ष के ही हुये थे कि उनका अचानक दुखद निधन हो गया । उनकी मृत्यु सन् 1950 में हुई। आपके पिताश्री भी 30 वर्षों की अवस्था में दिवंगत हो गये थे। परिवार पर यह दूसरा वज्रपात था।

इस घोर विपत्ति के समय कृष्णा देवीजी ने असीम साहस और बुद्धिमानी का परिचय दिया। अब तक जीवन में वे कभी घर से बाहर नहीं निकली थी। वे एक उच्चकुल में जन्मी और उच्चकुल में विवाही आयी थी। इस दुखद आघात के समय इन्होंने श्लाघनीय ओजस्व का प्रमाण दिया। आप पर्दे से निकलकर स्वयं सिरसा गयीं और सिरसा की सुदूर स्थित जमीदारियों का प्रबन्ध देखने लगी।

वे ऊँटों और बैलगाड़ियों में बैठकर सुदूर जमीदारी के गावों में स्वयं जाती और जमीदारी के प्रबन्ध सम्बन्धी हर काम को स्वयं देखती। यह एक सुखद आश्चर्य का विषय था कि आपने बहुत शीघ्र जमीदारियों का प्रबन्ध अपने सुदक्ष हाथों में ले लिया। इससे जमीदारी की आय में भी बढ़ोतरी हुई।

इधर कष्ट एवं प्रयत्न पूर्वक दोनों जमीदारी का काम देखती उधर अपने एकमात्र पुत्र श्री हनुमान का पालन पोषण करती। इन दोनों कष्टसाध्य कार्यों को इन्होंने श्लाघनीय रीति से सम्पन्न किया। सिरसा के गनेड़ीवाला परिवारों में कृष्णादेवीजी का वहीं स्थान हैं जो पंचधानों में पवित्र धान शालि का होता है। आप दृढ़ निश्चय वाली वीर महिला और प्रणम्य मातुश्री हैं।

श्री हनुमानप्रशादजी का जन्म सन् 1940 (वि. 1996) में दिल्ली में हुआ है। जिस समय इनका जन्म हुआ उस समय तक इनके पिता श्री रामेश्वरजी सिरसा की जमीदारी के अतिरिक्त दिल्ली में भी व्यवसाय का मार्ग प्रशस्त कर रहे थे। इसी समय उनका आकस्मिक निधन हो गया। इस समय मातु श्री कृष्णादेवीजी ने इनके लालन पालन एवं शिक्षा की समुचित व्यवस्था की। यह सब उन्हीं के प्रयत्नों का शुभ फल है कि श्री हनुमानप्रशादजी आज दिल्ली में संभ्रान्त नागरिकों की अग्रिम पंक्ति में आसीन हैं तथा एक समृद्धि का जीवन जीते हैं। श्री हनुमानप्रशादजी का शुभ विवाह दिल्ली में श्री आत्मारामजी सालावासिया की सुकन्या सरोज रानी के साथ सन 1963 में हुआ है। आपने अपनी मातु

श्री के संरक्षण में रहते हुये पारिवारिक गुणों का आत्मसात किया और दिल्ली के प्रोपर्टी व्यवसाय में पारंगत होने का उत्तम विधि-विधान प्राप्त किया। आप दिल्ली में स्थायी रूप से रहते हैं और सामाजिक कार्यों में बराबर रूचि लेते हैं।

गनेड़ीवाला परिवार के कार्यों में आप बडी रूचि रखते हैं। अभी पिछले वर्ष गनेड़ीवाला परिवार के सभी बन्धु एकत्रित हुये और उन्होंने अपने पूर्वजों की मातृभूमि गनेड़ी में बने मन्दिर और स्मारकों के जीर्णोद्धार का काम करवाने का निर्णय लिया। श्री हनुमानप्रशादजी ने तनमन धन से इस कार्य को अपनी देख रेख में सम्पन्न करवाया। आपके प्रयत्नों से सेठ जुगलदास गनेड़ीवाला चैरिटेबल ट्रस्ट का गठन हुआ जिसके आप भी एक ट्रस्टी हैं। इस प्रकार विश्रृंखलित पारिवारिक शक्ति पुनः आपके सद्प्रयत्नों से एक जूट होकर आगे बढ़ी है। आज प्रायः 8 लाख के आस पास रूपये गनेड़ीवाला बन्धुओं के स्मारकों के नवीनीकरण, मन्दिर निर्माण आदि पर खर्च हो चुके हैं। ट्रस्ट के अन्तर्गत अनेक प्रकार की गतिविधियाँ चलती हैं। गनेड़ीवाला इतिहास के लेखन और प्रकाशन का काम भी ट्रस्ट के नीचे है।

श्री हनुमान प्रशादजी दो सुपुत्रों और तीन सुकन्याओं के पिता हैं। आपके सुपुत्रों के नाम गुलशन एवं गौतम हैं। दीपिका, मधु और सरिता आपकी सुकन्यायें हैं। दीपिका का शुभ विवाह दिल्ली वासी झुंझुनू के श्री बिहारीलालजी तुलस्यान के पौत्र श्री सत्यनारायणजी के पुत्र श्री के० के० तुलस्यान के साथ सम्पन्न हुआ है। कुमारी मधु का परिणय श्री देवीचरणजी तार गिट्टी वाले के पौत्र श्री सुरेन्द्रजी गुप्ता के पुत्र श्री राजीवजी गुप्ता के साथ हुआ है। कुमारी सरिता का विवाह दिल्ली के श्री ओम प्रकाशजी गुप्ता के सुपुत्र श्री सोम प्रकाशजी से हुआ। आपकी मातु श्री का वरदहस्त अब भी आपके सिर पर है। आप धार्मिक विचारों के उदार सज्जन हैं जो अपने पूर्वजों की कीर्ति को उजागर करने के लिये दृढ़ इच्छा शक्ति रखते हैं और इसके लिये प्रयत्नरत रहते हैं। यह परिवार दिल्ली और सिरसा में अवस्थित है।

श्री रामसहायजी के चतुर्थ पुत्र श्री गोपालजी थे जिनका जन्म सन् 1894 (वि. 1951) में हुआ था। वे आजीवन लक्ष्मणगढ में रहे। आप बहुत सीधे और धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। इनका विवाह शिवप्रसादजी बागला डालमिया–दादरी निवासी की सुकन्या चम्पादेवी से हुआ। इस सुमाता ने 5 पुत्रों को उत्पन्न किया। इनके नाम श्री महावीर प्रसादजी, श्री बजरंगलालजी, श्री शान्तिलालजी, श्री गौरीशंकरजी व श्री विश्वनाथजी हैं।

इनमें श्री महावीर प्रसादजी का जन्म सन् 1916 में पोषकृष्णा चौथ को हुआ। आप श्री जयनाराणजी के दत्तक चले गये। श्री बरंजग लालजी का जन्म ई. 1918 में पोष सुदी

3 को हुआ। शान्तिलालजी का जन्म 26 अक्टूबर 1927 को हुआ। श्री गौरीशंकर सन् 1931 एवं श्री विश्वनाथ सन् 1937 में उत्पन्न हुये।

श्री महावीर प्रसादजी का विवाह लक्ष्मणगढ में ही श्री रामकुमारजी चोखानी की सुकन्या रूकमणी देवी से हुआ। श्री बंजरग लाल का विवाह नवलगढ में श्री नथमलजी बूबना की सुकन्या शान्ति देवी से सम्पन्न हुआ। शान्ति लालजी का परिणय फतेहपुर में केशरदेवजी मुरलीधरजी मुरारका की सुकन्या सावित्री देवी से हुआ। श्री गौरीशंकरजी का विवाह पिलानी में श्री बाबूलालजीसरावगी की सुकन्या कृष्णादेवी से हुआ। श्री विश्वनाथ का विवाह एलनाबाद में लक्ष्मीचन्दजी ममेरीवाला की सुपुत्री कौशल्या देवी से हुआ।

जब 1937 ई० में श्री गोपालजी का निधन हो गया तो इनकी धर्मपत्नी श्रीमती चम्पादेवी ने पूरे परिवार को प्रयत्न पूर्वक अपने पैरों पर खड़ा किया। मातु श्री ने अपनी जमीन नहीं बेची तथा न किसी से कोई ऋण लिया। उन्होंने बड़े कष्ट सहकर भी पूरे परिवार का लालन पालन किया। आपकी धार्मिक निष्ठा अटूट और श्लाघनीय थी। आपने अंतिम समय में कोई आसक्ति ही नहीं रखी।

श्री शान्ति लालजी के अनुसार सिरसा नहर आने के पूर्व बारानी इलाका था। दो साल अकाल के और एक साल सुकाल का होता था। एक साल की फसल दो सालों की हानि को पूरा कर देती थी। श्री शान्ति लालजी की मातु श्री ने 83 साल की उम्र पायी और सन् 1981 में इस संसार को छोड़कर दिवंगत हुई।

श्री शान्ति लालजी के एक पुत्र नवलजी श्री बजरंग लालजी के दत्तक चले गये हैं। दूसरे पुत्र सुशील कुमारजी श्री गौरीशंकरजी को गोद दे दिये गये हैं। इस समय आपके दो सुपुत्र हैं। कैलाशजी बी.ए. बी.ई. हैं। पवन जी बी.ए. एल.एल.बी. हैं। श्री शान्ति लालजी उत्तम गृहस्थ हैं जिन्हें कृषि के सम्बन्ध की अच्छी जानकारी हैं। श्री कैलाश के पुत्र सौरभ हैं और श्री पवन कुमार के पुत्र अंशु हैं। श्री नवल किशोर का परिवार सिरसा एवं श्री कैलाश चन्द का परिवार भरतपुर में हैं। श्री पवन कुमार का परिवार बीकानेर में बसा हुआ है। श्री विश्वनाथ के दो पुत्र दुर्गेश कुमार एवं संदीप कुमार हैं । यह परिवार सिरसा में स्थित है।

श्री पूरणमलजी अपने पिता श्री महानंद रामजी की दूसरी संतान थे। गनेड़ीवाला कुल में ये बहुत तेजस्वी, धनाढ्य एंव प्रभावशाली व्यक्ति हो चुके हैं। इस कुल में ये पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपने सम्बन्ध अनेक राजदरबारों से बनाये और उनसे लेन देन का काम शुरू किया। अनेकों ठिकानो की आर्थिक व्यवस्था के प्रमुख सूत्रधार रहे। इनमें सीकर और खेतड़ी का उल्लेख प्रमुखता से किया जा सकता है। उनके वृत के विस्तृत विवेचन को

प्रारम्भ करने से पूर्व अन्य पुस्तकों से उद्धत वृत्त की एक झलक यहां प्रस्तुत करना समीचीन रहेगा।

"इस फर्म के संस्थापक सेठ महानंदराम जी देश में पैदल मार्ग द्वारा हैदराबाद आये। आपके ही हाथों से यहां फर्म की स्थापना हुई। सेठ महानंदरामजी यहां सरकारी पोतेदारी का काम महानंदराम पूरणमल के नाम से करते थे। इसके अलावा आपने राज्य के साथ लेन-देन का सम्बन्ध भी जारी किया। कलकत्ता, बम्बई, आदि बड़े शहरों में उस समय आपकी बहुत सी दुकानें काम करती थी। आपने इस फर्म के सम्मान, सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठा में विशेष रूप से वृद्धि की। व्यापारिक उन्नति के साथ हैदराबाद का प्रसिद्ध सीताराम बाग आपने बनवाया। इस मन्दिर की प्रतिष्ठा सन् 1825 में ज्येष्ठ सुदि 2 को की गयी। यह मन्दिर हैदराबाद के प्रसिद्ध देवालयों में गिना जाता है। इसके स्थायी प्रबन्ध के लिये निजाम सरकार आसफजाह बादशाह ने 75 हजार सालाना की जागीर निकालकर सेठ पूरणमलजी का उचित सत्कार किया था। उसकी जागीरे पानगांव, बलगांव, आकोली आदि स्थानों में है। इसके आलावा एक श्री रंग जी का मन्दिर पुष्कर में भी बनवाया। इसकी प्रतिष्ठा सन् 1834 में की। इस मन्दिर के प्रबन्ध के लिये राजपूताने में सीकर दरबार की ओर से 1500 रूपये सालाना की जागीर प्राप्त है। [5]

अग्रवाल जाति के इतिहास में सेठ महानन्दराम पूरणमल गनेडीवाला, हैदराबाद शीर्षक के अन्तर्गत निम्नलिखित उल्लेख पाया जाता है। "सेठ पूरणमल जी इस खानदान में बहुत प्रतापी, प्रभावशाली और भाग्यवान पुरूष हुये। आपने अपनी व्यवसाय-चातुरी से अपने व्यापार और यश को बहुत बढाया तथा अपने खानदान के नाम को भारत के मारवाड़ी अग्रवाल समाज में प्रदीप्त किया। आपने अपने पिताजी द्वारा स्थापित किये गये व्यापार को बढ़ाकर हैदराबाद स्टेट के साथ लेन देन का सम्बन्ध स्थापित किया। आपने अपनी फर्म की शाखायें कलकत्ता, बम्बई, अजमेर, जयपुर, दिल्ली आदि भारत के बड़े शहरों में खोली। इन सब स्थानों पर आपकी दूकानें मातवर और प्रतिष्ठित मानी जाती थीं। इस समय आपके यहां प्रधानतया बैंकिंग का व्यापार होता था । इस प्रकार आपने व्यापार को चारों ओर विस्तृत कर उससे लाखों रूपयों की सम्पत्ति अर्जित की। आपने अपने परिवार के सैकड़ों व्यक्तियों को व्यवसाय में लगाने के लिये समय-समय पर बड़ी सहायता दी। उस समय आप अपने समाज के नामी बैंकर और गणमान्य दानी माने जाते थे।

व्यापार में सम्पत्ति अर्जित करके सेठ पूरणमलजी ने दान धर्म के कार्यों की ओर भी बहुत बड़ा लक्ष्य रखा। आपने हैदराबाद में सीताराम बाग और श्री बृजभगवान के दो दिव्य-देश निर्माण करवाये। इनकी प्रतिष्ठा संवत् 1882 की जेठ सुदि 2 के दिन की गयी।

5 भारतीय व्यापरियों का परिचय बरार प्रकरण पृ. 30

इन मन्दिरों के निर्माण और प्रतिष्ठा उत्सव में आपने उस समय एक करोड़ रूपया लगाया था। आपने लक्ष्मणगढ़ में भी श्री वैंकटेश भगवान का मन्दिर और पुष्कर में श्री रंगनाथजी का मंदिर बनवाया। इस मन्दिर की व्यवस्था के लिये सीकर दरबार ने रामपुरा नामक एक गांव जागीर में दिया। मन्दिरों के अलावा सेठ पूरणमल जी ने लाखों रूपये गो ब्राह्मणों के प्रतिपालन में लगायें। आपके कार्यों से आपके खानदान का यश शेखावाटी प्रान्त में इतना फैला कि आज भी वहां की जनता आपके नाम को आदर और सम्मान के साथ याद करती है। सेठ पूरणमल जी गनेड़ीवाला सवत् 1905 मे स्वर्गवासी हुये"। [6]

इसी प्रकार गोल्डन बुक आफ इण्डिया में इनके गौरवपूर्ण उल्लेख प्राप्त होते हैं जिनमे उपर्युक्त बातों से मिलती जुलती बातें कही गई हैं । [7]

प्रोफेसर एम.सी. भट्ट ने अपने अंग्रेजी में लिखित शोध प्रबन्ध 'बरार अंडर निज़ाम' में सेठ पूरणमलजी का परिचय निम्नलिखित रूप से दिया है। "राजा पूरणमल गनेड़ीवाला हैदराबाद में ब्याज सूत पर रुपया देने वाले महाजन थे। उन्होंने निजाम को भी ऋण दिया था जिसके एवज में ताकि वे ऋण वसूल कर सकें उनको बरार के लगान की वसूली का ठेका दिया गया था। उनकी इस नियुक्ति को तत्कालीन ब्रिटिश रेजिडेन्ट ने पसन्द नहीं किया और न ही एलिचपुर में नियुक्त ब्रिटिश कमांडर को यह नियुक्ति अच्छी लगी। फलस्वरूप पूरणमलजी को लगान की वसूली के ठेके से सन् 1939 (वि. 1996) में हटा दिया गया पर पूरणमलजी का अपना प्रभाव था और वे सहज भाव से वहां से हटने वाले नहीं थे। इसलिये उनको वहां से निकालने के लिये एक सैनिक टुकड़ी भेजी गयी। पूरणमलजी ने अपने दिये हुये ऋण के 27 लाख रूपये वापिस मांगे । उस समय हैदराबाद के दीवान राजा चन्दूलाल थे। उन्होंने पूरणमलजी के दावे के कागजों को फाड़ फेंका और कह दिया कि उनका सारा हिसाब तय किया जा चुका है। राजा पूरणमल को बरार में जागीर दी गयी। [8]

इसी प्रकार के विवरण हैदराबाद स्टेट गजेटियर में प्राप्त होते हैं। उन्हें माईटी मनिलेण्डर शब्द से अभिहित किया गया है। [9]

आंध्र प्रदेश मारवाडी सम्मेलन की स्मारिका में सेठ पूरणमलजी के सम्बन्ध में गौरवास्पद विवरण दिये गये हैं जो पूर्वोक्त विवरणों से साम्य रखते हैं। [10]

---

6 अग्रवाल जाति का इतिहास श्री चन्द्रराज भण्डारी पृ० 382 एंव आगे

7 गोल्डेन बुक आफ इण्डिया सर रोपर लेथब्रिज के सी. आई० ई ० 1993.

8 बरार अंडर निज़ाम प्रो एम. सी. भट्ट शोध प्रबन्ध

9 गजेटियर फार दी हैदराबाद एसाइन्ड डिस्ट्रिक्टस् कोमनली काल्ड बरार ए. एसी. लियांल्ल कमिशनर आफ वेस्ट बरार-132

10 आन्ध्र प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन स्मारिका सन् 1970 पृ०

सेठ पूरणमलजी सेठ महानंदराम की दूसरी पत्नी की प्रथम संतान थे। इनका जन्म संभवतः सन् 1775 (1832-33) के आस-पास हुआ था। आपने अपने पिताजी के जीवन काल में ही सारी व्यवसायिक बारीकियों को समझ लिया था। आप अधिकतर हैदराबाद में रहकर व्यवसाय का काम काज देखते रहते थे। जब आपके पिता श्री की मृत्यु हुई उस समय तक आपने अच्छी व्यवसायिक योग्यता प्राप्त कर ली थी एवं सुनाम प्राप्त कर लिया था।

महानंदराम पूरणमल फर्म मुख्यता बैंकिंग का कारोबार करती थी। इस फर्म की अनेकों शाखाप्रशाखायें देश के विभिन्न भागों में स्थित थी । इन फर्मों की सूची अन्यत्र दी जा रही है। इनकी संख्या 38 थी ।

श्री पूरणमलजी ने पिता के व्यवसाय को बहुत विस्तृत किया और देश के विभिन्न भागों में अपनी गद्दियाँ स्थापित कीं। इन स्थानों में बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, पूना, लक्ष्मणगढ़, इन्दौर, मन्दसौर, अजमेर, कोटा, रतलाम, उनियारा, जयपुर, जोधपुर, डीडवाणा, हैदराबाद निजाम, झुंझुनू, खेतड़ी, रामगढ़, नवलगढ़ केड, पाली और कुचामन उल्लेखनीय हैं। जिस समय इस फर्म की गद्दियाँ देश के विभिन्न भागों में स्थापित हो चुकी थीं उस समय तक संभवतः मारवाडी समाज की छोटी बडी 100 गद्दियाँ भी सारे भारत वर्ष में स्थापित नहीं हो पाई थी। इस पृष्ठ भूमि में देखने से इन 38 गद्दियों के संस्थापन का महत्व स्वयं प्रकट हो जाता है।

एक अन्य सूची भी प्राप्त है जिसमे उनकी विभिन्न गद्दियों पर काम करने वाले मुनीमों के नाम दिये गये हैं।

उन दिनों व्यापारिक मार्ग पूरी तरह सुरक्षित नहीं रहे थे। एक ओर पिंडारियों के दलों का आंतक और दूसरी ओर अन्य चोर, डाकू एवं ठगों की लूटमार जारी थी। इन पथों पर व्यापारिक माल का आवागमन खतरे से खाली नहीं था। इस भयावह स्थिति में सेठ पूरणमलजी के लाखें रूपयों का आवागमन सुरक्षित रूप से देश के विभिन्न भागों में होता रहता था। यह इनकी कुशलता और प्रभाव का घोतक था।

अब श्री पूरणमलजी के राज सम्बन्धों की चर्चा की जाती है। विभिन्न राजकुलों से उनके आर्थिक व्यवहार इतने बढ़े हुये थे कि वे राजकुल इनको उल्लेखनीय समादर की दृष्टि से देखते थे। यह बात अभी उभरकर सामने नहीं है कि राज्यों ओर ठिकानों की अर्थव्यवस्था के मुख्य संवाहक महाजन लोग थे। जब एक बड़ा राज अपनी जागीर ठिकानेदारों को देता तो उसके राजस्व का अपना भाग उनसे वसूल करता था। इसे कर या इजारे की राशि कहा जाता था। इस राशि के लिये प्रतिष्ठित एवं धनी महाजन परिवार की निशा मांगी जाती थी।

ठिकानों की पोतदारी वर्षों तक गनेड़ीवाला परिवार के पास रही। इन ठिकानों में सीकर और खेतड़ी प्रमुख हैं। अन्य ठिकाने एवं राजदरबार भी सेठ पूरणमल एवं उनके पुत्र सेठ प्रेमसुखदासजी से ऋण लेते रहे। सीकर में रावराजा श्री लक्ष्मणसिंह से लेकर रावराजा माधवसिंह जी तक यह व्यवस्था चलती रही।

गनेड़ीवाला संग्रह में विभिन्न राजदरबारों और ठिकानेदारों के सैकडों पत्र संग्रहित हैं जिनमें सेठ पूरणमल जी एवं गनेड़ीवाला परिवार के अन्य व्यक्तियों के उनसे लेन देन की बातों का तथा समय समय पर उनसे आर्थिक सहायता लेने का उल्लेख है । इनमें से कुछ पत्रों का सार-संक्षेप नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

एक पत्र रावराजा लक्ष्मणसिंहजी सीकर की ओर से सेठ पूरणमलजी किशनदासजी को लिखा गया है जिसमें लिखा है कि हमारे तालके की निशा पट गयी है। जयपुर के लेखे की आपकी बाकी होगी। उसकी भी व्यवस्था हो जावेगी। आपके रूपये तो हमारे घर के रूपये ही हैं। हमारे आपके अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। आपने हाथी खरीदने की कही सो व्यापारी आने पर खरीद लेंगे। आपने गुमानीराम प्रेमसुख बाबत लिखा सो ये तो जेसे हमारे मुकना आदि है वेसे ही ये हैं। [11] पत्र के ऊपर यह इबारत स्वयं रावराज़ा लक्ष्मणसिंह ने अपने हाथ से लिखी है।

एक अन्य पत्र में माँजी साहब राठौड़जी ने अपने अधिकारी को आदेश दिया है कि लक्ष्मणगढ़ तालके की आय के 30,000 रूपये सेठ पूरणमलजी किशनदासजी को दे देना। इसमें 25,000 गांवों की आय के एवं 5,000 रूपये करके एकत्रित कर लेना। [12]

सिंघवी फतेराज दीवान जोधपुर ने अपने हाकिमों को जो मेरता में स्थित थे महाराजा के इस आदेश की सूचना एक पत्र में दी है जिसके अनुसार सेठ पूरणमल गुमानीराम के हासिल कर में चौथाई माफ करने की बात कही गयी है। यह कर व्यवसाय पर राहदारी आदि का सभी व्यपारियों से लिया जाता था पर सेठ पूरणमल को चौथाई छूट महाराजा ने दी थी। [13]

इसी प्रकार किशनगढ़ स्टेट ने एक पत्र में लिखा है कि आपके भिवाणी से माल चरखी दादरी व रिवाडी बगैरह आवेगा सो आपको तीन आने छूट होगी। यह पत्र संवत् 1889 का है। सेठ पूरणमलजी के समय में मेवाड़ क्षेत्र के ठिकानों और राज घरानों में उनका बड़ा प्रभाव था। वे उन्हें रूपये उधार दिया करते थे। संग्रह के एक कागज से

---

11 यह पत्र आसोज सुदि 6 सवत् 1885 का है। मुकना (मुकुन्दसिंह) रावराजाजीका पासवान का पुत्र था। इसे वे पुत्रवत् किंवा उससे भी अधिक मानते थे ।

12 यह पत्र कार्तिक सुदी संवत् 1885 का है ।

13 यह पत्र माहबदि 4 संवत् 1887 का है ।

ज्ञात होता कि पीपल्या के रावतजी से 30,000 रूपये और लेने थे जिसका सलटारा मेवाड़ स्टेट ने किया था। इसी प्रकार एक दूसरे पत्र से भींडर के राव हमीरसिंह से लेन-देन की बात ज्ञात होती है।

खेतड़ी से सेठ पूरणमलजी के और आगे चलकर उनके पुत्र पौत्रादिकों के निकट के सम्बन्ध रहे थे। एक पत्र में खेतड़ी नरेश बख्तावरसिंहजी ने सेठ पूरणमलजी को अनुरोध किया था कि वे अपनी दुकानें जमा खातिर रखकर चिड़ावे और खेतड़ी में स्थापित करें और व्यापार शुरू करें। यह पत्र संवत् 1889 का है।

आगे का पत्र बड़ा महत्त्वपूर्ण है। खेतड़ी ठिकाने का प्रबन्ध उस समय मुख्य रूप से श्री सौभाग्य सिंह लाडखानी के हाथ में था। राज्य की आर्थिक हालत खराब थी। ऐसे ही संकट के समय राजा श्री फतेहसिंहजी का देहान्त हो गया था। एजेन्ट के अधिकार से सारा काम काज श्री सौभाग्यसिंह को निपटाना था। उन्होंने सेठ पूरणमलजी को राजा साहिब की मृत्यु की सूचना देते हुये लिखा था कि 5 हजार रूपयों तक की आवश्यकता होगी सो एक भले आदमी को यहां यह राशि देकर शीघ्र भेज देना [14]। इसी प्रकार खण्डेला नरेश लक्ष्मणसिंहजी ने सेठ पूरनमलजी को 5 हजार रूपये देने का अनुरोध किया था। इस पत्र से यह भी ज्ञात होता है कि यह उनका इस घराने से पहला लेन देन था। [15]

जितने समय रावराजा लक्ष्मणसिंहजी जीवित रहे उनके निकट प्रेमपूर्ण सम्बन्ध गनेड़ीवाला घराने से बने रहे। जब उनका देहान्त हो गया तो उनके पुत्र रावराजा रामप्रताप सिंहजी एवं राव राजा भैरवसिंहजी से भी ऐसे ही बल्कि पहले से भी अधिक सम्बन्ध बने रहे। रावराजा रामप्रतापजी के शासन के प्रारम्भिक दिनों में स्थिति बिगड़ गयी थी। उस समय खेतड़ी से पुरोहित रामनाथजी को कामदार बनाकर भेजा गया। पुरोहित जी ने रावराजा के शाहपुरा की शादी के अवसर पर अधिक खर्च स्वीकार करने से इनकार कर दिया तो रावराजा उन पर अप्रसन्न हो गये। फलस्वरूप उन्हें जाना पड़ा। यह विवाह बड़ी धूमधाम से हुआ। इसका सारा प्रबन्ध सेठ पूरणमलजी किशनदासजी की ओर से हुआ ऐसी बात एक पत्र से ज्ञात होती है। इस शादी में 90,000 रूपये उधार लिये गये थे। उपर्युक्त पत्र में पीह, त्याग आदि की दिलचस्प बातों का उल्लेख है। [16]

इस पत्र के पूर्व भी इस सम्बन्ध में सीकर ठिकाने के कामदार विजय सिंह ने सेठों से विवाह का देन लेन का भार वहन करने का अनुरोध करते हुये लिखा था कि आपका रूपया शीघ्र दे देंगे । इसमें किसी बात की हरकत नहीं होगी। हमें हमारे धर्म ईष्ट

14 यह पत्र पोष सुदि सम्वत् 1927 का है ।

15 यह पत्र सावण सुदि 12. 1894 का है ।

16 यह पत्र माह सुदि 6. 1897 का है ।

की सोगन्ध है तथा रावराजाजी के पावों की दुहाई है। (संवत् 1897) इसके पूर्व स्वयं रावराजा सहिब ने ऐसा ही पत्र माह बदि 6, 1897 में लिखा था जिसमे सेठों से विवाह का सारा सरजाम जुटाने का अनुरोध किया गया था।

एक पत्र जोधपुर महाराजा के कामदार लालसिंह का है जिसमें 25600 रूपये उधार लिये जाने का उल्लेख है। पत्र में कहा गया है कि 6907 रूपये नागोर के गावों की जमा, 13045 मेड़ता के गावों की जमा और 5644 रूपये परबतसर के गावों की जमा आवेगी उससे आपकी राशि का चुकारा किया जावेगा । यह पत्र फागुन बदि 11, 1892 का है। इन पत्रों के अलावा अनेकों पत्र विभिन्न ठिकानों के और हैं, जिनका विवरण देना यहां संभव नहीं है। इनमें से कुछ पत्र परिशिष्ट में दिये जा रहे हैं।

सेठ पूरणमलजी श्री महानंदरामजी के संतति क्रम में दिग्गज व्यक्ति थे। सन् 1839 (वि. 1896) में श्री महानदंरामजी के पुत्रों की सम्पत्ति का विभाजन हुआ। इस विभाजन के समय जो व्यक्ति पंच हुये उनकी मान्यता थी कि श्री पूरणमलजी को विभाजन के पहले सरदारी के 2 लाख रूपये दिये जावें । इसके पूर्व पिता की सम्पत्ति में से सभी भाईयों को एक एक लाख रूपये दे चुके थे। ये रूपये उन्होंने कार्तिक सुदि, 1,1894 सन् 1837 को दिये थे।

विभाजन का फैसला जयपुर में हुआ था। जयपुर राज्य का तत्कालीन एजेन्ट मेजर थर्सवी और उसका मुन्शी जयलाल भिवानी सेठ डूंगरमल जी जयलाल जी इस फैसले के पंच थे। यह फैसला कार्तिक सुदि 15 संवत् 1898 में हुआ था।

सेठ पूरणमलजी ने जीवन में अतुल सम्पत्ति उपार्जित की तथा उदारता पूर्वक उसको खर्च किया। विभिन्न पुस्तकों के उद्धरणों में उनके द्वारा निर्मित देव मन्दिरों का विवरण आ चुका है। श्री पूरणमल जी ने एक शिव मन्दिर स्थापित करवाया उसमें नर्मदेश्वर की स्थापना की गयी। उसे देखकर पुरी के जगद गुरू शंकराचार्यजी ने प्रशंसा की और कहा कि साधारणतया गृहस्थों के यहां ऐसा सजीव शिवलिंग देखने को नहीं मिलता। कहते हैं कि आज भी उस शिवलिंग पर सर्प फन फैलाता है। यह पिंड रूप-परिवर्तन भी करता है तथा स्वयं पिंड में सर्प के चिन्ह प्रकट होते हैं । उन्होंने एक हनुमानजी का मंदिर भी बनवाया था।

इन देवालयों के बाद जेठ सुदि 2 को 1882 में श्री सीतारामजी विशाल मंदिर निर्मित करवाया। अभी तक आप स्मार्त थे । इसके बाद आपने श्री वैष्णव संम्प्रदाय में दीक्षा लेने का निर्णय किया। आप कांची के बरदराज भगवान शिष्य हो गये। उसके उपरान्त 1832.35 ई० की अवधि में भगवान बरदराज का विशाल देवालय बनवाया। गोदालक्ष्मी आलवर आचार्य

की भी प्रतिष्ठा हुई। इस मन्दिर का स्थापना-संस्कार स्वामी अनन्ताचार्यजी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ था। सेठ पूरणमलजी ने एक बार रावराजाजी राम प्रतापसिंह से श्री वैष्णव संप्रदाय को अपनाने का अनुरोध किया। रावराजा के गुरू रींगस के पंडित श्रीरामजी ने उनकी आस्था इस सम्प्रदाय में जमने नहीं दी। बाद में पंडित जी श्रीराम जी स्वयं ने इस सम्प्रदाय को अपना लिया तो राव राजा ने उनसे अपने सम्बन्ध का विच्छेद कर लिया। [17]

सेठ पूरणमलजी की माता सरणीजी इस समय तक वृद्ध हो चली थीं। उनका देहान्त सन् 1847 (वि. 1904) में हो गया। सेठजी के एक मात्र पुत्र प्रेमसुखदासजी का जन्म सन् 1811 (वि. 1868) में हुआ था। इनकी सुकन्या विशनीजी का शुभ परिणय मुरारका परिवार में लछमनगढ़ में श्री जानकीदासजी से हुआ था।

श्री पूरणमलजी ने इस प्रकार अपने सांपत्तिक वैभव, और धार्मिक निष्ठा का प्रकाश फैलाते हुये संवत् 1905 (ई. 1848) में इस असार संसार से वैंकटपति भगवान विष्णु की प्रेयसी भगवती लक्ष्मी की वन्दना करते हुये विदा ली।

ईशानां जगतोऽस्य वैंकटपते र्विष्णोः परांप्रेयसीम्,
तद्वक्षःस्थल नित्यवास रसिकां तत् क्षान्ति संवर्द्धिनीम्।
पद्मालंकृत पाणि पल्लव युगां पद्मासनस्थां श्रियं,
वात्सल्यादि गुणोज्ज्वलां भगवतीं वन्दे जगत्मातरं।।

सेठ प्रेमसुखदास जी

राजा पूरणमलजी के एक मात्र पुत्र श्री प्रेमसुखदासजी का जन्म सन् 1811 (वि. 1868) में हुआ था। आपने अपने प्रारम्भिक जीवन के 37 वर्ष अपने पिता के वरद संरक्षण में बिताये। इस समय तक इनके पिता का व्यापार बहुत विस्तृत हो चुका था जिसे सम्हालने के लिये एक सुयोग्य व्यक्ति की आवश्यकता थी। श्री प्रेमसुखदासजी ने इस विस्तृत व्यापार को अद्वितीय समझदारी और योग्यता से संभाला ही नहीं किन्तु उसका आगे भी विस्तार किया। पिता के द्वारा दिया गुरुमंत्र उनका पथ प्रदर्शन करता रहा तथा उनकी शुभाशीष उनके पथ को प्रशस्त बनाती गई। एक अर्थ में वे अपने पिता से भी बड़े व्यापारी सिद्ध हुये जिनका राजदरबारों और विभिन्न ठिकानों में बड़ा वर्चस्व बना रहा।

---

17 सीकर का इतिहास पं० झाबरमल शर्मा पृ० 126-127

आपकी पत्नी का नाम रामकंवरी था। इस सुमाता ने तीन पुत्र और एक कन्या को जन्म दिया। पुत्रों के नाम श्री रामगोपाल, श्री हरगोपाल और श्री चिमनराम तथा पुत्री का नाम मुकुन्दीबाई था। इसका देहान्त सम्भवतः छोटी अवस्था में सन् 1850 में हो गया था।

श्री प्रेमसुखदास जी ने पिता के समय के राजदरबारों और ठिकानों के सम्बन्धों को और सुदृढ़ बनाया और व्यवसायिक उन्नति की ओर पूरी तरह ध्यान केन्द्रित किया। उनका व्यापार बैंकिंग के अलावा अन्य वस्तुओं को समाहित कर चुका था। कोई भाई न होने के कारण पिता की अतुलित सम्पत्ति उन्हें प्राप्त हुई थी। उनके कुशल हाथों में पड़कर यह सम्पत्ति दिनानुदिन वृद्धि को प्राप्त होती गई। यह दैव की अकृपा ही थी जिसके कारण आप 45 साल की छोटी आयु में ही कालकवलित हो गये। संस्कृत के कवि की उक्ति है कि क्षणभर जलना श्रेष्ठ है चिर काल तक धूमायित होना नहीं।

इनके जीवन काल में अनेकों महत्त्वपूर्ण घटनायें घटित हुई। शेखावाटी ब्रीगेड के मेजर फोरेस्टर से टकराहट और सीकर के रावराजा द्वारा पौद्दारी का हस्तान्तरण आदि। यह समय अराजकता का सा ही था। सीकर राज में लगातार चोरी, धाड़े होते रहते थे जिसमें प्रजा को हानि उठानी पड़ती थी। श्री रावराजाजी के सम्बन्ध पास के ठिकाने खंडेला, खेतड़ी एवं पंचपानों से ठीक नहीं थे अतः उनकी ओर से निरन्तर राज्य की शान्ति में विघ्न डाले जा रहे थे। ऐसी स्थिति में समृद्धिशाली लोगों का संशकित होना स्वाभाविक था। गनेड़ीवाला संग्रह में सेठ प्रेमसुखदासजी के नाम के सैकड़ों पत्र हैं जो विभिन्न राजा, महाराजा और ठिकानेदारों द्वारा लिखे गये हैं। एक पत्र में रावराजा लक्ष्मण सिंहजी ने सेठजी को आश्वस्त किया कि आपने लोगों के बाबत लिखा सो रिसालेदारों को ताकीद कर दी है कि जाब्ता रखें। आप विश्वास रखें कि बारोठियों को सजा जल्दी ही मिलेगी।[18]

सेठ प्रेमसुखदासजी ने अपना व्यापार इन्दौर क्षेत्र में बढ़ाने के लिये रामपुरे (इन्दौर) में दुकान खोलने के लिये प्रयत्न किया। इसमें तत्कालीन दीवान कोठारी रतनसिंह ने उन्हें दुकान खोलकर विणज करने का अनुरोध किया। इसके साथ ही कुछ सहूलियतें भी प्रदान की। दुकान पर पल्टन का पहरा, उगाही पताही सलटाना, रोकड़ के आवागमन पर सुरक्षा की व्यवस्था आदि सुविधायें उनको प्रदान की गयी। इस पर इन्होंने वहां भी अपनी दुकान खोल ली।

इधर संवत् 1890 में रावराजा लक्ष्मणसिंह का देहान्त हो गया। उनके पुत्र रामप्रताप सिंहजी उस समय केवल 5 वर्ष के थे। ऐसी स्थिति में खवासवालों ने राज्य में बड़ी अराजकता की स्थिति पैदा कर दी थी। उस समय राज-काज माँजी राठौड़जी देखती थी।

18. यह पत्र भादवा सुदि 14, सवंत् 1890 का है । इस पत्र के ठीक चार माह बाद रावराजाजी का देहान्त हो गया था ।

कुचक्रियों ने रावराजाजी के कृपा पात्रों को कैद कर लिया एवं उन्हें स्वंय भी असहाय स्थिति में डाल दिया। इस समय किसी प्रभावशाली व्यक्ति की मदद की आवश्यकता थी जो जयपुर के दीवान रावल बैरिसाल और एजेन्ट से अच्छे सम्बन्ध रखता हो। ऐसे व्यक्ति सेठ प्रेमसुखदास साबित हुये।

इस घटना के सम्यक् दिग्दर्शन हेतु शेखावाटी प्रकाश के लेखक के कथन को अविकल रुप से उद्धृत करना समीचीन रहेगा। "रावराजा ने भैरूं चेला को सेठ प्रेमसुखदासजी के निकट भेजा और अपनी मुक्ति का उपाय चाहा। इस पर सेठ प्रेमसुखदासजी ने अपने हाथ से लिखकर पत्र भेजा कि आप चिन्ता न करें। शीघ्र प्रबन्ध किया जाता है जिस पर उक्त सेठजी ने अपना एक गुमास्ता जो जयपुर का गुमास्ता रामनारायण था उसको जयपुर एजेन्ट मेजर थरसी (थर्सवी) साहब बहादुर के पास भेजकर रावराजाजी का समाचार पहुंचाया। उन्होंने एक विश्वासी जमीदार कादरअली को लक्ष्मणगढ़ भेजा। उसने रावराजाजी को एजेन्ट साहब बहादुर की तरफ से सन्तोषदायक समाचार कहा और फोतेदारी (खजाना) का कार्य सेठ प्रेमसुखदासजी को दिया और शर्कार (सरकार) से मान कुर्ब दिया गया। आज तक महाजनों को सीकर राज में नहीं दिया गया था। सेठ प्रेमसुखदासजी प्रथम हैं जो शेखावाटी में राजमान प्राप्त किया"।[19]

सेठ प्रेमसुखदासजी ने पोतदारी के इस कार्य को हठात् ही स्वीकार नहीं किया। इसके लिये उनको रावराजाजी ने स्वयं अनुरोध किया और स्वयं जयपुर के तत्कालीन एजेन्ट ने पत्र भेजा जिसमें कहा गया था कि आप सीकर की पोतदारी का काम माफिक बन्दोबस्त पहले और हाल लिखावट रावराजाजी के अच्छी तरह से करो।[20] दूसरे पत्र में लिखा था कि रावराजा जी कदाच अपने करार से फिरें और तफावत करे तो उसकी इतला जयपुर में करना कि वहां से ताकीद हो जायेगी।

इस पर प्रेमसुखदासजी ने अपनी तरफ से कुछ शर्तें रखीं जिनमें प्रधान शर्त यह थी कि सभी बड़े नगरों में अदालतें स्थापित की जाये जो लोगों के झगड़े टंटे अच्छी प्रकार सलटाने का काम करें। बाद में शादी का रुपया जो बाकी था सेठों को चुका कर उन्हें पोतदारी का काम सौप दिया गया।

पोतदारी का इकरारनामा विस्तृत है। इसमें अनेक बातों का उल्लेख है जैसे बठोठ पाटोदे के सवार 44 का रहना, सवार और पैदल रिसाले का रहना, सीकर, लक्ष्मणगढ़ फतेहपुर, रामगढ़ में अदालतें बैठाना, तथा रैयत से फाटक और बिना सबब के दण्ड नहीं

19. शेखावटी प्रकाश पं. रामचन्द्र भगवती दत्त शास्त्री पृ. 39 अष्टम अध्याय ।
20. यह कैफियत 11 नवम्बर 1841 (वि. 1898) की है । 24 मार्च 1814 का पत्र ।

लिये जाना आदि।[21] इस प्रकार सेठ प्रेमसुखदासजी ने एक बड़े अभाव की पूर्ति करवायी और अदालतें बैठाकर जनता के कल्याण का कार्य किया।

शेखावाटी में उन दिनों बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। लुटेरों के उपद्रवों की जांच के लिये ले. कर्नल लोकेट को भेजा गया। उन्होंने सन् 1831-32 में शेखावाटी का दौरा कर अपनी रिर्पोट पेश की। तब नसीराबाद से ब्रिटिश सेना की एक ब्रिगेड मय तोपों के आयी जिसने उन ठाकुरों के गढ़ों का विध्वंस कर दिया जो स्वंय डाका करते या डाकुओं को आश्रय प्रदान करते थे। स्थायी शान्ति के लिये शेखावाटी ब्रिगेड की स्थापना मेजर फोस्टर की अधीनता में कर दी गयी। फोस्टर को मजिस्ट्रेट के अधिकार भी थे। इस सेना के सवार यत्र तत्र अपना डेरा डाले रहते थे। कभी कभी लोगों को बेजा रुप से घास आदि के लिये तंग भी किया करते रहते थे।

एक बार लछमनगढ़ में जब इस प्रकार की बारदात हुई तो सेठजी की आज्ञा से उनके सवारों ने तथा गांव के आदमियों ने मिलकर ब्रिग्रेड के सवारों से कड़वी के गाड़े जबरन छीन लिये। इस पर शिकायत मेजर फोरेस्टर के पास गई। उसने क्रुद्ध होकर सेठ जी को पत्र लिखा। इसके मजमून का सार-संक्षेप निम्न प्रकार सें है "बल्कि गाड़ा कड़व का सवार सु खोस लिया सो बहुत गैर मुनासिब किया। लाजिम है कि ताकीदी जाणर बन्दोबस्त सरबरा घास कड़बी की करता रहज्यो। इसमें जो हरकत होई तो थे अपणे किये न पहुंचो ला"।[22]

उपर्युक्त घटना सेठजी की दबंगता की द्योतक है। जयपुर एजेन्ट से अपने अच्छे सम्पर्क के कारण वे ऐसी बातों की कम परवाह करते थे। आगे चलकर सन् 1843 में इस ब्रिगेड को तोड़ दिया गया और पैदल सिपाहियों का एक रेजिमेन्ट रख दिया गया।

सीकर राज में फिर परिवर्तन हुआ जब रावराजा रामप्रताप सिंहजी का आकस्मिक निधन सवंत् 1907 में हो गया । आगे चलकर सवंत् 1908 में श्री भैरू सिंहजी रावराजा बने। रावराजा बनने के कुछ समय बाद उन्होंने सेठ प्रेमसुखदासजी को पुनः अपना पोतदार बनाया। "म्हाकी सरकार में पैसों पैदा होती, सो पीसो को पीसो थॉकी दुकान जमा होसी। परवारों पीसो एक बरताँ नहीं" रावराजाजी ने अपने एक पत्र में लिखा। निदान चैतसुदि 12, सवंत् 1912 से फिर से ये सीकर राज के पोतदार बन गये।

श्री प्रेमसुखदास सम्बन्धी कागजों में एक याददास्ती दिसावरों की पूछी नामक डोक्टयूमेन्ट है जिसमें दिसावरों की दुकान और गद्दियों की स्थितियों का दिग्दर्शन है। इससे भाईयों

21. चैत सुदि सवंत् 1898 ।

22. मेजर फोरेस्टर का पत्र सेठ प्रेमखुदास के नाम पोष सुदि 9, 1894 ।

के आपस की कटुता के दर्शन होते हैं। सभी पत्रों का हवाला देना यहां सम्भव नहीं है। कुछ पत्र परिशिष्ट में दिये जा रहे हैं।

श्री प्रेमसुखदास जी सन् 1844 में लक्ष्मणगढ़ से हरिद्वार गये थे। उस समय तीनों पुत्र एवं दादी सरणीजी, बहिन विसनीजी थी। सन् 1856 में श्री प्रेमसुखदासजी का निधन हो गया । उस समय वे 45 साल के थे। उनकी पत्नी का देहान्त सन् 1882 में हुआ। गनेड़ीवाला परिवारों की दबंगता और उनकी जनप्रियता एवं स्वाभिमान की द्योतक एक महत्त्वपूर्ण घटना है जिसे इसी स्थान पर ही देना उचित है। यह घटना वि. 1938 की है। गनेड़ीवाला कुल के अतीव प्रभावशाली सेठ प्रेमसुखदासजी का इसके 25 वर्ष पूर्व निधन हो चुका था पर आगे की पीढ़ियों ने भी उनकी दबंगता विरासत में पायी थी।

सेठों के बाड़े में एक बड़ा सीसम का पेड़ था जिसे सीकर के ओहदेदारों ने बिना सेठों के पूछे कटवा लिया था। इस पर क्रुद्ध सेठ लोग बड़े जनवर्ग के साथ वहां पहुँचे। ओहदेदार लकड़ी छोड़कर भाग गये। इस कटी हुई लकड़ी को जला दिया गया। सीसम काटने वालों को शिकायत करने पर भी जब कोई दण्ड नहीं दिया गया तो सेठों ने नगर को त्यागने का विचार किया। वे सपरिवार सीसू्यू गांव तक चले गये जो सीकर से करीब 10-12 मील है।

इस पर सीकर के तत्कालीन रावराजा माधोसिंह जी ने ओहदेदारों को मनाने भेजा और उनके असफल होने पर वे स्वंय श्री छाजूराम वियाणी जो संभवतः उनके पोतेदार थे को लेकर सीसू्यू पहुँचे। वे मानपूर्वक सेठों को वापिस ले आये। इस सम्बन्ध में किसी कवि की कही हुई निम्नलिखित कविता मिलती है।

"संवत् गुन्नीसो उणतीसा, औदेदाराँ चुगली खा शीस्युं कटवा दी बात करी तनाजा की।
सेठ जुगलेश के सपूत नाती भेला होय शीस्युं बलवादी बात चलीना दवाजा की।
बांका भये शीस्यूँ कांज मांग कीन्हीं राज से न्याय के तकाजा की।
चली ना एक राज की, हाकिम को हुक्म गयो हुरमत गई, रही सेठन की शेखी विवेकी रावराजा की।
गनेड़ीवाला सेठ सदा का विलाला बातें रही आला-आला सेठों के समाजा की।
सत पीढयाँ साहूकार घूम्यां है हस्ती द्वार पंगत रही अवताजा की।
नामा-कामा में सदा शूरवीर रहे, बांका है खजाना ज़ाके लक्ष्मी बेअन्दाजा की।
शीस्यू पै सेठा, की राज से तकरार भई, रही सेठा की शेखी विवेकी रावराजा की।
कट्टर कुल सदा को सेठ जुगलेश हूँ को ऊंची ऊंची बाते रही सेठों के समाजा की।

आदेदारां हाथ जोड़े तासु नहीं मुड़े मोड़े बांका होय बात राखी गरीबे नीवाजा की।
माधवेन्द्र आप जाय, लाये हैं मनाय धाय, बस्ती में पधारे मानता बँधी साजा की।
बस्ती हूँ की ऐकी नेकी देखी गई टेकी, रही सेठन की शेखी विवेकी रावराजा की।"

श्री प्रेमसुखदासजी के पुत्रों में बड़े श्री रामगोपालजी, विचले श्री हरगोपालजी एवं कनिष्ठ श्री चिमनरामजी थे। श्री रामगोपालजी की मृत्यु छोटी अवस्था में ही हो गयी थीं। इनकी समाधी नूंवा में बनी हुई है। कहते हैं कि बीमारी का इलाज कराने परिवार वाले उन्हें नवलगढ़ में ले गये। वहां अधिक बीमार होने पर उन्हें वापिस लक्ष्मनगढ़ ला रहे थे कि राह भटक गये और नूंवा के पास उनका देहान्त हो गया। वहीं पर इनकी छत्री बनाई गई। इनके कोई संतान नहीं होने से हरगोपालजी के बड़े पुत्र घनश्यामदासजी को इनके गोद कर दिया गया।[23]

श्री घनश्यामदासजी का जन्म 1847 में हुआ। आपके अस्थिफूल हरिद्वार में 1898 में पहुँचे। आपके तीन सुपुत्र हुये कृष्णचन्द्रजी, राधाकिशनजी एवं पुरूषोत्तमदासजी। हैदराबाद का गोलकुण्डा हीरों के लिये प्रसिद्ध रहा है। अतः हैदराबाद में अनेकों जाती के लोगों ने जवाहिरातों का धन्धा किया है। श्री कृष्णचन्द्रजी भी गनेड़ीवाला परिवार में एक ख्यातनामा जोहरी हो चुके हैं। कहते हैं कि एक बार हैदराबाद के नवाब उसमानअली ने आपको हीरे दिखाने बुलाया पर आप नही गये और अपने भाई को भिजवा दिया और कहा कि हम तो एक ही राजराजेश्वर श्री सीतारामजी के दरबार में खड़े होने जाते हैं। नवाब के यहाँ मिलने वाले खड़े रहते थे। इसलिये वे नहीं गये।

श्री कृष्णचन्द्रजी का जन्म सन् 1865 में हुआ था। आपके दो विवाह हुये। पहली पत्नी भिवानी के बनारसीदास प्रहलादराय वैद की सुकन्या थी। दूसरा विवाह अमरावती में शिवनारायण बनेचन्द्रजी चौधरी की सुकन्या धापीबाई से हुआ। सन् 1890 तक आपकी कीर्ति कुशल जोहरी के रुप में फैल चुकी थी।

आपके बड़े पुत्र श्री केसरदेवजी बम्बई में चेनीराम जैसराज फर्म के सीतारामजी पोद्दार की सुकन्या से परणे गये थे। सीतारामजी पौद्दार छोटी अवस्था में चले गये। इस पर टाटा इस बात पर सहमत हो गये कि अगर कृष्णचन्द्रजी जोहरी सारे व्यवसाय की गारन्टी ले तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी। इस पर टाटा से इस फर्म का व्यवसाय यथावत् बना रहा।

---

23. अग्रवाल जाति का इतिहास पृष्ठ 382 एवं आगे ।

थोड़े समय तक उन्होंने लोहे का व्यवयास भी किया था। वे धार्मिक प्रवृति के मितभाषी पुरूष थे। समाज के अन्य वर्गों में भी उनका सम्मान था। आप नित्य प्रति भगवान-सीतारामजी के दर्शन करते थे। एक बार एक विवाह के स्थल पर अचानक उपस्थित होने पर आप 15 दिन हाजत में रहे पर वहां भी श्री सीतारामजी का प्रसाद ही ग्रहण करते रहे। पुरूषोत्तमजी के पारिवारिक सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि श्री कृष्णचन्द ने पुरी के जगन्नाथ स्वामी का रघुनाथ वेश करवाया था जिस पर 2 लाख रुपये लगे थे। पुरी के पंडाजी के कथनानुसार उस समय इस वंश के गहनों आदि पर तथा समारोह आयोजन पर काफी रुपये लगे थे। जगन्नाथ स्वामी के रेकार्ड में इससे पूर्व कभी रघुनाथ वेश नहीं हुआ था। आप हैदराबाद में श्री सम्प्रदाय के एक स्तम्भ माने जाते थे। आपका देहान्त 80 वर्ष की अवस्था में सन् 1945 में हुआ। आपकी धर्मपत्नी का देहान्त आपके सात वर्ष बाद हुआ। इन्होंने सीतारामबाग में ब्राह्मणों के निवास के पुराने कमरों का जीर्णोद्धार करवाया और नये कमरे बनवाये। आपकी सुकन्या कमलाबाई का विवाह राजा बहादुर सर वंशीलाल पित्ती के राजा गोरधनलाल जी के साथ हुआ। उनके पुत्र श्री केशवदेव जी थे। उनके पुत्र श्री लाल, श्री कान्त के पिता हैं। श्री कृष्णचन्द्र के छोटे भाई राधाकृष्णजी का देहान्त 1908-9 में हो गया। उनका वंश आगे नहीं चला। श्री पुरुषोत्तमदासजी के पुत्र श्री मदनलालजी चार पुत्रों विजय कुमार, नारायण लाल, सुशील कुमार और कमल कुमार के पिता हैं। श्री विजय कुमार के पुत्र श्रीधर हैं। श्री नारायण के पुत्र शैलेष कुमार एवं सुशील कुमारजी के पुत्र शरद हैं। ये परिवार हैदराबाद में बसते हैं।

श्री केशवदेवजी का विवाह लक्ष्मणगढ़ में सन् 1927-28 में बम्बई के नाथूरामजी रामनारायणजी पौद्दार रामगढ़ निवासी सीतारामजी की सुकन्या रुकमणी बाई से हुआ। इस विवाह के थोड़े समय बाद ही केशवदेवजी का स्वर्गवास हो गया। इनके श्री कृष्णचन्द्रजी के पुत्र श्री लाल को गोद कर दिया गया। श्री लालजी का विवाह रामदयालजी घासीराम बदरका के पुत्र श्री बंकटलालजी की चौथी सुकन्या अनुसूयाजी से हुआ है । इनकी एक मात्र सुकन्या इन्दुजी का शुभ विवाह साधुराम तोलाराम के मन्नालालजी गोयनका के सुपुत्र श्री गोपालजी से हुआ । इन्दुजी के द्वितीय पुत्र श्री कान्त को आपने गोद लिया है । श्री लालजी ने बैंकिंग के व्यवसाय के अतिरिक्त अनेक चीजों की एजेन्सी ले रखी है।

श्री घनश्यामदासजी के दूसरे पुत्र राधाकृष्णजी का जन्म सन् 1870 और तीसरे पुत्र श्री पुरूषोत्तमजी का जन्म सन् 1882 में हुआ । श्री राधाकृष्ण का अल्प आयु में दुखद निधन हो गया था। शेष दोनों भाईयों का परिवार संयुक्त बना रहा।

श्री पुरूषोत्तमदासजी का शुभ विवाह नवलगढ़ के पाटोदिया परिवार में रामचरणदासजी गंगाधर की सुकन्या सरस्वतीबाई से हुआ। इस माता से केवल एक पुत्र श्री मदनलालजी

का जन्म सन् 1920 में हुआ। श्री पुरूषोत्तमजी भी हैदराबाद स्टेट के प्रमुख जोहरियो में रहे। आप ओनरेरी सिटी मजिस्ट्रेट रहे । बैंकर के रूप में आपका अच्छा नाम रहा। आप मुसलमानी ढंग के जेवरों के भी बड़े व्यवसायी रहे।

आपकी श्री सम्प्रदाय में प्रगाढ़ भक्ति रही है। आपने 80 वर्ष की आयु पाई। आपकी धर्मपत्नी सरस्वती देवी ने सन् 1932 में 56-57 की साल की आयु में परलोक गमन किया। श्री पुरूषोत्तमजी की मृत्यु सन् 1962 में हुई।

श्री मदनलालजी का जन्म सन् 1920 में हुआ। आपका विवाह बम्बई के गणपतराय रामगोपालजी रूईया रामगढ़ निवासी की सुकन्या लक्ष्मीबाई से सन् 1935 में हुआ। इस माता से 3 सुकन्यायें एवं चार सुपुत्रों का जन्म हुआ। शान्ताबाई इन्दौर के बनवारी लाल जी पौद्दार के साथ विवाही गयी है। मालती बाई बम्बई में जोहरीमल दिलसुखराय पौद्दार के जगदीशप्रसादजी से विवाही गयी है। प्रभाबाई का विवाह बम्बई के विमल कुमारजी के साथ हुआ है।

आपके ज्येष्ठ सुपुत्र विजयकुमारजी का विवाह बरेली के खण्डेलवाल लाला रोशनलाल श्रीनाथ ईटों वाले की सुकन्या शैलजा से हुआ है। श्री नारायणीजी का विवाह बम्बई में कानपुर वाले तपेश्वरी प्रसादजी पौद्दार की सुकन्या उषा रानी से हुआ है। श्री सुशीलकुमारजी का परिणय स्वरूपचन्द पृथ्वीराज फर्म के श्री नारायणदासजी की पौत्री सुनन्दा से हुआ है। सबसे कनिष्ठ पुत्र कमल कुमारजी का विवाह इन्दौर के बनवारी लालजी की सुकन्या कुसुमलता से हुआ है। श्री विजय कुमारजी के एक पुत्र श्रीधर एवं एक कन्या अंजस्वी है। श्री नारायणजी के तीन कन्यायें एवं एक पुत्र शेलेष हैं। श्री सुशील कुमारजी के पुत्र शरद हैं। सारा परिवार बेगमपेठ में अलाउद्दीन बिल्डिंग में रहता है। सारा परिवार सुसंस्कृत एवं धार्मिक रूचि रखने वाला है।

श्री हरगोपालजी सेठ प्रेमसुखदासजी के द्वितीय पुत्र थे। इनका जन्म सन् 1838 में हुआ। इनका विवाह सन् 1845-48 की अवधि में हुआ। इस समय पूरणमलजी का परिवार बेगम बाजार की उसी हवेली में रह रहा था जिसका निर्माण श्री पूरणमलजी ने करवाया था। हैदराबाद पहले परकोटे के अन्दर था। इस परकोटे में 16 दरवाजे और 32 खिड़कियाँ थी। इसमें बेगम बाजार मुख्यतः मारवाड़ियों का बाजार है। श्री पूरणमलजी इस बाजार के मूल संस्थापक थे।

श्री घनश्यामदासजी यद्यपि गोद चले गये थे तथापि उनका स्नेहभाव अपने लघुभ्राता श्री रामलालजी के साथ बराबर बना रहा। परिवार और व्यवसाय दोनों ही संयुक्त रूप से चलते रहे। सीताराम बाग की जायदाद, जवाहरात का व्यवसाय तथा अन्य जागीरों का काम था।

सन् 1907-8 में मूसा नदी की बाढ़ के कारण इस हवेली का कुछ भाग ढहकर गिर गया। इस पर सारे लोगों ने इस हवेली को छोड़ दिया। श्री धनश्यामदासजी एवं श्री रामलालजी के परिवार सीताराम बाग में रहने लगे। उस हवेली में भगवतदासजी और भगवानदासजी दो भाई रहते रहे।

श्री हरगोपालजी ने 50 वर्ष की आयु पाई। आपके अस्थिफूल सन् 1883 में हरिद्वार पहुंचाये गये। आपकी मृत्यु बैंकटेश बालाजी में हुई जहां इनकी समाधि है। मृत्यु के पूर्व आपने अपने ज्येष्ठ पुत्र को बड़े भाई के गोद कर दिया था। इस प्रकार आपका संतति क्रम श्री रामलालजी से प्रारम्भ हुआ।

अग्रवाल जाति के इतिहास में आपके विषय में निम्नलिखित उल्लेख पाया गया। इनका जन्म संवत् 1890 में हुआ। ये अच्छे प्रतिष्ठा सम्पन्न और नामांकित पुरूष हुये। आपने पिताजी के स्वर्गवास के पश्चात् विस्तृत व्यापार कां कार्यभार लम्बे समय तक संचालित किया। संवत् 1940 में आपका स्वर्गवास हो गया।

श्री हरगोपालजी के समय में भी राजदरबारों से बराबर सम्पर्क बना रहा और लेन देन का कार्य पहले की तरह चलता रहा। गनेड़ीवाला संग्रह में विभिन्न ठिकानों के श्री हरगोपालजी के नाम आये, अनेकों कागज हैं जिनसे उनके व्यक्तिगत सम्पर्क की बात ज्ञात होती है।

एक महत्वपूर्ण पत्र में खेतड़ी के तत्कालीन प्रबन्धक श्री सौभाग्यसिंह ने लिखा है कि साहब बहादुर चले गये हैं और सारा काम मुझ पर छोड़ गये हैं। द्वादशा के बाद राजाजी को जयपुर ले जावेगें। तेरह को 15 दिन का घड़ा भराकर मातम करने के लिये जयपुर को रवाना होंगे। आप 5 हजार रुपया देकर समझदार व्यक्ति को यहां भिजवा देना।[24]

उस समय शेखावाटी में अशान्ति का समय चल रहा था जिसका कुछ वर्णन ऊपर किया जा चुका है। माल और रोकड़ का आवागमन होना मुश्किल हो रहा था । गनेड़ीवाला सेठों के बठोठ पाटोदा वाले ठाकुरों से नजदीकी सम्बन्ध दलेलसिंह के समय से ही रहे थे। आगे चलकर डूँगजी जुहारजी से भी उनके अच्छे सम्बन्ध रहे। संग्रह में इन सबके अनेकों पत्र गनेड़ीवाला सेठों के नाम मौजूद हैं।

इनमें से एक पत्र का हवाला यहां दिया जा रहा है। यह पत्र पाटोदा से जवाहरसिंह ने सेठ हरगोपालजी को लिखा था । इसमें कहा गया है कि आप रुपया 5 देकर अजमेर से 50000 की रोकड़ मंगाना चाहते हैं सो दो घोड़े लेकर हम नहीं जावेंगे। आज का

---

24 यह पत्र पौषबदि 7, संवत् 1927 का है ।

यह तो वक्त है। सो रुपये हमारे पास तो देने को है नहीं। आज भूखा मरता धाड़वी निकलबा देवे नहीं।[25]

सेठ लोग घोड़े खरीदते रहते थे। इन्हीं घोड़ों की खरीद सम्बन्धी एक पत्र जवाहरसिंह का है जिसमें 70 रुपयों में एक घोड़ा भेजने की बात कहीं गयी है। साथ ही लिखा है कि बाई का विवाह है सो आपको ही करना होगा। आपके और हमारे व्यवहार है।[26] इस तरह के कई पत्र पाटोदावालों के सेठ हरगोपालजी चिमनरामजी के नाम के हैं।

इस समय देश में स्वतन्त्रता संग्राम जिसे अंग्रेजों और उनके हिमायती राजा महाराजाओं ने सिपाही विद्रोह कहा, की ज्वाला देश के विभिन्न भागों में भड़क रही थी। इसकी लपटें राजस्थान में भी पहुंची। प्रसिद्ध देश भक्त और सेनानी ताँत्या टोपे[27] अंग्रेजों से लड़ते झगड़ते राजस्थान पहुंचा। दौसा में 13 जनवरी, 1859 को उसकी थकी माँदी सेना पहुंची तो, बिग्रेडियर शोवर ने अंग्रेज सेना के साथ उस पर दूसरे दिन हमला किया। इससे ताँतिया की सेना छिन्न-भिन्न होकर सीकर की ओर बढ़ी। वहां पर ले. कर्नल होम्स ने इस सेना पर 21 जनवरी 1859 को सीकर में हमला किया। इससे ताँत्या के सिपाही जो संख्या में 2 हजार से भी कम थे इधर-उधर बिखर गये। ताँत्या की यह अंतिम लड़ाई थी। 7 अप्रैल 1859 को विश्वासघात करके इसे अंग्रेजों को सौप दिया गया। उन्होंने न्याय का नाटक रचते हुये 18 अप्रैल 1859 को उसे फाँसी पर चढ़ा दिया। इस प्रकार देश के राजा महाराजा और ठिकानेदारों ने अंगेजों का साथ देकर देश के साथ विश्वासघात किया। यह अलग कहानी है जो यहां देना सम्भव नहीं है।[28] ताँत्या टोपे के सीकर की ओर आने के पहले ही सर्वत्र भय व्याप्त हो गया था। लोग, जिनमें ठिकानेदार भी शामिल थे अपनी सुरक्षा के प्रति चिन्तित हो उठे थे। गनेड़ीवाला सेठों ने अपने आभूषण आदि कीमती सामान को सीकर के गढ़ में थोड़े समय के लिये भिजवा दिया। उन्होंने अपनी हवेली पर पहरा देने के लिये बठोठ के जुहारजी को बुलाया जिसने सिपाहियों के साथ हवेली पर पहरा दिया। इस प्रकार के उल्लेख पुरानी बहियों में प्राप्त होते हैं।[29]

श्री संपतकुमारजी मिश्र का विचार है कि ताँत्याँ टोपे और उसके सैनिकों को गनेड़ीवाला सेठों ने लक्ष्मणगढ़ से फतेहपुर जानेवाले मार्ग पर बनी हुई सेठों की कोठी पर भोज दिया

25 यह पत्र पोषसुदि 1 सवंत् 1917 का है ।

26 यह पत्र आपाढ़ सुदि 10, सवंत् 1919 का है ।

27 श्री तांतिया टोपे का असली नाम रामचन्द्र पाण्डरंगराव यवालकर था । वे महाराष्ट्र के देशष्ठ ब्राह्मण थे । उनका कुटुम्ब येवाल का रहने वाला था जो नासिक के पास पटोदा जिले में है, उनका जन्म सन् 1814 और मृत्यु 45 साल की अवस्था में सन् 1859 में हुई थी । उन्हें मिलीटरी जीनीयस बताया गया है । ब्रिट्रेन के प्रसिद्ध इतिहासकार पर्सीकोर्स स्टेनिडग ताँतिया को विश्व का सबसे प्रसिद्ध गुर्रीला लीडर जो म्युटिनी ने पैदा किया बताया है ।

28 मिलीटरी ट्रेट्स आफ ताँतियां टोपे-श्री रजनीकान्त गुप्ता 1987

29 काला की फौज के दंगा में चारू हवेली के पहरों दिया जुहारजी बठोढ का सेठ रामनाथजी के ठहरा 1811 लाग्या मिति जेठ 10, 1915

था। इस पर सीकर के रावराजा भैरूसिंहजी सेठों पर नाराज हुये। कालों की फौज के सम्बन्ध में कुछ और उतारे भी पुरानी बहियों में प्राप्त होते हैं जिनमें इधर उधर फौज के सम्बन्ध में ऊंट भेजने के खर्चे दर्ज हैं। इस सम्बन्ध में श्री सम्पतकुमारजी का कथन अविकल रूप से उद्धत किया जाता है।

"काला की फौज का विद्रोह यद्यपि शुरू सन् 1857 में हुआ था, किन्तु दोनों की ओर से उसका मनोनीत करण बहुत पहले से हो गया था। स्वतन्त्रता प्रेमी भारतीय जनता तथा विद्रोह के प्रधान सेनानी ताँत्या टोपे ने अपनी जांच पड़ताल से यह पता लगा लिया था कि उसे भारत के विविध प्रदेशों में कहां कौन-कौन सहायक साथी मिलेगें और अंग्रेजों ने यह जान लिया था कि उनके सहायक कहां कौन हो सकते है। उन दिनों बठोठ पाटोदा के डूंगजी जुहारजी और लोठिया जाट इन तीनों की यह प्रसिद्धी हो चुकी थी कि ये भारत में अंग्रेजी राज बनने के विरोधी हैं और सर्वसाधारण जनता के सामने यह बात भी जाहिर हो चुकी थी कि डूंगजी जुहारजी की पीठ पर जनतन्त्र समर्थक गनेड़वाला सेठो का हाथ है। दोनों, सेठ और डूंगजी जुहारजी बाहर से पृथक-पृथक भले ही दिखते हो, भीतर से दोनों एक और अभिन्न हैं। ताँत्या टोपे तथा अंग्रेज दोनो ताक में थे कि डूंगजी जुहारजी उनका साथ दे। दोनों को जब यह पता चला कि डूंगजी जुहारजी तो अपने सदा के साथी गनेड़ीवाला सेठों के साथ हैं तो दोनों दलों के सीकर के तत्कालीन शासक रावराजा भैरोंसिंहजी के माध्यम से यह प्रयत्न किया कि गनेड़ीवाला सेठ और डूंगजी जुहारजी हमारा साथ दे।

दोनों के प्रयत्न के बावजूद गनेड़ीवाला सेठों और डूँगजी जुहारजी ने भारत में अंग्रेजी राज के विरोध में कार्य करने का निश्चय किया। यह जानकारी पाकर ही ताँत्या टोपे अपने 17 हजार सैनिकों के साथ सीकर आया था, जिसका उल्लेख उसके शुभागमन के उपलक्ष्य में नगर परिषद सीकर की ओर से बाजार में बड़े पोस्ट आफिस के पास एक छोटा सा पार्क बनाकर जिसमें ताँत्या टोपे की प्रस्तर प्रतिमा भी बनाई गयी, किया गया है जो इस प्रकार है।

"ताँत्या टोपे की प्रस्तर मूर्ति"

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेगे हर बरस मेले।
वतन पर कुर्बान होने का यही बाकी निशां होगा।।

1957 के स्वतन्त्राता संग्राम प्रथम शताब्दी के पुनीत अवसर पर भारत वर्ष के उस अमर सेनानी वीर ताँत्या टोपे और उनके 17 हजार साथियों की याद में स्थापित किया गया जिन्होने टौंक, बूंदी, झालरापाटन, नाथद्वारा, भीलवाड़ा, दोसा, सवाई माधोपुर, सलूम्बर (मेवाड़) बांसबाड़ा, इन्द्रगढ़ आदि अनेक स्थानों पर क्रान्ति का सिंहनाद करते हुये अन्त में

21 जनवरी सन् 1858 को सीकर में कर्नल होम्स की सेनाओं का बड़ी वीरता से सामना किया। दिनांक 5-8-1958

नगर परिषद सीकर द्वारा स्थापित किये गये उपरलिखित स्मारक से यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि ताँत्या टोपे सीकर आया था। सीकर से वह लक्ष्मणगढ़ भी गया था और गनेडीवाला सेठों से सम्पर्क भी स्थापित किया था। यह केवल मात्र जनश्रुति ही नहीं है, शत-प्रतिशत सत्य बात है कि गनेड़ीवाला सेठों ने लक्ष्मणगढ़ से फतेहपुर जाने वाले मार्ग पर बनी हुई सेठों की कोठी पर उसे उसके 17 हजार सैनिकों सहित भोज दिया था जिसकी कहानी अब तक जनता की जुबान पर प्रसंगवश आती रहती है। इस भोज से सीकर के रावराजा भैरोसिंहजी गनेड़ीवाला सेठों पर बहुत नाराज हुये। उन्होंने अपनी नाराजगी गनेड़ीवाला सेठों के सीकर स्थिति विधि विशेषज्ञ प्रतिनिधि श्री शिवचन्दरायजी सारस्वत के आगे इसलिए जाहिर की वे (सारस्वत) सेठ लोगों से बताये। सारस्वतजी ने सेठ लोगों के नाम एक पत्र लिखा, जिसमें लिखा था कि काला की फौज को उसके सरदार ताँत्या टोपे सहित भोज देने से रावराजा साहब बहुत नाराज हुये हैं। वह पत्र हमने कलकत्ता के 45 काटन स्ट्रीट में सुरक्षित रखा था जिसे दीमकों ने साफ कर दिया फिर भी यह घटना श्रुति परम्परा से अब तक सजीव है।

यहां पर यह बता देना आवश्यक है कि रावराजा भैरोंसिंहजी सीकर नरेश द्वारा सेठों के सम्मुख रखी गई इस मांग का कि वे ताँत्या टोपे और उसकी सेना का साथ न देकर फिरंगी सरकार का साथ दे, समर्थन न करने के कारण सीकर नरेश बहुत नाराज हुये और उस नाराजगी के फलस्वरूप उन्होंने रावराजा राम प्रताप सिंहजी के समय से चली आ रही पोद्दारी गनेड़ीवाला सेठों से वापस लेकर सीकर के सेठ जीवणराम पौकराम वियाणी के जिम्मे कर दिया। गनेड़ीवाला सेठों ने बिना किसी ऐतराज के पोद्दारी छोड़ दी। उसके बाद भी सीकर नरेश समय समय पर सामाजिक कार्यों में गनेड़ीवाला सेठों का सहयोग लेते रहे। पोद्दारी छोड़ने के बाद रावराजा भैरोसिंहजी को अपने स्वास्थ्य सुधार के निमित "वसन्त मालती" (आयुर्वेदिक औषधि) की आवश्यकता हुई तो उन्होंने सेठों के नाम एक पत्र लिखा कि असली बसंत मालती की आवश्यकता है, इस पर सेठ लोगों ने तुरन्त यह औषधि भेज दी।

गनेड़ीवाला सेठों द्वारा काला की फौज की सहायता करने से कर्नल होम्स गनेड़ीवाला सेठों पर नाराज और क्षुब्ध तो थे ही, तात्या टोपे से सम्पर्क के लिये जब दो तीन बार हीरा ब्राह्मण ऊंटवाला को नवलगढ़ और रतनगढ़ भेजा, जिसका उल्लेख श्री विश्वनाथ जी गनेड़ीवाला की डायरी में दर्ज है जो पुरानी बहियों से लिया गया है, तो कर्नल होम्स और अधिक रूष्ठ हो गये। उन्होंने दूसरे तरीकों से अपनी रंजिश का बदला लेने का विचार

किया। गनेड़ीवाला सेठों से उनके स्वंय के यात्रा उपयोग में आने वाले चमकदार बैलों समेत रथ की मांग की, जिसमें आराम के साथ बैठकर वह समीपस्थ स्थानों का पर्यटन कर स्थिति को संभालता रहे। शेखावटी प्रदेश में उस समय ऊंट, घोड़ा और रथ ही यात्रा के साधन थे। स्वाभिमानी देशभक्त गनेड़ीवाला सेठों ने जब अपने निज के यात्रा उपयोग में आने वाला रथ देने से इन्कार कर दिया तो कर्नल होम्स के दिमाग का पारा और अधिक गर्म हो गया। उसने रावराजा सीकर से जो उसके अधीन थे, पर्याप्त मात्रा में शस्त्र सेना लेकर उस सेना के द्वारा गनेड़ीवाला सेठों की चार चौक वाली उस ऐतिहासिक हवेली का जिसमे कितने ही बड़े-बड़े राजनैतिक शरणार्थी पनाह पा चुके थे और जो सीकर के रावराजा राम प्रताप सिंहजी को भी 7 दिन पर्यन्त अपने भीतर रखकर गौरवमयी गरिमा पा चुकी थी, उसके चारों ओर कड़ा घेरा बना दिया ताकि सेठ लोग तंग आकर कर्नल होम्स के आगे आत्म समर्पण करे दें और अंग्रेज सरकार के अनुकूल हो जायें। कर्नल होम्स की यह धारणा कामयाब नहीं हुई। गनेड़ीवाला सेठों के सदा के साथी डूँगजी जुहारजी जिन्हें भारत की वर्तमान सरकार ताँत्या टोपे के समान ही स्वतन्त्रता सेनानी मान चुकी है तुरन्त मौके पर अपनी मण्डली सहित पहुंच गये, और सीकर की सेना को छिन्न-भिन्न कर यहां से हटा दिया और जब तक कर्नल होम्स सीकर में रहे, तब तक डूँगजी जुहारजी सेठों की चारों हवेलियों की और उनमें आबाद गनेड़ीवाला सेठों के सुरक्षित पहरा लगाते रहे। इस पहरे की बाबत श्री विश्वनाथजी गनेड़ीवाला की डायरी में पुरानी बहियों के उतारे अंश इस प्रकार है :

काला की फौज का दंगा में चारों हवेलियों के पहरों दियो जुहार जी बैठोठ का, बैठोठ सु आया सेठ रामनाथ जी के ठहरा जद 1811/- लाग्या मिति जेठ बदि 10 संवत् 1915 आगे चलकर इसी बही का उतारा इस प्रकार है।

डूँगजी जुहारजी ने माह सुदी 3 संवत् 1915 मिजमानी (प्रीतिभोज) दी जद लाग्या।

ऊपर लिखित पुरानी बहियों की पंक्तियों से पाठक जान गये होगें कि राजस्थान का गनेड़ीवाला वंश सदा से सब अवसरों पर भारतीय राष्ट्र के साथ है। यही कारण है भारत में इस परिवार की सर्वतोमुखी ख्याति और प्रतिष्ठा तथा गरिमा का। गनेड़ीवाला संग्रहालय में एक ऐसा पुराना पत्र मिला है, जिसका ऊपरी भाग तो नष्ट हो चुका है जिससे यह पता नहीं चलता है कि वह गनेड़ीवालों की कहां की फर्म से कहां की फर्म को भेजा गया था किन्तु अन्य व्यापार सम्बन्धी समाचारों के बाद उसमें लिखा है 'और देहली कन जिकर हो यो जिण को समाचार आपके परबारो भुगत्यो होसी दिल्ली न तो सवार लूट लीना मेरठ की छावणी पणलूट लीनी बतावे छै, समाचार परबारों भुगत्यो होसी' स्पष्ट बताती है कि सिपाही विद्रोह में गनेड़ीवाला सेठों की सब व्यापारिक पीढ़ियाँ राष्ट्र के साथ थी

और तभी ताँत्या टोपे की यात्रायें झालावाड़, भीलवाड़ा आदि स्थान में शामिल थी जहां सेठों की दुकाने थीं।

डूंगजी जुहारजी तथा लोठिया जाट के गनेड़ीवाला परिवार के पूर्वजों के नाम उस समय आये हुये पत्रों को, जिनमें से कतिपय पत्र परिशिष्ट भाग में दिये गये हैं, देखें और अध्ययन करें तो हमारी यह मान्यता साधार बन जाती है कि डूंगजी जुहारजी बिना गनेड़ीवाला सेठों से सलाह लिये किसी काम में हाथ न डालते थे। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सेनानी थे। भारत में विदेशी सत्ता के प्रबल विरोधी थे। विदेशी शासन के कारण उनको पद-पद पर प्रताड़ित, प्रपीड़ित होना पड़ता था, किन्तु वे राष्ट्र की स्वतन्त्रता हेतु सब कष्ट बर्दाशत करने की क्षमता रखते थे। रावराजा सीकर एवं अन्य अंग्रेजों के दलालों ने उन्हें कितने ही प्रकार के प्रलोभन देकर राष्ट्र भक्ति से पृथक करना चाहा, पर वे अपने संकल्प पर दृढ़ बने रहे। जब कोई मुसीबत आती तो एक मात्र अपने साथी गनेड़ीवाला सेठों को पत्र लिखते अथवा अपने सचिव लोठिया जाट से लिखवा देतें कि इतना चाहिये, तुरन्त भेजो।[30]

श्री हरगोपालजी के पुत्र श्री रामलालजी का जन्म विक्रमी 1907 में हुआ।[31] इसी साल आपके परदादा सेठ पूरणमलजी का देहान्त हुआ था। श्री रामलालजी को अपने पूर्वजों की ओजिस्विता और समृद्धि विरासत में मिली थी। गनेड़ीवाला कुल में वे बड़े गौरवशाली एवं परोपकारी व्यक्ति हो चुके हैं। मारवाड़ी समाज में उनकी बड़ी प्रसिद्धि रही है।

अग्रवाल जाति के इतिहास के अनुसार आपका जन्म संवत् 1905 में हुआ था। आपने अपने व्यापार को बढ़ाकर अपने परिवार की प्रतिष्ठा में वृद्धि की। कानून और आयुर्वेद का आपको अच्छा ज्ञान था। पुरानी बकाया के सम्बन्ध में निजाम सरकार से बरसों मुकदमा लड़कर आपने 26 लाख रुपयों की राशि प्राप्ति की।

आपने अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल सभा के द्वितीय अधिवेशन में बम्बई में एवम् अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल पंचायत के कलकत्ता वाले अधिवेशन में सभापति का आसन सुशोभित किया था। हैदराबाद धारा सभा के आप सदस्य थे।

सन 1917 को भारत सरकार ने आपको रायसाहब का खिताब दिया था। आपके मुरलीधरजी एवं लक्ष्मीनिवासजी नामक दो पुत्र हुये। इनमें सेठ मुरलीधरजी अधिकतर लक्ष्मणगढ़ में रहे जहां उनका स्वर्गवास स. 1885 में हो गया। सीकर दरबार में इस परिवार को कुर्सी प्राप्त है। सेठ मुरलीधरजी के कोई पुत्र न होने से इनके छोटे भाई लक्ष्मीनिवासजी दत्तक आये।

---

30 श्री संपतकुमार जी के लेख का सार-संक्षेप

31 अग्रवाल जाति का इतिहास पृ. 382 एवं आगे

इनके सम्बन्ध में आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की स्मारिका में गौरवास्पद उल्लेख किये गये हैं जो उपर्युक्त उल्लेखों से मिलते जुलते हैं। भारतीय व्यापारियों का परिचय नामक ग्रन्थ में उन्हें मारवाड़ी पंचायती का पंच बताया गया है। श्री गोविन्दलालजी पित्ती के अनुसार हैदराबाद में 12 जात की एक पंचायत होती थी। इसमें विभिन्न जातियों के पंच होते थे। यहां पर जो निर्णय लेते उन्हें श्री रामलालजी घोषित करते थे। ऊपर निजाम से प्राप्त रकम का उल्लेख आया है। सेठ रामलालजी ने बिना किसी दुराव के वह रकम सेठ प्रेमसुखदासजी के तीनों पुत्रों के परिवारों में बाँट दी। सेठ रामलालजी का स्वर्गवास फागुन बदि 5 सम्वत् 1989 में हुआ। उस समय आपकी आयु 82 वर्ष की थी।

श्रीरामलालजी के दो पुत्र हुये मुरलीधरजी और लक्ष्मीनिवासजी। श्री मुरलीधरजी अपने पिता के सामने ही पौष कृष्ण 3 शनिवार सं. 1985 में स्वर्गवासी हो गये। इस पर श्री लक्ष्मीनिवासजी को उनके दत्तक करा दिया गया। गनेड़ीवाला संग्रह की एक जन्म पत्रिका के अनुसार श्री मुरलीधरजी का जन्म सं. 1925 पौषशुक्ल 5 शनिवार को वृष लगन में हुआ था। इस प्रकार उन्होंने प्रायः 60 वर्ष की आयु पायी। लक्ष्मणगढ़ की जनता में आप बहुत प्रिय एवं सम्मानित थे। आपकी मृत्यु के दिन सारे लक्ष्मणगढ़ शहर में हड़ताल हो गयी थी। आपके लोकोपकारक कार्यो के अनेकों उल्लेख प्राप्त होते हैं।

श्री मुरलीधरजी ने आयु अधिक नहीं पाई पर उन्होंने बड़ी कीर्ति और प्रेम प्राप्त किया। वे प्रिय उदार और सुलक्षणों से युक्त थे। एक बार उन्होंने सारे गांव को जिमाया उस समय नगर में 12-13 हजार लोग बसते थे। सभी आये पर कुछ हठीले लोग नहीं आये जिस पर मुनीम गुमाश्ते भेजकर उन्हें बुलाया गया तथा भोजन करवाया गया। एक सज्जन बोले कि क्या बदले में आप हमारे घर जीम लेंगे। इसे सुनकर तत्काल कुवंर मुरलीधरजी उन सज्जन की रसोई में थाली लेकर जा बैठे और बोले मुझे भोजन करावें।[32] इस पर लज्जित होकर वे सज्जन भी आकर जीम गये।

उनकी मृत्यु पर बालकृष्ण कवि ने अपने काव्य उद्गार प्रशंसनीय रूप से प्रकट किये थे। श्री लक्ष्मीनिवासजी गनेड़ीवाला सेठ श्री रामलालजी के पुत्र हैं जो अपने बड़े भाई श्री मुरलीधरजी के गोद है। आपके पिताजी ने तीन विवाह किये थे उनमें से तीसरे विवाह के बाद सुमाता गोपीबाई की कोख से श्री लक्ष्मीनिवासजी का जन्म वैशाख सुदि 3 शनिवार संवत् 1964 में स्वाति नक्षत्र के प्रथम चरण में हैदराबाद में हुआ।

आपने पिता के व्यवसाय का योग्यता पूर्वक संचालन किया और सामाजिक कार्यों की ओर उन्मुख हुये। वैष्णवता आपको विरासत में मिली थी। आपका बचपन उच्चकोटि के

32 लक्ष्मणगढ़ शिला पत्रिका - श्री वेंकटेशपारीक

सांस्कृतिक परिवेश में बीता था अतः बचपन से ही आपने परिवार के पारम्परिक गुण अपने में समाहित कर लिये।

इनका शुभ विवाह चिड़ावा के प्रसिद्ध डालमिया कुल के मामराज रामभगत फर्म के सेठ हरकिशनदास डालमिया की सुपुत्री पानबाईजी के साथ आषाढ़ बदि संवत् 1979 में हुआ। उस समय आप 15 वर्ष के थे। उस समय अनेकों मारवाड़ी परिवार हैदराबाद में रह रहे थे। 17 वर्ष की छोटी अवस्था में ये राजनीति और सामाजिक कार्यों में रूचि लेने लगे। 1930-32 में आप हैदराबाद मारवाड़ी चेम्बर के सेक्रेटरी चुने गये। इस पद पर आप 1944-45 तक रहे। सन् 1945 के बाद हैदराबाद में रजाकारों का आतंक फैला जिसके परिणाम स्वरूप "हैदराबाद एक्शन" हुआ और निजाम को आत्म समर्पण करना पड़ा।

सन् 1950 से आप अपना अधिक समय कृषि विषयक योजनाओं के क्रियान्वयन में देने लग गये हैं। आपके दो सुपुत्र हैं श्री अनन्तप्रसादजी एवं श्री अरविन्द कुमारजी जो डाक्टर हैं। श्री अनन्तप्रसादजी के सुपुत्र राजेन्द्रकुमारजी एवं श्री अरविन्द कुमारजी के पुत्र श्रीवत्स एवं रोहित हैं। ये परिवार हैदराबाद और अमरावती में है।

श्री चिमनरामजी अपने पिता की तीसरी संतान थे। इनका जन्म अनुमानतः 1836-37 ई. में हुआ था। अपने जीवन के प्रारम्भिक काल में ये जयपुर में रहते थे। वहां से हैदराबाद चले गये और व्यवसाय में दत्तचित हो गये। ठिकानों से इनके भी व्यापक सम्पर्क की बात ज्ञात होती है। खेतड़ी ठिकाने से इनके भी व्यापक सम्बन्ध बने रहे और लेन-देन का काम यथावत् चलता रहा।

संग्रह के एक पत्र से ज्ञात होता है कि सेठ चिमनलाल सपरिवार गया तीर्थ की ओर यात्रा के लिये सन् 1862 में गये थे। इस समय इनके लवाजमें में 6 रथ 1 पालकी, 1 बग्गी, 10 घोड़े 30 गाड़ियां 30 बन्दूकची, ऊंट 40 एवं एक पीनस थी। कुल व्यक्ति 225 थे। इनकी सुरक्षा के लिये अजमेर प्रशासन से एक रोपकार 3 सितम्बर, 1862 को जारी हुआ था।

श्री चिमनरामजी के चार पुत्र हुये। इनके नाम थे बंशीधरजी, नथमलजी, हरिबक्शजी एवं श्री नारायणजी। प्रथम पुत्र का जन्म सन् 1851 दूसरे का 1853-54 ई. में हुआ था। श्री हरिवक्सजी का जन्म 1855-56 में और श्री नारायणजी का जन्म 1863-64 में अनुमानतः हुआ था। परिवार में इस समय समृद्धि का प्रवाह शिथिल गति से बहने लगा था।

श्री बंशीधर का विवाह अजमेर में हजारीमल नरसिंहदासजी के परिवार में हुआ था। इस विवाह से आपको कोई संतान नहीं हुई। इस पर हरीवक्सजी के ज्येष्ठ पुत्र भगवतदास जी को आपने 40 वर्ष की आयु में दत्तक ले लिया। इन चारों भाईयों में नथमलजी का

परिवार अलग रहने लगा था पर बंशीधरजी और हरीवक्सजी का परिवार संयुक्त ही बना रहा। श्री भगवतदासजी का जन्म संवत् 1942 श्रावन बदि 30 को हुआ था। इन्होंने हैदराबाद में एक नाटक मंडली स्थापित की। इस समय तक निजाम से आये रुपयों का अंश भाग उन्हें प्राप्त हो चुका था। उन्होंने पारसी थियेटर की शैली में नये नाटकों को अभिनीत करने का कार्य हाथ में लिया। प्रायः 6-7 वर्ष तक चलने के बाद यह कार्य बुरी तरह से असफल रहा और एक बड़ी पैतृक राशि को हजम कर गया। इसके 10-12 साल बाद में श्री भगवतदास स्वंय का निधन हो गया। श्री भगवतदासजी की मृत्यु पौष सुदि संवत् 1984 में हुई।

श्री भगवतदासजी ने दो विवाह किये थे। पहला विवाह सन् 1900 में रांची में सरावगी परिवार में श्री वैजनाथ की बहिन गंगाबाई से हुआ था। इनसे गोविन्दप्रसादजी का जन्म हुआ। इस पत्नी की मृत्यु पर श्री भगवतदासजी ने दूसरा विवाह शेगांव में शिवनारायण रामदयाल गाडोदिया के परिवार में गोदावरीबाई से किया। इस पत्नी ने लक्ष्मीप्रसादजी और बंकटलालजी को जन्म दिया। श्री गोविन्दप्रसादजी का जन्म सन् 1903-4 में हुआ। इनका विवाह हैदराबाद के रामदयाल जी घासीरामजी का परिवार में गोपी कृष्णजी बदरूका की सुपुत्री गोदावरी बाई से हुआ। श्री गोविन्दप्रसादजी ने वस्त्र व्यवसाय शुरू किया। साथ ही ब्याज पर रुपया देने का काम भी करते रहे।

श्री गोविन्दप्रसाद के एक पुत्र बालकृष्ण हुये। श्री बालकृष्ण का विवाह 18 वर्ष की अवस्था में सन् 1962 में नागपुर में प्रसिद्ध पौद्दार फर्म जीवराज रामचन्द्र के रामचन्द्रजी की सुकन्या उमाबाई से हुआ। विवाह के बाद वे एल्विन कारखाने में सहायक विक्रय अधिकारी रहे। आगे चलकर स्वतन्त्र व्यवसाय करने लगे। इस समय तक परिवार के लोगों ने अनेकों छोटे बड़े उद्योग स्थापित कर लिये थे। इनका अपना आवास है। आपके दो पुत्र एवं दो कन्याये हैं। पुत्रों के नाम रविकान्त और शशिकान्त तथा कन्याओं के नाम बंदना एवं अर्चना है।

श्री भगवतदासजी के द्वितीय विवाह से दो पुत्रों का जन्म हुआ। लक्ष्मीप्रसादजी (जन्म 1920) और बंकटलालजी जन्म (1922-23)। श्री लक्ष्मीनारायण प्रारम्भ में सीताराम रामगोपाल झाखाणी की दुकान पर काम करते थे। वहां से आप तेल मिल में चले गये। आगे चलकर इस मिल के आप पार्टनर बन गये। इस मिल में भी घाटा लगा तो आपने ओइलमिल स्थापित की और फिर कपड़े का व्यवासाय करने लगे। इन्होंने अपने छोटे भाई बंकटलालजी को 1973 ई. में गोद कर लिया। श्रीलक्ष्मीप्रसादजी का विवाह भींवराजजी रामकिशनजी अग्रवाल परिवार में सुभद्राबाई से हुआ था। श्रीबंकटलालजी का विवाह रानीखेत में रामगोपाल चांदमल अग्रवाल की सुकन्या रूकमणि बाई से हुआ है। जब इनके भी कोई संतान नहीं

हुई तो लक्ष्मीनारायणजी ने अपने चाचा भगवान दासजी के ज्येष्ठ पौत्र नन्दलालजी का पालन पोषण करते हुये उनके बड़े पुत्र आनन्द कुमार को दत्तक में दिलवा दिया। आगे चलकर लक्ष्मीप्रसाद बंकटलाल ने अपने चार कन्सर्नस् स्थापित किये और अचल सम्पत्ति खरीदी।

श्रीआनन्दकुमार का विवाह हैदराबाद में गुलाबचन्दजी सिंगनोदिया की पौत्री और श्री बनवारीलालजी की पुत्री स्नेहलता के साथ हुआ है। इस विवाह से अश्विनीकुमारजी, अंम्बरीषकुमारजी और पुनीतकुमारजी का जन्म हुआ है। श्री आनन्दकुमारजी ने कर्नाटक में सूगर इन्डस्ट्रीज स्थापित की है, और दूसरी बालाजी इण्डस्ट्रीज है।

श्री नथमलजी चिमनरामजी के दूसरे पुत्र थे। आपका जन्म 1917 विक्रमी में हुआ और निधन आश्विन सुदि 2013 में। इस प्रकार दीर्घ आयु प्राप्त करके परमधाम गये। इनके दो विवाह हुये थे। इनसे इनको दो पुत्र वासुदेवजी और मधूसूदनजी प्राप्त हुये। ज्येष्ठ पुत्र वासुदेवजी ने दो विवाह किये। पहली पत्नी अमृतसर के नरेड़िया परिवार की थी। इस पत्नी ने सेठ श्रीनिवासजी और सेठ जगन्नाथजी को जन्म दिया। दूसरे विवाह से आपको सेठ मुकन्दलालजी एवं सेठ लक्ष्मीनाराणजी प्राप्त हुये।

श्रीलक्ष्मीनारायणजी अपने पिता के तृतीय पुत्र थे। इनका जन्म अनुमानतः 1860 ई. के आसपास हुआ। श्री वासुदेव के द्वितीय पुत्र श्री जगन्नाथजी का जन्म अनुमानतः 1900 में हुआ। ये सन् 1910 के आसपास दत्तक चले गये। ये भी निसंतान रहे तो उनके ही छोटे भाई मुकुन्दलालजी (जन्म 1905 ई.) दत्तक में आये।

इस तरह दो पुत्रों को दत्तक में देने के बाद कनिष्ठ पुत्र श्रीलक्ष्मीनारायण का कलकत्ता में चिमनलाल रामेश्वर लाल के यहां दत्तक कर दिया। श्री वासुदेवजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री निवासजी के जब कोई संतान नहीं हुई तो मुकुन्दीलालजी के एक पुत्र रंगनाथजी को श्री निवासजी के दत्तक कर दिया गया।

हैदराबाद के गनेड़ीवालों की एक शाखा पहले कलकत्ते में आयी और फिर धनबाद में प्रस्थापित हो गयी। धनबाद में पहले गनेड़ीवालों का व्यवसाय मुनीम गुमाशृतों के हाथों में था।

अन्यों के गोद जाने के कारण श्री नथमलजी के परिवार में वासुदेवजी के सुपुत्र श्री निवास जी एवं मधूसूदनजी के पुत्र रामचन्द्रजी रह गये थे। श्री निवास रामचन्द्र नाम से इनका व्यवसाय शुरू हुआ। यही नाम धनबाद में रहा। यहां एक चावल मिल, एक आटा मिल और एक तेल मिल लगायी गई। कपड़े का व्यवसाय कलकत्ता में था। श्री निवासजी धनबाद 1935-36 ई. में गये।

श्रीनिवासजी ने दो विवाह किये पर पुत्र नहीं हुआ। तब आपने मुकुन्दीलालजी के पुत्र

रंगनाथजी को गोद ले लिया। श्रीनिवासजी की पहली पत्नी का नाम मनभावती देवी था तथा दूसरी का बनारसीदेवी था। रंगनाथजी का जन्म 3 सितम्बर 1932 को हुआ। श्री निवासजी का देहान्त धनबाद में 74-75 की आयु में सन् 1965 में हुआ। आपकी मृत्यु के बाद श्री रंगनाथजी ने कार्य को सुचारू रूप से सम्हाला। श्री रंगनाथजी का विवाह 1957 में धनबाद में झरिया के सेठ कालूराम मातादीन जसपुरिया के परिवार में चन्द्रकला देवी से हुआ। श्रीनिवासजी ने धनबाद में नया मकान बना लिया था। श्री रंगनाथजी इस समय तीन सुपुत्रों बलदेव, दीपक और गिरीश के पिता हैं। बलदेवप्रसादजी एवं दीपकजी बी. कोम. हैं। बलदेवप्रसाद का विवाह हैदराबाद में ईश्वरलाल अग्रवाल की सुकन्या रीता से हुआ है। इनके दो सुपुत्र गौरव और गौरंग हैं। ये धनबाद में रहते हैं।

श्री निवासजी ने पूरी सेठाई का एवं आचार विचार का जीवन जीया। उनके धनबाद में सामाजिक सम्बन्ध बड़े मधुर रहे । श्रीरंगनाथजी भी पिता की सौम्यता की धरोहर के योग्य अधिकारी हैं। आप भी धनबाद के सामाजिक जीवन में एक प्रभावशाली व्यक्ति बनने में सफल हुये। आपने कोल एण्ड कोक ट्रांस्पोर्ट कोन्ट्रक्टर्स व्यवसाय के अतिरिक्त केमिकल्स व बेकरी, कन्फेक्शनरी व्यवसाय भी चला रहे हैं। यह परिवार रामानुजी सम्प्रदाय में दीक्षित है।

श्रीनथमलजी के दूसरे पुत्र मधुसूदनजी थे जिनका जन्म 1882 ई. के आस-पास हुआ। इनके पुत्र रामचन्द्रजी का जन्म हैदराबाद में ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया संवत् 1964 में हुआ। इनके बाद एक कन्या का जन्म हुआ। इसके बाद स्वंय मधूसूदनजी का स्वर्गवास हो गया। श्री रामचन्द्रजी का विवाह रामगढ़ के पौद्दार वंश में सेठ बालावक्सजी पौद्दार की सुकन्या दुर्गाबाई से हुआ। सन् 1930 में वे 23 वर्ष की अवस्था में ग्वालियर में जाकर नौकरी करने लगे। आपको 60 रुपयों का बेतन मिलता रहा। 35 वर्ष बाद जब आप रिटायर्ड हुये उस समय मिल के सेक्रेटरी पद पर पहुंच चुके थे और दस हजार रुपये मासिक वेतन ले रहे थे।

श्रीरामचन्द्रजी के चार पुत्र हैं राधेश्यामजी, राजेन्द्रकुमारजी रमेशकुमारजी और रविकान्त. जी। श्री राधेश्यामजी का विवाह आगरा के पास उझाणी में रायबहादुर बद्रीनाथ गोयल की कन्या दमयन्ती से हुआ। राजेन्द्रकुमारजी का विवाह जयपुर के टावरी परिवार में रेणुजी से हुआ। रमेशकुमारजी अभी अविवाहित हैं। रविकान्तजी का विवाह कैलाशनाथजी गुप्ता आई. जी. पुलिस राजस्थान की सुकन्या साधना से हुआ है। श्री राधेश्यामजी अपना व्यवसाय करते हैं। राजेन्द्रजी अमेरिका मे कार्यरत हैं। वे मेकेनिकल इंजीनियर हैं। रमेशकुमारजी भी एम. ई. हैं और अमेरिका में कार्यरत हैं। रविकान्तजी का व्यवसाय हैदराबाद में है। श्री राधेश्याम के तीन सुपुत्र हैं राकेशजी, पंकजजी और सलिलकुमारजी। राकेशजी इलक्ट्रिकल इंजीनियर

हैं। पंकज एम.कोम. हैं। सलिलकुमारजी अपना व्यवसाय कर रहे हैं। राकेशजी की फैक्ट्री हैदराबाद में स्थापित है। पंकजजी और सलिलजी का अपना कारोबार चल रहा है। राकेशजी का विवाह दिल्ली के अग्रवाल परिवार में रूचिजी के साथ हुआ है। इनके पुत्र श्री समर्थकुमार हैं। रामचन्द्रजी के द्वितीय पुत्र राजेन्द्र कुमारजी को एक सुपुत्र एवं एक सुपुत्री प्राप्त हुई है। रविजी भी एक पुत्र और एक कन्या के पिता बन चुके है। श्री रामचन्द्रजी की धर्मपत्नी का स्वर्गवास सन् 1956 में हो चुका है। श्री राजेन्द्र के पुत्र तरून और श्री रविकान्त के पुत्र नितिन हैं।

सेवा से निवृत होने के बाद श्री रामचन्द्रजी ने अपनी निजी कोठी हैदराबाद में निर्मित करा ली है। गनेड़ीवाला कुल में सेठ रामचन्द्रजी बड़े ओजस्वी और कीर्तिमान पुरूष हैं। यह आपके सुप्रयत्नों का सुफल है कि आपकी संतान सुशिक्षित एवं सांस्कृतिक गरिमा से सम्पन्न है। आप समृद्धिशाली व्यवसायी थे। आपने अपने परिवार के लिये आधुनिक व्यवसाय का मार्ग प्रशस्त कर दिया है।

श्री हरवक्सजी का जन्म लक्ष्मणगढ़ में 1865-66 में हुआ था। इस समय सेठ चिमनरामजी प्रायः 35-36 वर्ष के थे। उन्होंने अपने इस पुत्र का विवाह फतेहपुर में मानकरायजी गजानंदजी धेलिया की सुकन्या जानकीबाई से किया। हरिवक्सजी जयपुर के दीवानी विभाग में नौकरी पर थे पर जल्दी ही इसे छोड़ हैदराबाद चले गये और लेन देन का धन्धा करने लगे। देव की अकृपा से इनका देहान्त 33 साल की छोटी उम्र में हो गया। यह अपने पीछे पत्नी और दो पुत्रों को छोड़ गये। इनके पुत्र भगवतदास का विवरण ऊपर आ चुका है।

श्री भगवानदासजी इनके दूसरे पुत्र थे जिनका विवाह छपरा के चुन्नीलाल शिववक्सजी के परिवार में दुर्गाबाई से हुआ। इस विवाह से एक पुत्र श्रीनरसिंहप्रसाद का जन्म सन् 1908 में हुआ। इसकी माता सन् 1912 के आस-पास दिवंगत हो गयी। इस पर श्री भगवानदास का दूसरा विवाह अमरावती अंचल के खाबू गांव में हरनंदरायजी कन्हैयालाल सरावगी की सुकन्या नारायणबाई से अमरावती में सम्पन्न हुआ। इस पत्नी से संतान हुई पर शीघ्र ही कालकवलित हो गई। प्रथम पत्नी से पैदा हुये पुत्र को तीन पुत्र और चार पुत्रियां प्राप्त हुईं। पुत्रों के नाम श्रीनन्दलाल, श्री बेनूगोपाल व श्री गजानन्द हैं।

श्रीभगवानदासजी ने जवाहरात का धन्धा भी अपने पैतृक व्यवसाय के अतिरिक्त हाथ में लिया। आप जवाहरातों का निर्यात करने लगे। कावसंजी खटाऊ ने अलफ्रेड थियेटर कंपनी स्थापित की थी जो हैदराबाद में अपने नाटकों को अभिमंचित कर रही थी। भगवानदासजी ऐसे नाटकों को शौक से देखते थे। उनकी रिजर्व सीट पर किसी उच्चपदासीन मुस्लिम अधिकारी के आकर बैठ जाने और विरोध करने पर कावसजी द्वारा अभद्र शब्दों का व्यवहार

करने पर श्री भगवानदासजी ने नाराज होकर उसके टक्कर की दूसरी कम्पनी खोल दी। जहां जहां कावसजी जाते वहां वहां भगवानदासजी अपनी कम्पनी लेकर पहुंच जाते। इसमें डेढ़ दो लाख रुपये खत्म हो गये। उधर जवाहरात के व्यापार में भी क्षति हुई। आगे चलकर पूरा प्रतिशोध लेकर उन्होंने नाटक मंडली छोड़ दी पर पैसे सारे बर्बाद हो गये। इन्होंने कुल 38 वर्ष की आयु पायी और सन् 1927 में इस असार संसार से विदा हो गये।

श्रीनरसिंहदासजी का विवाह सन् 1930 में बम्बई में नवलगढ़ निवासी नागरमलजी सेक्सरिया की सुकन्या अनारदेवी से हुआ। इससे तीन पुत्र और चार कन्यायें जन्मी। बड़े पुत्र नन्दलाल का विवाह शालिगराम जैनारायण चूड़ीवाला की सुकन्या दुर्गाबाई से हुआ। द्वितीय पुत्र बेणुगोपाल का विवाह आगरा निवासी श्रीप्रीतमचन्द्रजी अग्रवाल की सुकन्या से हुआ है। इनके सुपुत्र महावीरप्रसादजी हैं। ताराबाई का विवाह भल्लूरामजी श्यामलालजी नारनोल वाले से हुआ है। शान्ताबाई का परिणय दूलीचन्द्र बृजलाल नारनोल के बृजलालजी से हुआ है। पुष्पा बाई का विवाह जयपुर में रामनाथ बद्रीदास के गोरधनदासजी से हुआ है। कान्ताबाई का विवाह नारनोलवासी छगनलाल श्री कृष्णदास के श्री कृष्णजी से हुआ है। अन्य पुत्र गजानन्द हैं।

श्री नरसिंहदासजी 7 वर्ष की आयु में अपना अधिकांश समय भजनपूजन में व्यतीत करते रहे। आप सीताराम बाग में रहते थे। श्रीनन्दलालजी तीन सुपुत्रों राजेन्द्रकुमार, विनोदकुमार, और संतोषकुमार के पिता हैं। श्री राजेन्द्र के सुपुत्र अंकुश एवं श्री विनोद के सुपुत्र का नाम मुन्ना है। ये परिवार हैदराबाद में बसते हैं। सेठ चिमनरामजी के चतुर्थ पुत्र श्री नारायणजी थे। इनके एक सुपुत्र सुदर्शन जी उत्पन्न हुये। आपको जगन्नाथ पुत्र रूप से प्राप्त हुये। इनके भी एक पुत्र श्री मुकुन्दीलाल हुये जो दो पुत्रों यतीन्द्रनाथ और बनावारीलाल के पिता हुये। श्री यतीन्द्रनाथ एक पुत्र बृजभूषन के पिता हैं। श्री बृजभूषण के सुपुत्र शैलन हैं। श्री बनवारी लाल के सुपुत्र प्रदीप एवं नीलेश कुमार हैं। ये परिवार कलकत्ता, बैंगलोर, बम्बई और हैदराबाद में अवस्थित है।

श्री कृष्णदासजी का परिवार

श्रीकृष्णदासजी अपने पिता के तीसरे पुत्र थे जिनका जन्म सन् 1778-80 की अवधि में हुआ था। उस समय श्री महानन्दरामजी प्रायः 35 वर्ष की अवस्था में थे। अपने पिता के जीवन काल में ही वे हैदराबाद में रहकर पूरी तरह व्यवसायिक योग्यता अर्जित कर चुके थे। महानन्दरामजी स्मार्त थे पर उनके पुत्र श्रीपूरणमलजी श्री सम्प्रदाय में दीक्षित हो गये। इनके बड़े भाई गिरधारीलाल एवं इनसे छोटे भाई रामजीदासजी स्मार्त ही बने रहे। इस प्रकार धर्म और व्यापार व्यवसाय में गिरधारीलाल जी व रामजीदास जी एक रहे और श्री पूरणमलजी एवं श्रीकृष्णदासजी दोनों एक रहे।

श्री कृष्णदासजी 5 पुत्रों के सौभाग्यशाली पिता हुये। ये अपने समृद्धिशाली बड़े भाई श्री पूरणमलजी के साथ मिलकर पैतृक व्यवसाय करते रहे। इस समय तक इन दोनों भाईयों का व्यापार बड़ा विस्तृत हो गया था । उसे दोनों भाईयों ने योग्यतापूर्वक सम्हाला।

श्री कृष्णदासजी ने दो विवाह किये थे जिनसे उनको पांच पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई। श्री कृष्णदासजी की द्वितीय पत्नी का नाम सहदी था। जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है सेठ श्री पूरणमलजी का राजदरबारों से विशेष सम्बन्ध रहा है। प्रायः वैसा ही सम्बन्ध श्रीकृष्णदासजी का भी रजवाड़ों से रहा। वे उनको बड़ी बड़ी रकम उधार देते थे। इस रकम की मागें विभिन्न ठिकानों से आती रहती थी । गनेड़ीवाला संग्रह में श्री किशनदासजी सम्बन्धी अनेकों पुराने कागजात हैं जिनसे इनके व्यापार व्यवसाय में लेन देन की बातें ज्ञात होती है।

श्री पूरणमलजी के तथा उनके पुत्र प्रेमसुखदासजी के वृत्त में इस बात का उल्लेख हूआ है कि गनेड़ीवाला घराने से सीकर और खेतड़ी के घनिष्ठ सम्बन्ध रहे हैं। खेतड़ी के राजाओं तथा उनके मुख्य कामदारों के अनेकों पत्र संग्रह में विद्यमान हैं जिनसे इस सम्बन्धों पर पूरा प्रकाश पड़ता है।

अधिकांश पत्र पूरणमल किशनदास नाम के हैं जिनसे दोनों भाईयों के व्यवसाय और कार्यकलापों पर प्रकाश पड़ता है। जो कुछ श्री पूरणमलजी ने राजदरबारों के साथ किया उसमें श्री कृष्णदासजी का भी बराबर भाग रहा।

श्री कृष्णदासजी के नाम एक पत्र माजी राठोड़जी (सीकर) का है जिसमें उन्होंने कहा है कि आपकी रामगढ़ सम्बन्धी अवशिष्ट राशि मैं जयपुर से आकर फिर दूंगी। अभी असवार फिरंगी की ओर जा रहे है।[33]

अगला पत्र डूँगजी जुहारजी के अनन्य सहायक लोटिया जाट का है जिसमें 60 रुपये शीघ्र भेजने को कहा गया है। यह पत्र 1895 संवत् का है। एक पत्र सीकर के तत्कालीन मुसाहिब भगतमल दरोगा का है जिसमें सेठजी को सूचना दी गयी है कि साहब अपने डेरे आवेगें। इसी पत्र से ज्ञात होता है कि, श्री कृष्णदासजी की सीकर में एक गद्दी थी जिस पर रामनारायण मुनीम थे।[34]

एक चिट्ठी में माँजी राठौड़जी ने उन्हें लिखा है कि जमीदार के घर की आपको सरम है। आपके ईमान है। आप कावल को सावल कर सकते हैं। नाने (बालक रामप्रतापसिंहजी) की सरम आपको है।[35]

---

33 यह पत्र माह सुदि, 6, 1984 का है ।

34 यह पत्र सावण सुदि 4, संवत् 1894 का है ।

35 यह पत्र ज्येष्ठ बदि 4, 1894 का है ।

श्री कृष्णदासजी, श्री प्रेमसुखदासजी, श्री गुमानीराम और श्री कन्हैयालालजी की सम्मिलित सम्पत्ति का बटवारा संवत् 1896 में सेठ डूँगरमलजी पतरामजी ने अच्छी प्रकार कर दिया था। इसी फैसले के अनुसार श्री पूरणमलजी को 2 लाख रुपये सरदारी के मिले थे। इस फैसले की पुष्टि एजेन्ट थर्सवी ने की थी।

श्री कृष्णदासजी धार्मिक विचारों के सेठ थे। तीर्थ यात्रा पर सकुटुम्ब जाते रहते थे। हरिद्वार की बहियों में इनकी यात्राओं के उल्लेख मिलते हैं। हरिद्वार में सन् 1817 (वि. 1874) में ये अपने चाचा मोहनरामजी के साथ गये थे। साथ में आपकी माता सरणी, भाई रघुनाथदासजी की बहू भी थी। दूसरी बार तीन वर्ष बाद आपने सपरिवार फिर हरिद्वार में गंगास्नान किया।

आपके दो विवाहों से 5 पुत्रों का जन्म हुआ। ये पुत्र गोविन्दरामजी, हरदत्तरायजी, हरनारायणजी, रामप्रतापजी और श्रीनारायणजी थे। श्री कृष्णदासजी की मृत्यु 61 वर्ष की अवस्था में सन् 1841 (1898) में हुई। महानन्दरामजी के चार पुत्रों में आप दूसरे थे जिनका स्वर्गवास इस समय तक हुआ। इनकी दूसरी पत्नी का देहान्त 1839 ई. में हुआ था।

इनके विषय में सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इनके सुयोग्य और पितृप्रेमी पुत्रों ने इनका एक ऐसा सुदीर्ध और कलापूर्ण स्मारक लक्ष्मणगढ़ में बनाया जिसके समान विशाल स्मारक संभवतः शेखावटी में अधिक नहीं है।

श्री कृष्णदासजी के प्रथम पुत्र श्री गोविन्दरामजी थे जिनका जन्म अनुमानतः संवत् 1859 के आस-पास हुआ। इनके बारे में सूचना प्राप्त नहीं है। इनका वंश इनकी मृत्यु के बाद आगे नहीं चला। इनकी पत्नी का नाम कुनणी था जो सन् 1874 में बद्रीनारायण की यात्रा को गयी थी।

श्री कृष्णदासजी के दूसरे पुत्र हरदत्तरायजी थे जिनका जन्म सन् 1818 के आसपास हुआ था। इन्होंने पैतृक व्यवसाय प्रारम्भ किया और अपने भाईयों के साथ इसमें लगे रहे। परिवार संयुक्त ही रहा तथा व्यवसाय भी साझे में चलता रहा। संग्रह में श्री हरदत्तरायजी सम्बन्धी भी कई महत्त्वपूर्ण पत्र हैं जो उनके कार्यकलापों पर प्रकाश डालते हैं।

एक पत्र बड़ी बीदावतजी (सीकर) का है जिसमें अपने को मौसी और सेठ हरदत्तराय को भान्जा बताया है। इसमें उन्होंने बाई के विवाह का दस्तूर भेजने की बात कही है। एक पत्र पाटोदा के जवाहरसिंह का बीकानेर से लिखा हुआ है जिसमें उल्लेख है कि इस समय मेरा हाथ तंग है। यह वक्त की बात है। खोटा समय आ पड़ा है जिसको आप जानते हो। आप 500 रुपये गिरधारी को दें। साथ ही लिखा है कि ये रुपये गुमानजी के परिवार तथा कन्हैयालाल जी के परिवार से मत मांगना। साथ ही दबी जबान से दी

हुई धमकी भी है कि आदमी बहुत है कोई उजाड़ बिगाड़ कर देंगे। वे व्यवहार को समझते नहीं है। एक अन्य पत्र में बठोठ के भोपालजी को 150 रुपये भेजने का उल्लेख है। इसमे लिखा है "काँकड़ माँ तो म्हासु आवणों हुवै नहीं, काँकड बाहर घोड़ा और आदमी चाहिये जताही हाजर छै।[36]

एक अन्य महत्त्वपूर्ण पत्र रावराजा रामप्रतापसिंहजी का है जिसमें उन्होंने सूचना दी है कि हम आज सिंगरावट आये हैं। हमने किले में अमल कर लिया है। हरदेव को आप 200 रुपये दें। आगरे के कारीगरों से दारू गोले लेना है। सो उनको साई के देने को चाहिये।[37]

सन् 1843 में वे हरिद्वार में सकुटुम्ब गंगास्नान को गये थे। दूसरी बार फिर एक वर्ष बाद गये। श्री हरदत्तरायजी के दो पुत्र श्री लक्ष्मीनारायणजी एवं श्री निवासजी हुये। श्री हरदत्तजी का स्वर्गवास सन् 1869 (वि. 1926) में तथा उनकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास भी इसी साल में हुआ।

श्री लक्ष्मीनारायणजी के कोई संतान नहीं हुई। श्री निवासजी के एक पुत्र कृष्णगोपालजी हुये। श्री निवासजी का विवाह नागपुर में भरतिया परिवार में हुआ था। इनकी धर्मपत्नी का नाम बसन्ती बाई था। कृष्णगोपालजी का जन्म सन् 1895 में हुआ। ये अधिकतर अकोला में ही रहे और दलाली करते रहे। इनका विवाह खामगांव में रामचन्द्रजी खारिया की सुकन्या भागीरथीबाई से हुआ। इन्होंने 82 वर्ष की आयु पायी। इनके दो पुत्र और दो पुत्रियां हुई। जयवन्ती बाई का विवाह बिहार में बेतिया में गोबिन्दरायजी झुझुँनूवाले के साथ हुआ। सावित्रीबाई अमरावती में मोतीलाल जी सराफ के साथ परणी गयी। बड़े पुत्र रामप्रसादजी का जन्म सन् 1932 में हुआ। इनका विवाह बनारस में मदनलालजी खेतान की सुकन्या प्रभावन्ती देवी से हुआ। छोटे सुपुत्र डा. सत्यनारायणजी हैं जिनका जन्म सन् 1939 में हुआ। इनका विवाह इन्दौर में मदनलालजी गर्ग की सुकन्या शान्ताबाई से हुआ। रामप्रसादजी के सुपुत्र मुकुन्दजी डाक्टर हैं। आपके एक कन्या उमा है। डा. सत्यनारायणजी के दिलीप और अरविन्द दो सुपुत्र हैं। रामप्रसादजी वर्तमान में नागपुर में रहते हैं। श्री सत्यनारायणजी बम्बई में व्यवस्थित हैं। श्री निवासजी के दूसरे पुत्र नथमलजी थे जिनका वंश आगे नहीं चला।

श्री कृष्णदासजी के तृतीय पुत्र हरनारायणजी थे। इनके 2 पुत्र बालमुकुन्द एवं रामविलास हुये। इन दोनों का भी वंश आगे नहीं चला।

---

36 यह पत्र चैत बदि 9 सम्वत् 1905 का है इस समय जवाहरसिंह बीकानेर नरेश के निमन्त्रण में बीकानेर रह रहे थे ।

37 यह पत्र कार्तिक बदि 6, सम्वत् 1903 का है ।

चतुर्थ पुत्र श्री रामप्रतापजी थे जिनके पुत्र रामचन्द्रजी हुये। श्री रामचन्द्र दो पुत्रों देवकीनन्दनजी एवं रामकिशनदासजी के पिता हुये हैं। श्री देवकीनन्दनजी के 2 पुत्र सीताराम व मुन्नालाल हुऐ। श्री सीतारामजी के पुत्र महावीरप्रसाद राजेन्द्र कुमार के पिता थे। श्री मुन्नालालजी के बड़े पुत्र राजकुमारजी चार पुत्रों, मनोज, मनीष, अजय और अमित के पिता हैं। दूसरे पुत्र राजीवजी हैं जो देहली में हैं।

श्री रामकिशनदासजी दो पुत्रों बृजलालजी एवं मोतीरामजी के पिता हुये। श्री बृजलाल के पुत्र सत्यनारायणजी एवं राधेश्यामजी हैं। श्री सत्यनारायणजी के महेन्द्र कुमार और दिनेश कुमार पुत्र हैं। श्री राधेश्यामजी तीन पुत्रों राजेन्द्रजी, रमेशजी, एवं उमेश कुमारजी के पिता हैं।

श्री महेन्द्रजी के पुत्र वरूनकुमार व श्री दिनेश कुमार के पुत्र माहित कुमार हैं। श्री राजेन्द्र के एक पुत्र राजीवकुमार हैं। श्री मोतीरामजी का वंश आगे नहीं चला। श्री रमेश के सुपुत्रों के नाम सन्नी एवं अंकुर हैं। ये दिल्ली में स्थित हैं।

श्री रामप्रताप के दूसरे पुत्र श्री रामबल्लभजी थे जो तीन पुत्रों गंगावक्सजी, हरिरामजी और मोहनलालजी के पिता थे । इनमें से गंगावक्सजी के पुत्र गोवर्धनजी हुये जिनके पुत्र इन्दरलाल हैं। श्री हरिरामजी एवं मोहनरामजी का वंश आगे नहीं चला। श्री किशनदासजी के कनिष्ठ पुत्र श्रीनारायणजी एक सुपुत्र श्री लक्ष्मीनिवासजी के पिता हुये। इनके एक पुत्र श्री भूरामलजी हुये। श्री भूरामलजी को पांच सुपुत्र प्राप्त हुये जिनके नाम मुरलीधरजी, नथमलजी, नन्दलालजी, रामलालजी, और संपतकुमारजी हैं।

श्री मुरलीधरजी के पुत्र श्री राधाबल्लभजी चार पुत्रों विजयकुमारजी, राजकुमारजी, गोविन्दरामजी और किशनलालजी के पिता हैं। श्री विजयकुमारजी के एक पुत्र कमल हैं। ये कलकत्ता में रहते हैं।

श्री मुरलीधरजी के दूसरे पुत्र श्री हनुमानप्रसादजी के 2 पुत्र पवनकुमारजी एवं गिरधारीलालजी हैं। श्री गिरधारीलालजी 2 सुपुत्रों प्रशान्त कुमार एवं विक्रांत के पिता हैं। ये कलकत्ता में रहते हैं। श्री नथमलजी के एक पुत्र साँवरमलजी हैं जो शैलेश के पिता हैं। श्री नन्दलालजी के दो पुत्र महावीर प्रशादजी और श्यामसुन्दरजी हैं। महावीरप्रशादजी अनूप कुमार के पिता हैं व श्री श्यामसुन्दर के तीन पुत्र उमेश, श्रीकान्त, रमाकान्त हैं। श्री रामलालजी के दत्तक सुपुत्र श्री पवनकुमार हैं। यह परिवार कलकत्ता में रहकर व्यवसाय कर रहा है। श्रीसम्पतकुमारजी के सुपुत्र रमेश कुमारजी हैं। ये विकास और मुन्ने के पिता हैं। यह परिवार कलकत्ता और लक्ष्मणगढ़ में अवस्थित है।

श्रीरामजीदासजी का परिवार

श्रीरामजीदासजी अपने पिता के चतुर्थ पुत्र थे। आपका जन्म अनुमानतः 1782-84 ई. (वि. 1839-1841) में हुआ था। आपने अपने पिता के अन्य पुत्रों की तरह अपने व्यवसायिक जीवन का प्रारम्भ हैदराबाद से ही किया। आप का व्यापार बड़े भाई गिरधारीलालजी के साझे में ही चलता रहा । आप स्मार्त वैष्णव थे जबकि इनके दो भाई किशनदासजी और पूरणमलजी श्रीसम्प्रदाय में दीक्षित हो चुके थे।

श्रीगिरधारीलालजी के सीर साझे में व्यापार व्यवसाय का काम चलता रहा। श्री रामजीदासजी ने देश के विभिन्न भागों में अपने तथा पुत्रों के नाम से 15 फर्में स्थापित कीं। ये फर्में मन्दसौर, केड, दिल्ली, बम्बई, हैदराबाद, लक्ष्मणगढ़, खेतड़ी, कोटा, अजमेर, जयपुर आदि स्थानों में कार्यरत थीं।

श्रीमहानंदरामजी की पत्नी सरणीजी का खर्च संवत् 1904 में लक्ष्मणगढ़ में हुआ इसमें सारा खर्च 23,516 रुपये 10 आने लगे। इसमें 20,582 रुपये लक्ष्मणगढ़ में हेड़े के लगे। साथ ही बम्बई और मन्दसौर में भी खर्च किया गया। यह सारा पैसा गिरधारी लालजी रामजीदासजी का लगा। इस राशि में 2391 नावें देली के लगे वे भी शामिल हैं।

कोटा की गद्दी से रामजीदास तनसुखराय पर झालरापाटन से रु. 50,0049 आये थे। यह रकम चारों भाइयों के सीर की थी। इसमें से गिरधारीलाल रामजीदास को 25,000 रुपये मिले जो उन्होने लक्ष्मणगढ़ में श्रीमुरलीमनोहरजी के मंदिर के निर्माण में लगाये।

सेठ गिरधारीलालजी रामजीदासजी में लक्ष्मणगढ़ की दुकान और वहां के मकानों की पांती हो गयी। यह विभाजन भादवा सुदि 2, 1899 में हुआ।

श्री रामजीदास को एक पत्र जयपुर के प्रधान मुख्तयार का प्राप्त हुआ जिसमें कहा गया था कि खंडेला लड़ाई के समय आपके पूर्वजों ने लक्ष्मणगढ़ और फतेहपुर छोड़ दिया था। अब हम पर विश्वास रखकर लक्ष्मणगढ़ और फतेहपुर में फिर बसें। अगर कोई आपको तंग करेगा तो यह जयपुर राज की तोहीन मानी जायेगी। यह पत्र जेठ सुदि 10,1882 तदनुसार 19 जून 1826 का सवाई-जयसिंह तृतीय के समय का है।

इतिहास प्रसिद्ध सरजार्ज टामस ने सेठ महानंदरामजी को सिरसा तहसील में रानियाँ के पास निम्न लिखित गांव दिये थे अमोली, फरवाई, बालासर, झोरड़ा-शाहपुर, बेगु, नानुवाना, सुल्तानपुर, महमदपुर, फतेहपुरया और झूँपड़ा। इनकी राजस्व की आय 51000 रुपया थी। श्री रामजीदास की पाँती में, जब बंटवारा हुआ तो ये गांव आये।

अग्रवाल जाति के इतिहास के अनुसार श्री रामजीदासजी की मृत्यु एवं दाह संस्कार

खरसोद में हुआ। यहां गनेड़ीवालों की छत्री, एक बावड़ी, और एक गहरा कुंड बना हुआ है। श्री रामजीदासजी की धर्मपत्नी नाथीबाई का देहान्त लक्ष्मणगढ़ में सन् 1954 में हुआ था। 1828 में इनकी पुत्री का निधन हो चुका था। श्री रामजीदासजी का देहान्त अनुमानतः संवत् 1907-8 के आस-पास हुआ था।

श्री रामजीदासजी के दो पुत्र हुये। पहले पुत्र कन्हैयालालजी एवं द्वितीय पुत्र सूरजमलजी। श्रीरामजीदासजी के और उनके पूर्वजों के समय से चल रहा व्यवसाय निरन्तर आगे बढ़ रहा था। ठिकानों और राजदरबारों से लेन देन का काम भी उन्नति कर रहा था।

श्रीकन्हैयालालजी इस कुल में बड़े ख्याति प्राप्त और तेजस्वी सेठ हो चुके हैं। आप 6 फुट के दाढ़ी युक्त तेजस्वी शरीर वाले दर्शनीय व्यक्ति थे जिनका बड़ा रोब था।

इनका जन्म अनुमानतः सन् 1804, वि. 1861 में हुआ था। आपने सन् 1844 में अपनी दादी सरणीजी को लेकर तीर्थ यात्रा की थी। आपकी पहली पत्नी का स्वर्गवास 1852 में हो गया था तब आपने दूसरा विवाह किया। यह विवाह फागुन सुदि 14 संवत् 1908 में हुआ।

इनके बारे में एक सविशेष उल्लेख है कि इन्होंने आगे चलकर अपनी वृद्ध अवस्था में संवत् 1925 में सीकर राज के बर्ताव से क्रुद्ध होकर लक्ष्मणगढ़ त्याग दिया। सीकर रावराजाजी के मनाने पर भी वापिस नहीं आये। आप यहां से चलकर मुकुन्दगढ़ बस गये जहां अन्य गनेड़ीवाला परिवार पहले से बसे हुये थे। इनके फूल सन् 1875 (वि. 1932) में हरिद्वार पहुंचे थे। 7 वर्ष मुकुन्दगढ़ में रहे। सीकर में उस समय रावराजा माधोसिंह राज्य कर रहे थे। मुकुन्दगढ़ में कन्हैयालालजी की याद में बनाई गई विशाल छत्री है जिसमें शिव मन्दिर है।

श्रीकन्हैयालालजी ने खेतड़ी ठिकाने को 50000 रुपयों का ऋण देना मंजूर कर लिया। इन रुपयों की अदायगी के लिये कोटकासिम का इलाका सेठजी को माल गुजारी की वसूली के लिये कुछ समय तक दिया गया। इनके समय में खेतड़ी के दीवान ज्वालासहाय एवं पुरोहित रामनाथजी के भी लक्ष्मणगढ़ आने के उल्लेख मिलते हैं। श्री पुरोहितजी का जब स्वर्गवास फागुणसुदि, 1906 में हो गया तो 7 रुपयों की जगन्नाथी मलमल मैयत के समय के उपयोग के लिये और साल जोड़ा भेजा गया था जिसके 45 रुपये लगे। बही के ये उल्लेख बड़े दिलचस्प हैं।

सेठ कन्हैयालालजी का तत्कालीन अंग्रेज अधिकारी वर्ग से अच्छा सम्पर्क रहा था। जयपुर राज के एजेन्ट से भी आपका अच्छा परिचय था। एक पत्र मेजर जान लुडलों एजेन्ट

का इनके नाम है जिसमें उन आदमियों के काम की तारीफ की गयी है जो सेठजी ने कूँओं को गहरा करने के लिये भेजे। यह काम शहर के खारा पानी को मीठा करने के लिये करवाया जा रहा था। यह पत्र मंगसर सुदि, 3 संवत् 1904 का है।

सेठजी कन्हैयालालजी को एक बड़ा ही हृदय विदारक पत्र माजी राठोड़जी (सीकर) ने भेजा था जिसमें अपनी दयनीय दशा का वर्णन करते हुये सहायता के लिये लिखा गया था। "मुझे बिना सहारे छोड़ गया, अवलकर गया। अब आप प्रतापसिंह का राज राखे। हम तीनों सास बहू अवला हो गई"[38] एक पत्र रामदयालजी कन्हैयालालजी को मेड़तनी जी (रावराजा भैरूसिंहजी की माता) ने लिखा था जिसमें लिखा था कि आपके सिवाय हमारे कोई नहीं है। हजार रुपये आप हाथ खर्च के लिये भेजो।[39]

सेठ कन्हैयालाल तथा सूरजमलजी ने सीकर रावराजा से घसू गांव में कोठी कराने एवं जाव रखने के लिये 51 बीघा भूमि खरीदी और कोठी कराई। यह बात रावराजा भैरू सिंह के पत्र से ज्ञात होती है जो पौष सुदि 2 सवंत् 1909 का है।[40]

श्री कन्हैयालालजी के एक पुत्र श्री श्योदत्तराय थे जिनका जन्म अनुमानतः 1835 ई. (1892) में हुआ था। इनके चार पुत्र श्रीगंगादत्त, श्रीउमादत्त, श्रीसुखदत्त व श्रीबंशीधर हुऐ। इनके ज्येष्ठ पुत्र गंगादत्तजी का जन्म अनुमानतः 1865 में हुआ। इस वंश में लेन-देन के अलावा फाटका व्यवसाय भी चलता रहा। इनके पुत्र सुखदत्तजी ने सुखदत्त बंशीधर नाम से फाटके की गद्दी बांसतल्ला में खोली थी। पहले कलकत्ता में झगड़ा कोठी में रामजीदास कन्हैयालाल नाम से गद्दी थी। श्रीसुखदत्तजी एवं बंशीधरजी भी फाटके का ही काम दोनों भाई करते रहे।

श्री गंगादत्तजी के तीन पुत्र हुये शंकर लालजी, शुभकरणजी एवं देवीदत्तजी। ये भी फाटके का व्यवसाय करते रहे। श्रीशंकरलालजी के बड़े पुत्र श्रीवल्लभजी हुये। श्री शंकरलालजी ने दो विवाह किये थे। प्रथम विवाह नवलगढ़ में मानसिंह का परिवार में जानकीदासजी की सुकन्या सुन्दरी बाई से हुआ था। इसी माता से श्री बल्लभजी का जन्म 16 सितम्बर 1916 में हुआ। इनके देहान्त के बाद दूसरा विवाह शाह परिवार में गोरधन दास त्रिवेणी लाल फर्म के चिरंजीवलालजी की सुकन्या किशनीबाई से हुआ। शंकरलालजी के दो कन्यायें भी थीं। सावित्री बाई रूगटों के यहां विवाही गयी और त्रिवेणी बाई टाटानगर में सरायवालों के यहाँ परणी गयी । श्री शंकरलालजी का देहान्त मुकुन्दगढ़ में सन् 1962 में हुआ।

---

38. यह पत्र आसोज सुदि 3, सवंत 1907 का यह पत्र रावराजा रामप्रतापजी से की मृत्यु के 23 दिन बाद का है।
39. यह पत्र पोष सुदि 1, 1905 का है ।
40. यह पत्र भादवा बदी 3, 1909 का है ।

श्री बल्लभजी का शुभ विवाह फतेहपुर में भैरामल वासुदेव के यहाँ शिवदेवजी सरावगी की सुकन्या शान्तिदेवीजी से हुआ है। आपके तीन सुपुत्र हैं गिरीशकुमारजी (जन्म 29 नवम्बर 1957) रमेश कुमारजी (जन्म 24 सित. 1959) कृष्णकुमारजी (जन्म 27 मार्च 1963)। ज्येष्ठ गिरीशकुमारजी का शुभ विवाह साहिबगंज में तमाखूवाला परिवार में राधाकिशनजी की सुकन्या उमाजी से हुआ है। इनके एक सुपुत्र अभिषेक हैं। श्री शुभकरणजी के पुत्र रामकरणजी हैं। श्री देवीदत्तजी के कोई संतान नहीं हुई। श्री श्योदत्तजी के अन्य पुत्र उमादत्त, सुखदत्त, वंशीधर निस्संतान रहे।

श्री सूरजमलजी का परिवार

श्री सूरजमलजी सेठ रामजीदासजी के दूसरे पुत्र थे। इनका जन्म अनुमानतः सन् 1815 (वि. 1872) में हुआ था। श्री सूरजमलजी के एक मात्र पुत्र श्रीसागरमलजी हुये। दोनों पिता पुत्रों ने समृद्धि का जीवन आनन्दपूर्वक जीया और पैतृक व्यवसाय करते रहे। इनकी मृत्यु सन् 1857 में हुई। सागरमलजी पैतृक व्यवसाय करते रहे। श्रीसागरमलजी का जन्म सन् 1848-50 की अवधि में हुआ। इनका विवाह रामगढ़ के प्रसिद्ध पौद्दार वंश में हुआ। ये नाथूरामजी पौद्दार के परिवार में विवाहे गये। ये पांच पुत्रों के पिता हुये लक्ष्मीदत्तजी, किशनदत्तजी, बृजमोहनजी, बैजनाथजी एवं दुर्गादत्तजी।

श्री लक्ष्मीदत्तजी का जन्म लगभग सन् 1880-85 की अवधि में हुआ। इनका विवाह बिसाऊ में चेनाराम जसराम के पूर्वज नाथूरामजी जयनारायणजी पौद्दार के यहाँ रामनारायणजी पौद्दार की छोटी बहन रामप्यारी देवी से हुआ था। श्री लक्ष्मीदत्तजी ने अपने श्वसुरगृह के सहयोग से बम्बई में अफीम का सौदा किया। फिर ब्याज का बड़ा धन्धा करने लगे। इस प्रकार उन्होंने इस धन्धे से अतुल सम्पत्ति उपार्जित की। श्री लक्ष्मीदत्तजी ने अपनी नीजि संपत्ति से 50 हजार रुपये की राशि से रघुनाथजी का ट्रस्ट कायम करते हुये पंचवटी में श्रीरघुनाथजी का मंदिर बनवाया। आपकी मृत्यु के बाद आपकी धर्मपत्नी ने शेष जीवन पूजा आराधना में बिताया। श्री लक्ष्मीदत्तजी के 2 पुत्र हुये रामदत्तजी और भगवानदत्तजी। रामदत्तजी लालचन्दजी बलदेवदासजी के यहाँ विवाहे गये हैं। आपकी पहली पत्नी के निधन पर दूसरा विवाह पड़रोना में हुआ। श्री रामदत्तजी के तीन सुपुत्र श्री गोपालजी, श्री पुरूषोतमलालजी एंव श्री केशरदेव जी थे। श्री गोपालजी के सुपुत्र श्री विजय कुमार हुये। इनके 2 सुपुत्र श्री कमलेशकुमार और योगेशकुमार हैं। श्री कमलेशकुमार के पुत्र राजीव कुमार एंव रोलन हैं। इनके ट्रांसपोर्ट का काम है। ये बम्बई में अवस्थित हैं। जयपुर, किशनगढ़, बंबई आदि अनेक स्थानों पर इनके ओफिस हैं। श्री गोपालजी इतिहास से काफी प्रेम करते थे। इनके पास गनेड़ीवाला इतिहास सम्बन्धी काफी सामग्री उपलब्ध हुई।

श्री पुरूषोत्तमलालजी 6 पुत्रों के पिता हुये। इनके नाम कीर्तिकुमार, संपतकुमार,

सुशीलकुमार, संतोष कुमार, सुरेन्द्र कुमार एंव नरेन्द्रकुमार हैं। श्री कीर्तिकुमार के पुत्र अनूपकुमार हैं जिनके एक पुत्र धीरज हैं। इनके ट्रान्सपोर्ट का कार्य हैं। ये बम्बई में रहते हैं। श्री संपतकुमार का शरीर नहीं रहा। इनके एक सुपुत्र दीपक कुमार हैं। श्री सुशीलकुमार के सुपुत्र मनीषकुमार राजेशकुमार श्री संतोशजी के पुत्र का नाम राजकुमार हैं। श्री सुरेन्द्रकुमार तीन पुत्रों नीरज पंकज एंव अनुज के पिता हैं। श्री नरेन्द्र कुमार के 2 सुपुत्र नमित और अमित हैं। इनके कोयले का व्यापार जयपुर में है। श्री केशरदेवजी के सुपुत्र हरीशकुमार, उमेश कुमार हैं। श्री हरीशकुमार के 2 सुपुत्र मुकेश एंव मनोज हैं। श्री उमेश आशीष के पिता हैं। श्रीभगवानदत्तजी के सुपुत्र केदारनाथजी, किशोरीलालजी, रामचन्दजी और चेतरामजी हैं। इनमें रामचन्द्रजी अपने चाचाजी दुर्गादत्तजी के यहां दत्तक में चले गये।

रामदत्त भगवानदत्त फर्म बम्बई में प्रारम्भ हुई। यहां शेयरों, सोने, चांदी और कपड़े का काम होता था। इस व्यवसाय की अभिवृद्धि होने पर कलकत्ता में बैजनाथ पुरूषोत्तमलाल नाम से एक गद्दी स्थापित हुई। इसमें कपड़े की चलानी का कार्य होने लगा। सन् 1923 में दिल्ली में व्यवसाय का श्री गणेश किया। पहले भगवानदत्त गनेड़ीवाला नाम से कपड़े की कोठी हुई। फिर केदारनाथ किशोरीलाल नाम से कपड़े का बड़ा व्यवसाय शुरू हुआ। बम्बई का काम रामदत्तजी की देख रेख में रहा। कलकत्ता का काम बन्द हो गया पर दिल्ली का काम पूरी प्रगति पर रहा।

भगवानदत्तजी अपने पिता के द्वितीय पुत्र थे पर व्यवसाय में प्रथम श्रेणी की कुशलता रखते थे। आप सन् 1981 में 85 वर्ष की आयु में इस संसार से चले गये। आपने अपनी सुमाता रामप्यारी देवीजी की आजन्म बड़ी सेवा की।

श्रीभगवानदत्तजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री केदारनाथजी बड़े कुशल व्यवसायी हैं। आपका विवाह कलकत्ता में बंशीधर जुगलकिशोर लोहिया परिवार में त्रिवेणीदेवी से हुआ है। इस कुलशीला माता से विश्वनाथजी एवं ओमप्रकाशजी का जन्म हुआ। श्रीविश्वनाथ का पहला विवाह गोहाटी में हुआ था। दूसरा विवाह दिल्ली में गोविन्दप्रसादजी तुलस्यान की सुकन्या मधुकुमारीजी से हुआ है। ओमप्रकाशजी का विवाह दुर्गाप्रसादजी सौथंलिया की सुकन्या रेणु से हुआ है जिनसे आपको पीयूष नामक पुत्र की प्राप्ति हुई है। श्री विश्वनाथजी के पुत्र नवीन एवं वासुदेव हैं। श्री विश्वनाथ दिल्ली में तथा श्री ओमप्रकाश बम्बई में रहते हैं। श्री किशोरीलालजी श्री भगवानदत्तजी के दूसरे पुत्र थे। ये 6 पुत्रों के पिता हुये जिनके नाम श्यामसुन्दरजी, निर्मलकुमारजी, निताईकुमारजी, संजयजी, प्रभातजी और नवीनकुमारजी हैं। श्री श्यामसुन्दरजी के सुपुत्र चन्दनकुमार एवं साक्षीकुमार हैं। भगवानदत्तजी के तीसरे पुत्र श्री चेतरामजी के एक सुपुत्र विनोदकुमार हैं। ये नासिक में रहकर कपड़े का व्यापार करते हैं । इनका आफिस दिल्ली में है।

श्री किशनचन्दजी के श्रीरामदत्तजी के सुपुत्र श्री नन्दलाल गोद आये। इनके सुपुत्र श्रीरघुनाथप्रसाद एवं श्री विनोदकुमार हैं। श्री रघुनाथ दो सुपुत्रों महेश एवं मनीष के पिता हैं। श्री विनोद के सुपुत्रों के नाम विशाल एवं विवेक हैं। यह परिवार इन्दौर में अपना व्यवसाय करता है।

श्री बृजमोहन के सुपुत्र काशीप्रसाद हैं जिनके पुत्र श्री बासुदेव हैं। इनके एक सुपुत्र श्रीअनूपकुमार हैं जो 2 पुत्रों सौरभ, गौरव के पिता हैं। ये नागदा में रहते हैं। श्री अनूप कुमार डाक्टर हैं।

श्री बैजनाथजी के सुपुत्र श्री चिरंजीलाल हैं जो श्री बजरंगलाल के पिता हैं। आप कलकत्ता में रहते हैं। श्री दुर्गादत्त के श्री रामचन्दजी गोद आये। इनके अशोक कुमार हुये जिनके सुपुत्र नितिन हैं। आप भीलवाड़ा में रहते हैं।

चर्तुदश अध्याय

श्री शालिगरामजी की संतति वल्लरी

श्री शालिगरामजी के एक मात्र पुत्र श्री रघुनाथदासजी का जन्म सन् 1785 में हुआ था। सेठ जुगलदासजी की तीसरी पीढी में सेठ रघुनाथदासजी भी ऐसे स्वनामधन्य पुरूष हुये जिनके कार्यकलापों से एक इतिहास की सृष्टि स्वयं हो चली। आगे चलकर फिर तीसरी पीढ़ी में सेठ नारायणदासजी ने मन्दसौर, जावरा, इन्दौर में गनेड़ीवालों के कुल की कीर्ति का ध्वज फहराया। तत्कालीन ग्वालियर राज्य में उनके यश का बड़ा विस्तार हुआ।

सेठ रघुनाथदासजी के दो पुत्र हुये बलदेवदासजी और हरिवक्सजी। इनके बारें में विशेष वृत्त प्राप्त नहीं है। बलदेवदासजी का देहान्त सन् 1870 के आसपास प्रायः 35 वर्ष की छोटी आयु में हो गया। ये अपने पीछे एक पुत्र श्री रामचन्द्र को छोड़कर गये। इन्हीं रामचन्द्रजी के पुत्र श्री पुरुषोत्तमलाल के पुत्र श्री मुन्नालालजी एवं श्री राधेश्याम हैं। श्रीराधेश्याम के हरगोपाल जी दत्तक आये। हरगोपालजी तीन पुत्रों के पिता हैं। इनके नाम श्यामसुन्दर, सुन्दरलाल, निर्मल कुमार हैं। श्रीमुन्नालालजी निःसन्तान रहे।

जावरा में यह परिवार अवस्थित है और कपड़े का व्यवसाय करता है। पूर्वजों के द्वारा निर्मित भवनों के किराये की राशि आती है। श्री श्यामसुन्दर के धवलकुमार एवं सुन्दरलाल के मुन्ना पुत्र हैं।

सेठ रघुनाथदासजी के द्वितीय पुत्र हरिवक्सजी की भी मृत्यु 30 वर्ष की अवस्था में हो गयी थी। वे सन् 1873 में दिवंगत हुये। इनके ज्येष्ठ पुत्र सीतारामजी हुये। इनका विवाह उज्जैन के एक धनाढ़्य परिवार में हुआ। सीतारामजी के दो पुत्र उत्पन्न हुये।

मोहनलाल और सुदर्शनलाल जी। प्रथम सरदार शहर में आबाद है। इनका देहान्त हो चुका है। दूसरे पुत्र सुदर्शनजी ने दो विवाह किये थे। दूसरा विवाह डिब्रूगढ़ में हुआ था। इनके कोई पुत्र नहीं है। केवल एक कन्या है।

सेठ हरीवक्सजी ने दो विवाह किये थे। उनकी द्वितीय पत्नी नारायणीबाई का देहान्त सन् 1900 में हुआ। इसके पूर्व हरिवक्सजी का देहान्त हो चुका था। श्रीहरीबक्सजी के दूसरे पुत्र श्री नारायणदासजी का जन्म इन्हीं नारायणीबाई की कोख से हुआ था। सेठ रघुनाथदासजी उस समय मौजूद थे। यह उन्हीं के आर्शीवाद का सुफल था कि आगे चलकर श्री नाराणदास कीर्तिशाली पुरूष हुये। इनका विवाह रामगढ शेखावाटी में शिवनारायणजी खेतान के यहाँ मोहरीबाई से सम्पन्न हुआ। इस सुलक्षणवती माता ने 6 पुत्रों को जन्म दिया। इनमें से दो अकाल में ही मृत्यु को प्राप्त हो गये। ज्येष्ठ पुत्र किशनदत्तजी का जन्म सन् 1891 में हुआ। इनका विवाह अलवर राज्य के राजगढ़ में नारायणदासजी की सुकन्या दुर्गाबाई से सम्पन्न हुआ। इस विवाह के एक वर्ष बाद ही किशनदत्तजी का स्वर्गवास हो गया। यह सन् 1903-4 की बात है। इनकी पत्नी दुर्गाबाई सन् 1977 तक जीवित रही।

इन्ही किशनदत्तजी के नाम पर सेठ नारायणदास ने नारायणदास किशनदत्त नामक फर्म का संस्थापन किया। आज तक यह फर्म कार्यरत है। सेठ नारायणदासजी का परिवार संयुक्त रूप से रहता है।

सेठ नाराणदासजी के दूसरे पुत्र मुरलीधर का जन्म सन् 1897 में हुआ। यद्यपि इनके मामाजी ने इनको दत्तक के रूप में ले लिया था पर ये जावरा में ही रहते रहे। जब इनके कोई पुत्र नहीं हुआ तो इन्होंने अपने कनिष्ठ भ्राता वासुदेवजी के छोटे पुत्र सुमन्तकुमारजी को गोद ले लिया। सुमन्तकुमारजी का जन्म सन् 1942 में हुआ। इनका विवाह इन्दौर में आगरावाले प्यारेलालजी सेकसरिया की सुकन्या सुमित्राजी से हुआ। इनके एक पुत्र सन्दीप और एक कन्या सुनीता हैं। श्री संदीप कुमार के सुपुत्र शान्तनु हैं। मुरलीधरजी की कन्या सावित्री बाई का विवाह बम्बई में श्री श्योदेवजी बूबना के पौत्र से हुआ। सेठ नारायणदासजी के चार पुत्रों के अतिरिक्त एक कन्या लक्ष्मीबाई भी उत्पन्न हुई। इसका विवाह इन्दौर में मिठ्ठूलाल जी चौधरी से हुआ है।

नारायणदासजी के तृतीय पुत्र लक्ष्मीनारायणजी का जन्म सन् 1899 में हुआ। आपके जन्म के बाद आपकी दादीजी का स्वर्गवास हुआ।

नारायणदासजी के चतुर्थ पुत्र बासुदेव जी का जन्म 1903 में हुआ है। सेठ नारायणदासजी को शैशव काल में ही पिता का वियोग सहना पड़ा। इनका लालन पालन

प्रायः 8 वर्षों तक दादा रघुनाथदासजी ने किया। आगे चलकर इनकी माता ने लालन पालन का उत्तरदायित्व और भी प्रेम से संभाला। जब नारायणदासजी 40 वर्ष के हुये तब तक यह मातृ स्नेह और पोषण उनको मिलता रहा। सन् 1912 में प्रायः 70 वर्ष की अवस्था में इनकी माता का भी देहान्त हो गया। उस समय तक सेठ नारायणदासजी जावरा, मन्दसौर के सुप्रसिद्ध व्यवसायी के रुप में अपनी कीर्ति का विस्तार कर चुके थे।

सेठ नारायणदास ने स्वंय के उद्योग से शिक्षा पायी। उनके पूर्वज पुराने तरीके का व्यवसाय छोड़कर गये थे। इसके ब्याज पर धन की वृद्धि होती रहती थी। पैतृक निधि इस समय तक सिमट कर क्षीण हो चुकी थी। आपने इस पुराने ढ़र्रे के व्यवसाय के स्थान पर लगातार एक के बाद एक 15-20 जिनिंग फैक्टरियाँ मन्दसौर अंचल में निम्बाहेड़ा में स्थापित की। इस समय इनमें से 13 फैक्टरियाँ मौजूद हैं। इन्होंने निम्बाहेड़ा में भी एक कोटन जिनिंग एंड प्रेसिंग फैक्टरी सन् 1817 में स्थापित की। उस समय इनकी आयु 25 वर्ष की थी।

सेठ रघुनाथदासजी ने अपने व्यवसायिक कौशल से अतुल धन सम्पत्ति अर्जित कर अपनी कीर्ति हैदराबाद, अजमेर, गंगधार और जावरा क्षेत्र में फैला दी थी। इसी प्रकार सेठ नारायणदासजी ने मन्दसौर में रुई के जिनिंग उद्योग को केन्द्रित कर ग्वालियर राज्य का शीर्ष सम्मान प्राप्त किया। ग्वालियर महाराजा ने आपको मन्दसौर जिले का खजांची पद सौंपा।

सेठ नारायणदासजी को सन् 1918 में रायसाहब की उपाधि से विभूषित किया गया। यह बड़ा सम्मान उनको ग्वालियर स्टेट की ओर से प्रदान किया गया। उनका सम्मान करने में टौंक रियासत भी आगे आयी। इसने उनको 'रूकनुल तिजारत' की उपाधि से अलंकृत किया। ग्वालियर राज्य ने आपकी सेवा की सराहना करते हुये आपको अपनी राज्यसभा का सम्मानीय सभासद बनाया। सबसे बड़ी सम्मान की यह बात रही कि ग्वालियर राज्य में जब भी कोई आयोग बैठा या कोई समिति गठित की गयी तो सेठ नारायणदासजी को उसका अनिवार्य रूप से सदस्य बनाया गया। इस प्रकार अपने व्यवसाय कौशल और जनसेवा के बल पर सेठ नारायणदासजी ने ग्वालियर राज्य में अपने लिये एक महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया।

जातीय कार्यों में भी वे बराबर रूचि लेते थे। समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने में उनका सराहनीय योगदान रहा। इस अंचल का मारवाड़ी समाज उनकी सेवाओं को लम्बे समय तक याद करता रहेगा।

सन् 1921 में जमनालालजी बजाज द्वारा संगठित अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा

का इन्दौर अधिवेशन हुआ तो उसकी सफलता के लिये हैदराबाद के रामलालजी गनेड़ीवाला, सेठ नारायणदासजी एवं सेठ जगन्नाथजी ने बहुत बड़ा योगदान किया। वस्तुतः देखा जावे तो इस अधिवेशन के आयोजन का सारा भार सेठ नारायणदासजी ने ही अपने सबल कन्धों पर उठाया था।

सेठ श्री रघुनाथदासजी ने जावरा नगर की श्री वृद्धि के लिये लगाये गये सुन्दर उपवन को श्री कृष्णार्पित कर दिया था। इसके पश्चात् उन्होंने जावरा में बेणुगोपालजी का भव्य मन्दिर बनाया। नारायणदासजी ने इन दोनों स्थानों की पूरी सार सम्हाल रखी और उनकी सुन्दरता में कोई कमी नहीं होने दी।

सेठ नारायणदासजी की कीर्ति कथा बहुत विस्तृत है। इनके नानाजी ने अयोध्या में गोलाघाट पर जानकीजी का सुन्दर मंदिर बनवाया था। नारायणदास जी ने इस मंदिर की पूरी देखरेख रखी। उनका बराबर प्रयत्न रहा कि यह मन्दिर अयोध्या के सुन्दर मंदिरों में से एक बना रहे।

आपके सुयश का एक अंक बम्बई में भी अंकित है। फनसवाड़ी के श्री वैष्णव सम्प्रदाय के मन्दिर के आप फाउन्डेशन ट्रस्टी रहे थे। अपनी धर्मप्राणता और श्रद्धा को घनीभूत करने के लिये उन्होंने देश के विभिन्न भागों में स्थित तीर्थों का भ्रमण किया था। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम सभी देवाराधन के पुनीत आश्रमों का उन्होंने दर्शन किया था।

सेठ नारायणदासजी बड़े अध्यवसायी थे। साथ ही बड़े परिश्रमी भी थे। 10 दिनों से अधिक एक स्थान पर कभी नहीं रहे। उनका अधिकांश समय यात्रा में बीतता था। इतने पर भी भोजन सम्बन्धी सदाचार का पालन प्राचीन रीति के अनुसार होता था। साथ में रसोईया और एक नौकर रहता था। व्यवसाय के कार्य को तत्परता से सम्हालते रहते थे। उनकी नित्य नियम विषयक दृढ़ता सराहनीय थी।

वे सवंत् 1969 के आषाढ़ मास से प्रत्येक वर्ष आषाढ़ मास में जगदीशजी जाते थे। एक बार वापिस लौटे तो उनकी धर्मपत्नी का देहान्त हो गया था। इनकी धर्मपत्नी भी बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति की थी।

सेठ नारायणदासजी ने पैसों का कभी संग्रह नहीं किया। एक व्यवसाय की आय से दूसरी जिनिंग फैक्ट्री खड़ी कर दी। मन्दसौर उन दिनों अफीम के व्यापार का बड़ा केन्द्र था। सेठजी ने अफीम के व्यवसाय को अपना कर उसमें वृद्धि की।

इनकी धर्मपत्नी मोहरबाई का देहान्त प्रायः 92 वर्ष की अवस्था में सम्वत् 1914 में हो गया था। वे स्वंय 63 वर्ष की अवस्था में सन् 1935 में परलोक गये। आपकी स्मृति

में आपके सुपुत्रों ने मन्दसौर में सन् 1938 में श्री नारायणदास वोकेशनल इंस्टीटयूट स्थापित की है। इस वंश परम्परा में सेठ नारायणदासजी के सुपुत्र श्री लक्ष्मीनारायणजी हैं। इनका जन्म सन् 1899 में जावरा में हुआ था। आपका विवाह अजमेर के घीयाओं के यहाँ श्री दिलसुखरायजी घीया की सुकन्या रतनबाई से हुआ। बम्बई विश्वविद्यालय से आपने कृषिशास्त्र में स्नातक कोर्स किया है। आप मन्दसौर के टेक्सटाइल उद्योग पतियों में अन्यतम स्थान रखते हैं।

आपने बम्बई विश्वविद्यालय कें अन्तर्गत 'बेचलेर आफ एग्रीकलचर' की डिग्री प्राप्त करने के साथ साथ कृषि अर्थशास्त्र, भूमि विकास और सघन कृषि पद्धति जैसे संबद्ध विषयों का ज्ञान प्राप्त किया। शिक्षा की समाप्ति पर आपने अपने पैतृक व्यवसाय में मन लगाया और जिनिंग उद्योग में अपना एक स्थान बना लिया। जब आपके पिताजी का देहान्त सन् 1935 में हो गया तो इस कार्यभार को आपने बड़ी योग्यतापूर्वक सम्हाला और उसे आगे बढ़ाया। आपने सन् 1946 में मन्दसौर टेक्सटाइल मिल की स्थापना की। इस प्रकार टेक्सटाइल मिलों के मानचित्र पर मन्दसौर नगर के नाम को अंकित कर दिया।

इनकी सम्पत्ति और प्रभाव का अंदाज इस बात से अच्छी प्रकार लगाया जा सकता है कि जिस समय सेठ नारायणदासजी का स्वर्गवास हुआ उस समय जावरा नवाब द्वारा प्रदत्त 50 गांव इनकी जमीदारी में थे। जब जमीदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ तो ये गांव चले गये। गावों के जाने के बाद भी खेती की जमीन इनके पास थी। उसको कृषि की दृष्टि से इन्होंने व्यवस्थित की।

सेठ नारायणदासजी के बाद उनके पुत्र को ग्वालियर राज्य में गणमान्य नागरिक के रूप में सम्मानित किया गया। इस राज्य ने सन् 1942 में आपको 'ताजीरूल मुल्क' की उपाधि से अलंकृत किया। इसके अतिरिक्त आपको 31 वर्ष की अवस्था में ग्वालियर स्टेट ने ओनरेरी मजिस्ट्रेट के पद पर सुशोभित किया। आपने इस पद पर सन् 1939 तक काम किया। 1924 से 1959 तक आप डिस्ट्रीक्ट कोपरेटिव बैंक के मैनेजिंग डाइरेक्टर रहे। साहूकारबोर्ड के आप वर्षों तक अध्यक्ष रहे। स्पेशल आयोग और समितियों में आपको नामजद किया जाता रहा। ग्वालियर राज्य की कई सनदे आपको प्राप्त हैं।

श्री लक्ष्मीनारायणजी ने अपनी धर्मपत्नी की स्मृति में मन्दसौर में एक धर्मशाला का निर्माण करवाया है। इसका उद्‌घाटन सन् 1982 में हुआ। कालेज प्रांगण में लक्ष्मीनारायण गनेड़ीवाला छात्रावास बनाया गया है। इसी प्रकार भानुपरा तहसील में आपने एक औषधालय का निर्माण करवाया है।

आपकी धर्मपत्नी का देहान्त सन् 1959 में हो गया था। उनसे कोई पुत्र की प्राप्ति

नहीं हुई थी फलस्वरूप आपने अपने छोटे भाई श्री वासुदेव के पुत्र रणछोड़प्रसादजी को दत्तक के रुप में लिया। श्री रणछोड़प्रसादजी का जन्म 1946 में हुआ। आपका शुभ विवाह कलकत्ता में सुप्रसिद्ध जैपुरिया परिवार में श्री पूरणमलजी की सुकन्या सुशीलादेवी के साथ हुआ। इस समय इनके दो पुत्र प्रदीपकुमार एवं प्रद्युम्नकुमार और एक सुकन्या प्रतिमा है। इस कन्या का विवाह भीलवाड़ा के मानसिंहका परिवार में शंकरलालजी के सुपुत्र से हुआ है।

श्री वासुदेवजी गनेड़ीवाला सेठ नारायणदासजी के चतुर्थ पुत्र हैं। इनका जन्म सन् 1903 में हुआ था। इनके जन्म के समय इनके पिता जिनिंग व्यवसाय को विस्तृत करने में लगे थे। आपने भी व्यवसाय में उनका हाथ बंटाना शुरु किया। इनका विवाह हाथरस के नंदलालजी हालन की सुकन्या गिन्नीबाई से हुआ। इस समय आपके एकमात्र सुपुत्र बैंकटेशप्रसादजी हैं जो सुपुत्र गौतम के पिता हैं। इनका जन्म 1925 में हुआ था। आपका विवाह कलकत्ता में हुआ था। श्री वासुदेवजी की तीन सुपुत्रियाँ गीताबाई, भगवतीबाई और शकुन्तलाबाई हैं। गीताबाई श्योदेवजी के पोते श्री गोपालजी को विवाही गयी है। शुकुन्तला बाई का विवाह श्री माणकचन्दजी रूठिया सिहोर के साथ हुआ है।

आप इस समय फनसवाड़ी के मन्दिर के ट्रस्टी हैं। अपने समाज में सरपंच है। श्री नारायणदासजी का परिवार मन्दसौर, इन्दौर और जावरा में व्यवस्थित होकर अपना व्यवसाय कर रहे हैं।

पंचदश अध्याय

श्री हरिकृष्णदासजी की संतति वल्लरी

श्री हरिकृष्णदासजी एवं उनके पुत्रों का वृत्त पूर्व में दिया जा चुका है। इस स्थान पर उनके पुत्रों की संतति का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। श्री हणूतरामजी अपने पिता की प्रथम संतान थे। उनके एक मात्र पुत्र श्री हरदेवदासजी थे। इनके दो पुत्र हुये रामविलासजी एवं गोरधनदासजी। श्री रामविलासजी का जन्म सन् 1830 के आसपास और छोटे भाई गोरधनदासजी का जन्म सन् 1852 के आसपास हुआ था। रामविलासजी का निधन 1895 ई. में मुकुन्दगढ़ में हुआ। इन्होंने प्रायः 60 वर्ष की आयु पायी। इनकी पत्नी कुछ वर्षों तक आगे भी जीवित रही। इनकी मृत्यु 1908 में हुई।

श्री गोरधनदासजी अधिकतर मुकुन्दगढ़ में ही रहे। इन्होंने पुरलिया में दुकान बनायी और व्यवसाय शुरू कर दिया। आपने अपनी माता रामाबाई को लेकर हरिद्वार की यात्रा की थी। इनकी मृत्यु सन् 1928 में हुई। आपके तथा आपकी माता के फूल एक साथ ही हरिद्वार पहुचे थे।

श्री रामविलासजी के दो पुत्र हुये बृजमोहनजी एवं ज्वालादत्तजी। प्रथम पुत्र का जन्म अनुमानतः 1850 ई. और दूसरे का 1855-60 ई. में हुआ। बृजमोहनजी का देहान्त 1924 में और पत्नी का 1923 में हुआ। इनके दो पुत्र श्री उदयकुमारजी एवं श्री रामकरणजी हुये। उदयकुमारजी के एक पुत्र बाबूलालजी हुये जो 5 पुत्रों के पिता बने। इनके पुत्रों

के नाम श्री लाल, प्रेमलाल, गोपाललाल, विश्वनाथ और रामअवतार हैं। श्री लाल के राजेश, संजय पुत्र हैं जबकि प्रेमलाल के पुत्र अनिल एवं मनीश हैं। श्री गोपाललालजी के पुत्र का नाम आयुष है। श्री विश्वनाथ के पुत्र रोहितकुमार हैं।

श्री रामकरणजी तीन पुत्रों के पिता बने। इनके नाम श्री राधाकिशनजी, इन्द्रचन्दजी और बनवारी लालजी थे। श्री राधाकृष्ण के 6 पुत्र साँवरमलजी, विश्वनाथजी, गिरधारीलालजी रामगोपालजी, जगदीशजी, रामअवतारजी थे। बड़े पुत्र सांवरजी, महेश, दिनेश, नरेश और मुकेश के पिता हैं। श्री विश्वनाथ के दो पुत्र दीपक एवं राजेश हैं। श्री गिरधारी संजय और अजय के पिता हैं। श्री रामगोपाल के पुत्र का नाम अनूपकुमार और श्री जगदीश के पुत्र का नाम अमित कुमार है। श्री रामअवतार के पुत्र विक्की हैं।

श्री सावरमल का परिवार कलकत्ता में, रेनूकूट में, श्री विश्वनाथ का एवं श्री गिरधारीलाल का परिवार कलकत्ता में, श्री रामगोपाल का फरीदाबाद में श्री जगदीशप्रसाद का एवं श्री रामाअवतार का परिवार कलकत्ता में अवस्थित है। श्री इन्द्रचन्दजी दो पुत्रों विजयकुमार एवं पवन कुमार के पिता हैं। श्री बनवारीलाल के पुत्रों के नाम विनोद कुमार एवं प्रमोदकुमार हैं। श्री विनोदकुमार के पुत्र साकेत कुमार हैं।

श्री रामविलासजी के दूसरे पुत्र ज्वालादत्तजी ने प्रायः 60 वर्ष की आयु पायी। आपका निधन सन् 1917 में हुआ। आपके दो पुत्र श्री रामकुमारजी एवं श्री रतनलालजी हुये। प्रथम पुत्र का जन्म प्रायः 1899 में तथा दूसरे पुत्र का जन्म इनके जन्म के चार साल बाद हुआ। श्री ज्वालादत्तजी की धर्मपत्नी महादीबाई का स्वर्गवास 1946 में हुआ। श्री रतनलालजी का विवाह चूड़ी में हुआ था। इनकी धर्मपत्नी बनारसीदेवी का देहान्त 1977 में हुआ। इस वंश में अधिकांश व्यक्ति फाटके का धन्धा करते थे।

श्री रामकुमारजी तीन पुत्रों के पिता हुये। इनके पुत्र पुरूषोत्तमजी, परमेश्वरीलालजी एवं पूरणमलजी हुये। श्री पुरूषोत्तमजी दो पुत्रों शम्भु एवं रमेश के पिता हैं। परमेश्वरीलालजी के पुत्र श्री काशीप्रसाद, महेशकुमार और सुरेशकुमार हैं। श्री पूरणमलजी के पुत्र के नाम जनार्दन और रवीन्द्र हैं। श्री रतनलाल के कोई पुत्र नहीं है। ये परिवार गिरीड़ीह और कलकत्ता में बसते हैं। श्री पूरणमलजी विदेश में डाक्टर हैं। श्री पुरूषोत्तमजी का परिवार मद्रास में व्यवसाय करता है। श्री परमेश्वरजी अपने पुत्रों सहित कलकत्ता में रहते हैं।

श्री रामकुमारजी 20-22 वर्षों की आयु में बागला कम्पनी में फाटके में दत्तचित हो गये। बागला कम्पनी के मालिक महादेवजी श्री रामकुमारजी को 200 रु. साल की नौकरी पर कलकत्ता ले गये थे। आगे चलकर वे केदारनाथ पौद्दार की गद्दी पर काम करने लगे। यहां शेयरों और फाटके का रोजगार था। 1926-28 में आप मुरलीधर हीरालाल सोमानी

के फर्म में गये। यहां उन्होंने 20 साल तक कार्य किया। इनका विवाह सन् 1916 के आसपास नेमाणी परिवार में श्री सूरजमल जी की सुकन्या फूलबाई से हुआ था।

श्री रामकुमारजी धनार्जन के साथ-साथ सामाजिक सेवा का कार्य भी करते रहे। शिक्षण संस्थाओं से आपका सम्बन्ध रहा । सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में उन्होंने बराबर रूचि ली।

श्री रामकुमारजी के प्रथम पुत्र पुरूषोत्तमजी का जन्म 1919 और पूरणमलजी का जन्म 1929 में हुआ। प्रथम पुत्र का विवाह कलकत्ता में बजरंग लाल गौरीसरिया की सुपुत्री भगवती देवी से हुआ। शुरू में इन्होंने भी स्टोक एक्सचेन्ज में काम किया। इसके बाद गिरीड़ीह में अभ्रक के धन्धें में लग गये। वे वहीं जाकर बस गये। सबसे छोटे पुत्र पूरणमल जी एम.बी.बी.एस. पास करके इंग्लैंड चले गये। वे वहां स्टेफोर्ड में प्रेक्टिस करते हैं। आपका परिवार भी वहीं बस गया है।

श्री परमेश्वरीलालजी का विवाह ई. 1942 में नवलगढ़ निवासी मन्नालाल सत्यनारायण कानोड़िया के मन्नालालजी की सुकन्या गीता देवी से हुआ। पैतृक व्यवसाय करते हुये आपने लंदन के शेयरों का बड़ा सौदा किया। आगे चलकर आपने एक्सपोर्ट का धन्धा अपनाया और स्वतन्त्र रूप से इंटरनेशनल कोमर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज फर्म स्थापित कर लिया।

आप तीन पुत्रों के पिता हैं। बड़े पुत्र श्री काशीप्रसाद का जन्म सन् 1949 में हुआ। आप बी.काम. हैं। आपका विवाह 1965 में मोहनलालजी कालोरिया रानीगंज निवासी की सुकन्या मीरा देवी से हुआ है। महेशजी का जन्म 1947 में हुआ। आप भी बी.काम. हैं। आपका विवाह 1967 में श्री विश्म्भर लाल जी केडिया की सुकन्या मंजू बाई से हुआ है। सुरेशजी का जन्म 1954 में हुआ। आप भी बी.काम. हैं। आपका परिणंय श्री, श्रीनिवास डालमिया की सुकन्या सविता से सन् 1977 में हुआ है। आप तीनों भाई व्यवसाय के निमित्त विदेश यात्रा कर चुके हैं। स्वंय श्री परमेश्वरीलालजी ने पाँच बार विदेश भ्रमण किया है। सुरेशजी रोलर स्केटिंग में सुनाम कमा चुके है। वेस्ट बंगाल की टीम के आप 1974 में कैप्टन भी रह चुके हैं। सन् 1980 में इस खेल की विश्वप्रतियोगिता सान्तीयागों में आयोजित हुई थी। इसमें आपने वाइस प्रेज़िडेन्ट के रूप में भाग लिया था।

श्री हरदेवदासजी के द्वितीय पुत्र श्री गोरधनदासजी थे। इनके दो पुत्र श्री मुरलीधरजी एवं श्री गंगाशंकरजी हुये। श्री मुरलीधरजी का विवाह पूरणीदेवी के साथ हुआ। वे रतनगढ़ निवासी श्री जानकी दासजी पोद्दार की बेटी थी। इस पत्नी का देहान्त 1914 में हो गया। श्री मुरलीधरजी के एक पुत्र श्री निवासजी हुये जो दो पुत्रों श्रीरामावतार एवं श्रीरामगोपाल के पिता हैं। श्रीगंगाशंकरजी बढ़े दबंग प्रकृति के व्यक्ति थे। मुकुन्दगढ़ के श्री फूलचन्दजी

शर्मा ने बताया कि जब गंगाशंकरजी की माता का देहान्त हुआ तो उनका दाग बगीची के पास देने की तैयारी की जाने लगी। इस पर ठाकुर ने एतराज किया। श्रीगंगाशंकर एवं उनके भाई सिर पर पट्टी बाँधकर सीधे झुंझुनू कोर्ट में गये वहाँ से बगीची के पास शव को जलाने का आर्डर लेकर चार बजे आये। बगीची के पास ही अपनी माता का दाग दिया।

ठाकुर से अनबन बढ़ गई अतः इन्होंने अपने भाई बेटों के साथ मुकुन्दगढ छोड़कर पास ही चूड़ी में वास कर लिया। हवेली खुली छोड़ गये। आगे चलकर गांव की पंचायत के मनाने पर लौट आये पर गढ़ में नहीं गये। ठाकुर ने अपने पुत्र लालसिंह को हवेली पर भेजा। इस पर गंगाशंकरजी ने उसे स्वंय नजर पेश करने से इन्कार कर दिया। लोगों के कहने पर अपने लड़के से नजर करवायी। ये जीवनपर्यन्त गढ़ में नहीं गये।

श्री गंगाशंकरजी दो पुत्रों बजरंग लालजी एवं माधवप्रसादजी के पिता हुये। बजरंग लालजी के पुत्र श्री पवन, सुरेश कुमार और अरुण कुमार हैं। श्री पवनजी के पुत्र का नाम विकास है। ये परिवार कलकत्ता और मद्रास में बसे हुये हैं। माधवप्रसादजी के पुत्रों के नाम विजय कुमार, सन्दीप कुमार एवम् मनीष कुमार हैं। आप मद्रास में रहते हैं।

श्रीहरिकृष्णदासजी के दूसरे पुत्र चतुर्भुजदासजी थे। इनके तीन पुत्र हुये। चुन्नीलाल जी का जन्म अनुमानतः सन् 1818 में हुआ। मिरजामलजी का जन्म 1824-26, रामदासजी का जन्म 1830-32 में हुआ। सन् 1843 में चुन्नीलालजी ने हरिद्वार और गढ़मुक्तेश्वर की यात्रा की थी। सन् 1850 में आपकी धर्मपत्नी के फूल रतनगढ़ से हरिद्वार आये। आपका देहान्त सन् 1901 में हुआ। आपके पुत्र कालिकाप्रसादजी के पुत्र गोपीनाथजी थे जिनके साथ ही इनकी परिवार श्रृंखला टूट गयी।

श्री मिरजामलजी का विवाह मुखी देवी के साथ हुआ था। आपने अपनी पत्नी के साथ सन् 1844 में हरिद्वार की यात्रा की थी। मुखीजी सीताराम कानोड़िया की बेटी थी। वे अफीम का व्यापार करते थे। आप सर्वप्रथम मालवा गये थे। मिर्जामलजी का देहान्त 1894 के करीब हुआ था । इनके पुत्र रामचन्द्रजी हुये। इनके तीन सुपुत्र थे गौरीशंकरजी, जयदयालजी और राधाकृष्णजी। सेठ गौरीशंकरजी शिव के बड़े भक्त थे। आपने भक्ति ग्रंथमाला के नाम से शिवभक्ति विषयक प्रचुर साहित्य का प्रकाशन किया था। इसमें अनेकों पुस्तकें थीं।

श्री रामचन्द्रजी का जन्म संवत् 1919 में हुआ था। आप सं. 1945 में मुकुन्दगढ़ से व्यापार के लिये रंगून गये और वहां सूत का व्यापार किया। आपने अपनी 'नाव सर्विस' भी व्यापारिक माल के लिये शुरू की । सन् 1950 में आप सीतागढ़ी आ गये और गल्ले का व्यवसाय शुरू किया। आप संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। काव्यरचना और ज्योतिष से

आपको प्रेम था। आपने वैद्यक ग्रन्थों का अध्ययन किया था । आपने अपने स्वर्गवास के समय 60 हजार रुपये शुभ कार्यों में लगाये। आपका स्वर्गवास सन् 1977 में हुआ। आपके पुत्रों में विभाजन सन् 1932 में हो गया।

अपने जीवन काल में श्री रामचन्द्रजी ने मुकन्दगढ़ में 'रामचन्द्र आयुर्वेद दातब्य औषधालय' स्थापित किया था। श्री गौरीशंकरजी का जन्म सं 1940 में हुआ था। संस्कृत की ओर आपकी बड़ी रूचि थी। आपके पुत्र केशवदेवजी का देहान्त 20/25 वर्ष की छोटी अवस्था में हो गया। केशवदेवजी के एक पुत्र कैलाशपती थे। श्री गौरीशंकरजी ने सर्वप्रथम गनेड़ीवाला वंशवृक्ष वृक्षाकार में प्रकाशित किया। इस प्रकार उन्होंने वंश के लोगों को जोड़ने का प्रयास किया। इसी आधार पर सन् 1981 में श्री भगवतीप्रसादजी गनेड़ीवाला ने वंश वृक्ष को प्रकाशित किया। सन् 1988 में श्री हनुमानप्रसादजी गनेड़ीवाला ने श्री जुगलदास चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से संशोधित वंश वृक्ष प्रकाशित किया। श्री गौरीशंकर ने अपने लड़के केशवदेव के नाम पर केशव पुस्तकालय स्थापित किया था। इसमें धार्मिक एवं सांस्कृतिक पुस्तकों का अच्छा संग्रह था। अनेकों दुर्लभ हस्तलिखित ग्रन्थ भी थे।

श्री रामपतदासजी के सुपुत्र गजानन्दजी गनेड़ीवाला ने मुकुन्दगढ़ में सर्वप्रथम गऊशाला के स्थापनार्थ अपनी विस्तृत जमीन और उस पर बने हुये मकान दान में दिये। इन्ही मकानों में आज भी गऊशाला चलती है। इन्होंने महाजनी विषय की एक पाठशाला भी खोली थी। उनके दूसरे पुत्र कैलाशपति हैं जो केशव देवजी के दत्तक गये।

श्री रामचन्द्रजी एवं गजानन्दजी ने बर्माशेल की किरासन तेल की ऐजन्सी ली थीं। इसकी 40 दुकानें बिहार, यू.पी., और मध्यप्रदेश में थी। यह एजेन्सी कलकत्ता के प्रसिद्ध ताराचन्द घनश्यामदास के साझे में थी। इसका काम गौरीशंकरजी, जयदयालजी व राधाकृष्णजी देखा करते थे।

गोरखपुर में मारवाड़ी बालिका साहित्य परिषद ने सन् 1958 में राधाकृष्ण गनेड़ीवाला अन्तर्विद्यालय वादविवाद प्रतियोगिता के अवसर पर सेठ राधाकृष्णजी का एक परिचय प्रकाशित किया था। उसे अविकल रूप में दिया जा रहा है। "गोरखपुर जनपद का कोई भी ऐसा संभ्रान्त नागरिक न होगा जो सेठ राधाकृष्णजी गनेड़ीवाला के नाम से परिचित न हो। आप बहुत से औद्योगिक प्रतिष्ठानों के संस्थापक थे। थोड़े ही दिनों में अपनी प्रतिभा और कार्यकुशलता के कारण इनकी गणना प्रमुख उद्योग पतियों में होने लगी थी। औद्योगिक कार्यों में व्यस्त रहते हुये भी सेठजी को सार्वजनिक हितों का विशेष ध्यान रहता था। आप प्रथम श्रेणी के ओनरेरी मुंसिफ थे। आपका भवन राजनैतिक, सामाजिक एवं औद्योगिक सभी प्रकार के व्यक्तियों का गढ़ था। छोटे बड़े सभी से आप प्रेमपूर्वक मिलते थे। विशेष

हिन्दू पर्वों, झूला, दशहरा, एवं दीपावली पर अपार जन समुदाय उत्सवों का भव्य दृश्य देखने के लिये आपके निवास स्थान पर एकत्रित हुआ करता था।

प्रशासकीय क्षेत्र में भी सेठजी का बहुत सम्मान था। ब्रिटिश सरकार ने कई बार इन्हें उपाधियों से विभूषित करना चाहा पर विदेशियों द्वारा प्रदत्त उपाधियाँ सेठजी को कब स्वीकार हो सकती थी। गोरखपुर के कमिशनर ने 28-5-32 को एक विशेष दरबार का आयोजन किया और सेठ जी की सामाजिक सेवाओं के लिये उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। इनकी पुण्य स्मृति में विद्यालय प्रांगण में साहित्य परिषद भवन का भी निर्माण कराया गया है।"

श्री रामपतदासजी के एक पुत्र श्री गजानन्दजी हुये। सेठजी की पत्नी के फूल सन् 1871 में हरिद्वार आये थे। उनका स्वंय का देहान्त सन् 1883 में हुआ था। श्री रामचन्द्रजी के सबसे छोटे पुत्र वासुदेवजी के पुत्र वेणीप्रसादजी के चार पुत्र हुये पवन कुमारजी, अनिल कुमारजी, विनोद कुमारजी एवं अंजनी कुमारजी। श्री पवनजी दो पुत्रों समीर और विकास के पिता हुये। अनिल कुमारजी के मारूति शरण और विनोद कुमारजी के पंकज एवं पीयूष पुत्र हुये। इनका जन्म सं. 1945 में हुआ था। आप गोरखपुर तथा आसपास में प्रतिष्ठित सज्जन थे। आपके यहां वी.एन.डब्लू लाइन में कई स्थानों पर ओइल एजेन्सी का काम होता है।

श्री रामचन्द्रजी के दूसरे पुत्र श्री जयदयालजी थे। उनके पुत्र श्री विशेशरलाल जी थे जिनके पुत्र आनन्दजी एवं शिवकुमारजी थे। श्री आनन्दजी के पुत्र साकेत हैं।

श्री राधाकृष्णजी के पुत्र कमला प्रसादजी एवं बृजभूषणजी हुये। श्री कमल प्रसादजी के पुत्र मधुसूदनजी और बृज भूषणजी के मारूति शरण एवं महावीरशरण नामक पुत्र हैं। श्री मधूसूदन जी के पुत्र का नाम शरद है। श्री मारूतिशरण के पुत्र आदित्य और नारायण हैं। इनके यहां ओइल ऐजेन्सी का कार्य है।

श्री हरिकृष्णजी के तीसरे पुत्र सेठ रामानन्दजी थे जिनके बारे में लिखा जा चुका है। इनके दो पुत्र हुये। श्री घनश्यामदासजी एवं श्री बींजराजजी। श्री घनश्यामदासजी का विवाह सेठ सम्पतदासजी की पुत्री चन्दा से हुआ था। 1880 में उन्होंने हरिद्वार की यात्रा की थी। सन् 1905 के आसपास उनकी धर्मपत्नी की मृत्यु हो चुकी थी। घनश्यामदासजी के एक पुत्र श्री गजानन्दजी हुये। ये धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे।

श्री बींजराजजी की धर्मपत्नी जमनीबाई थी जो श्री दुर्गादत्तजी मुरारका की बेटी थी। इनके दो पुत्र लक्ष्मीनारायण व शिवप्रसाद हुये। लक्ष्मीनारायणजी का वंश क्रम आगे नहीं बढ़ा। श्री शिवप्रसादजी ने सागरमल को गोद लिया। इनके पुत्र नारायणप्रसाद हैं। आपके

पुत्र राजेन्द्र हुये जिनके पुत्र श्री विकास हैं। आप कलकत्ता में व्यवसाय करते हैं।

श्री घनश्यामजी के पुत्र गजानन्दजी दो पुत्रों के पिता हुये। ये थे श्री हनुमानबक्सजी (1904) एवं श्री अनन्तरामजी। प्रथम पुत्र के श्री किशनजी उत्पन्न हुये। इनके दो पुत्र विनोद और निक्कू है। श्री अनन्तरामजी के चार पुत्र हैं शंकरलाल जी, श्री रामजी, दामोदर जी, एवं नन्द कुमारजी। श्री हनुमान वक्सजी का स्वर्गवास 19 अक्टूबर 1979 में हुआ। श्री शंकरलाल के पुत्र रमेश कुमार, श्री राम के पुत्र संदीप कुमार एवं श्री दामोदर के पुत्र राकेश कुमार एवं मुकेश कुमार हैं। श्री रामानन्दजी का परिवार रतनगढ़ कलकत्ता, और सिलौंग में है।

श्री रामचरणदास जी अपने पिता की चतुर्थ संतान थे। इनके पुत्र श्री रंगलालजी हुये। इन्होंने छोटी अवस्था में ही अपने कृतित्व का परिचय दिया था। आप व्यवसाय हेतु सन् 1843 के आसपास कलकत्ता आये। निरन्तर श्रम से उन्होंने अपने व्यवसाय का विस्तार किया और काफी सम्पत्ति अर्जित की।

सर्वप्रथम सेठ रंगलालजी गनेड़ीवाला सन् 1843 के आसपास रतनगढ़ से कलकत्ता आये। आपने हरिप्रसाद हरिवक्स के साझे में कपड़े की चलानी का काम आरम्भ किया। इसके कुछ समय बाद आप रामप्रसाद गंगाप्रसाद के नाम से अपना स्वतन्त्र व्यवसाय करने लगे। आपकी दुकान पर कपड़े की चलानी और लकड़ी का व्यापार होता था। काठ के व्यापार में जो लोग सर्वप्रथम अग्रसर हुये उनमें रंगलालजी गनेड़ीवाला का नाम प्रसिद्ध है।

इनकी पत्नी का नाम श्योकोरी था जो तुगनरामजी बागला की बेटी थी। उनकी पहली पत्नी का देहान्त सन् 1901 के आसपास हुआ। सन् 1903 में प्रायः 80 वर्ष की अवस्था में वे हरिद्वार और बद्रीनाथ धाम आये। यह यात्रा रतनगढ़ से हुई थी। उनकी मृत्यु सन् 1903 में हुई। श्री रंगलाल जी ज़ीवन के अंतिम दिनों में धार्मिक वृत्ति की ओर अधिक उन्मुख हो चुके थे। आपने अपने पुत्रों के लिये रतनगढ़ में जमीन खरीदी और कूंवा भी बनवा दिया। आपने इच्छित मृत्यु का वरण किया। मृत्यु के समय इनकी अवस्था 82-83 वर्ष की थी।

आपके चार पुत्र थे रामप्रसादजी, गंगाप्रसादजी, केदारबक्सजी और शिवदयालजी। ज्येष्ठ पुत्र रामप्रसादजी ने सम्पन्नता का जीवन जीया। वे सन् 1901 में अपनी पत्नी धन्नीबाई के साथ हरिद्वार यात्रा पर आये। वहां से बद्रीनाथ गये। श्री रामप्रसादजी के सुपुत्र चिमनलालजी थे जिनका जन्म सन् 1858 (वि. 1915) में हुआ। अपने कुल में ये बड़े नामी गरामी व्यक्ति हुये। भारतीय व्यापारियों के परिचय में लिखा है कि सेठ रामप्रसादजी की धार्मिक कार्यों में रूचि थी। आपने 25 हजार की एक रकम धार्मिक कार्यों के लिये

निकाली थी। इसके ब्याज से रतनगढ़ में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के भोजन का प्रबन्ध होता था। सन् 1899 में सेठ रामप्रसादजी के पुत्र सेठ चिमनलालजी एवं सेठ बृजलालजी ने अलग अलग व्यवसाय कर लिया था।

श्री चिमनलालजी गनेड़ीवाला मारवाड़ी समाज में बड़े ख्यातनामा व्यक्ति थे। वे रतनगढ़ में अपने परिवार को छोड़कर कलकत्ता में भाड़े के मकान में रहे। उन्होंने कपड़े का व्यवसाय शुरू किया साथ ही कई चीजों की दलाली भी शुरू कर दी। आपने जल्दी ही बर्मा की टीक लकड़ी का लेना बेचना प्रारम्भ कर दिया। आपको गिलोन्डर्स की बोम्बे कम्पनी से बर्मा की टीक लकड़ी का थोक माल मिलने लगा। आपने शुरू में शालीमार में गोदाम का गोला स्थापित किया। यहां बर्मा से आने वाला माल उतारा जाता था। इस माल को वे व्यापारियों के हाथ बेच देते थे। इन्होंने सर्वप्रथम अंग्रेजी मार्का लकड़ी का व्यापार चलाया और अच्छा लाभ कमाया। अंग्रेज कम्पनियों में आपकी अच्छी धाक रही। अंग्रेजी कम्पनियों से उधार पर आपको माल मिलने लगा था। इससे बहुत लाभ हुआ।

इसी बीच आपने रतनगढ़ में और कलकत्ता में कई जायदादें खरीद लीं। समाज में उनकी प्रतिष्ठा निरन्तर बढ़ने लगी। आप मारवाड़ी समाज के पंच थे।

रतनगढ़ में आपने एक बड़ा कूँआ बनाया जिससे लोगों को पेयजल की सुविधा प्राप्त हुई। आपने रतनगढ़ में प्राईमरी स्कूल का भव्य भवन बनाया और इसके संचालन का भार उठाते रहे।

रतनगढ़ में अनेकों संस्थाओं को उन्होंने सहारा दिया तथा उनके लिये धन-संग्रह का कार्य किया। रतनगढ़ के अति प्रसिद्ध श्री रामचन्द्रजी के मन्दिर का निर्माण सेठ चिमनलालजी ने करवाया। रतनगढ़ की मुख्य सड़क के किनारे संगमरमर के प्रस्तर खंडों से निर्मित्त यह भव्य मंदिर उनकी कीर्ति का उद्घोष कर रहा है। मंदिर में भगवान राम, सीता और लक्ष्मण की भव्य मूर्तियाँ प्रस्थापित हैं। मंदिर के चारों ओर एक बड़ा बाग है। अतिथियों के लिये आवास बने हुये हैं।

सेठ चिमनलालजी कलकत्ता के अति प्रसिद्ध बैंकर रहे थे। वे बड़ी-बड़ी फर्मों को भी रुपये उधार देते थे। 31 जुलाई 1922 को उनकी फर्म रामप्रसाद चिमनलाल द्वारा श्री हरजीमलजी डालमिया के सुपुत्र श्री रामकृष्ण और जयदयाल डालमिया को 15000 रुपयों का ऋण दिया गया था। इस ऋण की अदायगी के लिये श्री डालमिया बन्धुओं ने अपना चैटल्स मय सामान के गिरवी रखा था। उस समय चिमनलालजी मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट वाले मकान में रहते थे। इस ऋण की अदायगी तीन माह में की जानी थी। इन्होंने नीमतल्ले में बर्मा टीक के माल का खुदरा केन्द्र बनाया। आपने हुण्डी पुर्जे पर लेन देन का कार्य

काफी आगे बढ़ाया। आपकी गद्दी से लाखों रुपये ब्याज पर दिये जाने लगे। कलकत्ते के नामी बैंकर्स में आपका स्थान रहा।

सन् 1914-15 में बम्बई में बर्मा बैंक असफल हो गया। कलकत्ता में टाटा बैंक के बारे में अफवाहें फैल गई। लोगों ने डरकर धन निकालना शुरू कर दिया। चिमनलालजी ने कहा कि जिसको अपना रुपया डूबने का डर हो वह हमारी गद्दी से रुपये ले जाये। इससे टाटा बैंक फैल नहीं हुई। इसके बाद वे इस बैंक की कलकत्ता कमेटी के चेयरमैन बना दिये गये। सेन्ट्रल बैंक में उनकी सीमाहीन क्रेडिट रही। आप सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया की कलकत्ता वाली शाखा के चेयरमैन थे और आजीवन उसके डायरेक्टर रहकर उसकी उन्नति के प्रयत्न करते रहे। इसके अतिरिक्त कलकत्ता के विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय, विशुद्धानंद सरस्वती अस्पताल, औषधालय, मारवाड़ी ऐसोसियेशन, ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम आदि के संस्थापन एवं संचालन में आपका बड़ा हाथ रहा। विशुद्धानंद विद्यालय के आप 6 वर्ष तक सेक्रेटरी रहे, इसके बाद इसके अध्यक्ष पद को सुशोभित किया।

आप विशुद्धानन्द सरस्वती अस्पताल के आजीवन ट्रस्टी रहे। सेठजी ने ऋषि कुल हरिद्वार की एक सहायक कमेटी कलकत्ता में स्थापित की जिसके आप आजीवन सेक्रेटरी रहे। आपके सदप्रयत्नों से एक भारी रकम एकत्रित हो गयी जिसका ब्याज उक्त संस्था को मिलता रहा। ऋषि कुल में आयुर्वेदिक कालेज के लिये सेठजी ने एक लाख का चन्दा कराया और स्वंय भी अच्छी रकम दी।

सूरजमल जालान स्मृति ग्रन्थ में यत्रतत्र सेठ चिमनलालजी से संबन्धित प्रसंग हैं जिनके अनुशीलन से सेठजी की महत्ता की जानकारी मिलती है। सूरजमलजी के श्वसुर श्री रामचन्द्र बोगोरिया की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी नारायणीबाई ने अपने शिशु नागरमल को लेकर कलकत्ता जाने का विचार इस आशा को लेकर किया कि रतनगढ़ के गनेड़ीवाला भी वही हैं ।

नारायणीबाई सेठ नागरमलजी की माता ने सेठ सूरजमल को स्वतन्त्र व्यापार करने के लिये जो बढ़ी राशि दी थी वह चिमनलालजी गनेड़ीवाला के परामर्श से ही दी थी। सेठ चिमनलालजी का श्री रामचन्द्रजी से प्रेमभाव था। जब उनका निधन हुआ तो उनकी सम्पत्ति के ट्रस्टी चिमनलालजी थे। वे सूरजमलजी को व्यापार में अच्छा परामर्श देते रहते थे।

रतनगढ़ के सवनामधन्य व्यक्ति जुहारमलजी खेमका और चिमनलालजी गनेड़ीवाला इन दोनों ने कलकत्ता के सामाजिक जीवन में उच्च स्थान बनाया। हरिरामजी गोयनका, दौलतरामजी चोखानी, रंगलालजी पोद्दार आदि दिग्गज पुरूषों में ये दोनों भी अपने युग के अग्रगण्य व्यक्ति थे। ये दोनों चपकन पार्टी के स्थायी स्तम्भ थे।

आप उत्तम दानदाता थे। विशुद्धानन्द सरस्वती अस्पताल में आपने 51 हजार का दान दिया था। आप इसके संस्थापकों में थे। रतनगढ के ऋषि कुल ब्रह्मचार्याश्रम के संचालन में आपका योगदान रहा। आपने कलकत्ता में तीन लाख की लागत का विशाल भवन बनाया। इसकी आमदनी ट्रस्ट के जिम्मे कर दी गई। इस ट्रस्ट से गरीब और विधवाओं को सहायता मिलती है।

आपने धूलिया के विशेशर लालजी गनेड़ीवाला के तीसरे पुत्र श्री रामेश्वरलालजी को दत्तक रूप से ले लिया। श्री चिमनलालजी का स्वर्गवास सन् 1924 में पुरीधाम में 17 फरवरी को हुआ। इस स्थान पर एक धर्मशाला और एक शिवमन्दिर सन् 1929 में बनाया गया। आपकी पत्नी हरदेवीबाई आपकी मृत्यु के बाद भी जीवित रही। वे सूरजमलजी पौद्दार की पुत्री थी।

श्री रामेश्वरदासजी के जब कोई संतान नहीं हुई तो हैदराबाद से श्रीलक्ष्मीनारायण को गोद ले आये। इसके कुछ वर्षों बाद सन् 1925 में तथा आगे उनके तीन पुत्र और हुये। उनके पुत्र श्री भगवतीप्रसादजी का जन्म हो गया। इनकी माता की मृत्यु सन् 1946 में हुई। सन् 1953 में दत्तक पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण का देहान्त हुआ और आठ साल बाद श्री रामेश्वरदासजी इस संसार को छोड़कर चले गये।

श्री भगवतीप्रसादजी ने सैंट जेवियर्स से सन् 1941 में मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आपका विवाह प्रतापमल रामेश्वरदास नाम की फर्म की सुकन्या शान्ति देवी के साथ हुआ। परिवार की आर्थिक स्थिति इस समय पहले जैसी नहीं रही। आपने अथक परिश्रम करके सन् 1965 तक कुल की एक सुसम्पन्न स्थिति प्राप्त कर ली। आपको 5 पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई। इनके नाम बसंत कुमारजी, जयन्त कुमारजी, हेमन्त कुमारजी, सुशीलकुमारजी एवं शदरकुमारजी हैं। श्री बसंतजी के पुत्र विकास, और श्री हेमन्तजी के आकाश और आदर्श नामक पुत्र हैं। इनके विवाह इस प्रकार हुये हैं। बसंतजी का विवाह सन् 1961 में बम्बई में बृजमोहनजी नेमानी के यहां कविता से हुआ है। जयन्तजी का विवाह बांकुड़ा में सन् 1964 में देवकीनंदन जी गोयनका की सुकन्या गायत्री से हुआ है। हेमन्तजी का विवाह बनारस में प्रयागनाथजी झुझुनूवाला के यहां सन् 1968 में कुसुम से सम्पन्न हुआ है। सुशीलजी का विवाह ताराचन्द घनश्यामदासजी के श्री निवासजी पौद्दार की पोती सुमन से हुआ है। शरदजी का विवाह बृजमोहनजी नेमानी की सुकन्या माधवी से सन् 1974 में हुआ है। ये सभी भाई आधुनिक उद्योगों में लगे हैं। इस भरीपूरी गृहस्थी की सेवा का उपभोग कर श्री भगवती प्रसादजी जून 1983 को इस संसार से विदा हुये।

इन्होंने बड़े भारी प्रयास से सन् 1981 में गनेड़ीवालों का वंशवृक्ष पुस्तकाकार में निकाला। इतिहास के प्रति बड़ी रूचि रखते थे । इस सम्बन्ध में इन्होंने बड़ा काम किया।

काफी सामग्री जुटाई। सभी भाईयों को एकमत किया। भाईयों को एक करने में इनका बड़ा हाथ रहा। गनेड़ीवाला वंश के इतिहास के सम्बन्ध में इनके प्रयत्न बड़े स्तुत्य रहे जिसके लिये परिवार के सदस्य इनके आभारी रहेगें। इनकी अकस्मात् मृत्यु से इतिहास का कार्य इनके जीवन काल में पूरा नहीं हो सका। ये प्रकाशन कार्य में बड़ी रूचि लेते थे तथा अच्छे स्वभाव एवं प्रकृति के सज्जन थे।

श्री रामेश्वरलालजी के दत्तक पुत्र श्री लक्ष्मीनारायणजी के तीन पुत्र विजय कुमार, वीरेन्द्र कुमार और सुरेन्द्र कुमार हुये। श्री विजय कुमार के दो पुत्र अजय और संजय हैं। श्री वीरेन्द्र के पुत्र सौरभ हैं। श्री सुरेन्द्र कुमार के पुत्र का नाम मुदित है। श्री रामेश्वर जी के दूसरे पुत्र श्री गोकलचन्द्रजी के पुत्र श्री रवीन्द्र कुमार हैं जिनके पुत्र अमित हैं। श्री रामेश्वरजी के तीसरे पुत्र श्री श्यामलाल हैं जिनके पुत्र श्री कृष्णकुमार हैं।

श्री चिमनलालजी के छोटे भाई श्री बृजलालजी थे। ये बड़े धार्मिक पुरूष थे। इनके दो पुत्र श्री राधाकृष्ण एवं श्री हरिप्रसाद हुये। श्री राधाकृष्णजी दूसरे की तरक्की में खुश होने वाले व्यक्ति थे। श्री राधाकृष्णजी के पुत्र श्री मोहनलाल दो पुत्र प्रकाश और विष्णु के पिता हैं। प्रकाश दत्तक गये । श्री हरिप्रसाद के पुत्र श्री गोविन्दप्रसादजी हुये। इनके तीन पुत्र ललित कुमार, सुशील कुमार, और अनिल कुमार हैं। श्री ललित के पुत्र का नाम दीपक है। यह परिवार कलकत्ते में रहता है।

श्री रंगलालजी के दूसरे पुत्र गंगाप्रसादजी थे। इनके एक कन्या थी। इन्होंने गुलराजजी को दत्तक रूप में लिया। गंगाप्रसादजी ने चिमनलालजी के साथ कलकत्ता जाकर 7-8 साल व्यवसाय किया। उनकी मृत्यु 31 वर्ष की छोटी आयु में होने के कारण परिवार के सामने आर्थिक संकट आ गया था। कलकत्ता में वे पहले मालचन्दजी ओसवाल के यहां काम करते थे। आपने इसके बाद चिमनलाल रामेश्वर लाल फर्म में काम किया और फिर अपना स्वतन्त्र व्यवसाय कर लिया। ये काठ का व्यवसाय करने लगे।

श्री गुलराजजी के दो विवाह हुये थे। प्रथम विवाह रतनगढ़ में श्री रामकुमारजी भुबालका की सगी बहन से हुआ। इससे एक कन्या मोहनीबाई का जन्म हुआ । इसका विवाह श्री रामकुमारजी चमड़िया से हुआ था। इनका दूसरा विवाह केजड़ीवाल परिवार में जानकी दासजी की सुकन्या कमलादेवी से हुआ। इस पत्नी से आपको 6 पुत्रों की तथा 8 कन्याओं की प्राप्ति हुई। पुत्रों के नाम श्री वासदेवजी, (जन्म 1916 ई.) प्रहलादरायजी (1920) कृष्णकुमारजी (1926) रामस्वरूपजी, रामनिवासजी और ईश्वरीप्रसादजी हैं। श्री बासुदेवजी ने दो विवाह किये थे। पहले पत्नी की मृत्यु पर सन् 1947 में दूसरा विवाह रामेश्वरदास नारायणदास फर्म के रामनारायणजी की सुकन्या कस्तूरीबाई से हुआ। श्री

प्रहलादरायजी का शुभ विवाह नौगांव में चौधरी परिवार में रामरिछपाल कस्तूरीलाल फर्म के दुर्गादत्त की सुकन्या शान्ति देवी के साथ सन् 1940 में हुआ। कृष्ण कुमारजी ने अन्तर्जातीय विवाह नोआरबाली के मजूमदार परिवार में माधविकाजी से किया। श्री रामस्वरूपजी का सम्बन्ध महादेवलालजी गाड़ोदिया की पुत्री सत्यभामाजी से जोरहाट में देशराज जीवन राज फर्म के अन्तर्गत हुआ। श्री रामनिवासजी गुलाबराय महादेव फर्म के बंशीधर जी पोद्दार की सुकन्या प्रभादेवी से विवाहे गये हैं। ईश्वरीप्रसादजी का रिश्ता मुन्नालालजी जाजोदिया की सुकन्या विमलादेवी से हुआ है।

श्री गुलराजजी की कन्याओं के विवाह इस रूप से हुये है। रूकमणीबाई तोदी परिवार में बैजनाथजी से विवाही गई थी। गिनियाबाई रामगंज में रामकृष्णजी सराफ से परणी गयी है। उमाबाई मुज्जफरपुर में मुरलीधर जी तुलस्यान से विवाही गई हैं। भगवतीबाई सरदार शहर के चौधरी परिवार में राम निरंजनजी से परणी गई हैं। गायत्रीबाई आसाम की फर्म दासूराम मिरजामल के प्रहलादराय क्याल से परणी गयी हैं। सुशीलाबाई कलकत्ता में शिवरतनजी क्याल से परणी गई । सावित्री और सीताबाई विवाह के पूर्व ही दिवंगत हो गयी थी।

श्री गुलराजजी ने काठ का व्यवसाय शुरू किया था। वे मेन्सफील्ड एंड सन्स में उत्तम लकड़ी की सप्लाई करने लगे। यह फर्म वैज्ञानिक लेबोरेटरीज के लिये फर्नीचर तैयार करता था। भारत में यह अपनी किस्म का बड़ा कारखाना था। पूर्वी भारत में सबसे बड़ा कारखाना था। यह फर्म इंग्लैड के ससैकस निवासी एक अंग्रेज का था। यह फर्म मैनसफील्ड ओइल गैस कम्पनी लिमिटेड के नाम से भी व्यवसाय करता था। रेलवे स्टेशनों पर जलने वाले गैस के हन्डो की गैस यही सप्लाई करता था। सन् 1944 में इस फर्म के मालिक ने भारत से विदा होने के पहले फर्म को और सन् 1948 में दूसरे फर्म को गुलराजजी को उचित मूल्य में बेच दिया था।

जब देश आजाद हुआ तो मारवाड़ी समाज ने छोटे बड़े अनेक उद्योगों को खरीदा। गुलराजजी को भी ये अपने किस्म के पहले उद्योग मिले। गुलराजजी ने जब 16 वर्ष की अवस्था में नौकरी शुरू की थी तो रुपयों की थैली कंधों पर उठाकर लाते थे। आगे चलकर लक्ष्मीदेवी आप पर प्रसन्न हुई। चिमनलालजी के यहां से भी आप जल्दी ही दूर हो गये थे। आपने गजानन्दजी पौद्दार के साथ साझे का काम किया । उस समय आपके सगे भाई रामकुमारजी और जेठमलजी ने अच्छा सहयोग दिया। आपने अपनी फर्म का नाम सत्यनारायण गुलराज रखा। बाद में भगवान की कृपा से आपके 6 पुत्र हुये। इस फर्म ने काठ के अतिरिक्त गल्ले और किराने का भी काम किया। आप बर्मा से टीक का आयात करने लगे।

श्री गुलराजजी को गीता साहित्य से बड़ा प्रेम था। आपके पास अनेकों गीता की टीकायें विद्यमान थीं। श्री ज्वालाप्रसादजी कानोड़िया के नेतृत्व में मारवाड़ी युवकों की जो गुप्त कमेटी बनी थी उसमें प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, मोतीलालजी लाठ, हनुमानप्रसादजी पौद्दार आदि सदस्य थे। आप भी उसके सम्मानीय सदस्य थे। आपने बाल विवाह के विरोध में अपने ही परिवार के लोगों को सहयोग देने से इन्कार कर दिया। श्री रामेश्वरलालजी के पुत्र लक्ष्मीनारायण का विवाह 12 वर्ष की अवस्था में किया गया। जब रतनगढ़ में चैरिटेबल सोसायटी स्थापित हुई तो आप उसके मन्त्री बनाये गये। आप आरम्भ से ही खद्दर प्रेमी रहे और गांधीजी के सिद्धांतों का पालन करते रहे। आप हृदय से उग्र क्रांतिकारी दल के समर्थक रहे। आपने हिन्दी साहित्य से बराबर प्रेम रखा। वे प्रतिदिन गंगास्नान पर जाते थे तथा नित्य व्यायाम और आसन करते थे।

श्री गुलराजजी के जीवन काल में ही श्री प्रहलादजी प्रयोगशाला में प्रयुक्त होने वाले फर्नीचर के विशेषज्ञ हो चुके थे। श्री वासुदेवजी और कृष्णकुमारजी भी पैतृक व्यवसाय में निष्णात हो चुके थे। श्री प्रहलादरायजी ने गनेड़ीवाला वंश के इतिहास के प्रकाशन में बहुत रूचि दिखाई एवं बराबर सहयोग दिया।

श्री वासुदेवजी पारिवारिक कार्यों में बड़ी रूचि लेते हैं। अभी हाल ही में जब गनेड़ी के स्मारकों के नवीनीकरण हेतु कलकत्ता में धन एकत्रित करने की लिये प्रयास शुरू हुये तो वासुदेवजी भी श्री द्वारकाप्रसादजी की दुकान पर अन्य लोगों के साथ अस्वस्थ होते हुये भी एकत्रित हुये। वहां से जब अन्य भाईयों के पास जा रहे थे तो सत्यनारायण पार्क के पास इनको चक्कर आने लगे। थोड़े समय बाद ठीक हुये तो भाईयों ने आग्रह किया कि आप विश्राम करें पर फिर भी आपने साथ नहीं छोड़ा और अंत तक साथ रहे।

श्री वासुदेवजी के चार पुत्र हैं श्री जुगलकिशोर, श्री आनन्दकिशोर, श्री मनोजकुमार और श्री विमलकुमार। श्री जुगलकिशोर दो पुत्र संदीप और सिद्धार्थ के पिता हैं। श्री मनोज कुमार के पुत्र गोरंग और श्री विमलकुमार के पुत्र हर्षवर्धन हैं। श्री प्रहलादरायजी के पुत्र श्री जगमोहन रोहित के पिता हैं। श्री कृष्णकुमारजी के पुत्र राजेन्द्रजी एवं सुरेन्द्रकुमारजी हैं। श्री रामस्वरूपजी के दो पुत्र राजीव एवं रवि तथा श्री रामनिवासजी के शम्मीकुमार और ईश्वरजी के अरूण, अरविन्द और आशीष नामक पुत्र हैं।

श्री केदारबक्सजी का जन्म सन् 1855-56 में हुआ था। आपने लगभग 62 वर्ष की आयु पायी। जिस समय वे कलकत्ता गये उस समय तक उनके चारों पुत्र रामकुमारजी, जेठमलजी, बाबूलालजी और केशरदेवजी हो चुके थे। श्री रामकुमारजी के एक पुत्र पुरूषोत्तमलालजी थे। ये 5 पुत्रों के पिता हुये। इनके पुत्र शंकरलालजी, शिवभगवानजी,

नन्दलालजी, कन्हैयालालजी एवं ओमप्रकाशजी हैं। श्री शंकरलाल जी के पुत्र सुशील कुमार एवं विमल हैं। श्री सुशील के पुत्र का नाम विशाल कुमार है। श्री शिवभगवान के पुत्र रंजन हैं। श्री कन्हैयालाल के रविकुमार एवं श्री ओमप्रकाश के अजय और अमित नामक पुत्र हैं।

श्री जेठमलजी दो पुत्रों बनारसीलालजी एवं रामगोपालजी के पिता थे। श्री बनारसीलालजी के पुत्र सावंरमलजी एवं नारायणप्रसादजी हैं। श्री सावंरमलजी के जगदीशजी एवं श्री नारायण प्रसादजी के दीपक नामक सुपुत्र हैं। श्री रामगोपालजी के बड़े पुत्र श्री बालकिशनजी हैं जिनके राजकुमार एवं विनीत सुपुत्र हैं। श्री रमनलाल दूसरे पुत्र है जिनके पुत्र पुनीत हैं। श्री चन्द्रप्रकाश तीसरे पुत्र हैं जो आदित्य, विक्रम और शैलेश के पिता हैं। श्री रमनलाल सामाजिक कार्यों में पूरी रूचि लेते हैं। परिवार का कार्य उत्साहपूर्वक करते हैं। कलकत्ता में आपका निवास व व्यवसाय है।

श्री बाबूलालजी के श्री बैजनाथ नामक पुत्र हुये। श्री केशरदेवजी के एक पुत्र श्री किशनलाल हैं जिनके संतोषकुमार सुपुत्र हैं। श्री जेठमलजी अपने जमाने के धनाढ्य परिवार में विवाहे गये थे। रतनगढ़ के धानुका बीकानेर में मोटे लाल कपड़े का व्यवसाय करते थे। इससे उन्होंने काफी पैसा कमाया था। जेठमलजी की पत्नी लक्ष्मीदेवी इसी धानुका परिवार की लड़की थी। इनका विवाह 16 वर्ष की अवस्था में सन् 1898 में हुआ था। इनकी पत्नी का देहान्त 66 वर्ष की अवस्था में सन् 1969 में हुआ था। श्री बनारसी लालजी के दो पुत्र हुये श्री सावंरमलजी एवं श्री नारायणप्रसादजी। सांवरमलजी के पुत्र का नाम जगदीश प्रसाद व नारायण प्रसाद के पुत्र का नाम दीपक कुमार है। श्री जेठमलजी ने अपनी धर्मपत्नी के नाम पर लक्ष्मीभवन विवेकानन्द रोड़ पर स्थापित किया था। श्री बनारसीलालजी का विवाह सूरजगढ़ के शाह परिवार में कमलादेवी से हुआ। वे काठ का व्यवसाय करते थे। उनका देहान्त 72 वर्ष की आयु में पौष सुदि 10 को हुआ था।

श्री रामगोपालजी ने आयु कम ही पायी। उनका देहान्त 60 वर्ष की अवस्था में हुआ। आपकी माता इस समय 84 वर्ष की थी। श्री बालकिशनजी का विवाह गंगाराम विमलकुमार फर्म के गंगारामजी की कन्या सीतादेवी से हुआ है। श्री रमनलालजी का विवाह भागलपुर में मोहनलाल भगवती प्रसाद फर्म की सुकन्या पुष्पादेवी से हुआ है। श्री चन्द्रप्रकाशजी का विवाह मक्खनलालजी गोयनका की सुकन्या लिछमीदेवी से हुआ है। कन्या ललिताबाई का विवाह श्री शिवप्रसादजी केड़िया के पुत्र श्री सज्जनकुमार के साथ बांदाघाट में हावड़ा में हुआ है। ये रूई का व्यवसाय करते हैं।

श्री बालकिशनजी कागज का व्यवसाय करते हैं। श्री रमनलालजी और चन्द्रप्रकाशजी कोल्ड फील्ड का सप्लाई का काम करते हैं। इनके ट्रान्सपोर्ट का कॉंट्रेक्ट है। ये दोनो व्यवसाय आप तिरूपति इन्डस्ट्रीज और मोडर्न कोल ट्रांसपोर्ट कम्पनी के द्वारा कर रहे हैं।

संतति बहुल परिवार में कभी कभी कोई विशिष्ठ व्यक्ति उत्पन्न होता है जो पारम्परिक मार्ग का अनुसरण करते हुये भी अपने लिये एक ऐसे कीर्तिशाली पथ को प्रशस्त कर लेता है जिस पर आगे की संतति बिना अभ्यास बढ़ती जाती है। यह विशिष्ठता कुछ पुरुषों तक ही सीमित रहती है। श्री मदनगोपालजी के पुत्र श्री द्वारका प्रसादजी ऐसे ही पुरूष हैं। श्री शिवदयालजी 50 वर्ष तक पिता के बरद हस्त के संरक्षण में रहे। श्री रंगलालजी की मृत्यु के बाद वे कलकत्ता आये। यहीं स्थापित हो गये और सन् 1919 में मृत्यु को प्राप्त हुये। श्री मदनगोपालजी का जन्म पिता की 40 वर्ष की अवस्था के समय हुआ था। पिता की मृत्यु के बाद वे कलकत्ता में अपने व्यवसाय में लग गये और काफी पैसा कमाया।

श्री द्वारकाप्रसादजी इन्हीं मदनगोपालजी के दत्तक आये। इनका 21 वर्ष तक पालनपोषण होता रहा। सन् 1959 में मदनगोपालजी का देहान्त हो गया। उन्होंने पैतृक व्यवसाय को योग्यतापूर्वक सम्हाला। साथ ही साथ समाज सेवा में अग्रगण्य रहकर एक सुनाम कमाया। शिवदयालजी ने 1909-10 में पांचा गली में शिवदयाल मदनगोपाल नाम से मोटे कपड़े का टिक्कन पटटे का व्यवसाय किया। इसके कुछ पूर्व वे चलानी का काम भी करते रहे।

श्री मदनगोपालजी का जन्म बैशाख बदि 3, 1956 को रतनगढ़ में हुआ था। आपका शुभविवाह चूरू के गंगाधर सरावगी की सुकन्या बसन्ती देवी से हुआ था। शिवदयालजी ने इस समय तक एक मकान हंसपोकरिया में खरीद लिया था। श्री मदनगोपालजी 10 साल तक यहीं रहे। सन् 1920-25 में आपने कलाकार स्ट्रीट में एक मकान बनवाया। यह आज भी वहां स्थित है। बीकानेर के पास मउसर में विशाल कूप बनवाया जिसका पानी मीठा निकला। आपने तीन धामों की यात्रा की थी। चित्रकूट, गया, बनारस, आदि भी गये। बेगुसराय में राधाकृष्णजी सिहांनिया से आपकी गहरी मित्रता हो गयी तो आपने उनके 5 वर्षीय शिशु को दत्तक लेने का विचार किया। यह कार्य सन् 1938 में सम्पन्न हुआ।

श्री द्वारकाप्रसादजी दत्तक आये। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा माहेश्वरी विद्यालय में हुई। आपका विवाह न्यूअलीपुर निवासी श्री सीतारामजी पौद्दार की सुकन्या गीतादेवी से 12 जुलाई 1951 में हुआ। इनकी दादीजी का देहान्त सन् 1943 में हो गया। इनकी एक दुकान सदा सुख कटरा में पिता के समय से ही थी। 1959 में 21 अगस्त को श्री मदनगोपालजी की इहलीला पूर्ण हुई। आपकी स्मृति में वृन्दावन में 'श्री सदन नामक' भवन का अतिथि निवास बनाया गया।

श्री द्वारका प्रसादजी के दामोदर, चन्द्र प्रकाश और नरेश नामक पुत्र हैं। श्री दामोदरजी का जन्म सन् 1954 में हुआ था। आपका विवाह कलकत्ता के सत्यनारायणजी झुंझुनूवाला की सुकन्या उर्मिलादेवी से हुआ है । द्वितीय पुत्र श्री चन्द्रकुमारजी का जन्म सन् 1957 में हुआ। आपके पुत्र श्री पल्लव हैं। श्री नरेश का विवाह शंकरलालजी लुण्डिया की सुकन्या शीलादेवी से हुआ।

अकस्मात् श्री नरेशजी का दुखद अन्त 13 मार्च, 1989 को हो गया। इस पर श्री द्वारकाप्रसादजी ने अपनी समधी श्री शंकरलालजी लूण्डिया को समझा-बुझाकर दिवंगत श्री नरेश की पत्नी का पुनर्विवाह श्री सनेहीरामजी भुवालका-रतनगढ़, के पुत्र श्री ओमप्रकाश के साथ 4 जुलाई, 1991 को करवा दिया। वह लड़की अब भी इनके घर आती है तथा पुत्रवधु से बढ़कर पुत्री की तरह का प्रेमपूर्ण व्यवहार पाती है। यह श्री द्वारकाप्रसादजी की सूझ-बूझ, उदारता एवं सामाजिक भावना का सबल उदाहरण है।

श्री रामचरणदासजी के द्वितीय पुत्र श्री भानीदत्त जी थे। ये रतनगढ़ में रहते थे। इनके तीन पुत्र श्री हरचन्द्ररायजी, नोपतरायजी और करनीदानजी हुये। श्री रंगलालजी रतनगढ़ से कलकत्ता जाकर व्यवस्थित हो गये थे। भानीदत्तजी के पौत्र मंगलचन्दजी भी उनके 50 वर्ष बाद कलकत्ता आये। इस समय उनको अपने मामा जुहारमलजी खेमका का पूरा सहयोग मिला। वे 20 वर्ष की आयु में कलकत्ता आ गये थे और विदेशी वस्त्र व्यवसाय में उन्होंने अच्छा पैसा कमाया था।

श्री मंगलचन्दजी का जन्म सन् 1844 में हुआ था। सन् 1910 से 1930 तक कलकत्ता के वस्त्र व्यवसाय में उन्होंने अपना विशिष्ठ स्थान बना लिया। इस व्यवसाय में उन्होंने अच्छा पैसा कमाया। इनके तीन विवाह हुये। पहला विवाह जालान वंश में बसंतीबाई से हुआ पर इनका देहान्त शीघ्र हो गया। आपका दूसरा विवाह मेरठ में प्रेमसुखलाल चौधरी फर्म में प्रेमसुखलालजी की कन्या गौराबाई से हुआ। इनसे एक पुत्र श्री गिरधारी लालजी का जन्म 1913 में हुआ। श्री गौराबाई का असमय में देहान्त हो गया तो उनकी सगी बहन गुलाबबाई से 1922 में तीसरा विवाह हुआ जिनसे सांवलरामजी का जन्म हुआ।

श्री सांवलरामजी के अनुसार पिता की मृत्यु के समय श्री रामदेवजी और श्री चिरंजीलालजी दो छोटे भाईयों के लालन पालन का भार भी था। श्री मंगलचन्द्रजी ने सारे ऋण उतारे। आपने जेसराज चौधरी के यहां वस्त्र का लम्बे समय तक काम किया। इनमें साझीदारी रखी। आगे आपने 178 हरिसन रोड में मंगलचन्द्र गिरधारी लाल नाम से स्वतन्त्र काम किया फिर 1932 में जगन्नाथ सांवल राम के नाम से काम किया।

सन् 1957 में 75 वर्ष की अवस्था में मंगलचन्द्रजी का देहान्त हो गया। इनके पुत्र श्री गिरधारी लालजी का जन्म सन् 1913 में हुआ था। इनका पहला विवाह सन् 1931-32 में भिवानीवालों के धनाढ्य परिवार में मालूरामजी डालमिया की सुकन्या से हुआ था। वे रामानन्दी वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी इस सम्प्रदाय का टीका माथे पर लगाते थे।

श्री गिरधारीलालजी के चार पुत्र हुये नंदलाल, श्यामसुन्दर, ओमप्रकाश एवं कृष्ण कुमार। श्री नन्दलालजी के पुत्र अरूण कुमार एवं राजकुमार हैं। श्री राजकुमार के पुत्र मोहित हैं।

श्री श्यामसुन्दर जी के पुत्र शशि, राकेश और आदित्य हैं। श्री ओमप्रकाश के पुत्रों के नाम विक्रम और कौशल है।

श्री सावंलरामजी का जन्म कलकत्ता में 15 जनवरी 1923 को हुआ। आपका मांगलिक विवाह हरनारायण पन्नालाल रूंगटा के महावीर प्रसादजी की सुकन्या हीरारानी बाई से हुआ। इस माता से सात पुत्रों का जन्म हुआ। प्रथम पुत्र सीताराम का जन्म 7 दिसम्बर 1943 में हुआ। विवाह 1964 में 12 जुलाई को हुआ। यह विवाह मोतीलालजी सराफ की सुकन्या प्रमिलाजी से हुआ। द्वितीय सुपुत्र रामगोविन्दजी का जन्म 30 अप्रैल 1946 में हुआ। इनका विवाह 1969 में माह सुदि 10 को रामप्रतापजी वरासिया की सुकन्या इन्द्रबाई से हुआ। तृतीय पुत्र कैलाशजी का 1951 में 10 दिसम्बर को जन्म हुआ। चतुर्थ पुत्र कमलजी का जन्म 1953 में हुआ। आपका विवाह महादेवजी तुलस्यान की सुकन्या सुशीलाजी से 20 फरवरी 1977 में हुआ। आपके साकेत नामक पुत्र हैं। पांचवे पुत्र विमलजी का जन्म कमलाजी के साथ जुड़वा हुआ था। आपका विवाह शिलोंग के श्री जगन्नाथजी बावरी की सुकन्या मनसाबाई से 6 मार्च 1980 को हुआ। इनके विवेक और ऋषि पुत्र हैं। छठे पुत्र ललित का जन्म 11 जून 1955 को हुआ। इनका विवाह लोसल निवासी राधाकृष्णजी अग्रवाल की सुकन्या किरणबाई से 29 जून 1981 में हुआ । इनके पुत्र आदित्य हैं। सातवें पुत्र श्री माधव हैं। श्री सांवलरामजी शिष्ट और सौम्य स्वभाव के धार्मिक रूचि वाले व्यक्ति हैं।

श्री मंगलचन्दजी के कनिष्ठ भ्राता श्री रामदेवजी के कोई संतान नहीं है। इनसे छोटे श्री चिरंजीलालजी हैं जिनका जन्म 1905 में हुआ था। इनकी शैशावस्था में पिता का देहान्त हो चुका था। चिरंजी लालजी का विवाह सेठ हीरालालजी धानुका की सुकन्या सरस्वती बाई से हुआ। इस सुमाता से 6 पुत्र उत्पन्न हुये। साथ ही दो कन्यायें हुई। ज्येष्ठ पुत्र श्री सत्यनारायण का जन्म 1932 में हुआ। आपका विवाह 7 जुलाई 1951 में गणेशलाल डीडवानिया की सुकन्या सुशीला देवी से हुआ। इनके पुत्र अरूण आनन्द और अरविन्द कुमार हैं। आनन्द के पुत्र अमित हैं। द्वितीय पुत्र परसरामजी का जन्म 1945 में हुआ। आपका विवाह मालीरामजी रूंगटा की सुकन्या उर्मिलाजी से हुआ। इनके पुत्र नवीन और नितेश हैं। तृतीय पुत्र राधेश्यामजी का जन्म सन् 1947 में हुआ। आपका विवाह नथमलजी भरतिया की सुकन्या सुलोचनाजी से हुआ। इनके पुत्रों के नाम मनीश और गौरव हैं। चतुर्थ पुत्र राजकुमारजी का जन्म 1949 में और विवाह चिरंजीलाल खड़कावालाकी सुकन्या मंजूजी से हुआ। इनके पुत्र का नाम आशीष है। पंचम पुत्र विजय कुमारजी का विवाह नाथूराम जी अग्रवाल की सुकन्या पुष्पादेवी से हुआ है। इनके पुत्र सौरभ हैं। छठे पुत्र शिवकुमारजी का विवाह जयरामजीदासजी गुप्ता की सुकन्या अरूण देवी से हुआ। चिरंजीलालजी की बड़ी

सुपुत्री दुर्गा का विवाह रतनलालजी सरावगी के साथ हुआ। दूसरी कन्या राधाबाई का विवाह श्री वासुदेव बागला के साथ हुआ है।

श्री चिरंजीलालजी का स्वर्गवास 72 वर्ष की अवस्था में सन् 1978 में हुआ। आपके सभी पुत्र व्यवसाय में अच्छी प्रकार प्रस्थापित हो चुके हैं।

श्री हरचंदरायजी के दो छोटे भाई नोपतरायजी एवं करनीदानजी थे। श्री नोपतरायजी का विवाह जानकी देवी के साथ हुआ था जो ठेलासर निवासी श्री सूरजमल जालान की सुकन्या थीं। इनकी मृत्यु 1914 के आसपास हुई थी। इनके पुत्र श्री नागरमलजी, श्री किशनलालजी, श्री जयचन्द्रजी, श्री मुरलीधरजी और श्री फूलचन्द्रजी हुये। इन पाँचों पुत्रों का वंश क्रम आगे नहीं चला।

श्री भानीदत्तजी के तीसरे पुत्र श्री करनीदानजी थे। वे टाटानगर में निवास करते थे। इनके चार पुत्र गौरीशंकरजी, मनोहरलालजी, ताराचन्दजी और गनेशनारायणजी हैं।

श्री गौरीशंकरजी के 5 पुत्र हुये। इनके नाम जगदीशजी, नन्दलालजी, रतनलालजी, पवनकुमारजी और राजकुमारजी हैं। श्री जगदीश के पुत्र गौरव और सौरभ हैं। श्री रतनलाल के पुत्र महेश हैं। श्री पवन कुमारजी के सोन्टू नाम के पुत्र हैं। श्री मनोहरलाल के पुत्र श्री ओमप्रकाश एवं संतोष कुमार हैं। श्री ओमप्रकाश के चार पुत्र लड्डूगोपाल, मधूसुदन, मोहन, एवं नटवर हैं। श्री संतोषकुमार के पुत्र अमर और मुन्ना हैं। श्री मनोहरलालजी का निधन जून 1990 में हुआ। श्री ताराचन्दजी के तीन पुत्र निरंजन, अरूण और रमेश कुमार हैं। श्री निरंजनजी के पुत्र अविनाश और विकास हैं। अरूणजी भी एक पुत्र मुन्ना के पिता है। श्री गनेशनारायणजी तीन पुत्रों सुरेशकुमार, विनोदकुमार और विजयकुमार के पिता हैं। श्री सुरेशकुमार के पुत्र सौरभ हैं। ये परिवार टाटा नगर में रहते हैं।

श्री जगन्नाथरायजी अपने पिता की पांचवी संतान थे। उनके तेजस्वी स्वरूप के बारे में पूर्व में लिखा जा चुका है। इनके 6 पुत्र हुये जिनके नाम रामजसरायजी, जोरावरमलजी, हरीबक्सजी, बालमुकन्दजी, हरिप्रसादजी, और हरमुखरायजी थे। इनके बड़े पुत्र रामजसरायजी तीन पुत्रों के पिता हुये। इनके नाम रामरिखदासजी, बालाबक्सजी और जमनाधरजी थे। श्री रामरिखदासजी का परिवार आगे नहीं बढ़ा। श्री बालाबक्सजी तीन पुत्रों के पिता हुये। ये थे गौरीशंकरजी, झाबरमलजी एवं चिरंजीलालजी। श्री गौरीशंकरजी के बड़े पुत्र सत्यनारायणजी थे जिनको पुत्र रत्न सुरेश, रमेश और गनेश प्राप्त हुये। दूसरे पुत्र श्री महावीरप्रसादजी संजय और अजय के पिता हैं। तीसरे पुत्र श्री सांवरमलजी के पुत्र राजेश हैं। चौथे पुत्र श्री कैलाशचन्द्रजी के पुत्रों के नाम ललित कुमार एवं मुन्ना हैं।

श्री झाबरमल निस्संतान रहे। श्री चिरंजीलालजी के पुत्र नागरमलजी, आत्मारामजी एवं काशीप्रसादजी हैं। श्री नागरमलजी के पुत्र अरूणकुमार और अशोक कुमार हैं। श्री आत्माराम

के पुत्र सुनील एवं अनिल हैं। श्री काशीप्रसाद, कृष्ण और विनय के पिता हैं। श्री नागरमलजी व काशीप्रसादजी कलकत्ता व आत्मारामजी जयपुर में रहते हैं। श्री रामजसरायजी के तीसरे पुत्र श्री जमनाधरजी थे। ये चार पुत्रों के पिता थे। श्री निवास जी, दामोदरदासजी, पुरूषोत्तमलालजी व गुलजारीलालजी। श्री निवासजी का वंश आगे नहीं चला। इनकी मृत्यु संवत् 1940 में हुई। श्री दामोदरजी के पुत्र श्री मक्खनलाल है। श्री मक्खनलालजी के पुत्र कमल कुमार के दो पुत्र कुनाल एवं रोहन हैं। आप कानपुर में रहकर अपना व्यवसाय करते हैं। श्री दामोदरजी की मृत्यु संवत् 1934 में हुई। श्री पुरुषोत्तमलालजी निसन्तान रहे। श्री गुलाजारीलाल के पुत्र ओमप्रकाश जी, राजकुमारजी एवं शिवकुमारजी हैं। श्री जमुनाधरजी की मृत्यु मुकुन्दगढ़ में संवत् 1956 में हुई थी। श्री बालावक्स एवं श्री जमनाधर मोंटगूमरी में जवाहरात का धंधा करते थे। श्री ओमप्रकाशजी के पुत्र विजय एवं श्री राजकुमार के पुत्र सुधीर हैं।

श्री रामजसरायजी के छोटे भाई जोरावरमलजी थे। इनके एक पुत्र श्री रामेश्वरजी थे। जोरावरमलजी की मृत्यु सन् 1877 के आसपास हुई। इनकी धर्मपत्नी का नाम रिखीदेवी था। ये रामगढ़ के महादयालजी पौद्दार की पुत्री थी। श्री रामेश्वरजी का देहान्त कलकत्ता से आते हुये दिल्ली स्टेशन पर सन् 1915 में हुआ। आप चार पुत्रों के पिता थे। इनके पुत्र लक्ष्मीदत्तजी, बद्रीदासजी, ब्रह्मदत्तजी और श्रीनिवासजी थे।

श्री लक्ष्मीदत्तजी के एक पुत्र श्री बाबूलालजी के पुत्र श्री बजरंगलाल हुये जिनके प्रदीप और राजेन्द्र पुत्र उत्पन्न हुये। श्री प्रदीप के पुत्र साकेत है। श्री बजरंगलालजी साड़ियों का कारोबार करते हैं व सामाजिक कार्यों में रूची रखते हैं। श्री बद्रीदासजी के पुत्र श्री सत्यनारायण, पुरूषोत्तम और मदनलाल हैं। श्री पुरूषोत्तमजी सुशील, मोहन और पवन के पिता हैं। श्री सुशील के पुत्र बब्लू एवं श्री मोहन के पुत्र नारायण हैं। श्री मदनजी के पुत्र किशनलाल एवं विश्वनाथ हैं। श्री किशनलाल के पुत्र सुनील कुमार एवं शरदकुमार हैं। श्री विश्वनाथजी के पुत्र महेशकुमार, रमेशकुमार, मुकेशकुमार और मनीषकुमार है। श्री महेशजी विक्की के पिता है। श्री ओमप्रकाश के ऋषि कुमार, राजेश कुमार पुत्र है। श्री नन्दकिशोर के अजय कुमार पुत्र हैं। ये ब्रजराज नगर में रहते हैं।

श्री ब्रह्मदत्तजी के एक मात्र पुत्र श्री श्यामसुन्दर हुये। इनके तीन पुत्र राजेन्द्र कुमार, विनोद कुमार और सुरेश कुमार हैं। श्री राजेन्द्र के पुत्र विकास एवं विनोदजी के पुत्र रिक्की है। श्रीनिवासजी के पुत्र शंकरलाल हुये जिनके पवन, ललित और अशोक नामक पुत्र हैं। दूसरे पुत्र श्री हरिकृष्ण हैं जिनके पुत्र संजय और गोपाल हैं। ये कलकत्ता में रहकर कपड़े का व्यवसाय करते हैं।

श्री हरिबक्सजी सेठ जगन्नाथजी के तीसरे पुत्र थे। जब इनके संतान नहीं हुई तो

इन्होंने जानकीलालजी को गोद लिया। पिता पुत्र दोनों ने पूरी सेठाई का जीवन जीया। श्री हरिवक्सजी सन् 1903 में प्राय: 60 वर्ष आयु में हरिद्वार हो आये थे। वहां से बद्रीनाथ धाम भी गये। इसके कुछ दिनों बाद आपका निधन हो गया। श्री जानकी लालजी न्यायप्रिय और निडर प्रकृति के पुरूष थे।

श्री जानकी लालजी के पुत्र श्री रामधन थे। इनके बड़े पुत्र किशोरीलाल जी हुये। इनके दो पुत्र श्री विमलकुमारजी एवं श्री निर्मलकुमारजी हैं। श्री निर्मलजी के पुत्र रवीन्द्रजी हैं। श्री विमल कुमार अच्छे पढ़े लिखे सुसंस्कृत व्यक्तित्व के धनी हैं जो आप पूरी तरह अपने व्यवसाय में दत्तचित हैं। श्री सत्यनारायणजी के पुत्र श्री सुरेश कुमार हैं जो श्री सागर के पिता हैं। श्री रामगोपालजी के पुत्र श्री प्रदीपकुमार हैं। सभी बन्धु अच्छा व्यवसाय कर रहे हैं।

श्री किशोरीलालजी का जन्म सन् 1919 में मुकुन्दगढ़ में हुआ था। इस समय तक आपके पिता कलकत्ता में व्यवसाय कर रहे थे। इनकी शिक्षा कलकत्ता में हुई। 1930-32 में वे बीमारी से ग्रस्त हुये। इस समय तक वे गेहू, पाट, हैसियन और शेयरों का धंधा करते थे। आपके पिता सन् 1944 में मरे। इन्होंने नोपानी बिड़ला भुवालका और कानोड़िया व्यवसायियो से अच्छे संपर्क बनाये। वे एच.डी. कार्टराइट एण्ड कम्पनी में भी अधिकारी बन गये थे। यह कम्पनी हैसियन बोरे की दलाली की रजिस्टर्ड ब्रोकर थी। उस समय जूट मिलों का संरक्षण करने वाले जितने विदेशी एजेन्सी संस्थान थे इनमें वही व्यक्ति काल दे सकता था जब वह किसी रजिस्टर्ड ब्रोकर द्वारा अधिकृत व्यक्ति हो। श्री किशोरीलालजी इस कम्पनी में 300 रुपये मासिक वेतन में नियुक्त थे। उस समय आपकी गद्दी पर 300-400 रुपये पाने वाले मुनीम थे। आपके परिवार जनों ने इस कम्पनी को लेकर आपका स्वप्न पूरा किया। उन्होंने अपने हाथों चार कन्याओं का तथा दो पुत्रों का विवाह किया। आप मुकुन्दगढ़ के कानोड़िया परिवार के दोहित्र थे। आपने अपनी 5 बहनों के रिश्ते किये। आपने अपने जीवन काल में अपने पुत्रों की शिक्षा दीक्षा की अच्छी व्यवस्था की थी। इस प्रकार गुरू गंभीर उत्तरदायित्वों का वहन करते हुये वे 33 वर्ष की अवस्था में इस संसार से विदा हुये।

श्री विमलकुमारजी का जन्म 1937 में हुआ। विवाह 1957 में चूड़ी निवासी श्री बनारसी लालजी केजड़ीवाला की सुकन्या सत्यदेवीजी से हुआ। श्री निर्मलकुमारजी का जन्म 1942 में मुकुन्दगढ़ में हुआ। आगे चलकर ये अच्छे व्यवसायी हुये। इन्होंने सामाजिक कार्यों में बराबर रूचि ली। इनका विवाह कलकत्ता में श्री गौरीशंकरजी की सुकन्या रेणुजी से हुआ है। विभाजन के पहले आप दोनों भाइयों ने कछार में दिलसुखराय नाम का चाय बगान 1961 में और भूवंदर का दूसरा चायबगान सन् 1963 में खरीद लिया। सेठ जुगलदासजी

के परिवार में पीढ़ियों से रूई, कपास, अफीम, लेन देन, गल्ला, अनाज, शेयर, फाटका और लकड़ी का व्यवसाय होता रहा है, अब चाय का काम भी शुरू हुआ। सन् 1972 में हाईडैंसिटी बूबन बेग्ज़ का कारखाना कानपुर में प्रस्थापित किया। इनके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों में इन्होंने और भी उद्योग खड़े किये। दोनो भाई व्यवसायिक उन्नति में बराबर लगे हुये हैं।

श्री रामधनजी के दूसरे सुपुत्र श्री सत्यनारायणजी हुये जिनके पुत्र सुरेश कुमारजी हैं। श्री सत्यनारायण सुयोग्य व्यवसायी एवं हनुमानजी में भक्ति रखने वाले हैं। श्री सत्यनारायणजी के छोटे भाई श्री रामगोपालजी हैं जिनके पुत्र प्रदीपकुमार हैं। आज गनेड़ीवाला परिवार कलकत्ता, हैदराबाद, अमरावती, सिरसा, रतनगढ़, लक्ष्मणगढ़, इन्दौर, अजमेर, जावरा, फतेहपुर, मुकुन्दगढ़ आदि देश के विभिन भागों में बसे हुये हैं। इनमें मुकुन्दगढ़ के गनेड़ीवालों की एक अलग पहिचान है। प्रायः यह मान लिया जाता है कि अगर कोई गनेड़ीवाला परिवार है तो वह धनाढ्य परिवार है। गनेड़ीवालों ने देश के विविध प्रकार के व्यापार अपनाये और धनसम्पति अर्जित की।

श्री रामगोपालजी का जन्म 20 अगस्त 1929 को हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा मुकुन्दगढ़ में ही हुई। आपका विवाह चूड़ीवालान के रामेश्वर दासजी चूड़ीवाला की सुकन्या शान्ति देवी से 13 दिसम्बर 1946 में हुआ। इस चूड़ीवाला वंश की गद्दी काली गोदाम के रामेश्वरदास चूड़ीवाला के नाम से थी। 1944 में पिता की मृत्यु पर 15 वर्ष की छोटी अवस्था में वे व्यवसाय में लग गये। आपके बड़े भाई श्री किशोरीलालजी इसके बाद गुजर गये। 1952 से 1969 तक तीनों भाईयों का परिवार संयुक्त रहा। परिवार विभाजन के उपरान्त वे शेयर, पाट, बोरा, हैसियन, चाय और वस्त्र का व्यापार करने लगे।

आप धार्मिक रूचि के वैष्णव हैं। आपने छोटे धोड़ीवारे में रेलवे स्टेशन के पास एक साधु महाराज के आदेश के अनुसार शिवमन्दिर बनवाया है। मुकुन्दगढ़ की ब्राह्मण बगीची में कल द्वारा पेय पानी की व्यवस्था करवाई। यहाँ एक प्याऊ बनाई एवं बड़े धोड़ीवारा में एक कूंवा बनवाया। आपने भुवन्दर टी स्टेट में शिव और काली के मन्दिर बनवाये है। मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी में श्री किशोरीलालजी के नाम पर एक फ्लैट बनवाया है और एक कमरा हरिद्वार में निर्मित करवाया है। मुकुन्दगढ़ में पींजरा पोल को जमीन दी है तथा मुकुन्दगढ़ के मंदिर का जीर्णोद्वार करवाया है। सीकर के सत्संग भवन के आप ट्रस्टी हैं। इसमें आपने 15 हजार का दान दिया है। मुकुन्दगढ़ के विशाल कूँऐं का जीर्णोद्वार आप द्वारा कराया गया है । देव प्रयाग में एक प्याउ आपने बनवायी है ।

आपकी धर्मपत्नी ने सीकर में पर्वत पर एक जलकुण्ड का निर्माण कराया। साथ ही 2 जल कुण्डों का और निर्माण करवाया। लक्ष्मणगढ़ सत्संग भवन में एक कमरा बनवाकर

दिया। आपने गिरीड़ीह के शान्ति भवन में एक संगमरमर का मन्दिर का निर्माण करवाया है। यह यहां का सबसे अधिक दर्शनीय मंदिर है।

श्री रामगोपालजी ने गनेड़ीवाला इतिहास के लेखन और प्रकाशन कार्य के प्रति गहरी इच्छा रखी है। इन्होंने सामग्री संग्रह आदि में अच्छी सहायता पहुँचाई एवं कार्य को आगे बढ़ाया। आपकी यह सदाशा रही कि इतिहास लेखन का यह कार्य शीघ्र पूरा किया जावे।

आपने 1972 में विदेश यात्रा की तब यूरोप, अमेरिका, कनाडा, स्विट्जरलैण्ड अपनी धर्मपत्नी के साथ गये। 1973 में फिर विदेश यात्रा पर गये। 1976 में अमेरिका, जापान और जर्मनी गये।

ये कलकत्ता में पाटहैसियन बोरों का व्यापार करते हैं। आपकी कोठी हैंगर फोर्ड स्ट्रीट में है। यह कोठी एक यहूदी महिला मिसेज लिली एनाइज की थी जिसे उन्होंने 1959 में खरीद लिया। वे सन् 1960 में वहीं रहने लगे। हैसियन के साथ साथ उन्होंने चाय, शैलक और स्टोक एक्सचेंज के व्यवसाय को भी अपनाया और अच्छा पैसा कमाया। आप कलकत्ता में मारवाड़ी समाज के गणमान्य पुरूष माने जाते हैं। श्री रामगोपालजी के पुत्र श्री प्रदीपजी का जन्म 25 नवम्बर 1955 में हुआ। आपके 2 विवाह हुए। प्रथम विवाह प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रामनाथजी गोयनका की पौत्री एवं स्वर्गीय भगवानदासजी की पुत्री रीतूजी से 26 जनवरी 1976 को हुआ। विवाह के बाद श्री प्रदीपजी इण्डियन एक्सप्रेस के हैड ऑफिस में महत्त्वपूर्ण पद पर नियुक्त हुये। इस विवाह के बाद विश्व की सबसे बड़ी जूट मिल नेशनल जूट कम्पनी द्वारा जो संचालित हो रही है उसमे प्रशिक्षण के साथ साथ प्रबन्ध व्यवस्था का भार उठाने लगे। आप अपने पैतृक व्यवसाय की जूट मिल की देख रेख भी करते रहे। प्रथम विवाह संबन्ध कतिमय कारणों से विच्छेद होने पर अपने दूसरा विवाह अतिजातिय रेणूजी से किया।

आपका स्केटिंग स्पोर्ट्स् में देश में बड़ा नाम है। स्पेन में रोलर स्केटिंग की पेयरटीम में आपको विश्वभर के प्रतियोगियों में 12 वां स्थान मिला था। भारत पाकिस्तान युद्ध के समय अपने प्रयास से संचित धनराशि तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लालबहादुरजी शास्त्री को स्वंय राजभवन में जाकर भेंट की थी। गनेड़ीवाला परिवार में श्री प्रदीप बड़े होनहार युवक हैं जिनसे इस परिवार को बड़ी आशा है। यह परिवार सार्वजनिक कार्य में बड़ी रूचि लेता है।

श्री जगन्नाथजी के बालमुकुंदजी चौथे पुत्र थे। बालमुकुन्दजी के सम्बन्ध में विशेष विवरण प्राप्त नहीं हो सके। हरिद्वार की बही से ज्ञात होता है कि इनके फूल सन् 1895 (वि. 1952) में हरिद्वार पहुचें थे। इनकी मृत्यु इसी समय के आसपास मानी जा सकती

है। इनके तीन पुत्र श्री गनपतराय, श्री पन्नालाल एवं श्री मन्नालालजी थे। श्री गनपतरायजी का वंशक्रम आगे नहीं चला। श्री पन्नालालजी के एक पुत्र मोतीलालजी थे। श्री मन्नालालजी के पुत्र रामदत्तजी थे जिनको एक पुत्र श्री वसंतकुमार की प्राप्ति हुई। आपके चार पुत्र श्री ताराचंद, श्री रामगोपाल, सुशील कुमार एवं श्री पवन कुमार हैं। श्री ताराचन्दजी के अशोक एवं श्री पवनकुमार के पुत्र मिक्की हैं। श्री रामगोपालजी के गोविन्द, अनिल एवं सुनील नामक पुत्र हैं। श्री अशोक के पुत्र शंकर हैं।

श्री मोतीलाल जी के पुत्र श्री हीरालालजी हैं। इनके तीन पुत्र श्यामलाल, महेश और विष्णु हैं। श्री श्यामलाल के पुत्र श्री रमाशंकर और दयाशंकर हैं।

श्री जगन्नाथजी के 5वें पुत्र श्री हरिप्रसादजी हुये। इनका जन्म चूड़ी में अनुमानतः सन् 1848 में हुआ। आपने प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय रूप से पायी। इन्दौर, जावरा, मन्दसौर, नीमच आदि का अफीम, रूई का व्यवसाय विशेष आकर्षण की वस्तु न रह गया था। श्री हरीप्रसादजी ने 1875 के आसपास कलकत्ता पहुंचकर हरिबक्स हरिप्रसाद के नाम से विदेशी वस्त्र का काम स्थापित किया। आप कलकत्ता में अधिक नहीं रहे। योग्य मुनीम ही यहां कार्य करते रहे। वे जीवन पर्यन्त विविध स्थानों में व्यापार करते रहे। 1895 के आसपास मात्र 47 वर्ष की अवस्था में आपका देहान्त हो गया। मृत्यु से पूर्व उन्होंने अच्छे व्यवसाय की स्थापना कर दी थी।

श्री हरिप्रसादजी के एक पुत्र श्री भगवानदासजी हुये। इनका जन्म मुकुन्दगढ़ में 1889 में हुआ था। इस समय हरिप्रसादजी की अवस्था प्रायः 40 वर्ष की थी । इनका विवाह रामगढ़ के रईस पौद्दार घराने के वंशीधरजी पौद्दार की सुकन्या मणीबाई से हुआ था। श्री हरिप्रसादजी के चार कन्यायें थी। जेठी कन्या सरस्वती का विवाह फतेहपुर के देवड़ा परिवार में हुआ। दूसरी कन्या रामीबाई का विवाह ठेलासर के नन्दराम डूंगरसीदास फर्म के रामकुमारजी केड़िया के साथ हुआ। आपकी तृतीय पुत्री चांदीबाई का विवाह महणसर के प्रसिद्ध पौद्दार परिवार में बजरंगलालजी पौद्दार के साथ हुआ। आपकी चतुर्थ कन्या छापीबाई का विवाह रामगढ़ के राधाकिशनजी कुरड़ीकूट के साथ हुआ।

श्री भगवानदासजी ने 70 वर्ष की दीर्घ आयु पायी। प्रारम्भ में वे मुकुन्दगढ़ में रहे। इनके दूसरे पुत्र नन्दलालजी का जन्म 1914 में हुआ। आपने 25 वर्ष की अवस्था में कलकत्ता की यात्रा की जहां इस समय तेजी का दौर चल रहा था। हरिवक्स हरिप्रसाद गद्दी कोटन स्ट्रीट में थी। देश में जब विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जाने लगी तो 1930 से कुछ पहले ये फर्म बन्द कर देनी पड़ी। इसके बाद उन्होंने पारख कोठी में कपड़े की दुकान खोल ली। इसे छोड़कर आप फाटके का काम करने लगे जिसमें बराबर उन्नति करते गये।

श्री भगवानदासजी के तीन पुत्र श्री सीतारामजी, नन्दलालजी एवं विश्वनाथजी हुये। श्री नन्दलालजी के पुत्र ललित कुमार एवं श्री विश्वनाथ जी के पुत्र अशोक कुमार हैं। श्री अशोक के अभिषेक हैं। श्री भगवानदासजी की पहली कन्या बनारसी बाई का विवाह कलकत्ता में श्री जालूरामजी के पुत्र भोगीलालजी केजड़ीवाल के साथ हुआ। दूसरी कन्या गिनिया बाई का विवाह गाजीपुर में भोलानाथजी खेतान के साथ हुआ। चौथी कन्या लक्ष्मीबाई का विवाह देवी प्रसादजी मोदी पिलानी वासी के पुत्र औंकारमलजी मोदी के साथ हुआ। पांचवी कन्या शान्ति बाई का विवाह कलकत्ता में रानीगंज के केजड़ीवाला परिवार में बुदराम बींजराम फर्म के हरिप्रसादजी के साथ हुआ।

श्री भगवानदासजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री सीतारामजी का जन्म 1908 में हुआ। आपका विवाह चूड़ी अजीतगढ़ के श्री विशेशरलालजी चौधरी की सुकन्या बादामी बाई से हुआ। इस पत्नी का देहान्त 4 अगस्त 1970 को हुआ। इनके एक कन्या सावित्री हुई जिसका विवाह देवघर के केजड़ीवाल परिवार में प्रद्युम्न कुमारजी के साथ हुआ। द्वितीय पुत्र नन्दलालजी का जन्म 6 जनवरी 1914 को हुआ। आपका विवाह कलकत्ता में झुंझुनूवाला निवासी टेकड़ीवाल की सुकन्या रतनीदेवी से हुआ। तृतीय पुत्र श्री विश्वनाथजी का जन्म 1925 में हुआ। इनका विवाह कलकत्ता में लादूरामजी बूबना की सुकन्या ताराबाई के साथ हुआ। श्रीनन्दलालजी के सुपुत्र ललित कुमार और श्री विश्वनाथजी के सुपुत्र अशोक कुमारजी हैं।

श्री भगवानदासजी ने 70 वर्ष की आयु पायी। आपका स्वर्गवास 16 जुलाई 1959 को हुआ। मणीबाई ने लगभग 85 वर्ष की आयु पाई और 18 मार्च 1977 को दिवंगत हुई।

श्री नन्दलालजी को मुकुन्दगढ़ के गनेड़ीवाला वंश की गाथा का अच्छा परिज्ञान है। आपने प्रारम्भ में काठगोला का काम किया फिर सप्लाई का काम हाथ में लिया। आपने एक इंजीनियरिंग फर्म स्थापित की। सन् 1945 से 1951 तक भारत चेम्बर्स के सदस्य रहे। आप मारवाड़ी सम्मेलन की कलकत्ता शाखा के सेक्रेटरी रहे चुके हैं। पू. बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन के और मारवाड़ी सम्मेलन की सार्वदेशीय संस्था दोनों की कार्य समिति में सदस्य रह चुके हैं।

आपके पुत्र श्री ललित कुमारजी का विवाह जगदीशजी तुलस्यान की सुकन्या परमिलाजी से हुआ है। आपकी एकमात्र कन्या विमला का विवाह श्री पन्नालाल लोटिया के पुत्र श्री राधेश्याम के साथ हुआ है।

श्री विश्वनाथजी के एक पुत्र और एक पुत्री हैं। श्री अशोकजी का विवाह हो चुका

है। सुकन्या उर्मिला का विवाह श्री हरिरामजी सरावगी के पुत्र चांदप्रकाश के साथ हुआ है।

श्री जगन्नाथजी के छठे पुत्र हरमुखरायजी थे। इनके पुत्र श्री हरिरामजी हुये। इन्हें तीन पुत्र रत्न प्राप्त हुये फूलचन्द्रजी, दुर्गादत्तजी और बनवारीलालजी। श्री फूलचन्द्रजी सात पुत्रों के पिता हुये। इनके पुत्र लालचन्दजी, रामअवतारजी, सज्जनकुमारजी, रामकरणजी, विनोदकुमारजी, किशनलालजी एवं संतोषकुमारजी हुये। श्री रामअवतार के पुत्र मनीष और विनीत हैं। श्री सज्जनकुमार के पुत्रों के नाम पंकज और नीरज हैं । श्री रामकरण जी के पुत्र राजीवकुमार हैं। श्री किशनलाल के पुत्र पप्पू हैं।

श्री हरीरामजी के दूसरे पुत्र दुर्गादत्तजी हैं। इनके बड़े पुत्र श्री प्रहलादराय दो पुत्रों विपिन और पप्पू के पिता हैं। अन्य पुत्र पवनकुमार, विजयकुमार, पुरूषोत्तम दास और नरेशकुमार हैं। श्री पवन कुमार के पुत्र पप्पू हैं । श्री बनवारीलालजी के एक पुत्र बाबूलाल है।



गनेड़ीवालों की हवेली के अन्दर की कलाकृति

षष्टादश अध्याय

श्री तोलारामजी की संतति वल्लरी

श्री तोलारामजी के दो पुत्र हुये नन्दरामजी और श्योकिशनजी। दूसरे पुत्र की अकाल मृत्यु सन् 1815 में हो गई । इनके फूल हरिद्वार भेजे गये। मृत्यु के समय ये प्रायः 25 साल के युवक थे। इस तरूण पुत्र की मृत्यु का गहरा आघात श्री तोलारामजी को सहना पड़ा जिसके कारण वे चिन्ताग्रस्त रहने लगे। श्री श्योकिशन के मृत्यु तक कोई संतान नहीं थी। प्रथम पुत्र नन्दरामजी का जन्म 1775-80 की अवधि में हुआ। इन्होंने 40-45 साल की आयु पाई। मृत्यु के समय इनके एक पुत्र श्री हरदयालजी थे। सन् 1843 में श्री हरदयालजी श्री बद्रीनारायण धाम की यात्रा पर गये थे। इनके साथ इस यात्रा में इनकी माता भी साथ थी।

श्री हरदयालजी के तीन पुत्र उत्पन्न हुये गौरीदत्तजी, बालमुकुन्दजी एवं विशेसरलालजी। श्री गौरीदत्तजी 14-15 की किशोरावस्था में फतेहपुर से संवत् 1911 में रानीगंज गये और वहां व्यवस्थित हो गये। उस समय कमाने के लिये दिसावर जाने वाले महाजन लोग रानीगंज में अधिक जाते थे। ऐसा कहा जाता है कि जो भी महाजन लोग रानीगंज पहुँच जाते थे उनपर भाग्यलक्ष्मी प्रसन्न हो जाती थीं। सन् 1854 में रानीगंज से लोग व्यापार व्यवसाय हेतु कलकत्ता की ओर अग्रसर होने लगे।

सन् 1850 से पूर्व कलकत्ता में जाने वाले मारवाड़ी व्यवसायियों की संख्या अधिक नहीं थी पर रानीगंज में इनकी संख्या हजार के अंक को छू रही थी। उस समय रानीगंज में तीन परिवार व्यवसायिओं में अग्रगण्य माने गये थे। सीकर निवासी मनीराम शिवप्रसाद बजाज, मंगलचंद बलदेवदास झुंझुनूवाला और फतेहपुर निवासी गौरीदत्त छोटेलाल गनेड़ीवाला।

गौरीदत्त छोटे लाल फर्म की स्थापना सन् 1849 में की गयी। इस फर्म के संस्थापक श्री गौरीदत्तजी का जन्म सन् 1830 के आसपास हुआ था। गांव की प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर वे व्यवसाय के प्रति दत्तचित होकर रानीगंज चले गये और अपनी व्यवसायिक सूझबूझ से अपना कारोबार जमा लिया।

श्री गौरीदत्तजी ने रानीगंज में अपना कार्य नंदराम हरदयाल फर्म के नाम से शुरू किया था। इस फर्म की शाखायें बाकुंडा, उमाजपुर, आसनसोल, बर्दवान, विष्णुपुर आदि में थी। वे अपने को मारवाड़ी लिखते थे। बंगाली समाज से इनका अच्छा भाई चारा बन गया था जिसका लाभ इनके वंशजों को मिला। बंगालियों में ये गौरूबाबू के नाम से जाने जाते थे। इनकी लोकप्रियता उस समय सामने आयी जब इनकी पत्नी के देहावसान पर सारा शहर दाह संस्कार में शामिल हुआ।

आगे चलकर मूल फर्म का विभाजन संवत् 1959 में हो गया। इन विभाजित फर्मों के नाम गौरीदत्त बैजनाथ, गौरीदत्त केदारनाथ, गौरीदत्त छोटेलाल और गौरीदत्त सागरमल थे।

श्री गौरीदत्तजी का विवाह फतेहपुर में चमड़िया परिवार में हुआ था। इनकी एक कन्या हाथरस में हरनंदराय फूलचन्द बागला के यहां विवाही गई थी। दूसरी कन्या कानपुर में गंगाधर बैजनाथ के यहां परणी गयी। तीसरी कन्या लक्खी सराय में चुन्नीलाल चण्डीप्रसाद बांगला के यहां विवाही गयी।

सन् 1899 में प्रायः 70 साल की अवस्था में ये हरिद्वार और बद्रीनाथ धाम गये थे। इस यात्रा में इनकी पत्नी चांदी देवी भी इनके साथ थी। इसके पहले गौरीदत्तजी ने दादी जयकोरीजी के साथ कुरूक्षेत्र का स्नान किया था।

श्री गौरीदत्तजी चार पुत्रों केदारनाथजी, छोटेलालजी, सागरमलजी एवं बैजनाथजी के पिता हुये। श्री केदारनाथजी आठ पुत्रों के पिता हैं जिनके नाम बाबूलालजी, बनवारीलालजी, प्रहलादरायजी, बंजरंग लालजी, रतनलालजी, रामचन्द्रजी, गीगराजजी, एवं लादूरामजी थे। श्री केदारनाथजी की प्रथम पत्नी 5 पुत्रों को जन्म देने के बाद स्वर्गवासिनी हो गयी थीं। इस पर इन्होंने दूसरा विवाह कर लिया था। जब इनके पुत्रों ने युवावस्था में पदार्पण किया उस समय विश्वयुद्ध के कारण सर्वत्र धन कमाने के असीम अवसर विद्यमान थे। आगे चलकर युद्ध की समाप्ति पर सस्ती का दौर दौरा शुरू हुआ। ऐसी अवस्था में अन्य व्यवसायियों के साथ सेठ केदारनाथजी की संतानों को भी फिकाई का दौर देखना पड़ा। श्री बाबूलालजी के पुत्र श्री प्रयाग नारायणजी तीन पुत्रों श्री किरनकुमार, अरून कुमार एवं प्रकाश कुमार के पिता हैं। श्री किरन कुमार के पुत्र चिन्टू हैं। श्री बनवारी लाल के पुत्र गयाप्रसाद और रामगोविन्द हैं। श्री गयाप्रसाद निसंतान रहे। श्री रामगोविन्द के दो पुत्र

रामअवतारजी एवं कृष्ण कुमारजी हुये। ये धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। इन्होंने अयोध्या के जानकी महल की अच्छी देखभाल की। इनके सारे गुण श्री रामावतार में समाहित होगये। ये भी जानकी महल के कार्य को सुचारू रूप से चलाते हैं। पारिवारिक कार्यों एवं सामाजिक कार्यों में बड़ी रूचि लेते हैं। गनेड़ी में जब प्राण-प्रतिष्ठा समारोह हुआ उसमें आप सपरिवार कार से कलकत्ता से आये और यजमान का पद ग्रहण किया। श्री रामअवतार के पुत्र नारायणप्रसादजी एवं श्री कृष्णकुमार के पुत्र विष्णु प्रसाद हैं। ये परिवार कलकत्ता में है।

तीसरे पुत्र प्रहलादरायजी थे जिनके पुत्र केसरदेवजी, परमेश्वरलालजी एवं सूरजभानजी थे। श्री केसरदेवजी चार पुत्रों के यशस्वी पिता थे जिनके नाम दीनानाथ, ओमप्रकाश, जयप्रकाश और विमलकुमार हैं। श्री दीनानाथ के तीन पुत्र सुशील सुनील, एवं अनिल हैं। श्री ओमप्रकाश के दो पुत्र संजीव एवं राजीव हैं। श्री जयप्रकाश के पुत्र का नाम समीर एवं श्री विमल कुमार के पुत्रों के नाम अमित एवं सौरभ हैं। श्री परमेश्वर लाल निसंतान हैं। श्री ओमप्रकाश कुशल व्यापारी हैं तथा सामाजिक कार्यों में रूचि रखते हैं।

श्री सूरजभान जी के तीन पुत्र राजकुमार, सुनीलकुमार, एवं सुरेश कुमार हैं। यह परिवार रानीगंज में निवास करता है। श्री केदारनाथजी के पुत्र श्री बजरंगलालजी अपने पैतृक व्यवसाय को छोड़कर उन्होंने पैट्रोल और कैरोसिन तेल का व्यवसाय हाथ में लिया। धीरे-धीरे यह व्यवसाय पूरी तरह जम गया। इसे जमाने में अथक प्रयास परिश्रम करना पड़ा जो आगे चलकर विशेष लाभप्रद साबित हुआ। 'उद्योगिनं पुरूष सिंहमुपैति लक्ष्मी' का यह सबल उदाहरण उन्होंने अपनी लगन और निष्ठा से उपस्थित किया।

श्री बजरंगलालजी ने पूरा सेठाई का जीवन जीया और अपने पितामह श्री गौरीदत्तजी के संतोचित गुणों का अनुकरण करते रहे। आगे चलकर धार्मिक रूचि को परिष्कृत करते हुये उन्होंने अपना अधिक समय सामाजिक धार्मिक कामों में लगाया। व्यवसाय का काम अधिकतर रूप से मुनीम लोग ही करते रहे। 1935-40 की अवधि तक आप श्री समृद्ध हो चुके थे। रानीगंज के मारवाड़ी समाज में एवं अन्य समाजों में बजरंग बाबू साधुता के प्रतीक रहे।

श्री बजरंगलालजी का शुभ विवाह हाथरस में लाल वाला परिवार में लाला जय किशोरदासजी की सुकन्या अन्नपूर्णा देवी से हुआ था। इस कुल शीला वधू ने 6 कन्याओं और एक सुपुत्र श्री विश्वनाथजी को जन्म दिया। कन्याओं के विवाह इस प्रकार सम्पन्न हुये। प्रथम कन्या भगवती देवी का विवाह शिवड़ी में डेड़राज हरिचरण सेकसरिया के पुत्र प्रहलाद रायजी से हुआ। द्वितीय कन्या सावित्री का विवाह बख्शीराम शिवपाल राय वारिश अलीगंज (क्यूलगया के रेलवे स्टेशन पर) नंदकिशोरजी के साथ हुआ। तीसरी कन्या गायत्री देवी का विवाह कलकत्ता में डूंडलोद निवासी सर्वसुखदास सुखजीराम के बाबूलालजी साह

के साथ हुआ। चौथीबाई दामादेवी का विवाह रतनगढ़ के पौद्दार वंश में शिवदत्त राय सागर मल फर्म के श्री लक्ष्मीनारायणजी के साथ हुआ। पांचवी कन्या विद्यादेवी का विवाह महादेव लालजी डालमिया के पुत्र त्रिलोक चन्द्र के साथ मद्रास में सम्पन्न हुआ। छठी सुकन्या नरमदा का परिणय कलकत्ता में अलसीसर निवासी श्री वंशीधरजी के सुपुत्र सुन्दरजी तुलस्यान के साथ हुआ।

श्री विश्वनाथजी का जन्म सन् 1930 में हुआ था। आपका शुभ विवाह 17 नवम्बर 1957 में शिकोहाबाद की फर्म रामानन्द द्वारकादास के मालिक सेठ भवानीशंकरजी साह की सुकन्या सावित्री देवी से सम्पन्न हुआ। यह शाह परिवार मुकुन्दगढ़ का निवासी है। श्री विश्वनाथजी, ने अपने पिता के व्यापार व्यवसाय को आगे बढ़ाया और सामाजिक धार्मिक कार्यों में बराबर रूचि लेकर अपने पिता की परम्परा को संजीवित रखा। इन्होंने कलकत्ता में रोलैण्ड रोड़ में अपना निवास निर्मित करवाया और वहीं रहने लगे।

आप 5 पुत्रों के यशस्वी पिता हैं। प्रथम पुत्र प्रदीप का विवाह श्री मोहनलालजी डावड़ीवाला की सुपुत्री विमलादेवी से 1975 में 28 फरवरी को सम्पन्न हुआ। इनके दो पुत्र श्री बैकंट और कुणाल हैं। दूसरे पुत्र दीपक हैं जिनका विवाह हरिप्रसादजी कनोई की छोटी कन्या सविता देवी से 16 जून 1981 को हुआ । दिलीप, मनोज कुमार और राजीव अभी शिक्षा प्राप्त कर रहे है। इन पुत्रों के अतिरिक्त इनके दो कन्यायें हैं । बड़ी कन्या बीणा का पाणिग्रहण संस्कार सर्वसुखदास सरणीधर फर्म के श्री पुरूषोत्तम दास शाह के कनिष्ठ पुत्र श्री अनिल के साथ हुआ है। छोटी रेखा अभी विद्याध्यान कर रही है। केदारनाथजी के पाचंवे पुत्र श्री रतनलालजी के पुत्र हरिप्रसादजी हैं। श्री रामचन्द्रजी के पुत्र श्री श्यामसुन्दरजी हुये जिनके पुत्र श्री सुशील और संजय हैं। श्री गीगराजजी को एक पुत्र श्री अशोक कुमारजी की प्राप्ति हुई। इनके पुत्र श्री बसन्त कुमारजी हैं। श्री लादूरामजी दो पुत्रों के पिता हुये श्री विजय कुमार एवं श्री विनोद कुमार। श्री विनोदकुमार को एक पुत्र श्री अमितकुमार की प्राप्ति हो चुकी है।

श्री गौरीदत्तजी के दूसरे पुत्र श्री छोटेलालजी थे जिनका जन्म 1933 में हुआ था। आपने व्यापार में अच्छी उन्नति की। आपने अपनी तेलमिल के कार्य को व्यवस्थिति किया। इसके अलावा आपने जामकलानी, मिलानी, बंसूली, आडंग, भादूनगर, तथा अबजलपुर इत्यादि मौजों की जमीदारी को भागदारी में खरीद लिया। आपने पाठशालाओं को सहायता दी और पेयजल की सुविधा के लिये कूँआं

बनाया। श्री छोटेलालजी गनेड़ीवाला अपने पिता के पद चिन्हों पर चलते हुये रानीगंज के गणमान्य पुरूष बने। श्री छोटेलालजी के पुत्र श्री बनारसी लालजी थे जिनके पुत्र श्री

मोहनलालजी दो पुत्रों के पिता हैं। इनके नाम सरवन कुमार एवं शेखर हैं।

श्री सागरमलजी के एक पुत्र श्री ताराचन्दजी हुये। इनके आगे वंश नहीं चला। श्री बैजनाथजी दो पुत्रों के पिता थे। जिनके नाम मुरलीधर एवं मोतीलाल थे। श्री मोतीलालजी के पुत्र श्री द्वारका प्रसाद दो पुत्रों नवल किशोरजी एवं देवीदत्तजी के पिता हुये। श्री नवलकिशोर के पुत्र अनिल कुमार एवं सुनील कुमार एवं श्री देवीदत्तजी के पुत्र राजेशकुमार एवं मुन्ना हैं। ये सारे परिवार रानीगंज में रहकर अपना व्यवसाय करते हैं। श्री मुरलीधरजी निस्संतान रहे।

श्री गौरीदत्तजी के छोटे भाई श्री बालमुकन्दजी ने सं. 1859 में अलग व्यापार शुरू किया। आपने पुरलिया में बालमुकन्द गणपतराय नाम से अपनी फर्म खोली, पुरलिया और विष्णुपुर में एक आयल मिल खोली। इन्होंने विष्णुपुर में बालमुकुन्द किशनगोपाल के नाम से व्यवसाय आरम्भ किया। आपने व्यवसाय में अच्छी उन्नति की। आपने पुरलिया में भजनाश्रम विद्यालय बनाया। धर्मशाला बनाई। आपका निधन 1986 में हुआ। आपके पुत्र गणपतराम का बहुत छोटी अवस्था में निधन हो गया था। इनके दूसरे पुत्र श्री रामेश्वरलाल हुये जिनके पुत्र श्री कृष्णगोपाल थे। इनके श्री सीताराम पुत्र हुये। यह परिवार पुरलिया में बसा हुआ है।

श्री बिशेशरलालजी के पुत्र श्री रामबल्लभजी, श्री रामकिशनजी एवं श्री काशीनाथ थे। श्री रामबल्लभजी के गोपीरामजी उत्पन्न हुये जिनके पुत्र श्री पुरूषोत्तमदासजी हैं। इनके दो पुत्र श्री मदनलालजी एवं श्री गिरधारीलालजी हैं। श्री मदनलालजी, श्री दीपक के पिता हैं। श्रीगिरधारीजी के सुपुत्र ऋतेश हैं। बिशेशरजी के दूसरे पुत्र श्री रामकिशनजी थे जिनके एक पुत्र श्री रामनिवासजी हुये। श्रीरामनिवासजी 5 पुत्रों के पिता हुये श्री शंकरलाल, श्री कैलाश प्रसाद, श्री शिवकुमार, श्री रमेशकुमार और श्री पवनकुमार। श्री शंकर के पुत्र दिलीप, एवं राजेश, श्री कैलाश के पुत्र योगेश, श्री शिवकुमार के पुत्र सूरज, श्री रमेश के पुत्र अभिषेक और श्री पवन के पुत्र साकेत हैं। ये सभी परिवार रानीगंज में रहकर व्यवसाय कर रहे हैं।

श्री काशीनाथ के पुत्र श्री बृजमोहन, श्री सत्यनारायण, श्री महावीर प्रसाद एवं श्री राधेश्याम हुये। श्री बृजमोहनजी का परिवार आगे नहीं बढ़ा। श्री सत्यनारायणजी चार पुत्रों श्री सुरेश कुमार, श्री राजकुमार, श्री अशोक कुमार एवं अरूण कुमार के पिता हुये। ये राणीसती दादी के अनन्य भक्त हैं। इनका बम्बई में काफी अच्छा व्यापार है। श्री सुरेश कुमार के पुत्र शरद एवं श्री राजकुमार के पुत्र विकास और विशाल हैं।

श्री महावीरप्रसाद चार पुत्रों के पिता हुये श्री संतोष, श्री सुभाष, श्री सुनील और श्री

नितिन। श्री संतोष के तीन पुत्र हुये आशीष, अंकित एवं अनुज। यह परिवार बम्बई में बसता हैं। श्री राधेश्याम तीन पुत्रों के पिता बन चुके हैं। इनके नाम अरविन्द कुमार, अनिलकुमार और अनूपकुमार हैं। श्री अरविन्द के पुत्र अमित और अतुल हैं । यह परिवार बम्बई में स्थित हैं तथा वहां अपना व्यवसाय करता हैं।

श्री तोलारामजी के दूसरे पुत्र श्री शिवकिशनजी थे। इनके कोई संतान नहीं हुई जिससे इनका वंश क्रम आगे नहीं चला।

सप्तदश अध्याय

श्री वृन्दावनलालजी की संतति वल्लरी

श्री वृन्दावनलालजी के पुत्र श्री लालजीमलजी थे जिनके बारे में पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है। इन श्री लालजीमलजी को दो पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई। प्रथम पुत्र श्री जुहारमलजी एवं द्वितीय पुत्र श्री हीरालालजी थे। एक स्थूल अनुमान के आधार पर श्री जुहारमलजी का जन्म सन् 1820 में हुआ। वे जीवन पर्यन्त अपने पैतृक व्यवसाय में लगे रहे। इनके बारे में विशेष वृत्त प्राप्त नहीं है। हरिद्वार की बही के लेख के अनुसार ये सन् 1844 में कुंभ स्नानार्थ हरिद्वार आये थे। सन् 1874 में इनकी पत्नी का एवं कार्तिक सुदि 11,1933 तदनुसार सन् 1876 में इनका स्वयं का निधन हुआ।

श्री जुहारमलजी के चार पुत्र हुये हरगोपालजी, वंशीधरजी, ज्वालादत्तजी और वासुदेव जी। हरिद्वार की बही के उल्लेखानुसार बड़े हरगोपालजी का देहान्त सन् 1909 में हुआ था। दूसरे पुत्र श्री बंशीघर के सन् 1893 में हरिद्वार आने का उल्लेख प्राप्त है। वे बद्रीनाथ धाम भी गये थे। इनकी पत्नी का नाम लक्ष्मीदेवी था। तीसरे पुत्र ज्वालादत्तजी का जन्म सम्भवतः 1845 के आसपास हुआ था। चौथे पुत्र श्री वासुदेव 5 साल बाद पैदा हुये।

श्री हरगोपालजी के दो पुत्र गोरधनदासजी एवं द्वारकादासजी हुये। श्री हरगोपाल जी का शरीरांत पौष वदी 1,1966 को फतेहपुर में हुआ। श्री गोरधनदास के पुत्र झाबरमल एवं श्री बृजमोहन थे। श्री बृजमोहन दो पुत्रों के पिता हुये। इनके नाम श्री बाबूलाल एवं श्री सत्यनारायण हैं। श्री बाबूलालजी के पुत्र रतनलाल, गौरीशंकर एवं श्री राजकुमार हैं। श्री रतनजी के तीन पुत्र अजय, चंदन एवं पंकज हैं। श्री गौरीशकंर के पुत्र अनूप एवं

कमल है। श्री राजकुमार के पुत्र सुशील हैं। श्री सत्यनारायण दो पुत्रों के पिता हैं जिनके नाम ललित कुमार एवं प्रदीप कुमार है।

श्री झाबरमल के पुत्र श्री विश्वनाथ, सीताराम एवं रामचन्द्र हुये। श्री विश्वनाथ के पुत्र आत्माराम हैं जो दीपक, मधुसूदन एवं कन्हैयालाल के पिता हैं। दूसरे पुत्र विनोद कुमार के आनन्दकुमार नामक पुत्र है। तीसरे पुत्र श्री पवन कुमार कृष्णकुमार के पिता बन चुके हैं। श्री झाबरमलजी के दूसरे पुत्र श्री सीताराम हैं जो जगमोहन एवं विनयकृष्ण के पिता हैं। तीसरे पुत्र श्री रामचन्द्र गिरीश व योगेश कुमार के पिता हैं।

श्री हरगोपाल जी के दूसरे पुत्र श्री द्वारकादासजी के पुत्र श्री महादेव प्रसाद जी हुये। इनके तीन पुत्र देवकीनन्दनजी, रामनिरंजनजी और काशीप्रसादजी हैं। श्री देवकी नन्दनजी के पुत्र अरविन्द एवं प्रदीप है। श्री अरविन्द के पुत्र देवेन्द्र है। श्री रामनिरंजनजी के पुत्र ज्योति प्रकाश एवं चीकू प्रकाश है। श्री काशीप्रसाद जी के पुत्र नरेश एवं कमलेश हैं। हरगोपाल जी के छोटे भई बंशीधरजी के एक पुत्र हरिबक्सजी हुये। ये दो पुत्रों के पिता हुये, गोविन्दराम जी एवं सत्यनारायणजी। सत्यनारायणजी के पुत्रों के नाम श्री शंकरलाल, सीताराम, पवन कुमार एवं सुनील कुमार हें। श्री शंकरलाल के पुत्र प्रदीप हैं।

श्री जुहारमल जी के तीसरे पुत्र ज्वालादत्तजी थे। लोगों में इनका नाम जुआलजी अधिक प्रसिद्ध है। जुआलजी का लोक सम्पर्क बहुत विस्तृत था। वे धार्मिक वृत्ति के थे और नियमपूर्वक नवलगढ़ के रामदेवजी के मेले में आया करते थे। वे रामदेवजी की आराधना करते थे। वे छोटे कद के व्यक्ति थे तथा दाढ़ी रखते थे। राजपूती बाना धारण करते थे और जाड़िया भी बांधते थे। कहते हैं कि एक बार वे जोधपुर महाराज की एक युवती को ऊँट पर चढ़ाकर उड़ा लाये थे।

कहतें हैं कि एक बार वे बलजी भूरजी के साथ जोधपुर गये। बलजी भूरजी डूँगजी जुहारजी की संतानों में से थे और प्रायः जोधपुर, बीकानेर क्षेत्र में डाके डाला करते थे। आगे चलकर जब उनके डाके बहुत बढ़ गये तो जोधपुर रिसाले ने उनका पीछा किया। इस छोटी सी लडाई में वे मारे गये। वे जन-जीवन में लोक पुरूष की तरह आज भी पूजित हैं।

इस यात्रा में जब बलजी भूरजी डाके की संभावित जगह तलाश कर रहे थे तो जुआलजी को एक सुहावना दृश्य नजर आया। उन्होंने देखा कि एक तरूणी स्वर्णाभूषणों से लदी राजमहलों की ओर जारही है। दुकानदारों ने पूछने पर बताया कि यह जोधपुर महाराज की पासवान है। जुआलजी ने आवदेखा न ताव उस तरूणी को जबरदस्ती ऊँट पर बिठा लिया और ऊँट को सीकर की राह पर हांक दिया। उनका पीछा किया गया

पर वे हाथ नहीं आये और सकुशल सीकर में रावराजा माधोसिंह के पास पहुंच गये। उन्होंने उस तरूणी को उनके हवाले कर दिया। जोधपुर के सवार सरहद ही से निराश हो लौट आये। कहते हैं कि बीकानेर से उड़ाई गयी एक दूसरी पासवान के साथ वे कई वर्ष कलकता में रहे बाद में जब वह मर गयी तो लौट आये।

वे रामगढ़ के पौद्दारों के भान्जे थे पर उनसे अनबन रखने के कारण उनके ऊँट अक्सर लूट लिया करते थे। उनकी मृत्यु सन् 1938-39 में फ़तेहपुर में हुई। वैश्यकुल में जन्म लेकर भी वे आजीवन अपने कुल के रीतिरिवाजों से विद्रोही बने रहे। इनके एक पुत्र श्री नथमल थे जो तीन पुत्रों ईश्वरप्रसाद, परमेश्वरलाल और मंगलचन्द के पिता थे। ईश्वरप्रसाद के पुत्र भानुप्रकाश एवं मुरली हुये। भानुप्रकाश के पुत्रों के नाम गोपाल व गिरधारी हैं। श्री परमेश्वरलाल के पुत्र ओमप्रकाश, बनवारीलाल, राजकुमार एवं रमेश कुमार हैं। श्री ओमप्रकाश के पुत्र रोशनलाल एवं संजय हैं। श्री बनवारी जी के पुत्र गोपाल हैं। श्री मंगलचन्द्र के पुत्र राजकुमार, दिलीप एवं पवन हैं। श्री जुआलजी के छोटे भाई श्री वासुदेव थे। इनकी स्त्री का नाम दीपा था जिनका देहान्त भादवा बदि 9, 1955 को फतेहपुर में हुआ। इनके चार पुत्र हुये जिनके नाम रामबल्लभजी, रंगलाल जी, प्रहलादराय जी और लादूराम जी थे। इनमें श्री प्रहलादरायजी का परिवार तंतु आगे विस्तृत हुआ। इनके तीन पुत्र बनवारीलाल, राजकुमार और ताराचन्द हुये। श्रीबनवारीलाल के पुत्र सुनील एवं गुड्डू एवं श्री ताराचन्दजी के पुत्र दीपक हैं।

श्री लालजीमल के कनिष्ट पुत्र हीरालाल जी थे। श्री हीरालालजी व्यापार के लिये बम्बई गये। यहाँ आपने अफीम का व्यापार और सरडेविड सासन की दलाली का कार्य शुरु किया। इन्हीं हीरालालजी के सुपुत्र सेठ रामगोपालजी हुये जिनकी अतुल कीर्ति का दूर–दूर तक विस्तार हुआ। इनके पिताजी का विवाह महणसर के पौद्दारों के यहाँ हुआ था। कहते हैं कि रिश्ता करने के बाद कन्या को चेचक निकल आयी और इस रोग से उसकी आंख जाती रही। कन्या पक्ष इस दैवी विपत्ती पर बड़ा दुखी हुआ। उन्हें डर था कि अब यह सम्बन्ध टूट जावेगा।

उनके इस डर को दूर करते हुये पौद्दार परिवार को आश्वस्त कर दिया गया था कि यह सम्बन्ध टूटेगा नहीं यथावत् रहेगा। इस समय तक श्रीलालजीमलजी की मत्यु हो चुकी थी। इस समय दैवदुर्विपाक से एक ऐसी घटना घटी कि जिसने दोनों परिवारों को हिलाकर रख दिया। कहते हैं कि फतेहपुर का एक नीलगर पीलेपोमचे आदि तैयार कर महणसर गया। वह वहां पौद्दारों की हवेली पर पहुंचा। उसने कहा कि आप विवाह की तैयारी कर रहे हैं कुछ खरीद करायें। इस पर किसी ने ताना मारा, एक रांड के दो छोरे हैं क्या तैयारी करनी है। बात जहाँ पहुँचनी चाहिये थी वहाँ जा पहुँची थी। श्री हीरालालजी की माता

को इसे सुनकर बड़ी वेदना हुई। उस समय वृन्दावन लालजी के कनिष्ट पुत्र पोकरमलजी जात जडूला करने फतेहपुर की तरफ आये हुये थे। उनको सारी बात कही गयी। इस पर स्थिति की गंभीरता को समझकर उन्होंने अपने परिवार को लौटा दिया और स्वंय विवाह की तैयारी में जुट गये। महणसर वालों को उम्मीद थी कि बरात में 20-25 व्यक्ति आयेगें इसलिये विशेष तैयारी नहीं की गयी थी। शाम के कुछ पूर्व गाँववालों ने देखा कि एक विशाल दल गांव की ओर उमड़ रहा है जिसमें हाथी, घोड़े और ऊँट शामिल हैं। यह दल पौद्दारों की हवेली के सामने ठहर गया। बारात में 500 से उपर लोग थे। इतने बड़े दल को देखकर कन्यापक्ष के लोग घबरा गये। वे कर—बद्ध श्री पोकरमलजी के पास गये और क्षमा प्रार्थना की। निदान और अधिक व्यक्तियों को आने से रोक दिया गया।

इस सुलक्षणवती माता की कोख से सेठ रामगोपालजी का जन्म हुआ। इनका जन्म 1846 में हुआ था। सेठ हीरालालजी की मृत्यु दूजे जेठ बदि 30,1942 को फतेहपुर में सायंकाल के समय हुई थी।

ये इस परिवार में बड़े कीर्तिशाली एवं गणमान्य पुरूष हुये। आपने रूई का व्यवसाय हाथ में लिया और बड़ी उन्नति की। आपका रूई का व्यापार सेठ बच्छराज जमनालाल बजाज के साझे में होता था। इन्होंने सी. पी. बरार और यू. पी. के विभिन्न स्थानों में जिनिंग फैक्टरियाँ स्थापित कीं तथा बड़े स्तर पर रूई का व्यापार करके लाखों रूपयों की सम्पत्ति अर्जित की। संपत्ति के संग्रह और उसका सद्कार्यों में उपयोग की पद्धति से वे भलीभाँति परिचित थे। आपने अनेकों धार्मिक कार्य सम्पन्न करवाये।

कहते हैं कि सेठ रामगोपालजी ने ही सेठ बच्छराजजी को जमनालालजी को गोद लेने की सलाह दी थी। दोनों परिवारों के पारस्परिक घनिष्ट सम्बन्धों को देखते हुये यह बात संभव प्रतीत होती है।

आपका सबसे बड़ा अवदान फतेहपुर में एक विशाल संगमरमर की छतरी का निर्माण है। यह छतरी शेखावाटी की ही नहीं राजस्थान की छतरियों में अन्यतम है। राजा महाराजाओं पर बनी छतरियाँ इसके मुकाबले अर्थहीन हो जाती है। इसी प्रकार हरिद्वार और ऋषिकेश में भी आपने धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। मथुरा में एक धर्मशाला एक लाख रूपये लगाकर बनाई। 1899 में जब दुर्भिक्ष का काल आया तो आपने भूखे लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिये फतेहपुर से 2 मील की दूरी पर 25 हजार रूपये लगाकर एक तालाब, कुआ तथा धर्मशाला का निर्माण करवाया। इस प्रकार धार्मिक कार्यों में आप उदारता पूर्वक खर्च करते रहे। ये धार्मिक भावना से ओतप्रोत निष्ठावान परूष थे। लोकाचार से विरूद्व आचरण और व्यवहार के ये विरूद्ध थे। एक घटना का वर्णन यहां अपेक्षित

प्रतीत होता है। कहते हैं कि एक बार सीकर के रावराजा माधोसिहंजी फतेहपुर आये थे। वहां एक भिखारिणी ढ़ोलण 'छपनियारें काल फेरूमत आये' नामक गीत गा रही थी। लोग इस गीत को सुनने एकत्रित हो जाते थे। रावराजाजी रसिक तबियत के व्यक्ति थे। उन्होंने इस ढ़ोलण को रथ में बैठा लिया और गीत सुनने लगे। बाद में इसे साथ लिये जब वे सेठ जी श्री रामगोपालजी की हवेली के सामने से निकल रहे थे तो यह सारा हाल देखकर सेठजी ने रावराजा जी को इस प्रकार का व्यवहार करने पर उलहना दिया। कुछ लोगों का कहना है कि रावराजाजी को आते देख वे हवेली में चले गये। बाद में बुलाने पर बाहर आये। इस प्रकार अपने आक्रोश का इजहार संकेत से कर दिया। रावराजा सारी बात समझ गये।

सेठजी रामगोपालजी की उदारता और उनके प्रभाव के अनेक वृत्त प्राप्त हैं। पं. विश्वनाथ सारस्वत ने 6 जुलाई 1972 को कुछ बातें इस सम्बन्ध में लिखकर दी थी। उनका सार संक्षेप यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

एक बार स्वर्गीय पं. रूकमानंदजी सारस्वत पर एक झूठा इल्जाम लगा दिया गया। पंडितजी को गिरफ्तार करने राज का आदमी आ गया। पंडितजी राज की आँखें बचाकर रात के अंधेरे में निकलकर लक्ष्मनगढ़ में सेठो की हवेली में जा पहुचें। वहां वे छिपकर बैठ गये। राजकर्मचारी को जब यह ज्ञात हुई तो उन्होंने हवेली को घेर लिया। उधर सेठजी हीरालालजी की धर्मपत्नी ने अपने पुत्र श्री रामगोपालजी को शीघ्र आने का संदेश भेजा। उस समय सेठजी मथुरा में थे। संदेश पाकर वे फतेहपुर आये और लक्ष्मणगढ़ जाकर राज के अधिकारियों से मिले और कहा कि पंडित जी गिरफ्तार नहीं किये जावे। बात बढ़ने पर स्वंय रावराजा साहिब लक्ष्मणगढ़ आये। सेठ जी ने कहा कि ये हमारे कुल गुरू और पुरोहित हैं। मेरे गिरफ्तार होने के बाद ही ये गिरफ्तार होगें। रावराजा ने उनकी बात मानी और सीकर लौट गये।

वे अनेकों व्यक्तियों की विपत्ति में सहायता करते थे। गरीबों की शादीविवाह में सहायता करते थे। सेठ बद्रीप्रसादजी गोयनका फतेहपुर के सबसे बड़े सटोरिया थे। वे प्रतिदिन नुकसान का पाईपाई भुगतान करते थे। एक बार सेठजी की औकात से कई गुना नुकसान हो गया। इसका भुगतान वे नहीं कर सके। उन्होंने सबसे कहा कि वे अपनी हवेली को बेचकर सबका पैसा चुका देगें। कुछ व्यक्ति इन्हें नीचा दिखाना चाहते थे अतः उन्होंने थाने में रसूम भर दी। आजकल जिसे नालिश कहते है वह उन दिनों रसूम भरना कहलाती थी। इस पर सेठजी को बुलाकर थाने में बैठा लिया गया। उस जमाने में इसे कैद समझा जाता था। सेठ बद्रीप्रसादजी भगवान बद्रीनारायणजी के भक्त थे। भोजन करने का वक्त हुआ तो थानेदार ने कहा कि सिपाही के साथ घर जाकर भोजन कर आइये। उनका उत्तर था कि मेरे को लेने बद्रीनारायणजी स्वयं आवेगें तो ही जावूंगा।

सेठजी रामगोपालजी जब उस दिन भगवान बद्रीनारायण का दर्शन करने गये तो उन्हें सारी घटना की जानकारी मिली। वे सीधे थाने में गये और गोयनकाजी को साथ ले आये। रसूम के सारे पैसे अपनी हवेली से भिजवा दिये।

वे ब्राह्मणों की लड़कियों के विवाह के लिये मुक्तहस्त से दान करते थे। फतेहपुर शहर में प्रायः मुकदमें उनकी हवेली पर ही सलट जाते थे। दोनों पार्टियों को राजी करके आपस का झगड़ा मिटा देते थे।

उस जमाने में फतेहपुर में दो ही घराने नामी माने जाते थे। एक घराना सेठ जगन्नाथजी सिंहानियां गुलराज जगन्नाथ का था और दूसरा सेठ हीरानन्दजी रामगोपाल गनेड़ीवाला का था। सेठ जगन्नाथ जी संत प्रकृति के पुरूष थे। सेठ रामगोपालजी राजनीतिज्ञ थे। दोनों सिंगल गोती होने के कारण भातृभाव रखते थे। उस समय एक उक्ति प्रसिद्ध थी 'साग में आलू, भाया में बालू, सलाह में हीरालाल मुनीमों में डालू'।

सन् 1915 के आसपास जब सेठ बच्छराजजी रामगोपालजी अलग–अलग हो गये तब एक बार सेठ रामगोपालजी ने जबकि बच्छराजजी मर चुके थे, जमनालालजी की बीमारी के समय वैद्य मटरूमलजी को फतेहपुर से इलाज के लिये भेजा था। उस समय चोके की क्यारी बड़ी होने के सम्बन्ध में विवाद हो गया। जमनालालजी इस समय 20-22 बर्ष के थे। मटरूमलजी ने उनसे कहा कि आप शिक्षा प्रचारक मण्डल के लिये चन्दा करते हैं यह बनियों का काम नहीं। मैं भी चन्दा दे सकता हूँ अगर आप हाथ में संकल्प लें। जमनालालजी ने संकल्प लेना स्वीकार कर लिया। जब सेठजी सीकर आये तो मटरूमलजी ने वियाणियों से 21 हजार का चन्दा संकल्प में दिलाया। रूपये एक बार वियाणियों ने दिये बाद में उनको भिजवा दिये गये। जिस समय सारे देश में अनेक लक्ष्मीपुत्र विद्यमान थे उस समय सेठ रामगोपालजी गनेड़ीवाला ने बम्बई में रहकर पारसियों, गुजरातियों, महाराष्ट्रियों की दान परम्परा को और भी उज्जवल बनाया था। आपने 5 लाख से एक ट्रस्ट स्थापित किया था। इस आय में से लगभग 60 रुपये मासिक व्यय छत्री में लगता है तथा मथुरा, हरिद्वार आदि क्षेत्रों में धार्मिक कार्यों में व्यय होता है। श्री रामगोपाल जी की प्रस्तर मूर्ति छत्री के मुख्य द्वार पर आषाढ़ शुक्ल 7 सोमवार सं. 2022 को प्रस्थापित की गई थी। इस मूर्ती के अनावरण समारोह पर रावराजा कल्याणसिंह स्वंय उपस्थित हुये थे।

सेठ रामगोपालजी ने तीन विवाह किये थे। उनके तीन सुपुत्र उत्पन्न हुये। बड़े पुत्र श्री बद्रीनारायणजी थे। दूसरे पुत्र श्री पुरूषोत्तमजी का विवाह रतननगर के संस्थापक सेठ नंदरामजी केड़िया की पौत्री इन्दुकुमारी जी से हुआ था। इनका जन्म 1844 में हुआ था।

इनके तीसरे पुत्र श्री केशरदेवजी हुये। पुरूषोत्तमजी का देहान्त केवल 48 वर्ष की अवस्था में हो गया था। कुचामणवाली जो श्री पुरूषोत्तम की माता थी, का शरीर चैत बदि 4,1919 में गया। इनका नाम हरबाई था। श्री बद्रीनारायण की माताजी का शरीर चैत बदि 1952 के दिन शान्त हुआ था। इनका नाम चौथीबाई था। श्री केशरदेवजी की माता का देहान्त चैत सुदि 1965 में मथुरा में हुआ था। इनका नाम हरदेई था। श्री केशरदेवजी का जन्म 1961 में हुआ था। वे हीरालाल रामगोपाल सुप्रसिद्ध फर्म के मालिक थे।

वे वैंकटेश प्रेस के सस्थापक श्री कृष्णदास के जमाता थे। इनका देहान्त 18 फरवरी 1964 को हुआ था। मृत्यु के पूर्व आप पाँडूरोग से पीड़ित थे। आपका अधिकांश समय व्यवसायी जीवन बम्बई ही में बीता। अपने मधुर स्वभाव के कारण मारवाड़ी समाज में आपकी अच्छी ख्याति थी। आपके पुत्र अशोक कुमार हैं। इसके सुपुत्र रोहित हैं।

श्री बद्रीनारायणजी के सुपुत्र श्री नरनारायणजी हैं। इनके पुत्र राधेश्याम, सुरेन्द्र, राजेन्द्र, पवन कुमार एवं अनिल कुमार हैं। श्री राधेश्यामजी के पुत्र विकास और श्री सुरेन्द्र के पुत्र राकेश हैं। श्री पुरूषोत्तम के सुपुत्र सुदर्शन हैं। इनका विवाह 7 नवम्बर 1919 को कानपुर निवासी चूरू के लोहिया वंश में श्री नागरमलजी की पोती नर्मदाजी से हुआ। इस कुल शीलामाता से सुदर्शनजी को तीन पुत्र रत्न राजकुमारजी, राजेशजी एवं राजीव जी प्राप्त हुये हैं। श्री राजकुमार जी के पुत्र युवराज हैं। आपके चार कन्यायें राजकुमारी जी, राजेश्वरी जी, राजप्रभाजी और राजश्री जी हैं। इस समय श्री सुदर्शन जी सपरिवार कलकत्ता में आबाद हैं।

इस प्रकार सेठ वृन्दावन लाल जी के परिवार की छठी पीढ़ी चल रही है।





चित्रकार श्री राजकुमार गनेड़ीवाला की कलाकृतियाँ "बाजीगर" और "बंजारे"

अष्टदश अध्याय

श्री धनराजजी की संतति - वल्लरी

श्री धनराजजी के पुत्र पोकरमलजी थे। इन्हें विरासत में अपने पिता की विशाल सम्पत्ति ही नहीं मिली थी किन्तु उनकी व्यापारिक कुशलता, अदम्य साहस और विवेक पूर्ण रीति नीति भी प्राप्त हुई थी। योग्य पिता की वे एक योग्य संतान थे जिन्होने सेठ धनराजजी की गौरवशाली परम्पराओं का निर्वहन सफलतापूर्वक किया। धनराजजी के जीवन काल में ही वे व्यवसाय में हाथ बटाने लगे थे। आगे चलकर वे नवाब मुबारक जो हैदराबाद निजाम के भाई थे के यहाँ खजांची पद पर नियुक्त हो गये।

इस महत्त्वपूर्ण पद पर वे कार्य करते थे। निजाम स्टेट में उनका उच्चकोटी का आदर रहा। सामाजिक सेवा में वे बराबर अग्रगण्य रहे। सेठ धनराजजी ने अमरावती के जन-जीवन में जो गौरवास्पद स्थान बनाया था वैसा ही स्थान उनके पुत्र पोकरमलजी का रहा।

सेठ पोकरमलजी ने दो विवाह किये थे। उनकी पहली पत्नी से किशनदयालजी का जन्म सन् 1810 में हुआ। दूसरी पत्नी से रामविलासजी का जन्म 1840 में हुआ। श्री पोकरमलजी के जीवन काल में ही रामगढ़ से निरन्तर सम्पर्क बना रहा। उन्होंने यहां हनुमानजी का मन्दिर बनाया एवं उसके पास एक कूँऐ का निर्माण करवाया जो आज पोकर की कूई के नाम से जाना जाता है।

श्री किशनदयालजी पोकरमलजी के ज्येष्ठ पुत्र थे जिनका जन्म सन् 1810 में हुआ था। आपकी पत्नी नंदी, रामजीदासजी पोददार की बेटी थी। इनके दो पुत्र उत्पन्न हुये हरविलासजी और रामचन्दजी। एक पुत्री चांदकवर थी। हरविलासजी भी रामगढ़ के वासी

रहे। उनकी धर्मपत्नी का नाम महासी था। वह गौरीमलजालान की बेटी थी। किशनदयालजी सन् 1844 में सपत्नीक गंगा स्नान को हरिद्वार गये थे। इनका शरीरांत सन् 1847 में हुआ तो इनके फूल हरिद्वार पहुँचाये गये।

श्री हरविलासजी धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष थे । वे अपनी धर्मपत्नी के साथ पहले सन् 1855 में एवं बाद में 1891 में हरिद्वार स्नान को गये थे। हरविलासजी के एक पुत्र हनुमानदत्तजी हुये। इनकी पत्नी का नाम लाडो था जो श्री रामविलास झुंझुनूवाला की बेटी थी। झुँझुनूवाला मलसीसर के निवासी थे। हनुमानदत्तजी सन् 1922 में हरिद्वार स्नान को गये थे। वहाँ से बद्रीनाथ धाम भी गये।

श्री हनुमानदत्तजी के दो पुत्र हुये, श्री वल्लभजी और रामनिरंजनजी। श्री वल्लभजी के पुत्र नंदकिशोरजी और पौत्र श्री गोपालजी हैं जो व्यंकटेश के पिता हैं। श्री रामनिरंजनजी के तीन पुत्र मक्खनलालजी, वासुदेवजी और दामोदरजी हैं। श्री मक्खनलालजी के पुत्र राजेश, श्री वासुदेवजी के पुत्र चन्द्रमोहन एवं कमलनयन हैं। श्री चन्द्रमोहनजी के पुत्र पंकज, पवन एवं पराग हैं। श्री दामोदरजी के तीन पुत्र बृजमोहन, राजेश कुमार एवं विनोद कुमार है। श्री बृजमोहन के पुत्र प्रवेश कुमार हैं।

श्री रामचन्द्रजी की धर्मपत्नी का नाम दाखी था। ये केवल एक पुत्र जगन्नाथ के पिता हुये। जगन्नाथजी के पुत्र आनन्दी लाल एवं पौत्र अर्जुन दासजी, शिवदयालजी और केशरदेवजी हुये। अर्जुन दासजी के दो पुत्र मधूसुदन और सत्यनारायण हैं । श्री मधूसुदन के पुत्र सुरेश हैं जो पंकज एवं शीतल के पिता हैं। श्री सत्यनारायण के पुत्र रमेश एवं घनश्याम हैं। श्री रमेश के पुत्र चेतन एवं चन्दन तथा श्री घनश्याम के पुत्र श्री राहुल हैं। श्री शिवदयाल के पुत्र श्री रघुनंदन एवं पौत्र श्री मोहन और हेमन्त हैं। श्री मोहनलाल के पुत्र अभिषेक, अमित एवं अनूप हैं। श्री हेमन्त के पुत्र विनय, प्रणय एवं संकेत हैं। श्री केसरदेवजी के पुत्र लक्ष्मीनारायण, अनिल के पिता हैं।

जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि श्री पोकरमलजी के दूसरे पुत्र श्री रामविलास थे जिनका जन्म ई० 1840 में हुआ था। आप बड़े कार्यपटु एवं नामी व्यक्ति हो गये हैं। बहुत समय तक आप अमरावती म्यूनिसिपैलिटी के कमिश्नर रहे। आपको शिकार खेलने का बड़ा शौक था। इन्होंने अनेको सिंहो का शिकार किया था। घोड़े की सवारी करते थे। अमरावती के मारवाड़ी समाज में वे एक शान से रहे। ब्रिटिश सरकार से उनके स्नेह सम्पर्क थे। कहते हैं कि उनका ऐसा रोबदाब था कि धनराज लेन में कोई मारवाड़ी महिला बिना घाघरा पहने नहीं निकल सकती थी। जब लोग इनकी हवेली में प्रवेश करते तो दूर से ही जूतियाँ उतार कर आगे बढ़ते थे।

अमरावती के जन समाज में आपका बहुत आदर था । तत्कालीन सरकार में आपका बड़ा सम्मान था। जून सन् 1888 में आपको रायसाहिब की पदवी देकर सरकार ने आपका सम्मान किया था। आगे चलकर उन्हें ओनरेरी मजिस्ट्रेट का पद देकर सरकार ने उन्हें गौरवान्वित किया । गौलडेन बुक आफ इण्डिया में आपका उल्लेख बड़ा गौरवास्पद है। आपके नाम से बना रामविलास बाग आज भी प्रसिद्ध है।

आपने 40 वर्ष की अवस्था तक संतान न होने की स्थिति में अपने बड़े भाई किशनदयालजी के बड़े बेटे हरिविलासजी के पुत्र श्रीनारायण को गोद लिया । श्री रामविलास ने अधिक आयु नहीं पाई । उनकी मृत्यु अक्टूबर 1899 में 59 वर्ष की अवस्था में हो गई। इसी साल उनको ब्रिटिश सरकार ने ओनरेरी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया । यह नियति का क्रूर आघात था कि वे इस सम्मान का उपभोग अधिक समय तक नहीं कर सके। मृत्यु के पूर्व सिर्फ दो दिनों तक बीमार रहे थे।

श्री रामविलासजी को अनेकों प्रशंसापत्र एवं पारितोषिक प्राप्त हुये थे। वे रायसाहिब और ओनरेरी मजिस्ट्रेट थे। 13 अप्रैल 1894 को हैदराबाद रेजिडेन्ट से अच्छी सेवाओं का प्रमाण पत्र उन्हें दिया गया था। पुनः 22 मार्च 1896 को डिप्टी कमिशनर ने उन्हें प्रशंसा पत्र दिया। जिस समय मेलघाट में अकाल की स्थिति हो गयी तो इन्होंने मेलघाट रिलीफ फण्ड को आर्थिक सहायता दी। मेलघाट अमरावती जिले की तहसील है जहां आदिवासी कुर्क आदि जातियाँ बसती हैं। ये लोग बहुत गरीब, अशिक्षित अवस्था में रहते हैं । सतपुड़ा की पहाड़ी पंक्तियाँ यहां छायी रहती हैं। यह प्रशंसा पत्र 29 मार्च 1898 को दिया गया था। इनके अलावा सन् 1898-1901 में भी इनकी सेवाओं की सराहना करते हुये प्रशंसा पत्र दिये गये।

श्री रामविलासजी के पुत्र श्रीनारायण का जन्म अगस्त 1872 में हुआ था। उनका विवाह सन् 1895 में हुआ। सन् 1900 में उन्हें अमरावती नगरपालिका का सदस्य सरकार द्वारा नामजद किया गया। अपने पिता की तरह उन्होंने भी सन् 1901 में ओनरेरी मजिस्ट्रेट का पद प्राप्त किया।

सन् 1903 में भारत के तत्कालीन वायसराय ने हैदराबाद रेजिडेन्ट की मार्फत उन्हें कोरोनेशन सर्टिफिकेट उन स्मरणीय सेवाओं के लिये दिया जो उन्होंने वन विभाग को 1899-1900 के अकाल के समय दी थी।

कांगडा वेली रिलीफ फण्ड, हैदराबाद रिलीफ फण्ड और कृषि तथा उद्योग प्रदर्शनी अमरावती में भी उन्होंने उल्लेखनीय योगदान किया था। श्रीनारायणजी ने रामविलासजी के जीवन काल में ही उनके व्यवसाय को अच्छी प्रकार सम्हाल लिया था । वे रामविलासजी

के कुटम्ब में अतीव शीतल स्वभाव वाले पुरुष थे। अमरावती में मारवाड़ी समाज के अतिरिक्त अन्य समाज में भी उनका आदर सम्मान था। वे समाज के पंच के रुप में विवादों का सलटारा करा देते थे।

इनका मुख्य व्यवसाय अनाज का था जो धनराजजी के समय से चला आ रहा था। श्री रामचन्द्रजी विजयराजजी दीक्षित राजस्थान के शेखावाटी प्रदेश के गांव रघुनाथगढ़ से चलकर कुल पुरोहित बनने आये थे। रुई का भी बड़ा व्यापार इनके हाथ में था। ये सौम्य और सात्विक प्रवृत्ति के सेठ थे जिनकी धर्म में बड़ी आस्था थी। अमरावती के हित चिन्तन में इनका अधिकांश समय बीतता था। यज्ञ करते, हवन करते, भजन पूजन संध्या करते। अपनी हवेली में न्याय के लिये आसन लगाते। साल में एक दिन हवेली में सामाजिक प्रेमोत्सव मनाते जिसमें सभी छोटे-बड़े सम्मिलित होते। आपने दस से अधिक ब्राह्मणों को भरपूर मकान बनाकर दान में दिये। धनराज लेन में हनुमान जी का मंदिर बनवाया। आपके पुत्रों के विवाह महाराष्ट्र अचंल में धनाढ्य परिवारों में हुये।

श्री नारायणजी की प्रथम पत्नी का नाम लक्ष्मीबाई था जो कामठी के गुमानीराम शिवनारायण परिवार की थी। लक्ष्मीबाई के 6-7 संताने हुई पर जीवित एक भी नहीं बची। जब आखिरी संतान भी दम तोड़ने लगी तो इस असह्यपीड़ा को सह सकने में असमर्थ होकर 31 वर्षीय लक्ष्मीबाई ने कूवें में कूदकर प्राणों को शेष कर दिया।

श्री नारायणजी ने दूसरा विवाह किया जिससे उन्हें 6 पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई। विवाह सन् 1907-8 में हुआ था। इनकी दूसरी पत्नी सोजत के चुन्नीलालजी सराफ की बहन रामप्यारी देवी थी। इस माता से संदनगोपालजी (1901), मुरलीधरजी (1911), नरसिंह प्रसादजी (1914), गोविन्द प्रसादजी (1916), हरिराम जी (1920), सच्चिदानन्द (1930) इस प्रकार 6 पुत्र उत्पन्न हुये।

श्री नारायणजी ने 53 वर्ष की आयु में कुछ उसी प्रकार की स्थिति का सामना किया जो धनराज जी ने किया था। धनराज पोकरमल फर्म के प्रति लोगों का विश्वास था अतः लोग इस जूनी बैंक में अपनी संचित धनराशि जमा कराते रहते थे। सन् 1930 में विश्वव्यापी मन्दी का दौर आया। अमरावती भी इससे अछूती नहीं रही। यहां की इम्पीरियल बैंक ने भी अपना ऑफिस आठ रोज के लिये बन्द कर दिया । ऐसी स्थिति में लोगों ने धनराज पोकरमल गद्दी से भी अपना रुपया उठाना शुरू कर दिया। श्री नारायणजी ने काफी रुपये अचल सम्पत्तियों की खरीद में लगा दिया था। जमा पूंजी पर ब्याज देने का प्रबन्ध इस रीति से कर दिया गया था कि इधर किराया आता उससे ब्याज चुकता।

इस अप्रत्याशित मांग से जूनी बैंक की प्रतिष्ठा में एक दरार आ गई। सार्वजनिक प्रतिष्ठा में फर्क आ गया। जूनी बैंक एक बार इतनी सारी मांगों का रुपया नहीं दे पायी। श्री नारायणजी ने अपनी अनेकों अचल सम्पत्तियों को बेचा और रुपया लौटाया। ईमानदारी बनी रही पर उसके प्रति धारणा बनी रहने में विलम्ब हो गया। गद्दी की सार्वजनिक प्रतिष्ठा पर इस सब से आंच आई। जब तक वे जगे तब तक अमरावती की सबसे बड़ी फर्म धनराज पोकरमल है यह तथ्य अपनी नींव से हिल चुका था।

श्री नारायणजी का देहान्त सन् 1957 में 17 जून को हुआ था। इस समय उनकी आयु 80 साल की थी। मृत्यु के पूर्व उन्होंने अपने सारे पुत्रों के विवाह अपने हाथ से किये थे। श्री सदनगोपालजी का विवाह आकोट में रामदत्त किशनदयाल फर्म के गोरधनदासजी की सुकन्या मोहिनी बाई से सम्पन्न हुआ। मुरलीधरजी का विवाह हुकुमचन्द गुलाबचन्द केड़िया की सुकन्या जामवन्ती बाई से हुआ। नरसिंह प्रसादजी का विवाह पूसद में बद्रीनाथरायजी बगड़िया की सुकन्या कस्तूरी बाई से हुआ। गोविन्द प्रसादजी का विवाह शेरगांव में केवलराम रामेश्वर पालड़ीवाला की सुकन्या गोमतीबाई से और हरीरामजी का विवाह यवतमाल में छोटेलाल बृजमोहन फर्म के रामगोपालजी मोर की सुकन्या पार्वतीबाई से हुआ। सच्चिदानन्दजी का विवाह शेरगांव में रामेश्वरदास मातीराम कामलिया की सुकन्या परमेश्वरी देवी से सम्पन्न हुआ। श्री नारायणजी की अपनी पुत्री के विवाह के समय सी.पी. के गवर्नर मिस्टर स्लाय आये थे। श्री नारायणजी ने अपनी मृत्यु के पूर्व काफी अचलसंपति अपनी धर्मपत्नी के नाम कर दी थी । श्रीमती रामप्यारी देवी पति की मृत्यु के 24 साल बाद तक जीवित रही। उनकी मृत्यु 88 वर्ष के अवस्था में दिसम्बर 1981 को हुई। ये उदार चरित्र की उदार वृत्ति वाली महिला थी। इन्होंने अपने हिस्से की सम्पत्ति का दान कर दिया। धनराज लेन में धनराज गनेड़ी वाला नगर सेठ के वंशजों द्वारा निर्मित हनुमानजी के मंदिर के सामने काष्ट अंकित शिल्पांकन द्वारा अभिमंडित दरबार जैसी बिल्डिंग है।

श्रीमती रामप्यारी देवी ने इस बिल्डिंग की जागीर को श्री बैंक्टेश बालाजी ट्रस्ट अमरावती को दान में दे दी। इसके साथ जूनी बैंक को भी ट्रस्ट में विलीन करवा दी।

श्री नारायणजी के बड़े पुत्र सदनगोपालजी का जन्म 18 जुलाई 1909 में हुआ आपकी धर्मपत्नी का नाम मोहिनी बाई था। आपके दो सुपुत्र हैं रामरतनजी और दामोदरजी। रामरतनजी दत्तक गये। आपकी दो सुकन्यायें है सौ. सीताबाई गोयनका और सावित्रीबाई गोयनका। श्री दामोदरजी कामर्स में डिग्रीधारी हैं तथा रेडियो इंजिनियर हैं । आपकी धर्मपत्नी पुष्पाजी हैं। इनके दो पुत्र सुधीर एवं संजय है। तीन कन्यायें अरुणाजी, सुमनजी एवं पूनमजी हैं।

श्री नारायणजी के दूसरे पुत्र श्री मुरलीधरजी हैं। इनके तीन सुपुत्र राधेश्यामजी,

श्रीरामजी और कमल किशोरजी एवं दो सुकन्यायें हैं। राधेश्यामजी के एक पुत्र सतीश कुमार एवं 3 सुकन्यायें शशीकला, सरला, मीनाक्षी हैं। सरला ने नागपुर विश्व विद्यालय में बी. ए. में प्रथम स्थान प्राप्त किया है । सरलाजी ने एम.ए. होमइकोनोमिक्स में सन् 1981 में प्रथम श्रेणी प्राप्त की है। श्री रामजी के पुत्र अनंत प्रसाद और स्नेहलता, ममता, वन्दना तीन सुकन्यायें हैं। श्री कमल किशोरजी के दो पुत्र आनन्द कुमार व प्रवीन कुमार तथा एक सुकन्या आरती है। श्री नरसिंह प्रसादजी के चार सुपुत्र रमाकान्तजी, विजयकुमारजी, रामाकिशनजी और पवनकुमारजी हैं। प्रथम पुत्र का विवाह अकोला में झुंझुनूवाला परिवार में हजारीमलजी की कन्या रत्नीबाई से हुआ है। दूसरे पुत्र का विवाह राजेन्द्र गांव में, तीसरे का विवाह पाचोरा में और चौथे का विवाह अकोला में सम्पन्न हुआ है। डा. रमाकान्तजी के पुत्र डा. कृष्ण कुमार हैं। श्री विजयकुमारजी, घनश्याम के पिता हैं व श्री रामकिशनजी, देवेश के पिता हैं।

श्री गोविन्दप्रसादजी एडवोकेट हैं। आपने एल.एल.बी. की परीक्षा पास की है। आपके दो सुपुत्र हैं बड़े गोपालकृष्णजी एम.कोम. और छोटे लक्ष्मीकान्तजी है। गोपालकृष्णजी का विवाह हिंगोली में लक्ष्मीनारायणजी कागजी वाला की सुकन्या लीलाजी से हुआ है। इनके एक शिशु श्री निवासजी हैं। लक्ष्मीकान्तजी बी.ई. मैक. इंजिनियर हैं। आपका विवाह अकोला में श्यामलालजी बगड़िया की सुकन्या प्रेमलताजी से हुआ है। इनके एक पुत्र रवि है।

श्री हरिरामजी के चार पुत्र भालचन्द्रजी, ओमप्रकाशजी, नरेन्द्र कुमारजी तथा चन्द्रकान्तजी हैं। श्री भालचन्दजी के पुत्र वीरेन्द्र और आशीष हैं। श्री ओमप्रकाशजी अतुल के पिता हैं। श्री नरेन्द्रजी के सुपुत्र का नाम संदीपकुमार एवं श्री चन्द्रकान्त के पुत्र आयुष हैं। श्री सच्चिदानन्दजी अपने पिता की छठी संतान हैं। आपके तीन सुपुत्र राजेश कुमार, नरेश कुमार और दिनेश कुमार हैं। श्री दिनेशकुमार ने पोलेण्ड, स्वीडन, फिनलैण्ड, जर्मनी, की यात्रा भारत सरकार की ओर से पेपर टेक्नोलोजी विषय का अध्ययन करने के लिये सन् 1959 में की थी। आप बंगाल पेपर मिल्स के वर्क्स मैनेजर रहे। इस समय पेपरमिल की स्थापना निमित्त आप नाइजीरिया में है । श्री राजेशकुमार के पुत्र आदित्य कुमार हैं। ये सभी परिवार अमरावती, भिलाई, यवतमाल, बम्बई में बसे हुये हैं। श्रीरामजी का परिवार नाइजीरिया में है।

नवदश अध्याय

सेठ श्री मोहनरामजी की संतति-बल्लरी

सेठ मोहनरामजी के परिचय में एक बात अधिक महत्त्वपूर्ण मिलती है। वह यह है कि उन्होंने अपने जीवन में नगर सेठ का श्री सम्पन्न जीवन जीया। शान-शौकत और प्रभाव, मानवता, मर्यादा बराबर उनके साथ लगे रहे। विशाल हवेली, विस्तृत व्यापार, रमणीय उद्यान और सबसे बढ़कर अजमेर क्षेत्र के ही नहीं किन्तु दूर दूर तक के प्रभावशाली व्यक्तियों से स्नेह संपर्क उनकी निधियाँ रहीं। जब कभी यात्रा पर चाहे धार्मिक यात्रा हो चाहे व्यापारिक गये तो सैंकड़ों मनुष्य, हाथी, घोड़े साथ रहते थे। सीमान्त पर दोनों ओर के अधिकारी स्वागत करते और सुरक्षा का पूरा ध्यान रखकर गनतव्य स्थान पर पहुँचा देते। अजमेर के प्रथम गणमान्य व्यवसायी की सेवाओं का प्रतिफल तत्कालीन सत्ता द्वारा दिये जा रहे मान सम्मान में फलित हुआ था।

सेठ मोहनरामजी के दो पुत्र थे गणेशदासजी, और शिवबक्सजी। इन दोनों भाईयों ने समृद्ध सेठाई का जीवन जीया। संग्रह के कागजों से ज्ञात होता है कि जब कभी गणेश दास जी स्वयं या उनके मुनीम गुमाशते यात्रा पर जाते तो उन्हें राजकीय सुरक्षा अवश्य प्रदान की जाती थी। गणेशदासजी का जन्म सम्भवतः ई. 1790-95 की अवधि में हुआ था। आपके कोई संतान नहीं थी अतः आपने अपने छोटे भाई शिवबक्सजी के पुत्र श्री निवासजी को दत्तक रूप में स्वीकार कर लिया। पिता के समय के व्यापार को इन्होंने और अधिक सुव्यविस्थित कर लिया। मोहनराम गणेशदास के नाम से इनका सारा कारोबार होता था।

मोहनरामजी ने अपने जीवन काल में ही अपने दोनो पुत्रों को व्यापार व्यवसाय में अच्छी प्रकार व्यवस्थित कर दिया था और बड़े बड़े अंग्रेज अधिकारियों से उनका परिचय

करा दिया था। इससे उनको बराबर राज से सुविधायें मिलती रही। जयपुर राज से इनका लेन देन चलता रहता था यह बात जयपुर के तत्कालीन दीवान चांदसिंह एवं हुकमचन्द के पत्र से ज्ञात होती है, जो उन्होंने सेठ शिववक्सजी गनेड़ीवाला को लिखा था। पत्र में 74057 रूपये ऋण लेने का व उसके चुकारे की व्यवस्था का उल्लेख किया गया है। यह पत्र सावण बदि, 9 सवत् 1886 का है। श्री गणेशदासजी के सम्बन्ध में अधिक विवरण प्राप्त नहीं है। उनके अस्थि फूल सन् 1846 में हरिद्वार पहुचे थे। इसी समय के आसपास इनकी मृत्यु मानी जा सकती है। सन् 1839 में इनके गंगास्नान का उल्लेख प्राप्त होता है।

दूसरे भाई शिवबक्सजी का जन्म अनुमातः 1795-1800 ई. की अवधि में हुआ था। आप अपनी माता के साथ बद्रीनाथ की तीर्थयात्रा पर गये थे। आपकी पत्नी रत्नीबाई भी इस यात्रा में आपके साथ थी। सन् 1885 के आस–पास आपकी मृत्यु हुई थी। आपकी मृत्यु के कुछ वर्षों तक आपकी धर्मपत्नी भी दिवंगत हो चुकी थी। दम्पती ने लम्बी सुखद आयु का उपभोग किया था।

सेठ गणेशदास के दत्तक पुत्र श्री निवासजी का जन्म सन् 1825 में हुआ था। वे मीठड़ी से गोद आये थे। इनके सम्बन्ध में भी विशेष वृत्त प्राप्त नहीं है। जीवन के अंतिम दिनों में वे अपने व्यवसाय को सम्हालने के लिये खामगांव में रहने लगे थे। इन्होंने कई बड़े ठेके लिये थे जिनमें उनको बड़ा घाटा लगा था। उन्होंने बड़े धैर्यपूर्वक इस विपरीत स्थिति में भी साहस बनाये रखा। सन् 1893 में जब आपके छोटे भाई शिवबक्सजी के पुत्र बालाबक्सजी का असामयिक निधन हो गया तो आप खामगांव से आकर उनके अस्थिफूल हरिद्वार ले गये थे। सन् 1902 में आपने अपनी पत्नी और पुत्रवधू के साथ ज्येष्ठ मास में श्री बद्रीनारायण की यात्रा की थी।

श्री निवासजी के कई संताने हुई थी पर कोई भी जीवित नही बची। हरिद्वार की बही से ज्ञात होता है कि उनके एक पुत्र रामानन्ददास नामक थे पर उनका निधन निसंतान अवस्था में ही गया था। इसके कुछ साल बाद उनके एक मात्र अवशिष्ट पुत्र नथमलजी भी असमय में काल कवलित हो गये। इस समय श्री निवासजी प्रायः 70 साल के वृद्ध हो गये थे। वृद्धावस्था में इस हृदय विदारक दुख को सहन करने की शक्ति उनमें नहीं रही थी। सबसे दुखभरी बात यह थी कि नथमलजी का निधन विवाह के कुछ समय पश्चात् हो गया था। श्री निवासजी इस विधुरा पुत्र वधू को अपने साथ हरिद्वार और बद्रीधाम ले गये थे। उसका नाम गोदावारी बाई था। इस कठिन दुख को झेलने में असमर्थ होकर श्री निवासजी ने देह विसर्जन कर दिया। उनके फूल सन् 1903 में हरिद्वार पहुचाये गये थे।

शिवबक्सजी के एक मात्र पुत्र बालाबक्सजी का जन्म अनुमानतः सन् 1820 में हुआ था। इनका तथा इनकी पत्नी का निधन क्रमशः 1893 और 1895 ई. में हुआ था। 1844 में शिमला घूमते हुये वे हरिद्वार स्नान को पहुचे थे। इनकी धर्मपत्नी का नाम गंगाबाई था।

सेठ बालाबक्सजी के दो पुत्र हुये थे केसरीमलजी और भगवती प्रसादजी। ये दोनों पुत्र निसंतान रहे। इनके बारे में विशेष वृत प्राप्त नहीं है। इस प्रकार सेठ मोहनरामजी का वंश क्रम चौथी पीढ़ी में समाप्त हो गया।

सन् 1903 के समय में मोहनरामजी के आवास में केवल दो विधवायें काल यापन कर रही थीं। इनमें एक थी सेठ श्री निवासजी की धर्मपत्नी नथमलजी की बहू गोदावरीबाई छोटी दादी थी। दूसरी केसरीमलजी की धर्मपत्नी चीमाबाई थी। चूकि कुल में कोई पुरूष नहीं बचा था अतः सगे सम्बन्धी नौकर गुमाश्ते सम्पत्ति के बड़े भाग को हड़प गये। इस स्थिति में उन विधवाओं के कष्ट की कल्पना सहज में ही की जा सकती है।

इस स्थिति में बड़ी दादी की राय लेकर गोदावरी बाई ने जोधुपुर राज्य के कन्दोई परिवार सूसाराम मनसाराम से मिश्रीलाल को दत्तक के रूप में स्वीकार कर लिया। दत्तक आते समय वे बालक ही थे। इनका विवाह सिणगारा में जो किशनगढ रियासत में हैं, एक अग्रवाल परिवार की सुकन्या भँवरी बाई से हुआ था। इस शुभविवाह से चार पुत्र प्राप्त हुये।

श्री भगवानदास का जन्म 1920 में हुआ था। मदनगोपाल का जन्म 1922, बाबूलाल जी का 1924, 12 अप्रैल, और किश्नगोपालजी का जन्म सन् 1926 जुलाई को हुआ था। इन चारों भाईयों से बड़ी बहन का नाम सूरजबाई था जो अजमेर में श्री श्यामसुन्दरजी डीडवाणिया को विवाही गयी थी। सबसे कनिष्ट संतान बाई चन्द्रकला थी। इनका विवाह अजमेर में श्री रामप्रसादजी फतेहपुरिया के साथ सम्पन्न हुआ है। चन्द्रकला बाई अभी वर्तमान है।

सेठ मोहनरामजी के पौत्र श्री निवासजी का विवाह मोहनरामजी की उपस्थिति में अकोलावाले गोयनका परिवार में गुलावरायजी गोयनका की सुकन्या जड़ावबाई से हुआ था। ये गुलावराय जी अजमेर की गनेड़ीवाला की पेड़ी पर मुनीम नियुक्त हो गये। इनके समय पर पेड़ी पर कुछ गोलमाल हो गया तो गणेशदासजी लक्ष्मणगढ़ से चलकर अजमेर आये। मुनीम मनही मन डर रहे थे कि क्या दंड मिले। अपनी पूजनीया माता के आदेशानुसार दण्ड सुनाने का अवसर आया। यह सुनकर सभी चकित थे कि मुनीम को उस दुकान का सम्पूर्ण मालिकाना अधिकार दे दिया गया था। यह दण्ड के रूप में एक पारितोषिक था जिससे भविष्य में बराबर सावधानी रखने की प्रेरणा मिलती थी।

आगे चलकर मुनीमजी का व्यापार फला फूला फलस्वरूप आकोला में उनकी गुलाबराय गोविन्दराम नामक फर्म स्थापित हो गई। यह फर्म घनाढ्य फर्मों में से एक थी।

गणेशदासजी के पोत्र नथमल के देहान्त के समय जड़ावबाई जीवित थी। इस समय अकोला परिवार ने सेठ गणेशदास की उदारता का बदला चुकाया। वे मिश्रीलाल को अकोला ले गये और वहां उन्हें अपनी करोड़पति फर्म का हैड मुनीम बना दिया। लक्ष्मी की अस्थिरता और चंचलता का यह एक ऐसा विधान था जिसकी कल्पना सहज में नहीं की जा सकती। कभी किसी पर भ्रूभंग होता, कभी कृपा का संभार किसी को प्राप्त होता। लक्ष्मी की इस अस्थिरता और चंचलता का उल्लेख महाकवि रहीम ने पुरूष पुरातन की वधू क्यों न चंचला होय कहकर किया है।

मिश्रीलालजी अकोला में हैड मुनीम के रूप में 25-30 वर्ष तक काम करते रहे। प्रायः 40 वर्ष की आयु होने पर वापिस अजमेर आ गये। अजमेर में इस समय तक आपके पुत्रों ने हार्डवेयर का कार्य अच्छी प्रकार स्थापित कर लिया था। इस प्रकार मिश्रीलालजी के उन्नयन में उनके प्रपितामह गणेशदासजी का पुण्य आड़े आया।

जड़ावबाई ने कितनी आयु पाई इसका कोई सुनिश्चित विवरण प्राप्त नहीं है। उनकी मृत्यु सम्भवतः सन् 1910 में प्रायः 80 वर्ष की अवस्था में हुई। छोटी दादी गोदावारी बाई सन् 1961 में दिवंगत हुई। मिश्रीलालजी ने अपनी इस माता की सेवा इतने तनमन से की कि कोई स्वयं का पुत्र भी क्या करेगा। देहान्त के पूर्व 1950 में वे अपने तीन पोतों के साथ मथुरा वृंदावन की यात्रा कर चुकी थी। साथ में छोटी देवरानी चीमा भी थी।

सेठ बालावक्सजी के एक पुत्र भगवतीप्रसादजी थे। ये जल्दी ही गुजर गये तो सन् 1895 में बालावक्सजी की धर्मपत्नी ने केसरीमल जी को दत्तक में लिया था। इनका विवाह चीमाबाई से हुआ था। इधर बालावक्सजी की धर्मपत्नी का शरीर अधिक नहीं रहा। केसरीमलजी ने रेलवे के वर्कशाप में नौकरी कर ली। इनके एक पुत्र हुआ पर वह शीघ्र कालवलित हो गया। वे स्वयं सन् 1937 में 50 वर्ष की अवस्था में चले गये। इस प्रकार पतिविहीना चीमाबाई ने अपना शेष समय गोदावारी बाई के संरक्षण में बिताया। मृत्यु के पूर्व सन् 1933 में ये अपने बेटे के साथ बद्रीनारायण धाम की यात्रा पर गयी थीं। इनकी मृत्यु अजमेर में सन् 1958 में हुई। इस प्रकार इनकी मृत्यु के साथ ही शिवबक्सजी की वंश वल्लरी का अंत हो गया।

मिश्रीलालजी ने 52 वर्ष की आयु पायी और अजमेर में सन् 1950 में दिवंगत हुये। देहान्त के पहले हरिद्वार की यात्रा इन्होंने की थी। उनके ज्येष्ठ पुत्र भगवानदासजी दिव्य गुण विभूषित थे। इनके गुणों से प्रसन्न होकर तत्कालीन वायसराय ने जलसे में अपने

हाथ की घड़ी खोलकर इनको भेंट स्वरूप दे दी थी। ये सिर्फ 11 साल जीवित रहे। इनके बाकी पुत्र श्री मदनगोपालजी, श्री बाबूलाल एवं श्री कृष्णगोपालजी अजमेर में रहकर व्यवसाय करते रहे। आप स्वभाव से गंभीर और व्यवसाय कुशल हैं। अपनी व्यापारिक कुशलता के बल पर अपने व्यवसाय को आप लोगों ने अच्छी प्रकार सुव्यवस्थित कर रखा है। अपनी पूजनीया माता के आदेशानुसार परिवार में इस तरह संपति का विभाजन कर लिया कि किसी को इसकी भनक भी नहीं पड़ी। आज तीनों भाई पूर्ण स्नेह भाव से अजमेर में अपने व्यवसाय की निरन्तर वृद्धि कर रहे हैं।

श्री मदनगोपालजी का शुभविवाह अजमेर में फकीरचन्दजी मंडीवाले की सुकन्या रत्नीदेवी से 1937 में हुआ था। कुलशीला वधू ने तीन पुत्र श्री रामरिछपाल, हरीराम व बेनीगोपाल और तीन कन्याओं को जन्म दिया। बड़ी कन्या शान्ति बाई का विवाह बालोतरा में चम्पालालजी बाजारी के साथ हुआ है। उससे छोटी बाई दयावती जी का विवाह नीमच में नवलकिशोर धारड़ीवाले के साथ हुआ है। सबसे छोटी कन्या भगवती देवी का विवाह नीमच में छीतरमल जी सिंगोली वाले के साथ हुआ है।

सबसे बड़े पुत्र रामरिछपाल का विवाह अजमेर में ही श्री मोतीलाल जी कन्दोई की सुकन्या शुकुन्तलादेवी के साथ सम्पन्न हुआ है। इनके एक पुत्र चतुर्भुज और दो कन्यायें साधना व बबीता है। रामरिछ पाल जी के अनुज बेणीगोपाल जी है। आप ग्रेजुएट हैं। आपका विवाह नागौर के श्री भंवरलालजी पित्ती की सुकन्या चन्द्रकान्तजी के साथ हुआ है। इनके एक शिशु भूपेश और दो सुकन्यायें पार्वती एवं नैना कुमारी हैं।

श्री मदनगोपालजी से छोटे भाई श्री बाबूलालजी हैं। आपका विवाह अजमेर में बद्री नारायण औंकारमल अरडकावाले फर्म में श्री ओंकार मलजी की सुपुत्री रामजोत बाई से सन् 1939 में हुआ है। इनके तीन पुत्र और चार कन्यायें हैं। दूसरी बाई रूकमणी अजमेर में रमेश चन्द्रजी को विवाही गयी है। तीसरी कन्या निर्मला का विवाह अजमेर में महेन्द्रकुमार कानोड़िया के साथ सम्पन्न हुआ है। चौथी कन्या उर्मिला बम्बई में राजकुमार को विवाही गयी है। सभी जामाता कुल के लोग अपने को सिर्फ अग्रवाल ही लिखते हैं।

श्री बाबूलालजी के पुत्रों में बड़े श्री ओमप्रकाश अजमेर में श्री गोपाल अग्रवाल की सुकन्या सुशीला देवी के साथ विवाहे गये हैं। दूसरे पुत्र लक्ष्मीनारायण बखनदासजी की सुकन्या शान्ति देवी के साथ विवाहे गये हे। सबसे छोटे पुत्र श्री सुदर्शन कुमार हैं जिनका विवाह बद्रीनारायण कुचामण वाले की सुकन्या मालती देवी के साथ हुआ है।

श्री ओमप्रकाश के विनोद एवं संजीव नामक दो सुपुत्र हैं तथा अनीता और सविता नामक दो सुकन्याये हैं। श्री लक्ष्मीनारायणजी के एक सुपुत्र मनीषकुमार एवं दो कन्यायें

माला व श्वेता हैं। श्री सुदर्शन कुमार के पुत्र का नाम प्रखर एवं कन्या का नाम स्तुति है।

श्री मिश्रीलाल के कनिष्ट पुत्र श्री किशनगोपाल हैं। आपका विवाह सन् 1946 में श्री राधाकृष्णजी जालान की सुकन्या परमेश्वरी देवी के साथ हुआ है। आपको तीन सौभाग्यवान पुत्र रत्न प्राप्त हुये हैं और दो आयुष्मती कन्यायें प्राप्त हुई हैं। सबसे बड़ी कन्या शकुन्तला का विवाह नीमच में गिरीराजजी गोयल के सुपुत्र बद्री लालजी के साथ सम्पन्न हुआ है। आपके बड़े पुत्र श्री नरेन्द्र कुमार हैं जिनका जन्म पौषशुक्ला अष्टमी सं. 2012 में हुआ है। आपका विवाह मन्दसौर में श्री माधोराम जी की सुकन्या सुमन के साथ हुआ है। आपके एक कन्या सुनैना है। श्री कृष्णगोपाल जी के दूसरे पुत्र श्री विजेन्द्रकुमार है जिनका जन्म मंगसिर सुदि पूनम सं. 2014 में हुआ। आप बी.कोम. एल. एल.बी. हैं। तीसरे श्री गजेन्द्रकुमार हैं जिनका जन्म पौष शुक्ला षष्ठी सं. 2016 में हुआ है।

आप तीनों भ्राता सेठ मोहनलालजी की छठी पीढ़ी में हैं। आपने व्यवसाय व्यवहार और सत्कर्म से अपने पूर्वजों का नाम रोशन कर रहे हैं। आप तीनों भाईयों का परिवार अजमेर में बसा हुआ है।

तृतीय–खण्ड



चित्रकार श्री राजकुमार गनेड़ीवाला की कलाकृति "गूजरी"

गनेड़ीवाला और बिड़ला
कुछ भ्रांतियों का निराकरण

गनेड़ीवाला वंश के इतिहास में बिड़लाओं के सम्बन्ध में यह अध्याय विशेष कारणवश दिया जा रहा है। वह विशिष्ट कारण यह है कि हाल ही में (सन् 1985) प्रकाशित कर्मयोगी घनश्यामदास[1] नामक पुस्तक में गनेड़ीवाला वंश पर कुछ निन्दनीय आक्षेप किये गये हैं जो नितान्त सारहीन, अतथ्यात्मक एवं निराधार हैं। किसी भी व्यक्ति को अपने पूर्वजों की कीर्ति एवं यश की गाथाओं को उजागर करने या उन्हें प्रकाशित करने का पूरा अधिकार है पर अगर उस यशोगाथा में किसी अन्य कुल के व्यक्तियों पर निराधार आरोप लगाये जावें एवं ऐसी बातों का उल्लेख किया जावे जो उस कुल की गौरव-गरिमा को धूलि धूसरित करती हो तो यह प्रयास सामान्य शिष्टाचार एवं लोकाचार दोनों की दृष्टि से अशोभनीय एवं निन्दनीय ही कहा जावेगा। किसी भी व्यक्ति के सम्बन्ध में अप्रिय बात का उल्लेख किसी प्रकाशन में करना अपने आप में अनुचित है और उस समय यह बात और भी निंदनीय हो जाती है जब वे उल्लेख पूर्णतया आधारहीन और अतथ्यात्मक हो तथा उन व्यक्तियों से सम्बन्धित हो जोकि दिवंगत हो चुके हैं।

अपने पूर्वजों की यशोगाथा जिस तरह सभी को आनन्दित करती है उसी प्रकार उनकी अकारण निन्दा सबको असह्य वेदना देने वाली होती है। "कर्मयागी घनश्याम दास" में गनेड़ी वाला कुल पुरूषों के बारे में किये गये अतथ्यात्मक उल्लेखों से इस विशाल परिवार के सैंकड़ों लोगों के मन को जबर्दस्त ठेस लगी है एवं उन्हें मर्मान्तक पीड़ा हुई है।

श्री के.के. बिड़ला भारतवर्ष के जाने पहचाने सुप्रख्यात उद्योगपति हैं और देश काल को जानने वाले एक सुसभ्य नागरिक भी। इसके अतिरिक्त बिड़लों तथा गनेड़ीवालों दोनों की पितृभूमि शेखावाटी है अतः सदा के सहवासी पड़ोसी उस गनेड़ीवाला परिवार पर जिसके यहां श्री के.के. बिड़ला के सरदादा शोभारामजी आजीवन मुनीम बने रहे असत्य आरोप

---

1 कर्मयागी घनश्यामदास डा. लक्ष्मी नारायण लाल, हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन नई दिल्ली सन् 1985

लगाना कदापि उचित न था। न केवल अकेले शोभारामजी अपितु उनके दो सगे भाई रामधनदासजी और चुन्नीलालजी भी अजमेर में गनेड़ीवाला सेठों के यहां मुनीमी करते रहे। आगे चल कर शोभारामजी के सगे भाई रामधनजी के पुत्र लालचन्दजी बिड़ला भी गनेड़ीवाला सेठों की सर्विस में शामिल हो गये। वे विक्रम सम्वत् 1927-28 तक बने रहे।

पिलानी निवासी बिड़ला परिवार के ऊपरलिखित चार सदस्यों के अलावा श्री रामरतन बिड़ला, श्री गम्भीरमल बिड़ला भी गनेड़ीवाला सेठों की सर्विस में थे। इस प्रकार बिड़ला परिवार के 6 सदस्य मुनीम थे। अब तक तो बिड़ला परिवार के अकेले शोभारामजी के ही मुनीम होने की धुन्धली सी जानकारी थी। वह भी केवल बड़े-बूढ़ों तक सीमित थी। वर्तमान युवा सदस्यों को तो शोभारामजी के भी मुनीम होने की जानकारी नहीं थी। किन्तु "कर्मयोगी घनश्याम दास" ग्रन्थ में जब गनेड़ीवाला परिवार पर अतथ्य असत्य आरोप लगाया गया, तब गनेड़ीवाला समाज के आबाल वृद्ध सभी सदस्य चौकन्ने हो गये और इस अनुचित आरोप का उत्तर देने हेतु जब लगभग 200 वर्ष पुरानी बहियां और कागजात टटोले गये तो उनके अवलोकन और अध्ययन से ज्ञात हुआ कि बिड़ला परिवार के ऊपरलिखित 6 व्यक्ति तो गनेड़ीवाला सेठों की सर्विस में थे ही, इनके सातवें सेठ शिवनारायण जी बिड़ला भी सम्वत् 1915 में शोभारामजी के दिवंगत होने के अनन्तर 6/7 साल तक गनेड़ीवाला सेठों की सर्विस करते रहे। बाद में एक निन्दनीय घटना, जिसका उल्लेख हम करना नहीं चाहते, के कारण बम्बई जाकर स्वतन्त्र व्यवसाय करने लगे। बिड़ला परिवार के अलावा पिलानी के अन्य कितने ही व्यक्ति, जिनमें पिलानी के मेघराज महाजन का नाम बहियों में मिलता है, मुनीम थे, जो शोभारामजी के कारण सर्विस में शामिल हुए होंगे।

यहां यह स्मरणीय है कि श्री घनश्याम दासजी बिड़ला ने स्व लिखित "बिखरे विचारों की भरोटी" नामक पुस्तक में तथाकथित आरोप का किंचित मात्र संकेत भी नहीं दिया है। डाक्टर लक्ष्मी नारायण लाल और श्री के.के. बिड़ला दोनों ही यह तो मानेंगे कि हम दोनों की अपेक्षा श्री घनश्याम दासजी की जानकारी व्यापक और विशाल थी। अतः ऐसी कोई बात होती तो वे स्वयं लिखते। 'बिखरे विचारों की भरोटी' में क्यों नहीं लिखते? डाक्टर साहब को यह सोचना समझना चाहिए था कि बिड़ला परिवार पर पुस्तकें लिखने वाले अनेक लेखक उनके पूर्व हो चुके हैं। उनमें से किसी एक ने भी गनेड़ीवाला परिवार पर आरोप लगाना तो दूर रहा, तथा-कथित आरोप का धुन्धला सा संकेत भी न किया। उन्होंने तो यह लिखा है कि श्री शिवनारायणजी गनेड़ीवालों का आशीर्वाद लेने अजमेर गये जब वे बम्बई जा रहे थे।

"कर्मयोगी घनश्याम दास" ग्रन्थ में गनेड़ीवाला परिवार के पूर्वजों पर अकारण लगाये गये अतथ्यात्मक आरोप का निराकरण करने के विचार से जब हमने पुरानी बहियां और

पुराने पत्रों की शोध-खोज की तो हमें जूनी रोकड़ बहियों, पुरानी खाता बहियों, नकल बहियों से सप्रमाण ज्ञात हुआ कि गनेड़ीवाला सेठों के यहाँ सर्विस करते हुए शोभारामजी, रामधन दासजी, चुन्नीलालजी, तीनों भाईयों और स्वयं शिवनारायणजी बिड़ला ने समय-समय पर प्रसंग वश जो पत्र गनेड़ीवाल सेठों के नाम लिखे हैं, जिन्हें हम प्रकाशित कर रहे हैं, वे पत्र कितनी शोभनीय, शिष्टता, सज्जनता, और शालीनता से भरे हुए हैं। इन पत्रों को पढ़ने वाले भी पत्र लेखकों की विनम्रता से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे। ऐसे शिष्ट, सभ्य और सुसंस्कार सम्पन्न पूर्वजों की सन्तान होते हुए भी श्री के.के. बिड़ला ने पूर्वजों की शिष्टाचार परम्परा के प्रतिकूल जो व्यवहार सहवासी पड़ोसी गनेड़ीवाला परिवार के पूर्वजों के लिये प्रतिपादित किया है, वह उनके स्वरूप तथा बड़प्पन के अनुरूप नहीं है।

इस प्रसंग में हमें राजा बलदेव दासजी बिड़ला का विनम्रता से भरा हुआ वह मृदुल मंडित व्यवहार याद आ जाता है जिसकी रोचक और शिक्षाप्रद कहानी पं. सम्पत कुमार जी मिश्र सुनाया करते थे। लछमनगढ़ नगर के बेताज के राजा श्री मुरलीधरजी गनेड़ीवाला बम्बई गये थे। बम्बई में वे गनेड़ीवाला परिवार के पुराने सम्बन्धी चेनीराम जेसराज पोद्दार के यहां ठहरे थे जहां अपनी बम्बई की प्रथम यात्रा में श्री शिव नारायणजी बिड़ला ने विश्राम पाया था। राजा बलदेवदासजी बिड़ला को जब यह मालूम हुआ कि सेठ मुरलीधर जी गनेड़ीवाला बम्बई आये हैं, तो वे मुरलीधर जी के निवास स्थान पर आये। समयोचित शिष्टाचार परामर्श के बाद श्री बिड़लाजी ने कहा मेरे दादोजी ने आपके पूर्वजों के यहां बहुत लम्बे समय तक और पिताजी ने कुछ समय तक सर्विस की है, अतः आप हमारे सेठ हैं। राजा साहब के ये शब्द पुष्प और फलों से झुके हुए हरे-भरे दरखत की विनम्रता को तो प्रकट करते ही हैं, राजा साहब बलदेवदास जी बिड़ला के बड़प्पन को भी बताते हैं। ये शब्द सुनकर वहां जितने भी लोग उपस्थित थे, वे राजा साहब की अतुलनीय विनम्रता पर धन्य-धन्य कहने लगे। बाद में सेठ मुरलीधर जी ने भी उनके निवास पर जाकर पारस्परिक सद्भाव की परम्परा को यथावत् निभाया।

ऐसा ही एक सुखद संयोग बम्बई के बाद कलकत्ता महानगर में भी उपस्थित हुआ। जब मारवाड़ी अग्रवाल समाज में धार्मिक विचारों को लेकर सनातनी और सुधारक नाम से दो दल बन गये थे। तब सनातनी विचारधारा के पोषकों की ओर से कलकत्ता में अखिल भारतीय सनातन धर्मावलम्बन अग्रवाल महापंचायत का महाधिवेशन आयोजित किया गया था। राजस्थानी अग्रवाल समाज में गनेड़ीवाला सेठों का सदा से जो वर्चस्व और स्वधर्म प्रेम रहा है, उसको ध्यान में रख कर उपरोक्त महाधिवेशन के अध्यक्ष पद पर लक्ष्मनगढ निवासी एवं हैदराबाद प्रवासी सेठ रामलाल जी गनेड़ीवाला को समासीन किया गया था। सेठ मुरलीधरजी के बम्बई गमन के समय जैसा शिष्टाचार उदारमना बिड़ला परिवार की ओर से उस समय बम्बई में किया गया था, ठीक वैसा ही पुण्यश्लोक परम गृहस्थ सन्त

दानवीर जुगलकिशोरजी बिड़ला की ओर से किया गया। कहाँ तो बिड़ला परिवार के वन्दनीय बड़ेरों (पूर्वजों) का निःसीम बड़प्पन से भरा हुआ यह व्यवहार, जिसे पढ़ने मात्र से सुखानुभूति होती है और कहां श्री के.के. बिड़ला के समय का यह अनुचित व्यवहार। दोनों में रात-दिन का सा अन्तर है। धन सत्ता और अपरिमित ऐश्वर्य से परिपूर्ण श्री के.के. बिड़ला अपने पूर्व पुरुषों की अपनाई हुई शिष्टाचार परम्परा को यथावत् निभाने की प्रक्रिया से कितने विमुख हो गये हैं। इसका विचार पाठक स्वयं करेंगे।

वैसे तो इस पुस्तक से पूर्व बिड़ला परिवार पर लिखी गई अनेकों पुस्तकों जैसे 1. राजा बलदेवदास बिड़ला (लेखक- जेमिनी कौशिक बरुआ) 2. बिखरे विचारों की भरोटी (लेखक- घनश्यामदास बिड़ला) 3. मरु भूमि का वह मेघ (लेखक- रामनिवास जाजू) में गनेड़ीवाला परिवार के बारे में यह लिखा गया कि श्री शोभाराम जी बिड़ला गनेड़ीवालों के यहाँ अजमेर में मुनीमी का काम करते थे व शोभाराम जी की मृत्यु के बाद-बम्बई रोजगार की तलाश में जाने से पूर्व कुल मर्यादानुसार श्री शिवनारायण जी बिड़ला ने गनेड़ीवालों का आशीर्वाद अजमेर जा कर प्राप्त किया। अब हम उक्त पुस्तक 'कर्मयोगी घनश्यामदास' की बात करते हैं, इस पुस्तक में भी लेखक ने पहले लेखकों द्वारा ऊपर वर्णित तथ्यों को तो लिखा ही पर साथ में निम्न लिखित आधारहीन तथ्य और जोड़े।

(इन ऊपर वर्णित पुस्तकों के विवरण इस पुस्तक में पृष्ठ संख्या 268 से 272 पर देखे जो सकते हैं।)

"शिवनारायणजी ने अपना स्वतंत्र व्यवसाय शुरु करने के लिये जब अजमेर में गनेड़ीवालों की नौकरी छोड़ी तब उन्होंने गनेड़ीवालों से कहा कि उनके स्वर्गीय पिता शोभा रामजी के बारे में वे पूरा हिसाब बता दें। गनेड़ीवालों ने जो हिसाब दिया, उसमें बताया गया था कि शोभारामजी से बहुत से पैसे उन्हें वसूलने हैं। शिवनारायणजी ने वचन दिया कि उनके पिताजी को जो देना है उसका एक एक पैसा वे चुका देंगे। कई वर्ष व्यतीत हो गये। अपनी योग्यता और दूरदर्शिता के कारण शिवनारायणजी ने बम्बई में सफलता पूर्वक अपने को स्थापित कर लिया। बम्बई से पिलानी लोटते हुए शिवनारायणजी, जो अब सेठ बन गये थे, अजमेर गये। वे गनेड़ीवालों से मिले और उन्होंने उनसे पूरे हिसाब की मांग की। उन्होंने मांग की कि जो पिछला बकाया उनके पिताजी को देना है, उस पर जो ब्याज बनता हो वह भी जोड़कर बताएं। गनेड़ीवालों ने ब्याज सहित हिसाब दे दिया। शिवनारायणजी ने न तो ठीक तरह से हिसाब देखा और न ही कोई प्रश्न उनसे किया और सारा पैसा गनेड़ीवालों को दे दिया। इसके बाद उन्होंने गनेड़ीवालों से कहा कि जिस कागज पर उन्होंने हिसाब दिया है, उसी पर वे हस्ताक्षर कर यह लिखकर वापिस कर दें कि उनके पिताजी को जो कुछ पैसा देना था, वह सबका सब उन्हें मिल गया है और

अब कुछ बकाया नहीं रह जाता। इस कागज को लेकर शिवनारायणजी पिलानी वापिस चले गये और हिसाब के इस कागज को उन्होंने सावधानी से अपनी तिजोरी में रख दिया।

कुछ समय बाद गनेड़ीवाला कठिनाई में फंस गये, उनका व्यापार चौपट हो गया। एक दिन वे अचानक पिलानी जा पहुँचे और शिवनारायणजी से मिले। गनेड़ीवालों ने सोचा था कि इतने वर्ष व्यतीत हो गये हैं शिवनारायणजी ने यह हिसाब सम्भाल कर नहीं रखा होगा कि उनके पिताजी को कितना क़र्ज वापिस करना है। यही सोचकर गनेड़ीवालों ने शिवनारायणजी से कहा कि उन्हें अब भी उनके पिताजी के ऊपर कर्ज का बहुत सा पैसा वापिस लेना है। शिवनारायणजी को आश्चर्य हुआ, लेकिन उन्होंने गनेड़ीवालों से ठहरने के लिये कहा। उन्होंने हिसाब का वह कागज़, जो सम्भाल कर रखा था, खोज निकाला। उस कागज़ को उन्होंने गनेड़ीवालों को दिखाया। उसमें स्पष्ट रूप से लिखा था कि शोभाराम जी से जो कुछ भी लेना था, वह सारे का सारा पैसा उनके लड़के शिवनारायणजी से प्राप्त कर लिया गया है। यह देखकर गनेड़ीवाले हक्के-बक्के हो गये। उन्हें बहुत शर्मिन्दा होना पड़ा। शिवनारायणजी ने तब उनसे कहा कि यदि इस समय उन्हें आर्थिक कष्ट आ पड़ा है तो उनके लिये अच्छा यही होता कि वे आर्थिक सहायता की मांग करते। उन्होंने कहा कि उनके पिताजी के सम्बन्ध गनेड़ीवालों के परिवार के साथ दीर्घ कालीन रहे हैं। इसलिये यदि वे अब आर्थिक सहायता की मांग करते तो शिवनारायणजी कदापि इन्कार न करते। इसके बाद उनके इस व्यवहार पर थोड़ी सी शिकायत करने के बाद शिवनारायणजी ने गनेड़ीवालों को काफी पैसा दिया।" (पृष्ट 23, 24)

अन्यत्र (पृष्ठ 25) लिखा है "जो सपना लेकर शिवनारायणजीने अजमेर में मुनीमगिरी ठुकराई थी और बम्बई प्रवास किया था, वह सपना पूरा हुआ"।

"अठारह सौ उनसठ में अजमेर में शोभारामजी का देहान्त हो गया। उस समय शोभारामजी के पुत्र शिवनारायणजी की आयु केवल सोलह वर्ष की थी"। (पृष्ट 20)

"सन् 1909 करीब बहत्तर वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया"। (पृष्ट 49)

उपर्युक्त उद्धरण का सीधा सादा अर्थ यह है कि जब गनेड़ीवाला आर्थिक विपत्ति में फँस गये तो उन रुपयों को फिर मांगने लगे जो श्री शिवनारायणजी ने पहले ही चुका दिये थे। इसका फलितार्थ यह हुआ की गनेड़ीवाला अच्छी तरह यह जानते हुये भी कि कोई रुपया श्री शोभाराम सम्बन्धी बकाया नहीं है फिर भी उसी चुकाये गये रुपयों की फिर मांग करने जा पहुँचे। इस उद्धरण को पढ़कर किसी भी पाठक के सामने गनेड़ीवालों का जो स्वरूप आता है वह छल कपट से भरे हुये व्यक्ति के स्वरूप की तरह का है। इसके पूर्व की उपर्युक्त बात की तथ्यहीनता और निराधारता को उजागर करें उपर्युक्त कथन

पर शालीनता की दृष्टि से भी थोड़ा विचार कर लें। किसी भी परिवार की कीर्ति-कथा की भित्ति अन्य परिवार की निन्दा की भूमिका पर खड़ी नहीं की जाती। थोड़ी देर तक के लिये मान लें कि जो कुछ उपर्युक्त उद्धरण में कहा गया है अगर वह सत्य भी हो तो शालीनता एवं सामाजिक शिष्टाचार के नाते उसको देना क्या उचित था। इसका उल्लेख किये बिना शिवनारायणजी की कौन सी उपलब्धि कम हो जाती। दूसरी ओर इस उल्लेख से (जो बिल्कुल निराधार है) शिवनाराणजी की उदारता दिखाने की चेष्टा की गयी है वह क्या सच्चे अर्थ में बढ़ गयी है। अप्रिय सत्य नहीं कहना चाहिये यह सीख नयी नहीं है।

अब इस कथन के तथ्यों पर विचार कर लें। कोई भी लेखक उन बातों का उल्लेख ही अपनी रचना में करता है जिसके तथ्य उसके पास हैं या उन उल्लेखों की सत्यता वह प्रमाणित कर सके जो उसने अपनी पुस्तक में दिये हैं। यह किसी भी लेखक का प्राथमिक एवं पवित्र दायित्त्व है। पुस्तक में उक्त उद्धरण के सम्बन्ध में कोई प्रमाण नहीं दिया गया है ऐसी स्थिति में यह स्पष्ट है कि लेखक डा. लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने लेखकीय दायित्व का पालन नहीं किया। किसी कुल विशेष पर आक्षेप कारक प्रसंग पुस्तक में देते समय उनके प्रमाणों की जाँच करनी चाहिये थी जो नहीं की गयी। किसी के कहने मात्र से इनका समावेश पुस्तक में कर दिया गया प्रतीत होता है। ज्ञात नहीं वह कौन सा लाभ-लोभ या प्रलोभन था जिसके कारण डा. लाल जैसे ख्याती प्राप्त लेखक अपने प्राथमिक दायित्व को भूल बैठे और वह कर बैठे जो उन्हें नहीं करना चाहिये था। डा. लाल का शरीर अब नहीं रहा है अतः इस सम्बन्ध में कुछ और कहना उचित नहीं है।

डा. लाल के साथ-साथ उनसे अधिक उत्तरदायित्त्व श्री के.के. बिड़ला का है जिन्होंने अपने दो शब्दों में पूरी पाण्डुलिपि को पढ़ने और सुझाव देने तथा संशोधन की बात स्वीकार की है। (पृष्ठ 13- कर्मयोगी घनश्यामदास– संस्थान की इच्छा थी कि यह पुस्तक 11 जून, 1983 को लंदन में उनकी (श्री घनश्यामदासजी) मृत्यु के बाद उनकी पहली जन्मतिथी रामनवमी पर प्रकाशित हो जावे। मुझे खेद है कि बहुत प्रयत्न करने के बावजूद हम इस पुस्तक को पहले प्रकाशित नहीं कर सके क्योंकि प्रतिष्ठान के वरिष्ठ अधिकारी यह चाहते थे कि मैं स्वयं पूरी पांडुलिपि को पढ़ूं और अपने सुझाव दूं और जहाँ आवश्यक हो, वहाँ उसमें संशोधन करुं। इन्ही कारणों से बहुत समय लग गया)। यह अतीव आश्चर्य की बात है कि पुस्तक में दिये गये निंदनीय आक्षेप ज्यों के त्यों रहे और श्री बिड़ला ने उनमें संशोधन आवश्यक नहीं माना। वस्तुतः यह उनकी सहमति का द्योतक है।

पुस्तक में उक्त उद्धरणों से सम्बन्धित व्यक्तियों के सम्बन्ध में अशुद्ध तथ्यों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना उचित होगा। पृष्ठ 20 पर लिखा गया है कि अठारह

सो उनसठ में अजमेर में शोभारामजी का देहान्त हो गया। उस समय शोभारामजी के पुत्र शिवनारायणजी की आयु केवल 16 वर्ष की थी। आगे के पृष्ठ पर लिखा है कि बम्बई प्रवास में जाते समय शिवनारायणजी की आयु 23 वर्ष की थी।

तथ्यों के प्रकाश में उपर्युक्त कथन सही नहीं है। वस्तुतः शोभारामजी की मृत्यु के समय उनके पुत्र की आयु 19 वर्ष की थी। हमारे संग्रह की बही के अनुसार शिवनारायणजी का जन्म कार्तिक मास की कृष्ण पक्षीय 2 सम्वत् 1897 (ई. 1840) में हुआ था। इसी प्रकार बम्बई जाते समय उनकी आयु 23 वर्ष न होकर 26 वर्ष थी। शिवनारायणजी की मृत्यु के समय आयु 72 के करीब नहीं थी जैसा कि पुस्तक में लिखा गया है। सन् 1909 में वे पूरे 69 वर्ष के थे। इन अशुद्धियों को दिखाने का हमारा मनतव्य यह है कि लेखक का और उसके संशोधक का तथ्यों के प्रति कोई मोह नहीं है।

अब उपर्युक्त पुस्तक में गनेड़ी वाला सम्बन्धी अंशों के सम्बन्ध में विचार करते हैं। यह तथ्य है कि श्री शोभारामजी तथा बिड़ला परिवार के कुछ अन्य सदस्य आशकरण, रामधन, लाल चन्द आदि श्री पूरणमलजी गनेड़ीवाला की अजमेर वाली पेड़ी पर काम करते थे। श्री शोभारामजी रोकड़ का काम करते। प्रारंभ में उनको 7 रुपये प्रति माह मिलते थे। आगे चलकर वे 300 रुपया सालाना पाने लगे थे।

गनेड़ीवाला परिवार से उनके मधुर सम्बन्ध थे। वे अधिकांश समय अजमेर में सपरिवार रहते थे और यदा कदा पिलानी जाते थे। उनके पुत्र का जन्म और उनकी स्वयं की मृत्यु भी अजमेर में ही हुई। समय समय पर उन्हें खर्चे के लिये गद्दी से रुपये दिये जाते थे। इनमें बहियों में विविध तरह के खर्चे दर्ज हैं। आवश्यकता पड़ने पर कर्मचारी को गद्दी से रुपये दिये जाते थे जो उनके वेतन से धीरे-धीरे चूकते रहते थे। कुछ आगे नाम चलते रहते। हमारे संग्रह की अनेकों वहियों में ये खर्चे दर्ज हैं। शिवनारायणजी की सगाई 4 वर्ष की अवस्था में संवत् 1901 में कर दी गयी थी। उस समय जो गहना भेजा गया था उसका सारा खर्च संवत 1901 की रोकड़ बही पन्ना नं. २२३ पर मिती बैसाख सुदी 13 को दर्ज है। कुल गहना-सामान 104 रु. आठ आने का है, व शोभारामजी के नाम लिखा हुआ है। शिवनारायणजी के अस्वस्थ होने पर राहू के जप कराने का खर्च, अंगरखी कराने का खर्च, पिलानी जाते समय कपड़ा ले जाने का खर्च, अमचूर ले जाने का खर्च, यात्रा खर्च आदि विविध खर्च बहियों में दर्ज हैं। कुछ खर्च खाते लिखे गये हैं तथा शेष संबंधित व्यक्ति के नाम लिखे गये हैं।

कभी बीमारी, विवाह आदि पर गनेड़ीवाला सेठों की तरफ से मदद ली जाती थी। इनके उल्लेख भी बहियों में दर्ज हैं। नकल बही पेज 115 पर दर्ज है कि 350 रुपये शोभाराम बिड़ला क तांई औषध भेजी पिलानी खर्च खाते नावें, 101 रुपया भाई श्री

किशनदास प्रेमसुखदास जी के नांवे मिति जेठ दूजा बदि 1 शोभाराम रामधन बिड़ला न भर दीना रामधन बिड़ला की बाई का विवाह का नूँता का (नकल वही पेज 67)। आगे चलकर बहियों में इस प्रकार के खर्चे शिवनारायणजी के नांवे भी लिखे हुये हैं।

उपर्युक्त खर्चे दिखाने का हमारा उद्देश्य यह है कि खर्चे की ये रकमें बहुत छोटी हैं। खर्चे बराबर वेतन से चूकते रहते। कुछ आगे भी चलते रहते। गद्दी से जब किसी व्यक्ति के रकम नाम लिखी जाती तो उसके वेतन की राशि को अवश्य ध्यान में रखा जाता। श्री शोभाराम पहले 7 रुपये माहवार पाते थे आगे चलकर 300 रुपये सालाना। इस प्रकार जब अचानक उनका देहान्त हो गया तो उनके नाम जो राशि थी वह बड़ी न होकर छोटी ही रही होगी। उनके कार्यकाल को देखते हुये वह कुछ सैंकड़ों तक संभवतया हो सकती है। एक पत्र के अनुसार यह रकम 10, 20 रुपये मात्र थी। यह समय उनकी मृत्यु के तीन वर्ष पूर्व था।

आरोप लगाया गया है कि इस बकाया राशि को दूसरी बार लेने गनेड़ीवाला पिलानी पहुँचे क्योंकि उनका व्यापार चौपट हो गया था। गनेड़ीवालों के उस समय बैंकिंग का काम ही मुख्यतया चलता था अतः उसके चौपट होने को कोई प्रश्न ही नहीं है। सेठ पूरण मल जी की 38 गद्दियाँ उस समय देश के विभिन्न भागों में चलती थीं। लाखों करोड़ों का उनका लेन-देन होता था। राजा महाराजाओं को वे बहुत बड़ी राशी कर्ज स्वरूप देते थे। (जैसाकि इस पुस्तक के खण्ड 4 में दिये प्राचीन दस्तावेजों से जाहिर है) लाखों रुपये लगाकर उन्होंने धार्मिक संस्थान बनाये थे। इससे उनकी समृद्धि की कल्पना सहज में ही की जा सकती है। उनके बाद उनके पुत्र सेठ प्रेमसुखदासजी के समय में यह कारोबार और भी बढ़ा और व्यापार में बराबर वृद्धि हुई। इनका निधन सन् 1913 में हुआ था। इनके बाद इनके पुत्र हरगोपाल चिमनलाल भी बहुत बड़े धनाढ्य बने रहे। इस प्रकार सेठ पूरणमलजी से लेकर हरगोपाल चिमनलाल तक कभी भी गनेड़ीवाला परिवार का न तो व्यापार चौपट हुआ और न कभी वे आर्थिक कठिनाई में फँसे। दूसरे पाठक कल्पना कर सकते हैं कि लाखों करोड़ों का धन्धा करने वाले गनेड़ीवाला परिवार कुछ सैंकड़ा बकाया रुपया माँगने अपने सामान्य से कर्मचारी के घर जा सकते हैं और वे भी उन रुपयों को माँगने जो उनको दे दिये गये बताये जाते हैं। सारी परिस्थितियों को देखते हुये यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि आरोप बेबुनियाद मनगढ़न्त और निराधार है। सेठ पूरणमलजी की समृद्धि के बारे में अनेकों ग्रन्थ जैसे अग्रवाल जाति का इतिहास आदि मुखर हैं। यही बात उनके पुत्र प्रेमसुखदासजी के बारे में है। श्री प्रेमसुखदासजी के पुत्र हरगोपाल चिमनलाल की धनाढ्यता की बात भी सुज्ञात है। मारवाड़ी जाति का इतिहास नामक पुस्तक में लिखा है :- हरगोपाल चिमनलाल यह गनेड़ीवालों का फर्म था। इस फर्म के व्यक्ति बड़े अनवी कहे जाते थे। इनमें जातीय अभिमान बहुत था और बड़े पैमाने में व्यापार होता

था (पृष्ठ 448) उपर्युक्त कथन से भी इनकी संपन्नता विदित होती है।

उपर्युक्त 1843-1909 की अवधि में अजमेर की पैड़ी के मालिक सेठ पूर्णमल, सेठ प्रेमसुखदास, सेठ हरगोपाल, सेठ चिमनलाल थे। सभी बड़े समृद्ध, सुसंपन्न वैभवशाली थे। यह बात अग्रवाल जाति का इतिहास, मारवाड़ी व्यापारियों का परिचय आदि पुस्तकें मुक्त कण्ठ से स्वीकार करती हैं। सन् 1848 तक पूरणमलजी, सन् 1856 तक प्रेमसुखदासजी, सन् 1888 तक हरगोपालजी एवं सन् 1892 से आगे तक चिमनलालजी विद्यमान थे। इनमें से किसी के भी समय में कोई आर्थिक विपत्ति नहीं आयी। इसलिये यह कहना "कुछ समय बाद गनेड़ीवाला कठिनाई में फंस गये, उनका व्यापार चौपट हो गया" बिल्कुल गलत है। इस सम्बन्ध में यह भी स्मरण रखने योग्य है कि अजमेर पैड़ी पर मुख्यतः बैंकिंग का ही काम होता था। पुस्तक के अनुसार श्री शिवनारायणजी बिड़ला ने गनेड़ीवालों को काफी पैसा दिया। यह बात भी बिना कोई प्रमाण दिये अथवा समय बताये व रकम का खुलासा किये बिना कही गयी है अतः इसके भी निराधार होने में कोई सन्देह नहीं है। उस समय तक भी श्री शिवनारायण जी की यह स्थिति नहीं बन पायी थी कि वे गनेड़ीवाला सेठों को पैसा दे सकें।

उपर्युक्त परिस्थिति जन्य साक्ष्य और बहियों के उल्लेख को मिलाकर देखने से यह बात अच्छी तरह प्रमाणित हो जाती है कि धन धान्य से संपन्न गनेड़ीवाला कुल के सेठ इस प्रकार का ओछा काम कभी नहीं कर सकते थे। वे बराबर अतुल संपत्ति के स्वामी रहे जब तक श्री शिवनारायणजी बिड़ला जिन्दा रहे। गनेड़ीवाला इतिहास को पढ़कर पाठक यह बात सहज में ही जान सकेंगे।

वैसे तो "कर्मयोगी घनश्याम दास" पुस्तक में कहीं कुछ, कहीं कुछ एक ही बात को भिन्न प्रकार से लिखा है जैसे पृष्ठ 21 पर पहले तो श्री शिवनारायण द्वारा नौकरी न करने की बात की गई फिर पृष्ठ 23 पर बम्बई जाते समय श्री शिवनारायण द्वारा गनेड़ीवालों की नौकरी छोड़ने की बात लिखी गई।

फिर भी उपर्युक्त आरोपों की असत्यता प्रमाणित करने के लिये हमने पुरानी बहियों, खातों, रोकड़ों, तलपटों को टटोला। पुराने कागजात भी देखे। इनके अध्ययन से बिल्कुल विपरीत स्थिति का दिग्दर्शन हुआ है। ऐसे पत्र प्राप्त हुये हैं जो स्थिति पर नया प्रकाश डालते हैं।

हमारी बहियों में ऐसे उल्लेख हैं जिनसे सिद्ध होता है कि अपने पिता की मृत्यु के कई साल बाद तक श्री शिवनारायण गनेड़ीवालों की अजमेर की पैड़ी पर काम करते रहे। बिड़ला परिवार पर लिखी गयी कतिपय पुस्तकों के ये उल्लेख सही नहीं है कि श्री शिवनारायण ने सर्विस नहीं की या मुनीमगिरी ठुकराई। कर्मयोगी घनश्यामदास के अनुसार

पिता की मृत्यु के सात साल बाद वे बम्बई रवाना हुये। आखिर ये सात साल उन्होंने कहाँ बिताये? वे इस दौरान क्या करते रहे? इन बातों का कोई उत्तर इन दायित्त्वहीन लेखकों के पास नहीं है। मुनीमगिरी या अन्य काम वे बराबर पेड़ी पर करते रहे थे। एसी स्थिति में मुनीमगिरी ठुकराने की बात ज्ञात नहीं कहाँ से आ गयी। बहियों के उल्लेख इस विषय में जरा भी संदेह नहीं रहने देते।

अब तक हमने 'कर्मयोगी घनश्यामदास' ग्रन्थ मे लगाये गये आरोपों के स्पष्टीकरण का प्रयास किया है। हमारा प्रयत्न प्रमाणों के आधार पर इन आरोपों की तथ्यहीनता एवं असंगति दिखाने का रहा है। अब जो पत्र मिले हैं उनमें वर्णित तथ्यों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना हम हमारा कठोर कर्त्तव्य मानते हैं। पहले सोचा था कि इन पत्रों का प्रकाशन न करना ही अच्छा है पर सारी परिस्थितियों पर विचार कर उस प्राचीन सामग्री को पाठकों के आगे रख देना ही हमने समीचीन समझा है। इससे वस्तु स्थिति स्वयंमेव स्पष्ट हो जावेगी। पाठक स्वयं जान सकेंगे कि गौरव के आस्पद कौन हैं एवं निन्दा के पात्र कौन।

पत्र संख्या 1 सामान्य समाचारों का पत्र है। यह पत्र सेठ हरगोपाल चिमनलाल गनेड़ीवाला को अजमेर से रामप्रसाद आसकरण बिड़ला ने लिखा है। पत्र में लिखा है कि शोभाराम के खाते में रकम बराबर है। कोई 10, 20 रुपया को खातो छै सोनिगह कर लेवें। इसमें खातों के धीरे-धीरे चुकता करने की बात कही गयी है। यह पत्र जेठ बदि 2, 1913 का है। इस पत्र से साबित होता है कि खाते में नांवे रकम कोई बहुत बड़ी नहीं होती थी। यह धीरे-धीरे चूकती रहती थी।

पत्र संख्या 2 महत्त्वपूर्ण है। इसमें श्री शोभारामजी की मृत्यु का समाचार है। उनकी मृत्यु पर सेठों के आश्वासन कि श्री शिवनारायण को सभी से विशेष मानकर रखेंगे अतः किसी बात से घबराना नहीं। पत्र लेखक ने इस पर लिखा है कि यह आपका 'मायतपना' है। पिलानी के पत्र में लिखा है कि आज दिन हमारे ऊपर आकाश आय पड़यो छै कुछ लिखण वाली बात रही नहीं। बालक (श्री शिवनारायण) फिकर में जल रहा है। चैत तक यहाँ आ जावेगा। फिर सेठजी की तरफ से दूसरी जगह भेजा जावेगा। पत्र लेखक ने कहा है कि आप जैसे सेठ हमारे माथे ऊपर हैं अतः हमें धीरज रखना होगा। आपकी मेहरबानी बनी रहेगी। आगे लिखा है कि आपका हाथ हमारे सिर ऊपर रहेगा तो आदमी बन जावेगा। आप पत्र लिखकर श्री शिवनारायण को धीरज दिलाना। आप मायत हो। हम तो आपके बच्चे हैं। यह पत्र फागण बदि 4, 1914 का है।

पत्र संख्या 3 में लिखा है कि जयपुर की दुकान पर श्री रामधन (बिड़ला) रह जावे तो ठीक है पर उनका अजमेर में रहना भी जरुरी है। इस पत्र में इस बात का उल्लेख

है कि 'रोकड के काम पर श्री शिवनारायणजी रह जावे तो ठीक है। इनके लिये हैदराबाद वालों ने लिखा है। यह पत्र श्री हरगोपाल घनश्यामदास ने अजमेर से सेठ प्रेमसुखदासजी को लिखा है। इसमें अमरावती में नई दूकान के मुहूर्त करने की बात कही गयी है। इस पत्र की तिथि चैत वदि 12, 1916 है।

पत्र संख्या 4 साधारण समाचारों की चिट्ठी है जिसमें श्री रामधनजी एवं श्री आसकरणजी बिड़ला का उल्लेख आया है। पत्र में 10 हजार रुपये भेजे जाने व मुकदमा जीत कर डिग्री प्राप्त करने सम्बन्धी भी समाचार हैं। यह पत्र आसोज़ सुदि 7, 1916 का है।

पत्र संख्या 5 में भी श्री शिवनारायणजी सम्बन्धी समाचार है। यह पत्र साह रामप्रसाद आसकरण (बिड़ला) ने सेठ प्रेमसुखदासजी गनेड़ीवाला को लिखा है। इसमें श्री शिवनारायण बिड़ला पर निगाह रखने की बात कही गयी है। यह पत्र माह सुदि 11, 1917 का है।

पत्र संख्या 6 बड़ा महत्त्वपूर्ण है। यह पत्र उपर्युक्त पत्र जिसमें श्री शिवनारायण पर निगाह रखने की बात कही गई है, के 20, 22 दिन बाद का है। इस पत्र में श्री शिवनारायण बिड़ला से रोकड़ का काम न करवाने व रोकड़ से उसे एक कोड़ी भी न उठाने देने का आश्वासन दिया गया है। साथ ही लिखा गया है कि ऐसा करने में इनकी पूरी नादानी है। श्रीरामधनदास (श्री शिवनारायण के सगे चाचा) ने श्री शिवनारायण को चार दिन में गद्दी से विदा करने की हाँ भर ली है। यह भी लिखा है कि या तो चार दिन में रामधनदास इसको समझाय कर भेज देगें वरना इणा की हकीत पूरी होय जासी- इणा को माजनों पछ हमा अच्छी तरह खोय देंस्या- कोड़ी एक जावगी नहीं आप ख़ातर जमा राखज्यो। यह पत्र फागुन सुदि 2, 1917 का है। इस पत्र के साथ ही बेसाख सुदी 13 स. 1901 की लिखी रोकड़ के पन्ना नं. 223 की नकल दी जा रही है जिसमें श्री शिवनारायण जी की सगाई पर चढ़ाये गये गहणों की विगत व लागत दर्ज है जोकि श्री शोभारामजी के नाम लिखे गये हैं। इसमे दी गई कलमों को पढ़ कर सहज में उस समय की उनकी आर्थिक स्थिति का अन्दाजा लगाया जा सकता है।

इन पत्रों को पढ़ने से उस वस्तु स्थिति का सही दिग्दर्शन होता है जिसके कारण श्री शिवनारायणजी बिड़ला को सर्विस छोड़कर बम्बई जाना पड़ा। वे किसी महत्वाकांक्षा को लेकर बम्बई नहीं गये थे पर विवशता के कारण उन्हें जाना पड़ा था। बम्बई जा कर भी श्री शिवनारायण ने गनेड़ीवालों के सम्बन्धियों की फर्म चेनीराम जेसराज का सहारा लिया जहाँ से आगे चल कर भगवत कृपा से वो उन्नति के मार्ग पर चल सके।

उपर्युक्त पत्रों व अन्य तथ्यों को ध्यान में रख कर पाठक स्वंय फैसला करें

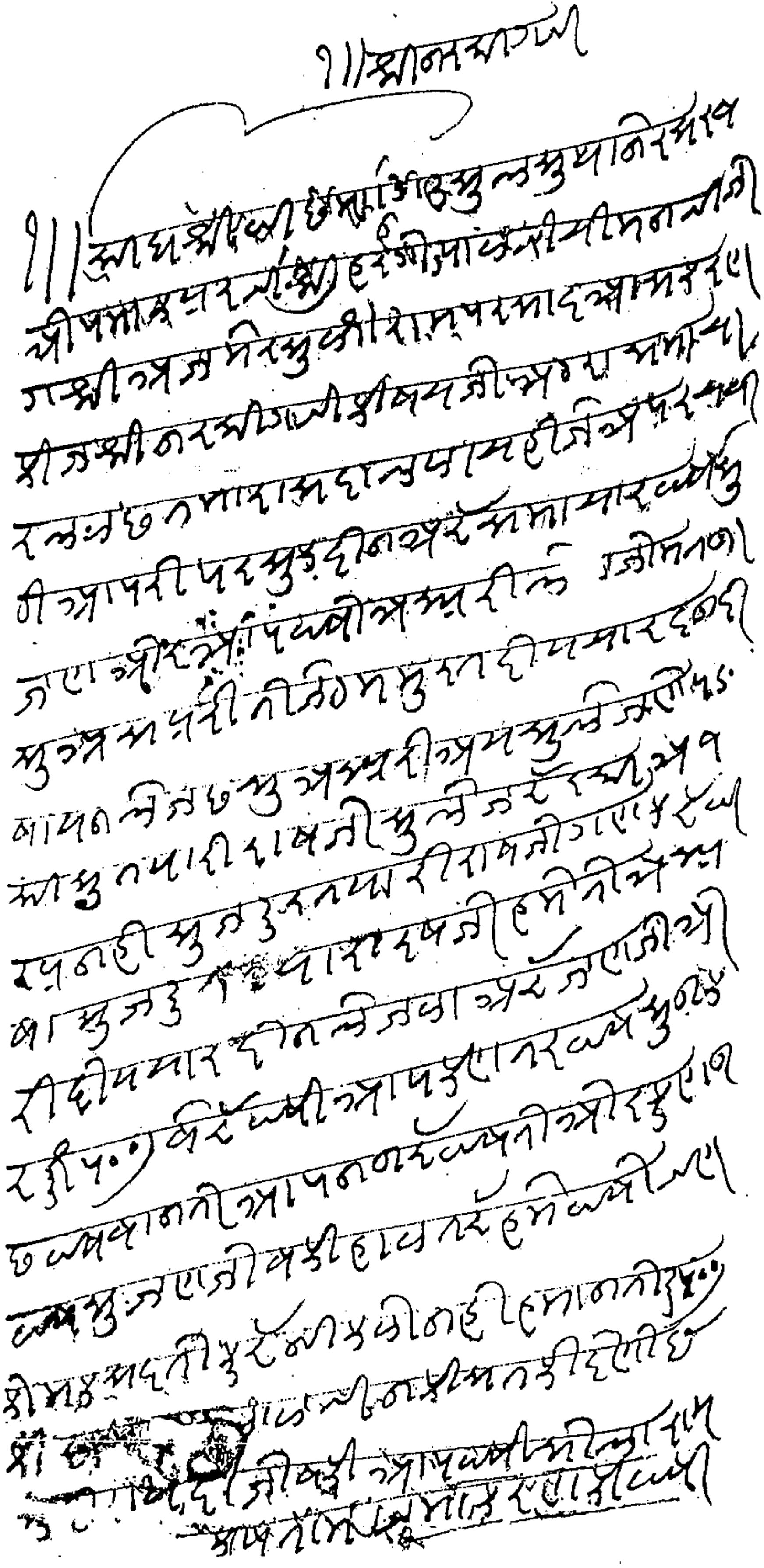
1. कि श्री शिवनारायण बिड़ला के बारे में नौकरी ठुकराने की बात सत्य है या उन्हें विवशता से किसी अनुचित कार्य करने की वजह से नौकरी छोड़नी पड़ी।

2. उस जमाने में लाखों करोड़ों का व्यवहार-व्यापार करने वाले गनेड़ीवाला क्या अपने एक सामान्य से कर्मचारी के यहाँ,वो भी उसके निवास पिलानी जाकर दिया हुआ रूपया दुबारा मांग सकते थे।

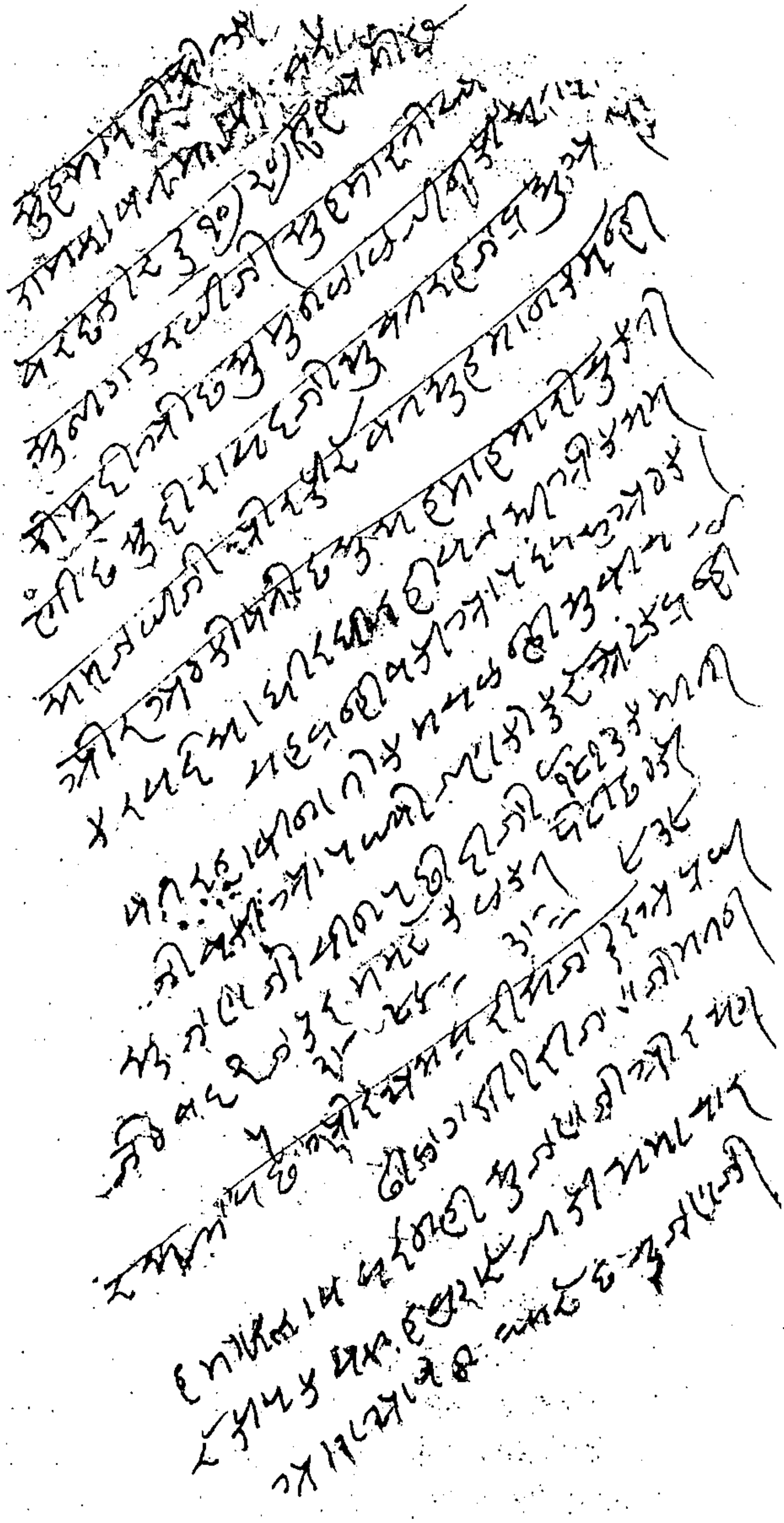
3. सन् 1985 में, करीब 100-125 वर्ष पूर्व दिवंगत हुए गनेड़ीवाला परिवार के बुजुर्गों पर जिनके यहाँ श्री के.के. बिड़ला के सड़दादा-पड़दादा वर्षों काम करते रहे, अवान्छनीय-निराधार आरोप लगा कर श्री के.के. बिड़ला ने एक सराहनीय कार्य किया है या एक नासमझी का प्रदर्शन।

उपसंहार में हम यह कहे बिना न रहेंगे कि श्री के.के. बिड़ला द्वारा गनेड़ीवाला सेठों पर लगाये गये असत्य आरोप की बुराई में से एक भलाई यह उदित हुई है कि सेठ परिवार द्वारा की गई पुरानी बहियों और पुराने पत्रों की शोध-खोज से बिड़ला उद्योग समूह के मूल आदि प्रवर्तक श्री शिव नारायण जी बिड़ला की जन्म तिथि ज्ञात हो गई है जिसका पता आज तक न तो किसी लेखक ने दिया और न किसी बिड़ला परिवार के सदस्य को ही मालूम हुआ। साथ ही शोभारामजी की जीवनी भी जो अंधकार में थी, गनेड़ीवाला सेठों ने प्रकाश में ला दी। अतः श्री के.के. बिड़ला को इसके लिये गनेड़ीवाला परिवार का आभार मानते हुए गनेड़ीवालों के पूर्वजों पर लगाये गये मिथ्या आरोप के लिये खेद प्रकट करना चाहिए।

हनुमान प्रसाद गनेड़ीवाला



पत्र संख्या 1

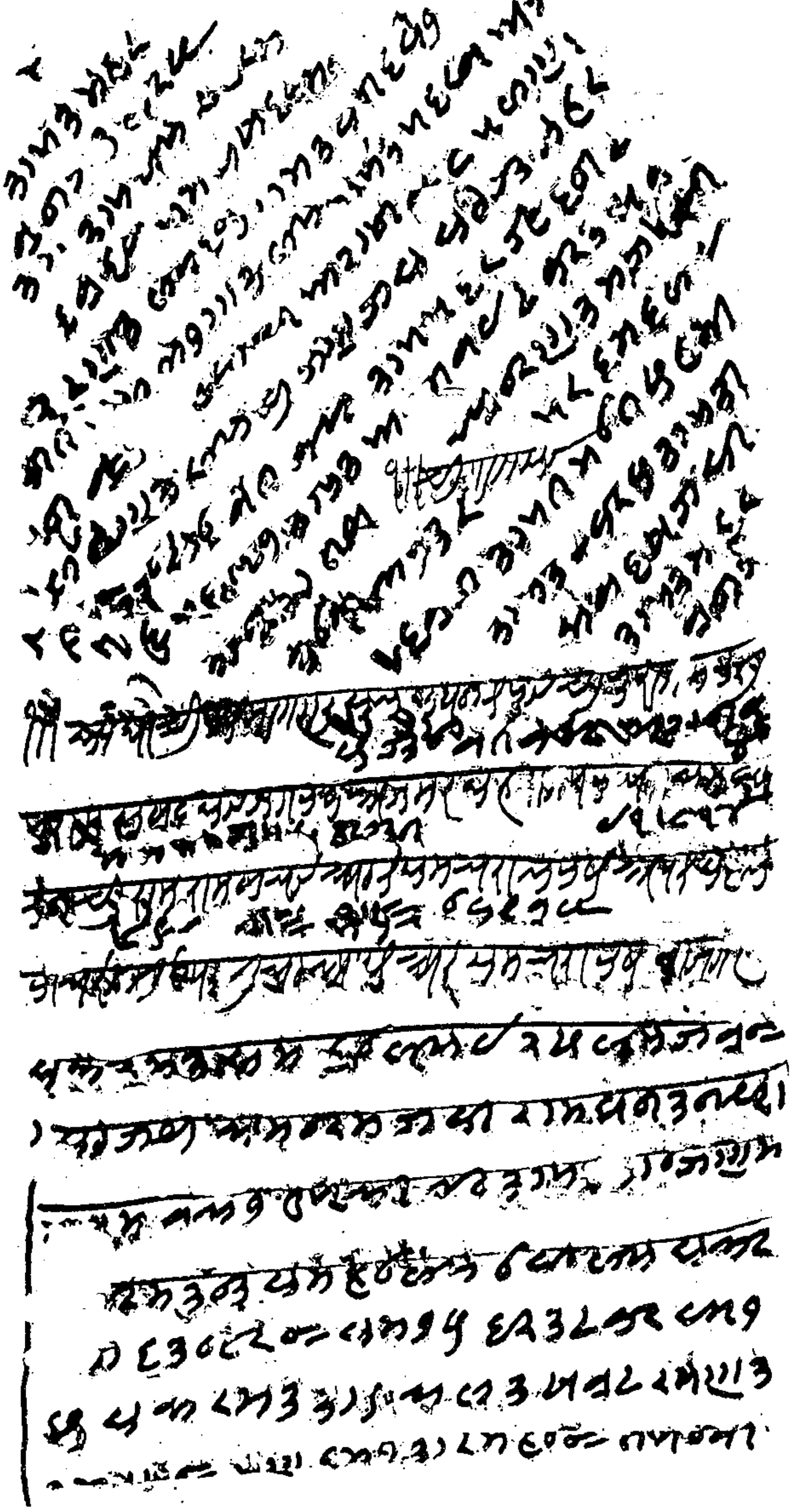


पत्र संख्या 1

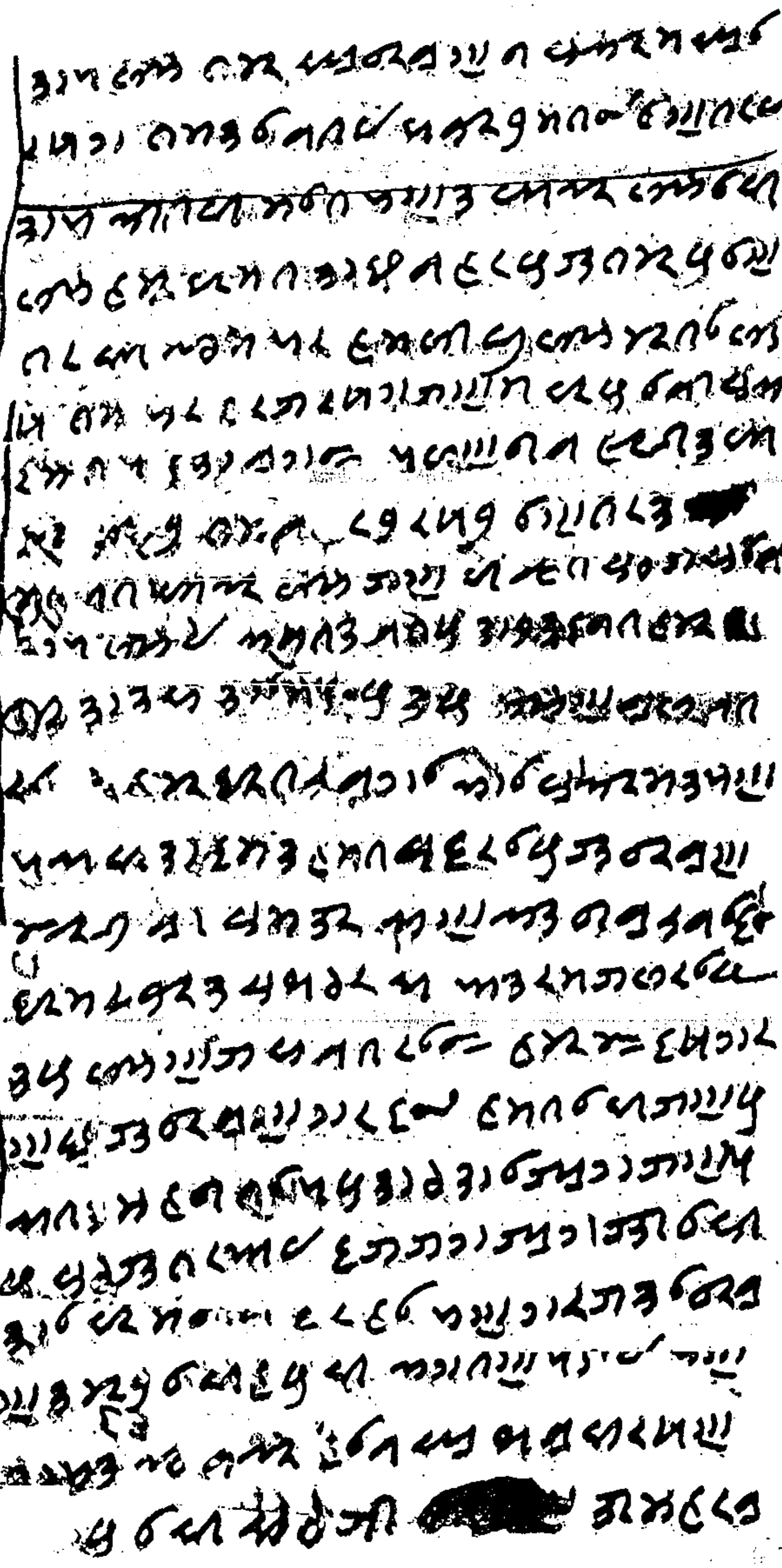
पत्र संख्या 1

१।। श्री नरसींगजी

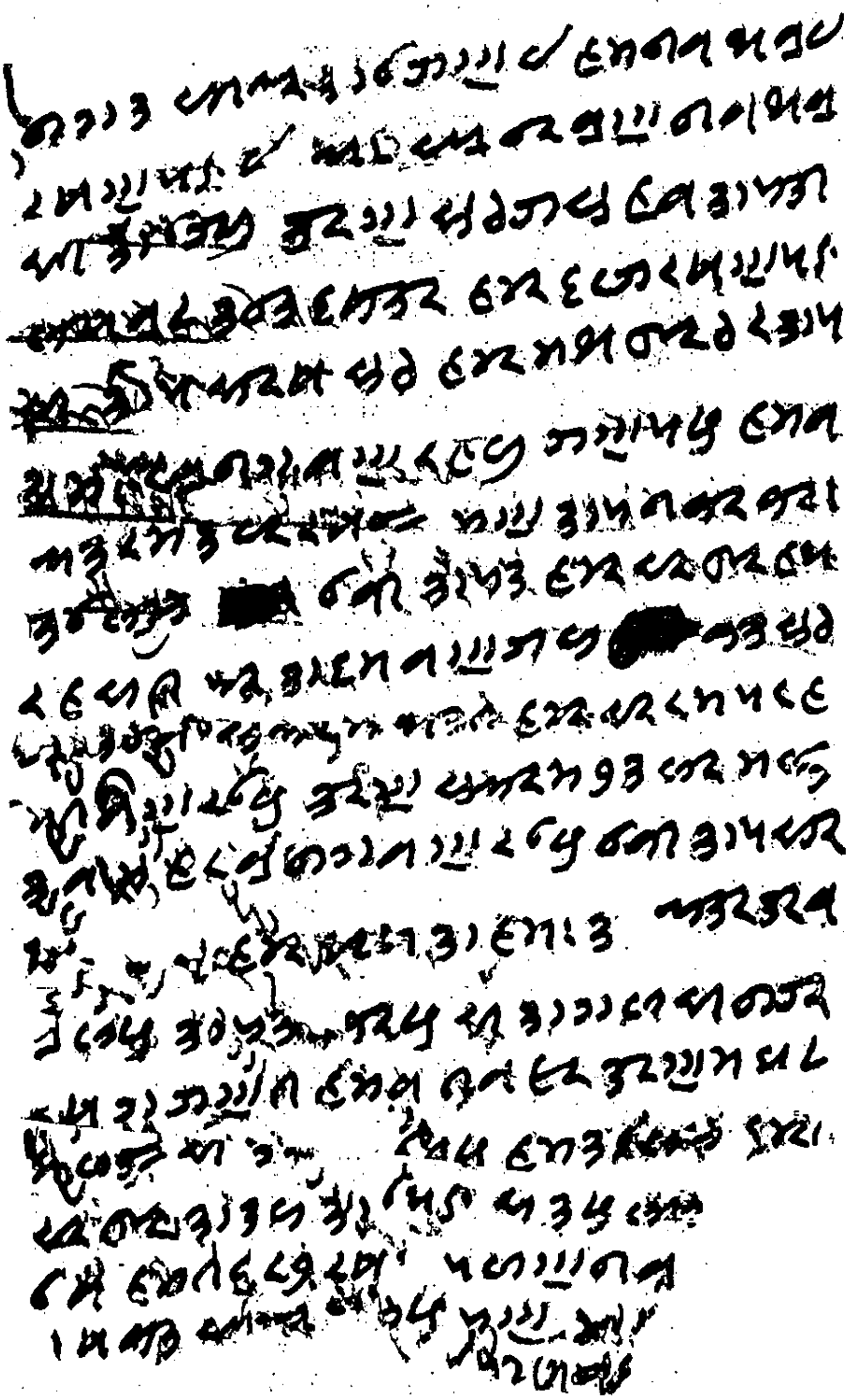
सिध श्री लिछमनगढ़ सुभ सुथानेक सरब ओपमा कँवरजी श्री हरगोपालजी चिमनजी जोग श्री अजमेर सु लिखी रामपरसाद आसकरण की जै श्री नरसींगजी की बंचज्यो अठाका समाचार भला छै तुमारा सदा भला चाहिजे अपरंच चीट्ठी आपकी परसूं क दिन आई समाचार लिखासु जाणा और आप लिखो असवारी भेजजो मतना सो असवारीतो जेठ म मूहूर्त दो चार दिन दिखायन भेजा दी सो असवारी अठ स भेजणी पड़ सी सो तैयारी राखजो सो भेजइ दे सी अब रव नहीं सो जरूर तैयारी राखजो। गहण कई लिखा सु जरूर तैयारी राखज्यो हमा तो असवारी दोये चार दिन भेजाला, आई जाणज्यो ओर रु.500/- बेई लिखी आप किण तरह लिखी सो ठीक छ लिखबान तो आप ही न लिखा यो और कुण न लिखा सो जाणज्यो बाकी हाल ताई हमा लिखो जिणको मकसद तो कूई निकलो नहीं हमान तो रु. 500/- की रकम मूनलालजी न कीस्त की देणी छ। सो दिराय दीज्यो बाकी आप लिखी सोभाराम क खात में जमा करण की लिखी सो हमार तो शोभाराम क खातम रकम बराबर छै कोई रुपया 10/- 20/- मह खातो छै सु निगह कर लीजो सो हमारतो लिखण को मुदो ओछै सो मूनलाल जी न कीसंत देणी छै सो दीराय दीजो सो बात रह ज्याव सो आप समझ लीज्यो और कीही बात स हमान उमीद नहीं और अठको खातो छै सो सहमारो चूकतो करवाय देस्यां धीरे-धीरे होय जासी एक समच होव नही बाकी आप देखो सो अठे कोई खातो रहया बीना तो काम चाल नहीं सु वीचार लीजो बाकी आप लिखो जिण को कोई अटकाव नहीं सो जाणज्यो चिट्ठी पाछी दीज्यो 1913 मिती जेठ बदि 2 जैपुर 2 रुपये 5 आने, ममई 8 रुपये 13 आने, कलकत्ता 3 रुपये 7 आने, पेटी 6 939 इसा भाव छै और असवारी.........................आपरली ठीक घड़ी एक की जाणज्यो मतना हमार राख सु रह नहीं सो जाणज्यो और सगाई की पकायत छै सगाई जी को समाचार आज आपन लिख्यो ही छै सु जाणज्यो



पत्र संख्या 2



पत्र संख्या



पत्र संख्या 2

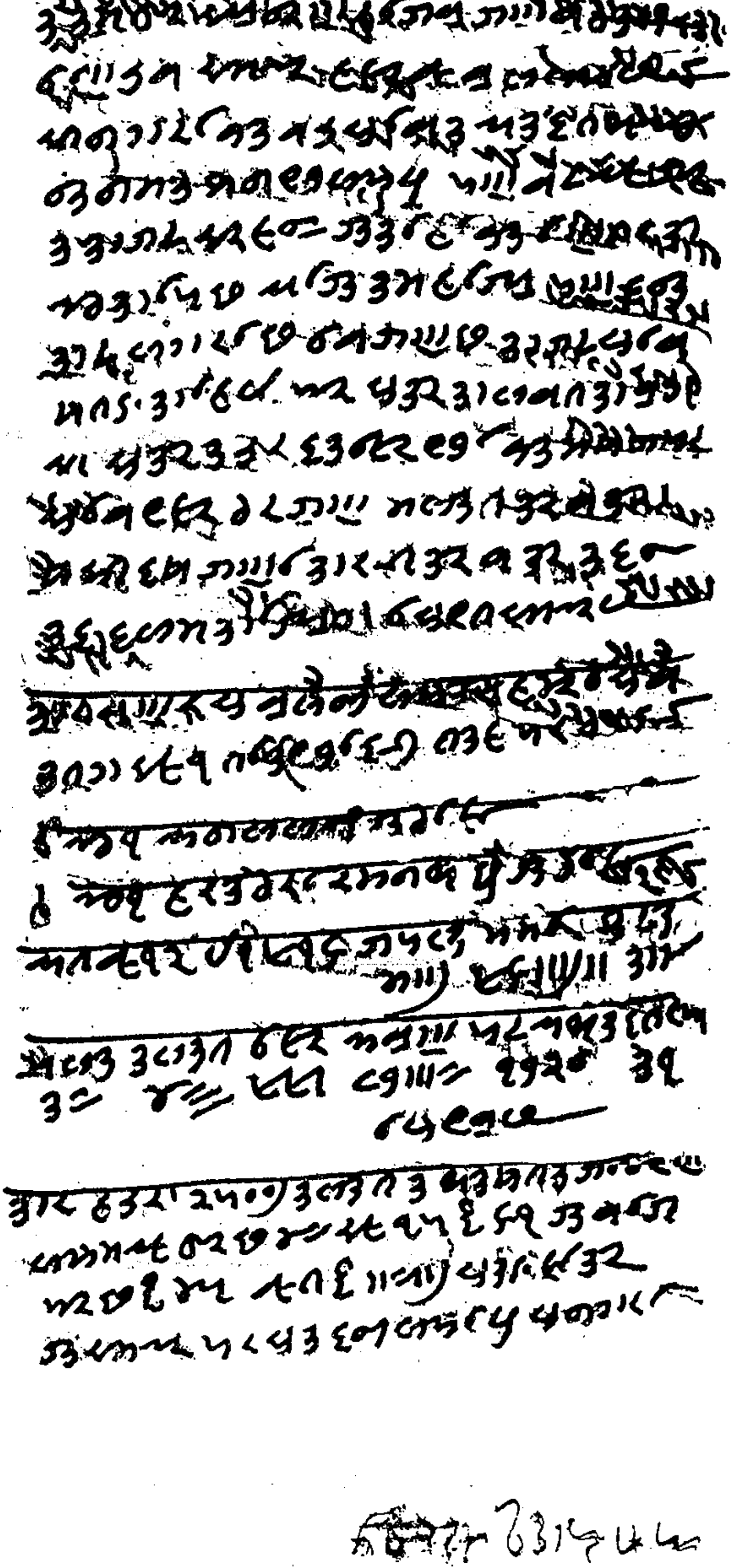
पत्र संख्या 2

१।। श्री राम जी

१।। सीध श्री लिछमणगढ़ सुभ सुथानेक पुज श्री पूरणमलजी परेमसुखदासजी जोगलिखी हरगोपाल घनश्यामदास केन श्री राम राम बंचज्यो अठा का समाचार भला छै आपका सदा भला चाहिजे उपरंज चिट्ठी आपकी आई समाचार लिख्या सो बांच्या सोभाराम की छमाई....... लिखी सो कुछ लिखी जाव नहीं सेठ जी श्री चिमनरामजी......... रामधन के नाम की............. बांचज्यो उपर चिट्ठी आपकी आई...................... घर का टाबर समझ छै.................. आप लिखी तुमार शिवनारायण न सारा में सिवाय राखागा तुम कई बात स घबराज्यो मतना इण तरह सु आप बहुत सा मायत पण का समाचार लिखा........... हमार पर म तो आछो व्योहार ज्यो तुमारो छै सो इण तरह की चिट्ठी.................... पर धीरज राखगा जणाही सार छै.................. आवगा नही पिलाणी.................. राखज्यो इणतरह का................ समाचार लिख्या जण शिवदत्त सेठ जी स इब आप लिखासी बख्त की बात छै आज का दिन तो हमार ऊपर आकाश आय पड़यो छै कुछ लिखण जसी बात रई नहीं............................ कई दिन म टाबर क साथ ठहर छ फिकर में जल रहया छै कुछ लिखण जसी बात रही नहीं...... .... हमतो इसी जाणा छा चैत महन ताई अठे आई जावगा जिण पीछे सेठजी की तरफ सूं दूजी जगा जावगा जंका इसी........................ भुगतणी पड़सी................................... थ्यावस राखणो छै इसा सेठजी की महरबानी का समाचार आया जिकास हमान भी थ्यावस राखणो पड़सी और शिवनारायण न भी थ्यावस आय जासी कारण सेठ जी साहब आपकी लिखावट की इक देखकर हमार धीरज राखणो पड़सी आप सरीखा सेठ हमार माथ ऊपर ठहरे आपकी मेहरवानगी वणी रहसी हम भी कोई तरह की कसर राखा नहीं पर आपन बराबर आई लिखी इब तो आपको हमार सिर ऊपर रह सी तो पर आदमी वण ज्यासी. .... मेहरबानगी बणाई छै.................हमार सर ऊपर अकाश आई पड़यो सो कुछ लिखी नहीं जावे हमातो धीरज रखा................पण आपकी महरबानगी की लिखी छैं... आप पधारों जद दिन 2 पहली चिट्ठी दिज्यो................ टाबर क थ्यावस आवगा तथा शिवनारायण क मजबूती.......... काल जो कर........................... पर दम दिलासा दिवाज्यो आपतो मायत छो हमा तो आपका टाबर छां आपकी सब देखी जासी आपकी मेहरवानगी छै जकी इव ताई छै फागन बदि 4, 1914

[illegible]

पत्र संख्या 3



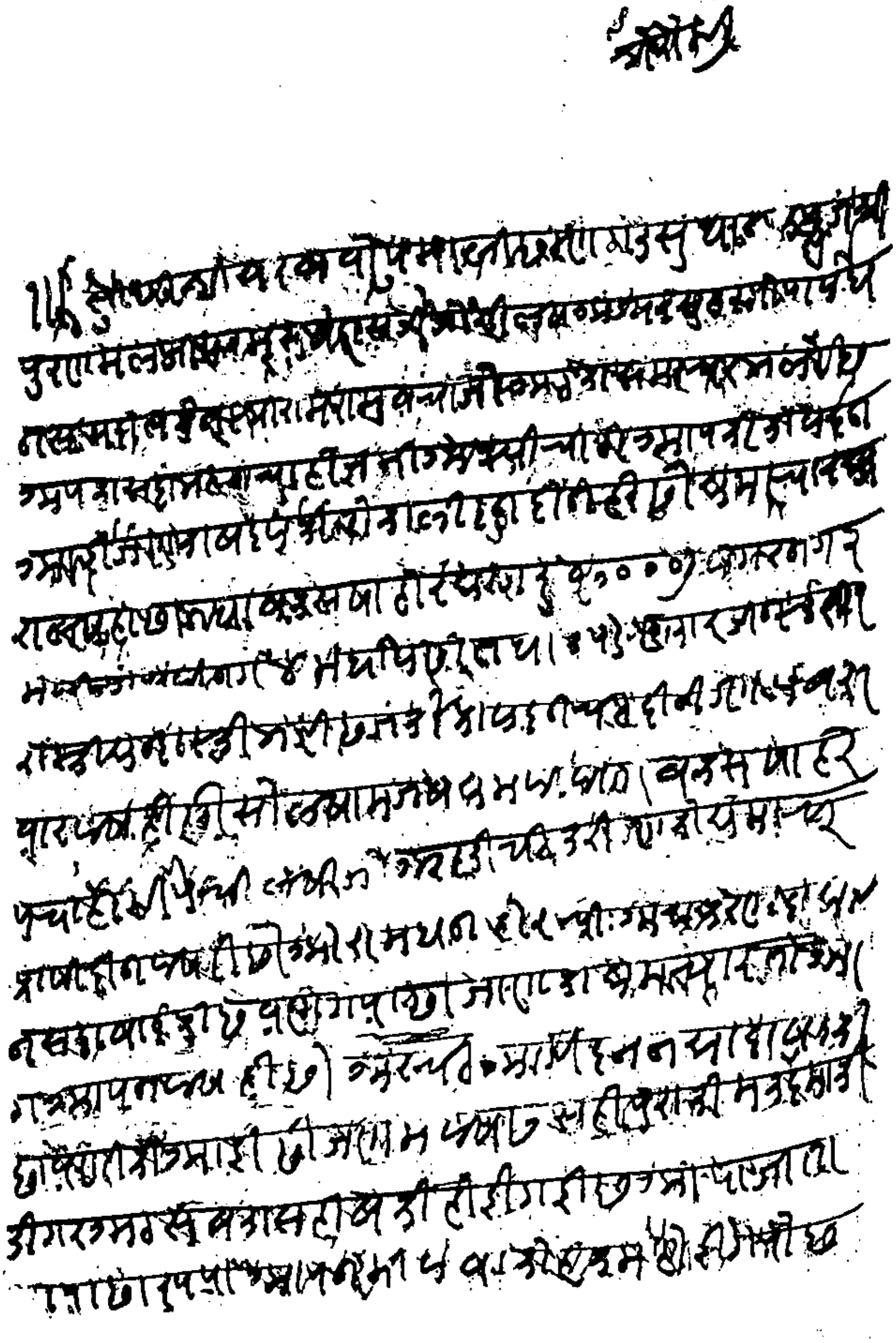
पत्र संख्या 3

पत्र संख्या 3

।१।। श्री राम जी

१।। सीध श्री लक्ष्मनगढ़ सुभ सुथानेक पुंजें श्री पूरणमलजी परेमसुखदासजी जोगलिखी अजमेर से हरगोपाल घनश्यामदास केन श्री राम राम बंचज्यो अठाका समाचार भला छै थाका सदा भला चाहिजे अपरंच चिट्ठी आपन 2 परसूं क दिन 2 पेमराज साह रै हाथ जिण म हिसाब कातिक सुदि एक ताँई को भेज्यो छै सो पाछो लिखज्यो जल्दी जमा खर्च कर कर उथलो जरूर पाछो लिखज्यो और चिट्ठी थाकी इण दिनां म आई नहीं सो दीज्यो और चिट्ठी फागण सुदि 14 लिखोड़ी हैदराबाद की निपट राजी खुशी की आई छै समाचार सारा ही हैदराबाद का लिख्या छै तथा अमरावती की दुकान ऊपर मुहूरत कर छ फागणसुदि 3 दूकान 921 भग नगर स आई छै तथा साहजी नरसिंगदास जी............ रखकर उणान इमरावती राख छै सो समाचार सारा ही थान परवारा लिखा होसी व कथा लिख दे स्यां जैपुर की दूकान ऊपर हीमत मल छो जिन न राख बाकी सो उणा की लिखी आई छै बिलकुल राखज्यों मतना इसी लिखी छै जैपुर की दूकान ऊपर के तो रामधन रह जाव जणा तो हमार लछमणगढ़ वाला क दिल जमी होय जाव............... पण रामधन को अजमेर रणो भी ठीक छै मगराज होलाणी न राख छै क न वो मुनीमाई क काम ऊपर रख जावे रोकड क काम ऊपर शिवनाराण रहजाव जणा भी ठीक छै इणाक वास्त हैदराबाद वाला लिखी छै सो निग रव...... चिट्ठी इक नाम की थान भेजी लिखी छै..................इण तरह (आगे के समाचार दूसरे काम से संबंधित हैं) चैतबदि 12, 1916 (ई. 1859)

(यह समय शोभारामजी की मृत्यु के बाद का है)



पत्र संख्या 4

[illegible]

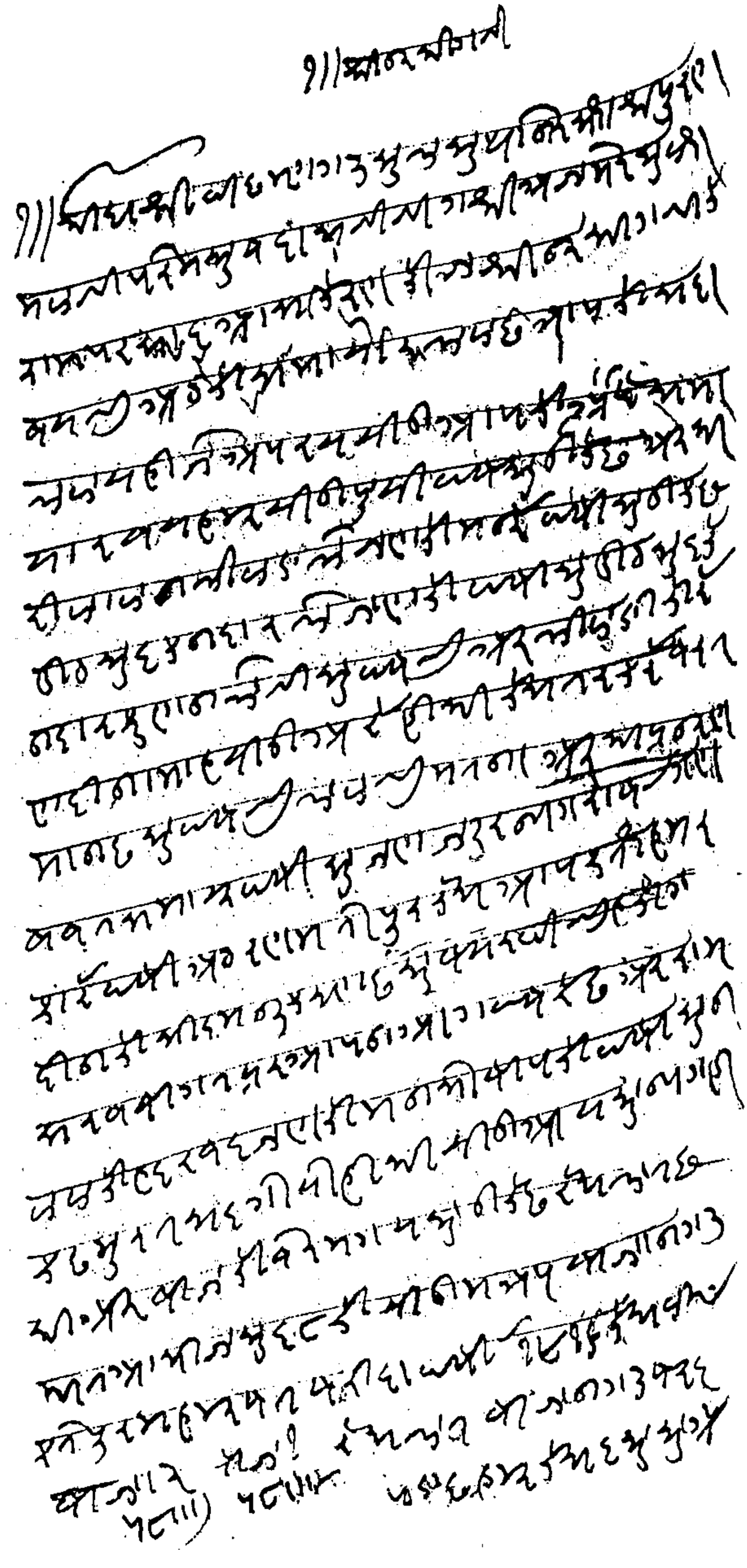
पत्र संख्या 4

पत्र संख्या 4

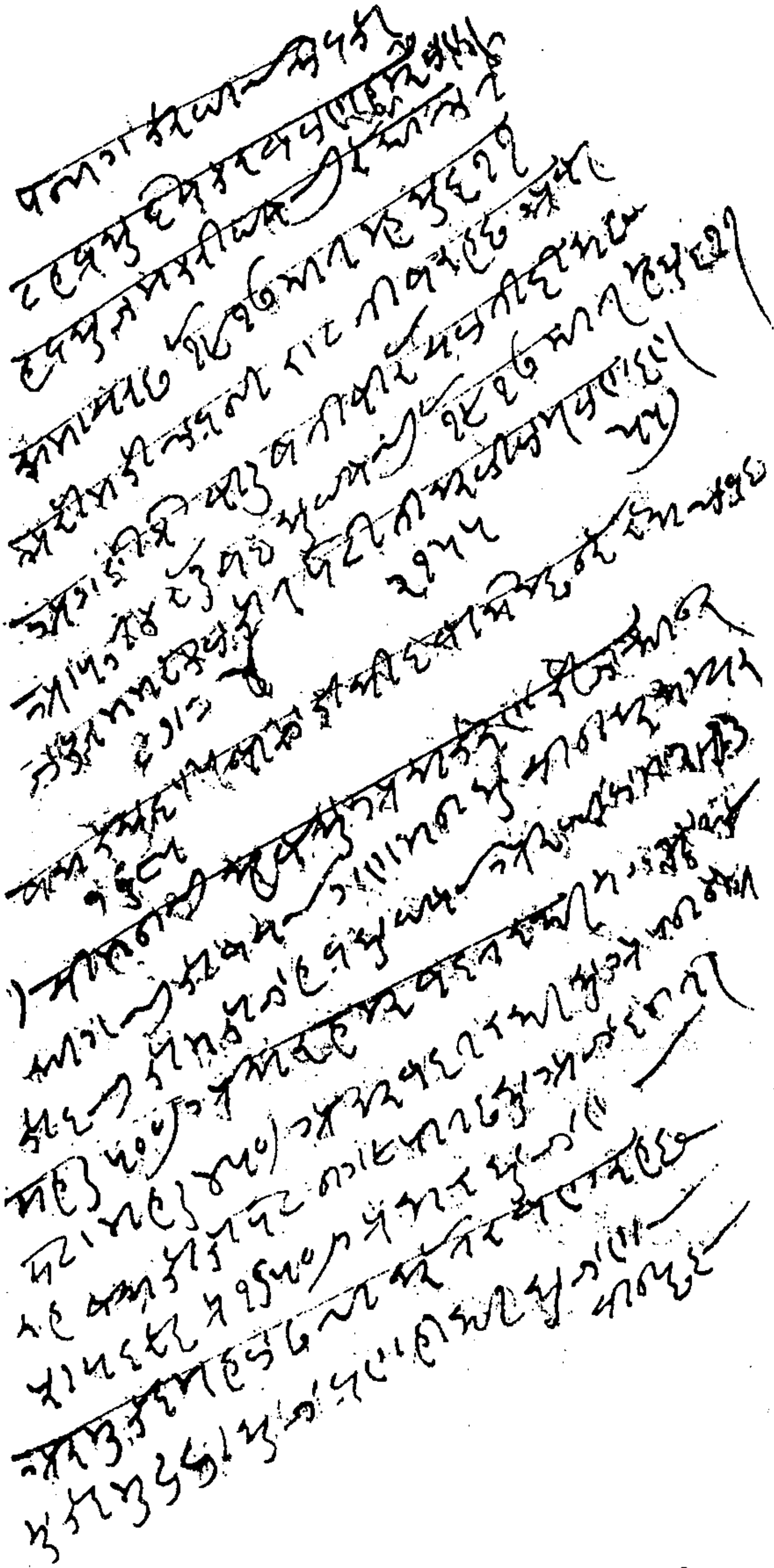
श्री राम जी

सीध श्री सरव ओपमा लिछमणगढ़ सुथानेक पुज्य श्री पूरणमलजी प्रेमसुखदासजी जोगलिखी अजमेर सु हरगोपाल घनस्यामदास केन श्री राम राम बांचाज्यो अठका समाचार भला छै आपका सदा भला चाहीजे- जी आपकी चिट्ठी आपकी काल दिन आई जिणक बदल की तो काल दिन दीनी ही छी समाचार सारा लिखाही छा तथा वकसूखां होर साग रु.10000/- लगर नग 2........ नग 4 म घाल्याछा तथा कपड़ो बगेर जिन्सवार रामकिसनदास की भेजी छै जकी काल दिन चिट्ठी दीनी जिण में ब्योरे वार लिखी ही छी सो लिख्या मुजब समझ लीज्यो वकसूखां होर पूंचा होसी पूंच लिखज्यो अठ की चिट्ठी कई जणा को समाचार काल दिन लिखो ही छो और रामधन होर चि. आसकरणदासजी नसीराबाद की छावणी गया छा जिणको समाचार तो आग आपन लिख्यो ही छो ओर चिट्ठी आज दिन नसीराबाद की छावणी की आई छी जिण में लिख्यो छो सहीपुरा की मुकदमा की डिगरी अठस बडा साहिब की होय गई छै आपा जीत गया छा रुपया आपान मिलणको हुकुम होई गयो छै सो चिट्ठी आप कानी की घाली छै सो इण चिट्ठी माई भेजी छै सो लीजो जणाम समाचार सारा विगतवार आपन लिखाहे सो जाणजो और रुपया कुचामणी नसीराबाद की छावणी मंगाया छै सो घालांगा सो जाणज्यो और दिसावर का भाव क्यू मंदा ही छै सो जाणज्यो चिट्ठी मिलावें आपकी आज दिन आई नहीं सो चीट्ठी सारा समाचारां की दीज्यों (भाव दिये गये हैं)

मित्ति 1916 आसोज सुदि 7



पत्र संख्या 5



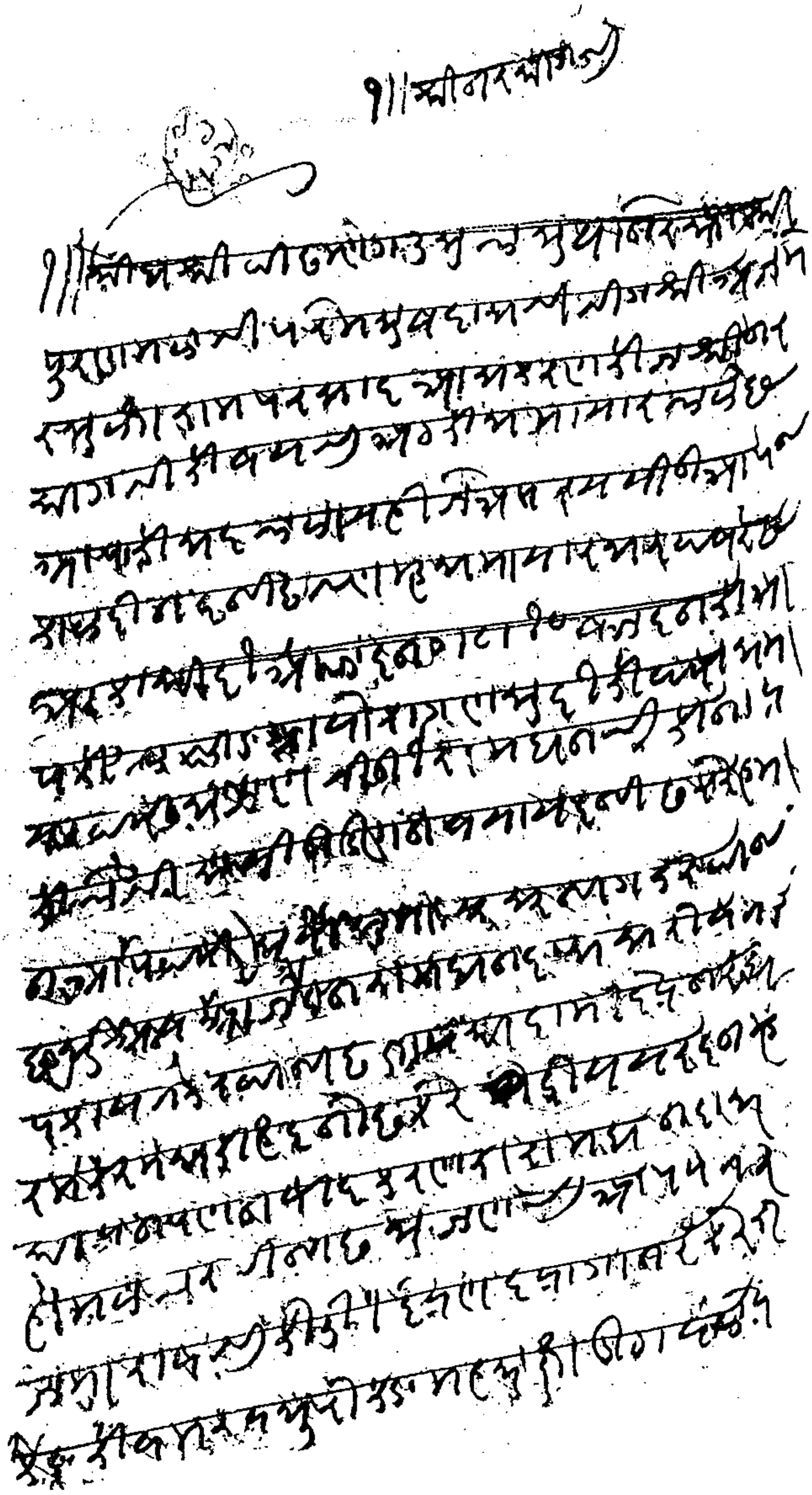
पत्र संख्या 5

पत्र संख्या 5

१।। श्री नरसिंगजी

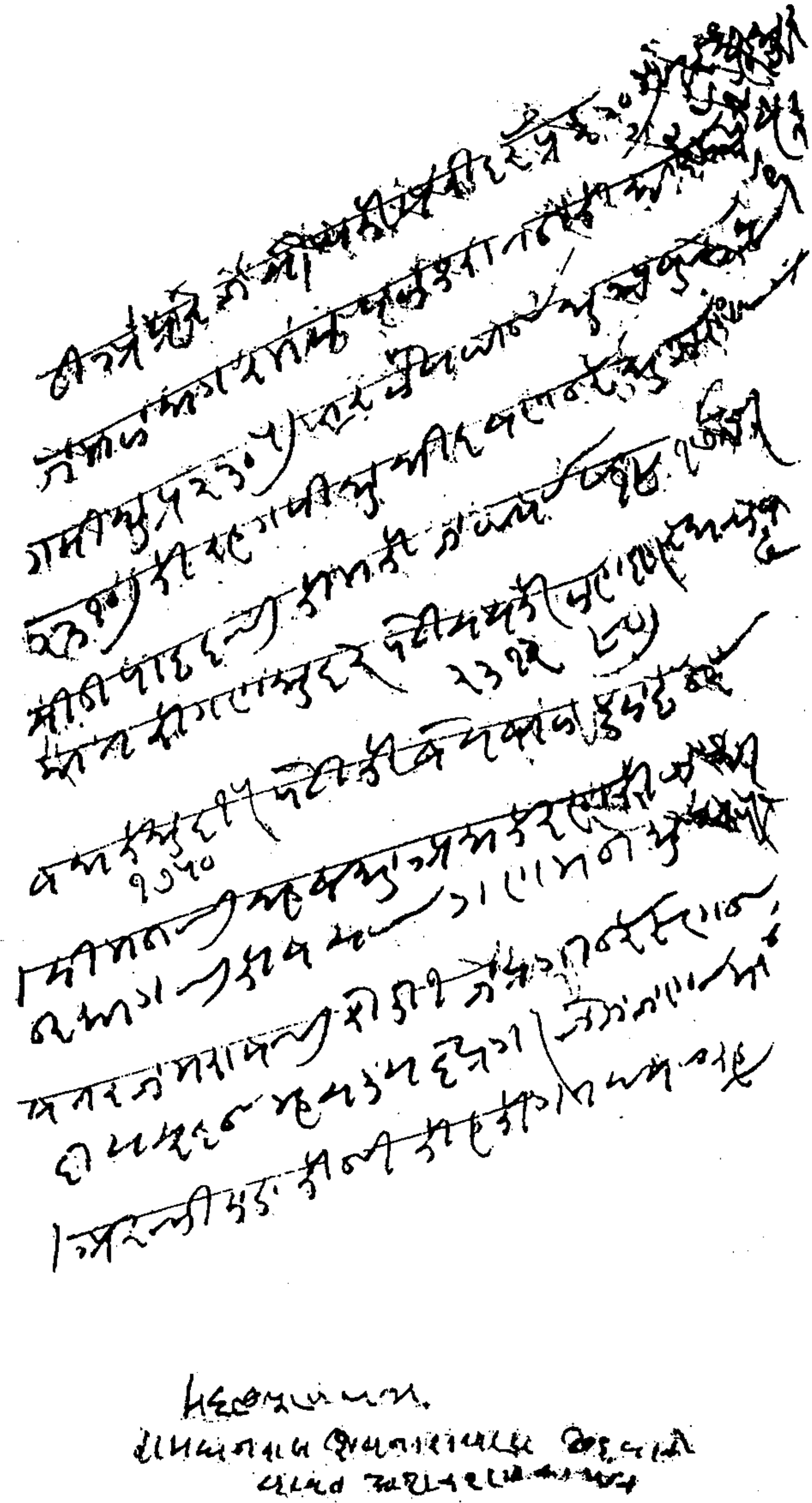
१।। सिध श्री लिक्ष्मणगढ़ सुभसुथानेक साह श्री पूरणमलजी परेमसुखदासजी जोग श्री अजमेर सु साह रामप्रसाद आशकरण की जै श्री नरसिंगजी की बंचज्यो अठका समाचार भला छै आपका सदा भला चाहिजे अपरंच चिट्ठी आपकी आई समाचार बांच्या हमारी चिट्ठी पूँची लिखी सो ठीक छै और सीरी लाल न भलाडे भेजने की मनाई लिखी सो ठीक छै उंठसु दुकानदार भेजण की लिखी सो उठ स दुकानदार कुण न भेजां सो लिखज्यो और भीलाड की इनदिनां मांय चिट्ठी आयी होसी किस तरह का छ वर्तमान छै सो लिखज्यो भूलज्यो मतना और शिवनारायण बाबत समाचार लिख्यां सो जाणया जरूर निगह राखस्या जण कांई लिखा अठे रणाम तो पूर किसा आपकी तरह हमार दिन किसी दम नुकसाण छै सु कंवरजी हकीगत स रव वीगत वार आपन आग लिखी ई छै और रामलाल की हैदराबाद जाण की मनस्या की पक्की लिखी सो ठीक छै मुहुरत सदगयो होसी चिट्ठी आणसु निगा होसी और बीज को बेरो मंगायो सो ठीक छै सो भेजा छा मिती आसोज सुदि 8 की चिट्ठी म आप बीजा नग 3 फतेपुर म हमार खाते खरीदा लीख्या 1916 की साल म बाजार 58 रुपये 12 आने तेज 58 रुपये 13 आने इन भांती बीजा नग 3 खरीदा पड़या छै

माहसुदि 11, 1917



पत्र संख्या 6

पत्र संख्या 6



पत्र संख्या 6

पत्र संख्या 6

श्री नरसिंह जी

सीध श्री लिछमणगढ़ सुभ सुथा नेक साह श्री पूरणमलजी प्रेमसुखदासजी जोग श्री अजमेर सु साह रामप्रसाद आसकरण की जै श्री नरसिंगजी की बंचज्यो अठ का समाचार भला छै आपका सदा भला चाहिजै अपरंच चिट्ठी आपन काल दिन दीणी छै जिण में समाचार सारा लिख्या ही छै और क़ासीद 1 आज दिन गया 10 बजे दिन का आपको भेंज्योड़ो आयो फागण सुदि को लिख्यो समाचार लिख्यो सो जाण्या चिट्ठी 1 रामधन जी क नांव की भेजी सो चिट्ठी उणान बंचाय दीनी छै और हमान आप लिखी सो वी समाचार सूं निग कर लीनी छै सो अब आज दिन रामधनदास सारी बात ई पकायत कर लीनी छै रोकड़ सेती दाम 1 देव नहीं धरम करम सु कह दीन्यो छै और पेड़ी स चार दिन म शिवनाराण न बिदा करण की रामधनदास हामल भर लीनी छै सुजाणज्यो आप खातर जमा राखज्यो कोडी-एक देवण देवांगा नहीं और रोकड़ को बम (भ्रम) रहव सो रोकड़ म स रुपया उठाय लेव तो भरोसो नहीं आपान तो अपणी सचाई जाण ज्यो आपान तो नाग आदमी की इस बात को बम इणा की तर रो को दाम एक समझज्यो मतना बाकी रोकड़ की वी निग फिर धणी सु भुगतावण सिवाय रोकड़ दिवावण को काम छै नहीं सु जाण ज्यो बाकी इणाकी नादानगी सु पूरी छै पण अब जैपुर आय जासी आप खातर जमा राखज्यों दोय चार दिनां को नाम रामधनदास लीन्यो छै सो क तो ये समझाय कर भेज देसी नहीं तर हमा आपकी य कर भेज देस्या नई आसी तो इणा की हकीत पूरी होय जासी इणा को माजनों पंछ हमा अच्छी तरह खोय देस्या आप खातर जमा राखज्यो

(आगे के समाचार भाव आदि से संबंधित हैं) मिती फागुन सुदी 2, सम्वत् 1917

चीमनजी साहबसु आसकरण की जै श्री नरसिगजी की बचज्यो घणमानसु आप खातर जमा राखज्यो कोडी एक जावगी नहीं इनान दोय चार दिना म्हे बडवा देवांगा. जो जाणज्यो और मीलाड कानी की हुंडीगत लिख्ज्यो—

२२३ पन्ना रोकड़ वैशाख सुदि १३ सं. १६०१

१०४।।) शोभारामजी के नावे वैशाख सुदि १३
स्योनारायण क सासरे गणो घाल्यो
जका ह: छोटू सूनार तथा रामप्रताप न दीना

७०) स्योनारायण क सासर तील २ इस भान्ती
गणो घाल्यो।

८) हंसली तोला ७

१२) तोड़िया तोला १०।।)

१२) कड़ा हाथ का तोला १०।।)

१५) पगा का कड़ा तोला १३) माशा डेढ़

२५) झूमका की जोड़ी १ सोनकी तोला १।)

५।) बोर एक सोन को

२।।।) सुनार न घड़ाई का दिया

८०) बादी गया

१०) चासनी वगेरह काटी

७०) कल दार बाकी रहया

२०) कड़ा की जोड़ी २ स्योनारायण क तांई
हाथां पगा की भेजी

६) तागड़ी शोभारामजी पहरानी में
घालण ताई कराई

४) सुरलिया जोड़ी एक कराकर
पिलानी भेजी

१।।) घड़ाई तागड़ी और कड़ा की

१०४।।)

इतिहास चित्रपट

है इतिहास चित्रपट अनुपम, अतीत के गौरव का गान
धीर वीर दाता मनीषी मानव महान का वृत्त वितान

कीर्ति कथायें समाज की निधि हैं प्रवाहिनी मधुधारा
युग मानवता जन नायक की प्रतिमा का है नय नारा

जिसके हृदय में पूर्वजों के
सुयश का सम्मान है
वह विनयमूर्ति सुनयमनि
राष्ट्र का बल प्राण है

आख्यानों के पृष्ठ स्वर्णमय, बन जाते हैं स्वतः प्रकाश
नर रत्नों की पावन कृतियां, अतीत का दर्पण इतिहास

दिव्य उनके कला कौशल
की प्रभा प्रोज्ज्वल विधान
रूचिर उनके चरित वैभव
की विभा देदीप्यमान

पूर्वजों की अमित महिमा का जहाँ गुण गान है
वह मनोज्ञ सदन जगत में स्वर्ग का सोपान है।

राष्ट्र और समाज की संस्कृति-
धरा पर दीप-दान
शक्ति का मधुस्रोत मिलता
पूर्वजों का यश-वितान

है वही जीवित जिसे निज वंश का अभिमान है
श्रेष्ठ कुलकी संस्कृति शुचिमन्त्र दीक्षा दान है

विश्व का इतिहास ज्योतित
है उन्ही की ज्योति से
महामानव देवमानव
कल्पतरु भवभूति से

जब चरित्र नायक का पावन अंकित होता वृत्त विकास
जनमानस की स्वर्णिम निधिवत बन जाता है रुचिर विलास

यहाँ पुरातन नवीन का सुन्दर संगम है जन पावन
नव समाज की क्रांति भूमिका बन जाती है मन भावन
इस कुल के जन सेवी श्रेष्ठी युग-युग की है मणिमाला
अमर रहेंगे चन्द्र दिवाकर की जैसी ज्योतित शाला

श्री मन्मथकुमार मिश्र (सीकर)

अनमोल व्यथायें

श्री रामगोपाल गनेड़ीवाला
(7, हंगर फोर्ड स्ट्रीट - कलकत्ता)

जो व्यथायें प्रेरणा दें उन व्यथाओं को दुलारो।
जूझकर कठिनाइयों से रंग जीवनका निखारो।।

दीप बुझ-बुझ कर जला है, वृक्ष कट-कट कर बढ़ा है।
मृत्यु से जीवन मिले तो, आरती उसकी उतारो।
जो व्यथायें प्रेरणा दें उन व्यथाओं को दुलारो।

साहसी को बल दिया है, मृत्यु ने मारा नहीं है।
राह ही हारी सदा, राही कभी हारा नहीं है।
जो व्यथायें प्रेरणा दें उन व्यथाओं को दुलारो।

पांव में चुभते हुये कांटें कभी पनपे नहीं हैं।
डूबता देखा भँवर ही डूबती धारा नहीं है।
जीत ही उनको मिली जो हार से जाकर लड़े हैं।
वे किनारे ही बचे जो सिन्धु को बाँधे खड़े हैं।

हार के भय से डिगे जो वो धरा देखी गयी है।
हर विजय संकल्प के पद चूमती देखी गयी है।
जूझकर कठिनाइयों से रंग जीवन के निखारो।
जो व्यथायें प्रेरणा दें उन व्यथाओं को दुलारो।

गनेड़ीवाला वंश की उज्ज्वल कीर्ति के पद–चिन्ह

श्री सम्पत कुमार मिश्र, सीकर (दिवंगत)

संस्कृत साहित्य की यह सूक्ति सवा सौलह आना सही और सत्य है कि जो मानव प्रजा को प्रिय है, वह राजा का विश्वास पात्र नहीं बन सकता और जो राज का विश्वस्त है, प्रजा उसमें आन्तरिक आस्था नहीं रखती "नृपति जन पदानां दुर्लभः कार्यकर्त्ता" इस मान्यता के अपवाद तो देखने में आते हैं, किन्तु सर्व साधारण मनुष्यों में नहीं। सर्व साधारण तो 'लकीर के फकीर' होते हैं, ये स्थिति पालकता से आगे नहीं बढ़ते। जिनका व्यक्तित्व और कृतित्व विशाल तथा व्यापक होता है, वे मेधावी महानुभाव ही राजा और प्रजा दोनों के समान भाव से विश्वास भाजन बनने की अद्‌भुत क्षमता रखते हैं। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व तथा गरिमा गर्भित गुम्फित अति मानवों में राजस्थान के गनेड़ीवाला परिवार के समर्थ सदस्यों के नाम सदैव से अग्रिम श्रेणी में अंकित रहे हैं जिन्होंने जन्मभूमि लक्ष्मणगढ़ के नाम को दशों दिशाओं में रोशन किया है और जो अपनी विलक्षण विशेषता के कारण न केवल राजस्थान में अपितु समस्त भारतवर्ष में पूजित, प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध हुए हैं। अपनी अनुपम प्रतिभा सन्तुलित बुद्धि-वैभव, अतुलित उदारता चरित्रमता के कारण जहाँ यह परिवार राजा और प्रजा दोनों का श्रद्धास्थल बना, वहाँ इस परिवार के सदस्यों ने दुर्लभ को सुलभ बनाने में कमाल हासिल किया।

गनेड़ीवाला परिवार की समानभाव से प्रजा प्रियता और राजा प्रियता के अनेकों उज्जवल उदाहरण हैं जिनका उल्लेख निकट भविष्य में लक्ष्मणगढ़ निवासी एवं देहली प्रवासी श्री हनुमान प्रसाद गनेड़ीवाला के संयोजकत्व में प्रकाशित होने वाले "गनेड़ीवाला गौरव ग्रन्थ" में देखने को मिलेंगे। यहाँ तो संक्षेप में लक्ष्मणगढ़ नगर में घटित हुए केवल दो-तीन उदाहरण उल्लिखित किये जाते हैं, जिनसे स्पष्ट हो जाता है कि राजा और प्रजा दोनों की एक समान आस्था को सरलता से सुगम-सुलभ करने वाले लक्ष्मणगढ़ के नवरत्न गनेड़ीवाला कितने विशाल बुद्धि-वैभव के धनी और स्वाभिमानी साधक थे।

जिस समय की हम यहाँ चर्चा कर रहे हैं, उस समय प्रजा के जन्म सिद्ध नागरिक अधिकारों की चर्चा करना बहुत बड़े, अपार अगाध साहस का काम था। न तो उस समय कांग्रेस जैसी कोई प्रजाकीय संस्था थी और न प्रजा मन्डल अथवा लोक परिषद जैसा

संगठन। राजा और जमींदार जिस मुताबिक उचित अनुचित जैसे तरीके अपनाते थे, विवश अथवा लाचार होकर उनके सामने सिर झुकाना पड़ता था। उस समय प्रजा के मौलिक अधिकारों की मांग करना तो बहुत बड़ी विपत्ति को बुलावा देने के समान था। ऐसी विषम, गहन एवं संकट पूर्ण स्थिति में एक गनेड़ीवाला परिवार ही ऐसा था, जो निर्भय और निशंक होकर प्रजा के अधिकारों की मांग करता था। जिस गौरवशाली नगर की यह संदर्शिका प्रकाशित हो रही है उस नगर के एक संभ्रान्त नागरिक को सीकर राज की पोद्दारी सम्भालने का राजकीय आदेश जयपुर राज के तत्कालीन अंग्रेज रेजिडेन्ट मेजर थर्सबी द्वारा मिला तो उस निर्भीक तथा साहसिक नागरिक ने अंग्रेज शासक के सामने यह बात पेश करने में कोई झिझक अथवा भीरूता न दिखाई और सहजात साहस के साथ पोद्दारी सम्भालने के सिलसिले में एक शर्त यह भी रख दी कि सीकर राजठिकाने की तालिकदारी प्रथा की जगह न्यायामोदित कोर्ट कचहरियां विधि विधान के साथ स्थापित की जावे। इसके पूर्व सीकर राज के पृथक-पृथक तालके (भूखण्ड) अथवा तीनों चारों नगर एक व्यक्ति को ठेके पर दिये जाते थे। वह व्यक्ति उस तालके अथवा नगर का सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र शासक समझा जाता था। फौजदारी दीवानी सब मामले वही अपनी मर्जी के मुताबिक सलटा देता था। इस दिशा में सर्व प्रथम सुधार होकर विधि विहित अदालतें और न्यायांलय बनाने और प्रजा के जन्म सिद्ध अधिकारों की आवाज उठाकर राजनैतिक सुधारों की स्थापना करने वाले पराक्रमी एवं साहसी सत्पुरुष थे– सेठ प्रेमसुखदास, जो भारत प्रसिद्ध सेठ पूरणमल गनेड़ीवाला के सुपुत्र थे।

इतना ही नहीं, जब रावराजा राम प्रताप सिंहजी पर अपने ही कर्मचारियों द्वारा रचे गये षडयन्त्र के फल स्वरूप विपत्ति आई तो उस विपत्ति से रावराजा साहब को मुक्त कराने वाले समर्थ पुरुषों की प्रथम श्रेणी में पहला सुनाम सेठ प्रेमसुखदास का है जिन्होंने अपने मुनीम द्वारा रेजिडेन्ट मेजर थर्सबी को वस्तु स्थिति से जानकार कराकर रावराजा साहब को बन्धन मुक्त बना दिया। इस प्रसंग को शेखावटी प्रकाश, नामक इतिहास ग्रन्थ के लेखक श्री पं. रामचन्द्र भगवती दत्त शास्त्री, सिंघाना निवासी ने स्पष्ट लिखा है कि विपन्न रावराजा साहब ने जब अपने सेवक भैरू चेला के द्वारा एक पत्र भेजा तो उन सेठजी ने तुरन्त ही ऐसी व्यवस्था की कि रावराजा साहब बन्धन मुक्त हो गये और षड़यन्त्रकारी सजा के पात्र बने।

कृतज्ञ रावराजा साहब ने सम्वत् 1898 में उक्त सेठ जी को ताजीम, सेठ जी श्री एवं नगर सेठ आदि सम्मान देकर उनका उत्साह बढ़ाया। सीकर राज्य के इतिहास लेखक बक्सी झूंथा लाल तथा शेखावाटी इतिहास के लेखक उक्त शास्त्री जी दोनों ने लिखा है कि सीकर राज रियासत में सेठ प्रेमसुखदास पहले महाजन हैं, जिन्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ।

सेठ प्रेमसुखदासजी तो इस सम्मान के लिये जब कोई बधाई देने आता तो यही कहा करते थे कि यह सम्मान मेरा नहीं, बल्कि मेरे माध्यम से समस्त वैश्यों, महाजनों का है, मैं तो केवल माध्यम हूँ।

प्रजा के हित और अधिकारों की रक्षा में नगर के गनेड़ीवाला सेठ कितने अग्रसर और जागरूक थे इस बात को प्रकट करने वाली एक घटना सन् 1934 की है। शेखावाटी प्रदेश की डाकुओं से रक्षा के नाम से शेखावाटी ब्रिगेड नामक सैनिक संगठन अंग्रेजी शासन ने झुन्झुनू में कायम किया। इसके लिये 20 हजार रुपये वार्षिक सीकर राज से लिये जाने लगे जिसका भार प्रकारान्तर से प्रजा पर पड़ता था। मेजर फोरेस्टर इस संगठन के प्रधान बनाये गये। अब तो झुन्झुनू में स्थापित इस रिसाले (घुड सवार सेना) के लिये चारा घास कड़ब शेखावाटी के सब शहरों से मनमाने तरीके से एकत्र किया जाने लगा। जब लक्ष्मणगढ़ नगर से कड़ब-घास मांगा गया तो गनेड़ीवाला सेठों ने फोरेस्टर साहिब के सामने यह मांग रख्खी की गत वर्ष अकाल के कारण जब लक्ष्मणगढ़ नगर के पशुओं के लिये ही पूला घास आदि पूरा नहीं पड़ रहा है तब झुन्झुनू में बंधे घोड़ों के लिये कहां से दिया जावे। गनेड़ीवालों की इस मांग को ठुकरा दिया गया और फोरेस्टर के घुड़सवारों ने जबरन कड़ब ले जाने को गाड़ियाँ भरवा दीं। नगर सेठ गनेडीवाला लक्ष्मणगढ़ नगर के हित के साथ बेरहमी से किये जा रहे इस खेल को सहन न कर सके और उन्होंने स्वतन्त्रता सेनानी डूँगजी जुहारजी को बुलाकर जबरन झुन्झुनू ले जाये जा रहे घास कड़ब के गाडों को लक्ष्मणगढ़ की सीमा से आगे न जाने दिया। हताश घुड़सवारों, सिपाहियों ने जब झुन्झुनू पहुंच कर यह सब बात फोरेस्टर साहब से बताई तो साहब बहादुर का पारा चढ़ गया और वे सन्तुलन खोकर सेठ लोगों पर गर्म हो गये। उन्होंने एक धमकी भरा पत्र सेठ लोगों के नाम भेजकर मांग की कि कड़ब की बेलगाड़ियाँ घुड़सवारों से खोसने वाले सेठों के आदमियों को गिरफ्तार कर झुन्झुनू भेजा जाये। राज सत्ता और जन सत्ता में त्रिपोलिया के पास संघर्ष हुआ। अन्त में सेठों के माध्यम से जनसत्ता की विजय हुई। सेठ गुमानी राम जी गनेड़ीवाला के प्रयत्न से वह रिसाला झुन्झुनू से हटा दिया गया।

अंग्रेजी शासन के समय में ताँत्या टोपे की सेना को फतेहपुर के रास्ते में नगर से एक कोस दूर स्थित सेठों की कोठी पर भोजन देकर भारतीय स्वतन्त्राता का साहस पूर्ण समर्थन करने की हिम्मत इस परिवार के अतिरिक्त किसने दिखाई? किसी ने नहीं। तत्कालीन सीकर नरेश रावराजा भैरू सिंहजी बहुत नाराज हुए इस परिवार पर और उन्होंने फतेहपुर के श्री शिवचन्द्र राय जी सारस्वत को जो वकालत करते थे लक्ष्मणगढ़ भेजकर ऐसा करने से मना किया, किन्तु यह एक व्यक्ति के हित का प्रश्न न था, समस्त भारत की स्वतन्त्रता स्वाधीनता से इस प्रश्न का सम्बन्ध था अतः गनेड़ीवाला सेठों ने भारतीय स्वतन्त्रता का

उस जमाने में निडर होकर आह्वान किया। गनेड़ीवाला सेठों की इस देश भक्ति ने छत्रपति शिवाजी को भी प्रभावित किया। आगरा से पूना जाते हुए एक बार उन्होंने भी गनेड़ी गांव की वन्दनीया वसुन्धरा को वन्दन करने के विचार से गनेड़ी गांव की यात्रा की थी। इस बाबत श्री वैंकटेश पारीक के सौजन्य से लक्ष्मण शिला में पठनीय सामग्री प्रकाशित हो चुकी है।

विक्रम सम्वत् 1941 की घटना है कि टूंटिया साहब का दौरा सीकर राज के गांवों में चल रहा था। उक्त साहब के लक्ष्मणगढ़ आने की तैयारी के प्रसंग में पर्यटन सामान ढोने के लिये ऊंटों की आवश्यकता हुई। राजस्थान में उस समय बेगार प्रथा चलती थी। राजवाले साधारण पैसे देकर चाहे जिसका ऊंट खोलकर ले जाने की क्षमता रखते थे। ऊंट का मालिक कुछ बोल नहीं सकता था। इस प्रथा के अधीन राज के सिपाहियों ने बीजा ब्राह्मण का ऊंट बेगार में पकड़ लिया। बीजा ने सिपाहियों से कहा कि ऊंट बीमार है। उसे दवा देने के बाद ले लिया जावे पर सिपाहियों ने बीजा की विनती न सुनी। बीजा उस दुःख से दुःखी होकर चोपड़िया कूँआ में जा गिरा। ब्राह्मण हत्या से दुःखी ब्राह्मणों ने अनशन का अवलम्बन कर चोपड़िया कूँआ पर धरणा दे दिया। इस पर सेठ गुरुमुखराय जी गनेड़ीवाला सीकर राज गये। उन्होंने सीकर नरेश राव राजा माधव सिंहजी से सिपाहियों की नृशंसता के समाचार बताये और बेगार प्रथा को सीकर राज से सदा के लिये हटाने का हुक्म लेकर आये और बीजा की विधवा बहू को 100 बीघा जमीन दिलवाई, जिसका पट्टा श्री सम्पत कुमार मिश्र के संग्रहालय में देखा जा सकता है। एक ब्राह्मण के बलिदान ने सेठ जी के सहयोग से समस्त राज से बेगार प्रथा समाप्त कर दी। उस समय का एक सोरठा प्रचलित है—

शरणागत प्रतिपाल दुखिया दुख मेटण कुशल।
ये सेठ गनेड़ीवाल आज तणे रजथान में।।
सबला सभी सहाय, निबला नैड़ा सेठ है।
चौपड़ियो बैठाय, नासी बेगारी प्रथा।।

ऐसी ही एक घटना सम्वत् 1938 की है, जब सीकर राज को शीश्यु के काठ की जरूरत हुई तो राज के ओहदेदारों ने सेठ गुमानी रामजी द्वारा बनाये गये तालाब के ईशान कोण पर एक शीश्यू का बड़ा वृक्ष था, उसको कटवा लिया, जबकि सेठों की भूमि पर खड़ा होने से उनसे पूछना चाहिए था। यह मनमानी सेठों को सहन न हुई। उन्होंने घटना स्थल पर पहुंच कर उक्त दरखत को जलवा दिया और राव राजा माधव सिंह जी की सेवा में उपस्थित होकर नागरिक अधिकारों की रक्षा का स्मरण दिलाया, किन्तु ओहदेदारों

से चारों ओर घिरे राव राजा साहब ने जब नागरिक अधिकारों की रक्षा के प्रश्न पर ध्यान न दिया तो गनेड़ीवाला सेठों ने नगर छोड़कर जयपुर जाने का निश्चय कर लिया। इस प्रश्न पर लक्ष्मणगढ़ नगर के अन्य महाजनों ने भी सेठों का साथ दिया। दो सौ ढाई सौ मनुष्यों का यह काफिला लक्ष्मणगढ़ से जयपुर के लिये रवाना हो गया। रास्ते में पड़ने वाले सीकर राज के मार्ग को छोड़कर यह काफिला कूदन गांव के मार्ग से सीकर राज से 5 कोश शीश्यू नामक गांव पहुंच गया। लक्ष्मणगढ़ से रवाना होते समय सीकर राज के बहुत से ओहदेदार अधिकारी सेठों के सम्मुख उपस्थित हुए और क्षमा प्रार्थनायें की किन्तु नागरिक अधिकारों की पक्की गारन्टी हुए बिना सेठ परिवार अपने न्यायोचित निश्चय पर अटल बना रहा। शीश्यु पहुंचने के बाद सीकर के सुप्रसिद्ध वीयाणी परिवार के विवेक शील सदस्य श्री छाजुलालजी वियाणी ने सीकर राज नरेश की सेवा में उपस्थित होकर संवेदना व्यक्त की कि श्रीमन्त रावराजा साहब को स्वयं शीश्यु पधार कर सेठों को वापिस लक्ष्मणगढ़ लिवा लाना चाहिए। विवेकशील राव राजा साहब शीश्यु पधारे, और गनेड़ीवाला सेठों को सम्मान सहित लक्ष्मणगढ़ लिवा लाये तथा नागरिक अधिकारों की रक्षा की गारन्टी दी।

उस समय तत्कालीन किसी कवि का कहा हुआ एक कवित्त प्रचलित है, जो श्रुति परम्परा से सुना जाता है—

कट्टर कुल सदा को सेठ जुगलेश हूँ को, ऊंची-ऊंची बातें रही सेठों के समाजा की।
ओदेदारा हाथ जोड़े तासु नहीं मुड़े मोड़े, बांका होय बात राखी गरीबे निवाजाकी।
माधवेन्द्र आप जाय, लाये हैं मनाय चाय, बस्ती में पधारे मानता बढगी समाजा की,
बस्ती हूँ की नेकी एकी देखी गई टेकी, रही सेठन की शेखी विवेकी रावराजा की।।

चौराहे के दीपदण्ड की तरह चारों ओर सब दिशाओं में प्रकाश पहुंचाने वाले तथा राजस्थान में भारतीय स्वतन्त्रता के प्रथम प्रहरी इस परिवार ने जिसे मारवाड़ी जाति का इतिहास लिखने वाले सुप्रसिद्ध देश भक्त श्री बालचन्द मोदी नें अपने वृहद ग्रन्थ में "अनवी" लिखा है, जिसका अभिप्राय अन्याय और बुराई के आगे कभी न झुक कर स्वाभिमान की रक्षा करने से है। माननीय मोदीजी ने इस परिवार के प्रति तीन अक्षर से बने छोटे से अनवी शब्द का प्रयोग कर मानों गागर में सागर भर दिया है। सच है गनेड़ीवाला परिवार के द्वारा जितनी भी सार्वजनिक प्रवृत्तियाँ प्रसारित हुई, उन सब में उनके अनवीपण का अद्‌भुत परिचय प्राप्त होता है।

जब भारत में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी जैसी कोई संस्था नहीं थी, तब इस परिवार के सेठ लोग देवी संकट के समय प्रजा की सहायता करने के लिये सजग होकर उदारता

के साथ आगे आते थे। राजस्थान में जब छपनियां अकाल पड़ा, तब इसी परिवार के सेठ रामगोपाल जी गनेड़ीवाला ने फतेहपुर के बीहड़ में अकाल सहायता के नाम पर तालाब, कूँआ, धर्मशाला बनवाकर अभावग्रस्तों को राहत देने आगे आये। छपनियां अकाल की भीषणता के उस समय बने गीत "छपनियां फेरू मत आजे म्हारे देश"। आज भी यदा कदा सारंगी पर लौकिक गीत गाने वाले भोंपों से सुनने को मिलते हैं। यही क्यों यह परिवार जहाँ भी जिस स्थान में आबाद हुआ इसने सर्व प्रथम प्रजा के हितार्थ, तालाब, छत्री धर्मशाला, कूँआ, देवालय पहले बनवाये और लक्ष्मणगढ़ में बने ये सार्वजनिक स्थान अन्य महाजनों के लिये भी प्रेरणादायक बने।

इस परिवार के सदस्यों में कोई न कोई एक सदस्य सदैव से ऐसा रहा जिसके जिम्मे घर का काम न होकर सिर्फ प्रजा की सार्वजनिक सेवा का ही कार्य रहता था। उदाहरण के लिये लक्ष्मणगढ़ में प्रथम प्रेमसुखदास जी उनके बाद चिमनराम जी, तदनन्तर सेठ मुरलीधर जी कुंवर साहब के नाम से विख्यात हुए। सदा-सर्वदा पब्लिक सेवा में संलग्न देखे गये। इसी प्रकार फतेहपुर में सेठ सनेहीराम जी बाद में सेठ राम गोपालजी, जिनका कारोबार सुप्रसिद्ध देशभक्त सेठ जमना लालजी बजाज के साथ वर्धा और बम्बई में रहा सदैव प्रजा सेवा में लगे रहे। नगर की जागरूक जनता इस परिवार के वर्तमान सदस्यों से आशा रखती है कि इस परिवार में से अब भी कोई माई का लाल आगे आकर पहले की तरह प्रजा सेवा कर पितृ तर्पण करने का पुण्य प्राप्त करेगा।

गनेड़ीवालों के कुछ कला-संस्थान

श्री वैंकटेश पारीक

छत्री–

सेठ महानन्द जी के द्वितीय पुत्र श्री कृष्णदासजी पर वास्तुकला का उत्कृष्ठ नमूना शेखावाटी में अब तक बनी छत्रियों में सर्वश्रेष्ठ छत्री उनके पुत्रों ने बनवाई जो आज सारी शेखावाटी में वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना बनी हुई है। फतेहपुर में इसी गनेड़ीवाला घराना की बनी छत्री यद्यपि मकराना पत्थर की बनी हुई है और अच्छी छत्रियों में गिनने लायक है किन्तु वह भी इसके बाद बनीं है एवं उसमें इतनी गुम्बज नहीं है जितनी इसमें है। इस छत्री की छटा देखने लायक है। जिन सेठों ने यह बनाई है उनकी तो सराहना ही की जायेगी किन्तु जिन कारीगरों ने इसका निर्माण किया है उनकी भी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करनी पड़ेगी। एक गुम्बज से दूसरी गुम्बज अलग दिखाते हुए भी वस्तुतः अलग नहीं है। सारी गुम्बजों का आधार एक ही है एवं वे सब आपस में सम्बद्ध है। इसी में इस छत्री की विशेषता है। ऐसी छत्री सारी शेखावाटी में आज तक देखने में नही आई।

मुरलीमनोहरजी का मन्दिर–

उसी समय का बना हुआ श्री मुरलीमनोहरजी का मन्दिर है जिसे आज डाकिनों के मन्दिर के नाम से जाना जाता है। इस मन्दिर की वास्तुकला भी सारी शेखावाटी में ही वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है। ऐसा बेजोड़ मंदिर आज तक कहीं देखा नहीं गया। नवलगढ़, बिसाऊ, चिड़ावा आदि कई शहरों में इसके बाद कई मन्दिर बने हैं परन्तु वे सब इससे छोटे हैं तथा उनकी वास्तुकला भी इतनी उत्कृष्ट नहीं है। यह पढ़कर उन शहरों के लोग लेखक पर नाराज न हों। वे निष्पक्षतापूर्वक अपने-अपने मन्दिरों की वास्तुकला का इस मन्दिर की वास्तुकला से मुकाबला करेंगे तो वास्तव में ही आप इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि श्री मुरलीमनोहरजी के मन्दिर की वास्तुकला ही सर्वश्रेष्ठ है। मन्दिर के चारों तरफ विभिन्न देवताओं की मूर्तियाँ बनी हुई है जो वस्तुतः सर्वश्रेष्ठ हैं। उन मूर्तियों के मुख की आकृतियां आंख, नाक, कान, मुंह व हाथों की अंगुलियाँ सब देखने लायक हैं। कहीं पर भी कला को नहीं बिगाड़ा गया है। ऊपर इस मन्दिर का एक नाम डाकिनों का मन्दिर भी आया है इसका रहस्य भी ये मूर्तियाँ ही हैं। मन्दिर के उत्तर की तरफ एक झरोखे के पास श्रीनृसिंह भगवान की मूर्ति बनी हुई है जिसमें हिरण्यकश्यप का पेट चीरते हुए दिखाया

गया है। देहात की औरतों ने इसे डाकिन समझ कर डाकिनों का मन्दिर प्रसिद्ध कर दिया है। मन्दिर में भगवान मुरलीमनोहरजी का राधिका सहित विग्रह है। दरवाजे के पास के एक कमरे में एकादश शिवलिंग और शिव परिवार के विग्रह हैं। इन सबकी पूजा के लिए एक पुजारी नियुक्त है।

भित्तिचित्र

यहां मैं लक्ष्मणगढ़ की कलाकृत्तियों का वर्णन नहीं करूंगा तो यह विवरण अधूरा ही रहेगा। रावराजा लक्ष्मणसिंहजी ने जब लक्ष्मणगढ़ बसाया तो उस समय गुणी लोगों को भी बुलाकर यहां बसाया था। उन्हीं में कुछ मूर्तिकार और चित्रकार भी थे। तभी से लक्ष्मणगढ़ की चित्रकारी प्रसिद्ध रही है। लक्ष्मणगढ़ की पुरानी हवेलियों में आप देखेंगे तो श्री कृष्ण लीलाओं के अनेक चित्र मिलेंगे जो कला के नमूने हैं। उन्हीं के साथ वीरता और सौन्दर्य के भी चित्र आपको दृष्टिगोचर हो जायेंगे। हम पुरानी बातों को छोड़ भी दें तो इन पच्चीस पचास वर्षों में भित्ति चित्रों की कला उच्च स्तर को पहुंच गई है। मैं आप को लक्ष्मणगढ़ की कुछ हवेलियों के भित्ति चित्रों तक पहुँचाऊ और आप देखें तो आप के मुंह से अनायास वाह-वाह निकल जायेगी। आईये आपको मैं उन हवेलियों तक पहुंचा दूं। आप श्री गणेशजी के मन्दिर के पास खड़े हैं तब ही से पूर्व की तरफ चलिए। थोड़ी दूर चलने पर एक चौराहा आयेगा उसके दक्षिणी कोने पर एक हवेली है उस हवेली को दाहिनी तरफ करके आप दक्षिण की तरफ मुड़िये। आप की नज़र पश्चिम की तरफ हवेली के भित्ति चित्रों पर पड़ेगी आप एक-एक चित्र को ध्यान से देखिये। आपको मनुष्य पशु पक्षी एवं समाज के बहुत चित्र लक्षित होंगे। आप यदि चित्रों के रसिक हैं या वाके मर्मज्ञ हैं तो आप उनमें इतने लवलीन हो जायेंगे कि आप को समय का पता ही नहीं चलेगा कि उन पर कितनी देर तक पागल की तरह गुम सुम उन चित्रों को निहार रहे हैं। उन चित्रों की आकृतियाँ आप को इस कला के मर्म का स्पर्श करायेगी। इन चित्रों में कितनी स्वाभाविकता है यह आप स्वयं देख कर भी पता लगा सकते हैं। चूंकि मुझे आपको एक दो हवेलियाँ और दिखानी है अतः मैं ही आप को सचेत करूंगा। यहां से वापिस उत्तर की तरफ सीधे चलिए बीच-बीच में हवेलियों के भित्ति चित्रों पर सरसरी नजर डालते जाईये क्योंकि अभी-अभी आप एक अच्छी चित्र श्रृंखला देख कर आये हैं अतः इन पुराने चित्रों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। मैं भी आपको एक ऐसी जगह ले जाना चाहता हूँ जहां चित्रकार ने कल्पना करके अपनी कलम ही तोड़ दी है। एक चौराहा गया दूसरा भी गया आईये अब तीसरा चौराहा पार कर रहे हैं। लीजिये यह सेठ सागरमलजी की हवेली आ गई है। यह हवेली जमीन में गड़ गई है इस पर आप ध्यान मत दीजिये। इससे लगी हुई जो हवेली है इसका मुह उत्तर में है। इधर हवेली का पसवाड़ा है। इस पर भित्ति चित्र बने हुए हैं आप से

एक चित्र की तरफ ध्यान देने के लिए निवेदन करना चाहता हूँ किन्तु आप तो पहले से ही दत्त चित हो उसे देख रहे हैं। आपके सामने राजस्थानी वेषभूषा में एक अल्हड़ युवती का चित्र है जो चकरी फिरा रही है। लट्टू में चोंच के ऊपर से लट्टू के पेट तक डोरी डाली जाती है फिर उसे बड़े हल्के पन से पृथ्वी पर छोड़ा जाता है एवं लट्टू घूमने लगता है। फिरकी के हत्थे को अंगुलियों की चुटकी से बल दिया जाता है फिरकी फिरने लगती है किन्तु चकरी के दो पाट होते हैं जो बीच में मिले हुए होते हैं। उस हिस्से पर डोरी चकरी में सिमटती जाती है। चकरी हाथ में आ जाती है फिर चकरी नीचे को की जाती है फिर उसे उसी तरह ऊपर लिया जाता है। यह खेल हमारी तरफ बहुत खेला जाता है। आपने भी लड़कों को चकरी घुमाते हुए देखा होगा किन्तु एक अल्हड़ युवती भी चकरी घुमा रही है यह कहीं नहीं देखा होगा। यह कल्पना हमारे चित्रकारों की ही है। इस हवेली पर एक चित्र ऐसा भी है। जहाँ नट रस्से पर चल रहे हैं। थोड़ी और आगे चलिए उत्तर की तरफ की एक हवेली पर नज़र डालिए। आपने घोड़े की गधे की सवारी करते देखा होगा। किन्तु भैंसे की सवारी कम लोग ही करते हैं। किन्तु इस हवेली के चित्रों में भैंसे की सवारी करते हुए भी दिखाया गया है। इस हवेली के पक्षियों के चित्रों को देखिए ये कितने स्वाभाविक बने हैं। यहां से आप को सेठ ब्रजमोहन जी सरावगी की हवेली के पास ला खड़ा करूंगा। आप वहाँ चित्रों को देख कर तो और भी अधिक आश्चर्य करेंगे। ये चित्र फोटो चित्रों की यथार्थ अनुकृति है। आप जानते हैं फोटो छोटे-छोटे ही हुआ करते हैं उन्हें जब लम्बी चौड़ी जगह में चित्रित किया जाता है तो उस जगह की लम्बाई चौड़ाई के अनुपात से ही चित्र बनाये जाते हैं यदि इनमें कुछ फर्क रह गया तो चित्र की सकल बदल जायेगी। चित्र बनाने का शास्त्रीय ज्ञान-विज्ञान होता है उसके अनुसार उचित माप से चित्र बनाऐ जाते हैं। हमारे यहां प्रशिक्षित चित्रकार आप के शास्त्रीय ज्ञान को क्या जाने किन्तु क्या मजाल कि चित्र में शास्त्रीय दृष्टि से कोई कमी रह जाये। आप इन चित्रों को देख कर बताइये कि इनमें कला की कमी रह गई है। मैं समझता हूँ आप सहसा ही कोई कमी नहीं खोज़ सकते। आईये आप को एक दो तेल चित्र और दिखला दूं। आपको मैं सीधा बाजार में ले जाऊंगा। जल्दी चलिए नहीं महाबीर प्रसाद जोशी पुस्तकालय बन्द करके चला जायेगा। खैर अपने समय से यहां आ गये। ऊपर चलिए दक्षिणमुखी यह तैल चित्र देखिये। श्री कृष्णार्जुन खड़े हैं। कला की दृष्टि से आप इन्हें देखिये। कलाकार ने असली अनुकृत्ति की है। मैं आपको एक दो जगह और ले जाता—

गुमान सागर–
सेठ गिरधारीलालजी के पुत्र श्री गुमानीरामजी अपने पितृव्य श्री रामजीलालजी के सहयोग से तालाब, धर्मशाला और कुँए का निर्माण कराया अब जहाँ तोदी कालेज है। उस समय का एक दोहा प्रचलित है "गुमान सागर ऐसो बन्यो सराहा सकल जहान, धरी निशानी स्वर्ग की गिरधर पुत्र गुमान"। आज यह तालाब, कुँआ, धर्मशाला और 100 बीघा जमीन गनेड़ीवाला सेठों ने श्री भगवानदास तोदी कालेज के लिए इसी नाम के ट्रस्ट को दान कर दीहै। किन्तु उस समय इस तालाब का बहुत महत्त्व था। ऐसे बड़े-बड़े तालाब, गऊघाट, तालाब के ऊपर आठों छत्रियाँ बनवाना वास्तुकला के रूप में प्रथम बार लक्ष्मणगढ़ में अपनाई गई। इसके बाद तो फतेहपुर, रामगढ़ आदि शहरों में भी इस नमूने के तालाब बने हैं। फतेहपुर के बीड में बने हुए तालाब के बीच में एक छत्री है। वह तालाब भी इन्हीं सेठों के भाई-बन्धु अन्य गनेड़ीवाला सेठों का बनाया हुआ है। किन्तु प्रश्न वास्तुकला का प्रथम आरम्भ करने का है। 'सतुतत्र विशेष दुर्लभः समुपन्यस्यति कृत्यवर्त्म चः'।

कतिपय पुस्तकों में दिये गये गनेड़ीवाल वंश सम्बन्धी उल्लेख

शेखावाटी प्रकाश

पं. रामचन्द्र भगवती दत्त शास्त्री, (पृ. 38, 39)

"भैंरू चेला को सेठ प्रेमसुखदासजी के निकट भेजा और अपनी मुक्ति का उद्धार चाहा जिस पर सेठ प्रेमसुखदास ने अपने हाथ से लिखकर भेजा कि आप चिंता न करें शीघ्र प्रबन्ध किया जाता है। जिस पर उक्त सेठजी ने अपना एक गुमाश्ता जो जयपुर का गुमाश्ता राम नारायण था उसको जयपुर एजेन्ट मेजर थर्सवी साहब बहादुर के पास भेजा। रावराजाजी का समाचार पहुँचाया। उनका एक विश्वासी जमादार कादर अली नामी को लक्ष्मणगढ़ भेजा। उसने रावराजाजी को एजेन्ट साहब बहादुर की तरफ से संतोष दायक समाचार कहा और नौनिधराम रामचन्द्र को छुड़ाया और राज्य कार्य बखतमल दरोगा करता रहा।

.........और पोतदारी (खजाना) का कार्य सेठ प्रेमसुखदास को दिया और सरकार से मान कुर्व दिया गया जो आज तक महाजनों को सीकर राज में नहीं दिया गया था। सेठ प्रेमसुखदासजी प्रथम हैं जिन्होंने शेखावाटी में राज मान प्राप्त किया।"

सूरजमल जालान स्मृति ग्रन्थ

तृतीय परिच्छेद, (पृ. 78)

"श्री रामचन्द्रजी बाजोरिया (सूरजमलजी जालान के श्वसुर) की धर्म पत्नी नारायणी बाई ने रामचन्द्रजी की मृत्यु के बाद इस विश्वास से अपने नन्हे पुत्र नागरमल सहित कलकत्ता जाना तय किया था कि रतनगढ़ के गनेड़ीवाला भी वहीं कलकत्ता में हैं।

"अकल्पनीय रूप से नागरमलजी की माताजी ने सूरजमलजी को स्वतंत्र व्यापार करने के लिये जो बड़ी राशि प्रदान की तो चिमनलालजी गनेड़ीवाला के सत् परामर्श से ही वह रुपया दिलवाया गया था। प्रारम्भ में सूरजमल जी का सम्बन्ध इस तरह क्रमशः चिमनलालजी से बढ़ा।

अजमेर हिस्टोरिकल एण्ड डेस्क्रिप्टव

श्री हरविलास शारदा

स्कोटिश मिशन इंडस्ट्रीज क.लि.

अजमेर - 1911

"वर्तमान मन्दिरों में सबसे बड़े मन्दिर बाईजी का मन्दिर जिसे महाराजा जगतसिंह, जयपुर की रानी ने बनवाया था तथा श्री रंगजी के मन्दिर हैं। ये मन्दिर पुष्कर के प्रमुख मन्दिरों में हैं। श्री रंगजी के मन्दिर को सन् 1823 में हैदराबाद (दक्षिण) के सेठ पूरणमल ने बनवाया था। यह मन्दिर रामानुज वैष्णव संप्रदाय से सम्बंधित है। इस मत के संस्थापक श्री रामानुजाचार्य का जन्म भूतपुरी (मद्रास) में सन् 1016 में हुआ था। उन्होंने त्रिचनापल्ली के पास श्रीरंङ्गम में अपने मत का प्रचार किया।

इस मन्दिर के सभी पुजारी मद्रासी ब्राह्मण हैं। इस मत के अनुयायी, चाहे वे किसी भी जाति के हों, वे एक साथ मन्दिर में बैठकर भोजन करते हैं। इनमें चौका पद्धति नहीं है।" पृष्ठ 143

मूल अंग्रेजी से अनुदित

राजा बलदेवदास बिडला

जैमिनी कौशिक 'बरूआ'

जैमिनी प्रकाशन, कलकत्ता, सन् 1951 (पृष्ठ 14, 17)

"ऐसा लगता है कि सेठ उदय रामजी तक इस परिवार में संतोषप्रद संपत्ति रही और वंशानुगत प्रतिष्ठा के बल पर ये सेठाई में भी अग्रणी रहे। लेकिन शोभारामजी के समय में संपत्ति आदि का बटवारा होने, देश में राजनैतिक स्थिति विषम बन जाने और राजस्थान में अकाल आदि की कटु परिस्थितियाँ बनी रहने से वंशगत श्री समृद्धि शिथिल पड़ चुकी थी। फिर भी वैश्य पुत्र वैश्य ही रहता है। इन्होंने अजमेर में हैदराबाद के सेठ गनेड़ीवालाजी की पैड़ी पर सिर्फ 301 रुपये सालाना की मुनीमी स्वीकार की और वहाँ जीवन यापन करते रहे। सेठ पूरणमलजी गनेड़ीवाला शेखावाटी की ही एक विभूति थे और हैदराबाद में आपकी फर्म थी। कलकत्ता, बम्बई, अजमेर, जयपुर, दिल्ली आदि बड़े शहरों में आपने अपनी ब्रांचें सफलतापूर्वक खोली थीं। आपके यहाँ प्रधानतया बैंकिंग का व्यापार होता था।"

.........किन्तु प्रस्थान करने के पूर्व आपको यह उचित लगा कि अजमेर चलकर गनेड़ीवालों का आशीर्वाद और लेलिया जाय। .... इस आशय को लेकर आप 22 वर्ष की उगती

उम्र में अकेले अजमेर पहुँचे। गनेड़ीवालोंजी ने आपको बहुत समझाया कि अभी आप बच्चे हैं, इस अरक्षित अवस्था में आपको दूर देश नहीं जाना चाहिये। आपको हमारे यहाँ ही काम करना चाहिये। आपके पिताजी भी यहीं आखिरी समय तक काम करते रहे थे। लेकिन आपने दृढ़ निश्चय प्रकट करते हुये बताया कि अब तो अजमेर नहीं, बम्बई जाकर ही काम करने का मन है। तब उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दे दी। वहाँ से आशीर्वाद लेकर आप लौटे।"

बिखरे विचारों की भरोटी, (वेदिन)
श्री घनश्यामदास बिडला
सस्ता साहित्य मंडल, प्रकाशन, 1978
नई दिल्ली, (पृ. 11)

"मेरा जब जन्म हुआ तो मेरे माता-पिता सुखी और सम्पन्न थे। इसके कई वर्ष पहले मेरे पितामह ने धन-उपार्जन कर लिया था। मेरे पिता के पितामह एक धनी परिवार के मुख्य मुनीम थे, जिनकी तनख्वाह शायद सात रुपया मासिक थी तो भी उनका रुतबा और दर्जा काफी प्रतिष्ठित था। उस जमाने के सात रुपये माहवार कोई छोटी रकम नहीं मानी जाती थी।

ईस्ट इंडिया कंपनी का वह जमाना था। अजमेर और मऊ की छावनी में बड़े साहबों का निवास था और इनका साहब लोगों से काफी संपर्क था। जब मेरे प्रपितामह मरे तो मेरे पितामह करीब सोलह साल के थे। मालिकों ने इस जवान लड़के को भी अपने पिता के स्थान पर नौकरी में आ जाने का प्रस्ताव किया पर इनकी स्वतन्त्र प्रकृति और उच्चाभिलाषा के कारण नौकरी ने इन्हें आकर्षित नहीं किया और अपनी माता की इजाजत लेकर वह बम्बई की ओर अपना भाग्य अजमाने को चल पड़े।"

(उस समय सेठ पूरणमल गनेड़ीवाला की पैड़ी पर बिड़ला परिवार के रामधन, शोभाराम, आसकरण आदि प्रायः 9 सदस्य काम करते थे। इनमें श्री शोभाराम भी एक मुनीम थे। 'धनी परिवार' से यहाँ गनेड़ीवाला परिवार से तात्पर्य है।)

मरूभूमि का वह मेघ

श्री रामनिवास जाजू

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1985, (पृ. 28, 29, 30, 31)

"भूदरमलजी के ज्येष्ठ पुत्र उदयरामजी पिलानी में ही रहकर वाणिज्य व्यापार करते रहे। इनके भी तीन बेटे हुये। सबसे छोटे चुन्नीलालजी निस्संतान रहे। उनसे बडे रामधनदासजी सपरिवार ग्वालियर जा बसे। सबसे बड़े शोभारामजी के एक पुत्र हुआ शिवनारायण। शुरु में शोभारामजी पिलानी में ही रहकर धन्धा रोजगार करते रहे। लेकिन संपत्ति के बटवारे और भयंकर अकाल तथा राजनैतिक उथल-पुथल के कारण घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होती चली गयी। जीविका की तलाश में वह पिलानी से बाहर निकले और अजमेर पहुंच गये। यहाँ उन्होंने शेखावाटी के ही सेठ पूरणमलजी गनेड़ीवाला की एक बैंकिंग फर्म की शाखा में काम करना शुरु किया जिसका प्रधान कार्यालय हैदराबाद में था। पेड़ी के मुनीम की हैसियत से उन्हें सात रुपया माहवार वेतन मिलता था। यद्यपि यह वेतन तत्कालीन मानको के अनुसार अच्छा ही कहा जा सकता था तथापि एक स्वतन्त्र व्यवसायी के मुनीम बन जाने में परिवार का अवमूल्यन तो निहित था ही।

............गदर के एक साल बाद जब शोभारामजी का असामयिक निधन हुआ तब उनके इकलौते बेटे शिवनारायणजी 16 वर्षीय किशोर थे। परिवार की आर्थिक अवस्था पिता के समय से ही चिन्ताप्रद चली आ रही थी। बल्कि सच तो यह है कि आर्थिक अवस्था बिगड़ने के कारण ही शोभारामजी स्वतंत्र व्यवसाय छोड़कर गनेड़ीवालों के मुनीम बनने को बाध्य हुये थे। अगर ऐसी स्थिति में किशोर शिवनारायण ने स्वयं भी नौकरी पेशे में रहना स्वीकार किया होता तो किसी को आश्चर्य न होता। परन्तु उन्होंने अजमेर से पिलानी लौट जाने और वहीं रहकर साझे में व्यापार आरम्भ करने का फैसला किया"।

"बम्बई कलकत्ता की अपेक्षा कम दूर थी, इसलिये शिवनारायणजी ने बम्बई जाने का निर्णय किया। जाने से पहले वे गनेड़ीवालों का आशीर्वाद लेने अजमेर गये। उनका भव्य कारोबार देखकर ही कभी किशोर शिवनारायण के मन में बड़ा व्यापारी बनने की आकांक्षा जगी थी। गनेड़ीवालों ने उन्हें बहुत समझाया कि तुम अभी एक 23 वर्षीय अनुभवहीन नवयुवक हो, तुम्हारे ऊपर पारिवारिक जिम्मेदारियाँ हैं इसलिये तुम्हारा रास्ते के तमाम जोखम उठाकर बम्बई में व्यापार करने के लिये जाना ठीक नहीं है। इससे तो अच्छा कहीं यह होगा कि तुम भी अपने पिता की तरह हमारे यहाँ नौकरी कर लो, तुम्हें अच्छा वेतन प्राप्त होगा और अनुभव भी। किन्तु शिवनारायणजी अपने संकल्प पर दृढ़ रहे।"

कर्मयोगी- घनश्यामदास

डा. लक्ष्मीनारायणलाल

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन, नई दिल्ली सन- 1985

शिवनारायणजी के पितामह उदयरामजी के समय तक बिड़ला-परिवार के पास पर्याप्त धन-संपदा रही, लेकिन शिवनारायणजी के पिता शोभारामजी के समय में सेठाई का ह्रास हो गया। कारण था, संपत्ति का बंटवारा, देश में राजनीतिक उथल-पुथल और राजस्थान में अकाल की काली छाया का पड़ना। फलस्वरूप शोभारामजी अजमेर के सेठ गनेड़ीवाला की पैड़ी पर काम करने लगे। उन्हें वार्षिक वेतन तो सिर्फ तीन सौ एक रुपया मिलता था, लेकिन इसके साथ ही नफे में भी उनको निश्चित हिस्सा दिया जाता था। सेठ गनेड़ीवाला शेखावाटी के ही निवासी थे। उनके यहाँ मुख्य रूप से लेन-देन का काम होता था।

अठारह सौ उनसठ में अजमेर में शोभारामजी का देहांत हो गया। उस समय शोभारामजी के पुत्र शिवनारायण की आयु केवल सोलह वर्ष की थी।

पिता की मृत्यु तक पिलानी में शिवनारायणजी के जीवन की गाड़ी सामान्य रफ्तार से चल रही थी। लेकिन इस बीच उनके जीवन में जो भारी उथल-पुथल मची उसने शिवनारायणजी को बंबई प्रवास की प्रेरणा दी। बंबई जाने से पहले वे कुलमर्यादानुसार गनेड़ीवालों का आशीर्वाद लेने अजमेर गये। उनका भव्य कारोबार देखकर किशोर शिवनारायण के मन में बड़ा व्यापारी बनने की आकांक्षा जागी। गनेड़ीवालों ने उन्हें बहुत समझाया कि बंबई में व्यापार करने के लिए जाना बिलकुल ठीक नहीं है। इससे तो कहीं अच्छा होगा कि तुम भी अपने पिता की तरह हमारे यहां नौकरी कर लो। लेकिन शिवनारायणजी अपने संकल्प पर दृढ़ रहे। अजमेर से लौटने के बाद उन्होंने माताजी से कुछ रुपये लिये और बंबई की राह ली।

इस तरह के सट्टे में उन्होंने लाखों रुपये कमाये। बंबई में शिवनारायणजी को पोद्दारों की फर्म 'चेनीराम-जेसराज' से बहुत सहारा मिला। चेनीराम-जेसराज की गद्दी में ही एक कोने में बैठकर वह अपना अलग धंधा करते थे।

शिवनारायणजी ने अपना स्वतंत्र व्यवसाय शुरू करने के लिए जब अजमेर में गनेड़ीवालों की नौकरी छोड़ी, तब उन्होंने गनेड़ीवालों से कहा कि उनको स्वर्गीय पिता शोभारामजी के बारे में वे पूरा हिसाब बता दें। गनेड़ीवालों ने जो हिसाब दिया, उसमें बताया गया था कि शोभारामजी से बहुत से पैसे वसूलने हैं। शिवनारायणजी ने वचन दिया कि उनके पिताजी को जो देना हे, उसका एक-एक पैसा वे चुका देंगे। कई वर्ष व्यतीत हो गये। अपनी योग्यता और दूरदर्शिता के कारण शिवनारायणजी ने बंबई में सफलतापूर्वक

अपने को स्थापित कर लिया। बंबई से पिलानी लौटते हुए शिवनारायणजी, जो अब सेठ बन गये थे, अजमेर गये। वे गनेड़ीवालों से मिले और उन्होंने उनसे पूरे हिसाब की मांग की। उन्होंने मांग की कि जो पिछला बकाया उनके पिताजी को देना है, उस पर जो ब्याज बनता हो, वह भी जोड़ कर बताएं। गनेड़ीवालों ने ब्याज सहित हिसाब दे दिया। शिवनारायणजी ने न तो ठीक तरह से हिसाब देखा और न ही कोई प्रश्न उनसे किया और सारा पैसा गनेड़ीवालों को दे दिया। इसके बाद उन्होंने गनेड़ीवालों से कहा कि जिस कागज पर उन्होंने हिसाब दिया है, उस पर वे हस्ताक्षर कर यह लिखकर वापस कर दें कि उनके पिताजी को जो कुछ पैसा देना था, वह सबका-सब उन्हें मिल गया है और अब कुछ बकाया नहीं रह जाता। इस कागज को लेकर शिवनारायणजी पिलानी वापस चले गये और हिसाब के इस कागज को उन्होंने सावधानी से अपनी तिज़ोरी में रख दिया।

कुछ समय बाद गनेड़ीवाले कठिनाई में फंस गये, उनका व्यापार चौपट हो गया। एक दिन वे अचानक पिलानी जा पहुंचे और शिवनारायणजी से मिले। गनेड़ीवालों ने सोचा था कि इतने वर्ष व्यतीत हो गये हैं, शिवनारायणजी ने यह हिसाब संभालकर नहीं रखा होगा कि उनके पिताजी को कितना कर्जा वापस करना है। यही सोचकर गनेड़ीवालों ने शिवनारायणजी से कहा कि उन्हें अब भी उनके पिताजी के ऊपर कर्ज का बहुत-सा पैसा वापस लेना है। शिवनारायणजी को आश्चर्य हुआ, लेकिन उन्होंने ग़नेड़ीवालों से ठहरने के लिए कहा। उन्होंने हिसाब का वह कागज,जो संभालकर रखा था, खोज निकाला। उस कागज को उन्होंने गनेड़ीवालों को दिखाया। उसमें स्पष्ट रूप से लिखा था कि शोभारामजी से जो कुछ भी लेना था, वह सारे-का-सारा पैसा उनके लड़के शिवनारायणजी से प्राप्त कर लिया गया है। यह देखकर गनेड़ीवाले हक्के-बक्के हो गये। उन्हें बहुत शर्मिंदा होना पड़ा। शिवनारायणजी ने तब उनसे कहा कि यदि उन्हें इस समय आर्थिक कष्ट आ पड़ा है तो उनके लिए अच्छा यही होता कि वे आर्थिक सहायता की मांग करते। उन्होंने कहा कि उनके पिताजी के संबंध गनेड़ीवालों के परिवार के साथ दीर्घकालीन रहे हैं। इसलिए यदि वे अब आर्थिक सहायता की मांग करते तो शिवनारायणजी कदापि इंकार न करते। इसके बाद उनके इस व्यवहार पर थोड़ी-सी शिकायत करने के बाद शिवनारायणजी ने गनेड़ीवालों को काफी पैसा दिया।

इलाहबाद हाईकोर्ट के फैसले के कुछ अंश

"जोकि जनूवी हिन्दुस्तान के एक पवित्र भक्त थे किया। श्री रंगजी मन्दिर वृन्दाबन की तामीर सेठ प्रेमसुखदास हैदराबाद वालों ने अपने मुकामी मुख्त्यार आम मथुरावालों के मारफत सं. 1845 (1902 ई) में शुरु की जो कि 1851 में करीब तीस लाख रुपये की लागत पर खतम

हुई।

अदालत हाईकोर्ट जूडीकेचर इलाहाबाद
सीगा दीवानी मद्य अपील
इलाहाबाद 13 अप्रेल, सन् 1926

सीकर का इतिहास

पं. झाबर मल्ल शर्मा

राजस्थान एजेन्सी, कलकत्ता, सं. 1979, (पृ. 126, 127)

"लक्ष्मणगढ़ के सेठ पूरणमलजी प्रेमसुखदासजी की वैष्णवता की उस समय प्रसिद्धि हो चुकी थी। उक्त सेठों ने श्रीमान् रावराजा जी को भी शङ्ख चक्रांकित वैष्णव बनाने का प्रयत्न किया। रींगस के पं. श्रीरामजी ने इसके विरूद्ध स्मृति वचनों को बटोरकर रावराजाजी की आस्था को जमने नहीं दिया। रावराजाजी ने सेठों को मीठा उत्तर दे दिया कि सभी धर्म हमारे लिये आदरणीय हैं। बात गयी गुजरी हो गयी। इसके बहुत समय बाद रावराजाजी पुष्कर तीर्थ में स्नानार्थ पधारे। लक्ष्मणगढ़ के उक्त वैष्णव सेठ तथा रींगस के पण्डित श्रीरामजी का भी संयोगवश जाना बन गया। सेठ जी ने दक्षिणा का प्रलोभन दिया और पण्डित जी ने प्रसन्न होकर वैष्णवता की दीक्षा ग्रहण कर ली।"

सेठ जमनालाल बजाज

श्री रामनरेश त्रिपाठी, (पृष्ठ 4)

"श्री बच्छराजजी जमीदार भी थे और फतेहपुर के सेठ हीरालाल रामगोपालजी गनेड़ीवाला के साझे में रूई का व्यापार भी करते थे।"

श्री रङ्गदेशिक जीवन चरित्र

पं. रामानुज दास शास्त्री

श्री वैष्णव नवयुवक दल, श्री धाम वृन्दावन, सं. 1996 (पृ. 33, 34)

"यह सुन लक्ष्मीचन्दजी बोले "कैसा मुहूर्त और किसकी प्रतिष्ठा" तब राधाकृष्ण जी बोले "वृन्दावन के मन्दिर की प्रतिष्ठा और उसी का मुहूर्त।" लक्ष्मीचन्द्रजी बोले "वह मन्दिर तो हैदराबाद के सेठ पूरणमल का है। केवल वह तो आपके मार्फत है। मुहूर्त और प्रतिष्ठा से आपको क्या प्रयोजन?" श्री राधाकृष्ण जी गोविन्ददास जी की ओर इशारा कर, जो वहाँ बैठे थे, बोले कि यही पूर्णमल है, और इन्ही का मन्दिर है।

श्री ठाकुर रङ्गजी महाराज (देवत्र संपत्ति सम्बन्धी)

मन्त्री कमेटी इन्तजामिया सं. 2038

"यह मन्दिर शुमाली हिन्दुस्तान के सबसे बड़े मन्दिरों में से एक है। ट्रस्ट का ताल्लुक श्री स्वामी रङ्गचारी जी के नाम से निगूढ़ ममत्व को देखते हुये उनका स्वाभाविक स्नेह भाव भी सूरजमलजी के प्रति घनीभूत होने लगा। इन्हें व्यापार में सत्परामर्श भी वे देने लगे।"

"बात सन् 1920 की है। जमनालाल जी के प्रयत्न से स्थापित अग्रवाल महासभा का दूसरा अधिवेशन बम्बई में हुआ था। सभापति थे रामलाल जी गनेड़ीवाला। गनेड़ीवाला परिवार कट्टर सनातन धर्मी और बहुत ही आचार विचार वाला परिवार माना जाता था।

पंचम परिच्छेद
पृष्ठ 164

राजस्थानी संस्कृति की महत्ता

पं. सीताराम शास्त्री, 2002, (पृ. 7)

"यहाँ के (राजस्थान के) लक्ष्मी पुत्र सदा देश विदेश के कोने कोने में फैलकर धनोपार्जन में सिद्धहस्त हुये हैं। वाणिज्य विस्तार के साथ-साथ अपनी प्रतिभा के कारण सभी बड़े-बड़े राजघरानों में भी प्रतिष्ठा रही है। वह प्रतिष्ठा केवल राजस्थान के राज घरानों तक ही सीमित नहीं रही बल्कि दूर–दूर तक पहुँची है। जहाँ लक्ष्मणगढ़ के गनेड़ीवाले हैदराबाद राज्य के खजाँची रहे हैं वहाँ पित्तियों का भी राज्य सम्मान कम नही रहा है।"

GOLDEN BOOK OF INDIA by Sir Roper Lethbridge, K.C.I.E., Edition : 1893

RAMBILAS, POKARMAL, Rao Saheb.

Born 1840. The Title was conferred, as a personal distinction on Ist June 1888, in recognition of long and meritorious service as a Municipal Commissioner of Amraoti, Berar. His family have been Bankers in a good position for several generations under the Government of His Highness the Nizam. Dhanraj Pokarmal, the Rao Saheb's grand father, was the first Banker of Amraoti, and was killed by the populace in

some corn-riots in a time of scarcity in 1845. His son, Pokarmal Rambilas, was the Banker of the Nawab Mubarak, brother of His late Highness the Nizam. His son was the Rao Saheb Rambilas Pokarmal, who was married in 1852.

Residence,------- Amraoti, Berar

Amraoti Gazeter.
Page 176.
Leading Families

151. The most prominent Marwaries are Fatelal Saligram the local head of the great house of Shriram Shaligram at Dattapur and Shrinarayan Rambilas, the proprietor of the firm of Dhanraj Pokarmal in Amraoti. Both these gentlemen are honorary magistrates; and the latter's family were the first bankers on a large scale in Berar. Dhanraj Sahu, indeed, the founder of the families was murdered by the enraged populace in 1255 Fasli (Ad. 1845) being suspected of having made a corner in grain after a failure of the monsoon. His grandson Rai Saheb Rambilas Pokarmal however gained his title for his many public spirited acts; and the family are at present much respected.

भारतीय व्यापारियों का परिचय
श्री बालचन्द्र मोदी, (पृ. 5, 30)

मेसर्स धनराज पोकरमल के परिचय के सम्बन्ध में इस प्रकार उल्लेख है। इस फर्म के मालिकों का आदि स्थान रामगढ़ है। आप लोग अग्रवाल समाज के गनेड़ीवाला सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना 150 वर्ष पूर्व सेठ धनराज जी गनेड़ीवाला ने की। यह गनेड़ीवाला परिवार रामगढ़ से निजाम हैदराबाद आया और वहाँ बस गया। इस परिवार ने वहाँ अच्छा प्रभाव स्थापित कर लिया। और अपना सब कार्य मेसर्स महानंदराम पूरणमल के नाम से करने लगा। इस फर्म के संचालकों ने राज काज सम्बन्धी ठेकों का काम प्रधान रूप से करना आरंभ किया। इसी सम्बन्ध में सेठ धनराजजी बरार प्रांत का ठेका ले अमरावती

आये और उपर्युक्त नाम से अपना फर्म यहाँ स्थापित कर काम करने लगे। आप बड़े प्रबन्ध कुशल महानुभाव हो गये हैं। आपका स्वर्गवास सन् 1845 में हुआ।

"इस फर्म के संस्थापक सेठ महानंदरामजी देश से पैदल मार्ग द्वारा हैदराबाद आये एवं आपके ही हाथों से यहाँ फर्म की स्थापना हुई। सेठ महानंदरामजी यहाँ सरकारी पोतेदारी का काम महानंदराम पूरणमल के नाम से करते थे। इसके अलावा आपने राज्य के साथ लेन देन का सम्बन्ध भी जारी किया। कलकत्ता, बम्बई आदि बड़े शहरों में उस समय आपकी बहुत सी दुकाने काम करती थी। आपके पुत्र सेठ पूरणमलजी इस कुटुम्ब में बहुत प्रतापी एवं मेधावी पुरुष हुये। आपने इस फर्म के सम्मान, संपत्ति एवं प्रतिष्ठा में विशेष रूप से वृद्धि की। व्यापारिक उन्नति के साथ हैदराबाद का प्रसिद्ध सीताराम बाग आपने बनवाया। इस मन्दिर की प्रतिष्ठा सन् 1825 में ज्येष्ठ सुदि 2 को की गयी। यह मन्दिर हैदराबाद के प्रसिद्ध देवालयों में गिना जाता है। इसके स्थायी प्रबन्ध के लिये निजाम सरकार आसफजाह बादशाह ने 75 हजार सालाना की जागीर निकाल कर सेठ पूरनमलजी का उचित सत्कार किया था। इसकी जागीर पानगांव, बलगांव, आकोली आदि स्थानों में है। इसके अलावा एक श्री रंगजी का मन्दिर पुष्कर में भी बनाया। इसकी प्रतिष्ठा सन् 1843 में की। इस मन्दिर के प्रबन्ध के लिये राजपूताने में सीकर दरबार की ओर से 1500 रुपया सालाना की जागीर प्राप्त है।

'अग्रवाल जाति का इतिहास – पृष्ट 382

गनेड़ीवाला

गनेड़ीवाला परिवार के पूर्वज सेठ हरचन्दरायजी थे। आपके पश्चात् क्रमशः 22 पीढ़ियों के नाम उपलब्ध होते हैं। सेठ हरचन्दरायजी की बाइसवीं पीढ़ी में सेठ जुगलदासजी हुए। आप गनेड़ी नामक ग्राम में निवास करते थे और वहाँ बाजोरिया कहलाते थे। मिती माघ सूदी 2 संवत 1840 में आपका स्वर्गवास गनेड़ी ग्राम में हुआ। इन्ही सेठ जुगलदासजी के पश्चात् उनकी संतानें गनेड़ीवाला के नाम से प्रसिद्ध हुई। आपके नूंदरामजी, महानन्दरामजी, सालिगरामजी, हरिकृष्णदासजी, तोलारामजी, वृन्दावनजी, धनराजजी तथ मोहनरामजी नामक 8 पुत्र हुए, इन्ही आठ पुत्रों के परिवार इस समय भारत वर्ष में व्यवसाय करते हैं तथा गनेड़ीवाला बंक के नाम से विख्यात हैं। इस खानदान में आगे चलकर कुछ ऐसे महापुरुष हुए, जिन्होंने अपनी निर्मित अमर कीर्तियों के द्वारा अपने खानदान को मारवाड़ी समाज में एक बड़े सम्माननीय और उच्च स्थान पर स्थित किया। इस वंश के कुछ परिवारों का संक्षेप परिचय नीचे दिया जा रहा है।

सेठ महानन्दराम पूरणमल गनेड़ीवाला, हैदराबाद (दक्षिण)

हम ऊपर लिख आये हैं कि गनेड़ीवाला परिवार के पूर्वज सेठ जुगलदासजी के 8 पुत्र हुए, उनमें दूसरे पुत्र सेठ महानन्दरामजी थे। आपका परिवार पहले गनेड़ी में निवास करता था वहाँ से यह परिवार रावराजा लक्ष्मणसिंहजी के अनुरोध से लक्ष्मणगढ़ में संवत् 1880 के लगभग आबाद हुआ और तबसे इस परिवार का खास निवास स्थान लक्ष्मणगढ़ ही है। इस परिवार के पूर्वज सेठ महानन्दरामजी सर्व प्रथम व्यापार के लिये संवत 1848 में देश से रवाना हुए। उस समय रेल मोटर आदिका अस्तित्व नहीं था। अतएवं आपने ऊंटों तथा बैल गाड़ियों के द्वारा सुदूर दक्षिण प्रान्त की यात्रा तय की और निजाम स्टेट के हैदराबाद नामक स्थान में महानन्दराम पूरणमल के नाम से व्यवसाय का आरम्भ किया। धीरे-धीरे व्यवसाय से उन्नति प्राप्त कर सेठ महानन्दरामजी ने बरार प्रान्त के सरकारी पोतदारे का कार्य आरम्भ किया। आपके गिरधारीलालजी, पूरणमलजी श्रीकृष्णदासजी तथा रामजीदासजी नामक 4 पुत्र हुए। इनमें सेठ पूरणमलजी के परिवार का संक्षेप परिचय नीचे दिया जा रहा है।

सेठ पूरणमलजी गनेड़ीवाला

सेठ पूरणमलजी इस खानदान में बहुत प्रतापी, प्रभावशाली और भाग्यवान पुरुष हुए। आपने अपनी व्यवसाय चातुरी से अपने व्यापार और यश को बहुत बढ़ाया तथा अपने खानदान के नाम को भारत के मारवाड़ी अग्रवाल समाज में प्रदीप्त किया। आपने अपने पिताजी द्वारा स्थापित किए व्यापार को बढ़ा कर हैदराबाद स्टेट के साथ लेन-देन का सम्बन्ध स्थापित किया। आपने अपनी फर्म की शाखाएं कलकत्ता, बम्बई, अजमेर, जयपुर, दिल्ली आदि भारत के बड़े-बड़े शहरों में खोलीं। इन सब स्थानों पर आपकी दुकानें मातबर और प्रतिष्ठित मानी जाती थीं, इस समय आपके यहाँ प्रधानतया बैंकिंग व्यापार होता था। इस प्रकार आपने व्यापार को चारो ओर विस्तृत कर उससे लाखों करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। आपने अपने परिवार के सैंकड़ों व्यक्तियों को व्यवसाय से लगाने के लिए समय-समय पर बड़ी-बड़ी सहायताएं दीं। परिवार के अलावा आप अपने जाति भाइयों की सेवा तथा सहायता करने की ओर भी बहुत लक्ष रखते थे। उस समय आप अपने समाज के नामी बैंकर और गणमान्य दानी माने जाते थे।

व्यापार में सम्पत्ति उपार्जित करके सेठ पूरणमलजी ने दान धर्म के कामों की ओर भी बहुत बड़ा लक्ष दिया। आपने हैदराबाद में श्री सीताराम बाग और श्री वृजभगवान के दो दिव्य देश निर्माण कराये। इनकी प्रतिष्ठा सम्वत् 1882 की जेठ सुदी 2 के दिन की गई। इन मन्दिरों के निर्माण तथ प्रतिष्ठा उत्सव में आपने उस समय 1 करोड़ रुपया लगाया था। जिसका मूल्य आजकी समता में कहीं अधिक होता है। यह मन्दिर हैदराबाद स्टेट के

प्रसिद्ध हिन्दू देवालयों में प्रधान है। इस मन्दिर की स्थाई व्यवस्था के लिए निजाम सरकार आसफजाह बादशाह ने 75 हजार रुपया सालियाना की जागीर बरार तथा मुगलई प्रान्त के पानगांव, अकोली तथा बलगांव जिलों में दीं। जो इस समय तक इन मन्दिरों की रक्षार्थ चली आती है। इस प्रकार जागिरी प्रदान कर निजाम दरबार ने सेठ पूरणमलजी की प्रतिष्ठा और हिन्दू जनता का सम्मान बढ़ाया। आप हमेशा हजारों ब्राह्मणों को भोजन करवाते रहते थे। इसी प्रकार आपने लक्ष्मणगढ़ में श्री वैंकटेश भगवान का मन्दिर और पुष्कर में श्री रंगनाथजी का मन्दिर बनवाया। इसकी प्रतिष्ठा सम्वत् 1900 के लगभग हुई। इस मन्दिर की व्यवस्था के लिये सीकर दरबार ने रामपुरा नामक एक गांव जागीर में दिया। मन्दिरों के अलावा सेठ पूरणमलजी ने लाखों रुपये गो ब्राह्मणों के प्रति पालन में लगाये। आपके कार्यों से आपके खानदान का यश शेखावाटी प्रान्त में इतना फैला कि आज भी वहाँ की जनता आपके नामको बड़े आदर व सम्मान के साथ याद करती है। इस प्रकार ख्याति पूर्ण जीवन बिता कर सेठ पूरणमलजी गनेड़ीवाला संवत् 1905 में स्वर्गवासी हुए। आपके सेठ प्रेमसुखदासजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ प्रेमसुखदासजी– आपका जन्म सन् 1868 में हुआ था। आप अपने पिताजी द्वारा स्थापित मंदिरों एवं धार्मिक क्षेत्रों के कार्यको भली प्रकार संचालित करते रहे। आपने भी बहुत सम्पत्ति ब्राह्मणों और गायों की सहायतार्थ समय-समय पर प्रदान की। उस समय निजाम स्टेट में आपकी फर्मका इतना प्रताप था कि उस समय बरार प्रान्त की लगान वसूली आपकी फर्मपर होंती थी तथा आपके द्वारा निजाम सरकार के यहाँ जमा होती थी। आपके पिताजी के स्वर्गवास के पश्चात् केवल 8 ही सालों में आपने बहुत बड़ी ख्याति व यश प्राप्त किया तथा अनेकों कार्य किये। संवत् 1913 में आप स्वर्गवासी हो गये। आपके सेठ रामगोपालजी, हरगोपालदासजी तथा चिमनलालजी नामक तीन पुत्र हुए। इन भाइयों के परिवार का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

सेठ रामगोपालजी गनेड़ीवाला का परिवार

सेठ रामगोपालजी का जन्म संवत् 1883 में हुआ। आप अपने तीनों बंधुओं के साथ अपने विस्तृत व्यापार के संचालन में भाग लेते रहे। आप बड़े होनहार थे। आपका स्वर्गवास संवत् 1910 में हो गया था, अतः एक फर्म के व्यवसायका कार्य आपके पिता सेठ प्रेमसुखदासजी तथा भ्राता सेठ हरगोपालदासजी और चिमनलालजी संचालित करते रहे। आपके पुत्र सेठ घनश्यामदासजी हुए।

सेठ घनश्यामदासजी– आप का जन्म संवत् 1904 में हुआ था। आप अपने व्यापार का भली प्रकार संचालन करते हुए सन् 1955 में स्वर्गवासी हुए। आप भी प्रतिष्ठित सज्जन थे। आपके सेठ किशनचंदजी तथा सेठ फतेचंदजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ किशनचंदजी गनेड़ीवाला— आपका जन्म संवत् 1963 में हुआ। आप धार्मिक वृत्ति के सज्जन हैं। पहले आप अपनी सम्मिलित फर्म के व्यवसाय में भाग लेते रहे। संवत् 1963 से आपने घनश्यामदास किशनचंद के नाम से अपना स्वतंत्र कार बार आरंभ किया। इस समय आपके यहां बैंकिंग जवाहरात आदि का कार्य होता है। हैदराबाद में आप गण्यमान्य सज्जन हैं। आपके पुत्र श्री लालजी का केवल 25 साल की वय में ही स्वर्गवास हो गया है। आप बड़े होनहार थे।

सेठ फतेचन्दजी गनेड़ीवाला— आप शिक्षित तथा समझदार पुरुष हैं। अपने बैंकिंग जवाहरात आदि व्यापार का प्रधान रूप से आप ही संचालन करते हैं। आप सिकन्दराबाद में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट के सम्मान से सम्मानित हैं। इसके अलावा कई संस्थाओं से आपका सम्बन्ध है। आपके पुत्र मदनलालजी उत्साही युवक हैं।

सेठ हरगोपालदासजी का परिवार—

सेठ हरगोपालदासजी का जन्म संवत् 1890 में हुआ था। आप भी अच्छे प्रतिष्ठा सम्पन्न और नामांकित पुरुष हुए । अपने पिताजी के स्वर्गवास के पश्चात् आपने विस्तृत व्यापार का कार्यभार लम्बे समय तक संचालित किया। संवत् 1940 में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ रामलालजी गनेड़ीवाला हुए।

रायसाहब सेठ रामलालजी गनेड़ीवाला— आपका जन्म संवत् 1905 में हुआ था। आपने अपने व्यापार को बढ़ाकर अपने परिवार की प्रतिष्ठा को बढ़ाया। कानून और वैद्यक की आप विशेष जानकारी रखते थे। पुरानी बकाया के सम्बन्ध में निजाम सरकार से बरसों मुकद्दमा लड़कर आपने 36 लाख रुपयों की रकम प्राप्त की थी। आपने अ. भा. मारवाड़ी अग्रवाल सभा के द्वितीय अधिवेशन के बम्बई में एवम् अ.भा. मारवाड़ी अग्रवाल पंचायत के कलकत्ता वाले अधिवेशन में सभापति का आसन सुशोभित किया था। हैदराबाद लेजिस्लेटिव असेम्बली के आप मेम्बर थे। सन् 1917 में भारत सरकार ने आपको रायसाहब का खिताब इनायत किया। आपके परिवार के जिम्मे श्री सीताराम बाग के मन्दिर की व्यवस्था का भार है। आपके मुरलीधरजी तथा लक्ष्मीनिवासजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें सेठ मुरलीधरजी छोटीवय से ही लक्ष्मणगढ़ में रहने लगे थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् 1985 में हो गया। आपके स्वर्गवास के दिन लक्ष्मणगढ़ में हड़ताल मनाई गई। लक्ष्मणगढ़ की जनता में आप प्रिय सज्जन थे। सीकर दरबार में इस परिवार को कुर्सी प्राप्त है। सेठ मुरलीधरजी के कोई पुत्र नहीं था अतः इनके नाम पर इनके छोटे भाई लक्ष्मीनिवासजी दत्तक आये। बाबू लक्ष्मी निवासजी गनेड़ीवाला इस समय विद्यमान है। सीकर दरबार में आपको कुर्सी प्राप्त है। आपके जिम्मे सीताराम बाग की व्यवस्था का भी भार है।

सेठ रामप्रसाद चिम्मनलाल गनेड़ीवाला, कलकत्ता

ऊपर लिखा जा चुका है कि गनेड़ीवाला खानदान के आदि पुरुष सेठ जुगलदासजी के आठ पुत्र थे, उनके चौथे पुत्र सेठ हरिकृष्णदासजी थे। हरिकृष्णदासजी के हणुतरामजी, चतुर्भुजजी, रामानन्दजी, रामचरणदासजी और जगन्नाथजी नामक 5 पुत्र हुए। इन बन्धुओं का परिवार मुकुन्द गढ़ तथा रतनगढ़ में निवास करता है। इन बन्धुओं में सेठ रामचरणदासजी से इस परिवार का सम्बन्ध है। सेठ रामचरणदासजी के रंगलालजी तथा भानीदत्तजी नामक दो पुत्र हुए।

सर्व प्रथम सेठ रंगलालजी गनेड़ीवाला सम्वत् 1900 के लगभग रतनगढ़ से कलकत्ता आये। आपने हरीबक्स हरीप्रसाद के सांझे में कपड़े की चलानी का काम आरम्भ किया और इसके कुछ ही समय बाद आप रामप्रसाद गंगाप्रसाद के नाम से अपना स्वतन्त्र व्यवसाय करने लगे। सेठ रंगलालजी के चार पुत्र थे– सेठ रामप्रसादजी, सेठ गंगाप्रसादजी, सेठ केदारबक्शजी तथा सेठ शिवदयालजी। आपकी दूकान पर कपड़े की चलानी और लकड़ी का व्यापार होता था।

सेठ रामप्रसादजी-आपकी धार्मिक कार्यों की ओर अधिक रुचि थी, अतः आपने पचीस हजार की एक रकम धार्मिक कार्यों के लिये निकाली थी। इसके ब्याज से रतनगढ़ में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के भोजन का प्रबन्ध होता है। सवंत 1956 में सेठ रामप्रसादजी के पुत्र सेठ चिमनलालजी तथा सेठ ब्रजलालजी ने अपना अलग-अलग व्यवसाय स्थापित कर लिया। वर्तमान में इस फर्म पर प्रधान व्यापार सरार्फा और लकड़ी का होता है। इस व्यवसाय में इस फर्म ने अच्छी सम्पत्ति पैदा की। इसकी गणना कलकत्ते की प्रष्तिष्ठित फर्मों में की जाती है। इस फर्म की उन्नति सेठ चिम्मनलालजी और सेठ वृजलाल जी के हाथों से हुई।

सेठ चिम्मनलालजी– आप इस परिवार में बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न पुरुष हुए। आपने अंग्रेजी मार्का लकड़ी के व्यापार को सर्वप्रथम चलाया और उससे अच्छा लाभ उठाया। व्यापारिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा पाकर आपने धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त किया। आप सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया की कलकत्ता वाली ब्रांच के प्रधान चेयरमैन रहे और आजीवन उसके डायरेक्टर रह कर उसकी उन्नति का प्रयत्न करते रहे। इसके अतिरिक्त कलकत्ता के विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय, विशुद्धानन्द सरस्वती अस्पताल, विशुद्धानन्द सरस्वती औषधालय, मारवाड़ी एसोशिएशन, और रतनगढ़ ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम आदि के संस्थापन एवं संचालन में आपका बहुत बड़ा हाथ रहा है। विशुद्धानन्द विद्यालय का भव्य भवन आप ही के उद्योग का फल है। इसमें आपकी फर्म ने स्वयं चन्दा दिया और साथ ही दूसरों से भी चन्दा दिलवाने में बहुत परिश्रम किया। छः वर्ष तक आप इस संस्था

के सेक्रेटरी रहे और पश्चात् प्रेसिडेन्ट पद को सुशोभित किया। इसी प्रकार विशुद्धानन्द सरस्वती अस्पताल में आपने अपनी फर्म की ओर से पन्द्रह हजार का दान दिया और साथ ही औरों से भी चन्दा दिलवाया। इस संस्था के पांच प्रतिष्ठित संस्थापकों में आप भी एक हैं। आप इसके आजीवन ट्रस्टी रहे। इसी प्रकार उपरोक्त संस्थाओं में आप किसी के प्रेसीडेन्ट किसी के वायस प्रेसिडेन्ट तथा किसी के सेक्रेटरी रहे।

सेठ चिमनलालजी ने अपना एक 8/1 रुपचन्दराय स्ट्रीट वाला तीन लाख रुपये की लागत का विशाल मकान जिसके किराये की आमदनी करीब बारह पन्द्रह सौ रुपये मासिक है, एक ट्रस्ट के जिम्मे किया है। यह ट्रस्ट उक्त आमदनी से विधवाओं, गरीबों एवं अन्य जाति भाइयों की सहायता तथा अन्य धार्मिक कार्यों के लिये सहायता करता रहता है। इस प्रकार यह ट्रस्ट अपना कार्य सुचारु रूप से चलाता जा रहा है।

सेठ साहब ने ऋषिकुल हरिद्वार की एक सहायक कमेटी कलकत्ता में स्थापित की। और आजीवन उसके सेक्रेटरी रहे आपके प्रभाव से इसमें एक भारी रकम इकट्ठी हो गयी जिसका ब्याज वहाँ बराबर पहुंचाया जा रहा है। उक्त ऋषिकुल के अन्तर्गत आयुर्वेदिक कालेज के लियेआपने एक लाख का चन्दा करवाया और स्वयं भी उसमें अच्छी रकम दी। इस रकम का ब्याज भी उक्त संस्था को बराबर पहुंचता रहता है।

आपने अपने निवास स्थान में कई तालाब, कुएं आदि बनवाकर जनता को बहुत सुविधा पहुंचाई। सेठ चिमनलालजी तथा सेठ बृजलालजी दोनों भाइयों ने मिलकर रतनगढ़ में रघुनाथ विद्यालय के लिये एक भव्य भवन निर्माण कराया है।

सेठ चिमनलालजी कलकत्ता के मारवाड़ी समाज में बहुत प्रतिष्ठित और प्रभावशाली महानुभाव माने जाते हैं। यहां होने वाले हर एक सार्वजनिक चन्दों में आपकी फर्म का बहुत बड़ा हाथ रहता था। आपकी स्मृति स्वरूप विशुद्धानन्द विद्यालय, विशुद्धानन्द औषधालय, विशुद्धानन्द सरस्वती अस्पताल, मारवाड़ी एसोशिएशन और रतनगढ़ तथा हरिद्वार आदि की कई संस्थाओं में आपके तैल चित्र मौजूद हैं। इस प्रकार गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका स्वर्गवास संवत 1980 में हुआ। वर्तमान में इस फर्म के मालिक श्री सेठ बृजलालजी गनेड़ीवाला तथा श्री सेठ चिमनलालजी के पुत्र सेठ रामेश्वरलालजी हैं। आप दोनों सज्जनों का व्यापार अलग अलग हो गया है।

सेठ बृजलालजी- आप वयोवृद्ध और सरल प्रकृति के महानुभाव हैं। आप अ. भा. मारवाड़ी अग्रवाल पंचायत के प्रथम अधिवेशन के उपस्वागताध्यक्ष रह चुके हैं।

सेठ रामेश्वरलालजी— आप भी अपने पिता की तरह हर एक संस्थाओं में सहयोग देते रहते हैं। आप सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया की कलकत्ता वाली शाखा के डायरेक्टर हैं।

इसके अतिरिक्त मारवाड़ी एसोसिएशन, विशुद्धानन्द सरस्वती औषधालय आदि के वायस प्रेसीडेन्ट, सदस्य तथा सेक्रेटरी रह चुके हैं। आपके पुत्र लक्ष्मीनारायणजी, भगवतीप्रसादजी, गोकुलचन्दजी तथा साँवरमल हैं। इनमें बाबू लक्ष्मी नारायणजी, फर्म के कारबारमें भाग लेते हैं।

आपके राधाकृष्णजी तथा हरिप्रसादजी नामक दो पुत्र है। आप दोनों बन्धु अपने व्यापार को बड़ी तत्परता से सम्भाल रहे हैं। बाबू राधाकृष्णजी के पुत्र बैजनाथजी है। सेठ बृजलालजी और सेठ रामेश्वरलाल जी अपना-अपना स्वतंत्र व्यवसाय करते हैं। आप लोग कलकत्ता के प्रसिद्ध टिम्बर मर्चेंट्स में हैं।

सेठ हीरालाल रामगोपाल गनेड़ीवाला, फतेहपुर

इस परिवार का मूल निवास स्थान फतेहपुर (शेखावाटी) है। हम लिख चुके हैं कि गनेड़ीवाला परिवार आदि पुरुष सेठ जुगलदासजी के महानंदरामजी, हरिकृष्णदासजी, वृन्दावनजी, तोलारामजी, धनराजजी आदि 8 पुत्र थे, उनमे सेठ वृन्दावनजी का यह परिवार है। इन भाइयों में तोलारामजी बड़े बहादुर प्रकृति के पुरुष थे। आप बड़ी बहादुरी के साथ डाकुओं का सामना करते हुए वीर गति को प्राप्त हुए थे।

सेठ वृन्दावनजी के पुत्र सेठ लालजी मलजी सर्व प्रथम व्यापार के निमित्त पैदल मार्ग द्वारा हैदराबाद गये और यहाँ अपने भाई सेठ पूरणमलजी गनेड़ीवाला के साथ व्यापार करते रहे। आपके पुत्र सेठ हीरालालजी गनेड़ीवाला हुए। सेठ हीरालालजी गनेड़ीवाला लगभग 75 साल पूर्व व्यापार के लिये बम्बई आये तथा यहाँ आपने अफीम का व्यापार और सर डेविड सासुन की दलाली का कार्य आरम्भ किया। संवत् 1942 में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ रामगोपालजी गनेड़ीवाला हुए।

सेठ रामगोपालजी गनेड़ीवाला– आपका जन्म संवत् 1903 में हुआ था। आप इस परिवार में बहुत नामी गरामी और प्रतापी पुरुष हुए। आपने रुई के व्यापार में बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। आपका सेठ वच्छराज जमनालाल बजाज की भागीदारी में रुई का व्यापार होता था। आपने सी.पी., बरार, यू.पी. के कई स्थानों में अपनी जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ खोलीं, तथा बहुत जोरों से रुई का व्यापार करके इस व्यापार में लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की।

व्यापार में सम्पत्ति उपार्जित कर सेठ रामगोपालजी ने धार्मिक कामों में भी उदारता पूर्वक लाखों रुपयों की सम्पत्ति प्रदान की। आपने आपने फतेहपुर में संगमरमर की एक सुन्दर तथा विशाल छत्री बनवाई जो शेखावाटी प्रान्त की एक दर्शनीय और अपूर्व वस्तु है। इसके अलावा आपने पौने पांच लाख रुपयों का एक ट्रस्ट किया, इसकी आय में से

लगभग 600\- मासिक व्यय छत्री में लगता है तथा मथुरा, हरिद्वार आदि क्षेत्रों में धार्मिक कामों में व्यय होता है। इसके अतिरिक्त आपने लगभग 1 लाख रुपया लगाकर मथुरा में एक धर्मशाला बनवाई। इसी तरह हरिद्वार और ऋषिकेष में भी आपने धर्मशालाओं का निर्माण कराया। संवत् 1956 में जब भंयकर दुर्भिक्ष पड़ा था, तब आपने लगभग 25 हजार रुपया लगाकर फतेहपुर से 2 माइल की दूरी पर एक तालाब कुंआ तथा धर्मशाला का निर्माण कराया। इस प्रकार धार्मिक कार्यों में आप उदारता से खर्च करते रहे। शेखावाटी प्रान्त में आप नामी पुरुष माने जाते थे। इस तरह प्रतिष्ठा प्राप्त कर आप संवत् 1978 में स्वर्गवासी हो गये। आपके बद्रीनारायणजी, पुरुषोत्तमदासजी, तथा केशवदेवजी नामक 3 पुत्र हुए इनमें पुरुषोत्तमदासजी का स्वर्गवास हो गया है। बाबू केशवदेवजी का जन्म संवत् 1961 में हुआ है। आप शिक्षित सज्जन हैं तथा इस समय बम्बई में निवास करते हैं। बद्री नारायणजी भी बम्बई में रहते हैं।

सेठ रामचन्द्र जयदयाल गनेड़ीवाला, गोरखपुर

इस परिवार के मालिकों का निवास स्थान मुकुन्दगढ़ है। यह परिवार सेठ जुगलदासजी गनेड़ीवाला के चौथे पुत्र सेठ हरिकृष्णदासजी का है। सेठ हरिकृष्णदासजी के हणुतरामजी चतुर्भुजदासजी, रामानन्दजी, रामचरणदासजी तथा जगन्नाथजी नामक 5 पुत्र हुए। इनमें यह परिवार सेठ चतुर्भुजदासजी का है। सेठ चतुर्भुजजी के चुन्नीलालजी, रामपतदासजी तथा मिरजामलजी नामक 3 पुत्र हुए। इनमें सेठ मिरजामलजी सर्व प्रथम व्यापार के लिये मालवा प्रान्त गये, आप वहां अफीम का व्यापार करते थे। आपके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी हुए।

सेठ रामचन्द्रजी गनेड़ीवाला– आपका जन्म संवत् 1919 में हुआ था। आप सम्वत् 1945 में मुकुन्दगढ़ से व्यापार के लिये रंगून गये, और वहां सूत का व्यापार आरम्भ किया। उस समय समुद्री किनारों पर माल लाने और ले जाने के लिये आपने अपनी नाव सर्विस भी आरम्भ की थी। वहाँ का जलवायु अनुकूल न होने से आप सम्वत् 1950 के लगभग सीतामढ़ी आ गये तथा यहां आपने गल्ला का व्यवसाय आरम्भ किया। आप संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे, काव्य रचना तथा ज्योतिष से भी आपको प्रेम था। संस्कृत प्रेम की वजह से आपने वैद्यक शास्त्रों का अध्ययन किया था। चरक सुश्रुत बाग्भट इत्यादि ग्रंथों का अध्ययन कर आपने औषधि वितरण और सलाह द्वारा जन समाज के हित में अच्छा भाग लिया था। आपने अपने स्वर्गवास के समय 60 हजार रुपयों की सम्पत्ति शुभ कार्यों में लगाई। जिसमें 30 हजार रुपया अपने परिवार और कन्याओं में वितरण किया। आपके स्मारक में आपके पुत्रों ने मुकुन्दगढ़ में रामचन्द्र गनेड़ीवाला आयुर्वेदिक औषधालय और केशव पुस्तकालय की स्थापना की। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्ण जीवन बिता कर आप सम्वत् 1977 में काशी में स्वर्गवासी हुए। आपके गौरीशंकरजी, जयदयालजी तथा राधाकृष्णजी नामक

3 पुत्र हुए आप तीनों भाई अपने पिताजी के साथ सम्वत् 1960 में गोरखपुर आये और सेठ ताराचन्द घनश्यामदासकी भागीदारी में वर्मा शेलकी एजेन्सी का कार्यारम्भ किया। इस कारबार को आपने बढ़ा कर बी.एन. डब्ल्यू रेलवे में वेतिया, मोतीहारी, रक्सोल, चकिया, छपरा, सेवान, देवरिया, वस्ती, गोंडा, बहराइच आदि स्थानों पर अपनी शाखांए खोलीं, और इसमें अच्छी सफलता प्राप्त की। सन् 1932 में इन तीनों भाइयों का कारबार अलग-अलग हो गया है।

सेठ गौरीशंकर जी का जन्म 1940 में हुआ। संस्कृत की ओर आपकी अच्छी रुचि हैं आपने भक्ति ग्रन्थमाला के नाम से संस्कृत पुस्तकों का संग्रह किया है। आपके पुत्र केशवदेवजी का 20 साल की अल्पवय में ही स्वर्गवास हो गया, अतः इनके नाम पर राधाकृष्णजी के पुत्र कैलाशजी दत्तक आये हैं। वर्तमान में आपके यहां बी.एन.डब्ल्यू लाइन में ऑइल एजेन्सी का काम होता है।

सेठ जयदयालजी का जन्म 1945 में हुआ। आप गोरखपुर तथा आस पास के अग्रवाल समाज में प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपके यहां बी.एन.डब्ल्यू. लाइन में कई स्थानों पर ऑइल एजेन्सी का काम होता है। आपके पुत्र बिशेसरलालजी तथा विश्वनाथ हैं। बाबू राधाकिशनजी के यहाँ भी बिलासपुर में आयल एजेन्सी का कार्य होता है। वहाँ आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके पुत्र कैलाशजी, कमलापत तथा बृजभूषण हैं। इनमें कैलाशजी, सेठ गौरीशंकरजी के यहाँ दत्तक गये हैं।

सेठ गौरीदत्त छोटेलाल गनेड़ीवाला, रानीगंज

इस परिवार के पूर्वज गनेड़ी से फतेहपुर में आकर आबाद हुए। हम ऊपर लिख आये हैं कि गनेड़ीवाला परिवार के आदि पुरुष सेठ जुगलदासजी के 8 पुत्र थे। उनमें इस परिवार के पूर्वज सेठ तोलारामजी भी एक थे। इनके पुत्र नंदरामजी और पौत्र सेठ हरदयालजी थे आप दोनों पिता पुत्र देश में ही रहकर अपना व्यवसायिक कार्य करते रहे। सेठ हरदयालजी के गौरीदत्तजी, बालमुकुन्दजी और विशेसरलालजी नामक 3 पुत्र हुए। आप तीनों बन्धु सर्व प्रथम व्यापार के लिये सम्वत् 1911 में व्यापार के लिये बंगाल प्रान्त के रानीगंज नामक स्थान में आये, और वहां नन्दराम हरदयाल के नाम से व्यवसाय आरम्भ किया। इन भाइयों के परिश्रम और कार्य चातुरी से शीघ्र ही इस फर्म की शाखाएं कलकत्ता, रांची, झालदा, पुरुलिया, बांकुडा, दुबराजपुर, बर्धमान इत्यादि स्थानों पर खोली गई। सम्वत् 1959 में इन तीनों भाइयों का परिवार अलग-2 हो गया। इस समय बाबू गौरीदत्तजी के परिवार में गौरीदत्त छोटेलाल के नाम से और विशेसरलालजी के परिवार में विशेसरलाल रामबल्लभ के नाम से रानी गंज में व्यापार होता है। इसी प्रकार बालमुकुन्दजी का परिवार बालमुकुन्द कृष्णगोपाल के नाम से पुरुलिया में व्यवसाय करता है।

बाबू गौरीदत्तजी ने अपनी फर्म के व्यापार में बहुत भाग लिया। आपने एक तेल का मिल खरीदा। इसमें द्रव्य उपार्जित कर जमीदारी भी खरीद की। आपने रानीगंज में घाटपर एक धर्मशाला बनवाई। आप स्वर्गवासी हो गये हैं। आपके वैजनाथजी, केदारनाथजी छोटेलालजी, सागरमलजी और ओंकारमलजी नामक 5 पुत्र हुए, इनमें ओंकारमलजी का बाल्यकाल में ही शरीरावसान हो गया। उनके स्मारक में यहां इस परिवार ने एक मन्दिर बनाया है। शेष चारों बन्धुओं का व्यापार सम्वत 1964 में अलग-अलग हो गया तबसे सबके यहाँ अलग-अलग व्यापार होता है। इनमें यह फर्म बाबू छोटेलालजी की है।

बाबू छोटेलालजी का जन्म 1933 में हुआ था। आपने भी अपने व्यापार में अच्छी उन्नति की। आप यहां के मारवाड़ी समाज के प्रतिष्ठित सज्जन थे। अलग होने पर अपनी शामलाती तेल मिल का कार्य आपके हाथों में आया, तथा उसे आपने अच्छी उन्नति दी। इसके अलावा आपने जामकलानी, मिलानी, बंसूली, आंड़ड्ंग, भादूनगर तथा अबजलपुर इत्यादि मौजों की जमीदारी को भागीदारी में खरीद किया। आपने रानीगंज पाठशाला में सहायता दी थी, और यहां एक कुआ बनवाया। इस प्रकार जीवन बिताकर आप सम्वत 1989 में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र बाबूबनारसीलालजी हैं।

बाबू बनारसीलालजी का जन्म सम्वत् 1951 में हुआ। आप भी गौशाला आदि हर एक अच्छे कामों में मदद देते रहते हैं। आपके यहां इस समय गौरीदत्त छोटेलाल के नाम से तेल, आढ़त, ब्याज तथा जमीदारी का काम होता है। रानीगंज में आपकी फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ बालमुकुन्द किशनगोपाल गनेड़ीवाला, पुरुलिया

इस फर्म का पूर्व कोटुम्बिक परिचय ऊपर बाबू गौरीदत्त छोटेलाल के परिचय में दे चुके हैं। यह फर्म सेठ गौरीदत्तजी के छोटे भाई बालमुकुन्दजी की है। संवत् 1959 में सेठ बालमुकुन्दजी ने अपनी सम्मिलित फर्म से अलग होकर अपना स्वतन्त्र व्यापार आरम्भ किया। हांलाकि आप रहते रानीगंज ही में थे पर आपने पुरुलिया में बालमुकुन्द गणपतराय के नाम से अपनी फर्म खोली। इसके अलावा पुरुलिया में दो तथा विष्णुपुर में एक इस प्रकार तीन ऑइल और राइसमिल खोले। विष्णुपुर में आपने बालमुकुन्द किशनगोपाल के नाम से व्यवसाय आरम्भ किया और तब से पुरुलिया में भी यही नाम रख दिया गया।

बाबू बालमुकुन्दजी ने अपनी कार्य चातुरी से व्यवसाय में अच्छी उन्नति प्राप्त की। 20 साल पूर्व आपने पुरुलिया में भजनाश्रम विद्यालय बनवाया, इसके साथ धर्मशाला का भी प्रबन्ध है। इस प्रकार व्यापार में उन्नति प्राप्त कर आप सं. 1986 में स्वर्गवासी हुए। आपके गणपतरायजी और रामेश्वरलालजी नामक दो पुत्र हुए, इनमें गणपतरायजी का बहुत छोटी वय में स्वर्गवास हो गया।

बाबू रामेश्वरलालजी इस समय विद्यमान हैं। आप सरल प्रकृति के सज्जन हैं। आपको व्यापारिक कार्यों से दिलचस्पी नहीं है। आपके पुत्र कृष्णगोपालजी का जन्म संवत् 1961 में हुआ। इस समय आप ही अपने सारे व्यवसाय को तत्परता और होशियारी से संचालित करते हैं। आप यहां के प्रायः सभी सार्वजनिक कार्यों में सहायता देते रहे हैं। आपके पुत्र सीताराम पढ़ते हैं।

इस समय आपके यहां सेठ बालमुकन्द किशनगोपाल के नाम से बैंकिंग, तेल और चावल का व्यापार होता है। आपकी पुरुलिया में तथा विष्णुपुर में एक एक राइस और आइल मिल है। यहां के व्यापारिक समाज में आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित है।

अग्रवाल जाति का इतिहास

गर्ग गोत्र पृष्ठ 19

उन दिनों अर्थात् आज से करीब पचास वर्ष पूर्व मारवाड़ अग्रवालों, पौद्दार, गनेड़ीवाला, डालमिया और नन्देका ये चार वंश बहुत बड़े गिने जाते थे और चारों के विवाह सम्बन्ध भी आपस में हुआ करते थे। इस कारण इनको सम्बन्ध करने में बड़ी कठिनाई उठानी पड़ती थी। सेठ काशीरामजी की पुत्री का विवाह मारवाड़ी समाज के सुप्रसिद्ध हैदराबाद निवासी चिमनजी गनेड़ीवाला के साथ हुआ था। उस बारात में तीन हजार आदमी आये थे। ये लोग श्री वैष्णव थे अतः इनके लिये रसोई गंगाजल से तैयार होती थी। यह गंगाजल हरिद्वार से डिब्बों में भरकर बैलगाड़ियों द्वारा लाया जाता था।

GOLDEN BOOK OF INDIA
(Sir Roper Lethbridge, K.C.I.E.)
Edition — 1893

Rambilas Pokarmal, Rao Saheb.

Born in 1840. The title of Rao Saheb was conferred as a personal distinction on 1st June 1888, in recognition of long & meritorious services as a Municipal Commissionor of Amraoti Berar, His Ancestors have been bankers in a renouned position for several generations under the Government of H.H. the Nizam. Dhanraj Pokarmal, the Rao Sahebs grand father was the first banker of Amraoti & was killed by the populace in some Corn-riots in a time of scaricity in 1845. His son Pokhermal Rambilas, was the banker of Nawab Mubarak brother of his late Highness the Nizam. His son was the Raosaheb Rambilas Pokharmal who was married in 1852 & was in 1899 appointed a special magistrate at Amraoti but he was not destined to enjoy long the honour conferred by the British Government as he died in October

of the same year after an illness of two days only leaving his widow & his son Shri Narayan to mourn his loss. Shri Narayan was born in August 1872 and married in 1885. In 1900 he was nominated by Government a member in the Amraoti Town Municipality and in 1901 was made an honorary magistrate. In 1903 he was granted by Command of His Excellency the Viceroy through the Hon: The Resident at Hyderabad a coronation certificate in recognition of certain services rendered to the Forest Department during the famine of 1899-1990.

In the Kangra Vallay Relief Fund & in the Hydrabad food relief fund as also in the Agricultural & Industrial exhibition held in Amraoti he rendered very valuable services in accordance with the disire of the then Deputy Commissioner.

Dhanraj Pokharmal had a brother by name Mahanandram who settled at Hyderabad Deccan. He was well known banker there - His son Puranmal built a great temple in Hyderabad which is still known as "Sitaram Temple" & for the maintenance of which two Jagir Villiages of Walgaon in Amraoti District & Akoli in the Akola District, have been given by H.H. the Nizam. Puranmal had a son by name Premsukh and a grand son by name Hargopal, whose son Ramlal is still living in Hydrabad & is a master of very large properties.

He holds "Jalgaon & Shirpur in the Wardha Jilla as malgujari villages from his ancestors. His family house is supposed to have been built more than 100 years ago by Dhanraj whose name the street, where it is situated still bears.

शिलालेख

जुगलदासजी की छत्री का शिलालेख

श्री गणेशाय नमः

।। या छत्री जुगलदासजी गनेड़ीवाल उपर करायी जुगलदासजी को शरीर बरत्यो भादवा वदी 12 साल 1840 गनेड़ी म

रामकरणजी की छत्री का शिलालेख

।। श्री गणेशाय नमः ।।

या छत्री रामकरणजी गनेड़ीवाल उपर करायी रामकरणजी को शरीर बरतो साल 1818 के सावन महीने म

गनेड़ीगांव शिलालेख सम्वत् 1239

संवत् 1239 सोमवारे मो-
(हिल) श्री जलदेव देव लोके गतः
.................कारावत (पुत्र) आसलेन

गनेड़ी गांव शिलालेख सम्वत् 1239

सम्वत् 1239 द्वितीय वैशाख सुदि 2
सोमवारे मोयला जलापुत्र लाखण
.... देवलोक गतः

।।श्री।।

स्वास्ति श्री संवत् 1862 साल मिती
ज्येष्ठ सुदि 15 चतुर्भुजी माताजी
सेवक राव पितृदास रामजी दास
भगवानदास बाजोरिया...........

गनेड़ी गांव का शिलालेख सम्वत् 1843

श्री राम जी

महाराजि श्री चांदस्यं
घजी की छत्री कराई
प्रतीस्टा काराई कासली
छुड़ायर विदाड़ी मा की
मुलक की दीग बिजै की
महाराज श्री देवीस्यंघ
जी मीती भादवा बदी 8
सुकरवार संवत् 1843 का
दसकत वृंदावन काइथ
मारफत राधाकिसन साहा
कारीगर मनसो की नू

श्री गणेशायनमः
संवत् 1899 शा
संवत् 1764 मगशिर
सुदि 6 वृहस्पतिवार
क दिन शिव
सागर गौरी शंकर
की प्रतिमा कराई
सेठ गुमानीराम कन्हैया लाल..

मुकुन्दगढ़ छत्री

शिलालेख, 1919
मुनीमजी सेठजी साह व
श्री कन्हैयालाल जी की
छत्री को काम करायो
मुनीम शिवरामजी काबरा
वदर कावरा श्योतराज गनेड़ीवाला

मुकुन्दगढ़ छत्री के नीचे के भाग में शिलालेख

स्थानमुत्सृज्य गच्छन्ति सिंहाः सत् पुरुषाः गजाः
तत्रैव निधनं याति काकाः कापुरुषाः मृगाः
पंडितजी श्री गंगासहायजी थोई का 14 विद्यार्थी
पौष कृष्णा 2 संवत् 1944, द. सुखानन्द रहिस
सिरोही का

रतनगढ़ शिलालेख

संवत् 1993
यह भवन सेठजी रामप्रसादजी गनेड़ीवाला के
पुत्र सेठ चिमनलाल गनेड़ीवाला
रतनगढ़ निवासी ने अपनी निज की
जमीन पर बनवाकर श्री रघुनाथ विद्यालय
को प्रदान किया। संवत् 1993

लक्ष्मणगढ़ छत्री लेख

संवत् 1902
श्री किशन जी का हर...........
यह राम परत शिवनारायण
हरिनारायण व कुटुम्ब सहत कराई
वाजोरा अग्रवाल सिगल गोती गनेड़ीवाला
मिती आषाढ़ बदी 7 ब्रहसपतिवार सुमम् भवतु

पुराने कवित

संवत गुन्नीसो अड़तीसा, ओदेदारा चुगली खा शीश्यु कटवा दी, बात करी तनाजा की।
सेठ जुगलेश के सपूत, नाती भेला होय बलवादी बात एक चली ना दवाजा की।।
बाका भये शीश्यु काज, मांग कीन्हीं जयराज, न्याय के तकाजा की।
चली ना एक राज की, हाकिम को हुक्म गयो हुरमत गई, रही सेठन की शेखी विवेकी रावराजा की।।

गनेड़ीवाला सेठ सदा का बिराला, बाते रही आला, आला, सेठों के समाजा की।
शत पीढ़या साहुकार, घुम्या है हस्ती द्वार, लेन लगी रही अश्व ताजा की।।
नामा कामा में सदा शूरवीर रहे, बाका है खजाना जाके, लक्ष्मी बे अन्दाजा की।
शीश्यु पै सेठा की, राज से तकरार भई, रही सेठन की शेखी विवेकी रावराजा की।।

कट्टर कुल सदा को, सेठ जुगलेश हूँ को, ऊंची-ऊंची बाते रही सेठों के समाजा की।
ओहदेदारा हाथ जोड़े, तासे नहीं मुड़े मोड़े, बांका होय बात राखी गरीबे निवाजा की।।
माधवेन्द्र आप जाय, लाये हैं मनाय ताय, बस्ती में पधारे मानता बढ़गी समाजा की।
बस्ती हूँ की नेकी एकी, देखी गई टेकी, रही सेठन की शेखी विवेकी रावराजा की।।

(शीशम कटवाने पर सीकर नरेश से नाराजगी
फिर गांव छोड़ते समय नरेश का मना कर
वापिस लाने सम्बन्ध का कवित)

शरणागत प्रतिपाल, दुखियां दुःख मेटण कुशल,
ये सेठ गनेड़ीवाल आज तणे रजथान में।
(सेठ गुरमुखराम जी के लिये)

सबलां सभे सहाय, निबलां नेडा सेठ है,
चोपडिये बैठाये नासी बेगारी पृथा।।
(सेठ प्रेमसुख दास ने बेगारी प्रथा को हटवाया)

शिवसागर ऐसो बणो, सकल सरायो ज्ञान,
धरी निसेनी स्वर्ग की सेठ गुमानीराम।।
(सेठ गुमानीरामजी के लिये)

आच्छी बण आई सो सराही सूर वीरन ने,
सूंती है सीरोही मर्द मूंछा हाथ धरि के।
खैंच के उठाई बग्ग–बाही वीर खूब खग्ग,
कायर जै भागी गये–छाडी खेत डरिके।
कड़के कड़ाके सो तड़ाके होत तेगन के,
नन्द जुगलेश को खड्यो है खेत अडिके।।
तोला राम सेठ की बखानी असी रावराजा,
ले गई विमान में बिठाई हूर वरिके।।
(तोलाराम जी के लिये)

(यह जवान जी बन्दीजन कवि द्वारा लिखित व भारती भूषण नामक पुस्तक में पृष्ठ 144 पर छपा है)

सेवा चढ़ायो कढ़ायो, औरंगजेब क महला मांय।
रोजाको भूखो सर धुणे, जी बदसा महला मांय।।

सेबो बैठो पैलांजी, दूजे में जी बैठो जोगी पिटारे मांय।
बादशा की अकल फैरी, भोला भंडारी जटा मांय।।

हिन्दुवांको भगवों झन्डों, फहरायो जी मथुरा मांय।।
सेबा करयो तीरथ बादशा की, फूंटी आंखों मांय।।

मथुरा से सीधो आयो बेटा, ने लेय गणेसर महादेवजी।
गुरु चेला ने गढ़ी गनेड़ी की हवेली, राखियो मांय।।

(शिवाजी के गनेड़ी पधारने के संदर्भ में)

सेठ बड़ा बाजोरिया गनेड़ी से सरनाम।
हैदराबाद निजाम में राख्यो नेक सुनाम।।

तां कुल में तोला भयो वीर पुरूष खड्ग धार।
डाकु बहादुर सिंह से लीन्यो युद्ध ललकार।।

कड़-कड़ाय डाकु भिड़्यो, सेठ गही समसेर।
सन्मुख छाती आय जुडे, छिन्न में, लागी न देर।।

(श्री तोला रामजी के बारे में)

जो करसी उणरी हुसी, आसी बिण न्यूती।
आ नहीं किणरा बापरी, भग्ति - रजपूती।।

(श्री तोला रामजी के बारे में)

क्यां पर लाया कांजरी, क्यां पर लाया ऊंटपचास।
गहण में लाया एक झालरो, आठू भाई साथ।।

कवित - छन्दमनहर

देखो क्या भई है माया, कोप प्रभु का लखाया
आज एक श्रेष्ट ज्येष्ट, नर रत्न खो गया।
पौष कृष्ण तृतिया कूं, उन्नीसै पिचासी साल
लक्ष्मणगढ़ नगर पे, उदासी चढ़ोगया।
ऐसो नहीं देख्यो कोय, आंसू नहीं डारे दोय,
सारी जनता कूं, सोक नीर में भिजो गया।।
और सहर पास हू में, सुनी सो उदास भये,
मुरलीधर तणा आज, स्वर्गवास हो गया।।१।।
दाता की गति के आगे, जोर नाहीं काहू ही को
याही सुन पायी, शख्स सेठाई लको गया।
करनी भलेरी कीन, हिन्दू क्या मुसलमीन,
जाती क्या कुलीन हीन, सबही कूं मोगया।।
दुर्जन भी थे जो कोय, ये ही शब्द कहया रोय,
सारी बसती का आज, परालब्द सो गया
एक रोज साहूकार, बंद की यो कारबार,
कुमार मुर्लीधर, तेरा स्वर्गवास हो गया।।

(सेठ मुरलीधरजी के स्वर्गवास पर)

छंद तोटक

इस माफिक मानव हो बिरले, लघु बोल कहयो नहीं मेहतरकूं।।
अनयायी बुराई सिवाय कुमार, नहीं समझा किसरे डरकूं।।
कुछ दोष सुन्या न गया जिनमें, नाथ सैंदा सुख संपतकरी मूर्लीधर कूं।
पर को दुख देख भये जू दुखी, सुख मान्यु लख्यो सुखिया परकूं।।
सनमान किया गुनि दीनन को, कछु भी न बड़ो समझयो जरकूं।।
जिनकी सब याद सदा ही करै, बहुता धनवाद इसी नरकूं।।
द्विज बालक कृष्ण कहे हरिकूं, सुख सान्ति मिले मुरलीधर कूं।।

(सेठ मुरलीधरजी को श्रद्धान्जली)

छन्द हरीगीतिका

उज्जल करन कुल अग्र को एक गनेड़ीवाला भया।
था नाम मुरलीधर कुंवर सरनाम होकर के गया।।
दिल में रहम था बहुत ही, रखता गरीबों पर दया।
रख के दया का भाव, सब याही कही दिल है दया।।
सीकर, फतेहपुर नाथ, जिनकी बात रखता मानता।
शहनशाह निजाम हैदराबाद तक सब जानता।।
छोटी बड़ी ताजीम किती समभाव, जिनसे आनता।
जिसकूं बड़ा जान्या, जिनूंकी खूब रखता कानता।।
था अकल बर ऊँची नजर, जिसका न कछु अभिमान था।
गुणी जन तणी करता कदर, निज भी गुणन की खान था।
सब बात जिनकी रखनवाला श्री पति भगवान था।
थारे बाप कर्नी कीनी सो तो आंखू देख लीनी
सोभा जो पाई सो तो नजर के अगारी है।
ऐसी जो बनेगी थांसू, जनिता का मिटेगा आंसू
मस्ती का परालब्ध जगावो न भारी है।।
रूतबे पे तुलोगें तो तो, सब ही सुख फूलोगे,
देस कूं न भूलोगे कहनी या हमारी है।।
न लक्ष्मी को निवास, सदा रहे लक्ष्मी निवास
पूरै आस बालकृष्ण सांवरो भिहारी है।।

(सेठ मुरलीधरजी के बारे में)

श्री गणेशजी

श्री मात जननी गनेड़ी ऐसा ऐसा नर जाया
सारी दुनिया में नाम तेरा रोशन कराया
गनेड़ी वाला पौदार कुव्हाया।।
देख जठ कुआ बावड़ी मंदिर की भरमार
सब जगह लिखा पड़ा है गनेड़ी का पौदार।
सैकड़ा बरस हुआ ग्यान सुध म्हारी नहीं लीनी
कोप पाकर कह्यो श्री गणेशजी न, थे आके बुद्धि दीनी।
कर क्रोध गणेशजी चाल गया राजधानी माँय
मिल गया हनुमान जी गनेड़ीवाला दिल्ली माँय।
हनुमानजी न हुयो ज्ञान जद ले कार भाग्या आया
देख समाधी धोक खाया, पुजारी न बतलाया।
पुजारी करयो ऊँचो हाथ, अ छतरी है दोनों साथ
समाधी की हैबात, अठ लागी थांकी जात।
समाधी है जुगलदासजी की, अठ सू बंश चाल्यो
गनेड़ी पौदारा की बाजी, बात कठ ही बत लाल्यों।
लोग सुण अचम्भों कर, पौदार किया बाज्या
दास भगवान की सेवा सूँ, पौदार दातारी सूं बाज्या।
हणमानजी पौदार, हो गया सेवा न तैयार लेकर आया गनेड़ीवाला परिवार,
देख पुजार्‌या का हाल, ज्यान घबराव है
उदास होकर दिल्ली न, पाछा ही जाव है।
रस्त म मिल्या श्री गणेश हणमान मत घबराय
साथ हाँ म्हें थाक, काम सब सर जाय।
बात बतलाई गाँव म मोदीजी क आयगी ध्यान म
बात करी कान म, समझाय धुतजी लियो हणमान न।
थे म्हाका भाई, आग होस्या मन्दिर क ताई

काम करस्या म्हाक ताई, शोभा लाग थाक भांया ताई।
बस्ती मात की हुव उन्नति, तो करस्या काम ईक ताई
आ है थाकी म्हाकी मातृभूमि, आसी सारा भाई म्हाका आसी
देख छतर्‌या न खुशी मनासी
गाँव सारो दीप जलासी।
बरसां का बिछड़ेड़ा भाई गल म्हे लगावा
इस बढ़कर और खुशी के हू ज्यासी।
हणमानजी सुनी मोदीजी की बात
झट बढ़ायो आग हाथ
मिलग्या दोन्यू बाथो बाथ
काम चलायो हाथो हाथ।
खंडरा न भराया, कमरा घणा कराया
काम पुखता कराया, स्वार्थीड़ा न आग भगाया।
हणमानजी पौदार दुख घणो पायो
सारा भायां गनेड़ी न जाय जगायो
आ है आपणी मातृभूमि, समाधी पर दीप जलायो।
गरमी सरदी भूख और तिस, बरसात धूप न सहतो आयो
ई को आज सेवरो हणमानजी क बंधायो।
शंकर लाल और रामोतार साथ धणो, थान दीन्यो
आंक साथ मौज मस्ती खूब म्हे लीन्यो
देख सेठानी न कलश लिया, मंद मंद मुसकात है
ठुमक ठुमक चाल चालकर लुगायां न दिखाव है।
मात गनेड़ी यूं कव है, सुणो पुत्रो म्हारी बात
गाँव म शिक्षा की कमी है कालेज बणावो हाथो हाथ।
कव राधेश्याम पुजारी, बुरो न मानो म्हारी बात।।

जय श्री गणेशजी की।

श्री राधेश्याम पुजारी, गनेड़ी

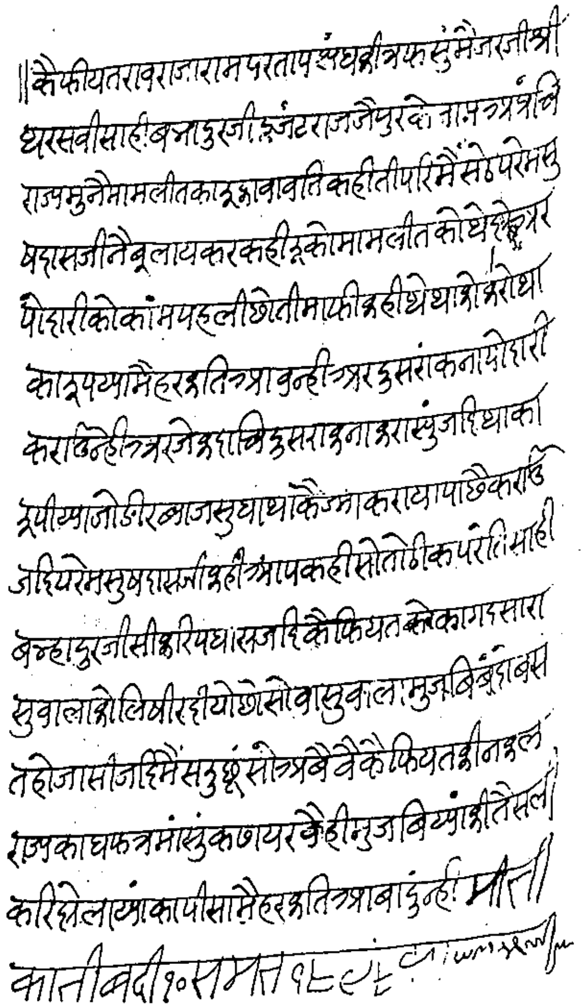
चतुर्थ–खण्ड

महत्त्वपूर्ण पत्र : मूल एवम् अनुवाद



चित्रकार श्री राजकुमार गनेड़ीवाला की कलाकृति "भोपा"

श्री राम जी



अंग्रेजी में थरसवी साहब के दसतखत।

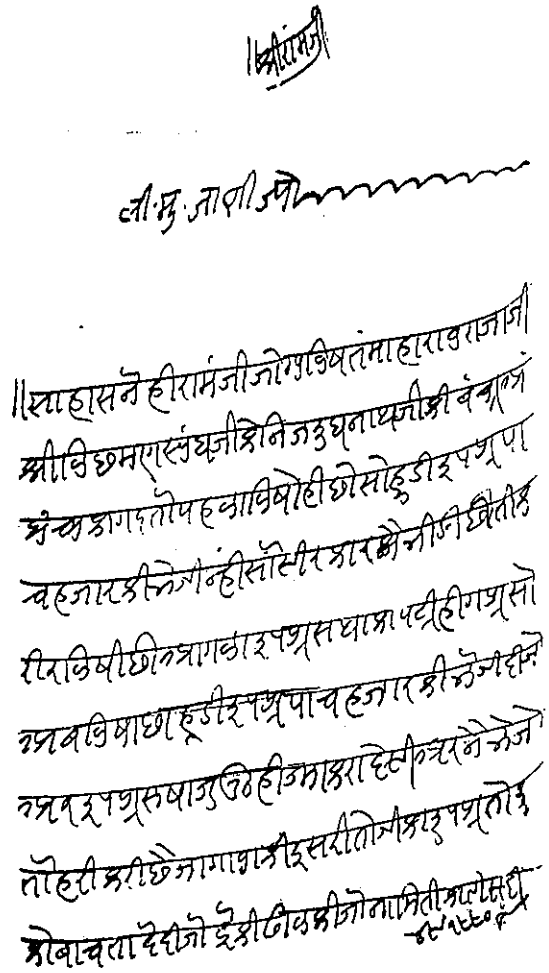
कैफियत रावराजा राम परताप सिंह जी की तरफ से मेजरजी श्री थरसवी साहब बहादुर जी एजेंट राज जयपुर के नाम अपरंच राज्य मुनैमामलीत (कर) बाबत कही तींपर में सेठ प्रेम सुख दास जी ने बुलाए कर कही रूक्को मामलीत को थे दयो और पोतदारी को काम पहली छो तींमाफिक ही थे थांको करो। थांका रूपया में हरकत आवे नहीं और दूसरा कने पोदारी कराऊ नहीं। अर जे कदाचित दूसरा कना करासूं जद थांका रूपया जोड़ी रे ब्याज सुदा थांके जमा करायां पाछे कराऊं। जद प्रेम सुख दास जी कही आप कही सो तो ठीक परन्तु साहिब बहादुर जी सीकर पधारा-सो जद कैफियत को कागद सारा सुवाला को लिखर दियों छो सो वा सुवाला मुजब बन्दोबस्त हो जासी जद में सरू (स्वीकार) छूं। सो अब वह कैफियत की नकल राज का दफ्तर मासूं कढायर बहीं मुजब यांकी (इनकी) तसल्ली कर दयो ला। यांका पिसा में हरकत आबा दूं नहीं। मिति कार्तिक बदी दशमी (10) समवत् 1898 (सन् 1841)

सार : यह पत्र रावराजा श्री प्रताप सिंह ने मेजर थरसवी जयपुर को लिखा है। इसमें कहा गया है कि मैंने सेठ प्रेमसुख दास को पोतदारी का काम पुनः सम्हालने की बात कही इस पर उन्होंने आपका आश्वासन चाहा है। यह भी कहा है कि जब साहब सीकर आये थे तब उन्होंने कुछ बाते लिखकर दी थीं जिनकी पूर्ति होने पर ही वे पोतदारी का काम संभालेगें। पत्र में कहा गया है कि आप इनको तसल्ली करा दें ताकि ये पोतदारी का काम करें।

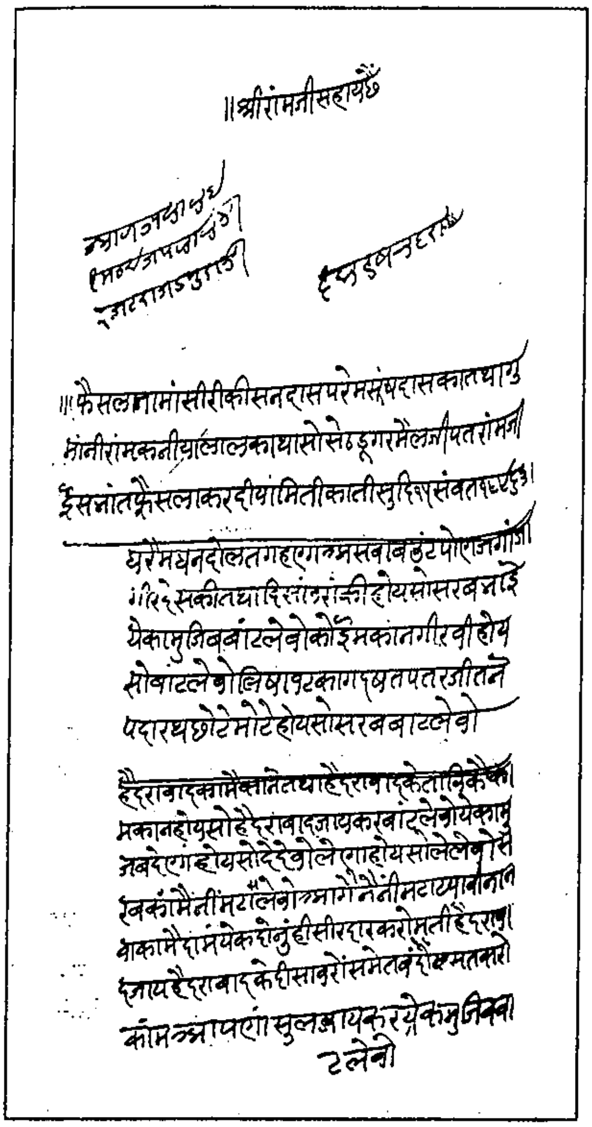
श्री राम जी

लि० मु० जाणी जो

साह सनेही राम जी जोग लिखतम् महाराव राजा जी श्री लक्ष्मण सिंहजी (सीकर नरेश) केन जय रघुनाथ जी की बंचज्यो। अपरंच कागज तो पहला लिखियो ही छो सो हुन्डी रूपया 5000/- पांच हजार की भेजी नहीं सो सरकार में भीड़ (तंगी) छी, तींह करीर (इस कारण) लिखी छी। आगला रूपया स (सब) थांका पट ही गया सो अब लिखां छां हुन्ड़ी रुपया 5000/-पांच हजार की भेज दीज्यो। अर (और) रूपया स "खाजू" (कार्यकर्ता का नाम) उठे ही जमा करा देसी। अर न भेज्यो तो हरी करी छ। जागा बाकी दूसरी तोजीका रूपया तो उरंको (पत्र) बांचता ही दे दीज्यो। इंकी ढील कीज्यो ना। मिति कार्तिक सुदी चौथ (4) सम्वत् 1880 (सन् 1823)



सार : यह पत्र रावराजा लक्ष्मण सिंहजी का सेठ सनेही रामजी के नाम हैं। इसमें 5 हजार की हुंडी भेजने की बात कही गयी है। साथ ही यह भी कहा गया है कि हरी एवं तोजी के रूपये जरूर भिजवाना।



॥श्रीरामजीसहायछै

॥फैसलानामासीरीकीसनदासपरेमसुषदासकातथागु
मानीरामकनीयालालकाथासोसेठडूगरमैलजीपतरामजी
ईसभांतफैसलाकरदीयामितीकातीसुदि१५संवत१८९६

घरमैधनदोलतगहणाअसबाबऊंटपोणजगांजा
गीरदेसकीतथादिसावरांकीहोयसोसरबभाई
ऐकामुजिबबांटलेवोकोईमकानगीरवीहोय
सोबांटलेवोलिषावटकागदषतपतरजीतनै
पदारथछोटेमोटेहोयसोसरबबांटलेवो

हैदराबादकामकानतथाहैदराबादकेतालिकेका
मकानहोयसोहैदराबादजायकरबांटलेवोयेकाम
जबदेणाहोयसोदेदेवोलेणाहोयसोलेलेवोस
रबकामनीमटालेवोआगेनैनीमटायाबीनान
वाकामदामयेकदोनुंहीसीरदारकरोमतीहैदरा
बादजायहैदराबादकेदीसावरोंसमेतबंदोबस्तकरो
कामआपणांसुलझायकरयेकमुजिबबां
टलेवो

श्री रामजी सहाय छै

फैसला नामा श्री किशन दास प्रेमसुख दास का तथा गुमानी राम कन्हैयालाल का था सो सेठ डूंगरमल जी पतराम जी इस भांत फैसला कर दिया मिति कार्तिक सुदी 15 सम्वत 1896।

।. घर में धन, दौलत, गहना असबाब उंट पोण जगह जागीर देश की तथा दिसावर की होय सो सरब भाई ऐंका मुजिब बांट लेयो, कोई मकान गिरवी होय सो बांट लेवों, लिखावट कागज खतपतर जितने पदारथ छोटे-मोटे होय सो सरब बांट लेवो।

।. हैदराबाद का मकान तथा हैदराबाद के तालिका का मकान होय सो हैदराबाद जाये कर बांट लेवो, ये काम जब देना होय सो दे देवो, लेणो हो सो लेवों, सरब काम निमटा लेवो, आगे न निपटाया बिना नवा काम दाम ऐक, दोनों ही सिरदार करो मति, हैदराबाद जाये हैदराबाद के दिसावरों समेत बन्दोबस्त करो, काम आपणा सुलझा कर ऐंक मुजिब बांट लेवो।

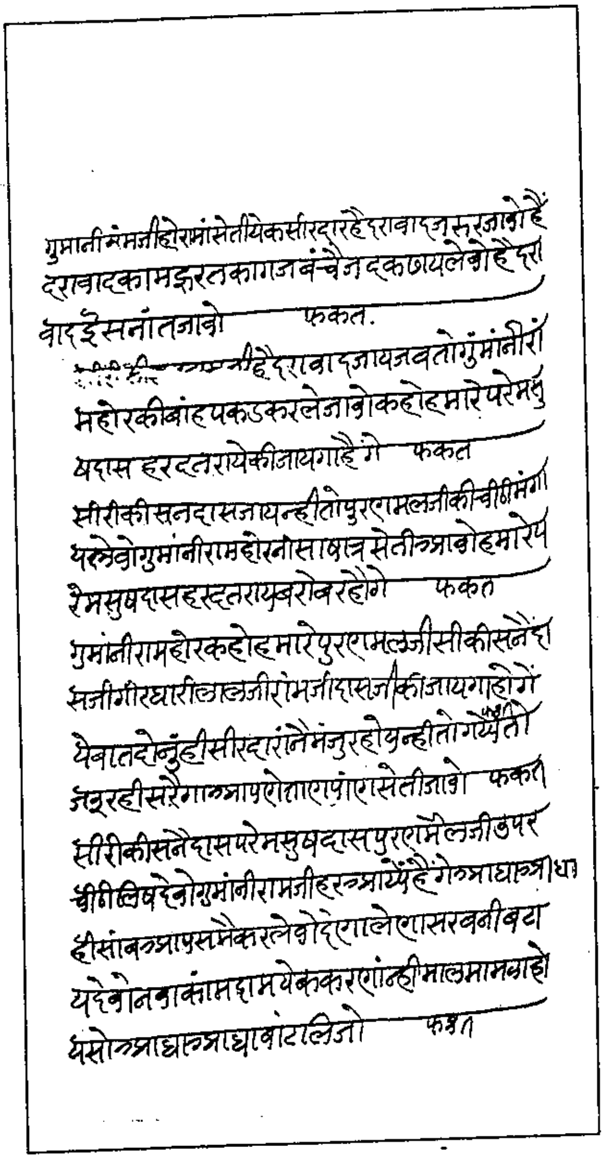
।. गुमानी रामजी होरा मांसे तो एक सिरदार हैदराबाद जरूर जाओ, हैदराबाद का महूरत कागज बंचये जद कढाये लेयो, हैदराबाद इस भांत जाओ. . . . . .फकत।

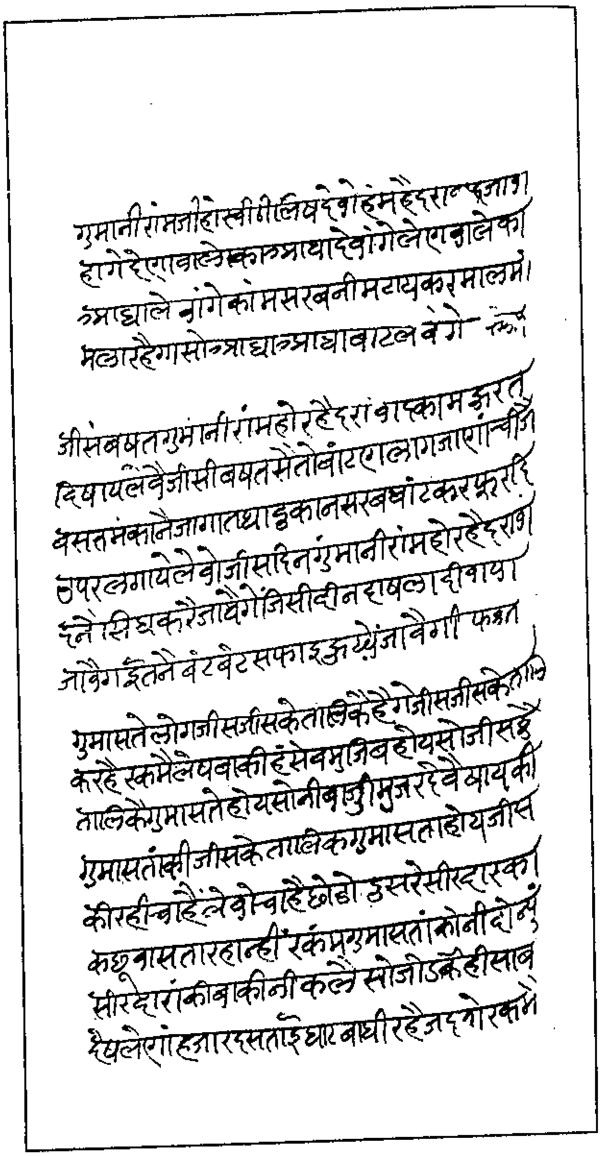
।. श्री किशन दास जी हैदराबाद जावे, जब तो गुमानी राम जी होर की बांह पकड़ कर ले जावो, कहो हमारे प्रेमसुखदास हरदत्त राय की जगह होंगे . . . . . फकत।

।. श्री किशनदास जावे नहीं, तो पूर्णमल जी की चिट्ठी मंगाये लेवो, गुमानीराम होर निशा खातर सेती आवो, हमारे प्रेमसुखदास हरदत्तराय बरोबर होंगे .. . . . . फकत।

।. गुमानी राम होर कहो हमारे पूर्णमल जी श्री किशन दास जी गिरधारी लाल जी, रामजी दासजी की जगह होंगे।

।. ये बात दोनों ही सिरदार ने मन्जूर होय नहीं, तो गयां तो जरूर ही सरेगा, आपणे ताण-पाण सेत्ती जाओ . . . . .फकत।

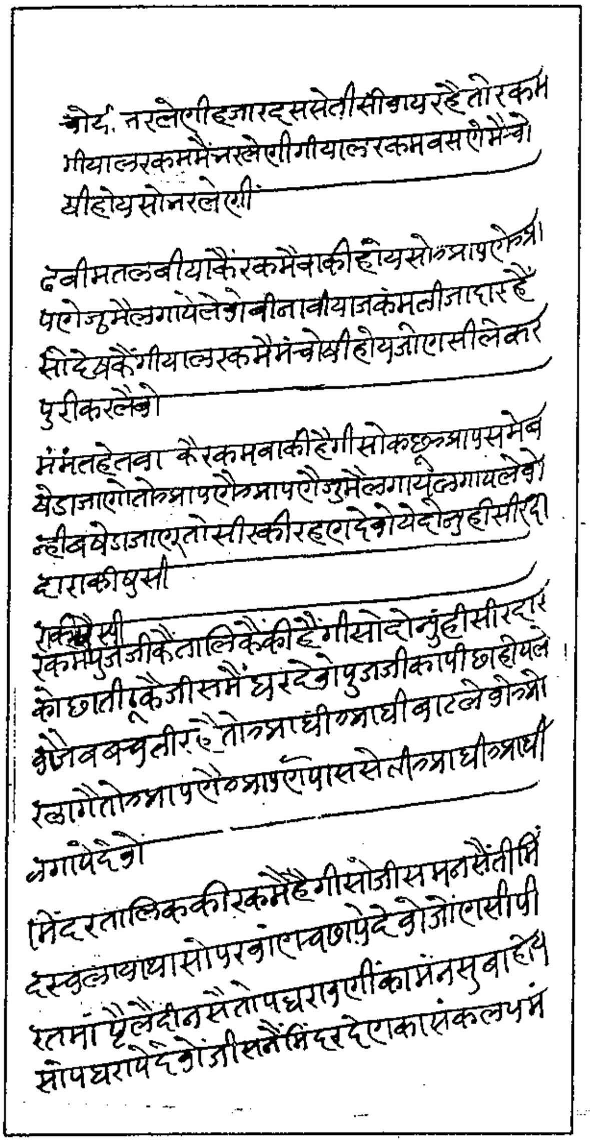


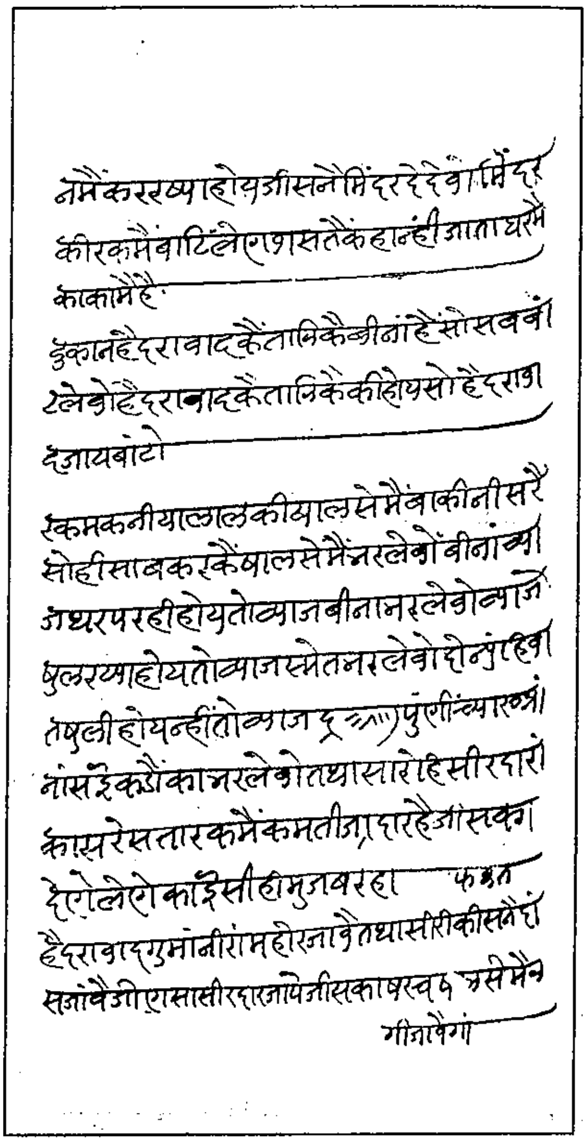


।. श्री किशनदास प्रेमसुखदास पूर्णमल जी ऊपर चिट्ठी लिख देवो, गुमानी जी होर आये होंगे, आधा-आधा हिसाब आपस में कर लेवो, देणा-लेणा सरब निपटाय देवो, नवा काम-दाम एक करना नहीं, माल मामला होय सो आधा-आधा बांट लिजो . . . . फकत।

।. गुमानीराम जी होर चिट्ठी लिख देवों, हम हैदराबाद जावेंगे देने वाले का आधा देवांगे, लेणे वाला का आधा लेवांगे, काम सरब निपटाय कर माल-मामला रहेगा सो आधा-आधा बांट लेवांगे . . . . . .फकत।

।. जिस भखत गुमानी राम होर हैदराबाद का महूरत दिखाये लेंवे, जिसी भक्त से तो बांटणे लाग जाणा, चीजें बसत मकान जगां तथा दुकान सरब बांट कर फरदी ऊपर लगाय लेवो, जिस दिन गुमानी राम होर हैदराबाद न सिद्ध कर जावेंगे, जिस दिन दाखला दिवाया जावेगा, इतने बंट बेट सफाई होय जावेगी . . . . .फकत।

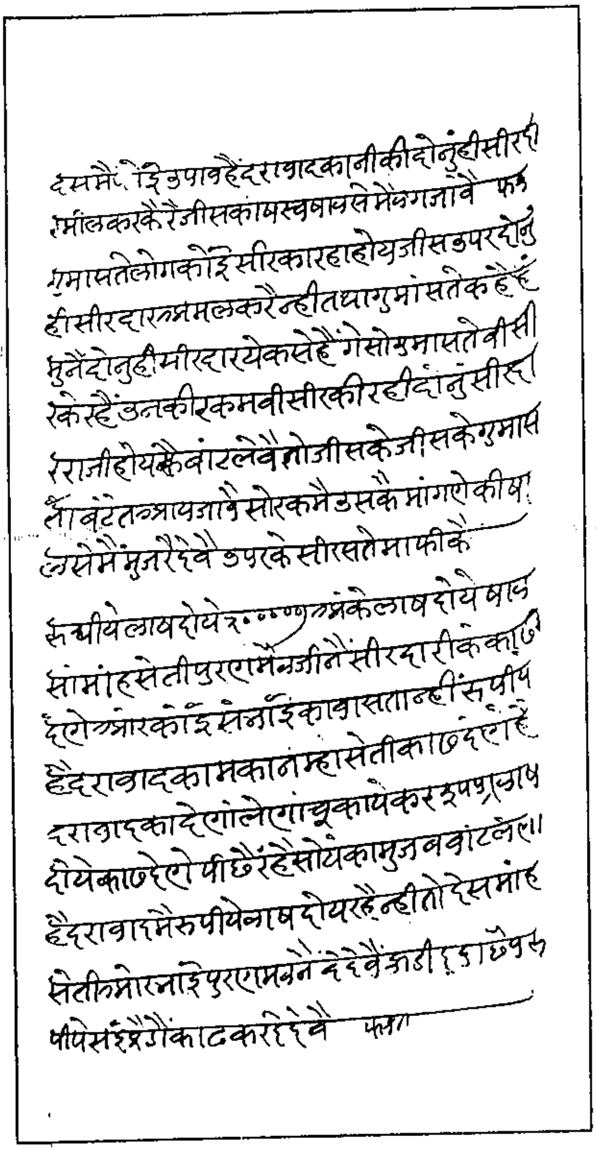


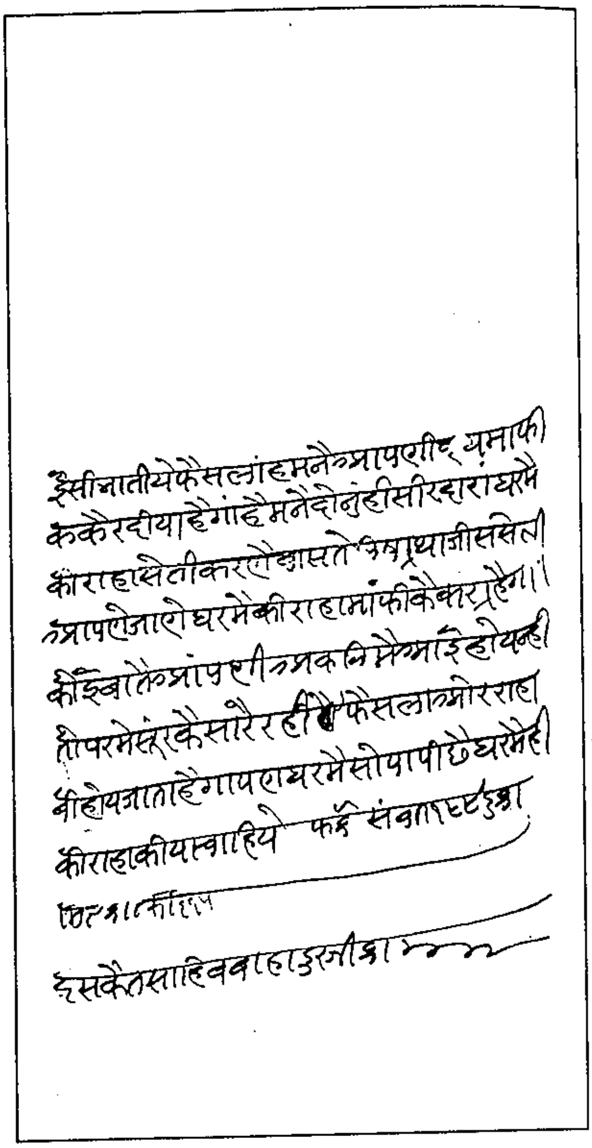


।. गुमास्ते लोग जिसके-जिसके तालके होंगे, जिस-जिसके तालिके रहें, रकम लेबा की है सेब मुतिब होय, सो जिसके तालिके गुमास्ते होय सो निबाजु मुजरा देवे, खायेकी गुमास्ता की जिसके तालिके गुमास्ता होय जिसकी रही, चांहे लेवो चाहे छोड़ो दूसरे सिरदार का कछु वास्ता रहा नहीं, रकम गुमास्ता कानी दोनों सिरदारों की बाकी निकले सो जोड़ के हिसाब देख लेणा, हजार दस तांई घाटे बाधे रहे जद तो रकम चौकस लेणी, हजार दस सेती सिवाय रहे तो रकम गयो लेर के काम में भर लेणी, गियाल रकम बसणे में चोखी हो वे सो भर लेणी।

।. डब्बी मतलबी यांके रकम बाकी होय सो आपणे-आपणे जिम्मे लगाये लेवो, बिना ब्याज कमती ज्यादा रहे सो देखके गियाल रकम में चोखी होय जोणसी लेकर पूरी कर लेवो।

।. ममता हेत वाला के रकम बाकी होंगी, सो कच्छु आपस में बखेड़ा जाणों तो आपणे-आपणे जुम्मेलगाय-लगाय लेवो नहीं बखेड़ा जाणो तो सीरकी रहने देवो, ये दोनों





ही सिरदारा की खुशी।

I. रकम पूजजी के तालके की हेगी सो दोनों ही सिरदारां को छाती दुके जिसमें धर देवों, पुजजी का पीछा होय वा जे बचती रहे तो आधी-आधी बांट लेवो और लागे तो आपणे-आपणे पास सेत्ती आधी-आधी लगा देवो।

I. मन्दिर तालके की रकम हेगी सो जिस मन सेत्ती मन्दिर चलाया था, सो परवान चढाय देवो, जोणैसी पिरतमा पहले दिन से तो पदरावणी का मनसूबा होय, सो पधराय देवो, जिसने मन्दिर देणे का संकल्प मन में कर राख्या होय, उसने मन्दिर दे देवो, मन्दिर की रकम बांट लेणे वास्ते कही नहीं जाता, धरम का काम है।

I. दुकान हैदराबाद के तालके बिना है, सो सब बांट लेवो, हैदराबाद के तालके की होय सो हैदराबाद जाये बांटो।

I. रकम कन्हैया लाल की खालसे में बाकी निकले सो हिसाब करके खालसे में भर लेवो,

बिना ब्याज थरप रही हो तो ब्याज बिना भर लेवो, ब्याज खुल रहा होय तो ब्याज समेत भर लेवो, दोनों ही बात खुली होय नहीं तो ब्याज पौणा चार आना सैकड़ा का भर लेओ, तथा सारों ही सिरदारों का सिरसता रकम कमती ज्यादा रहे, जिसका देणे-लेणें कोई ईसी मुजब रहा . . . . फकत।

I. हैदराबाद गुमानीराम होर जावे तथा श्री किशन दास जावे जोणसा सिरदार जावे, जिसका खरच सबसे लिया जावेगा।

I. देश में कोई उपाव हैदराबाद कानी की दोनों ही सिरदार मिलकर के रंजिश का खर्च खालसे में लग जावे . . . . . .फकत।

I. गुमास्ता लोग कोई सीरका रहा होय, जिस ऊपर दोनों ही सिरदार अमल करें नहीं तथा गुमास्ते कहे हमने दोनों ही सिरदार एक से हेंगे, सो गुमास्ते भी सीरके रहें, उनकी रकम भी सीरकी रही, दोनों सिरदारा राजी होकर बांट लेवें, जो जिसके गुमास्ते बटेत आये जावे, सो रकम उसके मांगने की खालसे में मुजरे देवे, ऊपर के सिरसते माफिक।

I. रूपये लाख दो अंके 2,00,000/- खालसा मा सेत्ती पूर्णमल जी ने सिरदारी के काड देणे और कोई से भाई का वास्ता नहीं, रूपया हैदराबाद का मकान माह सेत्ती काड देणे हैं, हैदराबाद का देणा-लेणा चुकाय कर रूपया लाख दोय काड देणा, पिछे रहे सो एंके मुजिब लेणा, हैदराबाद में रूपया लाख दोय रहे नहीं तो देश माय सेत्ती और भाई पूर्णमल ने दे देवें, हुन्डी 6 रूपया सैकड़ा काटकर देवें।

I. इस भांति यह फैसला हमने अपणी बुद्धि माफिक कर दिया हैं, हमने दोनों ही सिरदारा घर की राह सेत्ती करने वास्ते लिखा था, जिससे सेत्ती आपणी जाणे घर की राह माफिक करा हेगा, कोई बात आपणी अकल आई होय नहीं, तो परमेश्वर सारू रही, फैसला और रहा होय जाता हेगा, पण घर में सौंपा पिछे घर में ही की राह किया चाइये. . . .फकत। सम्वत् 1896 का, मिति कार्तिक सुदी पन्द्रस (15) (सन् 1839)

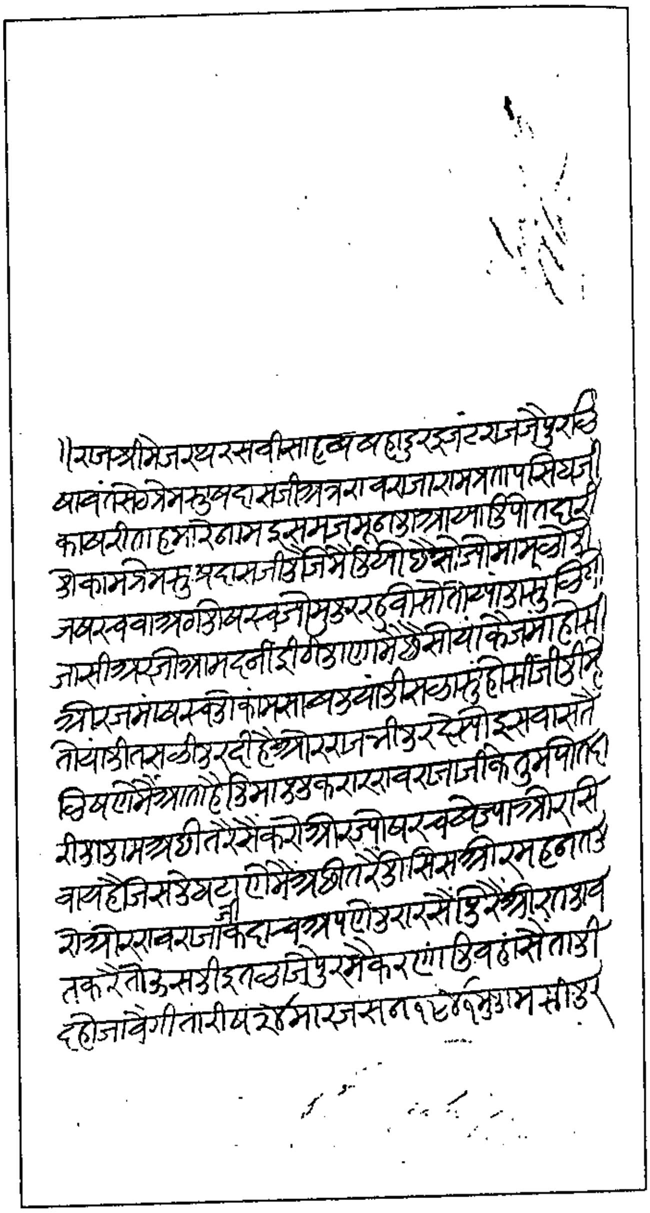
द./- साहब बहादुर का,

सार : यह संपत्ति के बंटवारे का फैसला है। संपत्ति का विभाजन श्री किसनदास प्रेमसुखदास तथा गुमानीराम कन्हैयालाल के बीच हुआ था। यह फैसला उस समय के प्रसिद्ध सेठ डूंगरमल पतरामदास ने किया है। इस फैसले की महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सेठ पूर्णमलजी को सरदारी के लिये 2 लाख की रकम अलग से दी गयी है। यह बंटवारे की संपत्ति के अतिरिक्त है। तत्कालीन अर्थ-व्यवस्था के एक महत्त्वपूर्ण पहलु पर यह फैसला दिलचस्प प्रकाश डालता है।

श्री राम जी

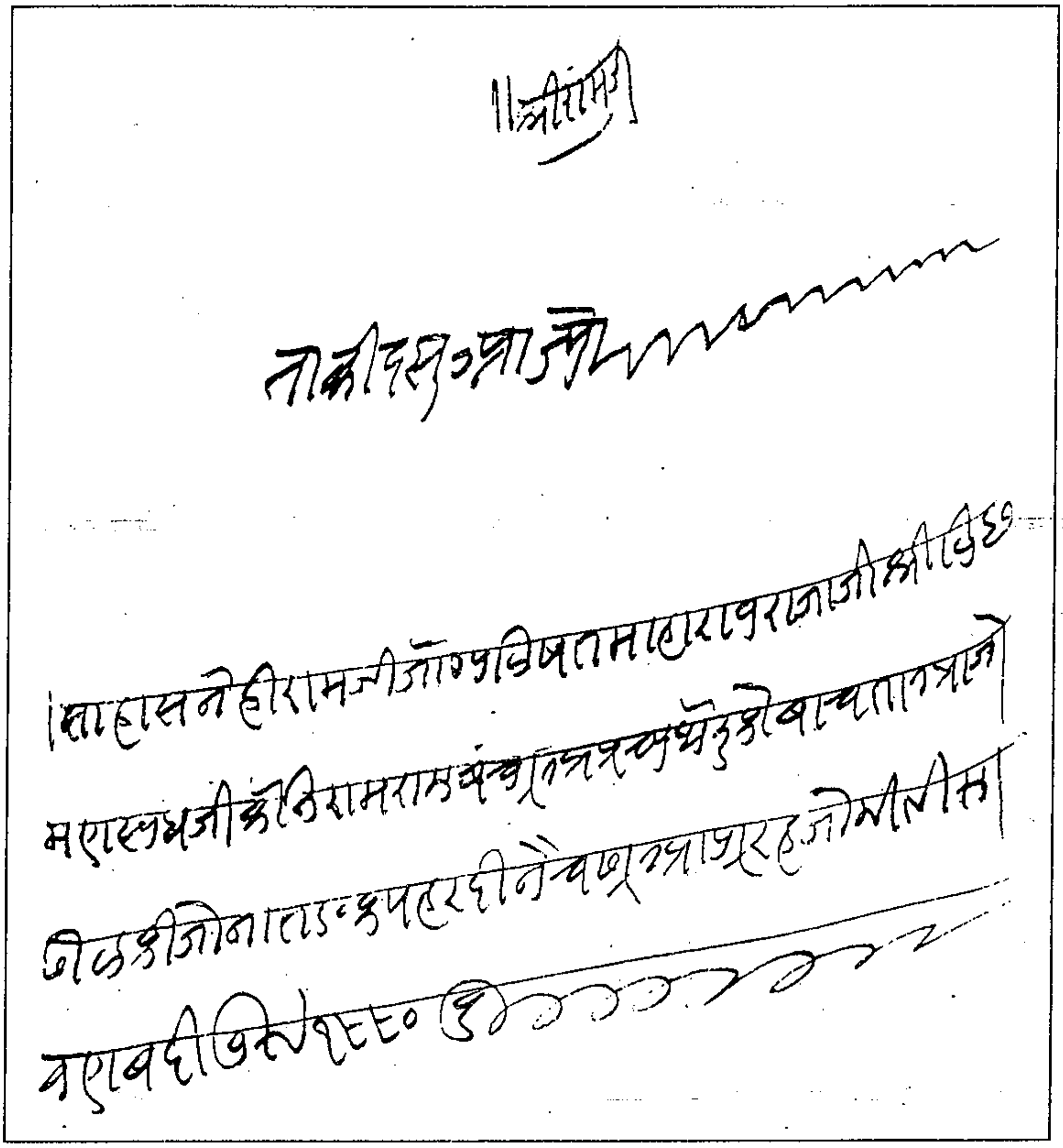
अंग्रेजी में थरसवी साहब के दस्तखत।

राज श्री मेजर थरसवी साहब बहादुर एजेन्ट राज जयपुर लिखायतम् सेठ प्रेम सुख दास जी अत्रे राव राजा राम प्रताप सिंह जी का खरीता (पत्र) हमारे नाम इस मजमून का आया कि पोतदारी को काम प्रेम सुख दास जी के जिम्मे कियो छै सो जो मामलो का खर्च व अठ को खर्च जो मुकर्रर हुवो सो तो बांका सो लियो जासी और जो आमदनी इ ठिकाणा मैं छै सो यांके जम्मा हो सीं और जमा खर्च को काम साबक यांकी सलासूं हो सीं। जींकी मेहतो यांकी तसल्ली कर दी है और राज भी कर देसी, इस वास्ते लिखने में आता है कि माफिक करार राव राजा जी के तुम पोतदारी का काम अच्छी तरह से करो और जो खर्च बेजां (अनुचित) और सिवाय है (अधिक है), जिसके घटाने में अच्छी तरह कोशिश और मेहनत करो। और राव राजा जी कदाच अपणे करार से फिरे और तफावत करे तो उसकी इत्ला जयपुर में करणा कि वहां से ताकिद हो जावेगी। तारीख 24 मार्च 1841,



अंग्रजी में मेजर थरसवी साहब के दस्तखत।

सार–यह पत्र मेजर थर्सवी की ओर से सेठ प्रेमसुखदास को लिखा गया है। इसमें उल्लेख है कि वे पोतदारी का काम पूरी तसल्ली से करें। राज्य के अनुचित खर्च में कमी करें। अगर कोई गड़बड़ी हो तो आप जयपुर राज को सूचित करे।



श्री राम जी

ताकीद सूं आज्यो,

साह सनेहीराम जी जोग लिखतम् महाराव राजाजी श्री लक्ष्मण सिंह जी केन राम-राम बंचना। अपरंच थे रूको बांचता ही आजो-ढील कीज्यो ना, तड़के पहर दिन चढ़या आया रहजो-मिति सावन बदी 7, सम्वत् 1880 (सन् 1823)

सार– महाराज लक्ष्मणसिंह सीकर ने यह खास रूक्का साह सनेहीराम को भेजा है जिसमें उन्हें शीघ्र आने को कहा गया है। यह खास रूक्का निजी व्यक्तियों को भेजा जाता था।

॥श्रीरामजी॥

॥आदद्दासनांसीकरकेराजकेश्रदोवस्तकिल्लैमौंकी
।अवेछपारीवैंकेसवार १४ [illegible]
मलसवारनौकरसपणेपाजाप [illegible]
चूनवादांगांमासमारकमामलकेदेणाचणाणानहीअंर
ऋसकाहीसावपीछलांज्योवांकीहोयसोकरदेणा
।पोतदारीसेठपरेमसरूपदासकैहोयसोजीगनीआम
दनीआवजीनीईकीउठानप्रमाहोयअरज्योव
रवहोयसोइनकीदुकानसेहोयईनकीदुकानसे
परनाराजमापरचकुछनहीअवाजमापरचकाको
मैइनकिसवासहोयअरतीसपतीसहजाररुपया
सालियानाजमांसेंपरचमैकमकरदीयाजावै

श्री राम जी

दस्तखत - थरसवी (अंग्रेजी में)

याददासती सीकर के राज के बदोबसत की कलमों की बठोठपाटोदे के सवार 44 . . . .
. . . .

सवार 8 जूमले सवार 5 नौकर. . . . .
. . . .

वास्ते चूनबा दांणा थास माश्क मामूल के देणा-चढ़ाणा नहीं और उसका हिसाब पिछला ज्यों बाकी होय सो कर देणा पोतदारी सेठ प्रेमसुखदास जी के होयसी - जीतनी आमदनी आव जीती इनकी दुकान में जमा होय - अर ज्या खरच होय सो इनकी दुकान से होय-इनकी दुकान से परभारा जमा खरच कुछ न होय-बा जमा खरच का काम मे इनकी सलाह होय- और तीस पैंतीस हजार रूपया सालियाना जमा से खरच में कम कर दिया जावे - जिसमें करजदारों का करज उतरता जावे - परगने खालसे से रखे जावें का इजारे दिये जावे सो मातबर आदमी सेठ परेमसुख दास जी सलाह मिलायर दिये जावें - कि जिससे राज की जमा भी न बिगड़े और रइयत भी इजा (तकलीफ) न पावे।

रीसालों मय सवार वा पैदल ज्यो लायक नौकरी क होय सो रहे-उनसे अच्छी तरह से नौकरी ली जावे-और बरबखत उनको या तो कह दिया जावे और रिसालों ही के स्यामल रहे-टूट कर जूदे जूदे न रहे। इतनी जगह आदमी सेठ परेम सुख दास जी के रखे जावे सो राज के काम पुंरता इनके आदमियों की स्यामदी से काम करते रहे-और इनका खरच राज से दिया जावे।

तफसील. . . . . .पोतदारी राज पर चीट्ठी होय सो इनके आदमी की सेनाणी (निशानी) से होये, खजाने के काम ऊपर सब काम खजाने के दफ्तर में होबो करे जमा खरच का च्यारूं शहरों में एक एक आदमी रख दिया जावे। कोठयार के काम पर एक आदमी इनका रख दिया जावे जगात के काम उपर एक आदमी

।परगनेषालसैंरषेजावैवाइजारेदीयेजावैसोमा
तपरआदमीकै परेमस्रषदासजीसैलाहा
मीलायउरदीयेजावैकिजीससैराजकीजमाची
नवीगढेओररहैंनीईआनपावै
।रीसालोमसयारवापैदलैज्योलायकनोकरीके
होवैसोरहैंजनसैअछीतरैसैंनोकरीलीजावै
ओरषरषपतउनकपालेकदीयाजावैओररोसा
लोलीकेस्यामउरहैफरंउरजरदेजरदेनरहै
।इतनीजगेआदमीसे०परेमस्रषदासजीकेरषेजावै
सोराजकेकामउरताइनकेआदमोउीस्यायदेसै
कामउरतेरहैओरइनकापरचराजसैदीयाजावै
।तफसीलजले
।पोतदारीपरच्याँगीहोयसोइनकेआदमीकी
सनागीसेहोय
।पजानेकेकामऊपरसबकामजानेकेदफतर
।च्याइसहरोमऐकऐकआदमीरषदीयाजावै
।कोठारकेकामेपरऐउआदमीइनकारषदीयाजा
वै
।जगातउेउामऊपरऐउआदमीरषदीयाजावै
।हीसाबकेकामपरऐउआदमीरषदीयाजावै
।नोतेकापै सावामलकोतहसीलकापेसाज्यो
आवैसोसबसे०परेमस्रषदासजीकीउआनआहोय

रख दिया, हिसाब के काम पर एक आदमी रख दिया जावे, नोते का पैसा व मुलक की तहसील का पैसा ज्यों आवे सो सब सेठ प्रेम सुख दास जी की दुकान जमा होय-परबारा खरच न होय।

कामदारां क आग हणमतराम मालूराम-रूढ़मल काम करते हैं सो अच्छी तरह दयानतदारी से काम करें जब तक इनसे तसल्ली से काम लिया जावें। जितने होदेदार बड़े और छोटे होय उन सब को चाहिये कि खेर खवाही और दयानतदारी से काम अपणे-अपणे तालके का काम करे जो कोई राज का रूपया चुरा खावे या किसी से रिश्वत लेवे तो वो मोकूफ हो जावे, और उसकी एवज और मातबर आदमी रख दिया जावे।

माजी राठोर जी के गांव व जमी माफक मामूल कदीम क होय सो बहाल रहे। इजारदारों से हिसाब जमा का समझ लिया जावे, और जो मुनासिब होय उनका खरच वास्ते दिया जावे, चारणों के पास 6 हजार रूपयों में जेवर गिरवी हैं, जिसके रूपये चुका दिये जावे, और जेवर छुड़ाय कर रावराजा जी का तोशा खाना में रखा जावे। सेठों के पास पांच हजार रूपयों में ज़ेवर गिरवी हैं, जिसके रूपये सीकर के राज सूं दिये जावे और जेवर छुडाय कर तोशा खाना में रखा जावे।

पीरोहित जी के पास 2000 रूपयों में जेवर गिरवी हैं, जिसके भी रूपये राज सीकर से दिया जावे और जेवर छुड़ाया जावे, और तोशा खाने में रखा जावे।

दिल्ली के स्याजादा के माल के बाबत हुन्डी सेठ गुमानी राम की दुकान से करवाई, जिसके 1044/- रुपये अर ब्याज वा हुन्डी पावण सिवाय सेठ मजकूर को दिलाया जावे और इतने ही बोची वालों से वसूल किये जावे और रूघ जी खुद बुलाया जावे गा या उसके हिस्से के रुपया मंगाया जावेगा। झुन्झुनू में वकील रहे जिसके पास पांच छ सवार और पांच छ पैदल रहा करें।

बीकानेर व सीकर की सरहद पर एक मुन्सफ और 2 मुतसदी एक हिन्दी नवीस एक फारसी नवीस रख दिया जावे, मुकदमों के फैसलों के वास्ते।

मस्तारामरखनहोय
।कामदारोकेआगहणपतराममालूरामरूकमबकामउ
रतोहैसोअछीतरैदयानतदारीसैकामकरैजवतकईन
सैतसलीसैकामलीयाजावै
जीतनेओहोददारअकेओनरछोरहोयऊनस्युकुचाहे
येकिपरवाहीओरदयानतदारीसेकामअपणेअपणे
मालकेकाकामकरेपोकोइराजकारुपयाचूरावै
याकीसीसरीसबुतलेवैतोपोमोकरखहोजावैअरउ
सकोपेयजओरमालपरआदमीरखदीयाजावै
।माजीराणोडलीकेगापपाउमीमाफकमामलेकेदाम
केहोयसोबाहालरहै
।हजारदारोसहीसाबकचालगीजमाकारूमली
याजावैअ॰रउपाछुनारवैहोयसाऊनकरपरचउपा
सतदीयाजावै
।चारणोकेपासछपहजाररुपयोमैजेघरगीरवीहैजी
सकेरुपयेतोमुउपजीदेवैअरजेघरछूमायकरराबरी
जाजीकातेस्याबानामेरखाजाय
।सेठोकेपासपान्चहजाररुपयोमैजेघरगीरवीहैजीस
केरुपयेसोकरउराजसदीयेजावैअरजेघरछूडायउ
रतोसाबानरखाजावै
।पीरोहीतजीकेपासदोहजाररुपयोमैजेघरगीरवीहै
जीसकेजीरुपयेराजसीउ॰न॰पेउसैघरछुडाया
जावैअरतोस्याबानेरखाजावै
।डीलीकेस्याहजा॰(बेलाव)॰मी॰जमीसे॰वुमानीनामडीउ
कानसैंउरषाइजीसके१०८८ रुपयेअरखाजवा
हमाताएसीवायसेमगकरवंरदीलोगा(ये)केअरहतने
हीवोचीवालासेपरखडीयेजावैओरउघजीपरख
वायाजावगायाजसकेहीसेकेरुपयेमाणयेजावगे

सीकर – लक्ष्मणगढ़ – फतेहपुर – रामगढ़, इन चारों मुकामों में अदालत बेठा दी जावे, दोय दोय मुन्सीब अर दोय-दोय मौहर्रिर होशियार दोनों के तालिके दीवानी व फौजदारी दोनों के तालिके का फैसला अच्छी तरह तहकीकात और निर्धार के साथ वाजबी की रूह से बिना किसी रियायत के किया करें और जितने मुकदमें दीवानी का फौजदारी के तालके के होय सो सब अदालत में जाया करे और कहीं और जगह जाय कर नालस करे तो अदालत में भेज दिया करें।

बोची बालों से जवाद बाबत रुपया 100 लिया जावे, सिवाय न लिया जावे जब तक वो चोरी धाड़ा न करे और जो चोरी धाड़ा कर तो गांव ही जपत किया जावे। जो कोई गांव किसी की तनखा में गिरवी होय जिसका करार हो गया होय वा रुपये पहुंच गये हों तो वो गांव तुरन्त ही खालसा कर लिया जावे।

मोती सिंह वगैरा मेलको की हाल की दी हुई जमीन तो जपत होय और कदीमी बहाल रहे और हाल की जपत हुई जिसका हासल आदा तो सीकर का राज में लिया जावे अर आदा उनको माफ कर दिया जावे और राज की चीज वस्त रुपया पैसे जो उनकी तरफ होय जिसका हिसाब समझ लिया जावे तो मजला पहुंचो तिसकी निशा ली जावे।

सेठ गुमानी राम न पोतदारी का काम किया, जिस बाबत आज ताई का हिसाब उनका जितना रुपया बाकी होय चूका दिया जावे। सेठ गुमानी राम के वा और सेठों के जो रुपये देने हैं, जिनके अदा करने की सबीन किस्त बन्दी और तनख्वाह लगाय देने व रजिस्टर से सेठों की रजाबन्दी होय कर दी जावे।

रयैत से दन्ड नाहक और बिना सबब और परबारा न लिया जावे, किसी का कसूर लायक लेने जरीमाने के जाहिर होय तो उसकी तहकीकात अच्छी तरह से की जावे और तहकीकात की रूह से जितना मुनासिब होय उतना लिया जावे जिसकी रूबकारी मिसल के खुलासे की लिखी जावे और वे अदालतों में या दफ्तर खाने में रखी जावे। मिति चेत सुदी तीज (3) सम्वत् 1898 (सन् 1841)

।इसमाफ हमैं अकीलरहैजीसकेपासपान्चछपसयारअर
पान्चछपपदलैरहाकर
।बीकानेरअरसीउरउीसरहदपरऐउमरनसफअर
दोयमरतसदीऐउहीदवीनानीसाऐउफारसीनवीस
रषदीयेंजावैमरकदमेछेरसालोउँवासतै
।लीखरलीछम [illegible]
मैअदालतमुहादीजावै [illegible] पोय
दीयमहोरीनफासीयारर [illegible] सा।वा।दीवानी
अरकोजदारीदोनूकेताल्लकमुकदमेफैसल
वाअछीतरेंतहकीकातअरनीरधारउीसाथवाज
बीउीइतसेबीनाउीसीकीरीयायतकेकीयाकरैअ
रजीतेमुउदमेदीवानीयाफोजदारीउताल्लकेउहोय
सोसबअदालतमेजायाकरैअरकहीओरजगेंजा
यमुनालसकैतोअदा [illegible]
बोन्चीवालोसैजवादबावनरुपया(१००)लीयेजावै
सीपायनलीयेजावैजबतउवोचोरीधाडानकरै
अरजोचोरीधाडाउरतोगायहीजबतउीयाजावै
।ज्योउोर गाय कीसीकी [illegible] होयजोसउ
उरारहोगयाहोयवाइपयेपोहोन्चगयेहोयतोवै
गायउरनहीवालसेउरलीयाजावै

२

।मोतीसिंघसगरैमेलिके गेकीहाळकीदीकुईजमीननोज
अतहोयअरकदीपिंगाहाळनहैअरहाळडीजथतकुई
जीसकाहासवळगाथातीसाउरडाना मेंदीयाजावे
अरआधाऊनकमाफकरदीयाजावैअरजडी
चीजकसातरुपयापैसाजोऊनकीतरफहोयजीस
कातीसाथसमऊलीयाजावैजोमजळपोहोच्यैजी
रकीदीसालीजावे
।सेठमानीरामनैपातदारीअठामडीयाजीसकी
बातअरुहटीसाबऊनकाजीतनारुपयाबाकी
होयसोचूकादीयाजावे
।सेठगुमानीरामकैबाओरसेगेकेजोरुपयादेणे
हैजीनकेअदाउरणेकीसबीलकीसतबंदीओर
तनखाळगावदेणेबगरजीसतरसैंउसेठगीर
जाबधीहोयकरदीजावे
।रयतसैकेमनाहकओरबीनासबबओहदेदारनाल
नलीयाजावैजेअकीसीकाकन्हरलायकलेनेजरी
मानेडेजाहरहोयतोऊसकीतहकीकातअछीतरसे
कीजावेअरतहकीकातउीद्रुसेजीतामुनासबहोय
ऊतनालीयाजावैजीसकी इबसारीमीसळऊकुल
स्पेकीलीजीजावैअरजोअदाळतोमैयादस्तरखा
नेमेंरखीजावे चैतसुद३ सं१८८८ मीदसवात
११ना [illegible]
दसकत [illegible]

दस्तखत – दरोगा भात मल का,

दस्तखत – विजय सिंह का।

सार : यह पत्र बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इसमें सेठ प्रेमसुखदास द्वारा पोतदारी सम्हालने के पहिले जिन शर्तों की पालना की बात कही गयी थी उनका उल्लेख मेजर थर्सबी ने किया है। इन शर्तों में सीकर, लक्ष्मणगढ़, फतेहपुर और रामगढ़ में लोगों के मुकदमों की सुनवायी के लिये अदालतें स्थापित करने का उल्लेख है। इसके लिये सीकर ठिकाने को आदेश दिया गया है। बोचीवाले जो लूटपाट करते थे उनके गांव को जप्त करने, राज के गिरवी जेवर छुड़ाने आदि की बातों का उल्लेख पत्र में है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि रैयत से नाहक और बिना सबब दंड नहीं लेने और अपराधी को पूरी छानबीन कर दण्ड देने की शर्त रखी गयी है।

(चित्र पृष्ठ संख्या 317 पर)

श्री राम जी

ली: मु.

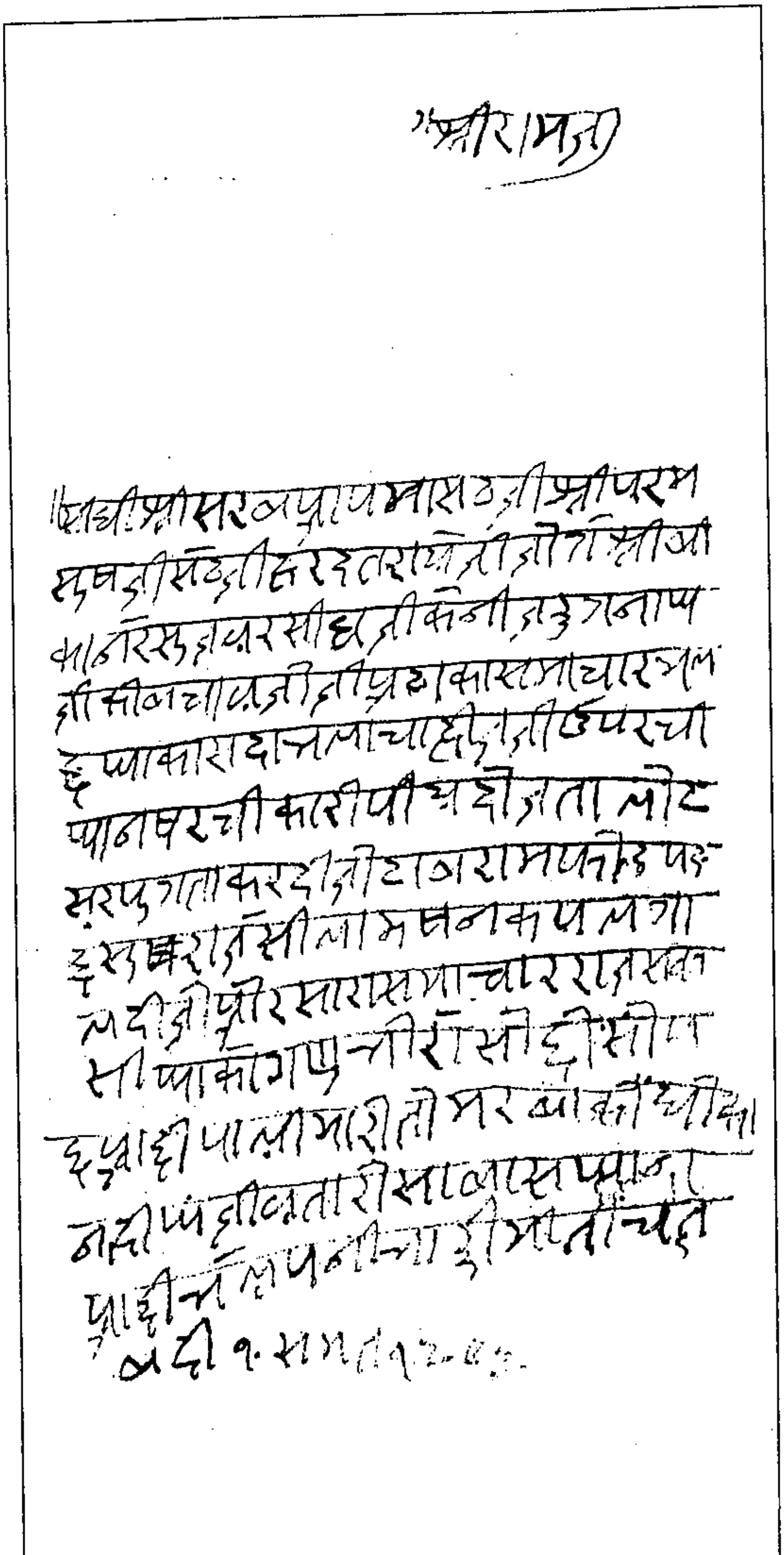
सिद्ध श्री सरवोपमा सेठ जी श्री हरिदत्तराय जी, रामगोपाल जी जोग लिख1म महाराव राजा जी राम्र प्रताप सिंह जी (सीकर नरेश) केन जय जघुनाथ जी की बंचज्यो। अठा का समाचार भला छ, थांका सदा भला चाहिजे छ। अपरंच मेह आज सिंहरावट आय - दाखिल हुआ छां। हर कीला म अमल (कब्जा) कर लिया छ। और हरदेव न खर्च सीग (बाबत) रुपया 200/- अंकेही दोय सो दीज्यो और पाछ लेखो हुयां स दिया जासी और आगरा का कारीगरा सूं दारू गोलां (बारूद) लेणा छ सो बान साई वास्त जितना हरदेव दयाव (दिलवाये) जितरा दीज्यो। मिति कार्तिक बदी छठ (6) सम्वत् 1903 (सन् 1846)

सार : यह पत्र सीकर के रावराजा रामप्रताप सिंह ने सेठ रामगोपालजी को लिखा है। इसमें सूचना दी है कि आज सिंगरावट के किले में हम घुस गये हैं। आगरे के कारीगरों से दारूँ तथा गोले लेने हैं सो उन्हें साई के रुपये आप दे देना। स्मरण रहे रावराजा के समय पासवानियों का जोर बढ़ने से राव राजा को उनके गढ़ों पर हमला करना पड़ा। सिंगरावट उनका प्रसिद्ध गढ़ था। इन पासवानियों का पक्ष डूंगजी जवाहर जी करते रहते थे।

॥ श्रीरामजी

[illegible]

॥ साधश्रीसरबवोपमासेठजीश्रीहरदतरायजीरांमगो
पालजोगिलिषतंम्हारावराजाजीश्रीरांमपरतापस्यंध
जीकेनिजेरघनाथजीश्रीबंचांअठाकासमाचारभ
लाछेथाकासदाभलाचाहिजेंअपरंच म्हेंआगि
स्यंघरावटिआयेदाषिलहुवाछांअराकिलामें
अमलकरिलीयोछेअोरहरदेवनषरचीसीगर
पया(२००)अकेहीदोयसे दीज्येअोरपाछेलेषो
स्वासेथ्रइजासीअोरआगराकाकारीगरासु
दारूगोलालेणांछेसोवांनसाइवास्तेरपयाजित
राहरदेवद्युवजितरादीज्योमितीकातीवदि६सेवं
त१८०३ओ



श्री राम जी

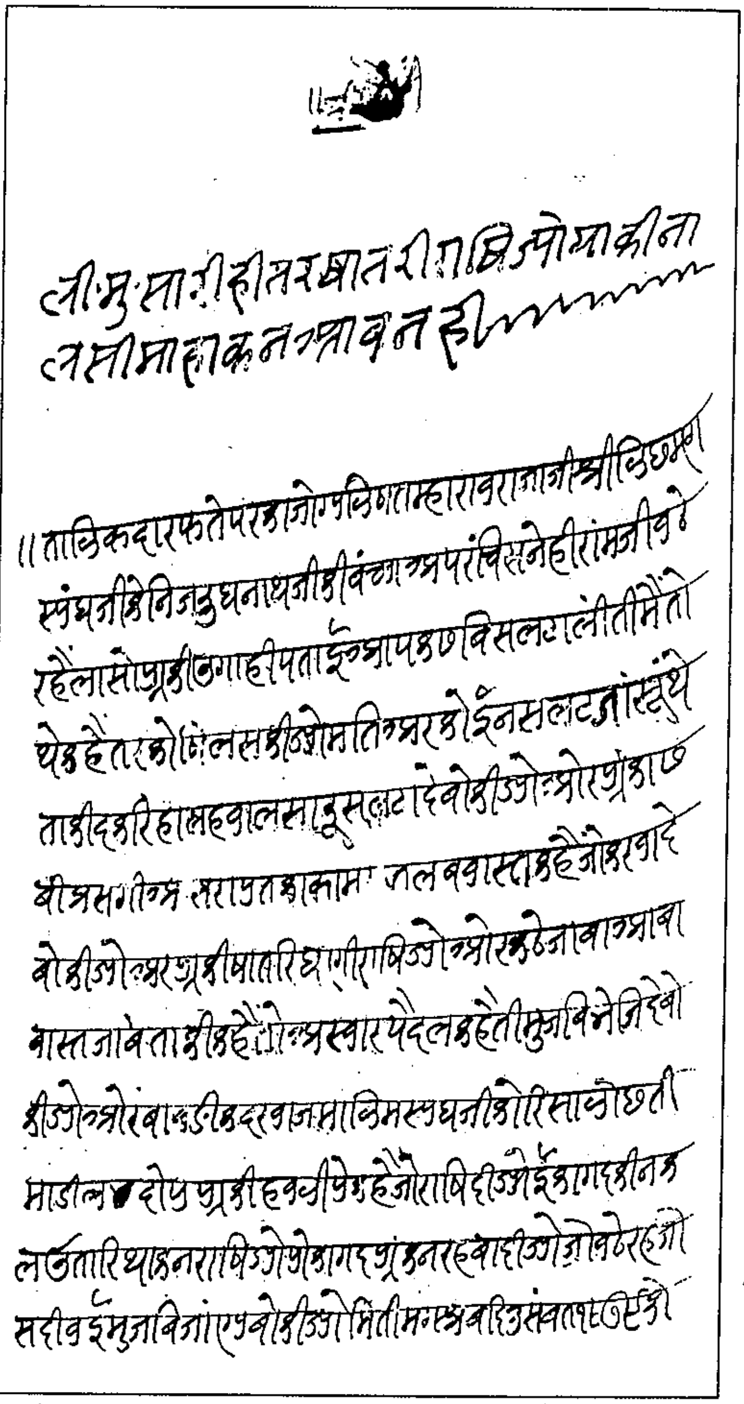
सिद्ध श्री सरवोपमा सेठ जी श्री प्रेम सुख जी सेठ जी हरिदत्त राय जी जोग श्री बीकानेर सूं जवाहर सिंह केन जय रघुनाथ जी बंचज्यो। अठां का समाचार भला छ, थांका सदा भला चाहिजे छ। अपरंच थांने खर्चे का रुपया दयो जता लोठ के साग पुगता कर दीज्यो। टांबरा में फोड़ा पडै छ। सो राज सिवाय कने कहां (किसे कहें) बेगा (जल्दी) भेज दीज्यो। और सारा समाचार राजसी कहसी थांको घणो भरोसो छ सो म्हारो तो मरबा को धोको नहीं - थे जीवता रहो - शाबाश थाने आच्छी भेलप (दोस्ती) निभाई। मिति चेत बदी दशमी (10) सम्वत् 1896 (सन् 1839)

सारः यह पत्र स्वतंत्रता सेनानी जवाहर सिंह पाटोदा वाले का सेठ प्रेमसुखदास के नाम का है। लोठ के साथ कुछ रुपये भेजने की बात कही गयी है। जवाहर सिंह कुछ काल तक बीकानेर के नियन्त्रण में रहे थे।

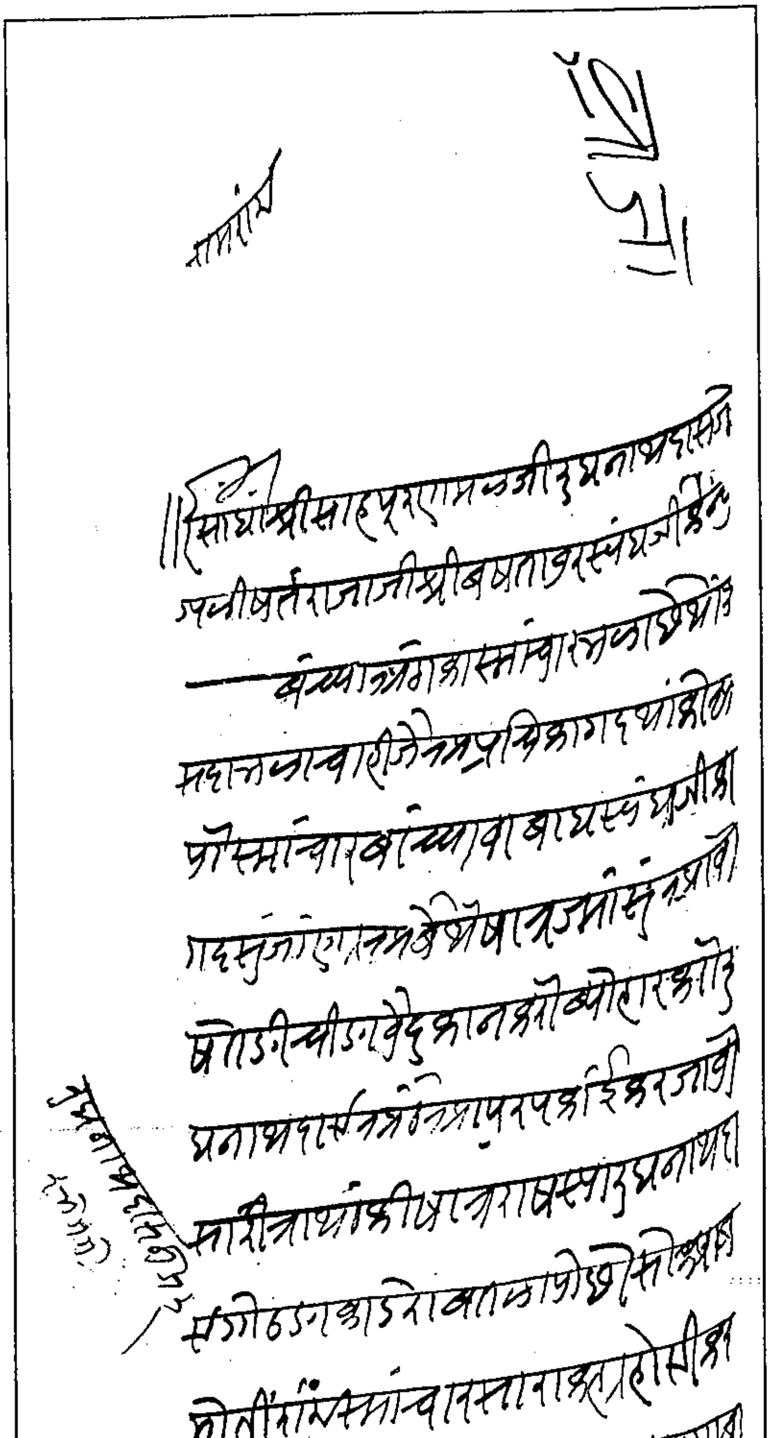
श्री रामजी

ली. मु. सारी ही तरह खातरी राखज्यो यांकी नालिस म्हां क कन आव नहीं—

तालिकदार फतेहपुर का जोग लिखतम महाराव राजा जी श्री लक्ष्मण सिंह जी केन जय रघुनाथ जी की बांचज्यो। अपरंच सनेही राम जी बठे रहला सो यांकी उगाही पताई आपका ढबी सलटाली तीमतो थे कई तरह को खीलस कीज्यो मती। अर कोई न सलट जासूं थे ताकीद करी हवाल सारू सलटा देबो कीज्यो। और यांका ढबी प्रसंगी आसरा पूत का कामां तलब वासत कहे जो करबा देबो कीज्यो। और यांकी खातरी धणी राखीज्यो। और कठे ज्याबा आबा वास्त, जावे सो तांकी कहे तो असवार पैदल कहे तीं मुजब भेज देबो कीज्यो। और बावड़ी के दरवाजे सालिम सिंह जी को रिसालो छ तीम डील (सिपाही) दोय यांकी हवेली प कहे तो राखी दीज्यो। इंह कागद की नकल उतारी थांकन राखी ज्यो। ओ कागद इंया कन रहबा दीज्यो। जो बठे रहगो, सदीब इं मुजीब जाणबो कीज्यो। मिति मंगसर बदी तीज (3) सम्वत् 1879 (सन् 1822)



सारः यह पत्र रावराजा लक्ष्मणसिंह जी ने अपने फतेहपुर के तालुकेदार के नाम लिखा है। पत्र में लिखा है कि सेठ सनेहीरामजी फतेहपुर रहेंगे सो इनका पूरा मान सम्मान रखना, उगाही सलटाने में मदद करना तथा ये कहीं आने जाने की कहें तो सवार और पैदल साथ कर देना। पत्र में दो सिपाही इनके घर पर रखने की भी बात का उल्लेख किया गया है।

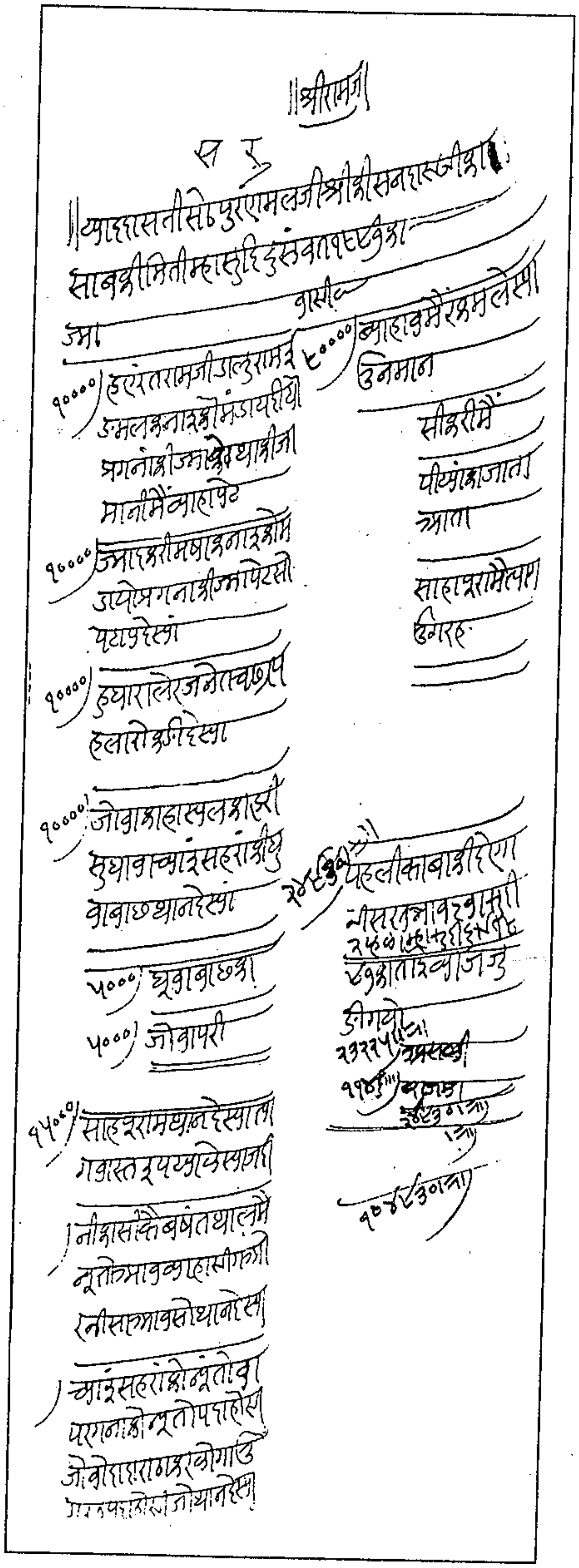


श्री राम जी

आजो

सिद्ध श्री साह पूर्ण मल जी रघुनाथ दास जी जोग लिखतम् राजा जी श्री बखतावर सिंह जी (खेतडी नरेश) केन बंचज्यो। अठे का समाचार भला छ थांका सदा भला चाहिजे अपरंच कागज थांको आयो समाचार बांचा। बागसिंह जी का कागद सूं जाणा - अब थे खातर जमा सूं आओ - खेतडी चीडाव दुकान करो - ब्योहार करो। रघुनाथ दास जी ने अठे आयर (आकर) पक्काई कर जाओ। सारी तरह थांकी खातरी राखस्यां। रघुनाथ दास गोठड़ा का डेरा बतलायो छौ। सो अब मोती राम समाचार सारा कहया होसी। करो सो सांचे दिल करो। और समाचार सारा बागसिंह जी का कागज सूं जाणो ला। पोह बदी एकम् सम्वत् 1884 (सन् 1827)

सार : यह पत्र खेतड़ी राजा बख्तावरसिंह ने साह रघुनाथदास को लिखा है। पत्र में उनसे खेतड़ी और चिड़ावे में दूकान कर व्यापार व्यवसाय शुरु करने को कहा गया है।



॥श्रीरामजी॥

सरु

॥व्याहासतीसेठपुरणमलजीश्रीकीसनदासजीका

सावद्वीमितीम्हासुदि ३ संवत १९६६का

बासे

जमा

१०००० हस्तेतरामजीउलुराम ... उमलकनारको ... ड़ायरीयो श्रगनांको जमा ... थाकीजा मानीमें व्याहपेटे

१०००० जमाहकीमखकनारकोम उपेश्रगनाकीजमापेरसी पटापदेसा

१०००० हथारालेरजमैतचाछ्रप हलारोकीदेसा

१०००० जोवाकाहासलकाउरी सुथावाव्यांरसहारांकीपु वावाछथानदेसा

५००० छूवाबाछका

५००० जोवापरी

१५००० साहरामथानदेसातग गजास्तरूपयाकेसाजी नीकासकैवषंतथालमे मूतेकमावकाहासीगजी रनीसाआवसेथानेरसी

चारसहाकोमूतोवा परगनाकोमूतोपराहोसी जेवोसापाराठकरकोगाउ ...

८०००० व्याहवमेंरकमलेसी उनमान सीकरीमें पीयांकाजाता आता साहाप्ररामेलाप वगेरह

२९८१३ पहलीकाबाकीदेणा ...

डीगयो

२३२२५

११०३

१०४८३०

श्री राम जी

सरु

याद दास्ती सेठ पूरण मल जी श्री किशन दास जी का हिसाब की मिति माह सुदी (6) छठ सम्वत् 1897 का।

जमा

10,000/- हुनूत राम जी डालूराम रूढमल कना रूको मढ़ाय दीयो परगना की जमा को थांकी जामनी में ब्याह पेटे।

10,000/- जमा करीम खां कना रूको मढायो परगना की जमा पेटे सो पटाय देस्यां।

10,000/- उधारा लेर (लेकर) जनेत चढया पहला रोकडी देस्यां।

10,000/- जौआं का हासल का हरी सुदा चारूं शहरा की धूंआ बाछ (कर) थाने देस्यां। 5000/- धूंआ बाछ का, 5000/- जौआं पर।

15,000/- शाहपुरा में थाने देस्यां त्याग वास्ते रूपया लेस्यां जद निकासी के बखत थाल में नूयूतो आवे ब्याह सीगे (वास्ते) और नीसा आवे सो थाने देस्यां।

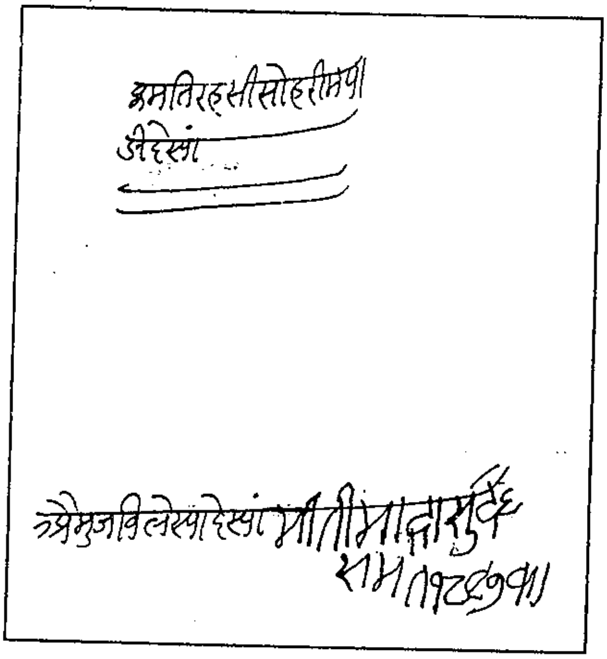
तफसील

80,000/- ब्याह में रकम लेस्यां उनमान सीकरी में पीहंया का जाता-आतां शाहपुरा में त्याग वगैरा।

24,930/- पहले का बाकी देणा नीसरा (निकला) भादवा सुदी दूज से लगा माह सुदी छठ (6) सम्वत् 1897 का तांई ब्याज जुडी गयो।

23,224/-	असली
1,146/-	ब्याज
24,930/-	कुल

1,04,930/-

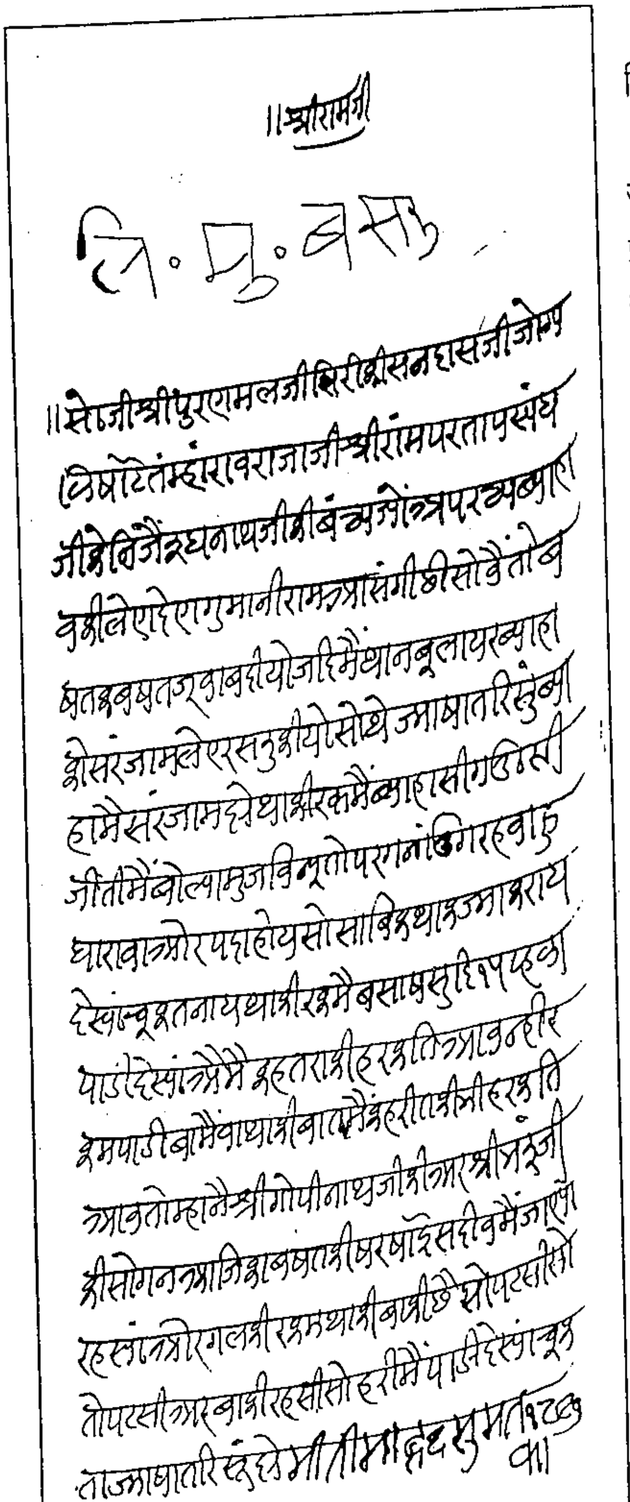

कमतिरहसीसोहरीमेंपा
ड़देस्यां

ईमुजबलेखादेस्यां मीतीभादवासुदि६
सं १८९७

चारों शहरा को नूयूतो व परगना
को नूयूतो पैदा हो – सी जो ओधेदारा
ठाकर लोगा सूं वगैरा पैदा होयसी जो थांने
देस्यां। कमती रहसी सो हरी में पाड़ देस्यां।

ई मुजब लेखा - देसा। मिति माह सुदी छठ (6) सम्वत् 1897 (1840 सन्)

यह रावराजा प्रतापसिंह के विवाह के खर्चे एवं उसके चुकाने की याददास्ती है। रावराजा प्रतापसिंह शाहपुरा (मेवाड़) में विवाहे गये थे। पुरोहित रामनाथ ने जो प्रधान कामदार थे, विवाह के बढ़े हुये खर्चे को वहन करने से प्रायः इन्कार कर दिया था ऐसी अवस्था में धन राशि सेठ किशनदास गनेड़ीवाला से उधार ली गयी थी। साथ मे चुकाने की विधि का भी ब्यौरा है।

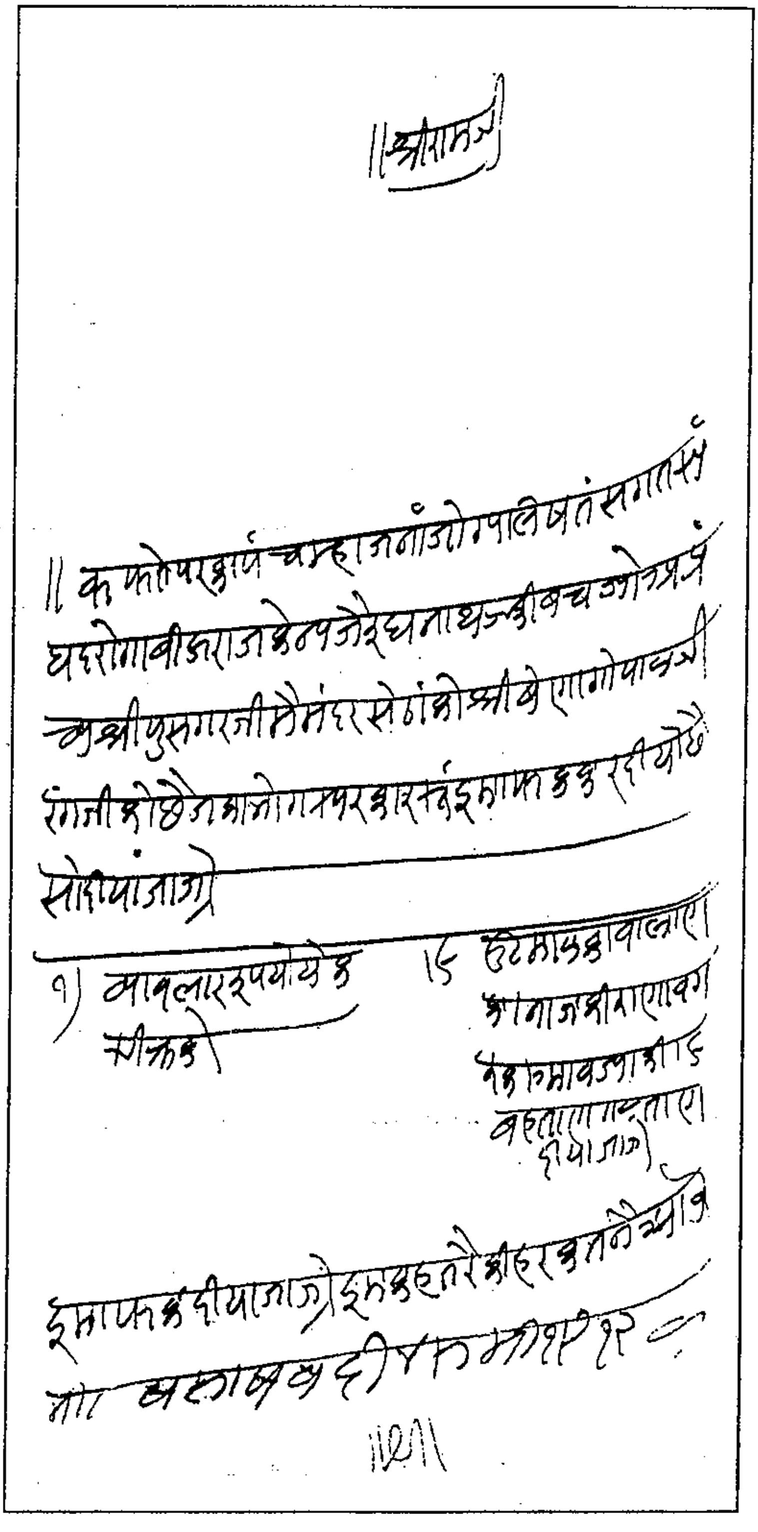

॥श्रीरामजी
लि॰ मु॰ ब सरू

श्रीराम जी

लि. मु. ब. सरू

सेठ जी श्री पूर्णमल जी श्री किशन दास जी जोग लिखायतं महाराव राजा जी श्री राम प्रताप सिंह जी (सीकर नरेश) केन जय रघुनाथ जी की बंचज्यो। अपरंच ब्याव (शादी) की लेन-देन गुमानीराम आसंगी छी (स्वीकार) सो ब तो बखत के बखत जवाब दियो जदही म्हें थाने बुलायर (बुलाकर) ब्याह को सरनजाम (प्रबन्ध) लेयर सरु कियो सो थे जमा खातरी सूं ब्याह मैं सरनजाम देयो। थाकी रकम ब्याह सीगे (वास्ते) उठसी। जीती मैं बोलया मुजब नूयूतो परगना उगर (वगैरा) व उधारा व और पैदा होय सो साबिक (सब) थांके जमा कराये देस्या। चुकतनाय (बिना चूक के) थांकी रकम बेसाख सुदी पुन्यू (5) पहला पाड़ देस्या। (दे देंगे) अमें कं तर की हरकत आवेनहीं – रकम पाड़वा में व थांकी बात मैं कह रीत की भी हरकत आवे तो महाने श्री गोपीनाथ जी की श्री भैरूं जी की सौगन्ध। आज का बखत की खैर खवायी सदैव मैं जाणों रह सूं। और गैल की रकम थांकी बाकी छ सो पट सी सो तो पटसी अर (और) बाकी रहसी सो हरि (फसल रबी) मैं पाड़ देस्या (दे देंगे) चुकता जमा खातरी सूं दयो। मिती माह बदी छठ (6) सम्वत् 1897 (सन् 1840)

सार : यह पत्र सीकर के रावराजा रामप्रताप ने सेठ किशनदास को लिखा है। पत्र में उल्लेख है कि शादी का खर्च वहन करने की बात पहले सेठ गुमानीराम ने स्वीकार की थी पर ठीक समय पर इन्होंने इन्कार कर दिया। लिखा है कि अब विवाह की सारी व्यवस्था आप करें। आपका रुपया शीघ्र चुका दिया जावेगा। गोपीनाथजी की शपथ भी खायी गयी है।



श्री राम जी

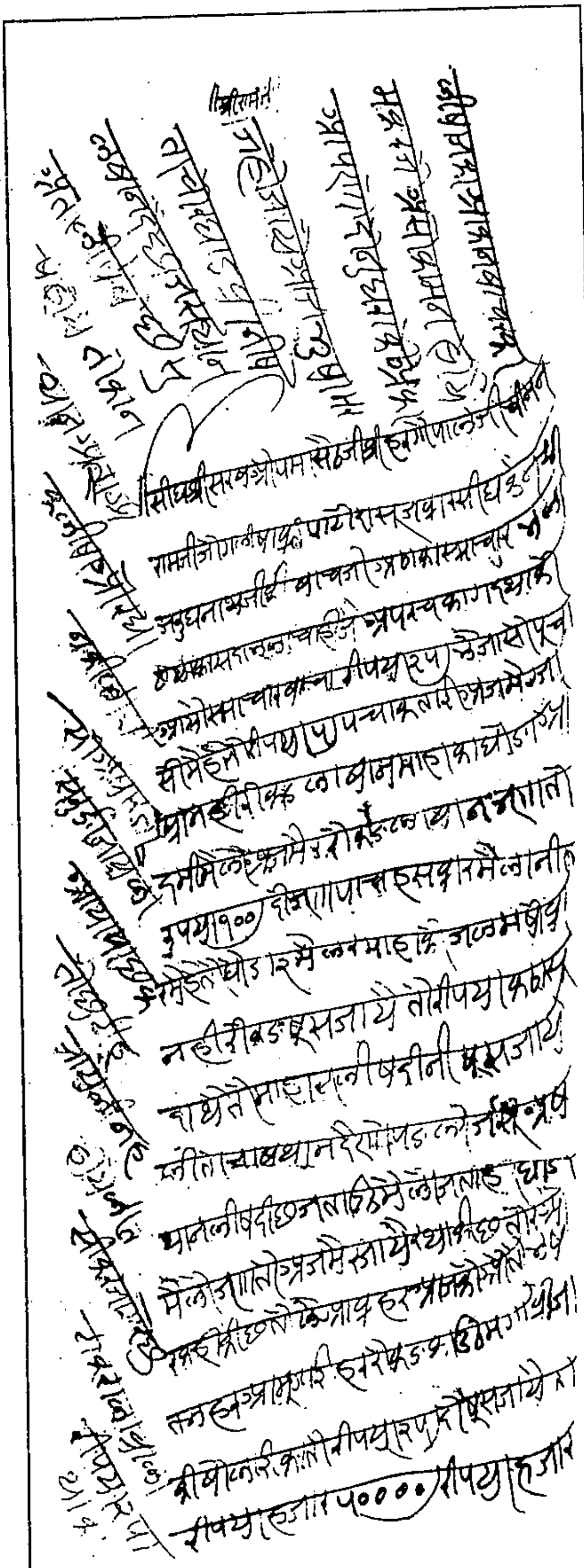
कैफियत फतेहपुर का पंच महाजनाजोग लिखतम् "सकत सिंह" दरोगा बीजराज केन जय रघुनाथ जी की बंचज्यो। अपरंच श्री पुष्कर जी में मन्दिर सेठा को श्री बेणो गोपाल जी रंग जी को छै, जैंका भोग सरकार सूं ई माफक कर दीयो छै, सो दिया जाजो।

1. ब्यावलार रुपया एक सीकर को,
2. 19 ऊंट माल का वा लाने का नाज किराना वगैरा का आवे जैंकी उन्नीस- बह ताण-गव ताण दिया जाजो।

ई माफक दियां जाजो, ई म कई तरह की हरकत न आव।

मिति बैसाख बदीचौथ (4) सम्वत् 1912 (सन् 1855)

सार : इस पत्र में जो फतेहपुर के पंच महाजनों को सीकर के कामदार बींजराज ने लिखा है सूचित किया गया है कि गनेड़ीवाला सेठों का जो मन्दिर पुष्कर में है उसके लिये कर उगाहना है। वह कर मन्दिर के रख रखाव हेतु है। स्मरण रहे सेठों ने पुष्कर में एक बड़ा मन्दिर रंगजी का बनाया था।



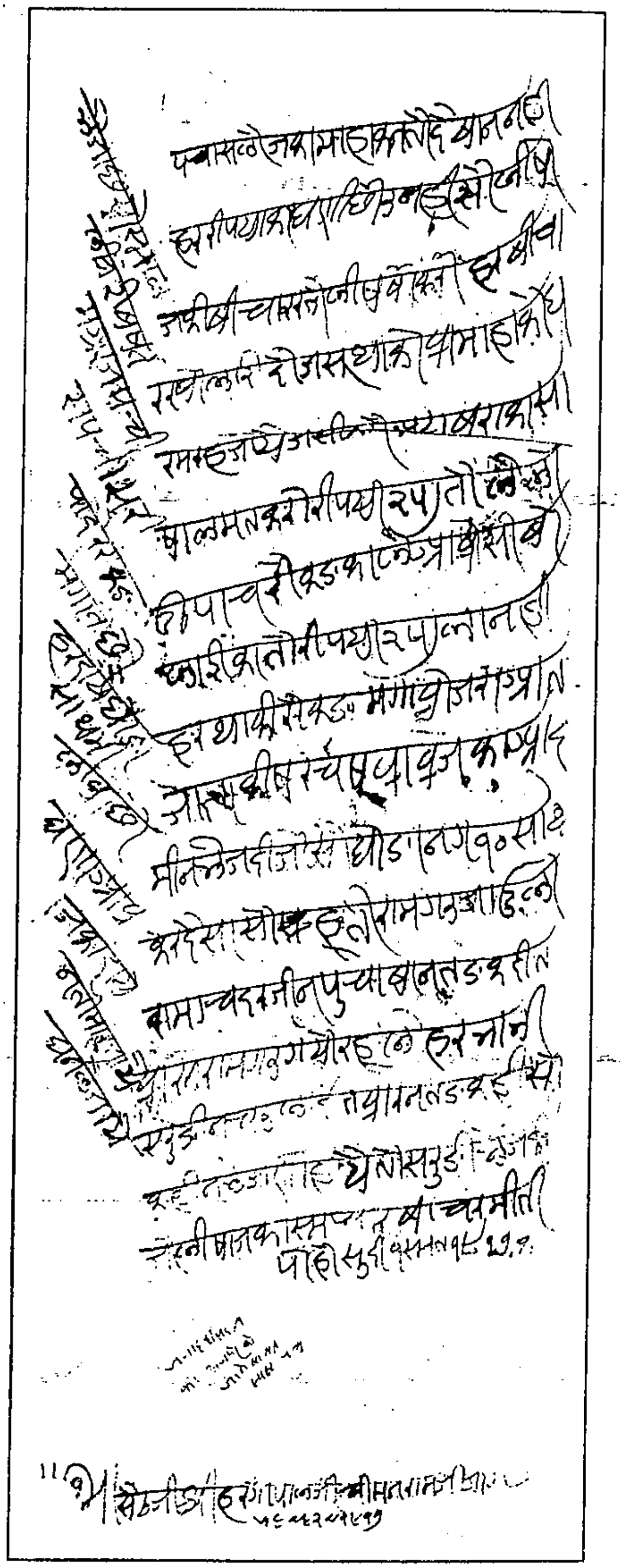
श्री राम जी

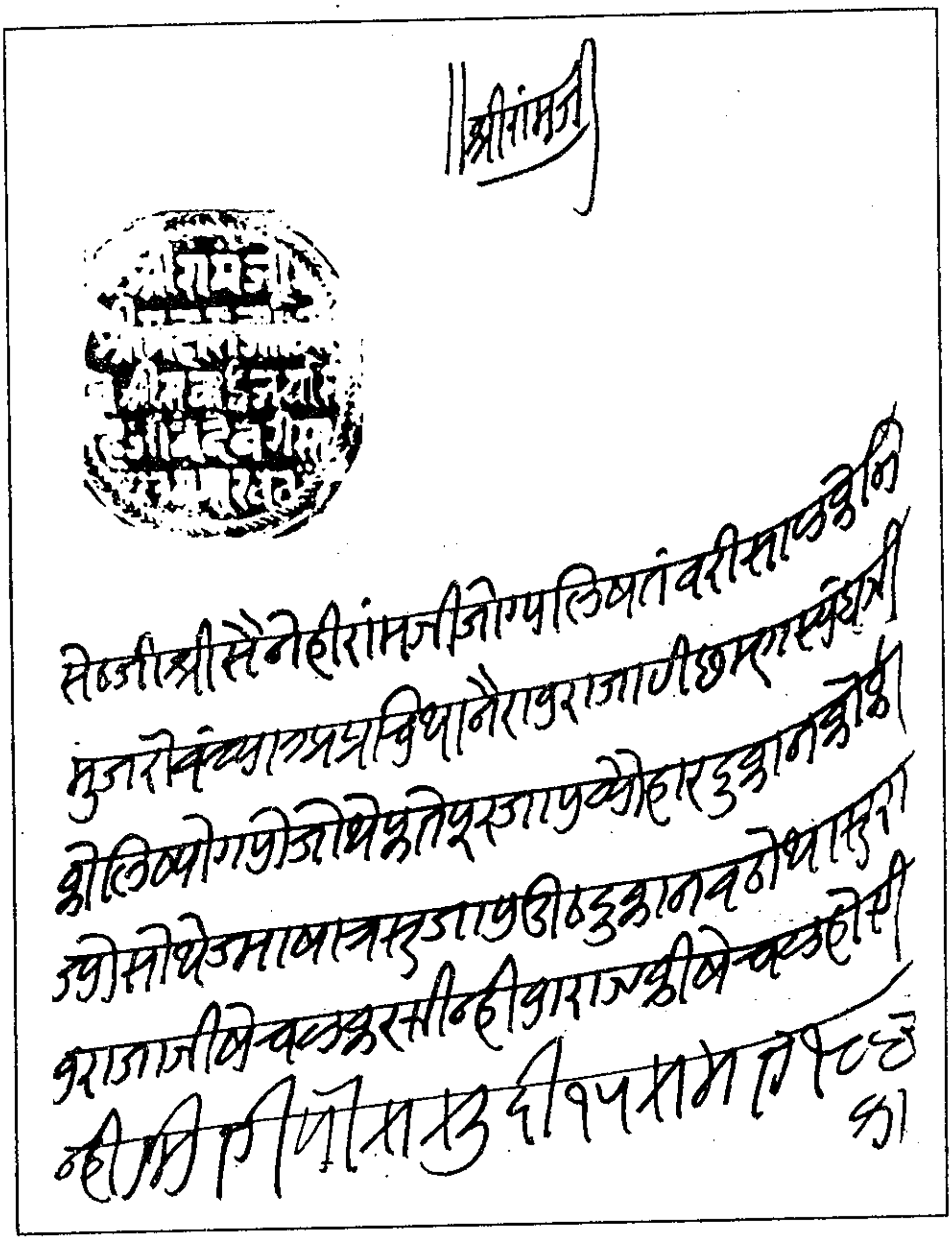
सिद्ध श्री सरवोपमा सेठ जी श्री हर गोपाल जी चीमन राम जी जोग लिखी पाटोदा सूं जवाहर सिंह केन जय श्री रघुनाथ जी की बांचज्यो। अठां का समाचार भला छ। थांका सदा भला चाहिजे छ। अपरंच कागज थांको आयो - समाचार बांचा - रुपया 25/- पच्चीस भेज्या सो पहुंचा - सो मेहतो रुपया 5/- कतांई अजमेर जांवा नहीं - रोकड़ ल्याबा में म्हाका घोड़ा और आदमी ले अजमेर रोकड़ ल्याबा ने जावां तो रुपया 100/- सो दयो जणा 5 पांच असवार में लाणी पड़े और घोड़ा दोय में लेकर म्हाको जन्म खोवां नहीं। रोकड़ खुश (छिन जाये) जाये तो रुपया कठा सूं दयां। थे तो म्हाने लिख दिनी खुश जावे ली तो सब थांने देणी पड़ेली। जिसूं अब थाने लिख दी छ जत्ता ऊंट मेलो (भेजो) जत्ता ही घोड़ा मेलो जणा तो अजमेर जायर (जाकर) थांकी छ अर और कोई की छ तो लेयावां। आज को ओतो बखत है अर रोकड़ उठे मंगावा जंकी बोलारी (एवजाना) का तो रुपया 25/- पच्चीस दयो - खुश जाये तो रुपया 50,000/- पचास हजार लयो जंका म्हारे कने तो देबयान नहीं। हर (और) रुपया का धणी छो र लिखो जकी विचार करो तो लिखबो करो अर बिचार करो जिसूं थांको व म्हाको धर्म रह जाये - जसी करो। अ टांबरा का सा ख्याल मत करो। रुपया 25/- पच्चीस तो लेल्यां उठे पांच

रोकड़ ले आयां - बोलारी का तो रुपया 25/- पच्चीस म्हाने मिले और थांकी रोकड़ मंगाओ जणा आंता-जांता को खर्च सिवाय जींका आदमी ने भेज दीज्यो सो घोड़ा नग 10 साथ कर देसां। सो मेहतो रामगढ़ जाऊं ला। रामचन्द्र जी ने पहुंचावा ने तड़के (कल) दीतवार न रामगढ़ गयो रहुला। हर भाभी सरूडी ने चदूं ला। इतवार ने तड़के ही - सो कहीं न भेजणी होय तो सरूडी भेज दीज्यो। और लिखा जंका समाचार बांच्या। मिति पोष सुदी एकम् सम्वत् 1917 (सन् 1860)

लिखा जंका ने बांच कर काम करज्यो। असो काम न होय आपणु दोनों घरा का अकारज हो जाये। आज भूखा मरता चोर धाड़वी निकलबा देवे नहीं- जसूं थाने अतना लिखा छ सो सुख होय तो क्या न थाने अता आंक लिखां और धान की लिखी सो अबार तो सरूडी जावां ला - आयां पांछे कतो छुट्टी हो जायेगी - नहीं होयली तो सीकर जायर छुट्टी करागां।

सार : यह पत्र जवाहर सिंह ने सेठ चिमनराम को लिखा है। इसमें उल्लेख है कि अजमेर से रोकड़ लाने का काम 25 रुपयों में हम नहीं करेंगे। आज लूटपाट का जमाना है अगर रोकड़ लूट ली जावे तो हम कहाँ से दें? आप 100 रुपये दो जब तो घोड़े दस साथ कर देंगे।

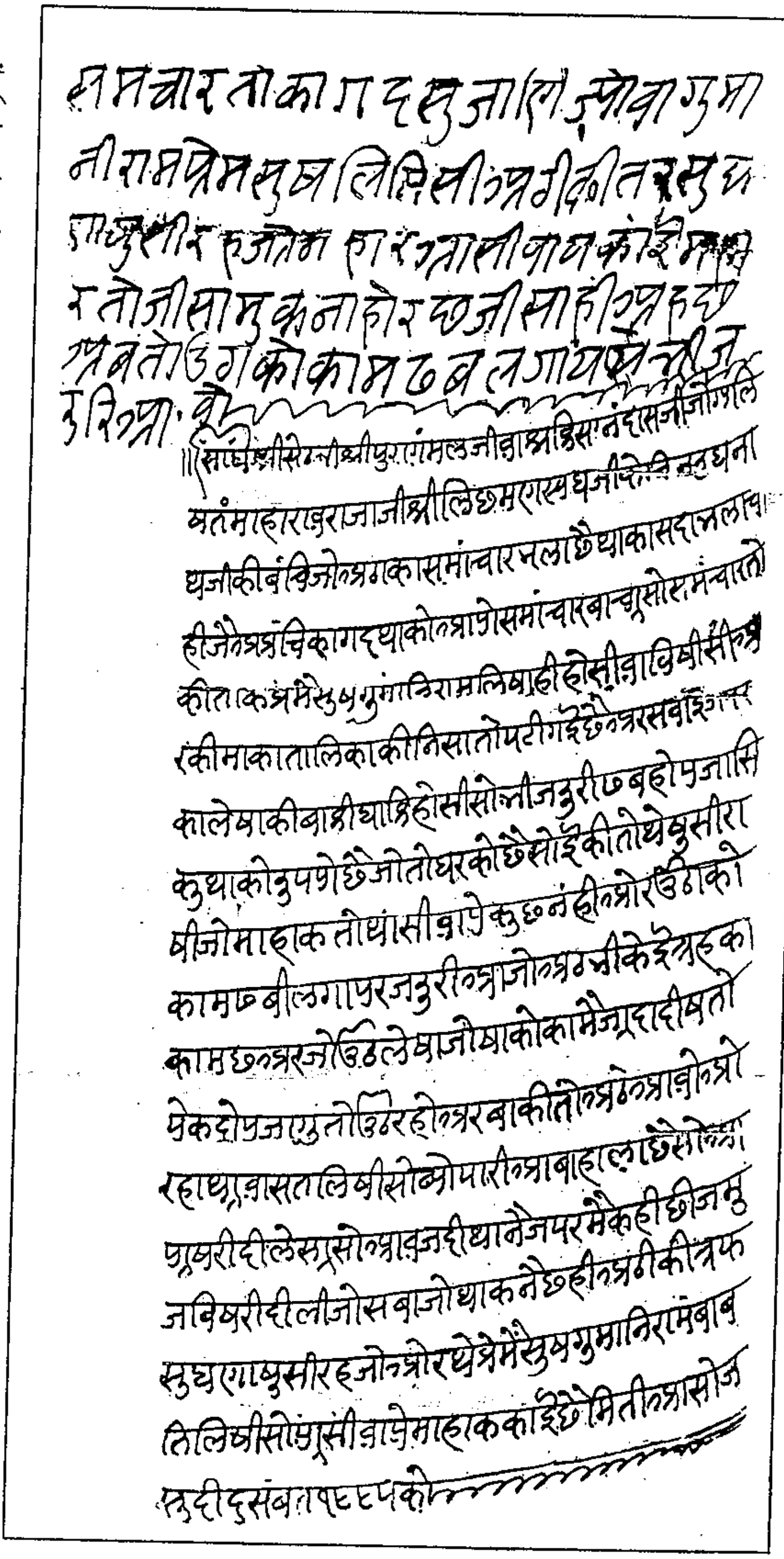




श्री राम जी

सेठ जी श्री सनेहीराम जी जोग लिखतम् बरिसाल (महाराज जयपुर के प्रधानमन्त्री) केन मुजरो बंचज्यो। अपरंच थाने राव राजा लक्ष्मण जी को लिखो गयो। जो थे फतेहपुर जाए ब्योहार, दुकान, कोठी, कीज्यो सो थे जमा खातर सूं जाये उठे दुकान व कोठी थासूं राव राजा जी खेचल करसी नहीं व राज की खेचल होसी नहीं। मिति पोष सुदी पुन्यू (15) सम्वत् 1862 (सन् 1805)

सार : यह पत्र जयपुर के दीवान राव बैरीसाल का है। इसमें सेठ सनेहीरामजी को आश्वस्त किया गया है कि वे आश्वस्त होकर फतेहपुर में व्यापार-व्यवसाय शुरु करें।



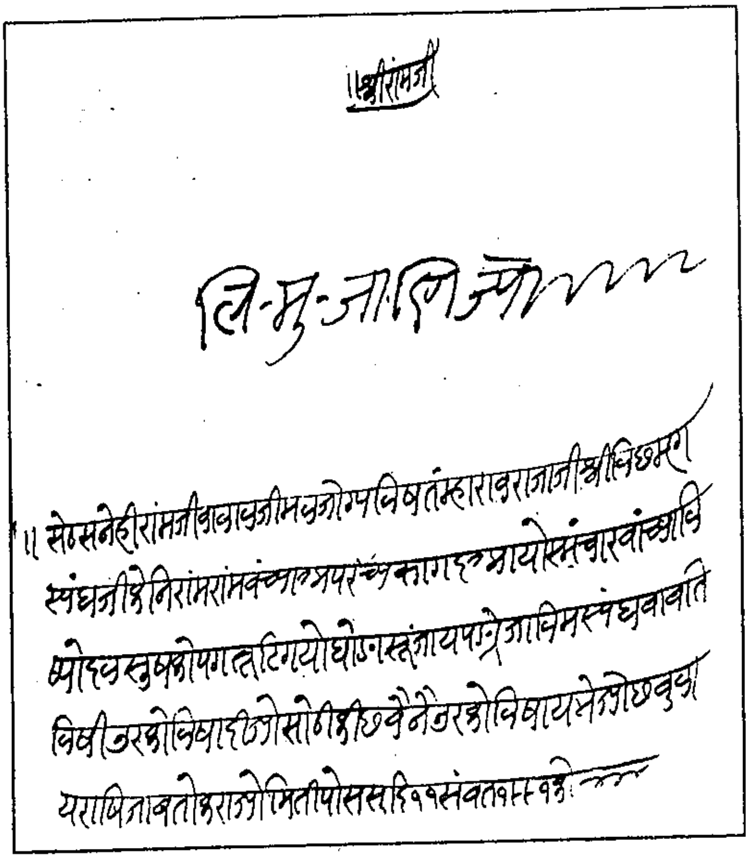
श्री राम जी

समाचार तो कागद सूं जाणिज्यो व गुमानी राम प्रेमसुख जी लिखी सो अठे की तरफ सूं घणा खुशी रीज्यो। म्हारे आ सिवाय काई छ, और महारे तो जिसा मुकना होर छ जिसा ही अछ, अब तो उठा को काम ढब लगाये थे भी जरूरी आज्यो।

सिद्ध श्री सेठ जी श्री पूर्णमल जी व श्री किशन दास जी जोग लिखातम महाराव राजा जी श्री लक्ष्मण सिंह जी केन जय रघुनाथ जी की बांचज्यो। अठा का समाचार भला छ, थांका सदा भला चाहिजे। अपरंच कागज थांको आयो समाचार बांचा सो समाचार तो किताक प्रेम सुख जी गुमानीराम लिखा होई सी। और म्हाका तालिका की निशा तो पट गई छ और सवाई जयपुर का लेखा की बाकी थाकी होय सी सो भी जरूरी ढब होय जासी। क्यूं थांको रूपयो छ जो तो घर को छ, सो ईकीं तो थे खुशी राखी ज्यो। म्हाके तो था सिवाय कुछ नहीं और उठा को काम ढबी लगायर जरूरी आज्यो। अठे भी कई तरह का काम छ। अर जो उठे लेखा जोखा का काम ज्यादा दीखेतो एक दोय जनों तो उठे रहो अर बाकी तो अठे आओ।

और हाथया (हाथी) वास्ते लिखी सो बोपारी (व्यापारी) आबा हाला छ सो आंया खरीद लेस्यां। सो आव जदी थान जयपुर में कही थी ज मुजबी खरीद लीज्यो सबाजो थाकने छही अठे की तरफ सूं घणा खुशी रहज्यो और थे प्रेमसुख गुमानी राम बाबत लिखी सो आ सिवाय म्हाके काई छ। मिति आसोज सुदी छठ (6) सम्वत् 1885 (सन् 1828)

सार : यह पत्र सेठ किशनदास को रावराजा लक्ष्मणसिंह ने भेजा है। पत्र में लिखा है कि हमारे तालिके की निशा पट गयी है (चुकारा किया जा चुका है)। आपका रुपया हमारे घर का रुपया ही है। प्रेमसुख, गुमानीराम मेरे लड़के मुकन्द की तरह ही है। पत्र से रावराजा के अपनत्व की भावना प्रकट होती है। पत्र के प्रारम्भ की चार पंक्तियाँ स्वयं रावराजा ने अपने हाथ से लिखी हैं।

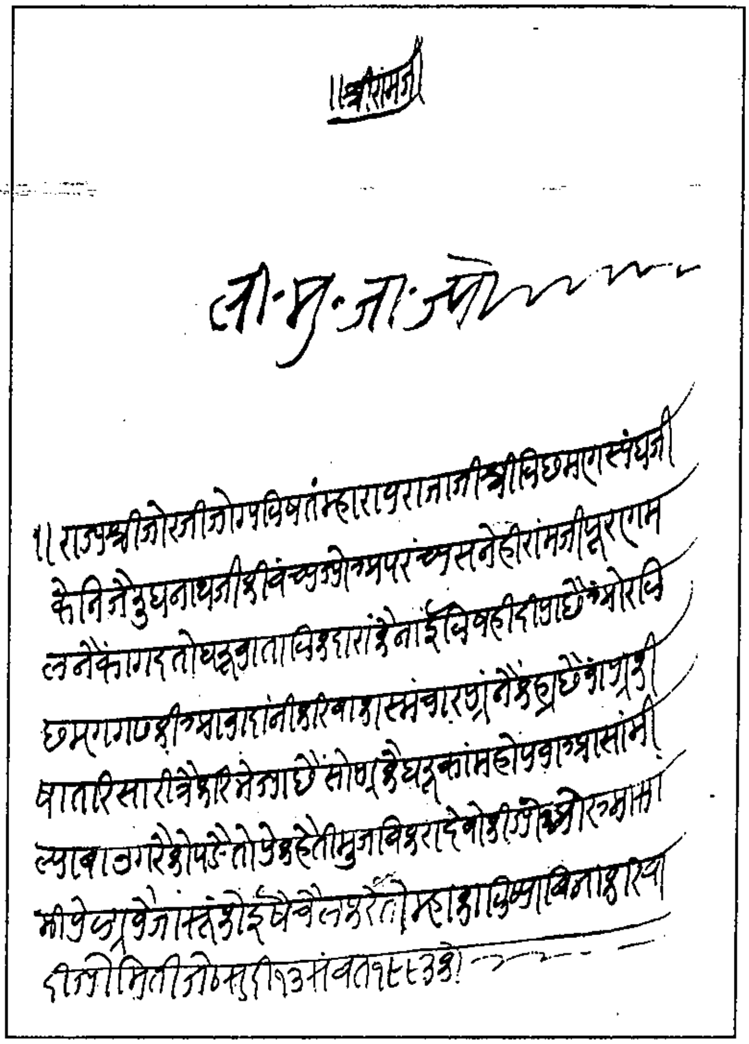


श्री राम जी

लि. मु. जाणिज्यो।

सेठ सनेही राम जी व लाल जी मल जोग लिखतम महाराव राजा जी श्री लक्ष्मण सिंह जी केन राम-राम बंचज्यो। अपरंच कागद आयो समाचार बांचा लिखो दल सुख को पग टूट गयो। घोड़ा सूं जाय पड़ो। जालिम सिंह बाबत लिखी उरको (पत्र) लिखा दीज्यो सो ठीक छ, बेने उरको लिखाये भेजो छ, बुलाये राखी जापतो कराज्यो। मिति पोष सुदी 11 सम्वत् 1887 (सन् 1830)

सार : यह पत्र सेठ सनेही राम जी के नाम रावराजा श्री लक्ष्मणसिंहजी का है। दिलसुख (सनेहीरामजी के पुत्र) का घोड़े से गिरने से पैर टूट गया था उसका उल्लेख पत्र में है। इससे सीकर ठिकाने की सेठों से अपनत्व की बात ज्ञात होती है।

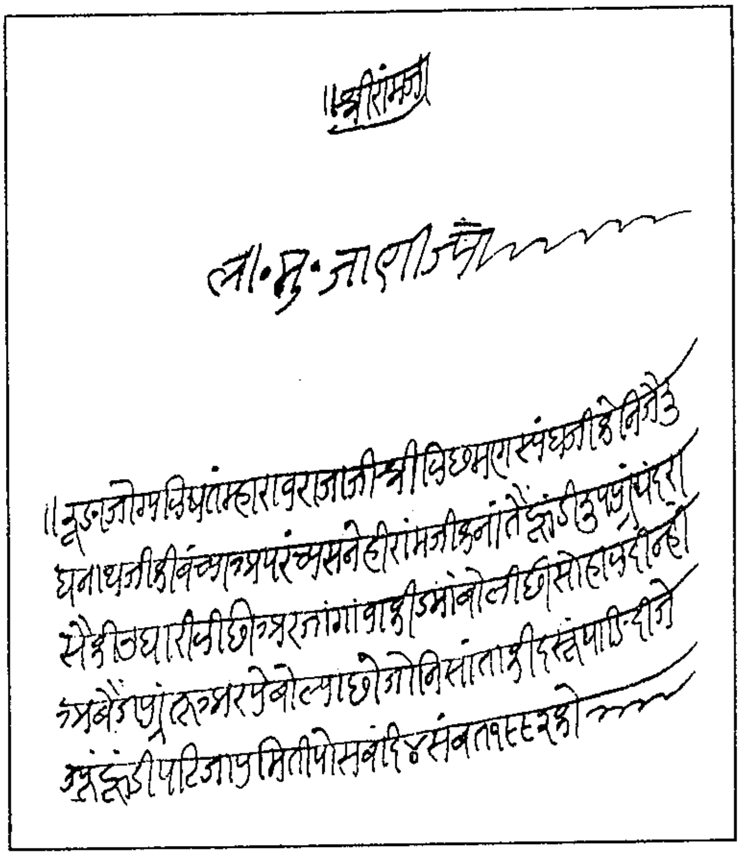


श्री राम जी

ली. मु. जाणिज्यो।

राज श्री जोर जी जोग लिखतम् महाराज राजा लक्ष्मण सिंह जी (सीकर नरेश) केन जय रघुनाथ जी की बांचज्यो। अपरंच सनेहीराम पूरण मलजी न कागद तो घंरु बा तालिकदारा के नाम लिख ही दियो छ। और लक्ष्मणगढ़ की आबादानी करबा का समाचार आने (इनको) कहया छ। सो यांकी खातरी सारी तरह कर भेज्या छ। सो यांके घंरु काम होवे व आसामी ल्याबा बगैरा का पडे तो ये कहंती मुजब करा दिज्यो। और आसामी ये लावे जासूं कोई खेचल करे तो महाका लिखा बना न करबा दीज्यो। मिति ज्येठ सुदी 13 (तेरस) सम्वत् 1883 (सन् 1826)

सार : यह पत्र रावराजा लक्ष्मण सिंह का तालुकदार के नाम है। इसमें लिखा है कि सेठ सनेहीराम को लक्ष्मणगढ़ को बसाने की बात कही गयी है सो इनके कोई घरेलु काम पड़े तो मुस्तेदी से करा देना।



श्री राम जी

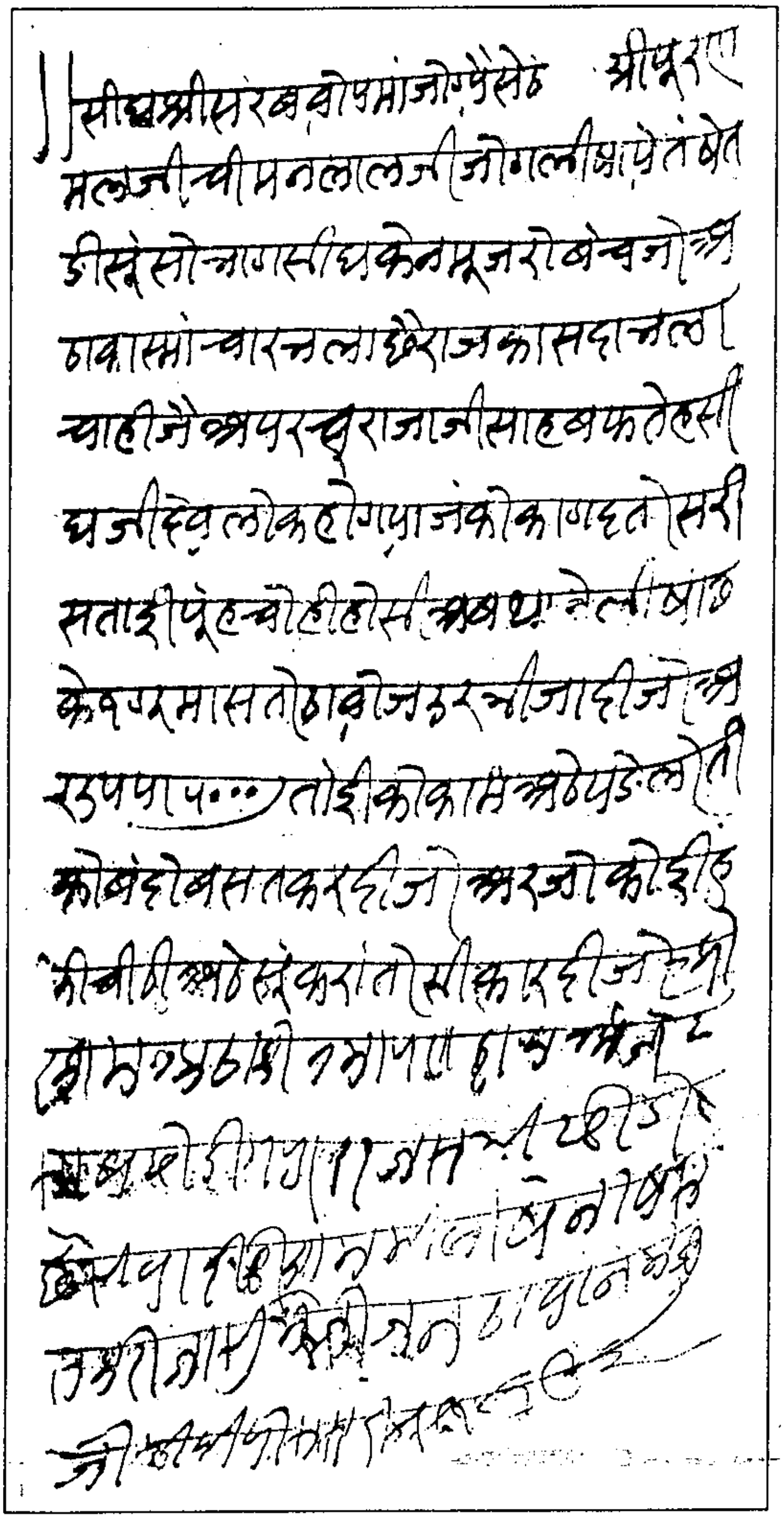
ली. मु. जाणिज्यो।

रूड़ा (कार्यकर्ता का नाम) जोग लिखतम् महाराव राजा श्री लक्ष्मण सिंह जी केन जय रघुनाथ जी की बंचज्यो। अपरंच सनेही राम जी कना से हुन्डी रुपया (1500) पन्द्रहा सो की उधारी ली छी। और जो गांवा की जमा बोली छी सो हाल दी नहीं। अब जेयां ये बोल्या छ जो नीसा (रकम) ताकीद सूं पाड़ि दीज्यो। जयूं हुन्डी पट जाये मिति पोष बदी 4 (चौथ) सम्वत् 1882 (सन् 1825)

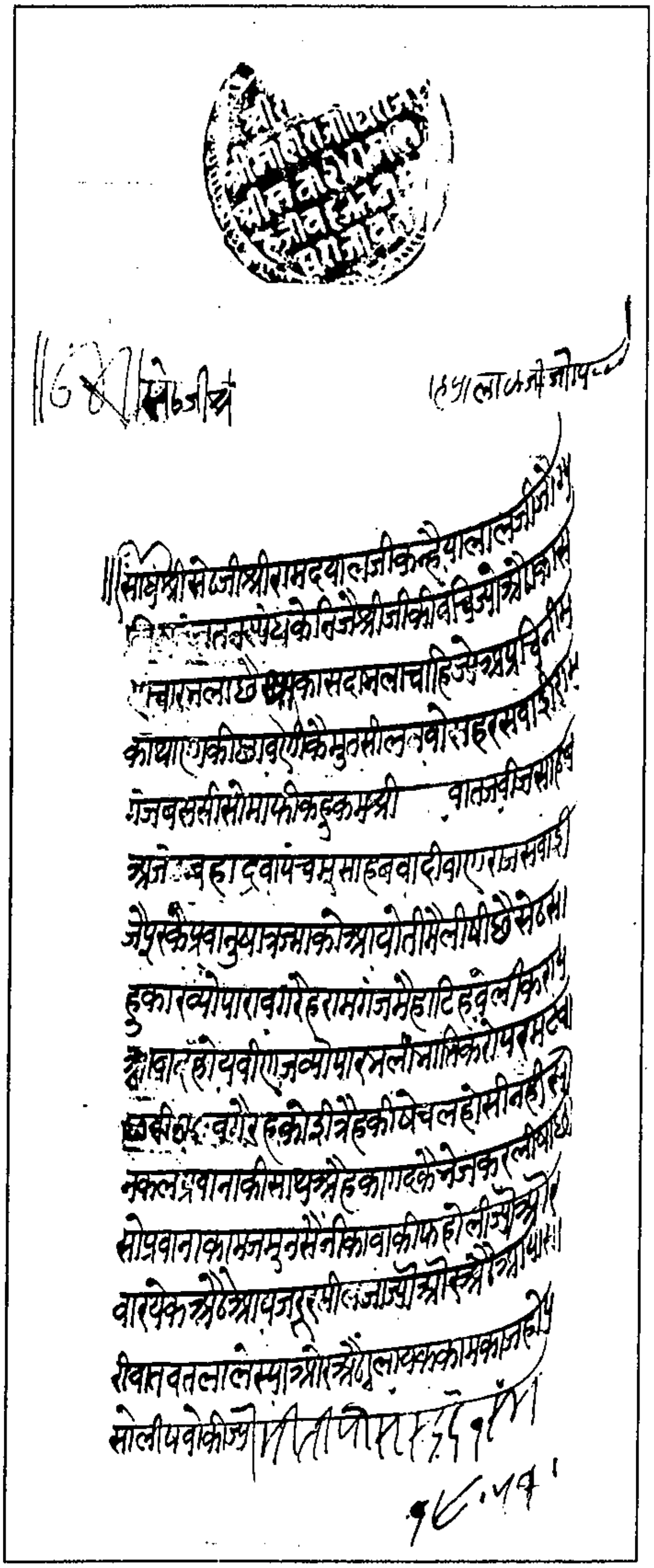
सार : महरावराजा जी लक्ष्मणसिंह जी का यह पत्र अपने कर्मचारी रुड़े के नाम है। सनेहीरामजी को हुंडी के रुपये चुका देने की बात कही गयी है।

श्री राम जी

सिद्ध श्री सरवोपमा जोग सेठ जी श्री पूरणमल जी चिमनलाल जी जोग लिखायतम खेतड़ी सूं शोभागसिंह केन मुजरों बंचज्यो। अठा का समाचार भला छ, राज का सदा भला चाहिजे। अपरंच राजा जी साहब फतेहसिंह जी देवलोक हो गया ज्याकों कागद तो सरस्ता ही पुच्यों होसी। अब थाने लिखा छा क एक गुमास्तो ठायो जरूर भीजा दीज्यो,। हर रूपया 5000/- पांच हजार तांयी को काम अठ पड़ेलो सो ईकों बन्दोबस्त कर दीज्यो। और जो कोई हुन्डी चीटठी अठे से करां तो शिकार दीज्यों और काम अठां को आपण ही हाथ एजेन्ट साहब छोड़ गया छ। राज से भी छोड़यो छ, सिवाय को काम बन्दोबस्त करो जासी सो मोजिज ठाया न भेज ज्यो। मिति पोह सुदी चौथ (4) सम्वत् 1927 (सन् 1870)



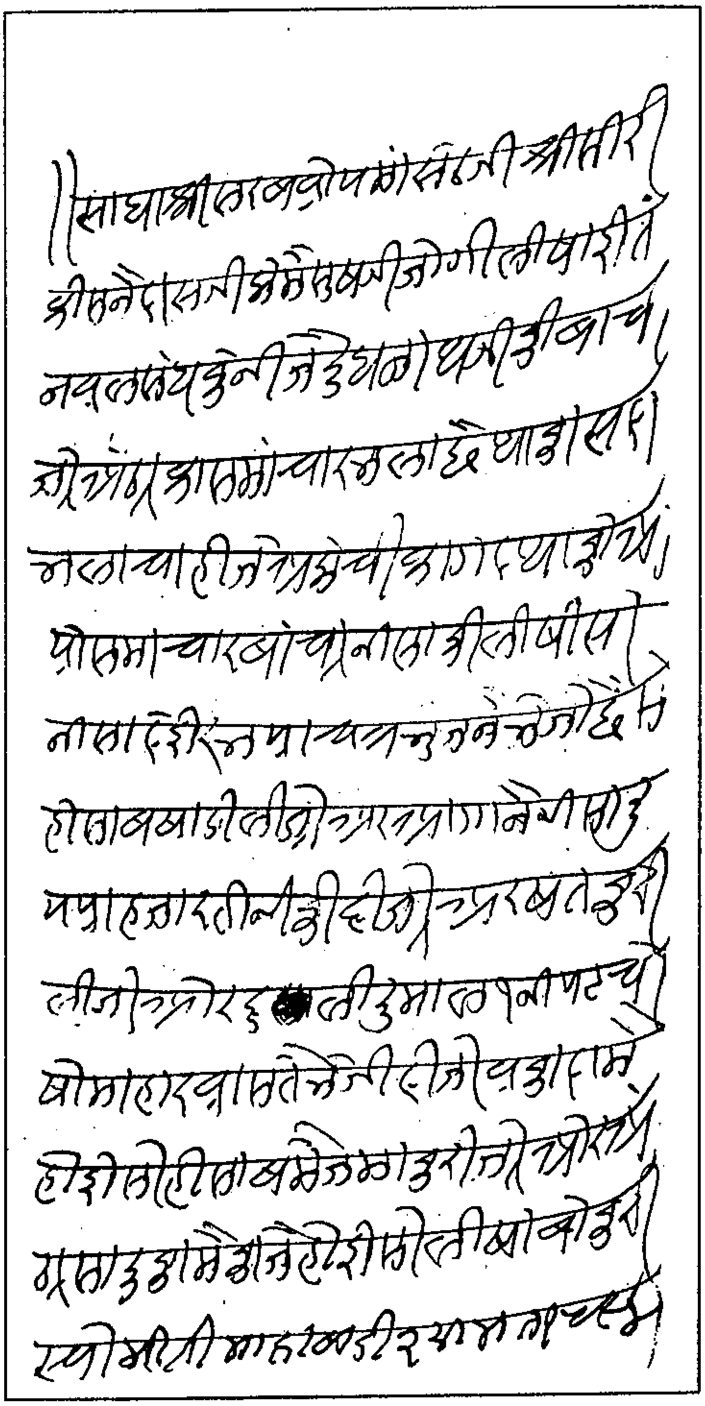
सार : यह पत्र खेतड़ी के कामदार सौभागसिंह ने सेठ चिमनराम को लिखा है। पत्र में राजा फतेहसिंह की मृत्यु की सूचना देते हुये 5 हजार रुपये भेजने एवं भविष्य में हुंडी सिकारते रहने की बात कही गयी है।



श्री राम जी

सिद्ध श्री सेठ जी राम दयाल जी कन्हैया लाल जी जोग लिखतम् जतन सिंह केन जय श्री जी की बांचज्यो। अठां का समाचार भला छ, थांका सदा भला चाहिजे। अपरंच नीम का थाणा की छावनी के मुत्तसिल हुआ शहर सवाई रामगंज बस सी सो माफिक हुक्म श्री...................................... वा तजवीज साहब एजेन्ट बहादुर व पंच मुसाहब वा दीवाण राज सवाई जयपुर के प्रवानु खातर जमा को आयो तीमे लिखी छ सेठ साहूकार ब्योपार वगेरा रामगंज में हाटी हवेली कराय आबाद होय, बिणज ब्योपार भली - भांति करो .... कोई तरह की खेचड़ होयसी नहीं। सो नक़ल प्रवाना की साथ अहे कागद क भेजकर लिखा छां सो प्रवाना का मजमून से नीका वाकिफ होलीज्यो। और एक बार अठें आयर (आकर) जरूर मिल जाजो, अठे आया सूं सारी बात बतला लेसां और अठे लायक काम काज होय तो लिखबो कीज्यो। मिति पोष सुदी एकम् (1) सम्वत् 1905 (सन् 1848)

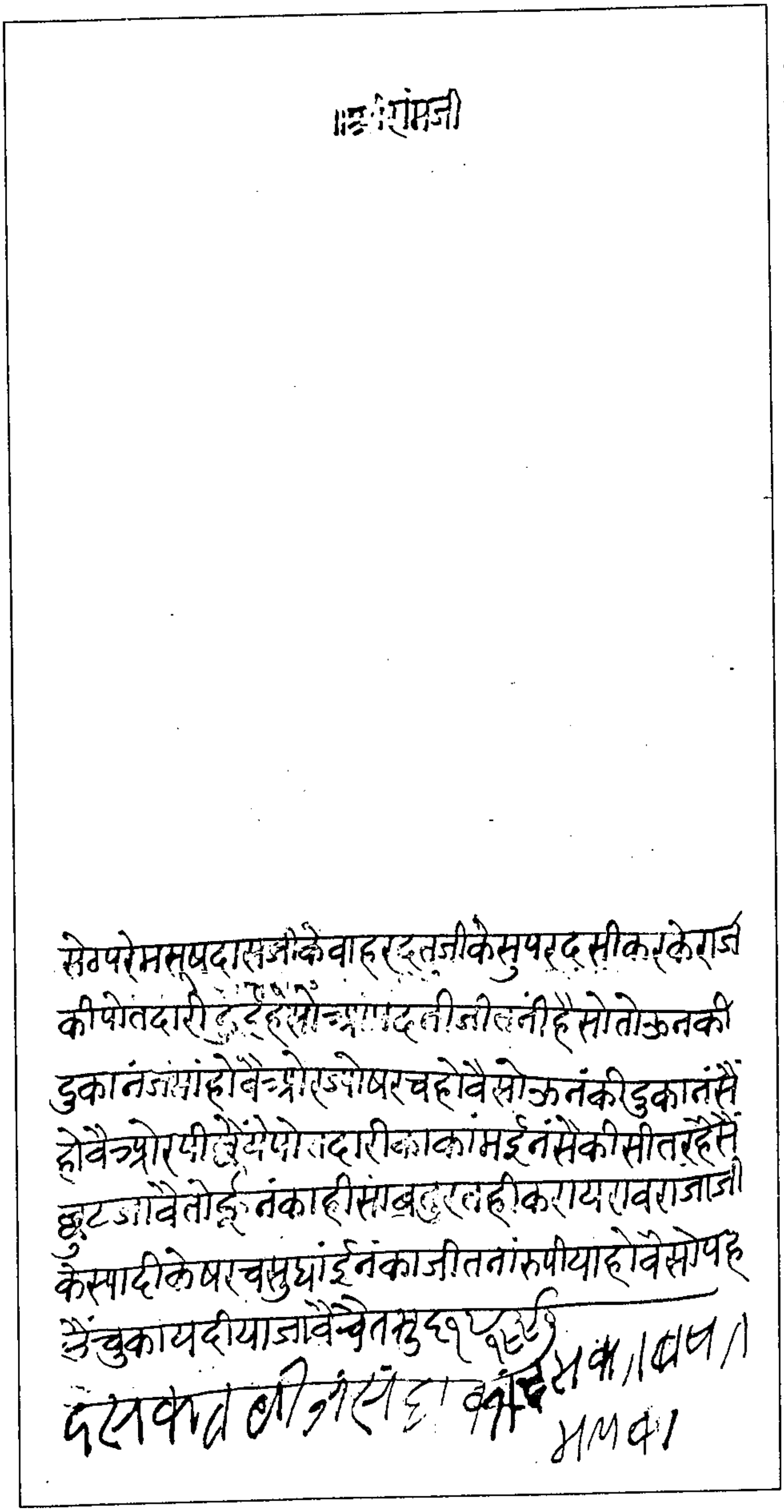
सार : यह पत्र सेठ कन्हैया लाल को जयपुर के अधिकारी जतनसिंह ने लिखा है। पत्र में उन्हें रामगंज मे विणज व्यापार शुरु करने एवं आकर मिल जाने के लिये कहा गया है।



श्री राम जी

सिद्ध श्री सरवोपमा सेठ जी श्री किशन दास जी प्रेमसुख जी जोग लिखायतम् नवलसिंह केन जय रघुनाथ जी की बांचज्यो। अठां का समाचार भला छ, थांका सदा भला चाहिजे छ। अपरंच कागद थांको आयो समाचार बांचा। नीसा की लिखी सो नीसा देकर भैया चतुर्भुज ने भेज्यो छ, सो हिसाब पाड़ लीज्यो और आग न नीसा रूपया हजार तीन की दीज्यो। हर खातो पूरी लीज्यो और हेली रूमाल एक, नीपट (एकदम) चोखो म्हारे वास्ते भेज दीज्यो। बंका दाम होव सो हिसाब म जमा करीज्यो और अठां सारू काम काज होवे स लिखबो करो। मिति माह बदी दूज (2) सम्वत् 1894 (सन् 1837)

सार : यह पत्र नवलसिंह (संभवतः सीकर) ने सेठ प्रेमसुखदास को लिखा है। इसमें पुराना हिसाब चुकता करने व आगे निशा (जामनी) देने की बात कही गयी है।



श्री राम जी

अंग्रेजी में मेजर थरसवी के दसतखत।

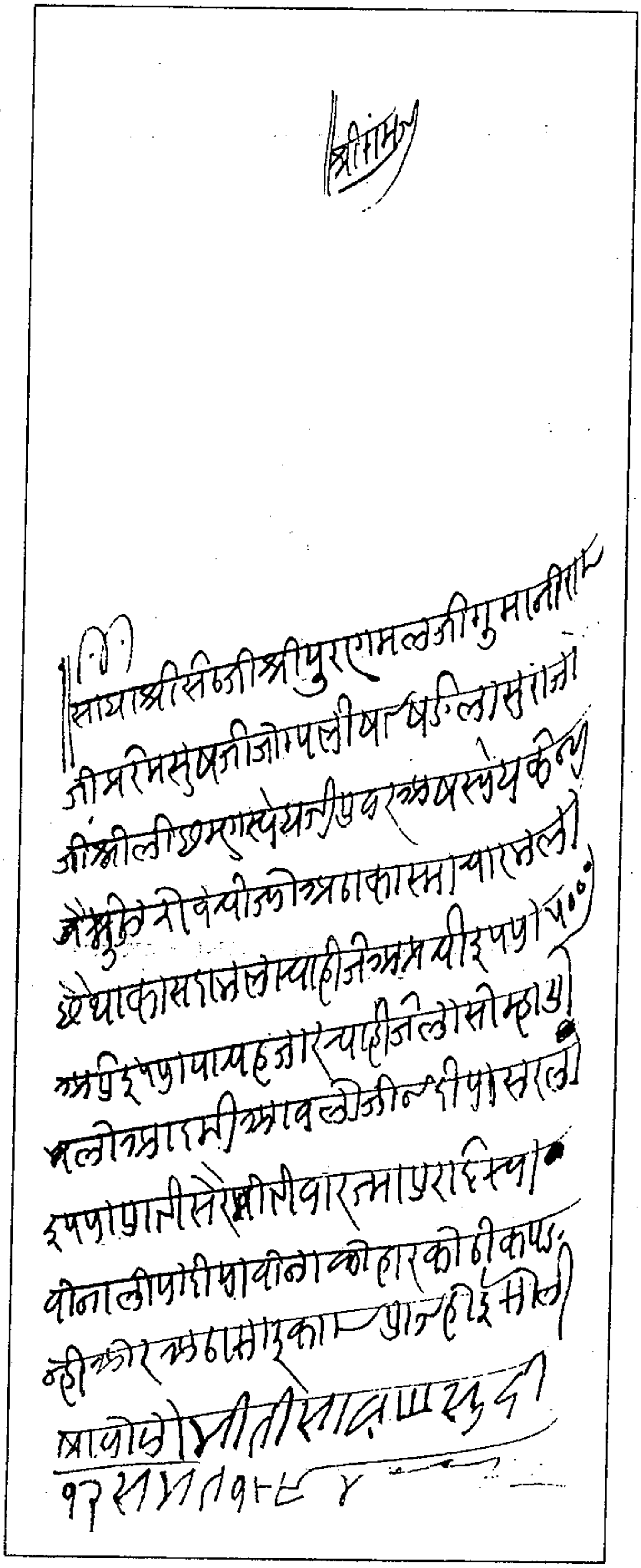
सेठ परेमसुख दास जी व हरदत्त जी के सुपुर्द सीकर के राज की पोतदारी हुई है, सो आमदनी जितनी है सो तो उनकी दुकान जमा होवे। और जो खर्च होवे सो उनकी दुकान से होवे। और पीछे ये पोतदारी का काम इनसे किसी तरह से छूट ज़ावे तो इनका हिसाब तुरन्त ही करायें। राव राजा जी के शादी के खर्चसुदा इनका जितना रुपया होवे सो पहले चुका दिया जावे। चैतसुदी एक सम्वत् 1897 (सन् 1840) दस्तखत विजय सिंह का, दस्तखत भखतमल का।

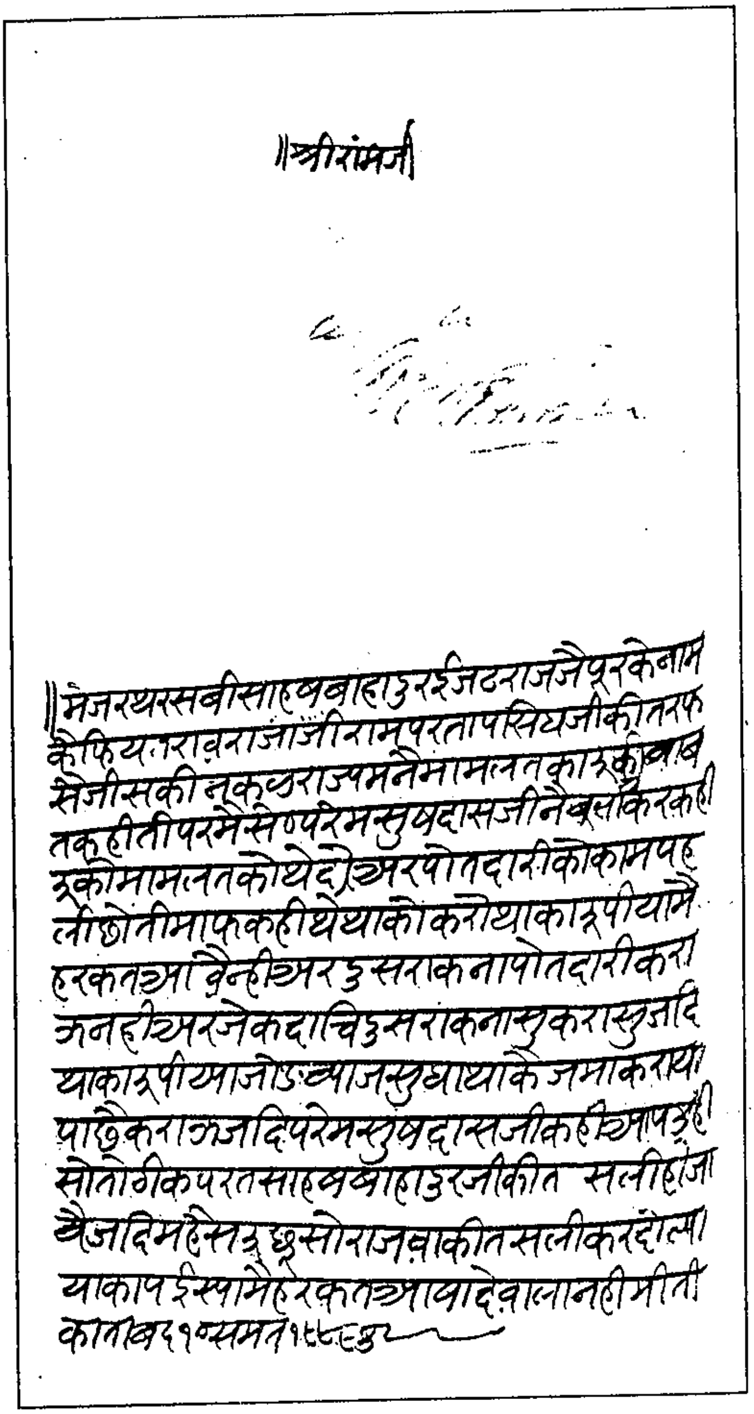
सार : इस पत्र द्वारा सेठ प्रेमसुखदास के पोतदारी सम्हाल लेने की बात ज्ञात होती है। मेजर थरसवी ने रावराजा को आदेश दिया है कि शादी पर खर्च हुये रुपये इनके पहले चुका दिये जावें।

श्री राम जी

सीद्ध श्री सेठ जी श्री पूरणमल जी गुमानीराम जी प्रेमसुख जी जोग लिखायतम् खंड़ेला सूं राजा श्री लक्ष्मण सिंह जी, कुवर अखय सिंह जी केन मुजरो बंचज्यो। अठा का समाचार भला छ, थांका सदा भला चाहिजे। अपरंच रुपया 5000/- अंक पांच हजार चाइजेला, सो म्हांको भलो आदमी आवलो जीन दियां सरलो। रुपया कातीसर (माह कार्तिक तक) मितीवार जमा करां देस्यां। बिना लियां दियां व्यवहार को ठीक पड़ नहीं और अठां सारुं काम काज होव सो लिखवोला, मिति सावण सुदी बारस (12) सम्वत् 1894 (सन् 1837)

सार : यह पत्र सेठ गुमानीराम को खंड़ेला के राजा श्री लक्ष्मण सिंह ने लिखा है। पत्र में 5 हजार रुपया भेजने को लिखा गया है। संभवतः यह पहला संपर्क और लेन देन का व्यवहार है।




॥श्रीरामजी

मेजरथरसवीसाहबबाहादुरएजंटराजजेपुरकेनाम
कैफियतरावराजाजीरामपरतापसिंघजीकीतरफ
सेजीसकीनकलराजमनेमामलतकारुकाबाब
तकहीतीपरमेसेठपरेमसुषदासजीनेबुलाकरकही
रुकोमामलतकोथेदोअरपोतदारीकोकामपह
लीछोतीमाफकहीथेथाकोकरोथाकारुपीयामे
हरकतआवेनहीअरदुसराकनापोतदारीकरा
वनहीअरजेकदाचितदुसराकनाकरासुंजदि
थाकारुपीयाजोडब्याजसुधाथाकेजमाकराया
पाछेकराऊंजदिपरेमसुषदासजीकहीआपकही
सोतोठीकपरतसाहबबाहादुरजीकीतसलीहोजा
वेजदिमहेत्यारछुसोराजबाकीतसलीकरदोला
याकापईस्यामेहरकतआबादेवालानहीमीती
कातीबदि१०समत१८९८

श्री राम जी

अंग्रेजी में थरसवी साहब के दस्तखत।

मेजर थरसवी साहब बहादुर एजेन्ट राज जयपुर के नाम कैफियत राव राजा जी राम प्रताप सिंह जी की तरफ से जिसकी नकल राज मने (मुझे) मामलत (कार्यभार सम्भालने) का रूक्का बाबत कहीं तींपर में सेठ प्रेमसुख दास जी ने बुलाकर कही रूक्को मामलीत को थे दयो अर पोतदारी को काम पहली छो तींमाफिक ही थे थांको करो थांका रूपया में हरकत आवे नहीं, अर दूसरा कैना पोतदारी करावां नही अर जय कदाचित दूसरा कन करा सूं जदे थांका रुपंया जोड ब्याज सुदा थांके जमा करायां पाछे कराऊं। जद प्रेमसुख दासजी कहीं आप कहीं सो तो ठीक परन्तु साहब बहादुर की तसल्ली हो जाव जद मैं सरु छू सो राज बांकी तसल्ली करा दो ला यांका पेसा में हरकत आबा देवागां नहीं। मिति कार्तिक बदी दशम् (10) सम्वत् 1898 (सन् 1841)

सार : यह कैफियत रावराजा रामप्रतापसिंह सीकर की ओर से जयपुर के पोलिटिकल एजेन्ट मेजर थरसवी के नाम है। इसमें कहा गया है कि मैंने सेठ प्रेमसुखदास को पोतदारी का काम करने को कहा है पर वे काम शरु करने के पूर्व आपकी ओर से आश्वासन चाहते हैं। कैफियत की प्रति प्रेमसुखदास जी को भी भेजी गयी है।

जीभी

स्वास्ति श्री सर्व उपमा लायक सेठ राम दयाल जी कनैया लाल जी हर
नन्दन जी जोग लिखतं इस्टवार्ड साहिब तिसनसा हब बहादुर लिखा
~~[illegible]~~

चाहिजे : अप्रैल राम दयाल तुम्हारा नायब का बहोत मुद्द
त तक सरिस्ते में रहा और सरकार की तर्फ से यहाँ सरपंच रहा और
सरकार की खिदमत सब तरह से जी रही लाट साहब जो अब
सरिस्ते में आए थे राम दयाल ने लाट साहब से मुलाकात ना
~~[illegible]~~ का लिहाज
कुरसी पर नहीं आया अब अफसोस है कि राम दयाल यहाँ
से जाने का इरादा रखता है और सरकार जो खिदमत जी
रही है इस बात की आप को खबर देई जाती है और
अफसोस रहा कि लाट साहब की मुलाकात के वास्ते तुम्हा
रे सरिस्ते में नहीं आए लाट साहब बड़े नामी साहूकारों से कि
जैसे तुम हो मुलाकात करना चाहते थे और सेठ गुमानी
राम जी ने पहले यहाँ कोठी डाली थी अब दो तीन
साल से कार कोठी का कम है अब तुम को चाहिये
कि अच्छी तरह यहाँ की कोठी का कारबार और लेन
देन जारी करो यहाँ की तुम्हारी कोठी के कारबार बढ़ने
से बहोत नामवरी तुम्हारी होगी आप के मिजाज की
खुशी की खबर लिखा कीजिये तारीख ४ जुलाई सन्
१८५२ ईसवी

[signature]
July 4 1852

श्री राम जी

स्वस्ति श्री सर्व ऊपमा लायक सेठ रामदयाल जी कन्हैयालाल जी हरभजन जी जोग मिस्टर एडवर्ड बिंसन साहब बहादुर लिखायतम् सलाम बाचजो अठा का समाचार भला छ थाका सदा भला चाहिजे अपरंच राम दयाल गुमास्ता आपका बहुत मुद्दत हुआ सिरसा में रहा और सरकार की तरफ से यहां सरपंच रहा और सरकार भी उससे सब तरह राजी रही लाट साहब जो अब सिरसा में आये थे रामदयाल ने लाट साहब सु मुलाकात हासिल करी और लाट साहब उससे बहुत राजी रहे कुरसी पर बठाया अब अफसोस है कि रामदयाल यहाँ से जाने का इरादा रखते हैं और सरकार जो विससे राजी रही है। इस बात की आपको खबर देई जाती है और अफसोस रहा कि लाट साहब की मुलाकात के वास्ते तुम सिरसा में नहीं आये लाट साहब बड़े नामी साहुकारों से कि जैसे तुम हो मुलाकात करना चाहते थे और सेठ गुमानीराम जी ने पहले यहाँ कोठी डाली थी अब दो तीन साल से कार कोठी का कम है। अब तुम को चाहिये कि अच्छी तरह यहाँ की कोठी का कारबार और तिजारत जारी करो यहाँ की तुम्हारी कोठी के कारबार बढ़ने से बहुत नाम वरी तुम्हारी होगी आपके मिजाज की खुशी की खबर लिखावोगे तारीख 4 फरवरी सन् 1852 ईसवी

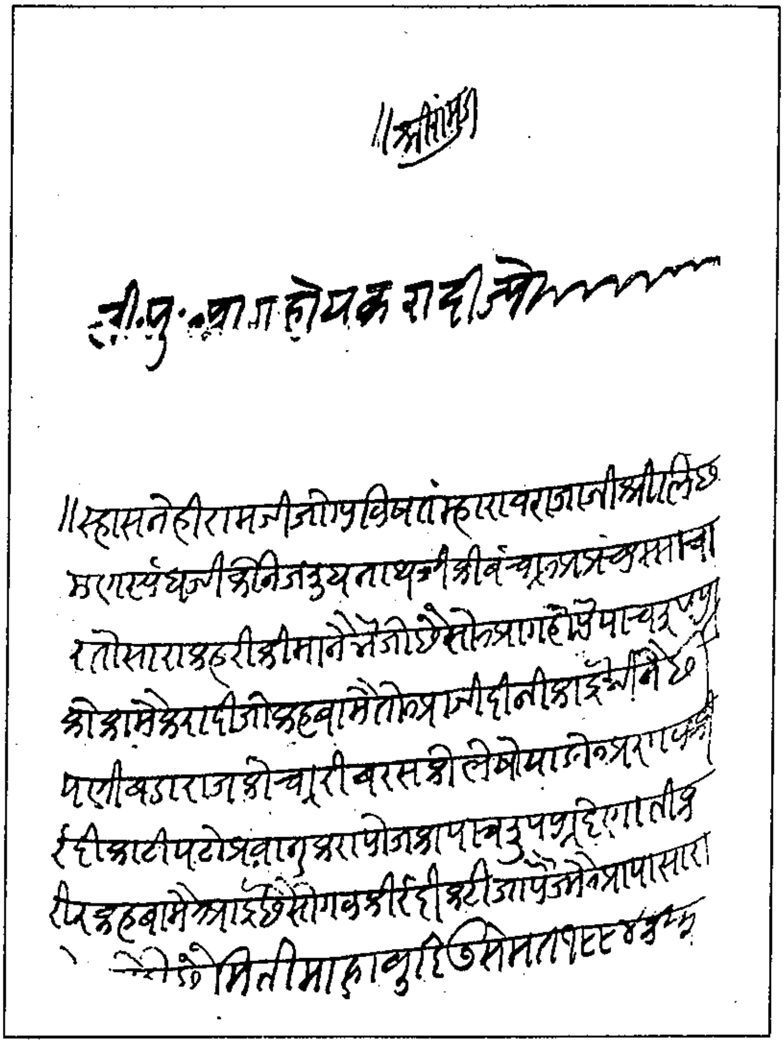
अंग्रेजी में दस्खत
May 4, 1852

सार : पत्र की इबारत से अर्थ स्पष्ट है। यह पत्र एडवर्ड रोविन्सन का है जो उसने सेठ रामदयाल किशन दास को लिखा है। उनसे कारबार और तिजारत शुरु करने का आग्रह किया गया है।

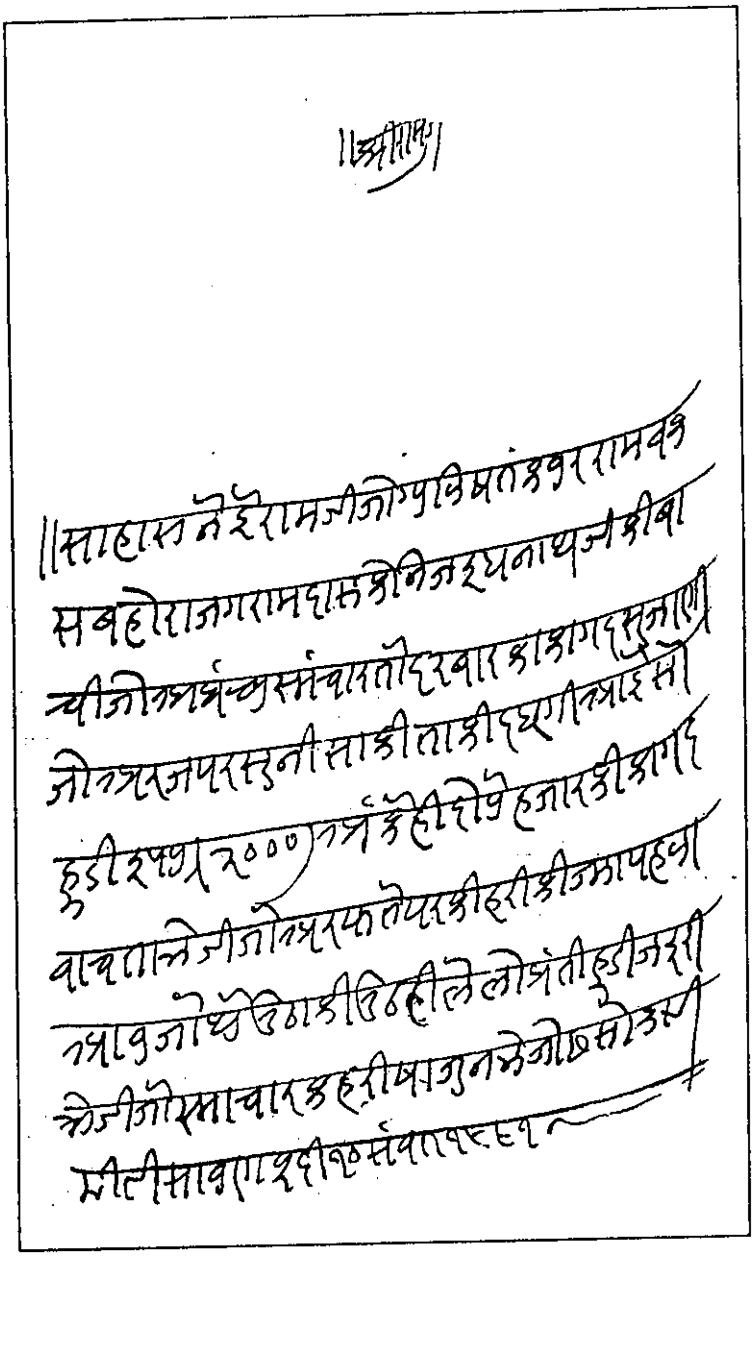
श्री राम जी

ली. मु. आगे होय करा दीज्यो।

साह सनेही राम जी जोग लिखतम् महाराव राजा जी श्री लक्ष्मण सिंह जी (सीकर नरेश) केन जय रघुनाथ जी की बंचज्यो। अपरंच समाचार तो सारा कहर (कहकर) कीमा (कार्यकर्त्ता का नाम) ने भेज्यो छ सो आगे होय पांच रुपया को काम करा दीज्यो। कहबा मैं तो आज दिन कांई कोनी छ पण बड़ा राज को चार (4) वर्ष को लेख्यो पाड़यो और लर की रद्दी काटी - पट्टो परवानों करायो - जंका पांच रुपया देणा - तीं करीर कहबा मैं आयी छ सो गेंलकी रद्दी करी जाये। जमा आया सारा न फायदा छ। मिति माह बदी 7 सम्वत् 1884 (सन् 1827)



सार : यह पत्र रावराजा श्री लक्ष्मणसिंह जी का सेठ सनेहीराम जी के नाम का है। इसमें कहा गया है कि जयपुर राज का चार वर्षों का मामले का हिसाब करने तथा शेष अवशिष्ट राशि चुकाने के कारण थोड़ी मुश्किल है सो रुपयों का कार्य करवा देना।

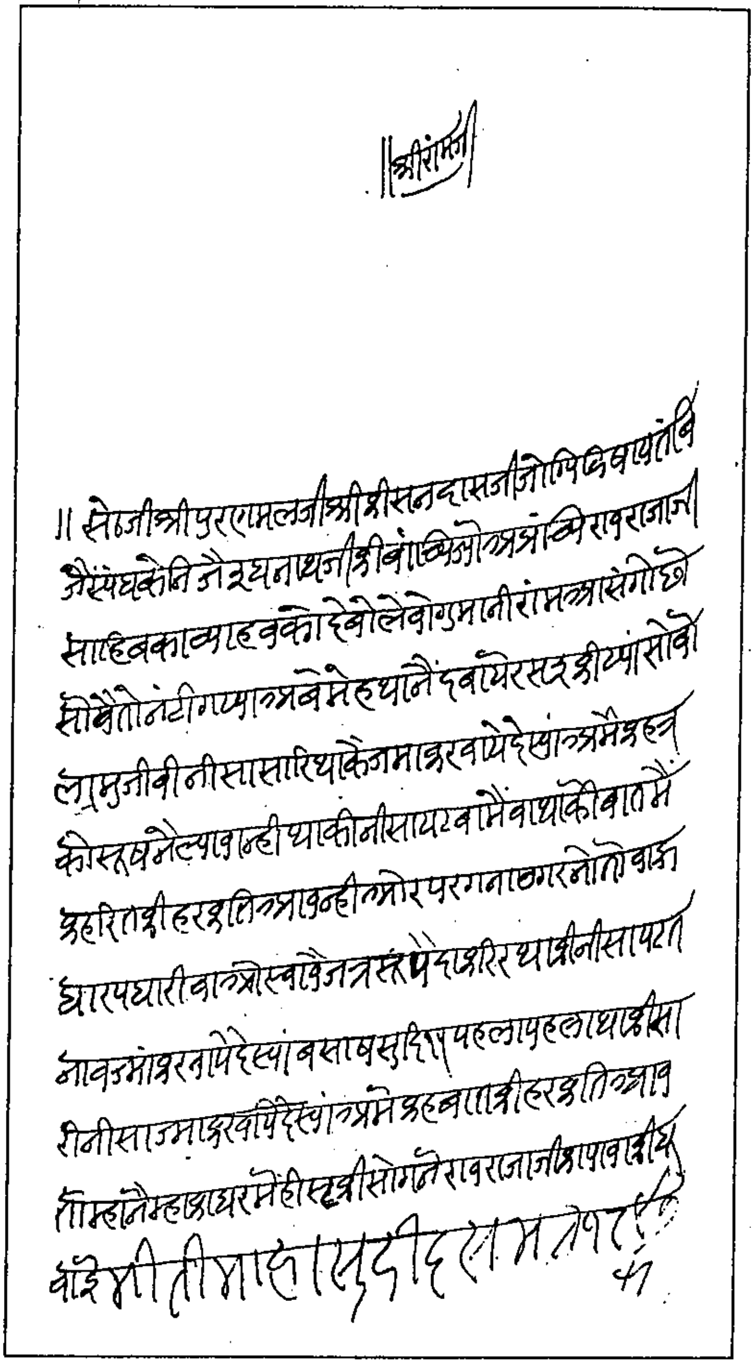


श्री राम जी

साह सनेही राम जी जोग लिखतम् कंवर रामबख्श (कार्यकर्ता सीकर राज) बोहरा जगरामदास (प्रधानमन्त्री सीकर राज) केन जय रघुनाथ जी की बांचज्यो। अपरंच समाचार तो दरबार का कागद सूं जाणिज्यो अर (और) जयपुर सूं नीसा (रकम) की ताकीद घणी आई। सो हुन्ड़ी रुपया 2000/- दो हजार की कागद बांचता, ही भेज दीज्यो। और फतेहपुर की हरी की जमा पहलां आवे जो थे उठा की उठे ही लेल्यो। अंकी हुन्ड़ी जरूरी भेज दीज्यो। समाचार क़हर खाजू (व्यक्ति का नाम) ने भेज्यो छ सो कसी। मिति श्रावण बदी दशमी (10) सम्वत् 1881 (सन् 1824)

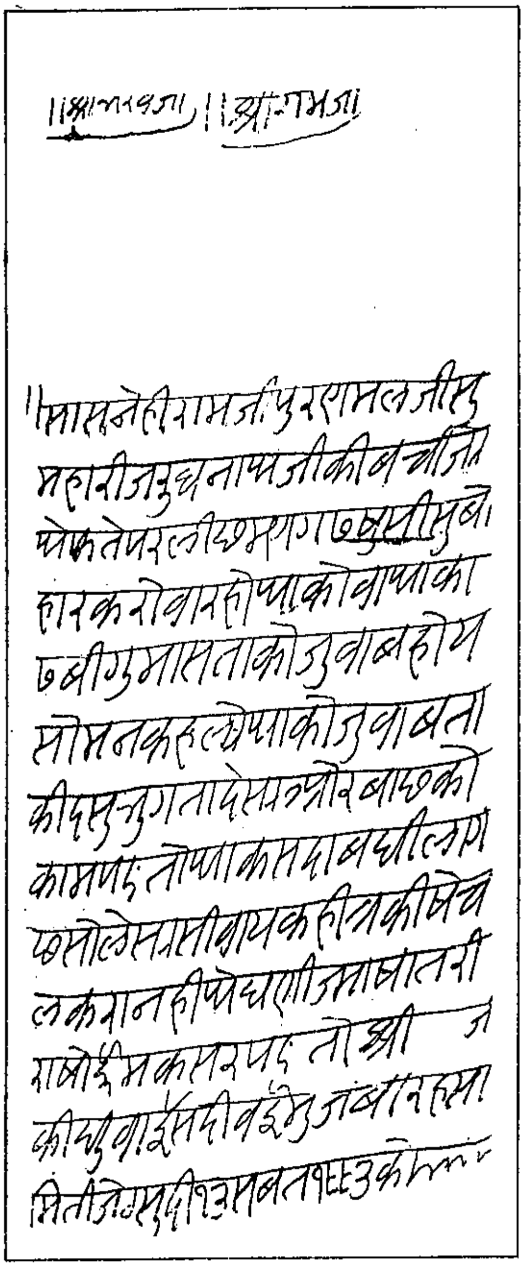
सार : यह समय रावराजा लक्ष्मणसिंह जी का है जिनके गनेड़ीवाला सेठों के निकट के सम्बन्ध थे। पत्र में दो हजार की हुंडी शीघ्र भेजने की बात कही गयी है।

श्री राम जी


॥श्रीरामजी॥

सेठजी श्रीपूरण मल जी श्रीकिशनदास जोग लिखायतम् विजय सिंह (कार्यकर्ता सीकर ठिकाना) केन जय रघुनाथ जी की बांचज्यो अपरंच राव राजा जी साहिब का ब्याह को देबो - लेबो (देना-लेना) गुमानीराम आसंगो छो (स्वीकारा था) सो ब तो नटी गया। अब मेह (हम) थाने दबायर (दबाकर) सरु किया। सो बोल्या मुजब नीसा (रकम) सारी थांके जमा करवाये देस्या। अमे (इसमें) कहतरे की सुखने (कमी) लयावा नहीं। थांकी नीसा पटबा (देने में) में व थांकी बात में कह रीत की हरकत आवे नहीं और परगना वगैरा न्योतो व उधार पधार वा और चाहें ज तरे सूं पैदा करीर (करके) थांकी नीसा पटवा व जमा करवाये देस्या। बैसाख सुदी पुन्यू (15) पहला-पहला थांकी सारी नीसा जमा करवाये देस्या। अमे कह बात की हरकत आवे तो म्हाने म्हाका धर्म ईष्ट की सौगन्ध। राव राजाजी का पावां की दुहाई। मिति माह सुदी छठ (6) सम्वत् 1897 (सन् 1840)

सार : यह पत्र सीकर के कामदार ने सेठ किशन दास को लिखकर रावराजा प्रताप सिंह के विवाह पर होने वाले खर्चे का वहन करने की बात कही है। इस पत्र का ऐतिहासिक महत्त्व है। इसमें लिखा है कि अगर हमारी तरफ से कोई हरकत होगी तो हमें इष्ट देव की सौगन्ध है।

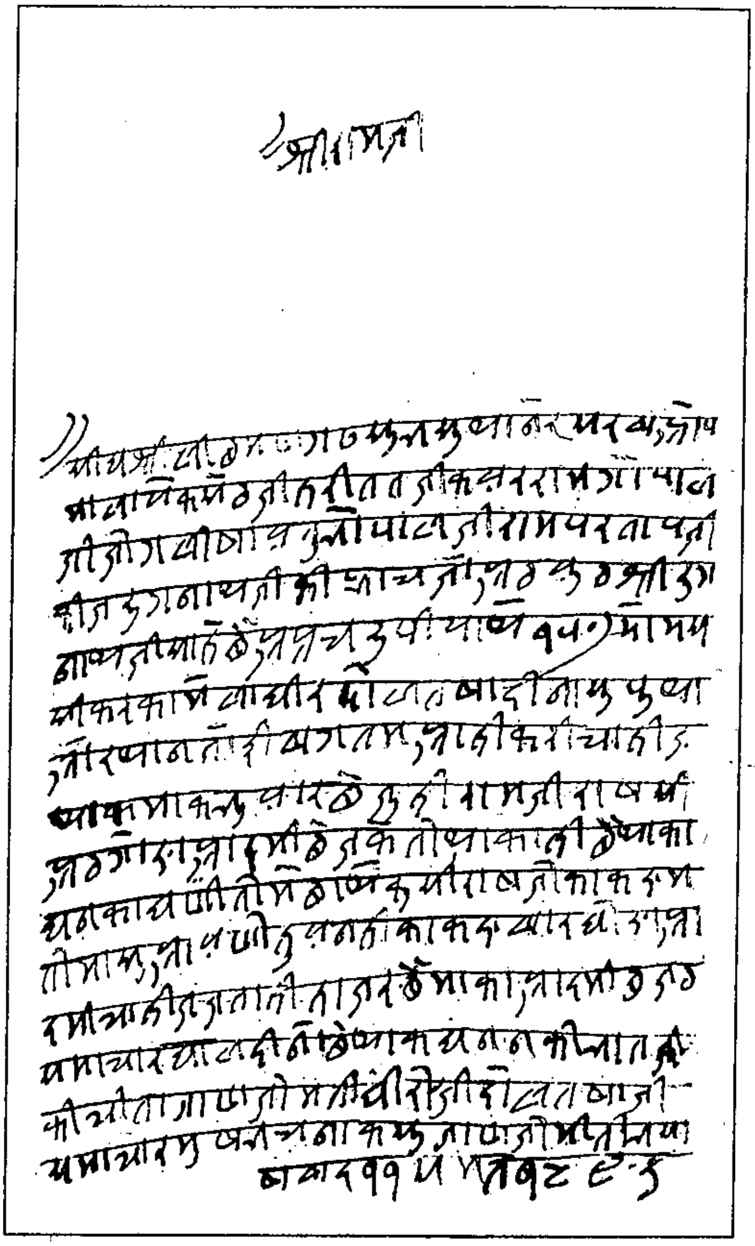


श्री राम जी

साह सनेही राम जी पूरण मल जी सु म्हारी जय रघुनाथ जी की बंचज्यो। थे फतेहपुर लक्ष्मणगढ़ खुशी सूं बसो, ब्योपार करो व रहो। थांको व थांका ढबी (मित्र) गुमासता को जवाब होय सो मने कहज्यो। थांको जवाब ताकीद सूं भुगता देस्यां और बाछ (कर) को काम पडे तो थांके सदा मुजब लागे छ सो लेस्यां, सिवाय कहीं तरह की खेचल करा नहीं। थे घणी जमा खातरी राखो, ई मे कसर रह तो श्री जी की दुहाई सदैव मुजब रहसी। मिति ज्येष्ठ सुदी तेरस (13) सम्वत् 1883) सन् (1826)

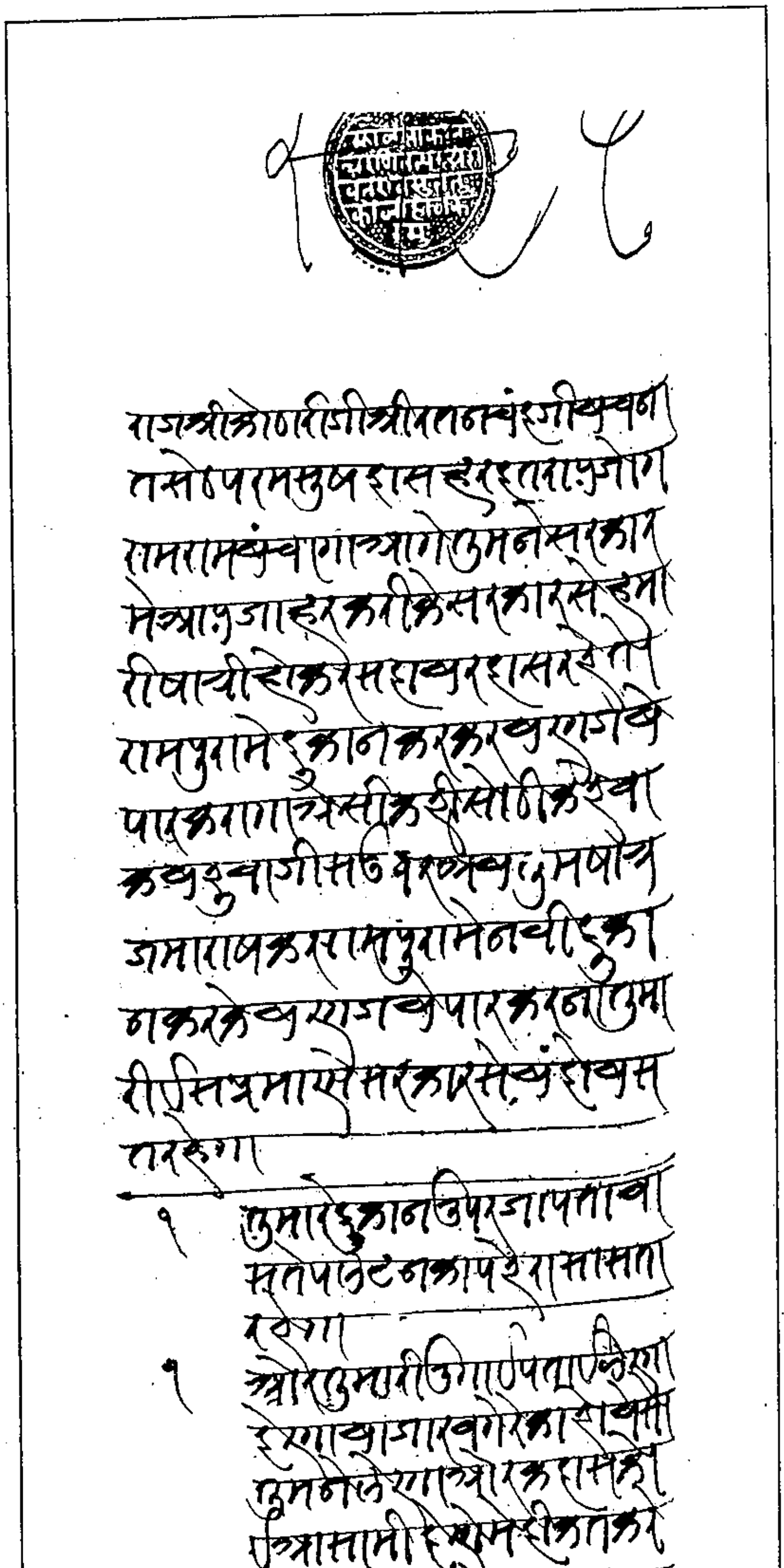
सार : पत्र में सेठ सनेहीरामजी पूरणमल जी को फतेहपुर तथा लक्ष्मणगढ़ में प्रसन्नता से बसने का आग्रह किया गया है। लिखा है कि आपसे सदैव से लगने वाले कर से अधिक नहीं लिया जावेगा। आपसे और कोई मांग नहीं करेंगे। पत्र में भगवान की दुहाई दी गयी है।

श्री राम जी



सिद्ध श्री लक्ष्मणगढ सुभ सुथा नेक सरवोपमा लायक सेठ जी हरिदत्त जी कंवर जी राम गोपाल जी जोग लिखायतम् भोपाल जी राम प्रताप जी की जय रघुनाथ जी की बांचज्यो। अठे-उठे श्री रघुनाथ जी सहाय छ। अपरंच रुपया थे 150/- एक सौ पचास ड़ोड से सीकर का भेज्या, भीरू दोलत खां दीना सो पहुंचा और थाने तो ई बखत में आही करी चाइज छ। थांके और म्हाके ब्योहार छ, ज्यूं ही राम जी राख सी। अठे घोड़ा, आदमी छ जका तो थांका ही छ। थांका धन का धनी तो मेहं छा, थे खुशी राखज्यो। कांकड़ में तो माहसु आवणो होवे नहीं, कांकड़ बाहर घोड़ा और आदमी चाहिजे जता ही हाज़र छ। म्हाका आदमी न समाचार घाल दिनो छ, थांका धन की बात की चिन्ता जाण ज्यो मति। धीरू जी दौलत खां जी समाचार मुख जबानी कहसी सो जाणज्यो। मिति बैसाख बदी 11 सम्वत् 1890 (सन् 1833)

सार : यह पत्र पाटोदे के भोपालजी रामप्रतापजी ने सेठजी हरदत्तजी को लिखा है। पत्र में कहा गया है कि हम सीकर राज की सीमां मे तो आ नहीं सकते पर बाहर जितने आदमी घोड़े चाहिये उतने हाजिर हैं। आप अपने धन की सुरक्षा की कोई चिन्ता नहीं करें।



श्री राम जी

मोहर और दस्तखत।

राज श्री कोठारी जी श्री रतन सिंह जी बचनात सेठ परेम सुखदास हरिदत्तराय जोग राम-राम बंचना। आगे तुमने सरकार में आय जाहर करी के सरकार से हमारी खातरी होकर सहाबरदास रहे तो रामपुरा (इन्दौर) में दुकान कर कर बणज व्यापार करांगा। ऐसी कहीं सो ठीक वाकब (जानकारी) हुआ, जिस ऊपर अब तुम खातर जमा रख कर रामपुंरा में नवी दुकान करके बणिज व्यापार करना, तुम्हारी इस प्रमाण सरकार सूं बन्दोबस्त रहेगा।

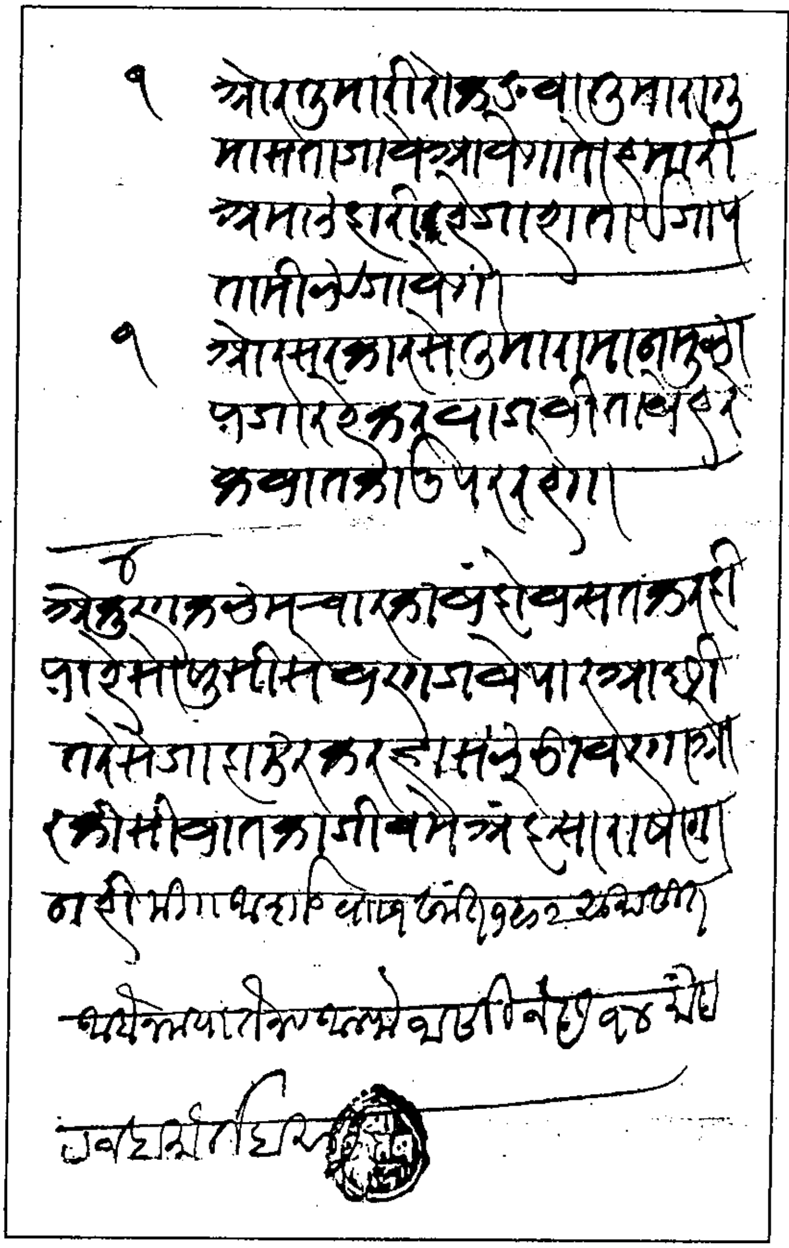
1. तुम्हारे दुकान ऊपर जापता वास्ते पलटन का पहरा सास्ता (हर समय) रहेगा।
1. और तुम्हारी उगाही-पताही,लेन-देन, बाजार वगैरा हा का होय सो तुमने लेणा और कदाश कोई आ सामी इसमें दिक्कत करेगा तो सरकार से तकादा कराये कर वाजबी फैसला करा दिया जावेगा।

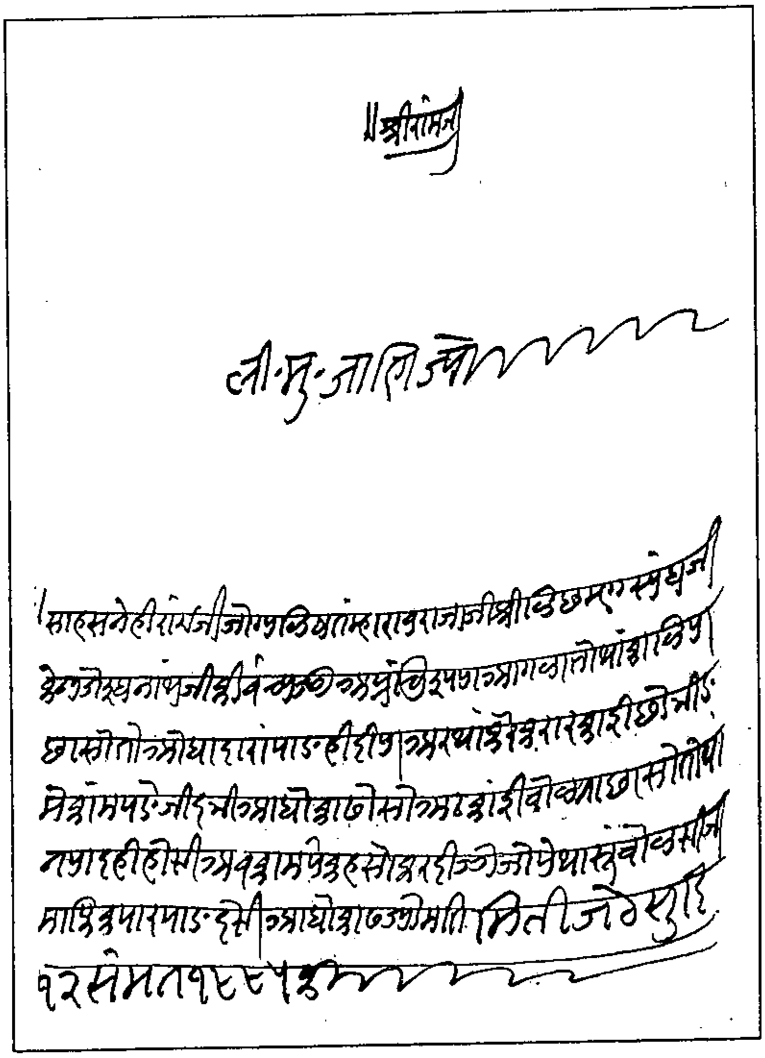
1. और तुम्हारी रोकड़ व तुम्हारा गुमास्ता आवे जावेगा तो हमारी अमलदारी (शासन) रियासत से जापता मिल जावेगा।

1. और सरकार से तुम्हारा मान मुलायजा रहकर वाजबी हरेक बात का ऊपर रहेगा।

4. ये कुल कलम चार का बन्दोबस्त कर दिया है सो खुशी सूं वणिज व्यापार आछी तरह से यहां करो और किसी बात का जीव में अन्देशा राखणा नहीं। (कुछ शब्द मराठी में)।

सार : यह पत्र कोठारी रतनसिंह ने सेठ हरदत्तराय को लिखा है। पत्र में आश्वासन दिया गया है कि आप रामपुरे (इन्दौर) में आकर खुशी से दूकान करें। कुछ छूटों का उल्लेख भी पत्र में है। लिखा है कि आपकी दूकान पर सदा सरकारी पहरा





श्री राम जी

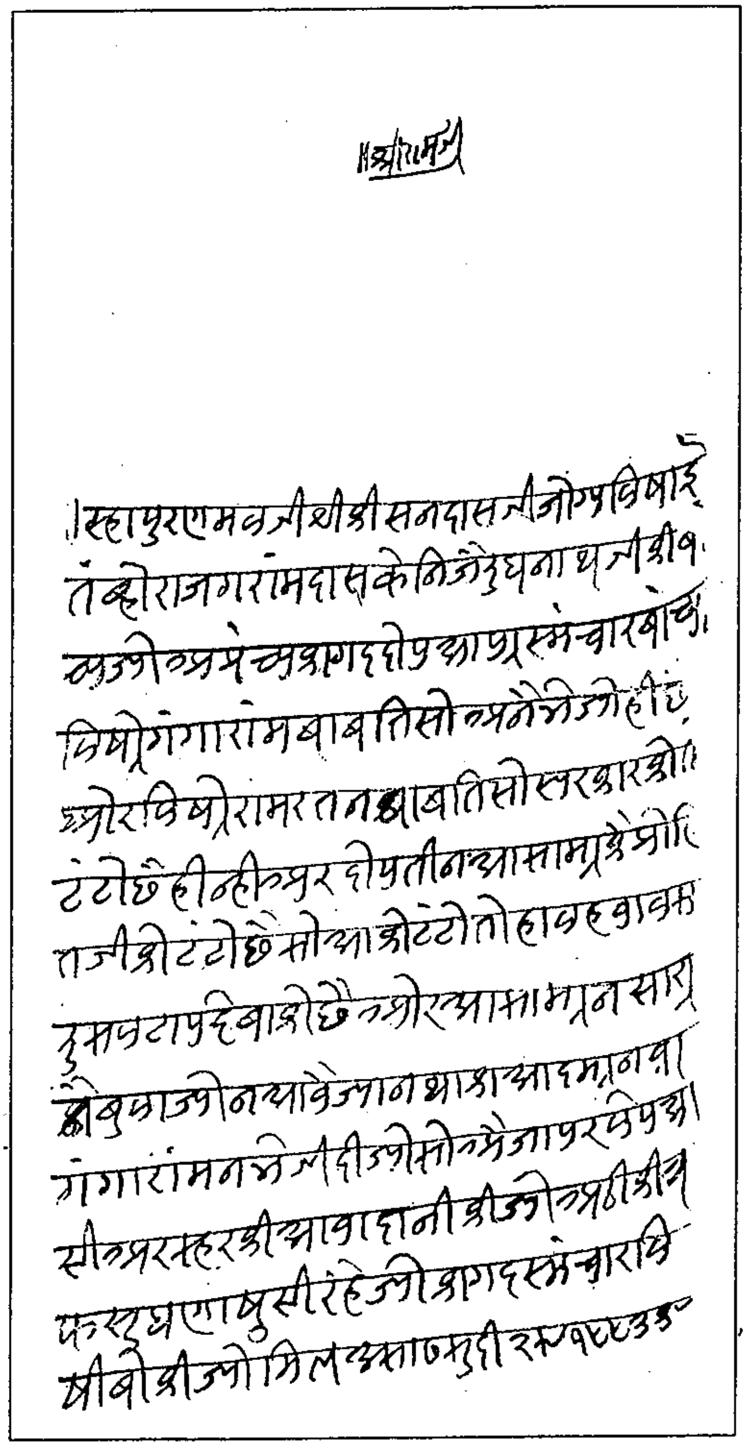
ली.मु. जाणीजो,
साह सनेही राम जी जोग लिखतम्।

महाराव राजा जी श्री लक्ष्मणसिंह जी केन जय रघुनाथ जी की बांचज्यो। अपरंच रूपया आगला तो थांका लिया छा सो तो ओधादारा (अफसरान) पाड़ ही दिया अर थांको करार कांई छो-भीड़ (तंगी) में काम पडो जद भी आगो काढयो सो अठे कांई बोल्या छा सो तो थांने याद ही हो-सी। अब काम एक है सो कर दीज्यो जो ये थांसू बोलसी जी माफिक पार पाड़ देसी। आघो (काम) काढज्यो। मिति जेठ सुदी 12 सम्वत् 1885 (सन् 1828)

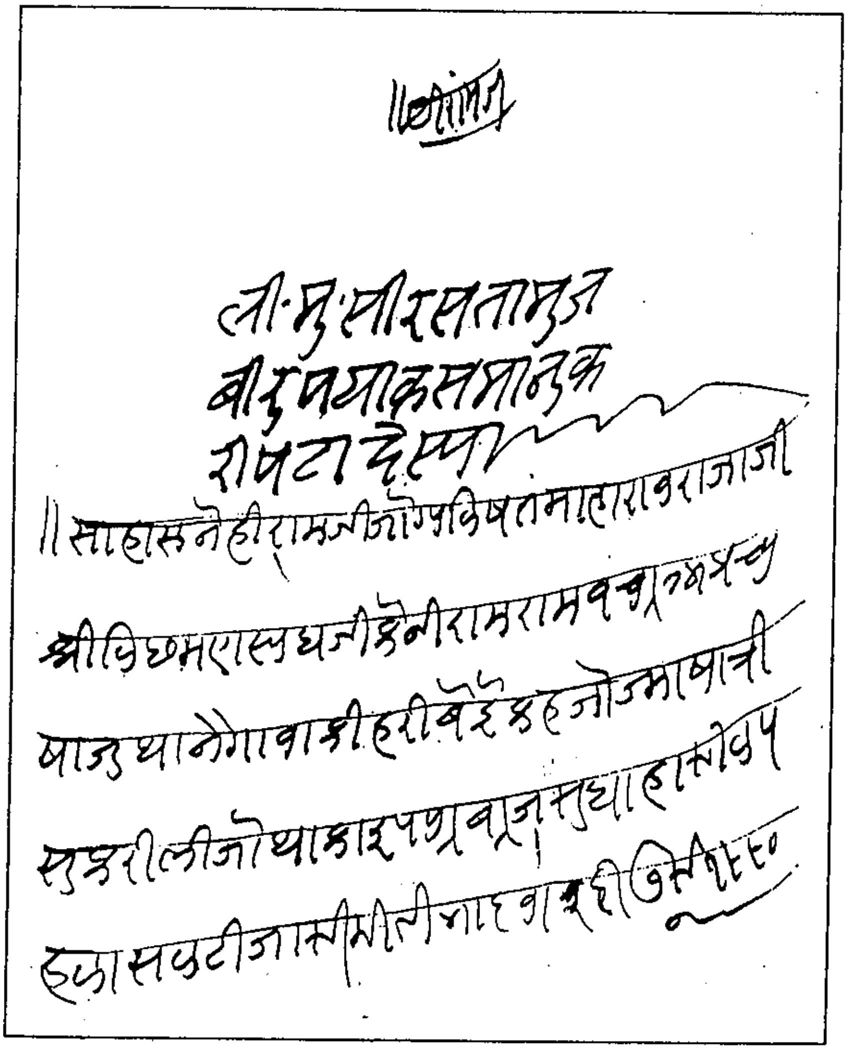
सार : इस पत्र में साह सनेहीराम को रावराजा लक्ष्मणसिंह ने काम को पूरा कर देने का आग्रह किया है।

श्री राम जी

साह पूर्ण मल जी, श्री किशन दास जी, जोग लिखायतम् बोरा जगराम दास (मन्त्री सीकर) केन जय रघुनाथ जी की बांचज्यो। अपरंच कागद दो आया, समाचार बांचा, लिखो गंगाराम बाबत सो ऐन भेज्यो ही छै और लिखो रामरतन बाबत सो सरकार को तो टंटो है ही नही और हर दोय तीन आसामिया क पीरोहित जी क टंटो है सो आंकों टंटो तो हाल-हवाल सुण सलटा देबा का छः। और आश्यामा न सारां न बुलाज्यो, न आवे ज्यानं थांका आदमीयां न व गंगाराम न भेज दीज्यो। सो अ जायर (जाकर) ले आसी और शहर की आबादानी (सम्भाल) कीज्यो। अठां की तरफ से घणा खुशी रहज्यो। कागद समाचार लिखबो कीज्यो। मिति आषाढ सुदी दूज (2) सम्वत् 1883 सन् 1826



सार : सीकर के दीवान बोरा जगराम ने यह पत्र सेठ किशनदास को लिखकर कहा है कि वे झगड़े की बात समझ कर सलटारा कर दें। उनसे आग्रह किया गया है कि वे शहर की (लक्ष्मणगढ की) बसावट में मदद करें।



श्री राम जी

ली.मु. सीरस्ता मुजब रुपया कसमानु करी पटा देस्यां।

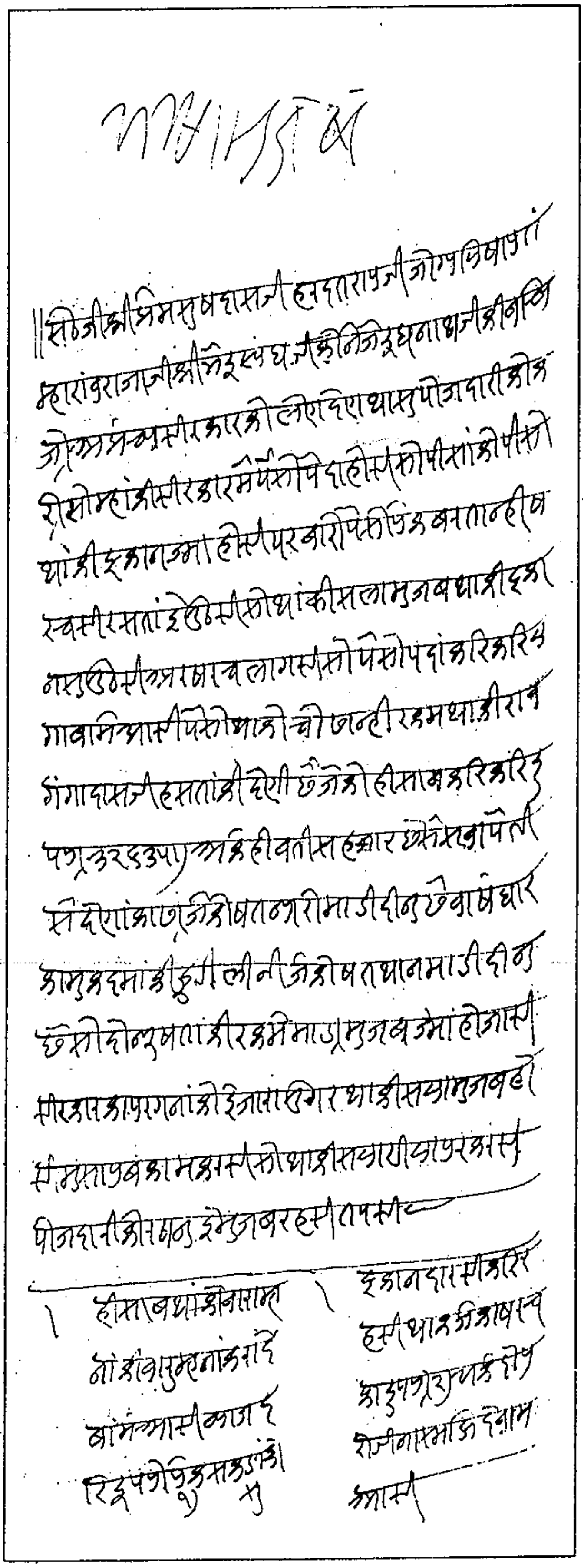
साह सनेही राम जी जोग लिखतम् महाराव राजा जी श्री लक्ष्मण सिंह जी केन राम-राम बंचज्या। अपरंच खाजु (कार्यकर्ता का नाम) थाने गांवा की हरि बेई (फसल के बारे में) कही जो जमा खातरी सूं करा लीज्यो। थांका रुपया ब्याज सुदा हासिल पहला सलटा दिया जायसी। मिति भादवा बदी 7 (सात्ते) सम्वत् 1880 (सन् 1823)

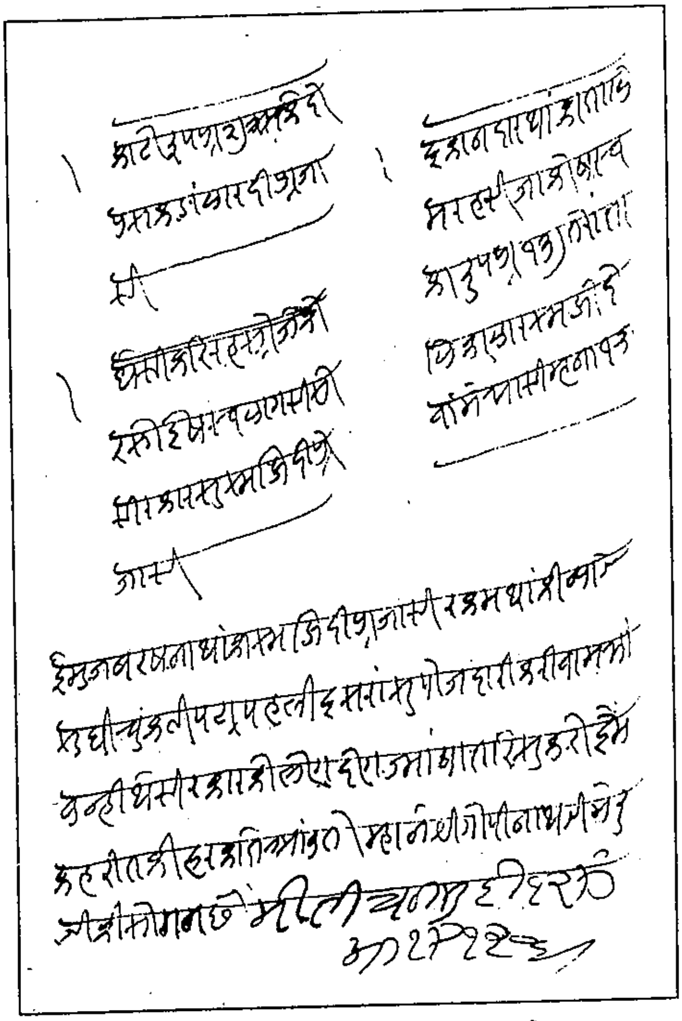
सार : यह पत्र सीकर के रावराजा श्री लक्ष्मणसिंह ने सेठ सनेहीराम को लिखा है। पत्र में आश्वासन दिया गया है कि आपके रुपये हासिल के पहले दे दिये जावेंगे।

श्री राम जी

लीखा मुजब

सेठ जी श्री प्रेमसूखदास जी हरदत्तराय जी जोग लिखायतम महाराव राजाजी श्री भैरूं सिंह जी केन जय रघुनाथ जी की बांचज्यो। अपरंच सरकार को लेन-देन थासूं पोतदारी को करी सो म्हांकी सरकार में पैसो पैदा होसी सो पीसो को पीसो थांकी दुकान जमा होसी। परबारो (बाहर की बाहर) पैसो एक बरता नहीं। खर्च सीरसताही उठसी सो थांकी सलाह मुजब थांकी दुकान सूं उठसी अर खर्च लागसी सो पैसो पैदा करकर गांवां में आसी। पैसो थांको चोढ़ा नहीं, रकम थांकी राव गंगादास जी हस्त की देणी स जंकी हिंसाब करकर रुपया 32,635-25 रु. अंक बत्तीस हजार छः स सवा पेंतिस देणा काटया जंको खातो न्यारो मांड दीनो छः। व खंधार क मुकदमा की हुन्डी लीनी जींको खातो थाने मांड दीन्यो छः। सो दोनु खाता की रकम मांडा मुजब जमा हो ज्यासी। सीरकार का परगना को इजारा उगर (वगैरा) थांकी की सलाह मुजब होसी। मुसायब (अफसर) काम करसी थांकी सलाह लेर करसी। पोतदारी को खातो ई मुजब रहसी।





तफसील

हिसाब थांको बारह महना की
बारह महना करा देबा म आसी ब्याज
दरि रुपयो एक सैंकडा सूं।

काटो रुपया 2/- अंकेही दोय सैंकड़ा
लार दीयो जासी।

थे सीकर रहस्यो ज्यांको रसोई खर्च
लागसी सो सरकार सूं दीया जांसी।

दुकानदार सीकर रहसी थांक जीका का
खर्च का रुपया 2/- अंकेही दोय रोजीना
देबा म आसी।

दुकानदार थांका रहसी जांका खर्च का
रुपया 13/- अंकेही तेरहा तालीकालार
मंडा देबा म आसी महना एक का।

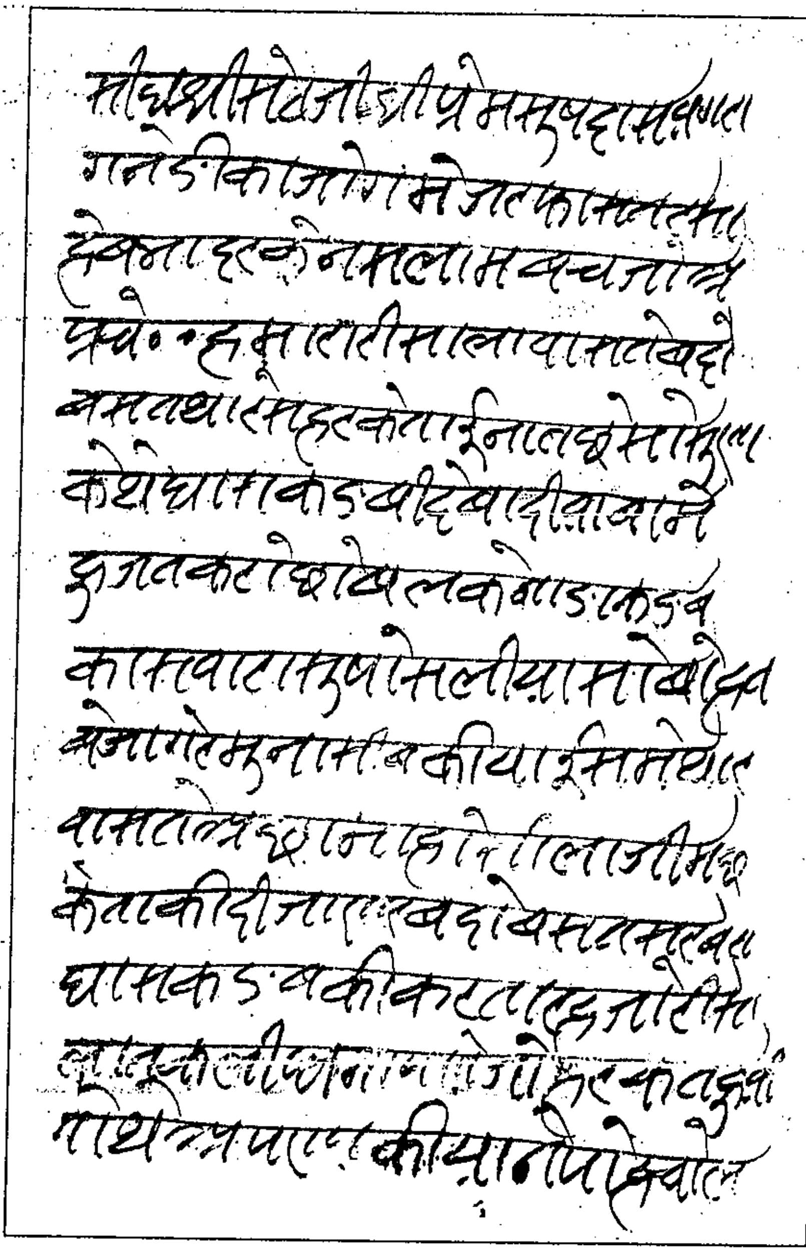
ई मुजब रखना थांका समझ दिया जासी।
रकम थांकी ब्याज सुदी
चुकती पटयां पहला दूसरा सूं पोतदारी कराबामा आव नही।

थे सीरकार कोलेन-देन जमा खातरी सूं करो, अम कहरीत की हरकत
आव तो म्हाने श्री गोपीनाथ जी, श्री भैरूं जी की सौगन्ध छः।

मिति चैत सुदी बारस (12) सम्वत् 1912 (सन् 1855)

सार : यह पत्र रावराजा भैरू सिंह सीकर की ओर से सेठ प्रेमसुखदास को लिखा गया है। इनमें उनसे पोतदारी सम्हालने के लिये अनुरोध किया गया है। पत्र में आश्वासन दिया गया है कि सारी आय ठिकाने की आप के यहाँ जमा होगी तथा परगनों का इजारा आपकी सलाह से होगा। प्रति सैंकड़े 2 रूपयों का काटा काटने की बात पत्र में कही गयी है। काटा मय ब्याज के ऋण लेने वाला चुकाता था। श्री गोपीनाथजी तथा श्री भैंरु जी की शपथ खायी गयी है।

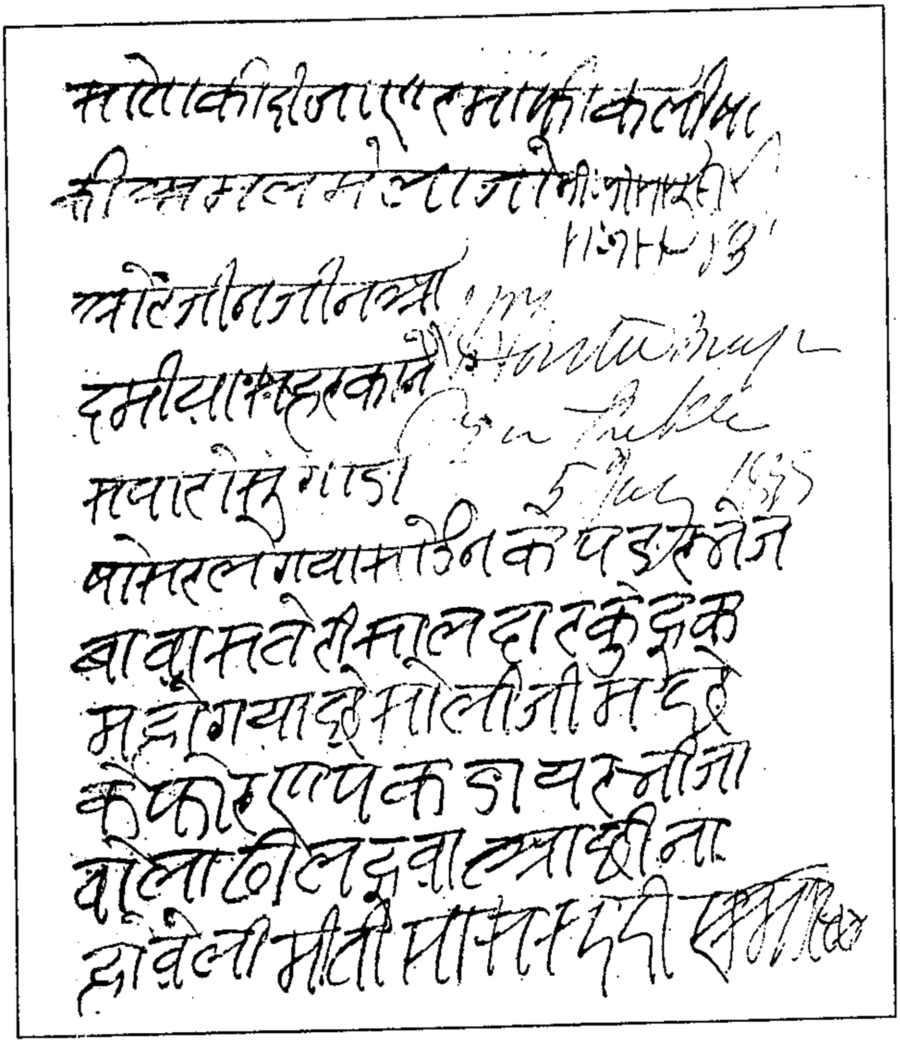
श्री राम जी



सिद्ध श्री सेठ जी प्रेम सुख दास वगैरा गनेड़ी का जोग मेजर फोरेस्टर साहब बहादुर केन सलाम बंचना। अपरंच हमारा रीसाला (फौज) वास्त बन्दोबस्त वास्ते तथा शहरी क तैनात छः, सो सुण्या, के थे घास कड़बी देबा दीवाबाम हुज्जत करो छो। बल्कि गाड़ा कड़ब का सवारा सूं खोस लिया सो बहुत बेजां गैर मुनासिब किया, इसमें थारे वास्ते अच्छा न होसी। लाजिम है (आवश्यक है) क ताकीद जाणर बन्दोबस्त सरबरा घास कड़ब की करता रहज्यो। इसमें जो हरकत होयी तो थे अपणे किया न पहुंचोला। सो ताकीद जाणर माफिक लिखो अमल में लाज्यो। मिति पोष सुदी नौमी (9) सम्वत् 1894 (सन् 1837)

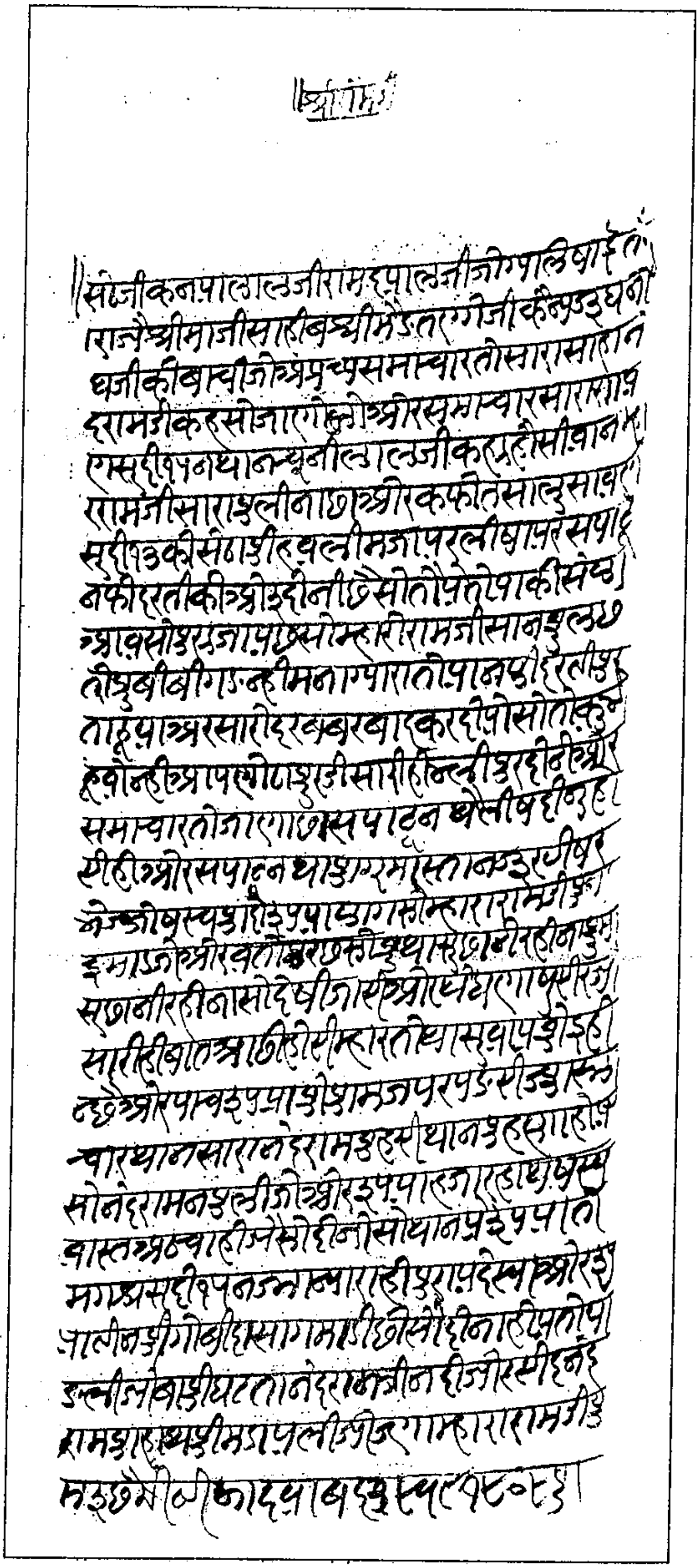
और जिन-जिन आदमियो शहरकान सवारां सूं गाड़ा खोसर (छीन कर) ले गया सो उनको पकडर यहां भेजबा वास्त मीसालदार कूं हुकम हो गया छः, सो लाजिम छ क फौरन पकडायर भीजावो ला। ढील हुयां आच्छी ना होवली। मिति पोष सुदी नौमी (9) सम्वत् 1894 (सन् 1837)

सार : यह पत्र मेजर फोरेस्टर ने सेठ प्रेमसुखदास को लिखा है। मेजर फोरेस्टर शेखावाटी बिग्रेड के सेनापति थे जिनकी नियुक्ति इस क्षेत्र में कर्नल लाकेट की रिपोर्ट के आधार



पर हुई थी। उस समय शेखावाटी में चोरी धाड़े बहुत होते थे। अतः फोरेस्टर ने कई ठाकुरों के गढ़ तोड़ डाले थे। उसका रिसाला शहरों में तैनात रहता था। व बेगार के रूप में घास कड़ब गांव वालो से लिया जाता था।

प्रस्तुत पत्र में रिसाले के सवारों से घास के गाड़े छीन लिये जाने की बात कही गयी है। सेठ प्रेमसुखदास के आदमियों का पकड़वाने की बात भी पत्र में कही है। इससे सेठ प्रेमसुखदास के स्वाभिमान और निड़रता की बात सामने आती है। साथ ही बेगार प्रथा खत्म करवाने की उनकी दृढ़ इच्छा भी प्रकट होती है।



श्री राम जी

सेठ जी कन्हैया लाल जी राम दयाल जी जोग लिखायतम् राज श्री माजी साहिब श्री मेड़ताणी जी केन जय रघुनाथ जी बांचज्यो। अपरंच समाचार तो सारा साह नन्दरामजी कहसी सो जाणिज्या, और समाचार सारा सावण सुदी पन्द्रस ने थांने चुन्नीलाल जी कहया होसी, बाने म्हारे राम जी सारा कह लीना छे, और कैफियत सालु सावण सुदी तेरस की सेठां की हबेली में जायर लिखायर सपाटु न फीदरती की ओर दीनी छे, सो तो ये तो आंकी सला आवे सो करांइ जाये छै, सो "म्हारो राम जी" सानूकूल छे, तो कोई बिगड़े नहीं, मेना ग्यारह तो अन्न फिदरती का करता होया, अर सारा दरब बरबाद कर दीयो, सो तो क्यूं भी होयो नहीं, आपणो ठाकुर जी सारी ही भली कर दीनी और समाचार तो जाणा छा, सपाटु ने थे लिख दीनु होसी और सपाटु ने थांका गुमास्ता ने लिखकर भेज्यो, खर्च का रुपया लागे सो म्हारा रामजी के नाम माढज्यो, और बे तो करे छ सो थांसु छानी रही न, किसी म्हांसू छानी रही न, सो देखी जासी और थे घणा खुशी रह जो, सारी ही बात अच्छी होसी, म्हारे तो था सिवाय कोई ही न छ, और पांच रुपया को काम जैयपुर पढसी जिंका समाचार थांने सारा नन्दराम कहसी, थांने कहणो होय सो नन्दराम ने कह लीज्यो, और रुपया हजार हाथ खर्च वास्ते अठे चाहिजे सो दीज्यो, सो थांने ये रुपया तो मंगसर सुदी पन्द्रस (15) ने जमा न्यारा ही कराय देस्यां, और रुपया लेने की गोविन्दा सागे मांढी छी सो दिना होय तो पाड़ लीज्यो, बाकी घटता नन्दराम जी ने दीज्यो, रसीद नन्दराम का हाथ की मंडाय लीज्यो, जणा म्हारो रामजी के सरू छे, मिति भादवा बदी तीज (3) सम्वत् 1909 का (सन् 1852)

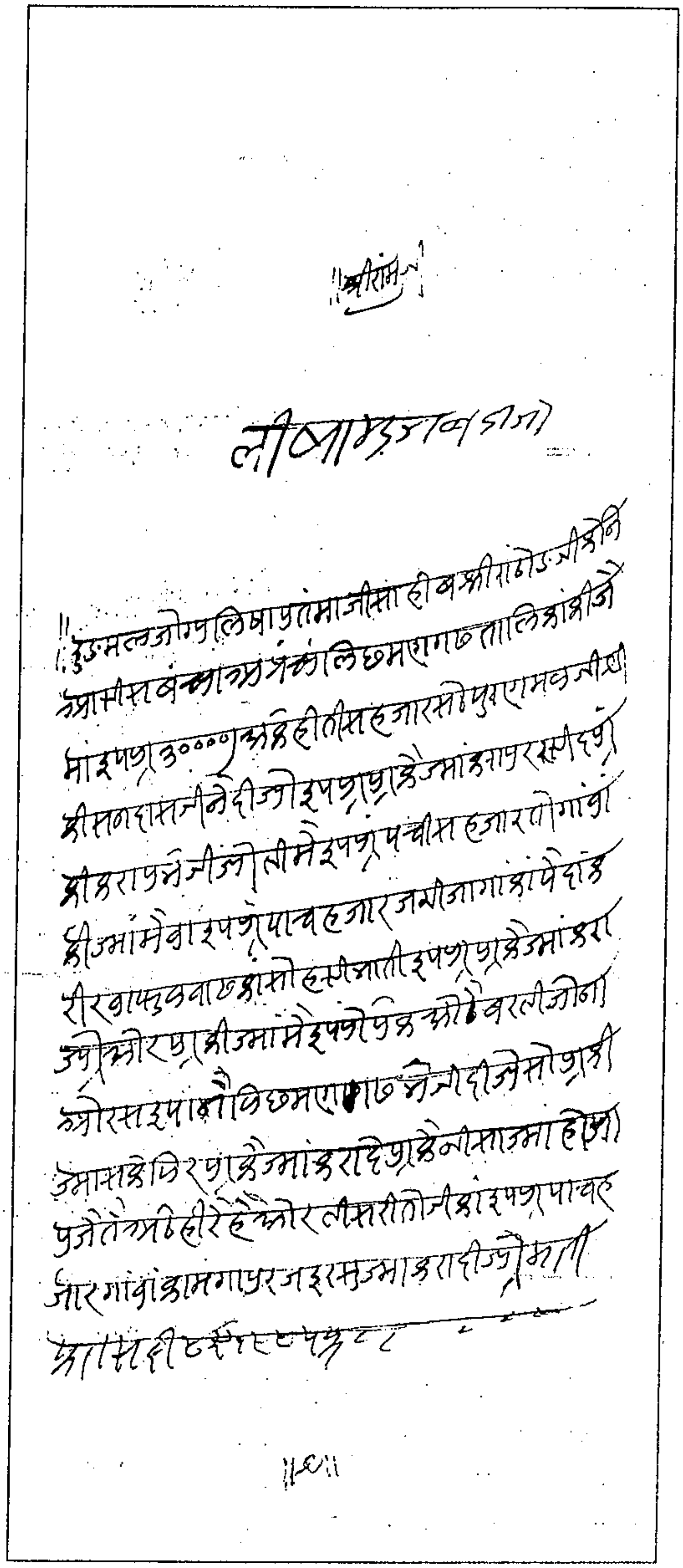
सार : यह पत्र माजी मेड़ताणी जी सीकर की ओर से सेठ रामदयाल जी को लिखा गया है। सीकर की अव्यवस्था की बात कहते हुये एक हजार रुपये मंगाये गये हैं। मेड़ताणीजी रावराजा लक्ष्मणसिंह की पत्नी थी। राठौड़जी से उनकी अन-बन रहती थी अतः लक्ष्मणसिंह के मरने पर वह अपने पीहर चली गयी। वहीं संवत् 1891 में भैंरू सिंह का जन्म हुआ था जो आगे चलकर सीकर की गद्दी पर बैठे।

श्री राम जी

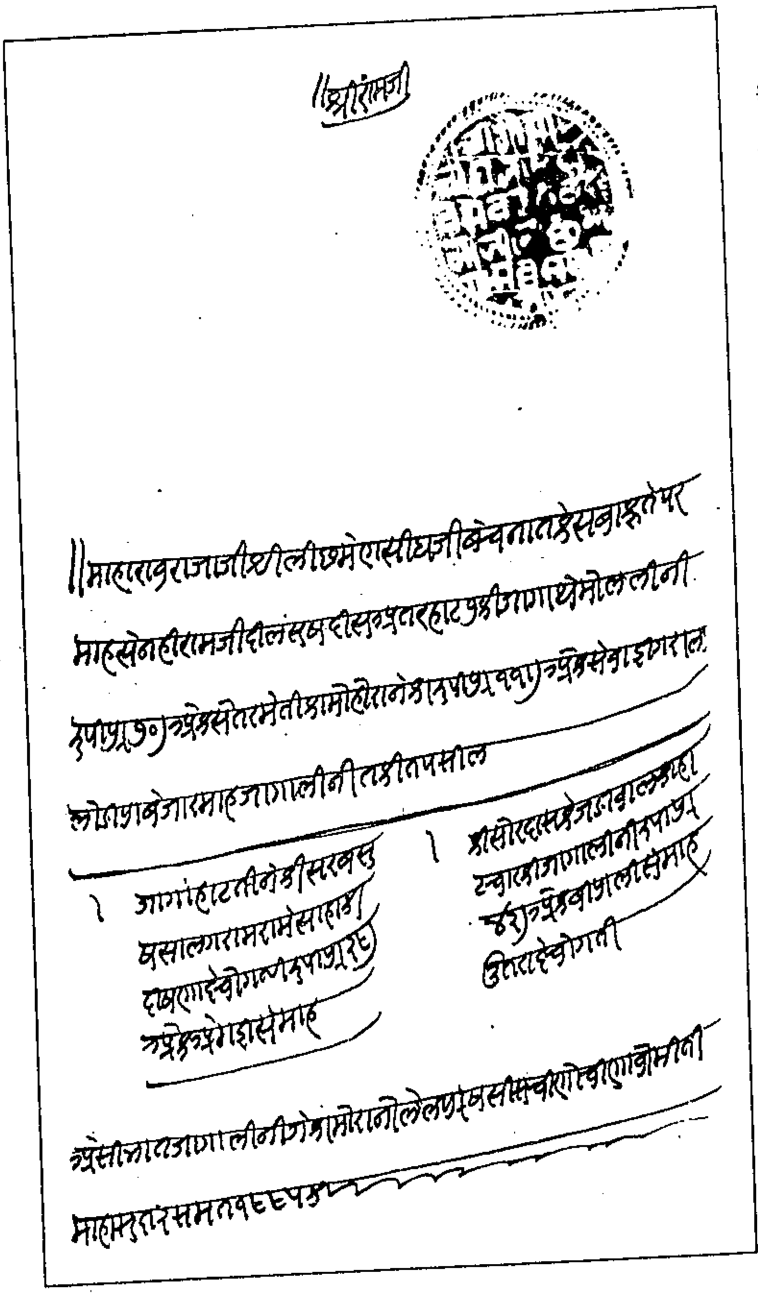
लीखा मुजब कीज्यो,

रूढ़मल जोग लिखा यतम् माजी साहिब श्री राठौड़ जी केन आशीष बांचज्यो। अपरंच लक्ष्मणगढ तालिका की जमा रुपया तीस हजार अंके ही 30,000/- सेठ पूर्णमल जी श्री किशनदास जी ने दीज्यो। रुपया आंके जमा कराये कर रसीद यांकी कराय भेज दीज्यो। तीमें रुपया 25,000/- (पच्चीस हजार) तो गांवा की जमा में व रुपया 5000/- (पांच हजार अंकन) जमीं जगा का पैदा करीर वसूल बाछ का सो इसी भांति रुपया आंके जमा कराज्यो और यांकी जमा में रुपया एक (1) और बरतीज्यो ना, और सरूपा ने लक्ष्मणगढ भेज दीज्यो, सो आंकी जमा सकेलीर यांकी जमा करा दे। यांके निशा जमा होय जीत्ते उठे ही रहे और तीसरी तोजी का रुपया 5000/- अंके पांच हजार गांवा का मंगायर जरूर सूं जमा करा दीज्यो। मिति कार्तिक सुदी नोमी (9) सम्वत् 1885 (सन् 1828)

सार : इस पत्र में माजी साहिबा सीकर श्रीमती राठौड़जी ने रूड़ा कामदार को लक्ष्मणगढ तालिके की 30 हजार की रकम सेठ किशनदास को देने की बात कही गयी है।



श्री राम जी


॥श्रीरामजी

मोहर छाप,

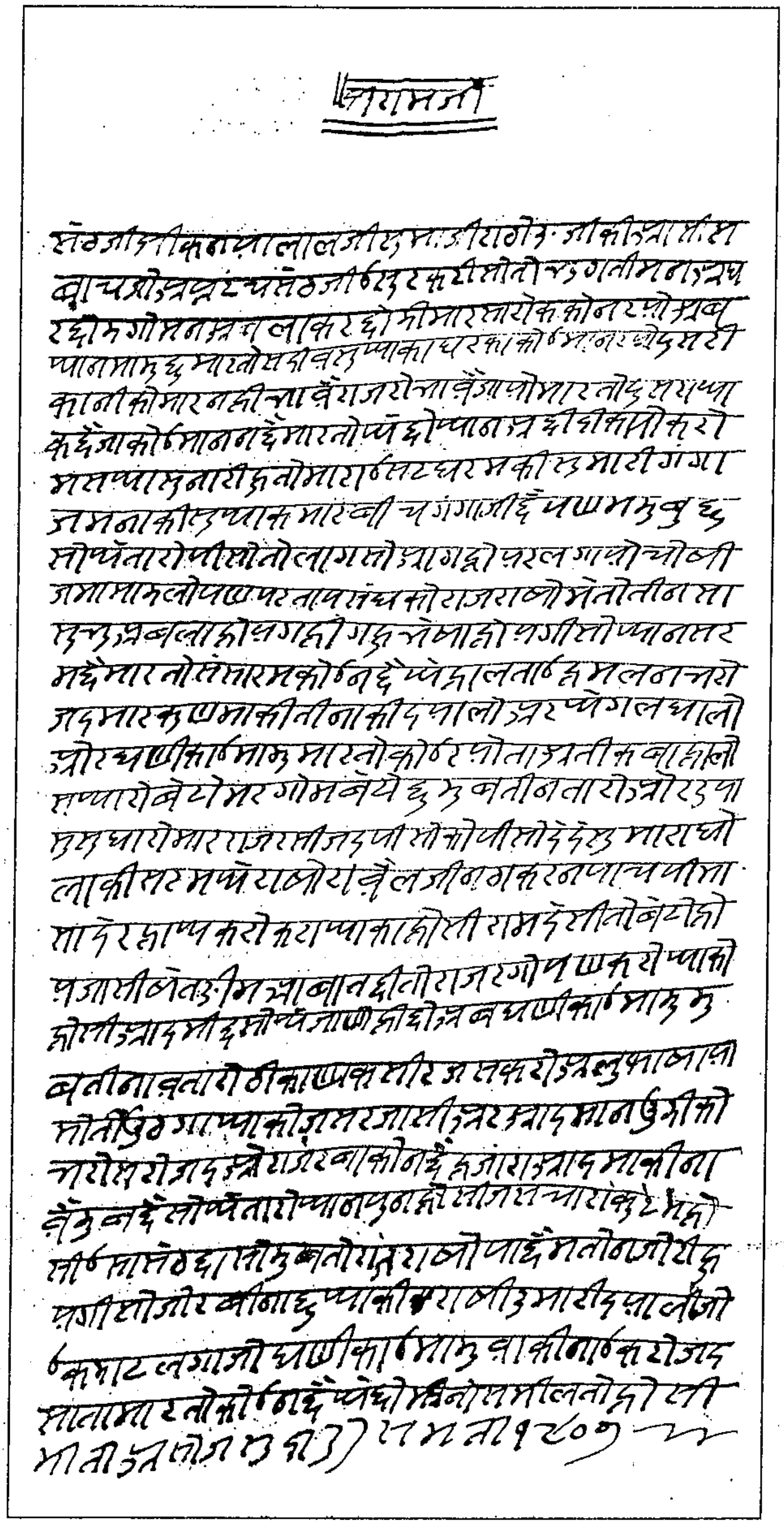
महाराव राजा जी श्री लक्ष्मण सिंह जी बचनात कस्बा फतेहपुर साह सनेहीरामजी दिलसुख दसह अत्र, हाट 7 की जगा थे मोल लीनी रुपया 70 अंके 70 तींका मोराने का रुपया सवा ग्यारह अंके सवा ग्यारह लिया, बाजार माह जगह लीनी तींकी तपसील-

जगा हाट तीन की सरबसुख, सालगराम, रामसहाय की दीखण चोगती रुपया 28 अंके 28 माह

किशोर दास केजरीवाल की हाट 4 की जगा लीनी रुपया 42 अंक 42 उतराद चोगती।

इसी भांत जागा लीनी जैंका मोहरानो लेकर खुशीषु चिणो चिणाओ मिति माह सुदी दूज सम्वत् 1885 का (सन् 1828)

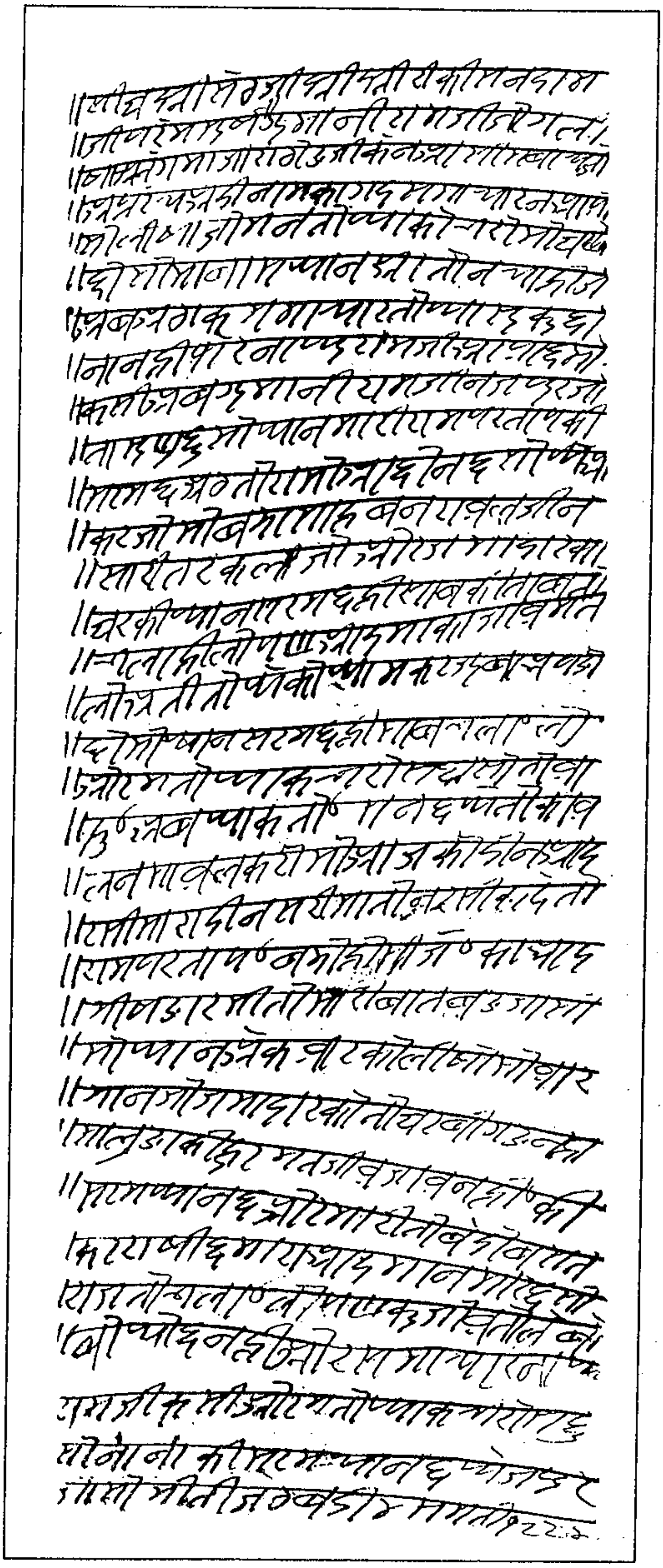
सार : सेठ सनेहीरामजी ने 70 रुपयों में 7 दूकानों की जगह फतेहपुर बाजार में खरीदी थी। इसके मोहराने के 11 रुपये लगे थे। पत्र में उन्हें मोहराना देकर दूकाने बनाने की बात कही गयी है।



श्री राम जी

सेठ जी श्री कन्हैया लाल जी सूं माजी राठौड जी की आशीष बांचज्यो, अपरंच सेठ जी ईसुर (ईश्वर) करी सो तो भुगती, मने अधर छोड़गो,' मने अबला कर छोड़ी, म्हारे सारों (सहारा) कैंको न रहयो, अब थांने मांडु छूं, म्हारे तो सदीव सूं थांका घर का को ही मान रहयो, दूसरी कानी को म्हारे नहीं भावे, राजरो (आपको) भावे, ऐसो म्हारे तो दूसरा थांके छै जांको इमान न छै, म्हारे तो थे छो, थांने आच्छी दीखे सो करो, मैं थांसू न्यारी छूं तो म्हारा ईस्ट धरम की सूं (सौगन्ध) म्हारी गंगा-जमुना की सूं, थांके म्हारे बीच गंगा जी छै, पण में डूबूं छूं सो थे तारो, पिसो तो लागे तो आगे होयर लगावो, चोखी जमा मांड लो, पण प्रताप सिंह (स्वर्गीय प्रताप सिंह सीकर नरेश) को राज राखो, मेहतो तीनू सासूं बहू अबला हो गई, गऊं भैस्यां होयगी, सो थांने सरम छै, म्हारे तो संसार में कोई न छै, थे हाल तांई हामल न भरो जद म्हारे कुण, म्हाकी तीनां की दया ल्यो, अर थे गेल्ले घाल्लो, ओर घणी कांई मांडु, म्हारे तो कोई रहयो नहीं अत्ती कैबा वालो, के थारो बेटो मर गयो, मैं बेटो सूं, डूबती न तारो और काम सुधारो, म्हारे राज रहसी जद पीसो को पीसो दे देसूं, म्हारे धोलां की सरम थे राखो, रावल जी ने ठाकर ने पांच पीसा देर हाथ करो, करयां थांका होसी, राम देसी तो बेटो होय जासी, खेतड़ी में आ बात छी, तो राज रहगो, पण करयां थांका होसी, आदमी छ सो थे जाणो ही छो, अब घणी कांई मांडु, डूबती नाव तारो, ठिकाणा के सिर जस करो, अलूफा का खाया सो तो उठगा, थांको जस रह जासी, और आदम्याने उडीको, भरोसे रो, जद ओ राज रहबा को न छ, हजारा आदम्यां की नाव डूबे छै, सो थे तारो, थांने पुण्य होसी, जस चारूं कूटां में होसी, ईसा सेठ छा, सो डूबतो राज राख्यो। पीछै में तो नजौरी होयगी, सो जोर बिना छूं, थांकी राखी रूं, म्हारी दया लीज्यो, ईकें डाट लगाज्यो, घणी कांई मांडु, बांकी नांई करो जदस तो म्हार तो कोई न छै, थे छो माणस मिले तो होसी। मिति आसोज सुदी तीज (3) सम्वत् 1907 का (सन् 1850)

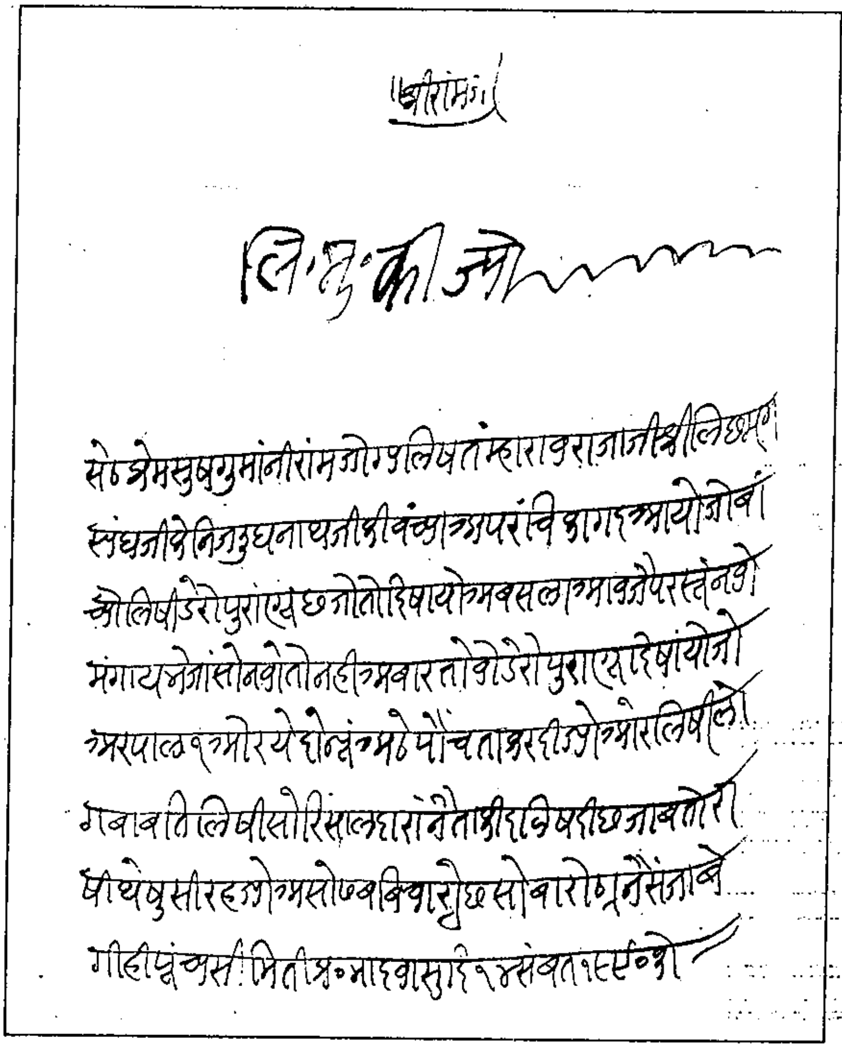
सार : यह पत्र माजी राठोड़ जी सीकर ने रावराजा रामप्रताप की मुत्यु के कुछ समय बाद सेठ कन्हैयालाल को लिखकर अपनी असहाय अवस्था का दिग्दर्शन किया है। पत्र करूणाजनक भाषा में है। लिखा है कि मुझे अबला कर गया, किसी का सहारा नहीं रहा। आपका ही सहारा है आप हमारी दया लें और हजारों आदमियों की डूबती नाव तारें। रावराजा रामप्रताप की मृत्यु 22 वर्ष की छोटी अवस्था में संवत् 1907 भाद्रशुक्ला 10 को हो गयी थी।



श्री राम जी

सिद्ध श्री सेठ जी श्री किशनदास जी प्रेमसुख जी, गुमानीराम जी जोग लिखायतम् माजी राठौड जी केन आशीष बांचज्यो। अपरंच आंदिना मं कागद समाचार न आया सो लिखाज्यो, मने तो थांको भरोसो घणो छ, सो आबा में थांने कत्ता दिन चाहिजे, अब अठां का समाचार तो थांसु कुछ छाना नहीं, और नाथूराम जी आवे छ, सो कहसी, अब गुमानीराम जी न जयपुर जांता सुणु छू सो थांने म्हारी राम प्रताप की शर्म छ, अठे तो रासो आछो न छ, सो थे आ करज्यो, सो बडा साहब न, रावल जी न सारी तरह कह लीज्यो, और जमादार का घर की थांने सरम छ, हिसाब-किताब तो भला हीं ल्यो, पण आदम्या का जीव मत ल्यो, अत्ती तो थे कीज्यो, म्हाके रजु भी आणेरी थांने सरम छे, हिसाब भला ही ल्यो, और में तो थांके भरोस छूं, सो तो हूं ही, अब थांके तो इमान छे, थे तो कावल न सांवल कर सको छो, आज क दिन तो, और सारा दिन सरीसा तो न रहसी, कदे तो राम प्रताप बडो होसी, जें इंका आदमी बणा रहसी तो म्हारी बात बण जासी, सो थांने एक बार को लिख्यो सौ बार माणज्यो, जमादार को तो घर बिगड़ नहीं, सालूड़ा की हुरमत जीव जावे नहीं इंकी सरम थाने छै, और म्हारो तो बन्दोबस्त कर राख्यो छे, म्हारा आदम्यान मारे छे, सो राज तो भलाई ल्यो, पण कुजीव तो लेब्यो बोथ्यो छ नहीं, और समाचार नाथुराम जी कहसी, और मैं तो थांके भरोसे छूं सो नान्हा की सरम थांने छे, थे जयपुर जाज्यो। मिति ज्येष्ठ बदी चोथ सम्वत् 1884 (सन् 1827)

सार : यह पत्र सीकर राज की माजी राठौड़जी ने सेठ प्रेमसुखदास को लिखा है। पत्र में रावराजा रामप्रताप के शैशवकाल में राज की दुर्व्यवस्था का वर्णन है। पत्र में सेठों से बड़े मार्मिक शब्दों में अनुरोध किया गया है कि वे जयपुर राज को मामले के लिये इतनी सख्ती न करने के लिये कहें तथा यह भी कहा गया है कि इस शिशु (रामप्रताप) की रक्षा का भार आप पर है।

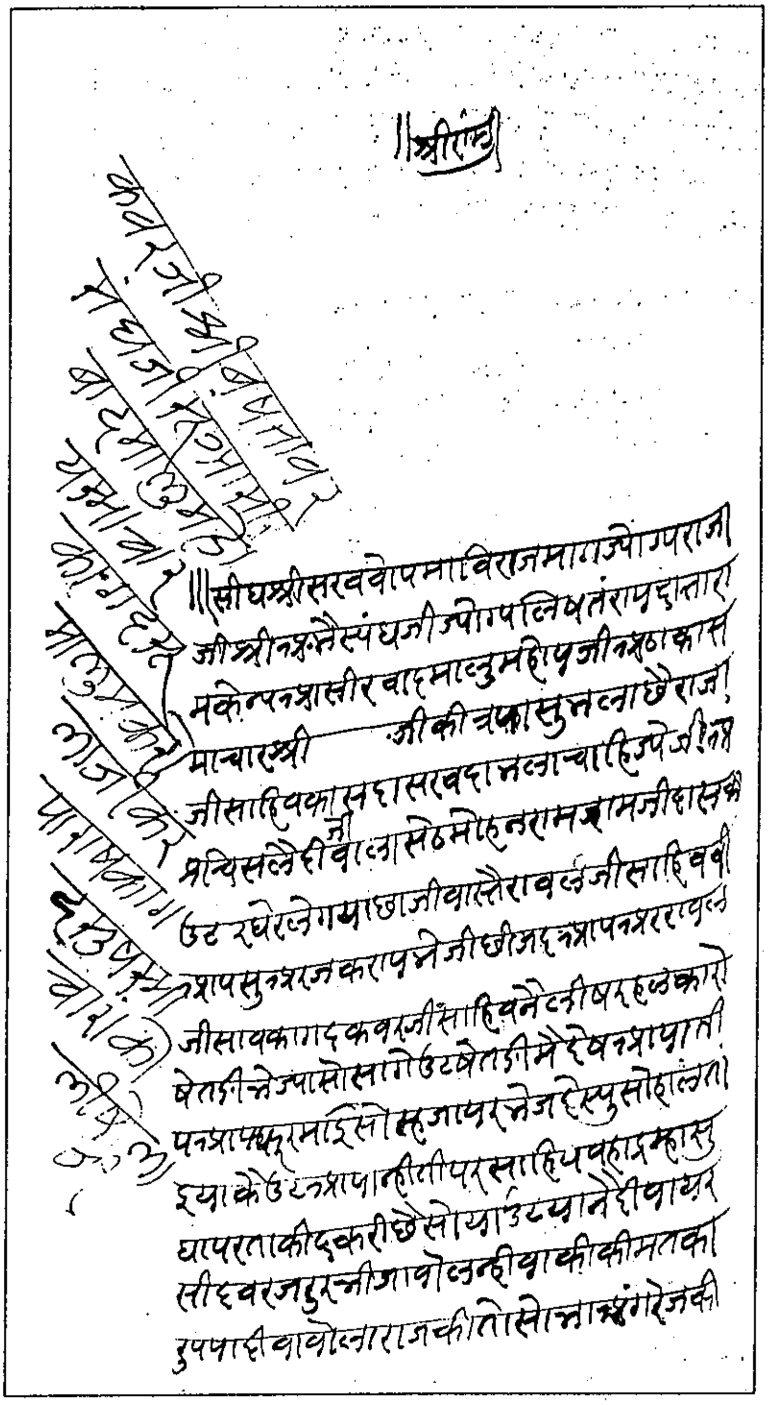


श्री राम जी

ली. मु. कीज्यो

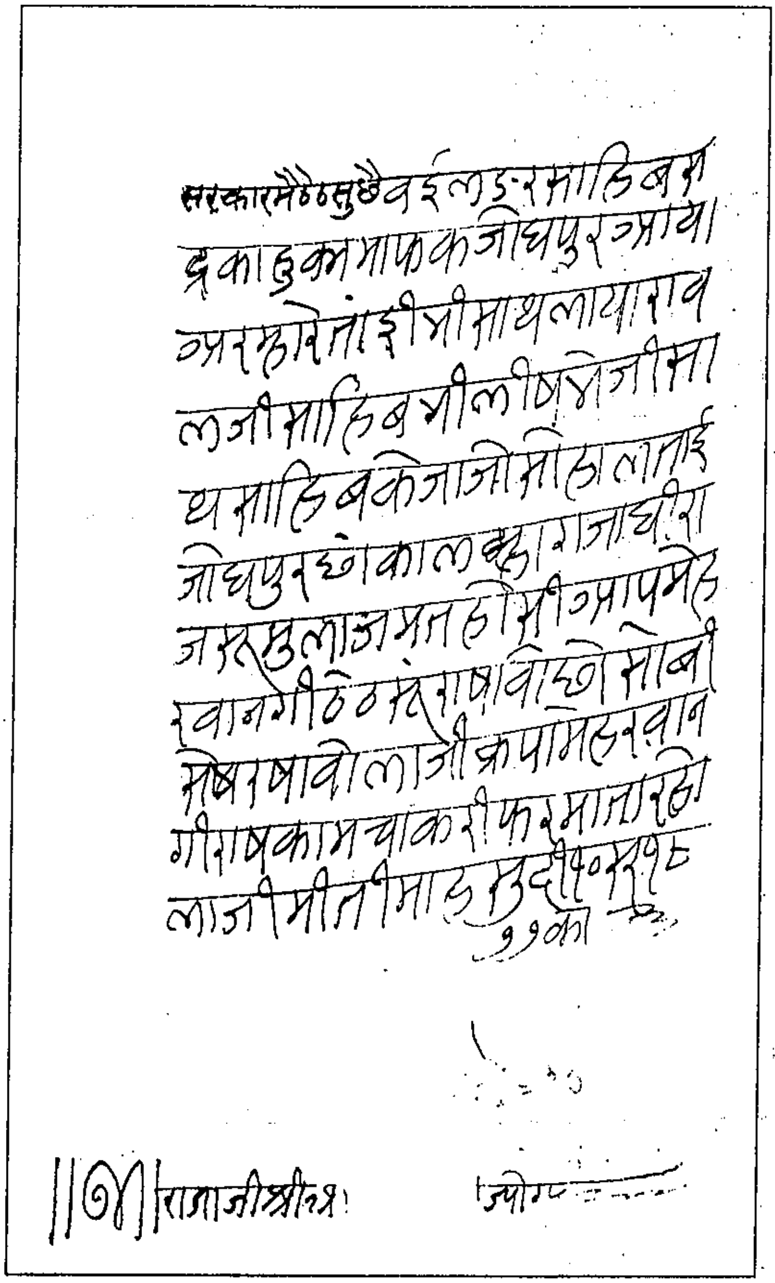
सेठ प्रेमसुखदास, गुमानीराम जोग लिखतम् महाराव राजाजी श्री लक्ष्मण सिंह जी केन जय रघुनाथ जी की बंचज्यो। अपरंच कागज आयो, बांचयो, लिखी डोरो पुराणो छ, जो तो दिखायो, अब सलाह आवे जयपुर सूंनयो मगाय भेज्यां, सो नयो तो नहीं, अबार तो डोरो पुराणों दिखायो जो, अर पाल एक और यह दोनों अठे पहुंचता कर दीज्यो और लिखी लोगां बाबत लिखी सो रिसालदारों ने ताकीद लिख दी छ, जापतो रखे, थे खुशी रहीजो, असो ढब विचारो छ, सो बारोठ्यांन सजा बेगी ही पहुंच सी। मिति पहला भादवा सुदी 14 सम्वत् 1890 का (सन् 1833)

सार : इस पत्र में रावराजा लक्ष्मणसिंह ने सेठों से डोरा (कंठी डोरा) भेजने को कहा है। साथ ही आश्वासन दिया है कि लुटेरों को सजा जल्दी ही दी जायेगी।



श्री राम जी

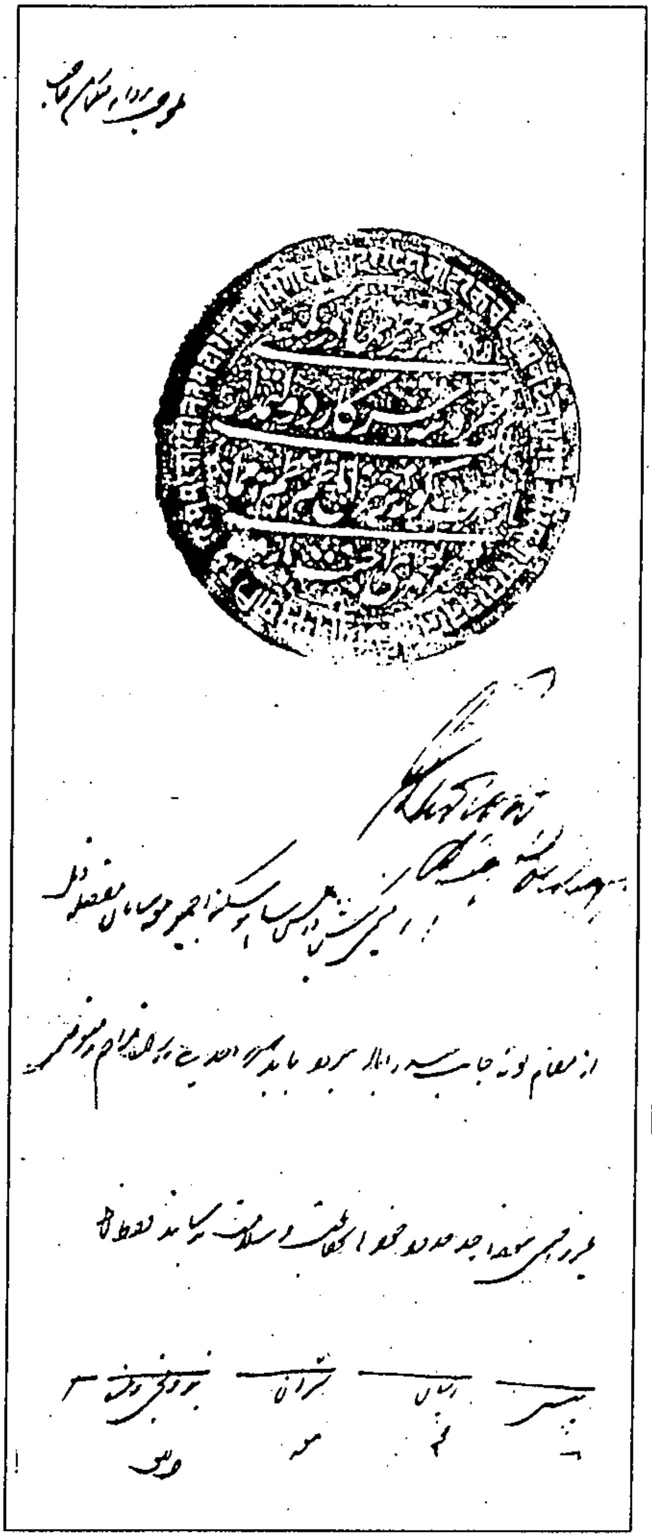
सिद्ध श्री सरवोपमा विराजमान जोग राजा जी श्री अभय सिंह जी (खेतड़ी नरेश) जोग लिखतम् रायदाताराम केन आशीर्वाद मालूम हुए जी। अठां का समाचार श्री श्रीजी की कृपा सूं भला छः। राजा जी साहब का सदा सर्वदा भला चाहिजे जी। अपरंच सलेदी जी वाला (उस जमाने के उपद्रवी) सेठ मोहनराम रामजी दास जी का ऊंट दोय घेर ले गया छा जी बाबत रावल जी साहब (जयपुर का तत्कालीन प्रधानमन्त्री) भी आप सूं अरज कराय भेजी थी। जद आप अर रावल जी साहब कागद (पत्र) कंवर जी साहब ने लिखर हलकारो खेतडी भेज्यो सो सागे ऊंट (वो ही ऊंट) खेतडी में देखबाम आया तींपर आप फरमाई सो में जायर भेज देस्यूं, सो हाल तांही आंके ऊंट आया नहीं, अर साहब बहादुर म्हासूं भरपूर ताकीद करी छ, सो ऊंटा ने दीवायार (दिवाकर) रसीदं जरूर भिजावो ला। नहीं तो यांकी कीमत का रुपया दिवावोला। राज की शौभा अंग्रेज की सरकार में ठेठ सूं (सदा सूं) है/छ। बरलेंड साहब बहादुर का हुक्म माफिक

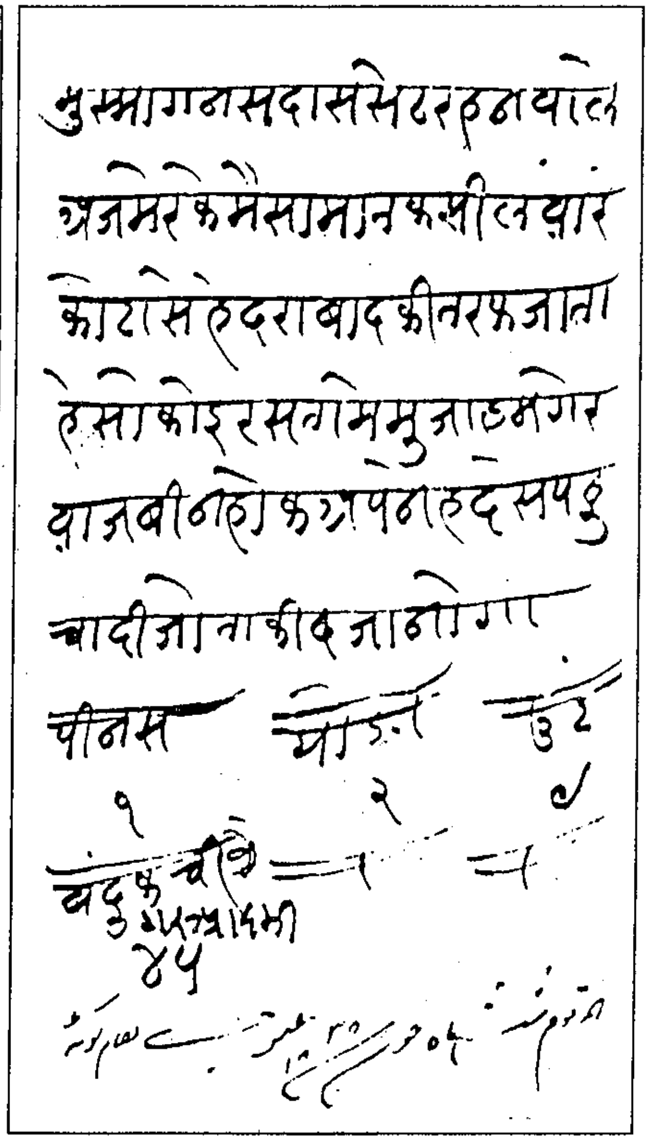


जोधपुर आया और म्हारे तांई भी साथ लाया। रावल जी साहब भी लिख भेजी, साथ साहिब के जाज्यो, सो हालतानी जोधपुर छा, काल सूं राजाधिराज सूं मुलाजमत होसी, आप मेहरबानगी उठसूँ रखवाबो छो, सो अब भी रखवावोला जी, कृपा मेहर. बानगी राख कर काम चाकरी फरमाता रहोला जी। मिति माह सुदी दशमी (10) सम्वत् 1877 (सन् 1820)

कंवर जी श्री भक्तावर सिंह सूं आशीर्वाद मालूम होय, समाचार कागद सूं मालूम करोला जी। कृपा राख कागद सब समाचारों का लिखोला जी।

सार : यह महत्त्वपूर्ण पत्र राय दाताराम ने खेतड़ी राजा जी श्री अभय सिंह को भेजा है। पत्र में कहा गया है कि सेठों के ऊँट सलहदी वाले चुराकर ले गये थे जिसके बावत आपको जयपुर के दीवान वैरिसालजी ने भी कहा था। आपने भिजवाने की बात कही थी पर अभी तक नहीं भिजवाये। अब साहब बहादुर मेरे से बहुत ताकीद कर रहे हैं सो आप जल्दी उँट भिजवावोगे। यह पत्र भी गनेड़ीवाला सेठों की पहुँच और उनके प्रभाव का द्योतक है।





मुसम्मा गनेसदास सेठ रहनवाले
अजमेर के मै सामान फसीलवार
कोटा से हेदराबाद की तरफ जाता
हे सो कोइ रसता मे मुजाहम गेर
वाजबी न हो के अपनी हद से पहु
चादीजो ताकीद जानोगा
पीनस घोड़ा ऊंट
१ २ ७
बंदूकची ७
आदमी
४५

श्री राम जी

मुसम्मा गनेष दास सेठ रहने वाले अजमेर के मय सामान फसीलवार कोटा से हैदराबाद की तरफ जाते हैं सो कोई रस्ता में मुजाहम गेर-वाजबी न होके अपनी हदो से पहुचा दिजो-ताकीद जानोगा

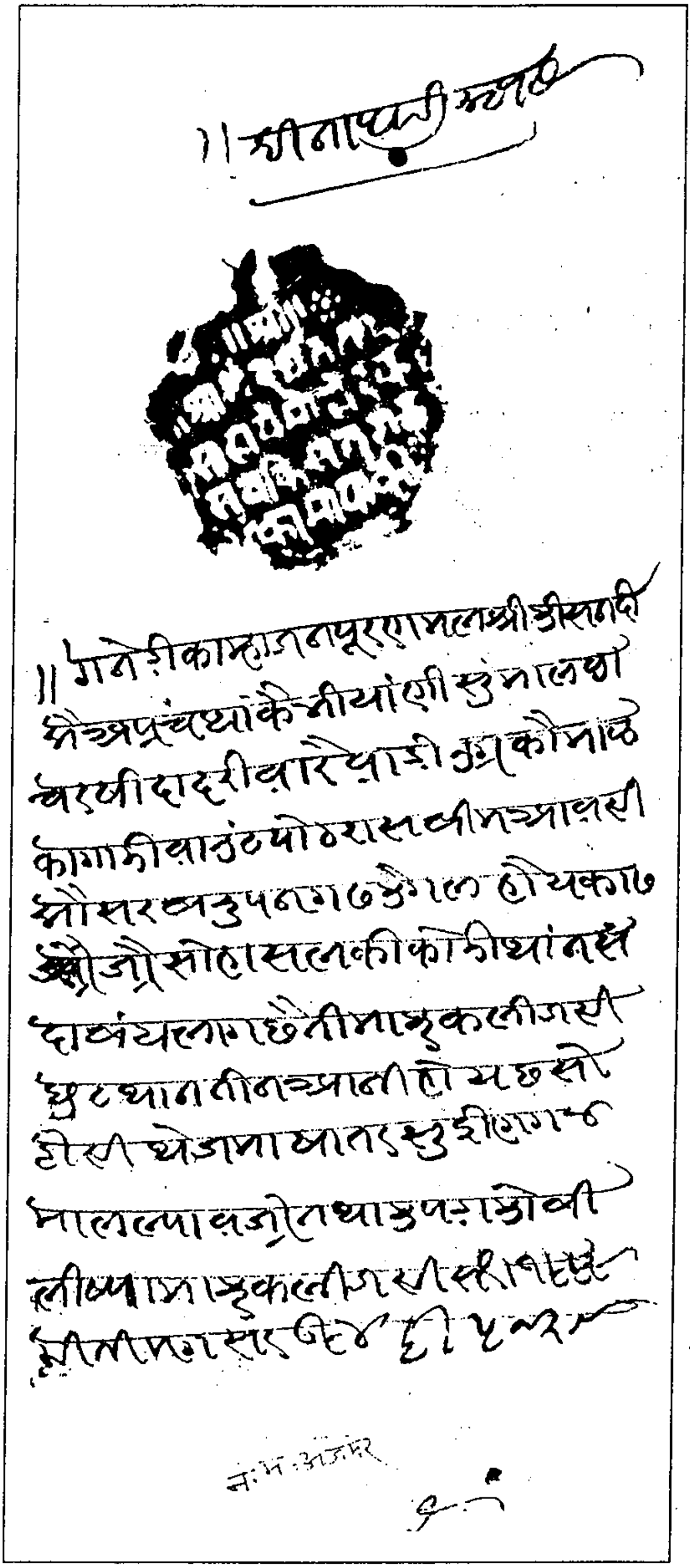
पीनस	घोडा	ऊँट	बंदूकची	आदमी
1	2	7	7	45

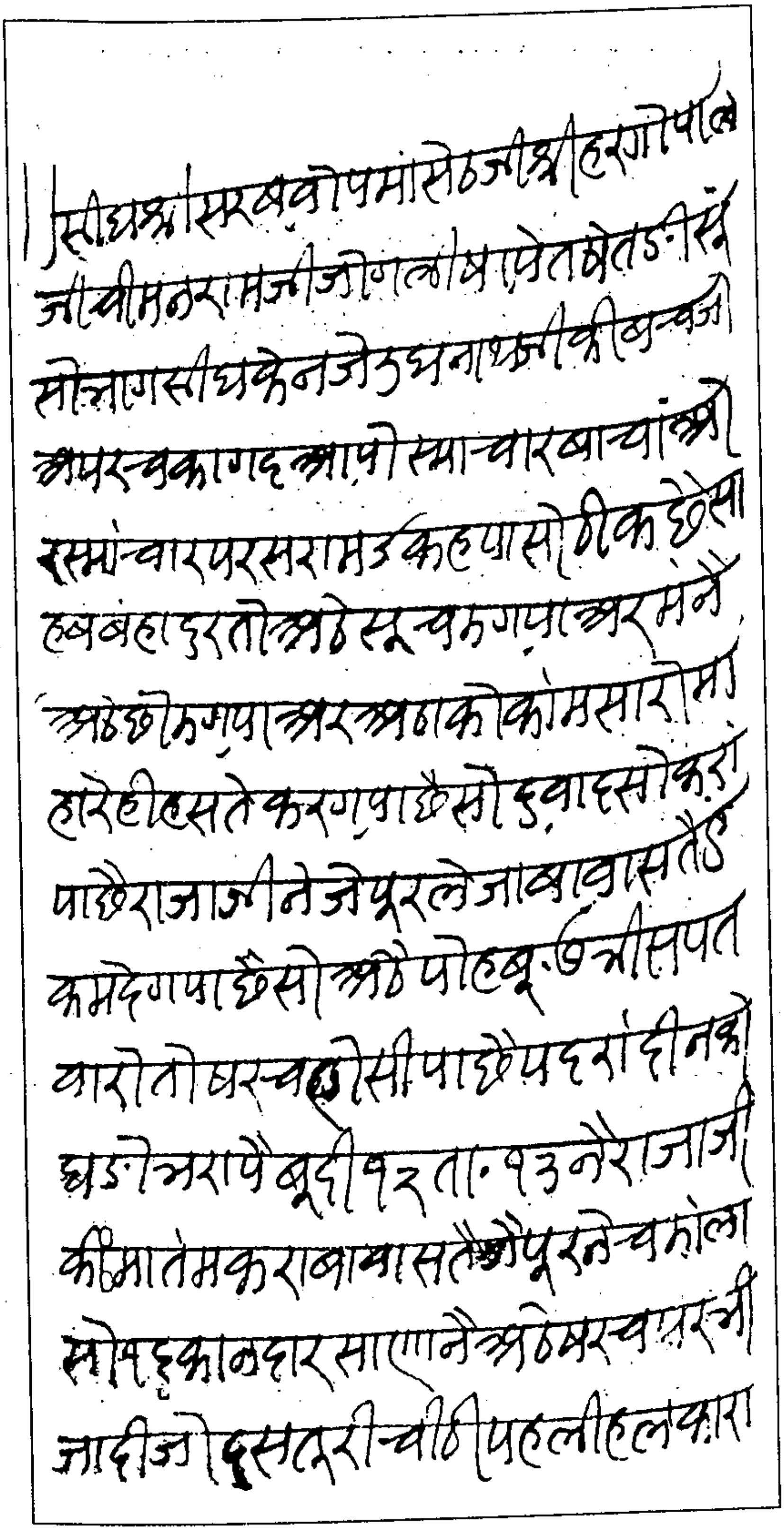
श्री नाथ जी सहाय

मोहर किशनगढ स्टेट

गनेड़ी का महाजन पूरणमल जी श्री किशन दासजी। अपरंच थांके बिहाणी सूं माल चरखी दादरी व रिवाड़ी वगैरा को माल की गाड़ी व ऊंट पोठ रासबी में (गधों पर) आवसी सो सरब रूपनगढ के गेले (रास्ते) होय काढज्यो सो हांसल (कर) की कोड़ी थाने सदा बन्ध (हमेशा) लागछ ती माफिक लागसी - छूट थाने तीन आनी होय छ सो होसी। थे जमा खातरी सूं इण गेले माल लाज्यो तथा कपड़ा को भी लिखा माफिक ली जासी। सम्वत् 1889 मिति मंगसिर सुदी चौथ (4) (सन् 1832)

सार : यह किशनगढ राज्य का पत्र है जिसमें लिखा है कि आपके व्यापारिक मालपर जो इस राज्य में से होकर जायगा तीनआने कर में छूट होगी। पत्र श्री किशनदास को लिखा गया है।



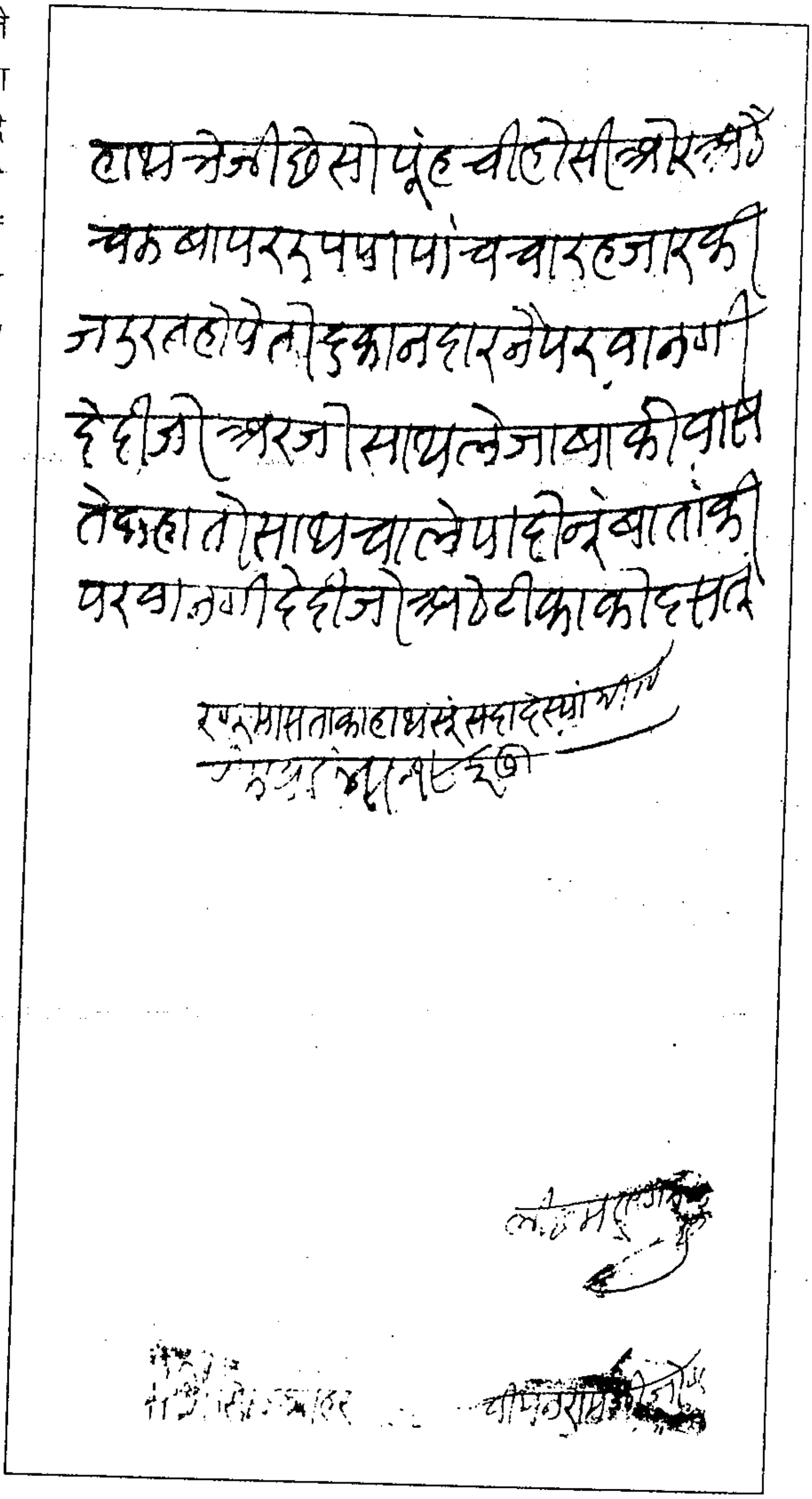


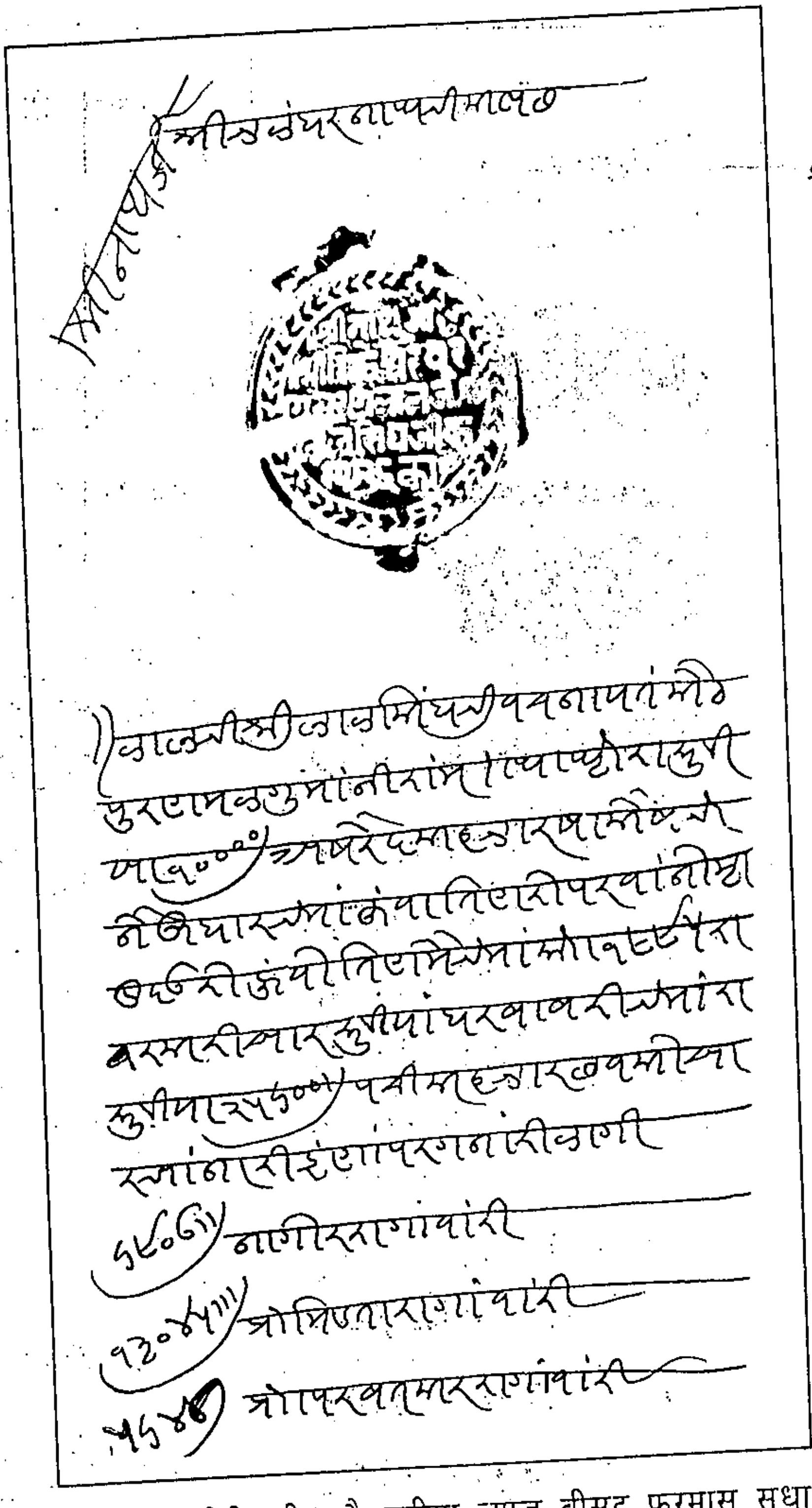
श्री राम जी

सिद्ध श्री सरवोपमा सेठ जी श्री हर गोपाल जी चिमनरामजी जोग लिखायतम् खेतड़ी से शोभाग सिंह (प्रधानमंत्री) केन जय रघुनाथ जी की बंचज्यो। अपरंच कागद आयो, समाचार बांचा और समाचार परसराम जी कहा सो ठीक छ। साहब बहादुर तो अठा सूं चढ गया, हर मनै अठे छोड गया, हर अठां को काम सारो म्हार ही हस्त कर गया छ। सो द्वादसो करया पाछ राजाजी ने जयपुर लेजाबा वास्त हुकम दे गया छ। सो अठ पोष बदी सात बृहस्पतवारो सो खर्च होसी। पाछ 15 दिन को घड़ो भराय - बदी बारस या तेरस (12 या 13) ने राजाजी की मातम करबा वास्त जयपुर न चढांगा। सो दुकानदार साणयां न अठे खर्च पर भीजा दीज्यो - दस्तूरी चिटठी पहली हलकारा हाथ भेजी छ सो पूचीं होसी और अठे चढबा पर रुपया पांच चार हजार की जरूरत होवे तो दुकानदार न परवानगी (इजाजत) दे दीज्यो और जो

साथ ले ज्याबा के वास्ते कहां तो साथ चाले, या दोनु बातां की परवानगी दे दीज्यो। अठ टीका को दस्तूर गुमास्ता के हाथ सं सदा देस्यां। सम्वत् पोष बदी सात (7) सम्वत् 1927 (1870)

सार : यह पत्र खेतड़ी के सौभागसिंह ने सेठ चिमनराम को लिखा है। पत्र में उल्लेख है कि साहब बहादुर सारा काम मुझे सौंप गये हैं। अब मातमी के लिये जयपुर जावेगा सो आपका आदमी खर्च की व्यवस्था करने के लिये भेज देना।





श्री नाथ जी

श्री जलंधर नाथ जी सहाय छै

।। लाल जी श्री लाल सिंघ जी वचनायतं सेठ पुरणमल गुमानीराम तथा थ्हांरा रुपीया 10000 अखरै दस हजार खासै खजानै ऊधारा जमां हुआ तिणरो परवानो म्हासु दिरायो तिण में जमां सं. 1895 का बरसरी चार रूपीया घर बाबरी जमारा रूपीया पचीस हजार छव सो च्यार आंना की इंणां परगनां की लागी

6907 रु. 8 आना नागोर का गांवां की

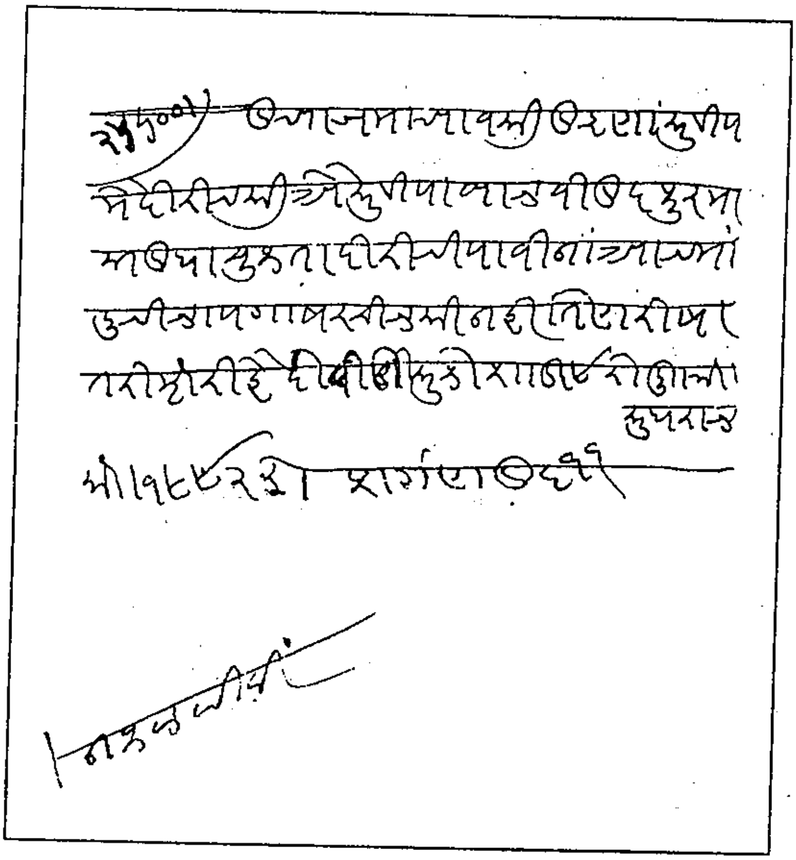
13045 रु. 12 आना प्र. मिड़ता (परगना मेड़ता) का गांवां की

5687, प्र. परबतसर का गांवां की

25600 रु. 4 आना सु आ जमां आवसी सु इंणा रुपीया में दीरीजसी। अै रुपीया ब्याज वीसुद फुरमास सुधा चुकता दीरजीया वीनां, आ जमां दुजी जायगां खरची नसी नही। तिणरी खातरी म्हारी है। दाई रो रुको फा सुदी 9 को प्र. भा. रुघराज

सं. 1892 का फागण सुदी 11

सार : यह पत्र महाराजा जोधपुर के मुसाहिब की ओर से सेठ श्री गुमानीराम को लिखा गया है। पत्र में उल्लेख है कि आपके 25600 रु. चार आने गांवों के राजस्व से चुकाये जावेंगे। गांवों की तथा राजस्व की विगत दी गयी है।



(चित्र पृष्ठ संख्या 372 पर)

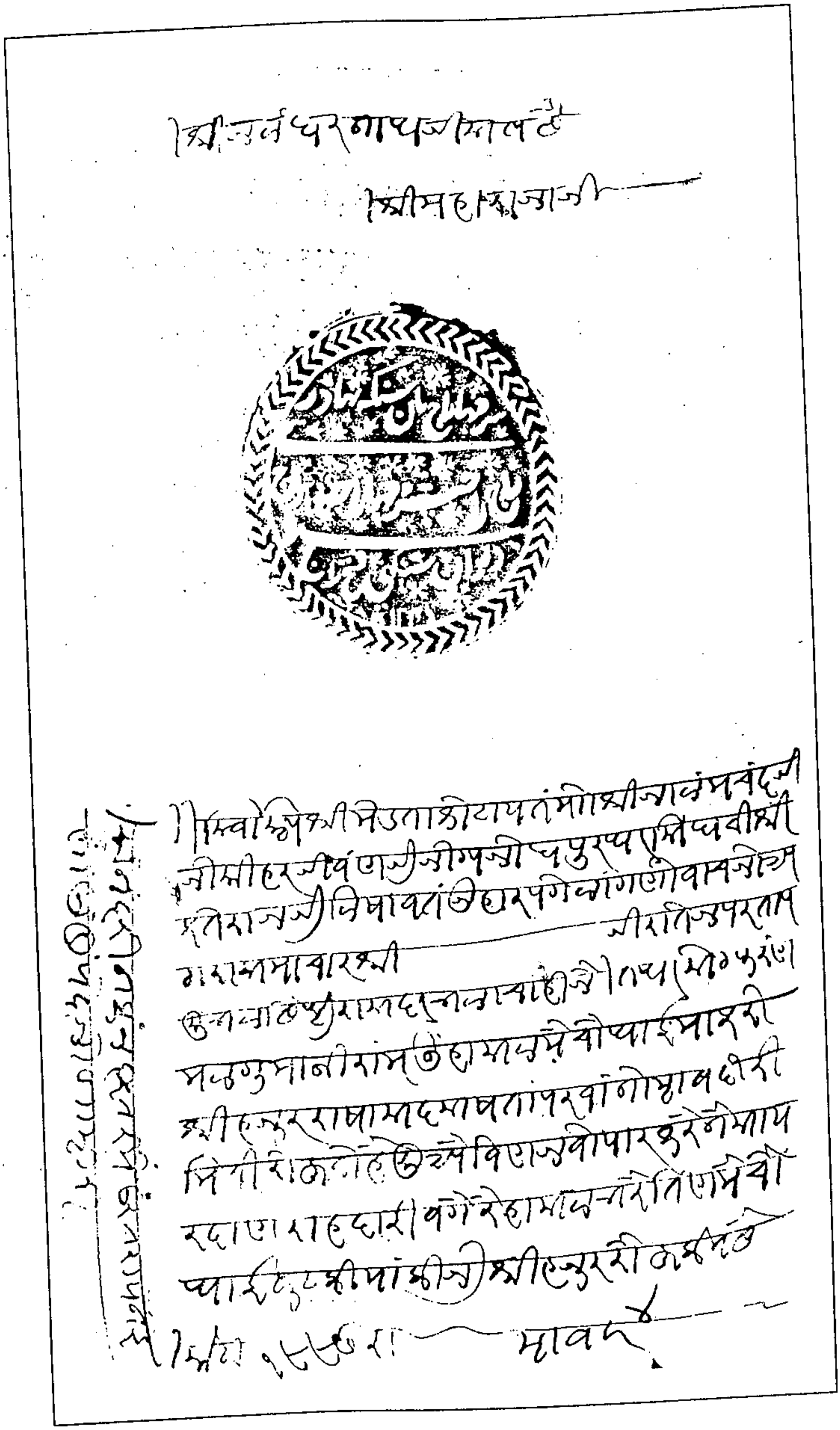
श्री जलंधर नाथ जी सहाय,

श्री महाराजा जी,
मोहर छाप

स्वस्ति श्री मेड़ता को लिखतम् श्री जालम चन्द जी जोशी हरजीवन जी जोग जोधपुर सूं सिन्धवी श्री फतेहराज जी लिखायतम् जुहार पगे लगणा बांचज्यो, अठां का समाचार श्री जी तेजप्रताप सूं भ्ला छै, श्री रा सदा भला चाहिजे, तथा सेठ पूर्णमल गुमानीराम ने हासिल में चौथाई माफ री श्री हजूर राख्या, सीद लिखैता परवानों माह बदीरी मितिरो हुवो है, सो अे बिनज व्योपार करने मायर दाण रोहदारी वौरा हासिल भरै, तिणमें चौथाई छूट किया कीज्यो, श्री हजूर रो हुकम छै। माह बदी चौथ (4) सम्वत् 1887 (सन् 1830)

कागज री नकल दफ्तर में उतरायी गई। नकल लेवी श्री हजूरर दफ्तर।

सार : यह पत्र जोधपुर के दीवान सिंघवी फतेराज की ओर से जोशी हरजीवन को लिखा गया है। पत्र में सूचना दी गयी है कि सेठ गुमानीराम को व्यापार करने के लिये हासिल में एक चौथाई छूट महाराजा साहिब ने दी है।



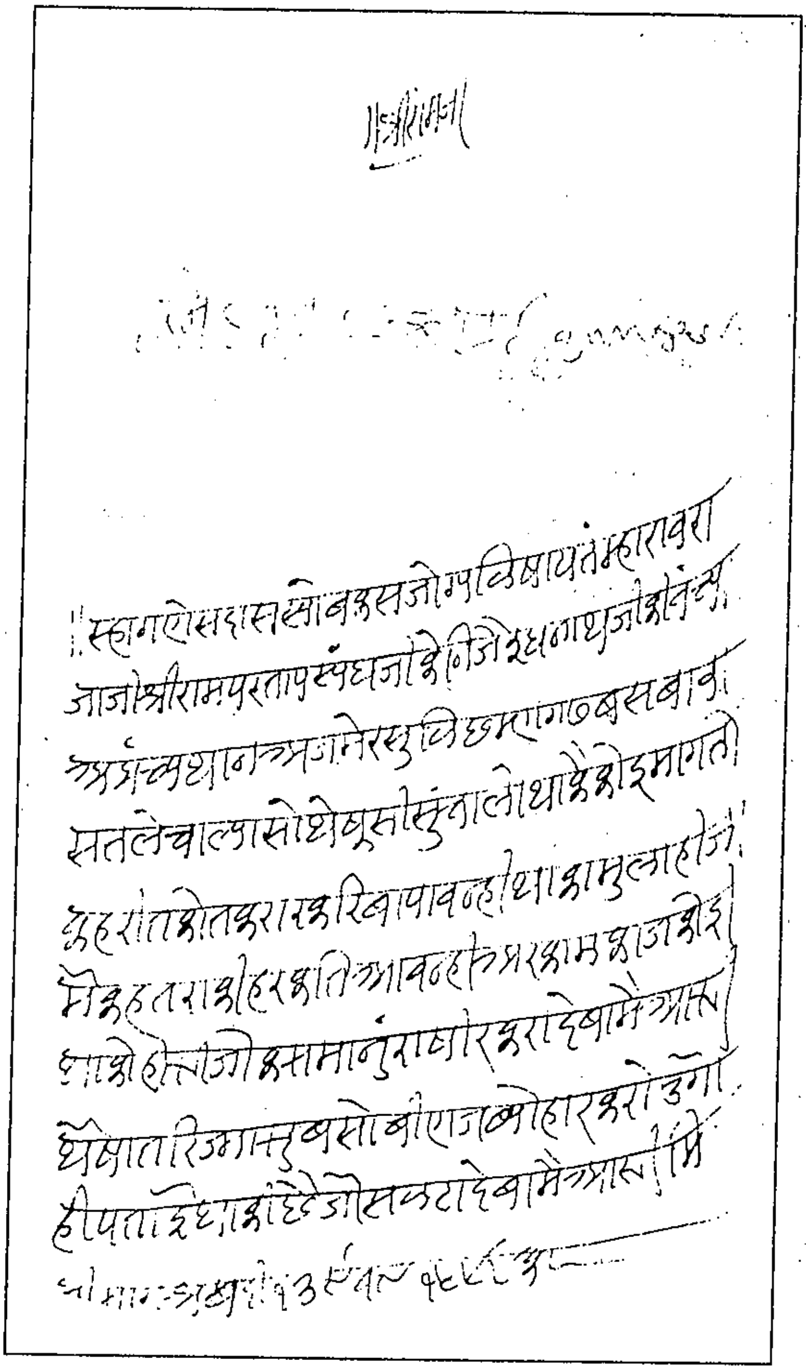
श्री जलंधरनाथजी सहाय छै

श्री महाराजाजी

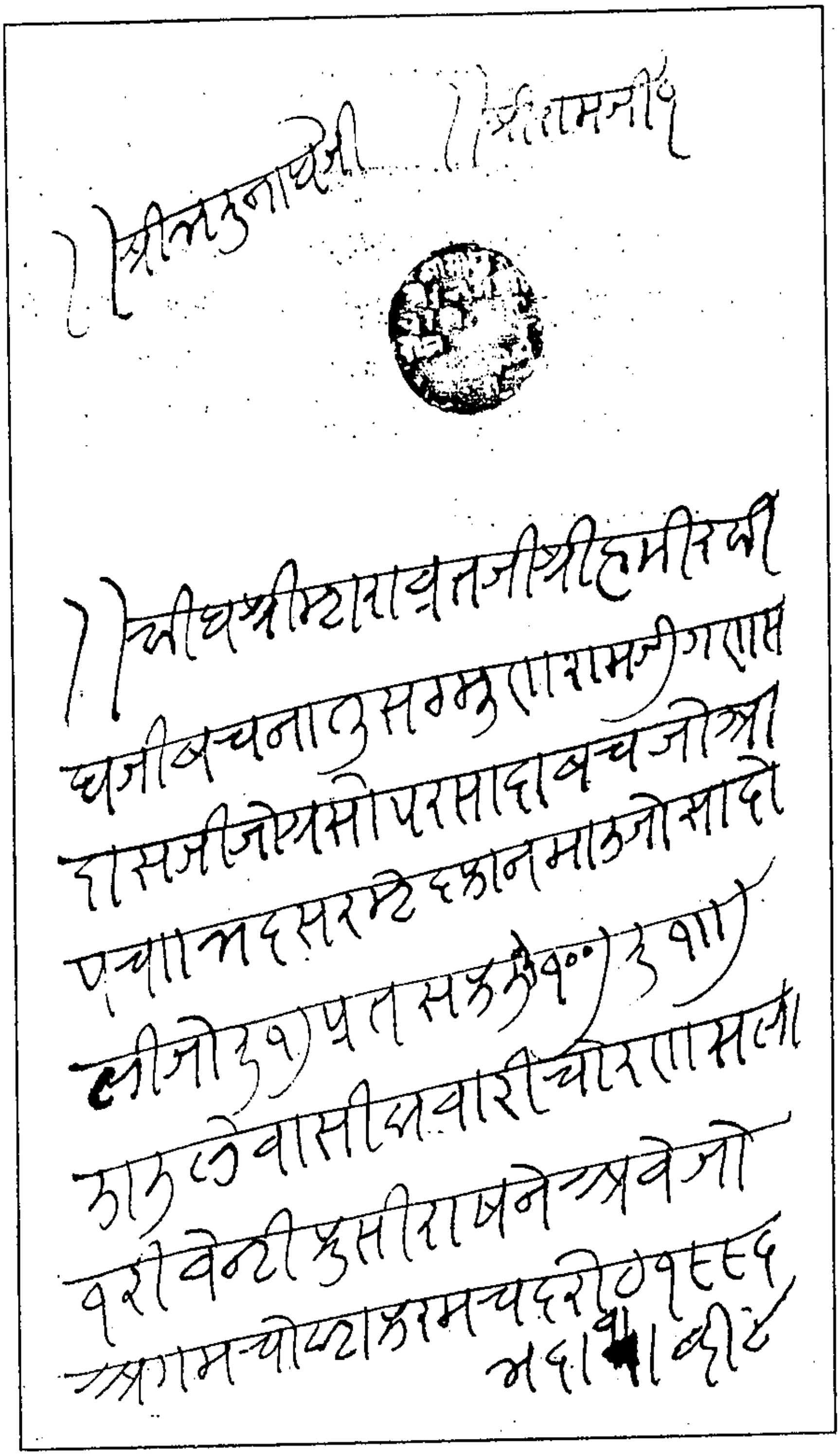
श्री राम जी

लि. मु. की.

साह गणेशदास शोबकस जोग लिखायतम् महाराव राजा जी श्री राम प्रताप सिंह जी केन जय रघुनाथ जी की बंचज्यो। अपरंच थाने अजमेर सूं लक्ष्मणगढ बसबा वास्ते ले चाल्या, सो थे खुशी सूं चालो, थांके कोई भांत को, के रीत को तकरार करीबा पावे नहीं, थांका मुलाहिजा में कें तरह की हरकत आवे नहीं, और काम-काज कोई थांका हो सी जो कसमानु राखीर करा देबा में आसी, थे खातरी जमा सूं बसो बीनज व्यापार करो, उगाई पताई थांकी छ जो सलटा देबा में आसी। मिति मंगसर बदी तेरस (13) सम्वत् 1899 का (सन् 1842)



सार : यह पत्र रावराजा रामप्रताप ने सेठ शोबकस को लिखकर सूचना दी है कि आपको अजमेर से लक्ष्मणगढ़ बसने के लिये ले जा रहे हैं। आप निश्चिंत होकर व्यापार करें। आपकी उगाही वगैरह सलटा दी जावेगी।

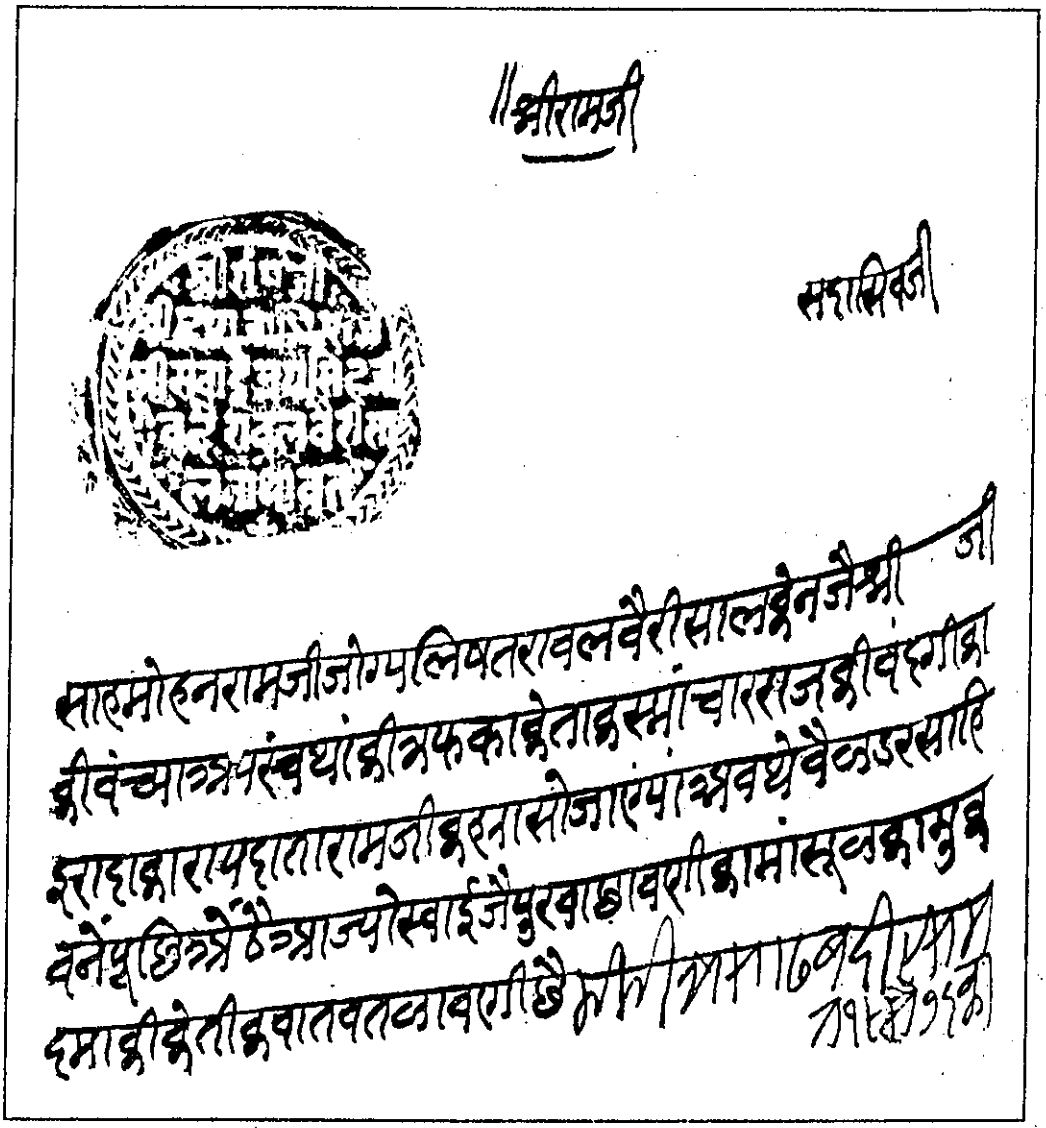


श्री राम जी, श्री भैरोनाथ जी

मोहर छाप

सिद्ध श्री महारावत जी श्री हमीर सिंह जी बचनात सेठ मोहनराम जी, गणेशदास जी जोग सो परसादा बंचज्यो। श्री प्रचार भदसर में दुकान माढज्यो, साद लीज्यो, रुपयो एक प्रति सैंकड़ा, रुपयो 1.50 डाद लेवा सी, सवारी चोरण सली एक री वेन्टी कुसी राखो अवेला, अगम चेष्टा करम चदरो भादवा बदी एकम (1) सम्वत् 1886 (सन् 1829)

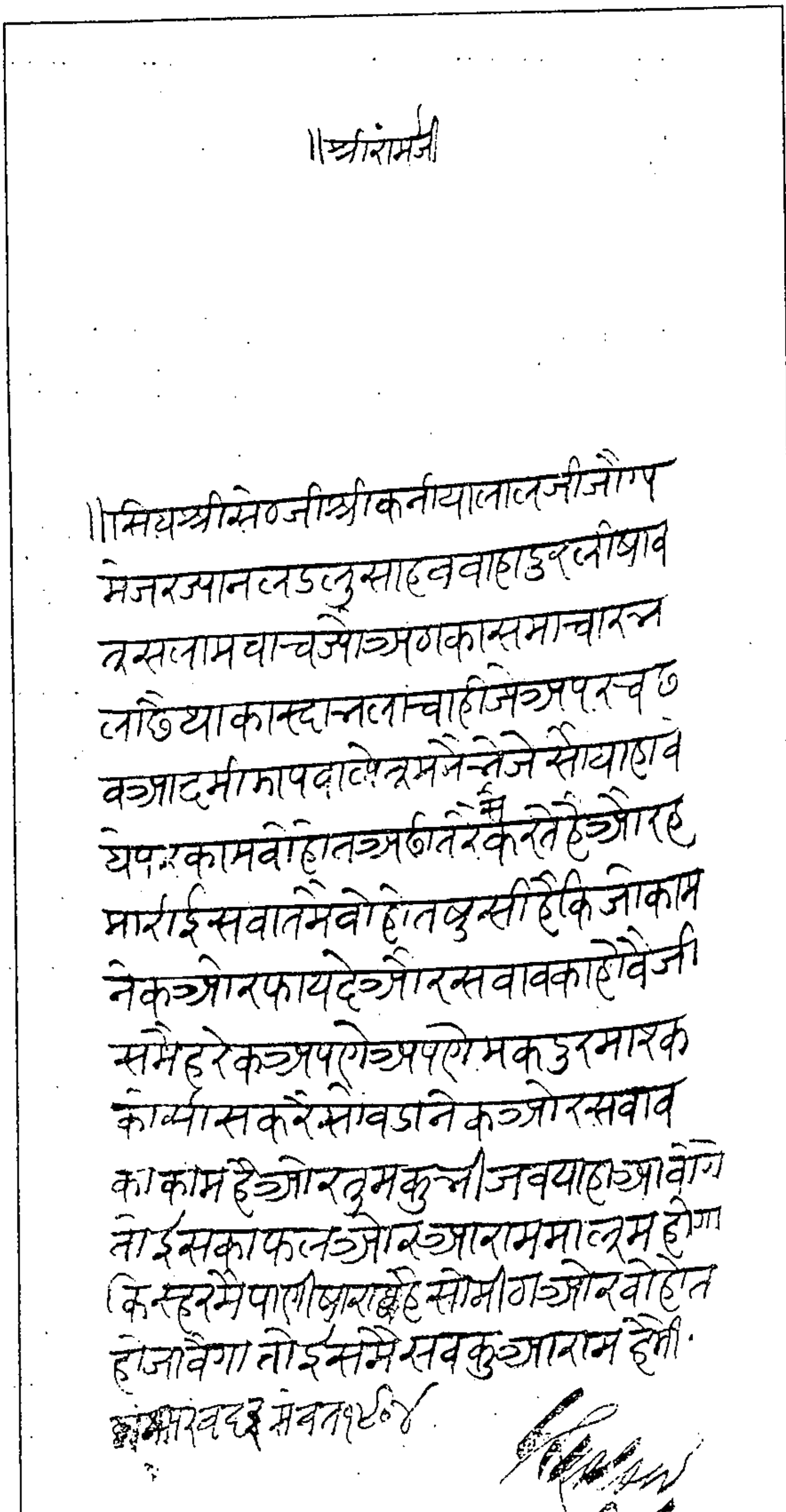
सार : यह पत्र राजा हम्मीरसिंह द्वारा सेठ गणेशदास को लिखा गया है। पत्र में भदेसर में दूकान करने का अनुरोध किया गया है।



श्री राम जी

साह मोहन राम जी जोग लिखायतम् रावल बैरी साल (जयपुर के प्रधानमन्त्री) केन जय श्री जी की बांचज्यो। अपरंच थांकी तरफ का कित्ताक समाचार राज की बंदगी का इरादा का रायदाता राम जी कहया, सो जाणा। अब थे बलेन्डर साहिब ने पूछी अठे आज्यो। सवाई जयपुर व छावणी का कामा सूं व बंका मुकदमा की कित्तीक बात बतलावणी छ। मिति आषाढ बदी नौमी (9) सम्वत् 1876 (सन् 1819)

सार : यह पत्र जयपुर के दीवान बैरिसाल का साह मोहनराम के नाम है। इसमें श्री मोहनराम को सलाह करने के लिये जयपुर बुलाया गया है। इसमें उनकी उपस्थिति को कई बातों के सम्बन्ध में विचार करने के लिये आवश्यक बताया गया है।

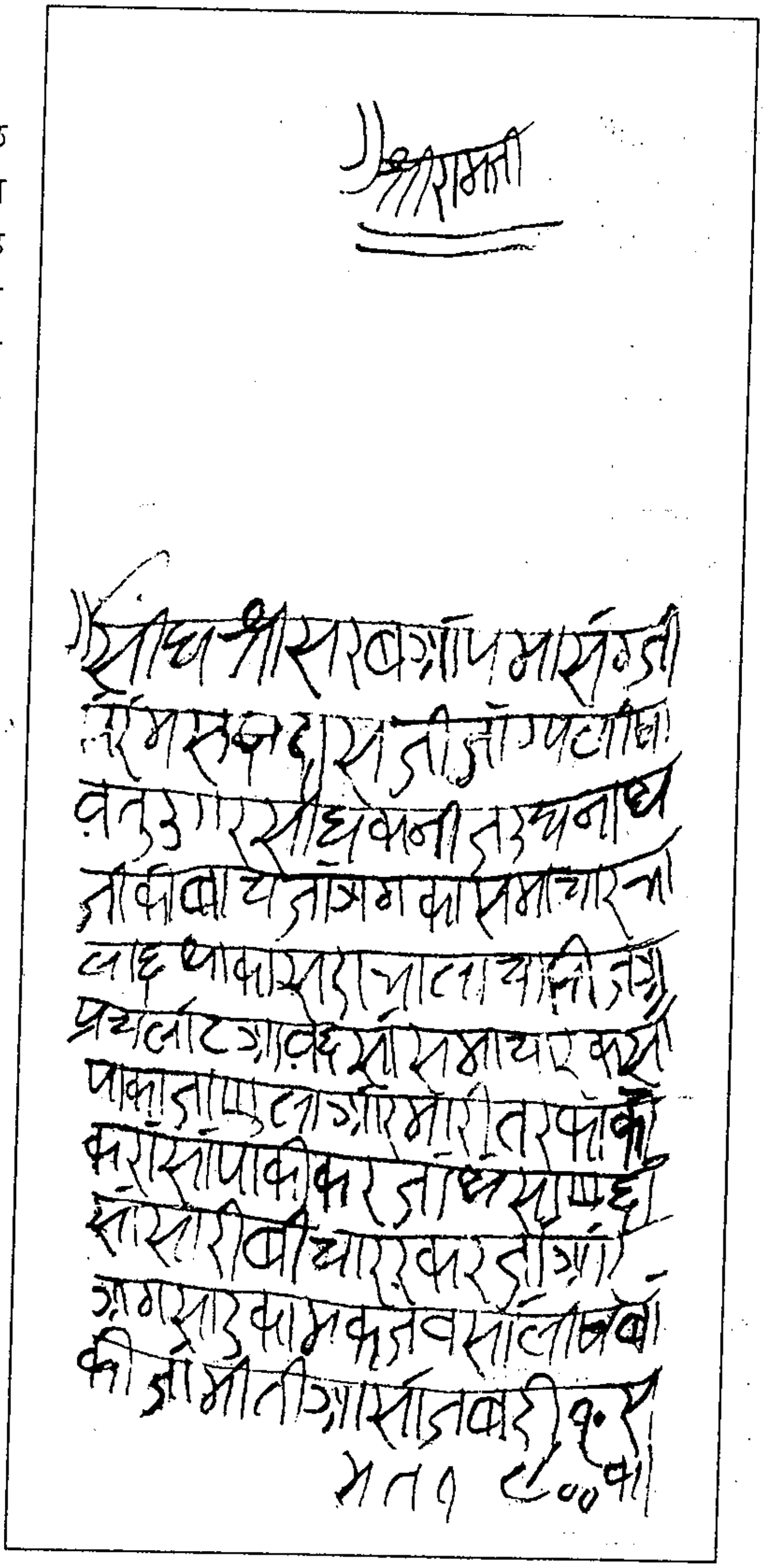

॥श्रीरामजी

॥सिधश्रीसेठजीश्रीकनीयालालजीजोग
मेजरज्यानलडलुसाहववाहादुरलीखाय
तसलामवाचजोअठाकासमाचारभ
लाछैथाकासदाभलाचाहीजेअपरचछ
आदमीडापवालेतुमभेजेसोयाहाव
घेपरकामवोहोतअछीतरैसेकरतेहैंओरह
मारीईसवातमेवोहोतखुसीहैकिजोकाम
नेकओरफायदेओरसवावकाहोवेजी
समेहरेकअपणेअपणेमकदुरमाफक
कोसीसकरेसोवडानेकओरसवाव
काकामहैओरतुमकुभीजवयाहाआवोगे
तोईसकाफलओरआराममालुमहोगा
किसहरमेपाणीखाराहैसोमीठाओरवोहोत
होजावेगातोईसमेसवकुआरामहोगी
मगसरवद३संवत१९०४

श्री राम जी

सिद्ध श्री सेठ जी श्री कन्हैया लाल जोग मेजर ज्यान लुड़लो साहब बहादुर लिखायतम् सलाम बांचज्यो। अठां का समाचार भला छ, थांका सदा भला चाहिजे। अपरंच छ आदमी ड़ापवाले तुमने भेजे सो यहां वे घेपर काम बहुत अच्छी तरह से करते हैं और हमारी इस बात में वे बहुत खुशी हैं कि जो काम नेक और फायदे और सबाब का होवे जिसमें हरेक, अपने-अपने मकदूर माफिक कोशिश करे सो बड़ा नेक और सबाब का काम है, और तुमको भी जब यहां आओगे तो इसका फल और आराम मालूम होगा कि शहर में पाणी खारा है सो मीठा और बहुत हो जायेगा, इसमें सबको आराम होगा। मिति मंगसर बदी तीज (3) सम्वत् 1904 (सन् 1847)

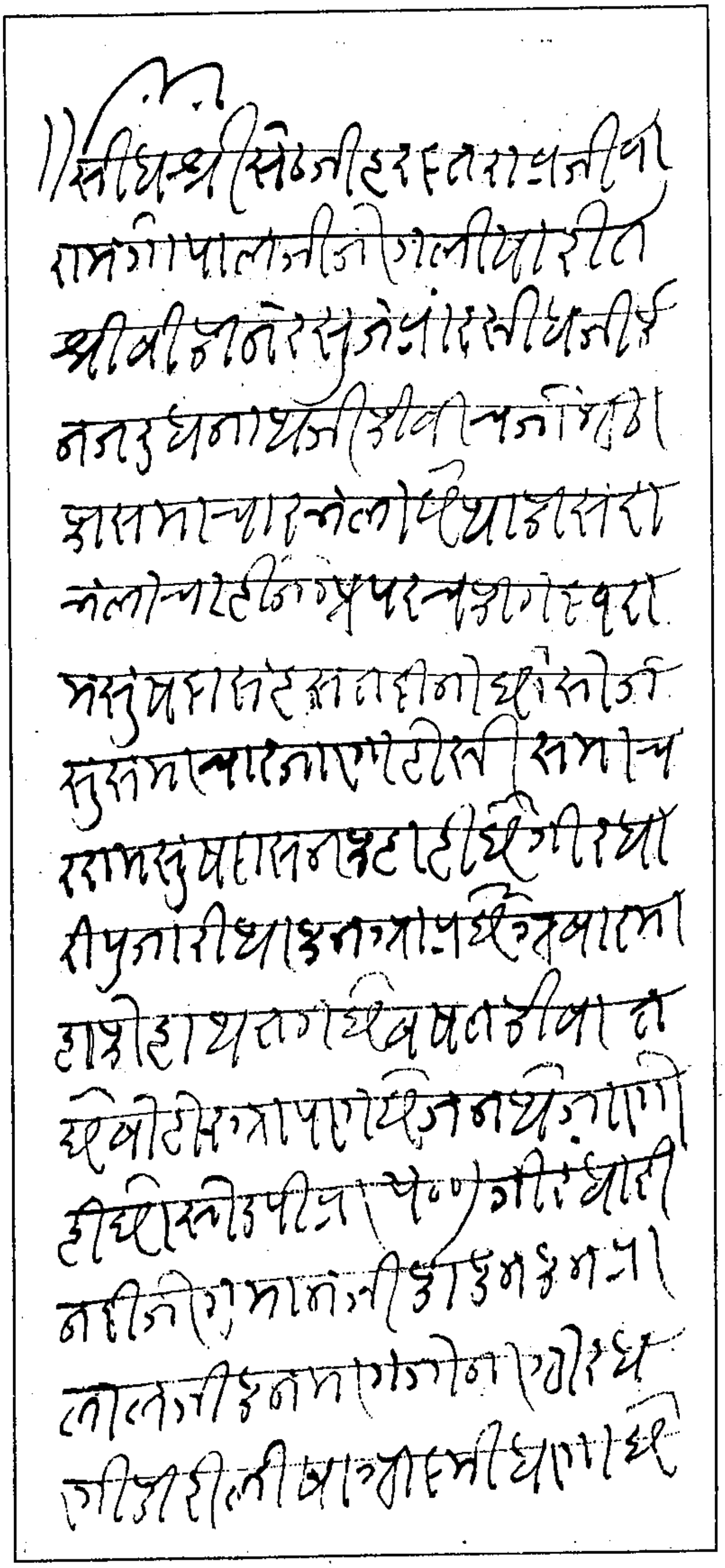
सार : यह पत्र जयपुर के एजेन्ट मे. लुड़लो का सेठ कन्हैयालाल के नाम है जिसमें कूवों का पानी ठीक कराने के लिये उनके सहयोग की सराहना की गयी है।



श्री राम जी

सिद्ध श्री सरवोपमा सेठ जी परेम सुख दास जी हरगोपाल जी जोग लिखतम् डूंगर सिंह केन जय रधुनाथ जी की बांचज्यो। इ अठा का समाचार भला छ थांका सदा भला चाहिजे छ। अपरंच लोठ आवे छ सो समाचार केसी यांका जाणो ला और म्हारी तरफ को कराया सो यांकी करज्यो। थे सयाणा छो सो सारो विचार कर दियो और अठा सारू काम-काज होवे छ सो लिखबो कीज्यो। मिति आसोज बदी 10 (दशमी) सम्वत् 1900 (सन् 1843)

सार : यह पत्र शेखावाटी के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी डूँगजी द्वारा प्रेम सुख दास को लिखा गया है। पत्र में लोठ (प्रसिद्ध लोटिया जाट) को भेजने की बात कही गयी है तथा कहा गया है कि आप मेरे समान ही लोठ को समझना। यह पूरे समाचार कहेगा। स्मरण रहे डूँगजी जवाहरजी से गनेड़ीवाला सेठों के निकट के सम्बन्ध थे।

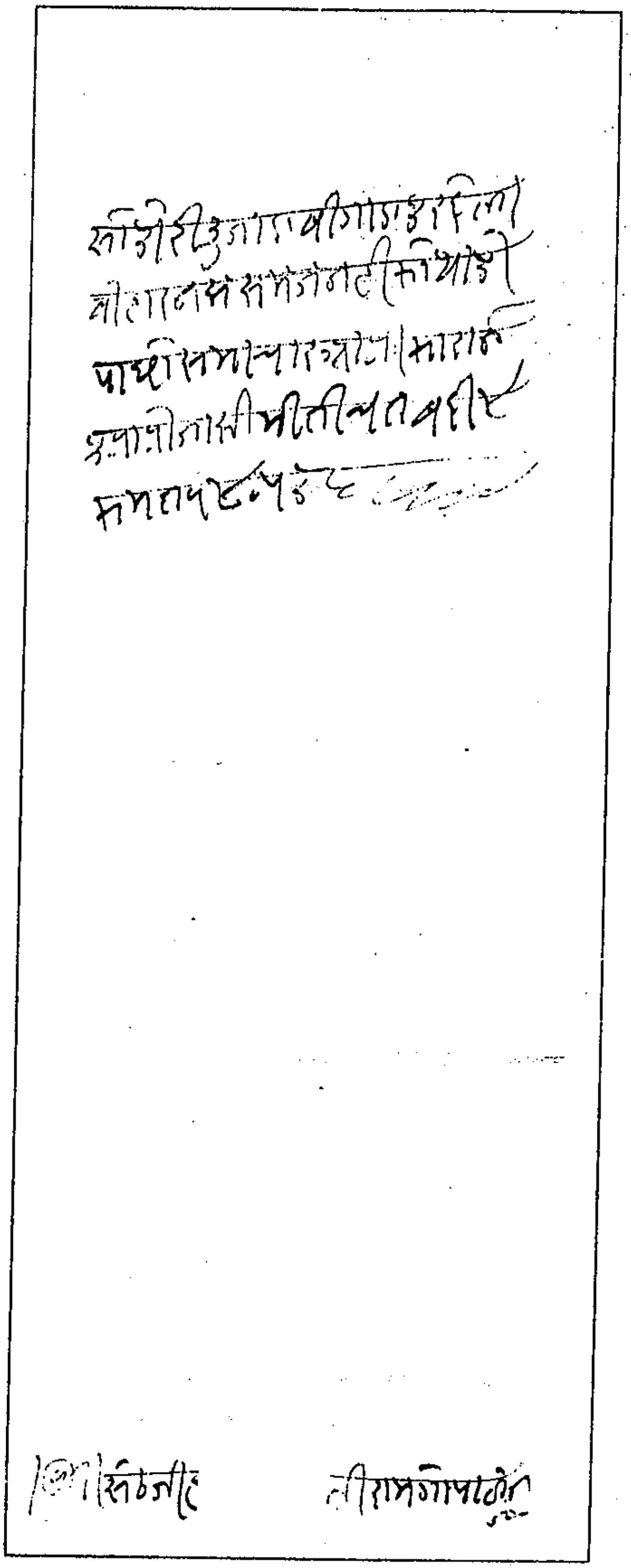


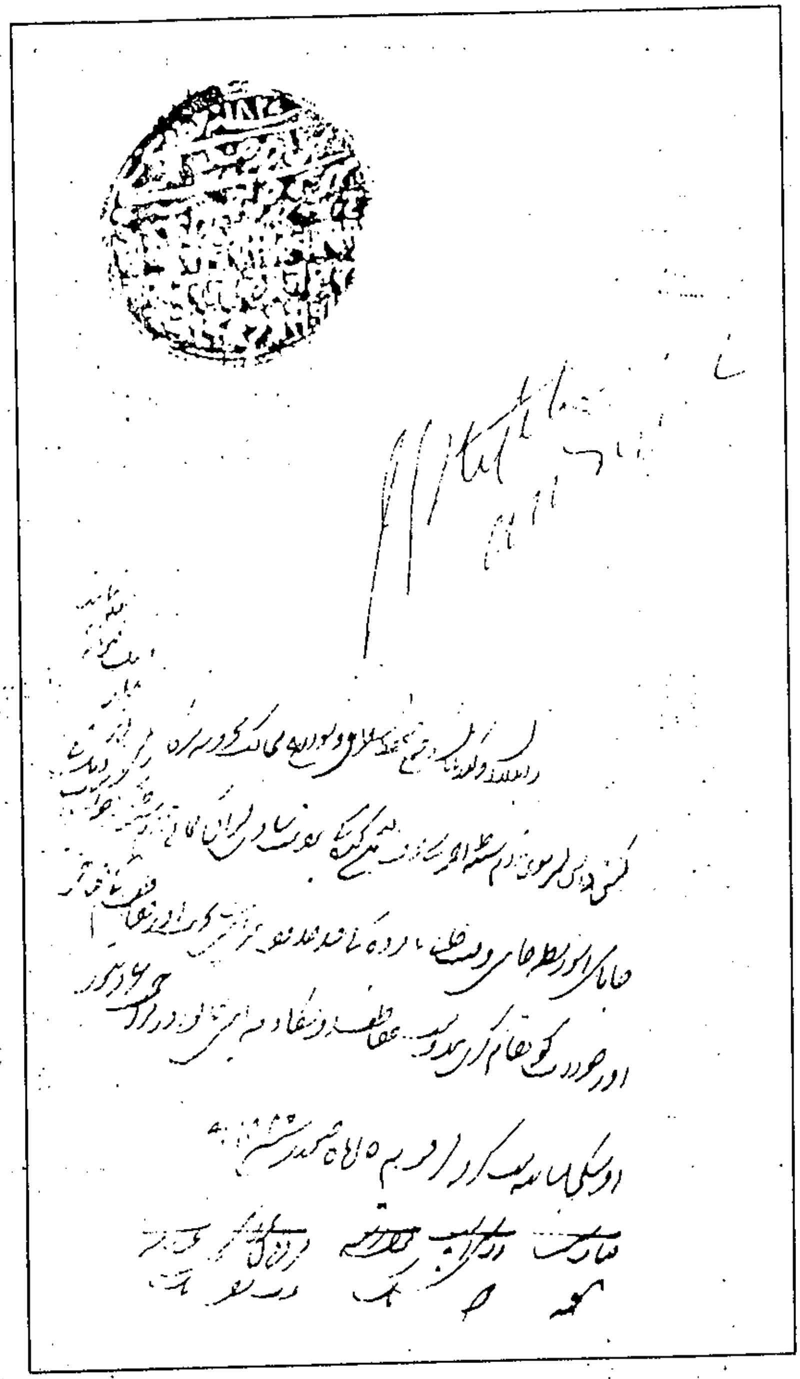
श्री राम जी

सिद्ध श्री सेठ जी हरदत्त राय जी राम गोपाल जी जोग लिखतम् श्री बीकानेर सूं जवाहर सिंह केन जय रघुनाथ जी बंचज्यो। अठा का समाचार भला छ थांका सदा भला चाहिजे छ। अपरंच कागद एक राम सुखदास जी हस्ते दिनूं सो जिसूं समाचार जाणां होयसी। समाचार रामसुखदास जी न कहया ही छ। गिरधारी पुजारी थांकने आवे छ। अबार म्हाको हाथ तंग छ। बखत की बात छ। खोटो समय आपडो छ - जेने थे जाणो ही छो सो रुपया 500/- पांच सो गिरधारी ने दीज्यो। गुमान जी का ने - कन्हैया लाल जी का ने मांगज्यो ना और घणी काहीं लिखां - आदमी घणा छां, सो कोई उजाड़ - बिगाड़ कर देला। व्योहार ने समझे नहीं तो थांको पांछो समाचार आया सारा न कवाह्योजायसी। मिति चैत बदी नौमी (9) सम्वत् 1905 (सन् 1848)

सार : यह पत्र बीकानेर से जवाहर सिंह पाटोदा ने सेठ

रामगोपाल जी को भेजा है जिसमें लिखा है कि हमारा बुरा समय आ गया है। आपके पास गिरधारी को भेजा है सो रुपये पांच सो दे देना। पत्र में कहा गया है कि आदमी बहुत हैं कोई उजाड़ बिगाड़ कर देंगे सो आपका समाचार आने पर मैं उनको कहला दूंगा।





मोहरशाही

दस्तखत बख्त अंग्रेजी

शाहदारान व गुज़रबानान वजमी मुस्तक फिज़ान तरक बशवारे मुमालिक महरूसा सरकार कम्पनी अंग्रेज बहादुर व मुल्क राज पूताना मालूमा नमासनद किशन दास इस्र मोहन राम सेठ अजमेर से तरक बहमनगढ़ के वतकरीब शादी पिसरान गुमानी रामसेठ के बनय असबाब जल के जाता है इस वास्ते जाते वक्त जाद नामज़दा के हद हजुद अपने अपने से बखैरियत के पहुचा दो और जो रात को मुकाम करे बन्दोबस्त उसका जिम्मा अपने जानो और मजहामत गैर दस्तूर उसके साथ मत करो मरहूम 15 माह जनवरी 1841 ईसवी

प्यादे	रासअसप	मूलरथ	भरदूमान हमराही	गुमाशता
(सात)	(दो)	(एक)	(बीस)	(एक)

ترجمہ چٹھیات [illegible] صاحب گورنر جنرل بہادر

[illegible]

سیٹھ گمانی رام قدیم سے ایک نامی آدمی اور سیٹھ مہاجن کچھ ضرور نہیں رکھتے ہیں کہ یہ دست آویز ہماری رکھیں اور بہت دست آویزیں [illegible] سیٹھ جی کے پاس [illegible] لیکن ان کو یہ معلوم دلایا گیا کہ اور مدت تجارت کی اوپر جو کاروبار [illegible] کی بیچ میں معلوم مناسب ہے [illegible] کو یہ دست آویز [illegible] ہمارا تحریر میں گمانی رام کو بہت تعریف کیا جاتا ہے اور جو کوئی صاحب لوگ یہاں رہے [illegible] مناسب ہے کہ وہ اپنی طرف اور سرکار کمپنی کی طرف سے مہربانی [illegible]

مرقوم ۲ مارچ ۱۸۴۲ عیسوی

[illegible]

سیٹھ گمانی رام نے ہم سے درخواست کیا کہ [illegible] ایک [illegible] واسطے رام دیال گماشتہ اپنی کو [illegible] حوالہ [illegible] رہی [illegible] رام دیال [illegible] سے اول [illegible] واسطے [illegible] کی اصل ادھار ہے اور سیٹھ کی طرف سے یہاں [illegible] کرتے ہیں اور [illegible] پہنچایا ہے مہربانی سب [illegible] چاہیے [illegible] سب مہربانی کریں فقط تحریر ۲ مارچ ۱۸۴۲ء

[illegible]

[illegible] گماشتہ سیٹھ گمانی رام نے ہمارے [illegible] سیٹھ کے طرف سے شامل تھا اور حال [illegible] اور [illegible] وغیرہ [illegible] کر کے معلوم سب ظاہر کر دیا ہے اور اپنی سیٹھ کے طرف سے ایک کوٹھی جاری کر دیا اور [illegible] میں [illegible] مقرر کر دیا اور یہ آدمی بہت لائق اور ہوشیار ہے کہ ان کی اوپر مہربانی کیا جائے فقط

تحریر [illegible] ۱۸۴۲ء

तरजुम अताए जेहाट मिस्टर हिमिलटन साहब अहसब गोवरनर जरनल बहादुर

बखत ए मुन्डी

सेठ गुमानी राम कदीम से एसा नामी आदमी और सेठ महाजन कुछ जरुर नहीं रखते हैं कि यह दस्तावेज हमारी रखें और बहुत दस्तावेजें बहसी होवें बेशहर उनके पास हेयगा लेकिन उन्होंने हमकूं दिखलाया अपना चालाकी ओर मुहहत जितारत रु पर जो कारोबार सिरसा के बीच में हमकू मुनासिब है देने को यह दसतावेज उनकू हमारा तहरीर में गुमानी राम को बहुत तारीफ करना चाहिए और जो कोई साहब लोग यहाँ रहे बूनकू मुनासिब है कि वो अकसर अपनी तरफ और निज़ सरकार कम्पनी तरफ से महरबानी दिखलावे

मरकूम 2 मार्च 1844 ई.

सेठ गुमानी राम ने हम से दरखवास्त किया कि देने एक दस्तावेज वासता राम दयाल गुमाशतां अपने कूं जो कि सिरसा में रहे वह रामदयाल अवल से ही हरसीताबद है शहर सिरसा की असल औजार है और सेठ की तरफ से यहां करोबार बहुत करते हैं और उनकू पूज्यनीय ही मेहरबानगी सब करने कूं चाहिए कि उनकू सब मेहरबानगी करें

फकत

2 मार्च 1844

दस्तखत बखते उड़ीया

बिहारी लाल गुमांशता सेठ गुमानी राम के हमारे साथ सिरसा से भावलपुर तक सेठ की तरफ से शामिल था और हाल वहाँ के बीच ब्योपार और दीगर शहर रास्ता वगैरा तलाश करके हमकू सब जाहिर करता है और अपने सेठ की तरफ से एक कोठी जारी कराया और अहद जगह में है आदत मुकरर कराया और यह आदमी बहुत लायक और होशियार चाहिए कि उनके उपर हमेशा मेहरबानगी किया जाय।

फकत

तहरीर 2 मार्च 1844

TRUE COPY

Forest Department H.A.D.
No., 708 of 1902-03
Amraoti Camp
Dated, 31st March 1903.

From,

E.E. Fornandez, Esq.,
Conservator of Forests H.A.D.

To,

Seth Shrinarayan Rambilas,
Banker Amraoti.

Sir,

I have very much pleasure in sending you herewith a Coronation Certificate which by Command of His Excellency the Viceroy and Governor General in Council has been granted to you by the Honourable the Resident at Hyderabad in recognition of the conspicuous help which you gave the Forest Department during the famine of 1899&1900. I congratulate you on the special honour thus conferred on you.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient Servant
(Signature illegible)
Conservator of Forests H.A.D.



SANAD

To

Seth Ram Datt,

Head Treasurer,
Bahawalpur Government,
Punjab States.

I hereby confer upon you the title of Rai Sahib as a personal distinction.

Linlithgow

Viceroy and Governor General of India.

Simla,
The 23rd June 1936.



بخدمت رائے صاحب سیٹھ رام دت صاحب منچن آباد

موجودہ جنگ عظیم جو یورپ میں برپا ہے۔ اور جس کے خطرات سے کوئی امن پسند ملک بھی خالی نہیں۔ آپ کے اِس جذبۂ ایثار و خلوص کے ثبوت کا جو آپ نے حضور سرکار والاتبار دام اقبالہٗ و ملکہٗ کے ارشاد عالی پر ایمبولینس کار یونٹ مہیا کرنے کے لئے چندہ دے کر بہم پہنچایا ہے مجھے آپ کا تہِ دل سے شکریہ ادا کرنے کی ہدایت ہوئی ہے۔

لہٰذا میں آپ کی اِس قابل قدر خدمت کو جو کہ یقیناً ہماری ریاست اور ہم سب کے لئے باعثِ فخر ہے۔ آپ کو حضور سرکار والاتبار خلد اللہ ملکہٗ کی جانب سے پیغامِ تشکر پہنچاتا ہوں۔ حکومت بہاولپور مطمئن ہے۔ کہ اِس گرانقدر امداد سے آپ نے اُس عقیدتمندی اور وفاداری کا جو آپ قلمرو مملکتِ خداداد بہاولپور سے رکھتے ہیں۔ عملی ثبوت دیا ہے۔ اور ریاست ہذا کی روایات قدیمہ کو برقرار رکھا ہے۔ یہ بات آپ کے لئے موجب فخر و مسرت ہو گی۔ کہ حضور سرکار والاتبار دام اقبالہٗ و ملکہٗ نے اپنا نہایت قیمتی وقت صرف فرما کر ایمبولنس یونٹ اپنی ذات ہمایونی کی نگرانی میں ضروریات موجودہ کے مطابق تیار کرایا ہے۔ اور اب یہ ایمبولنس یونٹ مکمل ہو کر جنگی خدمات انجام دینے کے لئے روانہ بھی ہو چکا ہے۔ والسلام

راقم

ریونیو منسٹر بہاولپور گورنمنٹ بہاولپور

مورخہ ۲۱ جولائی ۱۹۴۱ء

मोहर
गोवरमेन्ट आफ भावलपुर

बरिवदमत राय साहब सेठ राम दत्त साहब, मनचनाबाद

मौजूदा जंगें अज़ीम जो यूरोप में बरपा है और जिसके खतरात से कोई अमन पसंद मुलक भी खाली नहीं – आप के इस ज़जबए इसार व शूलूस के सबूत का जो आपने हूजूर सरकार वालातबार दाम एकबालहू व मल्लीका के इरशादे आली पर इम्बोलेन्स कार यूनिट मुहईया करने के लिए चन्दा दे कर बहम पहुँचाया है मुझे आप का तहे दिल से शुक्रिया अदा करने की हिदायत हुई है।

लिहाजा मैं आप की इस काबिल कदर खिदमत को जो कि यकीनन हमारी रियासत और हम सब के लिए बाइसे फखर है – आप को हूजूर सरकार वालातबार खूलदुअल्ला मुलकहू कि जानीब से पैगामें तशककूर पहुँचाता हूँ – हूकूमत भावलपुर मुतमइन है – कि इस गिंरा कद्र इमदाद से आप ने उस अकीदत मन्दी और वफादारी का जो आप कलमरू मुमलिकत खुदादाद भावलपुर से रखते हैं – अमली सबूत दिया है और रियासत हजा की रवायात कदीमा को बरकरार रखा है – यह बात आप के लिए मूजिब फखर व मुसररत होगी कि हूजूर सरकार वालातबार दाम एक बालहू व मूलकहू ने अपना निहायत किमती वक्त सरक फरमा कर इम्बोलेन्स युनिट अपनी ज़ात हमायूनी की निगरानी में जरूरीयात मौजूदा के मुताबिक तैयार कराया है और अब यह इम्बोलेन्स यूनिट मुकमिल होकर जंगी खिदमात अन्जाम देने के लिए रवाना भी हो चुका है – वस सलाम्

राकीम दसखत अंग्रेजी में
रेवेन्यू मिनिस्टर
भावलपुर गोवरनमेन्ट
भावलपर

मोररखा 21 जुलाई 1941

سند خوشنودی

از پیشگاہ سرکار عالی

بہ تعمیل ایمائی حضور این جانب مؤرخہ ۱۱ دسمبر سنہ ۱۹۴۳ء

رائے صاحب سیٹھ رام رت نے مبلغ پچاس ہزار ر کے

ڈیفینس بانڈ خرید کئے ہیں نیشنل سیونگ کیمپین سنہ ۱۹۴۴ء کے

متعلق اس خدمت پسندیدہ کو ما بدولت بنظر استحسان دیکھتے

ہیں اور سند ھذا بطور خوشنودی عطا فرمائی جاتی ہے۔

قصر صادق گڈھ

مورخہ ۲۲ اپریل سنہ ۱۹۴۵ء

مطابق ۹ جمادی الاول سنہ ۱۳۶۴ھ

[signature]

فرمانروائی ریاست بہاولپور

सनद खुशनुदी

अज़ पेशगाह सरकार आली

ब तामिल इमाए हूजूर ई जानिब मोररखा 11 दिसम्बर, 1943 राय साहब सेठ राम दत्त ने मुबलिग 75,000 रुपये (पचतर हजार रुपये) के डिफेन्स बाँड खरीद किए हैं — नेशनल सेविंगस केमपीयन 1944 के मुतालिक इस खिदमत पसन्ददीदा को माँ बदौलत ब नजर इसतेहसन देखते हैं और सनदे हज़ा बतौर खुशनुदी अता फरमाई जाती है—

दस्तखत : बखते अंग्रेजी
फरमारवाय रियासत भावलपुर

कसर सादीकगढ़
मोररखा 22 अप्रैल 1945
मुताबिक 8 जमादीउल अव्वल 1364 हिजरी

TRUE COPY

Confidential
D.O.letter No. 50-C.

I am directed by His Highness the Nawab Sahib Bahadur to recommend Seth Ram Datt son of Seth Ram Kanwar Head Treasures Bahawalpur Government for the title of Rai Bahadur. The ancestrors of this gentleman have been working as State Treasures for the last 70 years. This gentleman has been performing the work since 1909. He possess 12000 bighas of land in Tehsil Minchinabad and pays an annual assessment of Rs. 9000/-. He always sets an example of loyalty to his community and is very useful in helping the State Government. He rendered considerable help in recovering the promised subscriptions to the Silver Jubilee Fund very promptly through his agency last year. He is one of the leading Raises of the State and His Highness the Nawab Sahib Bahadur wishes that the title may kindly be confirmed on him.

To

The Hon'ble Lt. Col. H. Wilberforce-Bell, C.I.E.,
Agent to the Governor General, Punjab.
Lahore

GOVERNOR OF PUNJAB

4th September, 1935.

Dear Sir,

I am writing to thank you personally for the generous donation you have made to Their Majesties' Silver Jubilee Fund, and to express my appreciation of your valued support.

Yours sincerely,

To

Seth Ram Datt Gandariwala,
Rais & Government Treasurer,
Sirsa, Distt. Hissar.

GOVERNOR OF PUNJAB

No. 5843

BARNES COURT,
SIMLA:
5th of Oct., 1940

DEAR Rai Sahib,

I WRITE to thank you most cordially for your generous donation of Rs. 6000/- to the War Purposes Fund. I greatly appreciate your public spirit in making this handsome gift

Yours sincerely,

H. D. Craik

R.S. Seth Ram Dutt,
Sirsa, Distt. Hissar.

[illegible]

DELHI.

24th April, 1941.

To

R.S.Seth Ram Datt, Rais,
Sirsa, District Hissar.

Dear Sir,

I desire most gratefully to acknowledge your gift for the use of the Defence Services, which I have great pleasure in accepting on their behalf.

As you know we need all the equipment of this type that we can get. I can assure you that your gift will be put to good use, and that it represents a very real and acceptable contribution to India's War efforts.

Yours faithfully,

J. Auchinleck

General,
Commander-in-Chief in India.

PUNJAB GOVERNMENT

SANAD

This Sanad is presented by the Punjab Government

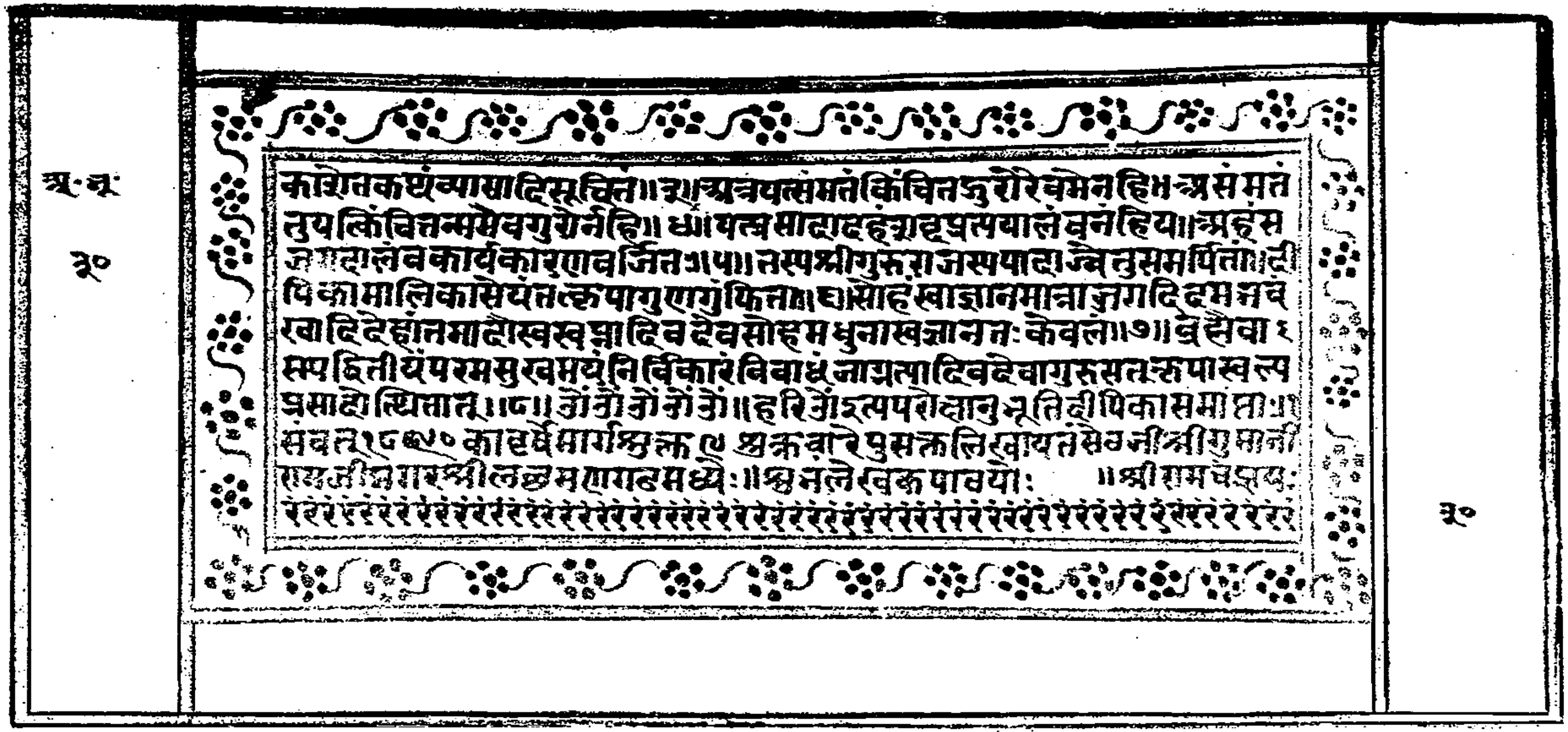
to Rai Sahib Seth Ram Dutt, Rais, Sirsa

in recognition of valuable services rendered during the war.

Chief Secretary to the Government of the Punjab.

The 9th January *194*2.

SGPP Lahore.



अ॰अ॰ ३०

कोशेतकथंव्यामादिसूचित॥३॥ अत्रयत्संमतं किंचित्कुरोरेवमेनहि॥ असंमतं
तुयत्किंचित्तन्ममैवगुरोर्नहि॥४॥ यत्समादादहंब्रह्मप्रसयालंवनंहिय॥ अहंस
ज्ञ लंवकार्यकारणवर्जितः॥५॥ तस्यश्रीगुरुराजस्यपादाब्जेतुसमर्पिता॥ दी
पिकामालिकासेयंतत्कृपागुणगुंफिता॥६॥ सोहंस्वाज्ञानमात्राज्जगदिदमभव
खादिदेहांतमादौस्वस्वप्नादिवदेवसोहमधुनास्वज्ञानतः केवलं॥७॥ ब्रह्मैवा
स्मद्वितीयंपरमसुखमयंनिर्विकारंनिबाधं जाग्रत्तादिवदेवागुरुसतत्कृपास्वरूप
प्रसादोस्थितात्॥८॥ ॐॐॐॐॐ॥ हरिॐ॥ इत्यपरोक्षानुभूतिदीपिकासमाप्ता॥१॥
संवत् १८९० का वर्षे मार्गशुक्ल ९ शुक्रवारे पुस्तक लिखायत सेठजी श्री गुमानी
रामजी लछमणगढमध्ये॥ शुभंभवतु लेखकपाठयो: ॥श्री राम चंद्राय:

३०

यह अपरोक्षानुभूति दीपिका नाम का ग्रन्थ है जिसमें आध्यात्मिक ब्रह्म चिन्तन का प्रकरण है। इस ग्रन्थ को लक्ष्मण गढ़ में सेठ गुमानी राम जी ने संवत् 1890 मार्गशीर्ष शुक्ल 9 शुक्रवार को लिखाया

श्री राम जी

याद दास्ती दिशावरां की बुजी जिणकी।

I. दिखन का दिशावरा में दुकान छा जिस तरह छ ही, गुमासता छ जिंयाल छ ही, इतनी दुकान ऊपर पीसाज इनने कर रखा छ।
I. बम्बई में इनका आदमी पांच चार भेहला होयर रहा छ किसो कर छ।
I. कलकत्ता में गुमास्तो इनको गयो छ सो किसो करे छ।
I. फतेहचन्द का शीर की दुकान हैदराबाद माय छ सो फतेहचन्द ने मिलायकर आपके तालक कर रखो छ सेठ पूर्णमल जी सूं पिशाज कर राखो छ, फारसी अर स्नेहीराम के पास बैठा छ।
I. मोहन राम व हरनाथ का शीर की दुकान हैदराबाद में छ जिनसु मिलायर दुकाना बरबाद कर राखी छ, मोहनराम स्नेहीराम राजा जी सूं चुकली कर रहा छ।
I. लक्ष्मणदास गौदा को बेटो बरड की दुकान ऊपर छ, उणके केतडी ऊंटक राखो छ; रूपया हजार दस उनके पास छ सो गुमानीराम होरी मिलावट कर कर फारसी पास भेज दीनो।
I. अर बरड़ की दुकान का गुमास्ता अबार राजाजी का पीशाद सूं उठ-उठ कर शरण की दत्र जाये बैठा छ।
I. देश का दिशावरा को हैवालो इस भात छ।
I. ईतणी जगाका दुकानदार छ जिण तरह ही छ।
I. जयपुर में बड़ी दुकान।
I. झुन्झुनू की दुकानदार आगे छ जिण मुजिब छ ही, अर यांका हामीर तथा उर बैठे पीशाद कर छ।
I. नवलगढ की दुकान छ सो छ।
I. सामोत की दुकान छ सो छ ही।
I. भिवानी दुकानदार छ जिण तरह छ ही, पण यांके आदमी गुमास्ता बैठ्या पीशाद कर छ तालो जड़ राखो छ।
I. इतनी दुकान का गुमास्ता ने लालच देकर अपनी तरफ कर राखा छ; गुमानीराम कन्हैया लाल अस्ते।
I. जयपुर की छोटी दुकान में हर मासदार माये बाजखा सागी को आ दिशावरा सूं,

---

यह दस्तावेज गनेड़ीवालों के मुनीम द्वारा उनके कुछ व्यापारिक संस्थानों के बारे में वहाँ के कार्यों का विवरण है। चुंकि दस्तावेज़ को असल रूप में छापा नहीं जा सका इसलिए यह उसका अनुवाद है।

उतलीनु सो इनके पास छ।

।. सूरी की दुकान उपर मुल्तान छ दुकान सूरी म आग छ जिनका कागज पतर सरब आंक कन छ सो दबा राख्या छ।

।. दिल्ली का दुकानदार रामसहाय तथा ईश्रसहाय रामप्रसाद ने आ मिलाय राखा छ, ऐवज सरब छोटी दुकान ने घाल दिनु या आंके पास छ, फेर बालापोता हरीकिशनदास ने भेजो, जिणमे अमल दिनु नहीं पीशाद कर राखो छ, तालो जड़ राखो छ।

।. केकड़ी की दुकान को सरणीराम बाजोरियो वा रोकड़ियो आसं मिल रहा छै, भई कागद पत्र सरब न्यारा कर राख्या छै, दुकान को तालो जड़ राख्यो छै, अर बदलायेता गोपाल ने भेंज्यो छै सो हाल असली इनरा काम जयपुर की बड़ी दुकान से होसी।

।. भिलवाड़ा की दुकान टेकचन्द कासीर की छै, सो दुकान ऊपर टेक चन्द व टेक चन्द का बेटा छै, भीवराज केशोराम ने भेज्या छा, सो हाल अमन दिनु नहीं, रकम लक्ष्मणगढ नवलगढ की दुकान की लागे छै।

।. सीकर की दुकान ऊपर नाथूराम व नाथूराम का भाई छै, सो आंके पास छै, रकम लक्ष्मणगढ की व जयपुर की छै, कागज-पत्र सरब आंके कने छै।

।. किशनगढ की दुकान ऊपर जोहरीमल रामनारायण हरुनन्द रह छै, सो दुकान यह अपनी कर राखी छै।

।. ड़ीडवाने दुकान छै, जिण ऊपर दुकानदार नानूराम व नानूराम का बेटा छै, सो नानूराम तो मर गयो उनका बेटा ने अमल कर राख्यो छै, रकम जोधपुर की दुकान लागे छै।

।. लसकर की दुकान व दुकानदार खेतसी कागद पतर सरब रकम इनके पास छ।

।. जालरापाटनमा दुकानदार गजमल जोडा छै, सो उनने आपनो अमल कर राखो छै।

।. महेशर का दुकानदार प्रेम सुख सदा राम, कासी राम आपस म मिल राख्यो छ दुकान के तालो छै, कागज पत्र चतुर्भुज सांगा नेरियो रोकड़िया ले गया छै।

।. अजमेर की दुकान तो तालो छै, ऊपर ब्रजलाल मुनीम छै, जिणने तो आपकी तरफ मिलाया राख्या छै। रोकड़ियो शोभाराम छै, सो छै ही।

।. कोटे को मुनीम रामजी दास छै जिके न तो आप में मिला राख्यो छै, सो थे तो कल कर आयो अर शिवदानमल तो छै, जिसो छै ही, अर जगन्नाथ रोकड़ियो छै, जिनने आ फेर मिलाया मिलाय तीनू दुकान के तालो छै।

।. इतनी दुकान ऊपर दुकान छै, सो जिंण तरह का छै, जिण तरह ही छै, हुकम माने छै नहीं, किसो कर राख्यो छै।

।. जोधपुर ।. पाली ।. सिरसा ।. किशनगढ।

।. लक्ष्मणगढ की दुकान ऊपर रोकड़ियो विनोद राम तथा गावां का काम ऊपर जीवनराम छै; सो तो जिस तरह छै हीं, राजराम चोखाणी नावां ऊपर छै, सो उनने अमल दे राख्यो छै, दुकान के तालो छै, इण माफिक दिशावरां की यादगीर छै,

।. इण भांत दुकानदार नयारा काम दबाने वास्ते उतथा श्रीपत बखेर राख्यो छै।

।. आमेदराम साहराम मुलतान रकम खाते बाकी छै, या खजनोटी सरब मिलकर रखी छै।

।. खेतसी जाते या गुमानीराम घौलानी का जांकी रकम उठे की बाकी छै, बाहर की रकम भी बाकी छै, खजनोटी की भी बाकी छै।

।. सालगराम सन्तोपीराम जीवराज राजरूप घौलाणी में रकम बाकी छै, हैदराबाद की भी, तथा लक्ष्मणगढ की भी।

।. शामचन्द्र गोणको अमृतसर को दुकानदार सरब अमृतसर के संजा वे नहीं, रुपया खाते बाकी छै, खजनोटी भी छै।

।. दिल्ली को रामू साही ईश्रसाह रामप्रसाद सब समझाया नहीं तथा बाकी या खजनोटी छै।

।. सदाराम जैंके ऊपर खाते बाकी छै, खजनोटी छै, सो

दादरी, पाली, अजमेर, जयपुर, कोटा, मैसूर, लसकर, रामगढ,

। । । । । । । ।

।. रकम न रहने से थैली वाला दुकानदार खाते बाकी या खजनोटी जानकर भिंवानी भेज राख्या छै। सरणीराम जयनारायण गंगाराम बजरंगराय खाते बाकी वा खायकी अजमेर रोकड़ में।

।. राम प्रताप तनसुख केजडीवाल दुकानदार रुपया खाते बाकी तथा खयकी।

।. हरनन्दराय सागन वाला की दुकान को मुनीम जानकर संजय नहीं, उसमें अभी बाकी है।

।. शिवजीराम गुलाब मोतीचन्द दुकानदार अजमेर, दिल्ली, झुन्झुनू सो रुपया खाते खाय की छै।

।. रतलाम को दुकानदार जिनस मुरारको सो खाते बाकी थांसे लेजी।

।. नानूराम हरनन्द मचन लोडा मेरे से लड कर रकम खाते बाकी तथा सामर ड़िड़वानो, मैसूर।

।. रामजी दास पूना वालों सोखाते बाकी तथा खायकी पूना, पालनपुर कोटा।

।. जगन्नाथ रोकड़ियो लस्कर को रुपया खाते खायकी छै।

।. गजमल लोटा जालरा पाटन को दुकानदार रुपया खाते खजनोटी छै।

I. रूगनाथ खण्डेलवाल के रुपया खाते बाकी तथा खजनोटी कोटा, मैसुर।
I. देवकरण दास, हदरवाला रुपया खाते की खजनोटी हिसाब समझनो।
I. हरकिशदास जयनारायण दुकानदार झुन्झुनू का तथा सूरजगढ का 100 रुपया खाता बाकी तथा खजनोटी।
I. रामबक्स झुन्झुनू वाला दुकानदार मिर्जापुर की 100 रुपया खाते खजनोटी
I. बिहारीलाल दुकानदार मुनीम अजमेर को जिनके खाते बाकी तथा खायकी लेनी।
I. टेकचन्द लालो खयालीराम बीजो रकम खाते बाकी व खजनोटी केकडी, भीलवाड़ो, लक्ष्मणगढ।
I. जोरावरमल बोरो दुकानदार तथा बड को सो हिसाब समझायो नहीं, जण ने बिना हिसाब समझाये सीख दे दीनी, जिण में खजनोटी पुरसल लेने बिना मिलाई इंसु भाग गयो।
I. परशुराम बद्रीराम राजाराम चोखाणी रुपया खाते बाकी व खजनोटी बशीरकरी, सब समझना।
I. किशन राम दुकानदार नवलगढ का श्री किशनराम सुगनराम रुपया खाता बाकी व खजनोटी।
I. नाथूराम आशाराम सीकर की खजनोटी विचार करना।
I. नानकराम त्रिलोकचन्द आशाराम खजनोटी किशनगढ़ में रुपया खाता बाकी
I. जानकीदास पोद्दार चुरू को 100 रुपया खाते बाकी तथा खजनोटी कांरजो, लस्कर, मलकापुर।
I. भोपतराम बीयाणी दुकान लस्कर की रुपया खाते बाकी या खजनोटी।
I. आसा राम केजड़ीवाल रुपया खाते तथा खजनोटी।
I. भूरामल केड़ियो माल का रुपया खाते बाकी तथा खजनोटीं
I. हरसुख ब्राह्मण रुपया खाते बाकी या खजनोटी।
I. मोकमराम ब्राह्मण रुपया खाता बाकी या खजनोटी।
I. इस मुजिब दुकानदार की हकीकत छै, जीका आसामा में रुपया बाकी छै।

नोट :- इसमें देश के विभिन्न भागों में जो सेठों की दूकाने चलती थी उनकी विगत दी गयी है। तत्कालीन परिस्थितियो का दिग्दर्शन इससे अच्छी प्रकार होता है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि देश के विभिन्न भागों में गनेड़ीवालों की दुकानें चलती थीं। इनकी संख्या बहुत बड़ी थी जैसा इस याददास्ती से प्रकट होता है।

TRUE COPY

Amraoti;
29th March, 1898.

My dear Rao Saheb,

I must not leave Berar without sending a few lines to tell you that I shall always recall with feelings of gratitude all you did last year to help us on the Melghat Relief works but for the aid you so freely and punctually afforded we would not have been able to keep the starving KurKus going.
Trusting I may return to Berar and again have the pleasure of meeting you. allow me to remain.

Sincerely yours
C. Bagstiaswe

To,
the Rao Saheb Rambilas,
Amraoti.

TRUE COPY

April, 2- 1898.

(seal of Commissioner H.A.D.)

My dear Sir,

I have much pleasure in sending a few lines to you on the occasion of my departure from Berar. The title you secured of Rai Saheb is sufficient proof if any were needed of your services to the Government as a loyal subject but in the past year of famine you have fully maintained your character and the assistance you gave in the Malghat in regard to grain sufferers was considerable. I beg to tender my acknowledgement and wish you farewell.

(Signature illegible)
Commissioner Hyderabad,
Assigned Districts

TRUE COPY

(SEAL)

By command of His Excellency the Viceroy and Governor General in Council THIS CERTIFICATE is presented in the name of His Most Gracious Majesty King Edward VII, Emperor of India, to Mr. Shrinarayan Rambilas in recognition of the conspicuous service rendered by him during the famine of 1899-1900

(Signature illegible)
Resident at Hyderabad

Hyderabad Residency,
1st January 1903.

TRUE COPY

I have much pleasure in testifying to the liberal support and encouragement, which Goomani Ram Seth has always given to ____________________ of the first establishment of the mart to the present day, he has been its chief supports, his arts keeping pace with his professions while others have deserted its alarmed at the first difficulty, they encountered, he has held to the craft guided the helm and weathered the storm.

On Mr. Hamilton agent Governor General's arrival at Sirsa, Goomani Ram brought several other merchants in his train to establish their shops at this place,he sent an agent with Mr. Hamilton to Bahawalpore established him there is now sending another to Sukkur at my request that has volunteered to send for an experimental cargo from Bombay by the Indus to Bhawalpore to prove to the Delhi people in how short a time they can obtain their investments of European articles by this route. Every praise is due to him for his enterprise and zeal in carrying out our views, and whatever prosperity the town of Sirsa may hereafter enjoy, I shall always consider Goomani Ram Seth of Luchhman-Gur to have been the author of it. The Seth's commercial dealings are most extensive, he has branch firms at Calcutta, Bombay, Jeypoor and in other towns in Rajpootana.

Sd. I. Mackison.

Officiating..........Superintendent of Bhlteena.

Sirsa.
5th March 1844.

Attested by
Name illegible.
Ture copy
Senior Officer, Sikar.
20.2.36

TRUE COPY

Goomani Ram Seth, of Luchhmungurh in Seekar having earnestly solicited from me a certified approbation of his conduct. I have much pleasure in certifying that he has been very useful and has evinced a very accomodating spirit during our operations in Shekhawattee by the readiness with which he arranged with the several chief's and granted drafts on Ajmere for their respective contributions towards re-imbursing a part of our Military expenses.

I am also happy to certify that Goomaniram has the character of being one of the most respectable Sahukars of Rajpootana.

Sd. J.W. Alves Major
(illegible)

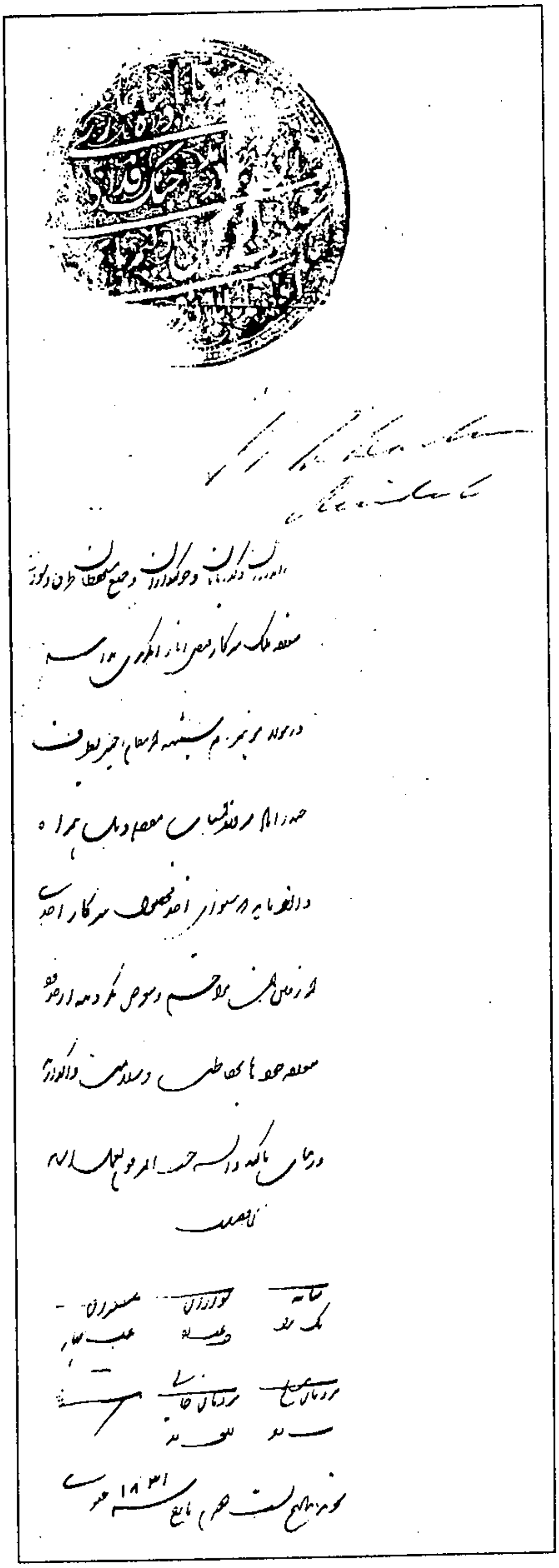
Camp______________
14th February, 1835.

True Copy.

Sd. illegible.

True Copy

Senior Officer, Sikar.
20.2.36



मोहरशाही

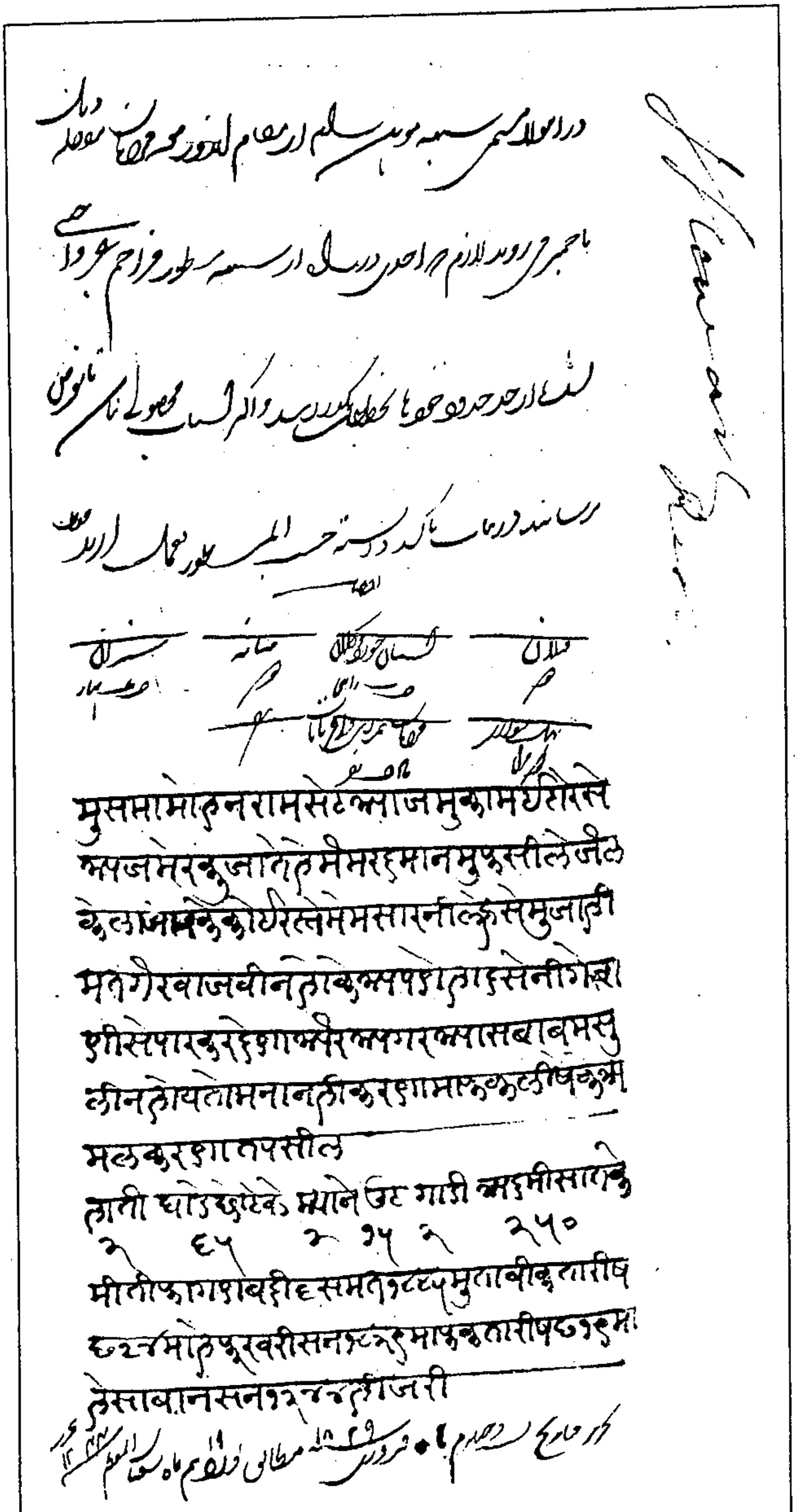
दस्तखत वख्त अंग्रेजी

शहदारान व गुजरवानान व चौकीदारान व जमी मुस्तक फिज़ान तरक व शवारे मुतालिका मुलक सरकार फैज़ आसाद अंग्रेजी बदाननद दरी विला मोहनराम सेठ अज़मुकाम अजमेर बतरफ हैदराबाद मीखन असबाब मुफसिला ज़ैल हमराह वाला बायद के सिवाय अख्द महसूल सरकार अहदे दर रफतन इ मज़ाहिम व मौतरीज़ न गरदन्द अजहदूद मुतालिका खुदहा ब हिफाज़त व सलामत व गुज़ारन्द दरीबाब ताकीद दमिस्ता हस्बअल भरकुम व अमल आरूद

तफसील

मियाना सवारान शुतरान मरदुम्मान मुसला
मरदुम्माल खाला
(एक) (पच्चीस) (बीस) (साठ) (चालीस)

तहरीर व तारीख बीसल्दो मार्च 1831 ईसवी

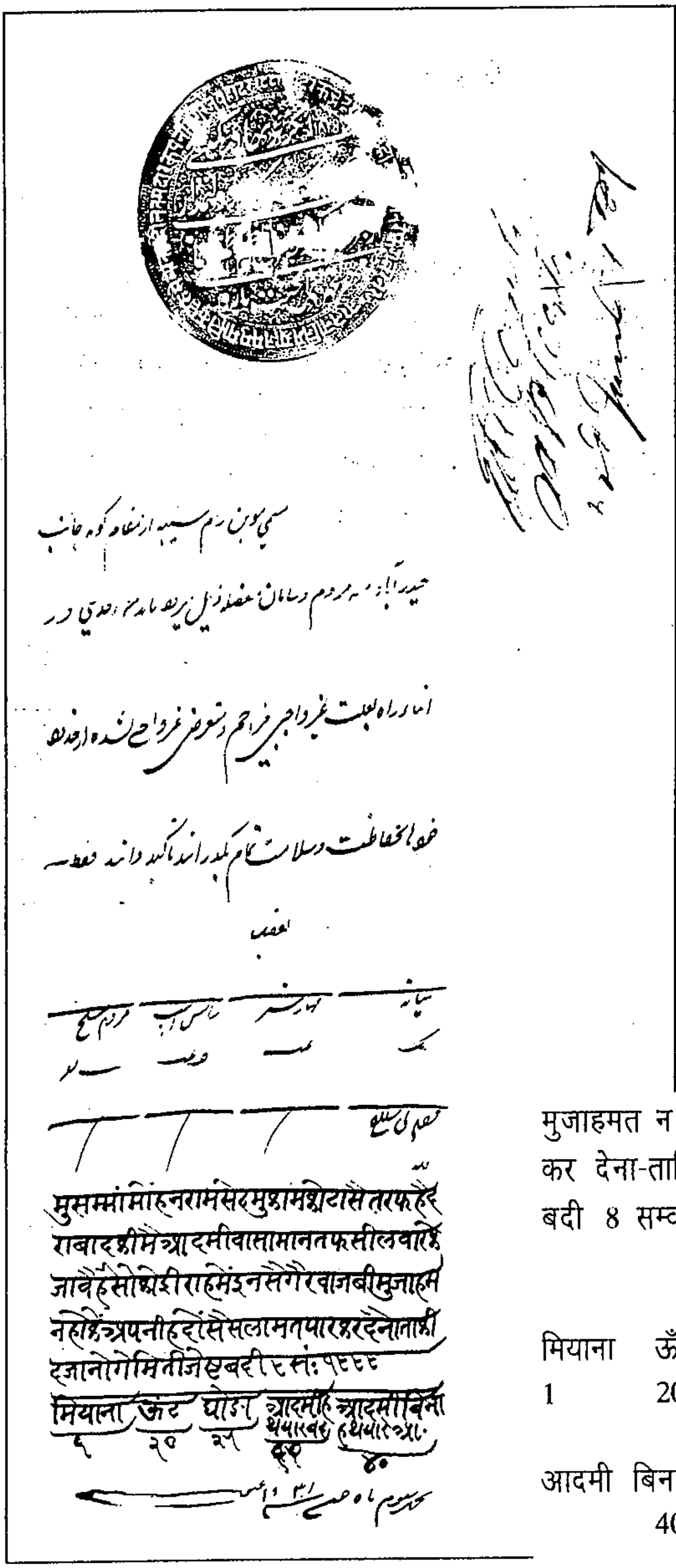


मुसमामोहनरामसेठआजमुकामथैरीरस्ते
अजमेरकुजातेहमेमरहमानमुफसीलेजैल
केलाअमकेकोथैरस्तेमेमसारनीहसेमुजाहीं
मतगैरवाजबीनहीअपरारहसेनीगह
राखीसेपारकरदेणाअरअगरअसासबाबमसु
लीनहीयलामनानहीकरणामालकलीपकआ
मलकरणातपसील
लागी घोड़ाकोटेके मयाने ऊट गाडी आदमीसाराकू
२ ६५ २ १५ २ २५०
मीतीफागणबदी६समत१८८५मुताबीकतारीष
६२२माहफुरवरीसन१८२९माफकतारीष७१६मा
हेसाबानसन१२३८हीजरी

मुसम्मा मोहन राम सेठ आज मुकाम इन्दौर से अजमेर को जाते हैं मेमरहमान मुफसील जेल के लाजीमहे के कोई रस्ते में मसारनी लहुँ से मुजाहमत गेरवाजबी न होके अपने हद से नीगरानी से पार कर दोगा और अगर असबाब मसुली न हो तो मना नहीं करना - माफिक लिखे क अमल करना - तफसील

हाथी	घोड़े	छोटे-बड़े	म्याने	ऊँट	गाड़ी	आदमी
2 65		2	15	2	250	

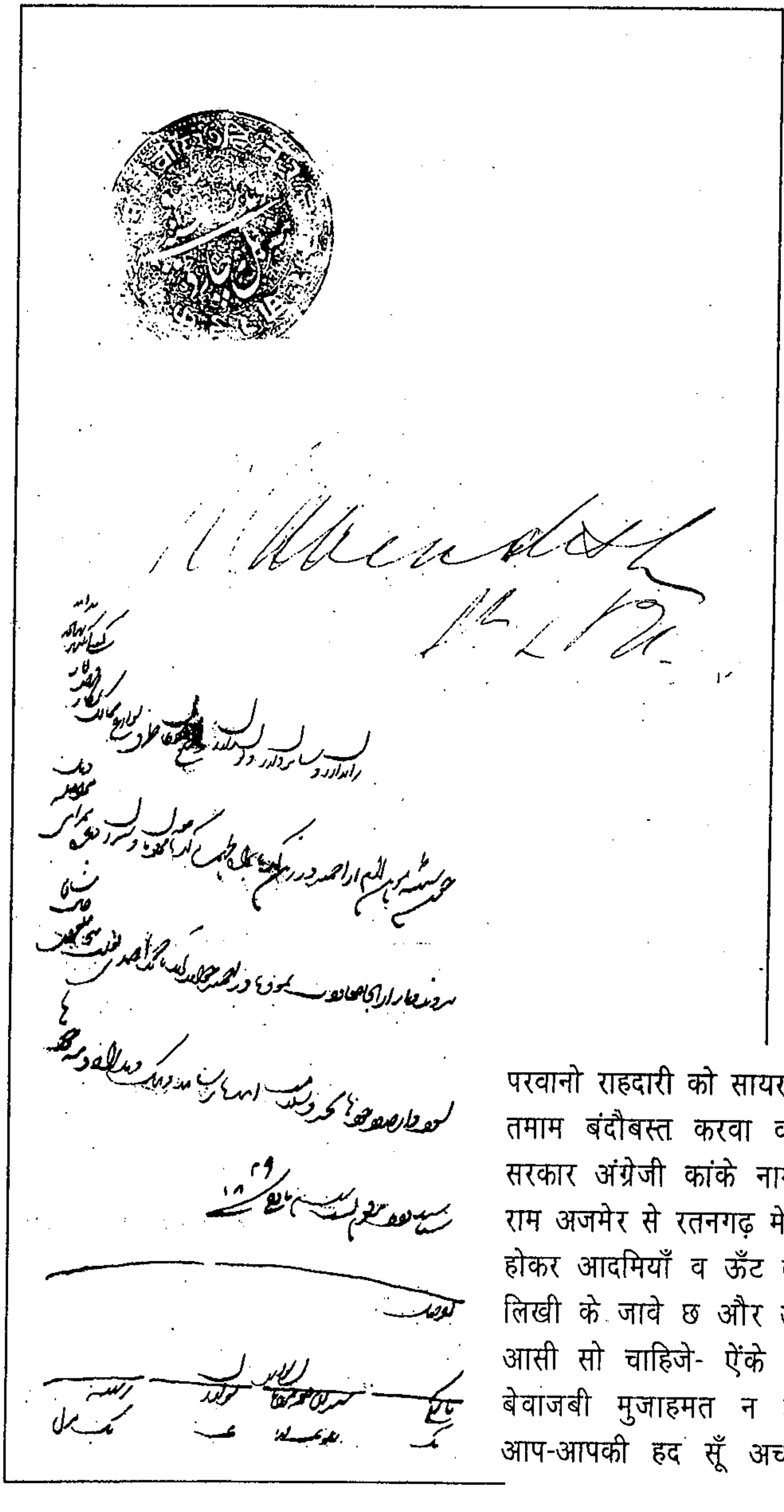
मीती फागन बदी 6 सम्वत्: 1885 मुताबिक तारीख 24 माह फरवरी सन् 1829 माफक तारीख 19 माह सावन सन् 1244 हीजरी


मुसम्मांमोंहनरामसेठमुकामकोटासेतरफहैदर
राबादकीमेआदमीवासामानतफसीलवारके
जावेहैसोकोईराहमेंइनसेगैरवाजबीमुजाहम
नहोकेअपनीहदोंसेसलामतपारकरदेनाताकी
दजानोगेमितीजेठबदी ८ सं: १८८८

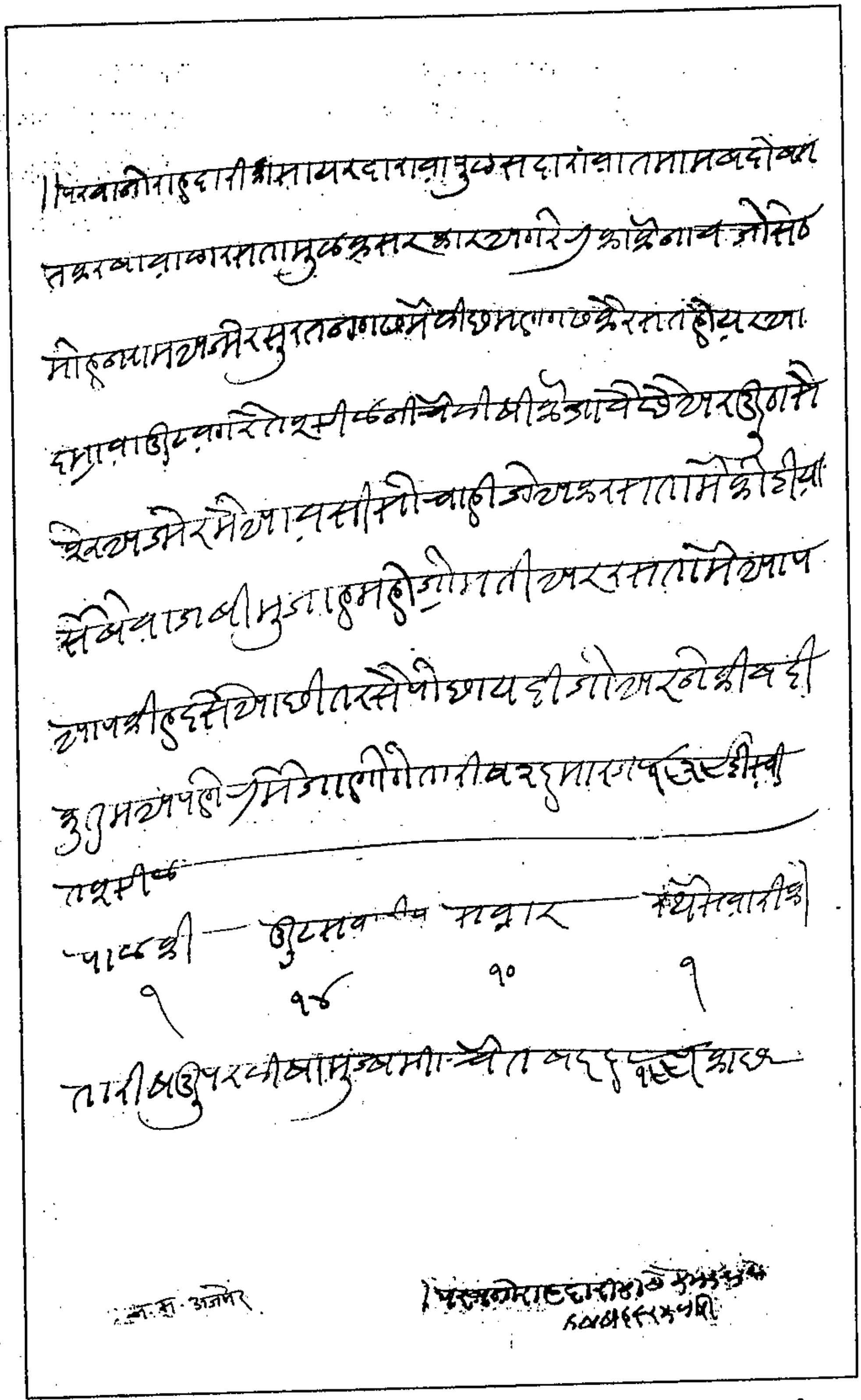
मुसम्माँ मोहन राम सेठ मुकाम कोटा से तरफ हैदराबाद की मय आदमी व सामान तफसील वार के जावे है - सो कोई राह में इनसे गैरवाजबी मुजाहमत न होके अपनी हदो से सलामत पार कर देना-ताकिद जानोगे। मिती जेष्ठ बदी 8 सम्वत्: 1888

मियाना	ऊँट	घोड़ा	आदमी हथियारबंद
1	20	25	60

आदमी बिना हथियार
40



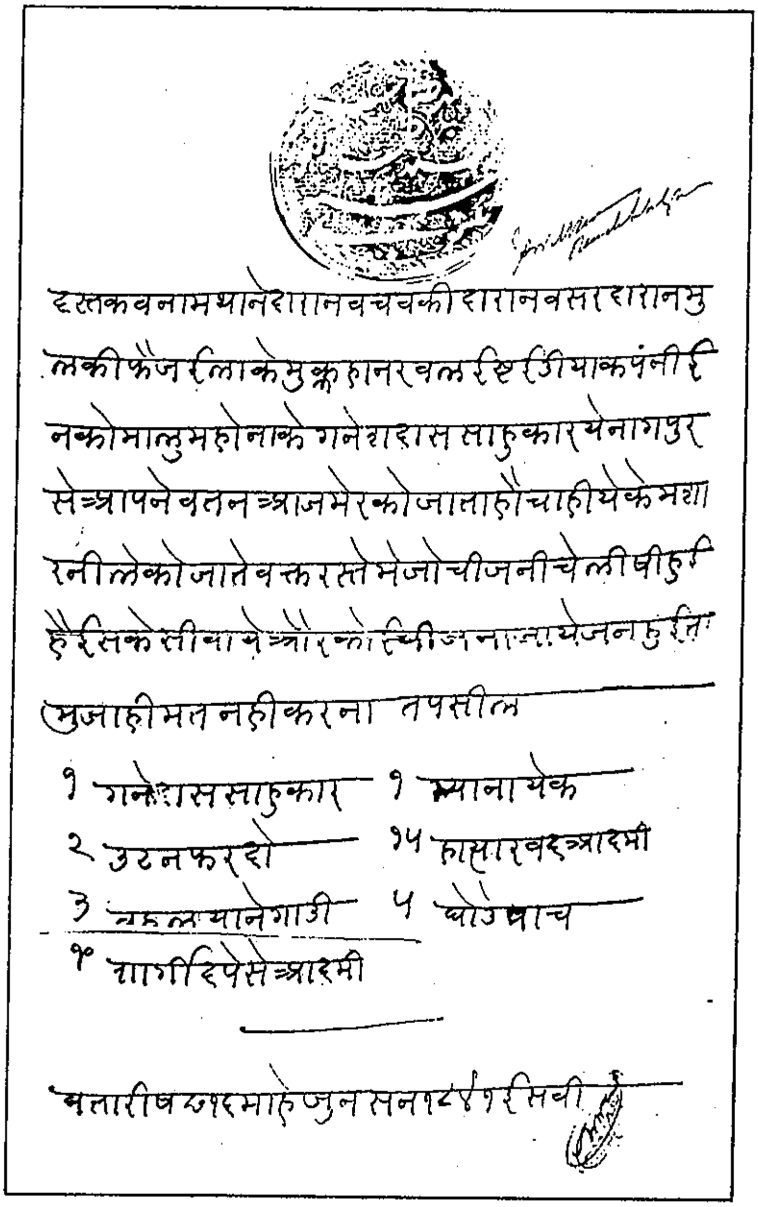
परवानो राहदारी को सायरदारा व पुलिसदारा व तमाम बंदौबस्त करवा वाला - रस्ता मुलक सरकार अंग्रेजी कांके नाम - जो सेठ मोहन राम अजमेर से रतनगढ़ में लक्ष्मणगढ़ के रास्ते होकर आदमियाँ व ऊँट वगैरह तफसील नीचे लिखी के जावे छ और उठा से फैर अजमेर आसी सो चाहिजे- ऐंके रस्ता में कोई यासूं बेवाजबी मुजाहमत न हो ओर रस्ता में आप-आपकी हद सूँ अच्छी तरह से पहुंचा



दीजो ओर नेकी बदी कूं अपने जिम्मे जानोगे। तारीख 26 मार्च 1829 ई. तफसील

पालकी	ऊँट	सवार	रथ सवारी
1	14	10	1

तारीख ऊपर लिखा मुजब मीती चैत बदी 6 सम्वत्: 1885


दस्तक बनाम थानेदारान व चवकीदारान व सरदारान मु
ल्की फौज इलाके मुल्क हानरबल ईस्ट ईंडीया कंपनी इ
नको मालुम होना के गनेशदास साहुकार ये नागपुर
से आपने वतन आजमेर को जाता है चाहीये के मसा
रनील्ले को जाते वक्त रस्ते में जो चीज नीचे लीखी हुई
है इसके सीवा और कोई चीज नाजायेज न हुई तो
मुजाहीमत नही करना तफसील
१ गनेशदास साहुकार १ म्याना येक
२ ऊटन फरदो १५ हाथार बंद आदमी
३ बहल याने गाडी ५ घोडे पांच
१० शागिर्द पेसे आदमी
बतारीख १६ माह जुन सन १८४१ इसवी

श्री राम जी

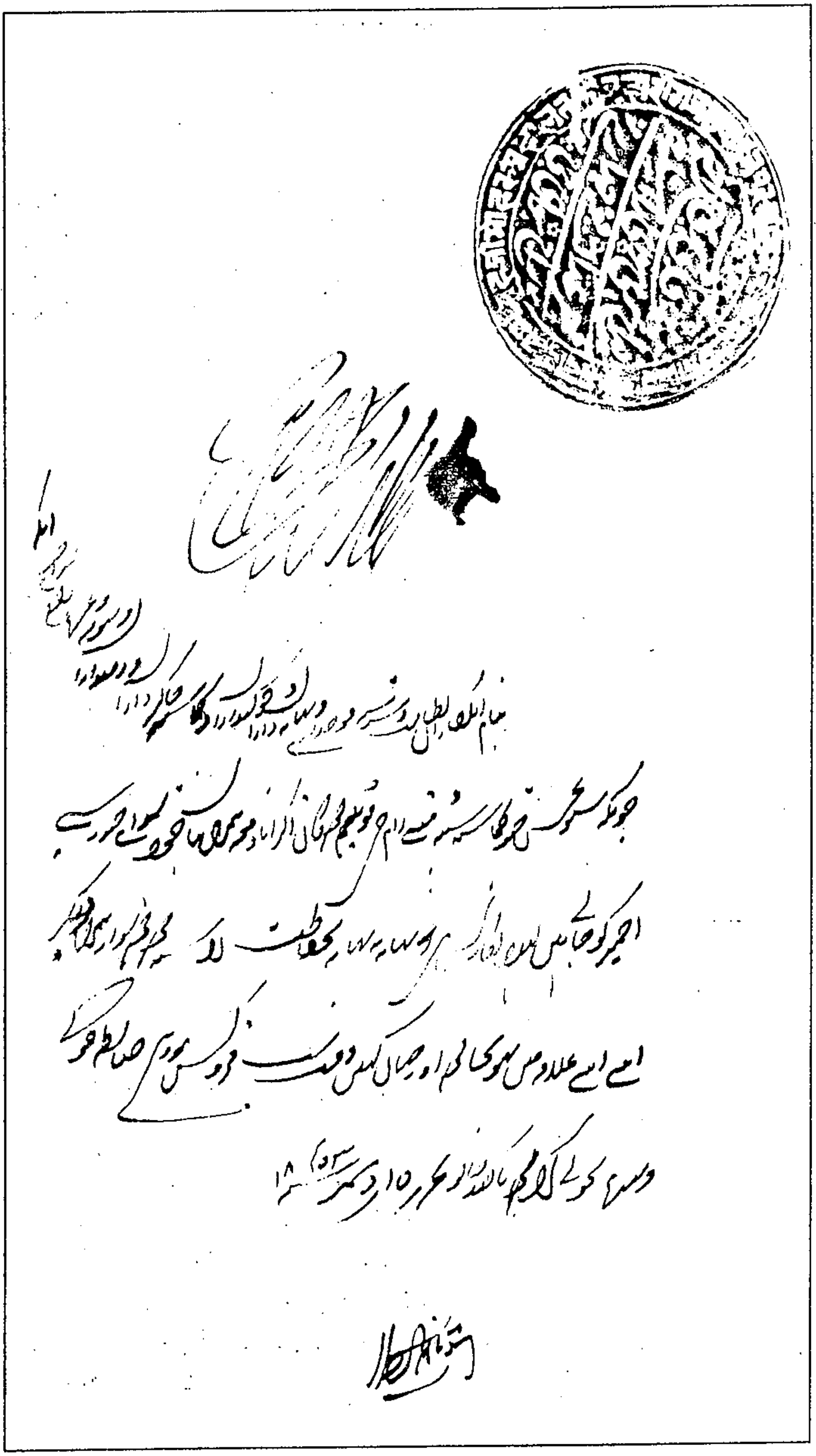
मोहर छाप

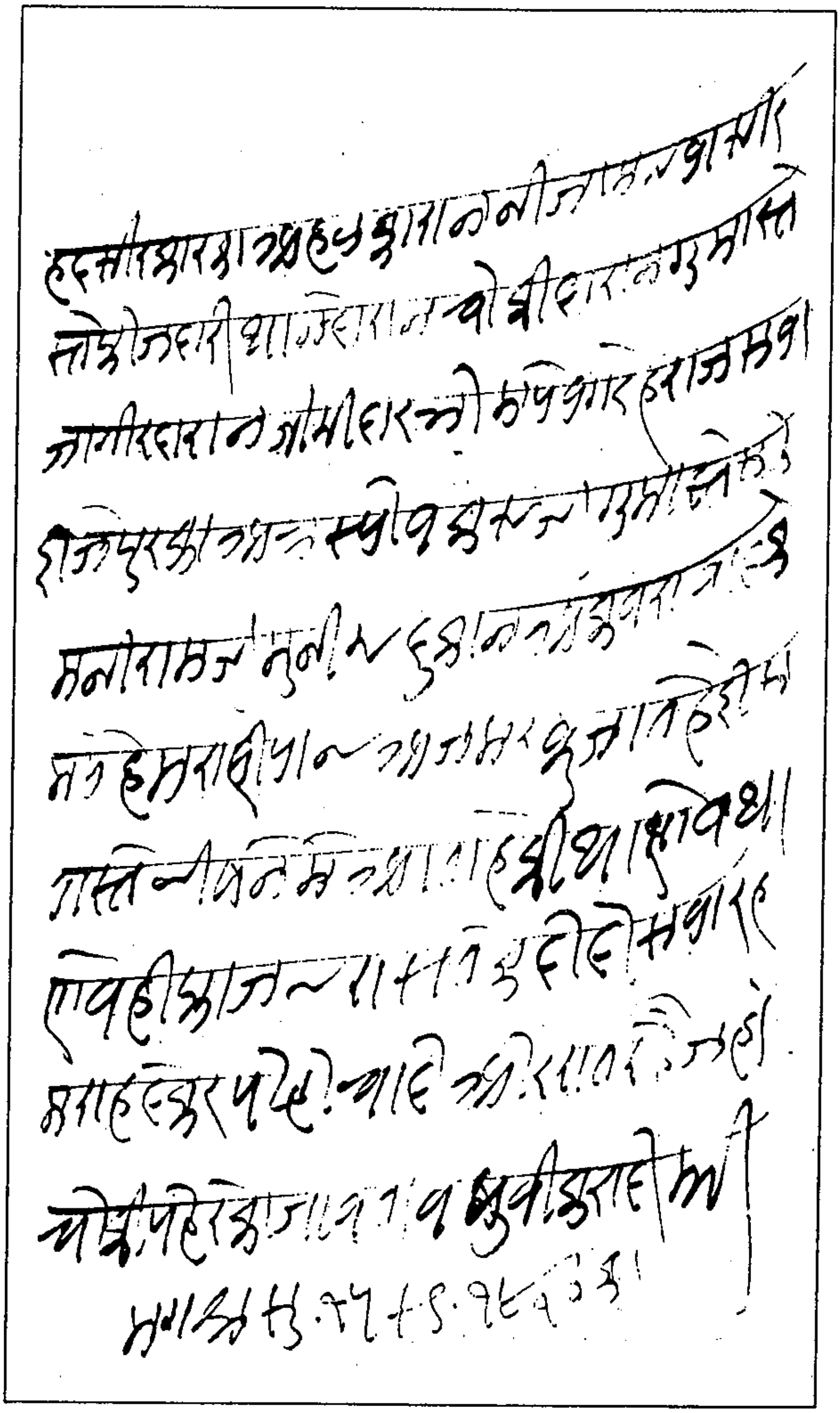
दस्तक बनाम थानेदारान व चौकीदारान व सरदारान मुल्की फौज इलाके मुल्क 'हानरेबल ईस्ट इंडिया (East India) कम्पनी - इनको मालूम होना के गणेशदास साहुकार - ये नागपुर से अपने वतन अजमेर को जाता है - चाहिये के मसारनी ले को जाते वक्त रस्ते में जो चीज नीचे लिखी हुई है इसके सिवा और कोई चीज़ नाजायज न हुई तो मुजाहमद नही करना तफसील

1 गणेशदास साहुकार म्याना 1 2 ऊँटनफट

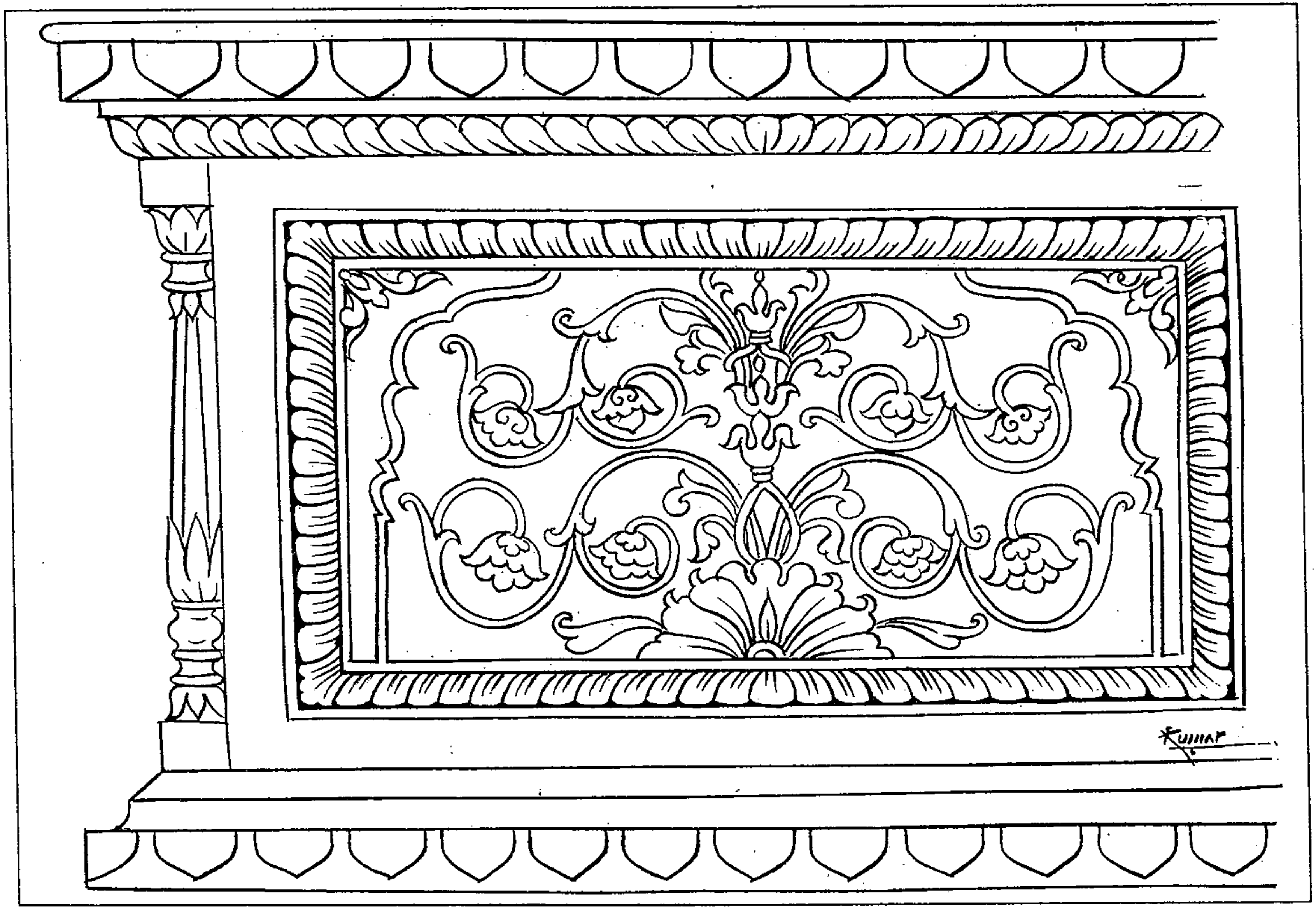
15 हथियार बंद आदमी 3 बहल (याने गाडी) 5 घोड़े 10 शर्गिद पैसे आदमी

तारीख 16 माह जून सन् 1841 ई.

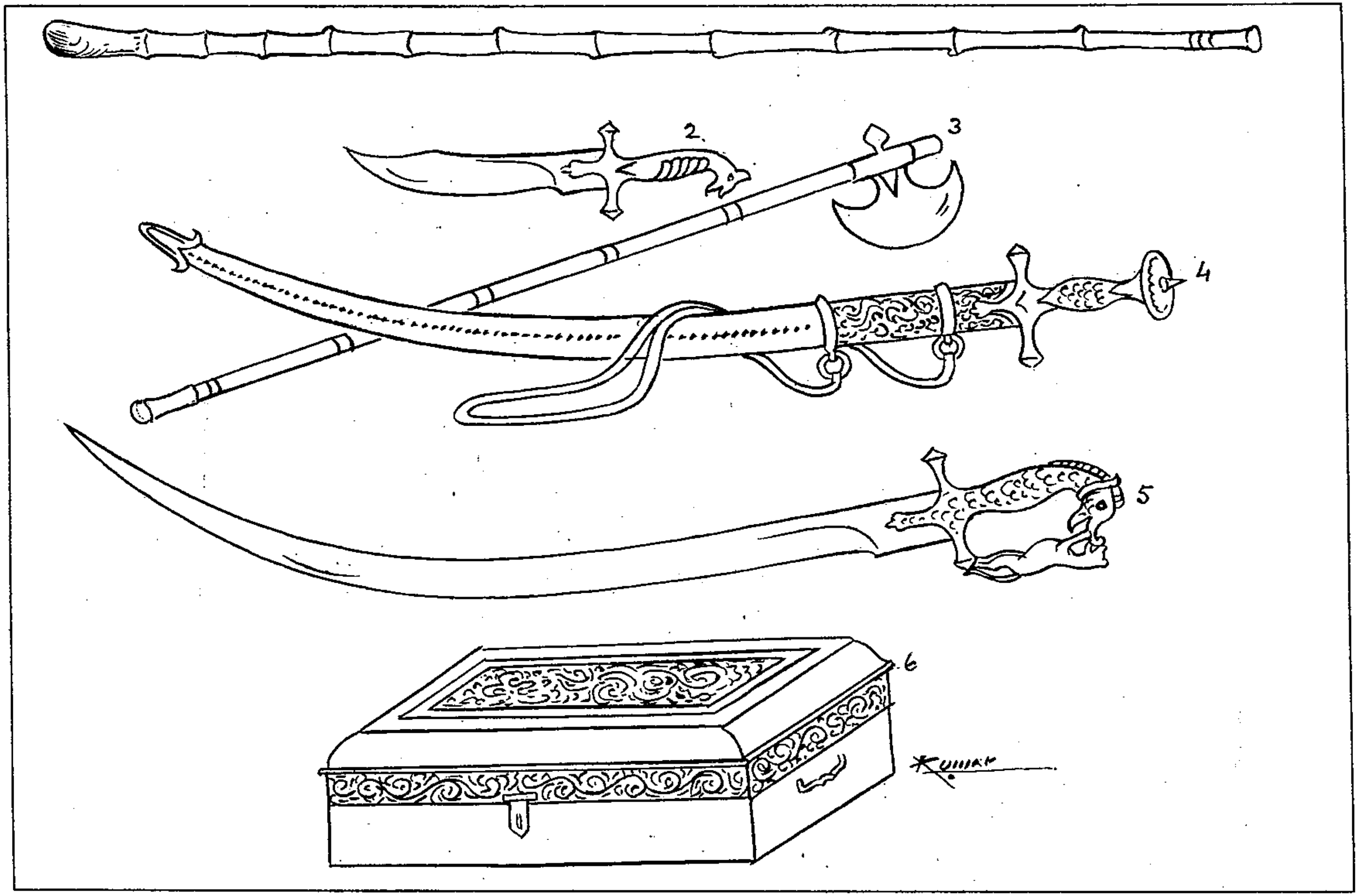




हद सीरकार का अहलकारान नीजामद व शीरस्ता फौजदारी थानेदारान - चौकीदारान - गुमास्ते - जागीरदारान - जमीदार भोमियें बगरह - राजसवाइ -जयपुर का अत्र-स्योबकस जी गुमास्ता सेठ मोहनराम जी - मुनीम दुकान अकबराबाद के मय हमराहीयान अजमेर को जाते हैं। इस वास्ते लिखने में आता है कि आने वही हीफाज़त रास्ते के दो-दो सवार हमराह देकर पहँचा दो और रात रहे जहा चौकी, पहरे का जापता बखूबी करा दो। मगसर सुदि 15 सम्वत् 1910 का



श्री जगन्नाथ जी की हवेली के मुख्य द्वार पर बने चबूतरे पर खुदी पत्थर की नक्काशी की एक अनुकृति (चित्रकार राजकुमार गनेड़ीवाला)



सेठ श्री जगन्नाथ गनेड़ीवाला मुकुन्दगढ़ की निजि वसतुएँ (१) मिर्जापुरी लाठी (२) एक नक्काशीदार कटार (३) बरछा (४) घरेलू तलवार (५) दरबारी तलवार जो राजदरबार में जाते वक्त बाँधी जाती थी।